

THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.



नाग चोथो.

ञ्रा पुस्तकमां

श्रीशावक प्रतिकासमा सूत्रं अयवा वंदिना सूत्र त्रपर नाम व्यवद्वीतिका अंच सूल तया वालावदोध अने कथानं सदित गुरवन करेतों है.

ष संघन

समस्त श्रावकादि गणने अवश्य भणवा तथा वां चवाना उपयोगमां आववा योग्य जाणीने

> श्रायक, चीम्नसिंह माणक श्रीमोहमयी पत्तन मध्ये

निर्णयसागढ नामक मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यों छे.

ं संपत्त १९४३ संते १८६,

आ पुस्तकने छपाववा संबंधि सर्व प्रकारनी हक सरकारने कायदा प्रमाणे छपावनारे पोताने स्वाधीन राख्यो छे.

प्रस्तावना.

आ जैनकथा रत्नकोष संक्षक संग्रहीत ग्रंथना जुदा जुदा पन्नर नाग ग्रापीने प्रसिद्ध करवानो जे महारो निश्चय हे ते मांहेलो आ चोथो नाग निर्विन्नपणे हापीने विवेकी वांचनाराउनी आगल मूकतां जेम मातापिता नी आगल बालक पोतानी नांगीटूटी बोबडी नापामां प्रतिदिवस वातो कह्या करे तेम महारामां ते बालकनी पेहें यथार्थ गुजरातीनाषा लेखवानी शक्ति नथी तोपण प्रत्येक नाग बाहेर पाडती वखतें ते वांचनारा साहे बोनी आगल जे कांइ महारे बोलवानी इन्ना थाय तेने हुं ते नागनी प्रसावनामां जेवी तेवी मिश्रण नापामां लखी जाउं बुं.

या नागमां महारे लखवानुं एटलुंज ने के में जे कांइ या पुस्तकना चार नाग नापी बाहेर पाड्या ते जपरथी हुं अनुमान करं हुं के कमें करी महारा बोलवा प्रमाणे समय नागो नापी पूर्ण करीश जोपण हुं अद्यापि सुधी या पुस्तकना खगानथी याहको करवा माटे कोइने घेर सहीने कराव वागयो नथी तो पण दीर्घविचारवान अने झानना सुखने जाणनारा सक्त नो महारे घेर वेना मने नापवाना काममां कांइपण अडचण न नाखतां पोतानी मेले खावी पुस्तकना याहक थइने रूपेया पद्मीशनी रकम आपी जाय ने तेवा महारा नापवाना नयमने नत्तेजन खापनारा साहेबोना म नना मनोर्थ सफल खवानी साथें खा झाननृहिरूप सर्वीत्तम कार्य पूर्ण थ वायी महारा मनने हुं महोटो खानंद पमाडीश. अने बीजा पण एवा एवा नम प्रकारना यंथोने नापी प्रसिद्ध करवाने शिक्तमांन थइश. वली तेवा यंथो महारे हाथें लखाइने नपायाथी महारामां प्रमादनी न्यूनतां थ वानी साथें ते सर्वयंथो महारा वांचवामां पण सारीरीतें खावशे तेथी ते यंथोना विषयोनुं कचित् जाणपणुं पण महारा क्योपश्मानु सारें मने थाशे इत्यादि खनेक वातो मने हर्ष कपजावनारी थाय ने.

यद्यपि महारी कबुलात मुजब महोटा सुपररांयल कागलें आवसो स वाआवशो फरमां ढापीने हजार पुस्तकपूर्ण करतां तेना पंदर हजार पुतां बंधावतां लगजग बावीश हजार रूपैयानी रकमं काहाडवी पडे अने तेनी कपर वली व्याज जाडा प्रमुख खरच थाय ते जुदा गणाय अने याहकतो आजिदवस सुधी लगजग सवाबशो पुस्तकोनां थयेलां हे. तेमनी पासेथी मात्र खरचना चतुर्थाश जेटलांज नाणां महारा हाथमां आवी शकशे माटे ते विचारमां केटलोएक वखत व्यर्थ गमाववो पहे हे. तो पण महोटा धना ह्या साहेबोनो आशरो लेवाने ज्यां सुधी हुं तेमनी पासें गयो नथी त्यां सुधी महारी धेर्यता मने ए कामथी पाडुं हटवा देती नथी.

वली बीजा पण संसारी जीवोबी पेते मने पण शत्रु उत्पन्न खंबाना तथा रोग शोक वियोग जरा मृत्यु छादिक छनेक विन्नो प्राप्त थवानी हरहमेस चिंता रहेज हे परंतु ज्ञान छने ज्ञानीचेनी रुपाथी ते सर्वविन्नोनो ध्वंस थाज्ञो.

आ पुस्तकमां श्रावकना बारेव्रतना अतिचारोनुं निरूपण करतां यंथकर्तायें अन्यदर्शनीनेने बोध पमाडवा माटे घणा स्थलें अनेक विषयोनां नदाहरणमां तेमना यंथोना नेकाणे नेकाणे घणाएक श्लोको दाखल कीधा ने. तेमज मि प्याली लोकोनां होरी प्रमुख अनेक पर्वोधी नपजता दोष पण देखाड्या ने.

वली श्रितचाररित व्रत पालन करनारा एवा महापुरुषों जे पूर्वे थइ गयेला वे तेमनी महोटी महोटी कथाई विस्तार सिंहत आ यंथमां प्रत्ये कव्रतनी कपर आवेली वे तथा प्रसंगे प्रसंगे न्हानी न्हानी कथाई तो घ एीज आवेली वे ते सर्व कथाई वांचनारा साहेबोने व्रत लेवानी तथा ली येला व्रतने अतिचार रिहत पालवानी पुष्टि करवानी साथे विचित्र प्रका रना बवनवा रसने उत्पन्न करनारी तथा पूर्वला जमानामां थइ गयेला रा जाई अने व्यापारीहिनी चालचलगत दर्शावनारी होवाथी अत्यंत आनंदनी साथे चमत्कार, उपजावे एवी वे माटे साधुश्रावकादि चतुर्विध श्रीसंघने ए ग्रंथ वांचवाथी धर्मनी पुष्टि थवानी साथें बुदिनो विस्तार पण बहुज थहो.

वली बाल जीवोने अनेक बाबतोमां उपजती शंकार्रनां समाधान पण आग मादि महाशास्त्रोने अनुसारें करेलां होवाथी श्राव्कना पिडक्कमणादिक पढाव स्यक रूप नित्पकर्तव्यतुं स्वरूप निःशंकितपृषे यथार्थ समजवामां आवशे.

श्रा यंथना बनावनार श्राचार्य श्रीरत्नशेखरस्रितं नाम तेमना गुर्वो दिकनी पहावली सुद्धा यंथना श्रंतमां श्राव्युं वे श्रने यंथने वापवा संबंधि नी केटलिएक हकीगत तथा ए यंथ वापतां महाराथी रहेली श्रग्रद्धता प्रमुखनां दोषोनो मिन्नाङ्क्षड श्त्यादिक वाबतो श्रा यंथनी समाप्तिना श्रंत मां लखी जणावी वे मारे श्रांही लखतो नथी किंबहु विलेखनेन.



॥ अद्य वंदितासूत्रना बालावबोधनी अनुक्रमणिका प्रारंप्त:॥ प्रमांक विषय प्रमांक

नाप	⁷ . ।पथथ.	दक्षाक.
?	यंथ प्रारंनमां मंगलाचरण	?
হ	स्थापनाचार्य स्थापवानो विधि, आशंका समाधान सहित.	इ
₹	सामायिक करनारें चरवलो मुहपत्ति अवश्यलेवानो निरधार.	B
В	वंदितासूत्र कहेवानो श्रावक छाश्रयी विधि	ધ
ų	वंदितानी पहेली गाथामां श्रीसिङ्चगवानना पंदर चेद	६
६	श्रावक शब्दनो तथा अतिचार अने प्रतिक्रमणनो अर्थ	σ
3	बीजी गायामां अतिक्रमादिना अर्थ तथा अतिचारनी संख्या	. હ
נד י	त्रीजी गाथामां सर्वे अतिचारोनी उत्पत्ति परियद्यकी थाय हे.	` ११
Ŋ	चोथी गाथामां क्ञानना अतिचार पडिक्रमतां पांच इंड्यिने	
	प्रत्येकें प्रशस्त अने अप्रशस्त नेदें मृगादिकना दृष्टांतें, वर्णव्युं हे.	₹ ₹
7 0	इंडियो वशराखवा अने न राखवा जपर वे काचवानी कथा.	१ ५
? ?	क्रोधादिक चार कपायनुं प्रशस्त अप्रशस्त नेदें करी वर्णन त	
	दंतर्गत प्रतिका करेली होय ते हरिचंदराजानी पेरे न मूकवी.	? 9
१ २	मनादि त्रणयोगनुं प्रशस्ताप्रशस्तपणुं दर्शाव्युं हे	₹ Q
१३	कामादि त्रणरागनुं स्वरूप तथा रागद्देषनुं प्रशस्ताऽप्रशस्तपणुं.	থ ০
8 5	पांचमी गाथामां दर्शनाचारना अतिचार पंडिक्कम्या हे	२ १
१५	उदीगाया मूलपावें चूलयी लखाइ वे पण तेना अर्थमां सम	
	केतना लक्क्णादि सर्व बनी गायानी हेडींगमा होवायी खरा है.	२ ३
१६	समकेतनी जपर जय अने विजय राजानी महोटी कथा	२ ४

? 9	जीवने संसारमां जमतां प्रथम समकेतनो लाज केम थाय	
	ते तथा यथां प्रवृत्त्यादिक त्रणकरणनुं खरूप कर्मग्रंथिक अने	
	सिद्धांतिक मतें देखाडगुं हे तथा समकेतथी पडवा हुं अने औप	
	शमादिक पांच समकेतनुं स्वरूप आदिक बीजापण दश प्रकार	
	नी रुचि प्रमुख घणे प्रकारें समकेतना जेद दर्शाच्या है	६०
१७	ढिं। गाथामां समकेतना पांच अतिचार पिडक्रम्या है ए	
	गांचा र्यागल त्रेवीशमां प्रष्टमां पण जूलयी उपाइ वे तिहां	
	संदेपथी पांच अतिचारनां नाम मात्र लखी गया इता अने	
1	ए वेकाणे शंकादिक एकेका अतिचारने देशयी तथा सर्वथी	
•	सविस्तर वर्णन करीने देखाड्या हे माटे अर्थ आगली	
	गायाना तथा आ गायाना सर्वे वांचवा पण मूलपावनी गा	
	था वेमांथी एकज वांचवी छने एक नूलधी लखायेली समजवी.	६ ९
3 6	शंकानेविषे हेतु देखाडीने पठी वे पुरुषनी कथा कही है	ह् 9
	कांक्तानुं स्वरूप दर्शावी पत्नी चामुंडाना जक ब्राह्मणनी कथा कही।	ने ६ ए
	वितिगिञ्चाना स्वरूपमां देवतानी पदवी पामेला देवो आदीं	
	श्रावी श्रापणने केम स्थिर करता नथी तथा कोइ इःख प्राप्त	
	थाय तो ते धर्म कखाथीज थयुं इत्यादि असन्य बोलनारार्जनी	
	'शंकां जेना समाधान अने तेनी जपर अका साध्वी नुं दृष्टांत.	5 E
२ २	वितिगिच्चानी उपर आपाढनूति आचार्यनुं दृष्टांत.	७ २
२३	वितिगि इरनो कि हांएक विज्ञ नि एवो पाव हे तेना व्याख्यान	
	मां साधुनां मेलेंकरी मलिन थयेलां शरीर देखी इगंहा करवा	
	थी जे दोप लागे तेनी विवक्तां करतां तेमां शोच आश्रयी	
	अन्यदर्शनीउनां पण केटलांएक शास्त्रोनां दृष्टांत देखाड	
	तां तेनी अंतर्गत एक वाणीयानी पुत्रीनी कथा कही है	ξe
	चोया कुलिंगिनी प्रशंसाना अतिचारनुं स्वरूप	99
	चोथा अतिचारनी उपर लक्कणज्ञेवनी कथा	B B
	कुलिंगीसाथे परिचय करवाना अतिचारनुं स्वरूप.	9 9
इ ७	सरसंग अने कुसंग ऊपर वे स्डानो द्रष्टांत	9 G
२७	ए शंकादिक अतिचारनेविषे सिद्धिंसाधुनुं दृष्टांत.	Эú

१ए	लौकिक देवगतमिण्यात्वना जूदा जूदा ७ए नेद कह्या है	9 Q
	लौकिक गुरुगत मिथ्यात्वनुं स्वरूप	ប
	मिथ्यात्वना पांच नेद कहीने प्रथमाधिकार समाप्त कखो है	_G ५
३ २	सातमी गाथामां चारित्रना अतिचार माटे आरंजनी निंदा क	
	रतां संरंन आरंन अने समारंननां सक्षप दर्शाव्या है	ច មុ
₹₹	आर्वमी गाथामां सामान्यपर्णे बारव्रतनां नाम कह्यां हे	o Մ
	नवमी गायामां पहेला पांच अणुव्रतनुं खरूप कह्ये हे. 🚵	_Մ Մ
₹ų	हिंसाना. २४३ नेद तथा इव्यनावयी हिंसानी चोनंगी	Ф
३ ६	हिंसानुं स्वरूप अनेकरीतें देखाड्युं हे, तेमां पांच प्रमाद तथा	
	त्राव प्रमादनां खरूप तेमज आकुटी दर्पादिकनां लक्त्य	ወש
₽Э	दशमी गायामां प्रथमव्रतना पांच अतिचारनुं स्वरूप	вッ
	यज्ञादिकनेविपे यती हिंसानो संनव तथा तेनो निपेध	ሚ ፓ
भृङ्	अन्यदर्शनियो पण यक्तमां हिंसा कहे वे तेनुं जेख	סס ז
o B	प्रयमव्रत पालवानुं तथा न पालवानुं फल कह्यं हे	ξο σ
y R	प्रथमव्रतनेविपे दृष्टांतरूपें द्श्विजमन्नीनी कथा	१०१
ध्र इ	अगीयारमी गायामां बीजाव्रतनेविषे मुवावाद केटले कारणे	
	वोजाय हे. इत्यादि स्वरूप तथा कन्याजिकादिकनां जक्कण.	१३७
	वारमी गाथामां मुषावादना पांच अतिचार कह्या हे	
	असत्य त्यागव्रत पालन करवानुं तथा न पालवानुं फल	
ध ५	असत्य वचननी ऊपर ज्ञेवना पुत्रनुं दृष्टांत	१
	बीजाव्रतनेविपे दृष्टांतरूपं कम्लुशेवनी कथा कही है	
	त्रमी गाथामां अदत्तत्यागव्रतनो अधिकार चारप्रकारनां अदत्त.	
	चौदमी गाथामां त्रीजावतना पांच अतिचार कह्या है	
	श्रावकें केवीरीतें व्यापार करवो तथा व्याज लेवुं इत्यादि	
	चोरनी अढार प्रस्तियोनां स्वरूप कह्यां छे	
	त्रीजाव्रतने पालवानां तथा न पालवानां फेल	
	त्रीजावतनी कपर वसुदत्त अने धनदत्त ए वे पितापुत्रनी कथा.	
	पंदरमी गाथामां चोथा ब्रह्मचर्यव्रततुं मंत्रं कहां वे	
นุ ย	शोलमी गाथामां चोथाव्रतना पांच अतिचार कह्या हे	१ए०

૫૫	शीलनो महिमा अन्यदर्शनियोना शास्त्रमां पण हे इत्यादि	१७५
	ब्रह्मचर्यपालवानुं फल तथा न पालवाथी रावणादि इःख पाम्या.	
εу	चोयाव्रतनी जपर शीलवती सतीनी अत्यंत रिक कथा	ያ ውው
	सत्तरमीगाथामां पांचमां परियहपरिमाणवततुं खरूप	
પૃષ્	अढारमी गायामां पांचमात्रतना पांच अतिचारनुं खरूप तुमां	
	प्रसंगे चोवीशजातिनां धान्यं, चोवीशजातिनां रत्न, धावरपरि	
	यहंना नेंद्र तथा दिपद चतुष्पदादिक परियहोना नेद	१३७
६०	इज्ञानिरोधादिकनां स्वरूप आशंका समाधान पूर्वक छे	
६१	पांचमा व्रतने पालवानां अने न पालवानां फल	२३६
६ २	पांचमा व्रतनी जपर धनशेव तथा तेना पुत्र महानंदनी कथा.	२३६
६ ३	उंगणीशमी गाथामां बहा व्रतना पांच अतिचार कह्या हे	១ឧទ
६ ध	बहा व्रतने पालवानां तथा न पालवानां फल	र ५ ७
इए	वृष्ठा व्रतनेविषे दृष्टांतरूपें महानंदकुमरनी कथा	१५६
६ ६	सातमा जोगोपजोगव्रतनुं स्वरूप	१६३
ह व	वीशमी गाथामां मद्य मांसादिक अनद्यथी थता गेर फायदा.	१६५
६७	रात्रिनोजनना दोष अन्यद्दीनमां पण हे माटे ते वर्क्कवुं	१६७
६ ୧	रात्रिज़ोजनना छाराधन विराधनविषे त्रण मित्रनी कथा	0 B S
g o	बावीश अनद्यनो निषेध अन्यदर्शनमां पण हे	२७५
\$ €	बंत्रीश अनंतंकायनां नाम तथा तेनां लक्ष्ण	भृष्ठ ह
७ इ	एकवीशमी गाथामां सातमा व्रतना पांच अतिचार	ខុងប
	बावीश अंने त्रेवीशमी गाथामां कमीदानना पंदर अतिचार.	२००
	ए व्रतने आराधवा विराधवानां फल कह्यां हे	ខ្លួ
	ए व्रतनी जपर द्रष्टांतरूपें मंत्रीपुत्रीनी.कथा कही हे	
	ञ्चावमा ञ्चनर्थदंमव्रतमां ञ्चार्त्तध्यानादि चारध्याननुं स्वरूप.	ያውው
B B	चोवीशमी पञ्चीशमी गायामां हिंसाप्रदान तथा प्रमादाचरि	
	तमां घणुं सावद्यपंणुं हे एमां जयंती श्राविकाना प्रश्न पण हे.	₹00
១ ច	धनुषादिक अधिकर्णना व्यापारमां जे जीवना शरीरथी ते शस्त्र	
	नीपन्यां होय ते जीवने केटलि क्रिया लागे हे तेनो निर्णय.	ខ០៩
9 Q	ए व्रतने आराधतां .चूंला जपर चंदरवा बांधवाथी कहेवा सुख	

	प्राप्त थाय है ते आश्रयी मृगसुंदरीनी कथा	305
li n	कुमारपालना बनेवीने हास्यवचनथी अनर्थ थयो तेनी कथा.	
	विद्यीशमी गायामां आवमा व्रतना पांच अतिचारनुं स्वरूप.	
	श्रावमा त्रतनेतिषे वीरसेन श्रने कुसुमश्रीनी कथा	
	नवमा सामायिकव्रतनुं स्वरूपः	
	सत्तावीशमी गाथामां सामायिकत्रतना पांच अतिचार	च् ध ०
σų	विधि अविधियें सामायिक करवानां समाधान तथा सामा	
	यिकना कालनुं समाधान तथा सामायिकनुं फल	
	सामायिकंव्रतनेविषे व्यवहारी पुत्र धनमित्रनी कथा	
៤ ១	दशमा देसावगासिक व्रतनुं स्वरूप	३५७
៤ ៤	अद्यवीशमी गाथामां देशावकात्तिकव्रतना पांच अतिचार	३५७
_ნ ღ	देसावगासिकव्रत पालन करवानुं फल	३५ए
២០	देसावगासिकव्रतनेविषे राजाना जंमारीनी कथा	३५ए
ए १	अगियारमा पौषधोपवासत्रतनुं विस्तारें स्वरूप नांगासहित	३६७
ए इ	उंगणत्रीशमी गाथामां ए व्रतना पांच अतिचारकह्या है	३ छ १
ए३	बीज तथा पांचमञ्चादिक तिथीउनो निरधार करवानी चर्चा	३७३
৫৯	पोषधव्रत त्राराधवानुं फल	३७६
	पोषधव्रत आराधवा विराधवा कपर ज्ञेवना बे प्रव्रनी कथा.	
ए६	बारमा अतिथिसंविचागव्रतनुं स्वरूप कह्यं हे	३ए५
ए७	त्रीशमी गाथामां ए व्रतना पांच अतिचार कह्या हे	
	बारमा व्रतनुं आराधन करवानां फल	
	बारमा व्रतनेविषे गुणाकर अने गुणधरनी कथा	
	एकत्रीशमी गाथायें बारमा व्रतनेविषे केटलाएक बीजा पण	
	अतिचार कह्या है एनां सुखिया इःखिया साधुना अर्थ है.	
१०१	बत्रीशमी गायामां साधुने संविचाग आश्रयी वात हे एमां	
ŕ	चरणसीतरी करणसीतरीमां सत्तर प्रकारनुं संयम कहां हे.	
१०२	तेत्रीशमी गाथामां संक्षेपणाना खतिचार कह्या हे	
	नवनियाणानुं स्वरूप कह्यं हे	
	चोत्रीशमी गाथायें अतिचारने त्रण योगधी पडिकम्या हे	, e e k
,	Accession of the American of a straight district Access to Comments of the second comments	-41

१०५	पांत्रीशमी गाथायें अतिचारने विशेषधी त्रण योगें पडिक	
	म्या एमां गारव, मद, चारथी शोल संज्ञा तथा कपायादिक	
	नां स्वरूप अने तेनी जपर संदेपथी एक एक पुरुपनी कथा.	ยุ≱≨
१०६	वत्रीशमी गाथायें व क्षेत्रयादिनां स्वरूप द्रष्टांत सहित वे.	भ्रहष
₹ o 9	साडत्रीशमी गायायें यद्यपि सम्यक्दिष्टि जीवोने अद्पबंधु पडे	
	हे ते पडविध आवश्यक करवाथी हुटे ईत्यादि विपयो हैं:	o B B
१०७	आडत्रीगमी गाथायें यविरा मोसीने दर्शतें पूर्वली वात वे.	8 8 ?
	र्नगणचालीशमी गाथायें पण तेज आलोचवानो अधिकार है.	
7 ? 0	चालीशमी गाथायें लखमणा साध्वी छादिकनां हष्टांतो है.	ย ย ₹
	एकतालीशमी गाथामां पडिक्रमणानुं फल कह्यं ने	
	वेतालीशमी गाथायें वीसरी गयेला अतिचार पहिक्रमवानो.	
	त्रेंतालीशमी गाथायें जाविजनने नमस्कार कस्यो है	
8 ? ?	चुम्मालीशमी गाथायें शाश्वत अशाश्वतजिनने नमस्कार है.	88W
	पीस्तालीशमी गाथायें सर्व साधुने वंदन कखुं हे	
११६	वेंतालीशमी गाथायें अनागतकालें ग्रुन वांवा राखदी कर्द्। ने	ឧប្ទ
E \$ \$	सडतालीशमी गायायें जवांतरें समाधिबोधनी प्रार्थना है ए	
	मां ज्ञान क्रिया बेहुनी तुव्यता तथा सम्यक्टिए देवोने समा	
	धि आपवानुं समर्थन आशंका समाधानपूर्वक कह्यं ते	
	अडतालीशमी गाथायें जो ब्रत न होय तो पण पडिक्रमणुं करे.	8 ५३
११ए	उगण्पचाश्मी गायायें चारे मतिना जीवो साथे वैर खमा	
	व्युं वे एमां चेडामहाराजा तथा कोणिकना यहमां केटला	
	माणसोनो संहार थयो अने ते कइ कइ गति पाम्या इत्यादि.	ध५३
१२०	पञ्चाशमी गायायें श्रावकने पडिक्रमणुं करवुं नगवाने नथी	
	कह्यं इत्यादि विसंवादियोने सूत्रनी साखे निरुत्तर कह्या है.	8 44
१२१	यंथकर्ताना युर्वादिकनी पहावली तथा तेने वापवानी हकीगत.	ध ५ ६
	नोकरवालीनो सभाय. तथा प्रस्ताविक दोहा	ध ६ ०
	गुरुशिष्य प्रश्नोत्तर बत्रीशी	ध इ इ
१२४	देवनगरी लीपिम् हापेला पुस्तकोनी यादी.	ម គ្គ

॥ श्रीगौतमादि सजुरुष्यो नमो नमः॥

श्रीश्रावकस्य वंदिनासूत्र अथवा प्रतिक्रमण सूत्र अपरनाम अर्थेदीपिका तडुपरि श्रीरत्नशेखर सूरिकत टीकानो बालावबोध कथा र्ड सिद्दुत आरंच करियें वैयें.

तेमां

प्रथम टीका करनारना करेला मांगलिकने अर्थे व श्लोको लखे वे.

॥ श्लोक ॥

॥ जयति सततोदयश्रीः, श्रीवीरजिनेश्वरोऽनिनवनानुः ॥ क्रवलयबोधं विदधति, गवां विलासा विनोर्यस्य ॥१॥ श्रुतजलजलधीन बहुविध, लब्धी न् प्रणिदध्महे गणधरें इान् ॥ श्रुतदेवतां च विश्रुत, गुणैर्गरिष्ठान्निजगुरुश्व ॥ १ ॥ श्रीसोमसुंदरग्ररु, प्रवराः प्रथितास्तया गणप्रजवः ॥ प्रतिगौतमतः संप्रति, जयंति निःप्रतिममहिमजृतः ॥ ३ ॥ तेषां विनेयवृषजाः जाग्यच्चवो च्चवनसुंदराचार्याः ॥ व्याख्यानदीपिकाद्यैर्पयेर्ये निजयशोऽयंथन् ॥ ४ ॥ ते षामेषोंऽतिषदं, तिमः किमप्यादधाति सुखबोधां ॥ वृत्तिं खपरहितार्थ, गृहि प्रतिक्रमणसूत्रस्य ॥ ५ ॥ विधियंथकतामहमि, ज्ञन्मंकोपि नोपहास्यः स्यां ॥ खद्योतोप द्युतिम, त्पंकौ प्रविश्वन्निवार्यः कि ॥ ६॥ ज्ञावार्थः-निरंतर हे उदयनी शोना जेनी,नवीन सूर्यसंमान एवाश्रीवीरनगंबान जय पामे हे. कारण के समर्थ एवा जे नगवान तेनी वाणीना विलासोजे हे,ते प्रध्वीतल गतलोकोने बोध करे हे. अर्थात् आ जे प्रसिद्ध सूर्य हे,ते मात्र कमलनेज पोताना किरणोथी विकसितं करे हे, ने वीरनगवान तो आखी प्रध्वीना व लयने बोध एटले निकसित करे हे ॥१॥ वली श्वतरूपजलना समुइ तथा अनेक हे लब्धियों जेने एवा गणधरेंड्रो तथा उत्तमनुणोयें करी मोहोटी एवी श्रुतदेवता, तथा अमारा गुरु तेने हुं हृदयमां धारण करुं हुं अर्थात् तेमनुं ध्यानकरुं हुं ॥१॥ विख्यात तथा गणना स्वामी,हानना समयमां गौतमगण धरसमान, अत्यंतमहिमाने धारण करनारा श्रेष्ठ एवा जे श्रीसोमसुंदर ग्र

ह, ते उत्हर जयने पामे हे ॥ ३ ॥ तेमना जे शिष्यो तेने विषे श्रेष्ठ अने नाग्यनी नूमिरूप, अने व्याख्यान दीपिका वगेरे यंथोना रचवाथकी जे पोताना यशने गुंथता हवा, एवा ज्ञवनसुंदराचार्य वगेरे जे पांच शिष्यो ते जय पामो ॥४॥ तेना हेला शिष्य प्राचाविक श्रीरत्नशेखर सुशिष्य थया, तेमिणें, सुखें करी बोध थाय, तेवी गृहस्थना प्रतिक्रमणसूत्रनी वृत्ति, पोता ना तथा पारका हितने माटे करी हे ॥ ५ ॥ हवे पोताना मीननो त्याग करतो हतो कि कहे हे. प्रतिक्रमणसूत्र वृत्तिना करनारनी पंक्तिने इन्नतो मंदमित एवो जे हुं हुं,तो पण हुं हसवा लायक न थाउं,एवी इन्ना राखुं हुं. कारण के सूर्यनी किरणनी पंक्तिमां प्रवेश करतो एवो पतंगीयो, ग्रं आ पणे निवारण करवा लायक है? ना नथीज ॥ ६ ॥

हवे इहां साधु तो सदा सर्वदा सामायिकवंत छेज अने श्रावकें पण सामायिक उच्चरीने पढी पडिक्रमणुं करवुं, ए उत्सर्ग मार्ग हे. हवे सामा यिकना करनार श्रावकें अवस्यपणे साक्तात् गुरुने अनावें स्थापनाचार्य नी स्थापना करीने सर्व क्रिया करवी. जेमाटें सिद्धांतमां सकल्धमेनी क्रि यानुष्ठाननुं जे करवुं, ते स्थापनाचार्यनी साक्तीयेंज करवुं. स्थापना चार्य विना जेटलुं कियानुष्ठान करीयें तेनुं कांइ फल न थाय. जेमाटें ग्रून्य कि यानुं फल पण ग्रून्य थाय. श्रीजिननइगणि क्रमाश्रमणजीयें श्रीविज्ञेपाव श्यकमांहे फह्यं हे जे ॥ यतः ॥ गुरुविरहम्मि अ तवणा, गुरुवएसोवदंस णत्रं च ॥ जिएविरहम्मि अ जिएबिं, व सेवणामंतणं सहलं ॥ १ ॥ रन्नो व पुरिसस्सवि, ज़ह सेवामंतदेवयाएव ॥ तह चेव पुरिस्सवि, गुरुणो सेवा विणयहेक ॥ १ • अर्थः - गुरुने विरहें स्थापनाचार्य स्थापवा. तेने सा क्वात् गुरुनी परें गुरुनी सरखा गुरु दर्शन, प्रायः जाएवा. जेम जिनेश्वर श्रीतीर्थंकर नगवानने अनावें जिनना बिंबनी सेवा थाय हे, निक थाय वे, स्तुति थाय वे, तेम जाएवं ॥ १ ॥ तथां जेवारें रन्नो एटले राजा वेगलों होय तेवारें सर्व अधिकार मंतदेवया एटले मंत्रीनो होय राजाने तुव्य प्रधान कहेवाय तेम गुरुने अनावें पण स्थापनाचार्यनो विनयादिक सर्व गुरुनी पेतें करवो. गुरुनी सेवा ते विनयनी हेतु हे ॥ २ ॥

हवे साधुने सामायिकना प्रस्तावने विषे जंते एवो जे शब्द तेनी व्या ख्यामां जाष्यकार कहे के गुरुने विरहें स्थापनाचार्य स्थापवा. इत्यादिक

सर्व साधु आश्रयीने कहुं हे, परंतु श्रावक आश्रयी कहुं नथी माटें छुं श्रावकने स्थापनाचार्यनी स्थापना स्थापवी ते युक्त नथी? तथा शिष्य ग्रह ने पूहे हे, हे स्वामी! तेवारें श्रावक सामायिक दंमक उच्चार करतो यको 'जंते' एवो शब्द कहे किंवा न कहे? जो श्रावक पण 'जंते' एवो शब्द कहे तो साक्षात् साधुनी परंज ग्रहने अजावें श्रावकने पण स्थापनाचार्य नी स्थापना करवी जोइयें, 'अने जो स्थापनाचार्यनी स्थापना न करे, तो सामायिकनो उच्चार करवों, आदेश मागवो, इत्यादिक संघे कियानी निः फलतानो प्रसंग थाय. तथा वली 'जंते' एवो शब्द न कहेवो ए पक्त तो श्रीवीतराग तीर्थंकर "करेमि सामाइयं सावक्कं जोगं पचरकामि" एवो पाठ कहे परंतु जंते एवो पाठ न कहे, कारण के जगवान् तो ते पोतेंज हे.

क्यांहिक जेम स्थापनाचार्यना श्रह्मर, साधु श्राश्रयीने जे सूत्रने विषे कह्या है, तेम श्रावकश्राश्रयीने पण एमज श्रह्मर जाणवा. जेम श्रीश्राव इयकनिर्युक्तिमां कृतिकर्म वांदणानो श्रापनारो साधु होय एम वांदणा प्र मुख देवां, देवराववां, ए सर्व साधु उद्देशीने कह्यं है. ते रीतें श्रावक पण करे. बीजा पण सर्वत्र स्थानकें सिद्धांतनेविषे जे धमिक्रिया श्रवृष्ठानादिक साधु उद्देशीने कह्यां हे,तेनी पेरें यथायोग्यपणे श्रावकने पण सर्व धमिक रणी जाणवी. पण श्रावक श्राश्रयीने क्यांहि सूत्रने विषे जूदा श्रह्मर देखा ता नथी. तेम ग्रह्मी स्थापना पण एमज साधुनीपरें श्रावकें श्रंगीकार करवी.

हवे ए स्थापना आगमने विषे अक्तादिकज उचित कह्या हे परंतु नि कटवर्ची वस्त्रादिक काष्ठ, तृण, कूटीर, प्रमुख स्थापनापणे, स्थापवां न घ टे,जिह्नां जे कांह्नि वस्तु मजे, तिह्नां ते वस्तुनी स्थापना करंबी उचित नथी.

पूर्वीचार्यें कह्यं ने जे गुरुना समस्त म्त्रीश न्त्रीशी गुण तेणें करी गुक्त एवा गुरु साक्षात्पणें स्थापवा. अथवा साक्षात् गुरुने अनावें अक्षादिकनी स्थापना स्थापनी. ए परंपरं ने अथवा ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण अथवा तेना उपकरण स्थापनां ॥ उक्तंच ॥ गुरुगुण जुनं तु गुरु, ना विद्या अह्व तन्त अस्काई ॥ अह्वा नाणाइतियं, निवसंसं गुरु अनावे ॥ १ ॥ अस्के वराड एवा, कर्षे पुन्ने य चित्तकम्मेवा ॥ सप्नावमसप्नावं, गुरुतवणा इतराव कहा ॥ १ ॥

इहां अक स्थापवा ते लोक प्रसिद्ध है, तथा वराटक ते कोडा प्रमुख

स्थापवा तथा काष्ठ ते मांमी पाटली प्रमुख स्थापवी, तथा पुस्तक स्था पवां अथवा लेपमय गुरुमूर्त्ति स्थापवी. अथवा गुरुमूर्त्तिना चित्रामएरू प स्थापवां. ए रीतनी स्थापना स्थापवी अने गुरुने योगें तो गुरुनीज स्था पना करवी. परंतु गुरुने अजावें इत्वर एटलें कियत्काल पर्यत काष्ठादिक नी स्थापना करवी. यावत्कथिक ते जिह्नां सुधी ते इव्य होय तिहां सुधी गुरुने अजावें इव्यज्ञावनी स्थापना आधार्यादिकनी स्थापवी. ते मा टे गुरुने अजावें सामायिकना करनारा जे श्रावक, तेमऐं जे प्रमाऐं शा स्थोमां विधि कह्यों हे,ते विधियें करीने स्थापना अवदय करवी. इति सिद्म.

हवे सामायिकना करनारा श्रावकें चरवलो मुह्पित प्रमुख धर्मीपकर ए यहए करवां, तेमज श्रीश्रवुयोगद्दार सूत्रने विषे कहां हे. जे लोकोत्तर नाव श्रावश्यकने करता एवा ज साधु, साध्वी, श्रावक श्रने श्राविका ते एक श्रावश्यकमांज चित्त, तेमांज मन, तेमांज लेश्या, तेमांज श्रध्यवसा य, तेनाज श्रथनो उपयोग, तेनाज साधन राखतो, बीजा को इस्थानकें मनने न राखतो, एवो थको उन्तयकाल पिक्कमणुं करे, तिहां 'तदिएय करणो' ए पदनो श्रथ चूर्णिकार श्रा रीतें कहे हे. के ते श्रावश्यकना साध न जे शरीर, चरवलो, मुह्पित प्रमुख मुखकाशादि इत्य ते सर्व किया क रवाना साधनने तदिएयकरण कहीयें. वली तेज पदनी व्याख्या श्रीहिर नइस्तरिनी तथा हेमाचार्यनी करेली टीकामां कहां हे के तदिर्णितकरण ते धर्मना सघला साधन जेवां के रजोहरण, चरवलो, मुह्पित प्रमुख श्राव श्यकने विषे जे उचितव्यापारने कारणें स्थाप्यां हे, ते सघलां धर्मनां कार एकए जाणवां. ए सर्व तदिष्पय करणनो श्रथ जाणवो. कही रीतें जे जे हेकाणें जे जे उपकरण जोश्यें, ते ते तिहां स्थापवां श्रथवा राखवां.

तथा आवश्यकचूर्णींने विषे सामायिक अधिकार मांहे कहां है, के जे श्रावक होय ते साधुनी पासेंथी चरवलो कांब्रली मागी हो, अथवा घरथकी लावेलो संयारित्रं चरवलो होय ते हो. तेमाटें श्रावकने कांब्रली मुह्रपत्ति अने चरवलो होवां घटमान हो. एनो विशेषयुक्तिनो विस्तार पूज्य श्रीकुल मंमन स्रिप्रणित सिद्धांतना आलावानो विचारसंग्रह ग्रंथ हो, तेथी जाएवो. तेमज बीजा पूण अनेक ग्रंथनी साख हो, ते माटे श्रावकें सा मायिक करवाने अर्थे चरवलो, मुह्रपत्ति, संथारीतं. ए सर्व ग्रह्ण करवां.

हवे इरियाविह्या पिडक्सम्या विना वांदणां देवां, सवाय करवी, इत्या दिक कोइ पण क्रिया करवी घटे नहीं जेमाटे श्रीमहानिशीय सूत्रमां कहां वे, के गोयमा अपिडकंताए इरियाविह्याए णो कप्पइ चेव किंचि चेइय वंदण सिक्काइष्ट्राणाइयं कार्गमित्यादि तथा श्रीहरिजइस्ट्रिस्टित दशवैकाित कनी टीकामां कहां वे. के इरियाविह पिडक्सिने रूडा विधियें करी गुर्वादि कनी साखें सामायिक करी; माया रहितपणें पड्विध आवश्यकरूप पिड क्रमणाने करतां ए रीतें करे.

पढ़ी वंदिनु सूत्र कहे, तिहां माबो ढींचण हेतो राखे, अने जमणो ढींचण उंचो राखे, ए रीतें बेसीने वंदिनासूत्र स्पष्टपणे कहे. अने साधुनी दिनचर्याने विषे साधु बेता यकां वंदिनु कहे, ते पण माबो ढींचण हेतो राखे अने जमणो ढीचण उंचो राखे. पढ़ी पिडक्कमणसूत्र कहे. श्रीत्राचा रांगसूत्रना पांचमा अध्ययनना चोथा उद्देशानी टीकाने विषे कह्यं हे, ते रीतें विधिपूर्वक बेसीने प्रथम मांगलिकने अर्थें नवकारमंत्र प्रगट पणे क हे, तेवार पही समतानावें रहीने प्रतिक्रमण सूत्र श्रावक कहे. इहां ते श्रावक सामायिकमां रह्यो हे समतामां पिरणम्यो हे. माटे ते जणाववा ने अर्थें "करेमि जंते सामाइयं" इत्यादिक पात मुख्यी कहे.

तेवार पढ़ी प्रथम सामान्य प्रकारें श्रितचार श्रालोववा है, तेमाटें ''इह्यामि पिडक्कमिछं जो मे देविसिछं श्रारों कर्छ " इत्यादिक कहे, तेवार पही वली विशेष प्रकारें श्रितचार श्रालोववा हे, माटे पिडक्कमणासूत्र नो श्रम्खित पाव हस्व, दीर्घादिक ग्रुण सिहत पणे क़हे, ए सर्व श्र तिचारनो शोधक हे श्रने कल्याणजूत हे माटें विश्व रिहत पणे ग्रंथ सं पूर्ण थवा निमिनें पोताना इष्ट एवो जे पंचपरमेष्ठी रूप मंगल श्रने श्रिन ध्रेयने सूत्रकार प्रथम गायायें करी कहे हे:—

॥ वंदितु सबसिन्धे, धम्मायरिए य सबसाहू छ ॥ इज्ञामि पडिक्रमिजं, सावगधम्माध्यारस्स ॥ १॥

अर्थः—(वंदिनु के०) वांदीने नमस्कारकरीने सर्व प्राणीने हितना करनार एवा श्रीक्षजादिक सर्वे तीर्थकर तथा जे ज्ञानावरणादिक स र्व कर्म क्य थयाथकी कतकत्य थया एवा (संवित्तिक के०) सर्वतिक जेहने कोई कार्य करवुं नथी एवा तीर्थंकरादिक पन्नर नेहें सिद्ध थया, ते प्रत्यें मन, वचन अनें कायायें करी (वंदिनु के॰) वांदीने तेमां का यायें करी नमवुं, वचने करी स्तुति करवी तथा कायायें करी अने वचने करी स्तवना करवी पण ए सर्व मन सिहत होय तो खेखामां गणाय ए म नमस्कार त्रण नेहें जाणवो. हवे ते पन्नरनेदनां नाम कहें हे:—

१ तृथिंकर सिद्ध ते श्रीक्रपनादिक तीर्थंक्ररो सिद्ध थया, ते जाणवा.

२ अतीर्थकर सिद्ध ते पुंमरिक अने श्रीगीतमादिक जाणवा.

र तीर्थ जे श्रीजिनप्रवचन तेनो धरनार चतुर्विध श्रीसंघ हे. ते चतु विध संघनी स्थापना थया पही जे सिद्ध थया ते तीर्थ सिद्ध जाएवा.

ध तीर्थंकरनुं तीर्थ प्रवर्त्यु न होय, चतुर्विधसंघरूप तीर्थनी स्यापना यइ न होय, ने विना मेरुदेव्यादिकनी पेतें जे सिद्ध थया ते अथवा सुवि धिनाथ तीर्थंकर आदे देइ सात तीर्थंकरना सात आंतराने विचालें धर्मवि होद थयो, तेमां केटला एक जीव जातिस्मरणादिकें कर्मक्य करी सिद्ध थया, ते सर्व अतीर्थ सिद्ध जाणवा.

५ कोइ तथाविध बाह्य वैराग्यना निमित्तविना पण जातिस्मरणादिकें पोताना ख्रात्माथकी वीर्योद्धासें धर्मनी सामग्री पामी पोतानी मेलें प्रति बोध पामी जें सिद्ध थया ते स्वयंबुद्ध सिद्ध जाणवा.

६ तृषर्न तथा कांकण अने आम्रादिक बाह्यनिमित्त देखी प्रतिबोध पा मीने जे सिद्ध थया ते करकंतुं आदिक प्रत्येकबुद्ध सिद्ध जाणुवा.

ष्या ते बुद्दबोधितस्य जाएवा.

ण जे पुरुषातिंगें सिद्ध यया, ते पुरुषातिंग सिद्ध जाणवा. ए पुरुषवेदें प्रत्येकबुद्ध पण होय परंतु ते एमां न लेवा.

ए जे स्वीलिंगें सिद यया, ते चंदनबाला प्रमुख स्वीलिंग सिद जाएवा.

१० जें तीर्थंकर, अने प्रत्येकबुदें रहित एवा केटला एक नपुंसकिंगें सिद्ध थया, ते नपुंसकिंग सिद्ध जाएवा.

११ जे जैनसंबंधि उघो मुह्पत्ति प्रमुख साधुनो वेष धारण करी सिद्ध थया ते खिलेंग सिद्ध जाणवा. १२ जे वल्कल चीरिय प्रमुख चरक पारिव्राजकादिक अन्यदर्शनीयोना लिंगें सिद्ध थया, ते अन्यलिंग सिद्ध जाएवा.

१३ जे महदेव्या माता अने पुष्पाढ्य राजा आदिक गृहस्थितंगें सिद्ध य या ते गृहस्थितंग सिद्ध जाणवा. एने इव्यथकी अन्यितंग होय पण नावथ की क्वायिक सम्यक्त अने यथाख्यात चारित्रना परिणामें केवलक्वान पामी अं तगड केवली थइ मोक्स पामे. कहामि आयु विशेष होय तो साधुलिंग पिडविके.

१ ध जे एक समयमां एकज जीव सिद्धि पामे तेने एकसिद्ध कड़ीयें.

१ ५ जे एक समयमां बे आदें देश्ने यावत् १०० पर्यत सिद्ध यया ते अनेक सिद्ध जाणवा. ए पन्नरजेदें सिद्ध थया ते प्रत्यें वांदीने.

तथा (धम्मायरिए के०) धर्माचार्य एटले जे श्रुतधर्म अने चारित्रध मेना आचार आचरवाने प्रवीण निपुण सम्यग्धमेना दातार केशी गण धरनी पेठें, नास्तिकमतना धारक पुरुषोने पण रंजन करी धर्म पमाडनारा एवा धर्माचार्य ॥ यहकं ॥ जो जेण सुद्धम्मंमि, ठाविट संजएण गिहिणा वा ॥ सो चेव तस्स जायइ, धम्मग्रह धम्मदाणार्छ ॥ १ ॥ अर्थः—(संज एण के०) संयती एटले साधु (गिहिणावा के०) अथवा गृहस्य एटले श्रावक (जो के०) जेने (जेण के०) जेणे (सुद्धम्मंमिठाविट के०) ग्रुद्धमेने विषे स्थाप्यो होय जोड्यो होय (सोचेव के०) ते निश्चयें (त स्स के०) तेनो धर्मग्रह धर्मनो दातार (जायइ के०) होय ॥ १ ॥ तथा सूत्र अर्थना जाण समस्त लक्क्णें लिक्क्त, गञ्चना मेढीनूत, थंनरूप, गञ्च नी सार संजालना करनार, अर्थना उपदेशक एवा आचार्य जाणवा.

तथा च शब्दथकी सम्यग्ङान संयमादिकें युक्त, आचार्यपदना स्थानकने योग्य श्रुतना जणनारं जणावनार एवा श्री छपाध्यायजी होवा.

तथा (सबसाहु के०) सर्वसाधुते आचार्य, उपाध्याय प्रवर्तक, स्यविर, गणा व बेदकादिक अनेक नेदें करीने ज्ञूदा जूदा मुनिराज मोक्तना साधकजाणवा.

तिहां निवष्यकालने विषे आचार्यपदनों अप्रतिबंधक वांडा रहित हे,सू त्रतुं नणवुं गणवुं नणाववुं करे, प्रतीष्ठक एटले श्रुक हे,सूत्रवाचना दाने करी अनुप्रह्वंत हे, पोतें तपने विषे संयम योग्यने विषे योग्य हे, बीजाने पणतेमां प्रवक्तीं हे, अग्रुन्थी टल्या हे, गह्नना चिंतक हे, मार्गना र्निक हे, तेने प्रवर्त्तक कहियें. जे संयमने विषे स्थिर करें, ते थिविर कहीयें, संयमव्यापाररूप अर्थने विषे प्रवृत्ति करें, जे साधु संयमने विषे सीदातों होय, तेने पोतानी शक्तियें करीने स्थिर करें, दृढ करें, ते थिविर कहियें.

श्रुत उतावलो दोडे, सामान्यपणे धाय क्षेत्र तथा उपि प्रमुखनुं श्रा पतुं तेने विषे विषाद न करे, धेर्य राखे, सूत्रार्थनो जाण होय तेने गणाव होदक कहीयें. विश्वषार्थ एवे जे गह्यनुं विशेष कार्य पडे थके श्रुत्यंत दोडीने जाय, श्रात्माने श्रुनुयह बुद्धियं ते कार्यनी प्रवृत्ति करी उतावलुं ते कार्यनुं जे करवुं ते प्रधावन कहीयें. तथा जे मोक्स मार्गना साधनार वे, ते सर्व साधु लेवा. ए सिद्ध, श्राचार्य, उपाध्याय श्रुने साधु एने वांदीने ए रीतें गाथाना पूर्वार्द्ध करी विद्योपशांतिने श्रुर्थ पंच परमेष्ठीने नमस्कारहूप मंगल कह्यं.

हवे गाथाना उत्तरांई करी अनिधेय एटले आ यंथमां जे वात कहेवानी हे ते कहे हे.

(सावग्गधम्माइयारस्स के०) श्रावकधर्मना अतिचारथकी (पिडक्किमि ग्रं के०) प्रतिक्रमितुं एटले निवर्त्तवाने (इज्ञामि के०) अनिलापामि एट ले हुं अनिलाप करुं वुं इज्ञुं बुं.

इहां श्रावकशब्दनों अर्थ करे हे, जे श्रीवीतरागनी वाणी सांनले तेने श्रावक कहीयें ॥ यहकं ॥ सम्मन दंसणाइ, पइ दीयं जइ जणो सुणेइय ॥ सामायारी परमं, जो खल्लु तं सावगं बिंति ॥१॥ श्रद्धालुतां यः श्रीजिनेंड्शा सने, धनानिपात्रेष्ठवपंत्पनारतं ॥ करोति पुष्यानि सुसाधुसेवने, प्रीतिर्हितं श्रावकमादुरुत्तमं ॥१॥ अर्थः—जे समकेत ग्रुणने पाम्यो हे, प्रतिदिन साधुनी पासेंथी धर्म सांनले हे, साधु अने श्रावकनी सामाचारीनो परम जाण हे ते निश्चें उत्तम श्रावक जाणवो एम ज्ञानी कहे हे. श्रीवीतरागना शासनने विषे पूर्ण श्रद्धा राखे, सुपात्रने विषे धन वापरे, पापने खेरवी नाखे, सुद्ध सुसाधुनी निर्धयीनी सेवा करे, तेने उत्तम श्रावक कहीयें ॥१॥ एवाश्रावक जाणवा तेनो धर्म जे ज्ञान, दर्शनादिरूप तेने विषे जे मिलन तारूप अतिचार ते बाख़्वत तथा ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, त पाचार अने वीर्याचार ए सर्वना मिली ११४ अतिचार हे, तङ्ग पापथ की निवर्त्तवाने एटले पाप टालवाने इहुं हुं ॥ यहकं ॥ स्वस्थानानु परस्था नं, प्रमादस्य वहां गतः ॥ तत्रैव क्रमणं ज्ञूयः, प्रतिक्रमणमुख्यते ॥ १ ॥

नावार्थः—जीवनुं स्वस्थान ते स्वधमे अने परस्थान ते अतिचार जाणवो ते प्रमादना वशयकी आत्मा स्वधमेथी चूकी परधमे जे अतिचार तेने विषे आव्यो जे जीव तेने तेथकी क्रमण एटले पाढुं फरवुं जेमाटें "अश्यारा जाणयवा न समायरियवा" एटले ए अतिचार जाणवारूप वे पण आच रवारूप नथी. इति उपासकसूत्रवचनात् तथा पिडक्रमणं मिथ्याङ्कतं निं दादयश्च कार्योः तथा "पिडक्रमणं परियरणा,परिहरणा वारणा नियनीय ॥ निंदा गरहा सोही, पिडक्रमणं अद्दा होइ॥१॥

तिहां १ प्रतिचरणा ते ज्ञानादिकना आसेवने प्रतिक्रमणमां इरियाव हि पिकक्रमतां अइमंतकुमारादिकने केवलज्ञान उपन्युं अने मिण्याङः रुत देतां आत्म निंदादिक करतां मृगावती चंदनबालादिकने केवलज्ञान उपनुं ए दृष्टांत जाणवां. एवी रीतें हुं पण श्रावकधर्मना अतिचार पिकक्रमवा मिण्याङः रुत देवा आत्मनिंदा करवे करी विद्युद्धि करवा वां छुं छुं. इति नावः॥

इहां इज्ञामि शब्द जे हे ते जावनी प्रवलताने सूचवे हे, जेमाटे जाव विना जे क्रिया करे, ते निःफल होय तेनुं फल न होय ॥ उक्तंच ॥ यस्मा क्रियाः प्रतिफलंति न जावश्चन्याः इति वचनात् ॥

तथा कियायें करी शून्य एवो जे जाव छने जावें करीने शून्य एवी जे किया,ए बेनी वच्चमां सूर्य छने खद्योत जेटलो छांतरो. जाणवो. जाव ते सूर्य उद्योतरूप हे छने किया ते खजवाना तेजरूप हे. इति प्रथमंगाथार्थः॥

हवे सर्व वृतना अतिचार पिडक्कमवा है, तेमां प्रथम सामान्य प्रकारें ज्ञानादिकना अतिचार पिडक्कमवाने अर्थें गाया कहे हैं:-

> ॥ जो मे वयाइयारो, नाणे तह दंसणे चरिते य॥ सुहमो वा बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥५॥

श्रर्थः—(जोमेंवयाइयारों कें।) जे महारा श्रणुव्रतादिक वार व्रत तेना मलीनतारूप श्रतिचार हे, तिहां प्रथम (नाणे के।) ज्ञानना श्रतिचार इहां श्रतिक्रम श्रने व्यतिक्रम ए बेहु जे हे, ते श्रितिचारमांहेज श्रंतर्जूत थाय हे, केम के व्रत जंगाववाने श्रर्थं कोइयें निमंत्रणा करे हते तेने नाका रो करे नहीं. ते श्रतिक्रम कहीयें, श्रने निषेध करेलिं। वस्तु लेवाने श्रर्थं जाय एटले सेंव्युं नथी श्रने ते कार्य करवाने चात्यों ते व्यतिक्रम कहीयें, तथा

जेवारें निषेध करेली वस्तु लीये, तेवारें ते अतिचार कहेवाय तेमज ते निषेध करेली वस्तु धापरे, ते अनाचार जाणवो.

इहां प्रथम व्रतने विषे क्रोधादिकें करीने परवश थयो थको वधबंधादि क करे, तो अतिचार लागे अने जेवारें जीवहिंसा करे तेवारें अनाचार क हेवाय ॥ यडकं ॥ आहाकम्मा मंतण, पिं सुणमाणे अश्क्रमो हो ॥ पय चेयाइ पश्क्रम, गइए तई उद्देश गिलए ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

हवे :क्वानाचारें काल, विनय, बहुमान, उपधान, श्रनिन्हव, व्यंजन, श्र थे, तडुनय, ए आठ आचार क्वानना हे, तेने विषे वितत्त आचरणे आठ अति चार थाय तथा मतिक्वानादिक पांच चेदें अश्रदादिकें करीने अतिचार लागे.

(तह के॰) तथा दर्शनाचारें निःशंकित, निःकांहित, अजुगुप्सा, अ मूढदृष्टि, उपवृंद्धणां, स्थिरीकरण, वात्सव्य अने प्रनावना, ए आव आचा र बे, तेने विषे वितन्न आसेवनारूप आव अतिचार लागे.

अथवा ज्ञान दर्शने देवगुर्वादिकनी आज्ञातना तथा ज्ञानइव्य, देवइव्य, गुरुइव्य अने साधारणइव्यने विनाज्ञे, उपेक्कादि करवे करी आज्ञातनारूप अतिचार लागे. सातमांत्रतना वीज्ञ अने अगीआरत्रतना पचावन्न.

चारित्राचारने विषे पांच समिति अने त्रण गुप्ति मली आत प्रकारना आचार हे, तेने विषे अन्य उपयोगरूप आत अतिचार जाणवा.

च शब्द थकी संखेषणा पांच प्रकारनी तेना पांच अतिचार आगल कहेशे, तेमज व प्रकारनो बाह्य अने व प्रकारनो अन्यंतर मली बार प्रका रें तपाचार वे, तेने यथाशिक्यें न आराध्यो थको बार अतिचार थाय, तथा वीर्याचारने विपे मन, वचन अने कायायें करी यथाशकें शिक्त गो पनरूप त्रण अतिचार लागे अने सम्यक्तवत्रतना पांच अतिचार सर्व म ली १२४ अतिचार थाय, तेमां (सुडुमंवा बायरंदा के०) जे अनुपयोगें उलखवामां नं आवे, एवा अतिचार लागे ते सुक्क अतिचार जाणवा अने जे प्रगटपणे उलखाणमां आवे ते बादर अतिचार जाणवा.

ए सुद्धा अथवा बाहर अतिचार ते च शब्दथकी जाएते अजाएते जे अतिचार जाग्यो होय (तं के०) ते प्रत्यें हुं (निंदे के०) निंडुं हुं. एट जे हा! में महोटुं श्रृकार्य कखुं! इत्यादिक पश्चात्ताप आत्मानी साखें करीने, अपरं (तंचगिरिहामि के०) तेने गुरुनी साखें गर्हूं हुं. एम ज्ञाना दिकना श्राचारमां लागेला श्रितचारोने निवारवा. एनो विशेष नावार्थ किव कहे हे के महारा करेला श्रा६विधि यंथयकी जाएजो ॥ २ ॥ ॥ हवे ए सर्व श्रितचार प्रायें परियह अने श्रारंनथकी उपजे हे, तेंमाटे सामान्यथी परियह श्रारंन पडिक्रमवाने श्र्यें त्रीजी गाथा कहे हे:-

॥ ज़िवहे परिग्गह्मि, साव के बहुविहे य आरंजे। ॥ कारावणे य करणे, पडिक्रमे देसियं सबं ॥ ३॥

अर्थः— सचित्त अचित्तरूप अथवा बाह्य अने अन्यंतररूप (इिवहें कें०) वे प्रकारनो (परिग्गहंमि के०) परियह हे, तिहां वाह्य परियह ते धन धान्यादिरूप जाणवो अने अन्यंतर परियह ते मिण्यात अविरति आदिक जाणवो. तथा (बहुविहें के०) घणा प्रकारनो पापारंन ते खेती प्रमुख बाह्य व्यापार जाणवो परंतु जिनपूजा, प्रनावना, तीर्थयात्रा, रथ यात्रा, प्रासाद कराववां, संघ काढवा, साहामीवात्सव्य करवां, ते उद्देशें यद्य पि आरंन हे तो पण ते पिडक्कमवा आलोववा योग्य नथी केम के तेमां च इता परिणामधारानी हिह्यें समकेतनी प्राप्ति थाय हे तेमाटे ते गुणकारी हे

(सावक्के के॰) सावद्य ते पाप, ते जे पोताना कुटुंबादिकने अर्थे पाप पणुं सेवे ठे,ए सावद्यपणुं ते केटलुं एक परिग्रहमां ठे अने केटलुंएक आरं नमां ठे. तेवा केटला एक सावद्य आरंन अने परिग्रह विना गृंहस्थने पो ताना कुटुंबनो निर्वाह याय नहीं. तेमाटे ते सावद्य (बहुविहेयआरंजे के॰) अनेक प्रकारनो आरंज निर्दय पणे निःशंक पणे घणा प्रकारनो सावद्य आ रंज ठे, एक (कारावणे के॰) बीजानी पासें आरंज करावद्यो बीजो (करणे के॰) पोतें करवो तेणों करीने तथा च शब्दथकी आरंजनी अनुमोदना करवे करीने आरंज थाय ते आवकें निश्चें मानप्रमाण करीनेज परिग्रह आरंजमां वर्च बुं,कारण के जो आरंजपरिग्रह घणो सेवे,तो लोजवशें व्याकुलपणायकी घणा जीवोनो वध,मृषाजाषण,अदनादानादिक सर्वव्रतोना अतिचारोनो सं जव थाय तथी सघला व्रतोने अतिचार लागे,तेमाटे बहुविध आरंज परिग्र ह करवो,कराववो, अनुमोदवो,तेने विषे जे महाराव्रतना अतिचार पूर्वली गाथाने अनुवर्त्तने करीने सुक्का अथवा बाहरना जेहें (देसियं के॰) देवसिक संबंधि थयां इहां प्राकृतपणा थकी वकारनो लोप थयी हे इहां पडिक्कमणाने

अवसरें रात्रियें राइड, परकीयें परकीड, चडमासियें चडम्मासिड, संवत्सरियें संवत्तरित इत्यादिकपाव कहीने (पिडक्कमं के॰) प्रतिक्रमामि एटले प्रतिक मुं बुं. ग्रुननावें करी फरी ते पापने अणकरवे करीने ते अतिचारथकी प्र तिकूलपणे पराङ्मुखपणे चालुं हुं. अतिचारथकी निवर्त्तुं हुं इत्यर्थः। ए परियह अने आरंन जे हे, ते नरकादिक महाइःखनो हेतु है ॥ उक्तंच नगवत्यंगे ॥ कहामुं नंते जीवा नेरइअनाए कम्मंपगरंति गोथमा महारंन याए महापरिमाहाए कुणिमाहारेणं पंचिंदियवहेणमिति ॥ हे जगवन ! जीव जे हे, ते नरकनुं आयु बांधे ? हे गौतम ! महाआरं जें करीने महोटा परियहने मेलववे करीने मद्यमांसादिकने खाहारें करीने पंचेंडिय जीवोने वधें करीने नरकतुं आयु बांधे. वली अन्यदिष एटले बी जा यंथोमां पण कह्यं हे. धणसंचर्न अइविज्ञां, आरंनपरिग्गहो अविश्वि न्नो ॥ नेइ अवस्स मणुस्सं, नर्यं च तरिक जोणिं वा ॥ १ ॥ यत्र दृष्टांतो यथा॥ सुनोमब्रह्मदत्तायाः, सप्तमींप्टथिवीं गताः॥ महापरियहारंने, भैम्मणा द्यास्तु इःखिनः ॥ १ ॥ महापरियहारंन, परित्यागेन निर्वृताः ॥ अष्टौ नरत सगर, शांतिक्रंप्यादिचिक्रणः ॥ २ ॥ अर्थः - घणो धननो संचय करे, अत्यंत आरंनपरियहमां रहे, पण तेनो विज्ञेद न करे, ते मनुष्य अवस्य न रकगित तिर्यचनी गतिप्रत्यें जाय. ते उपर दृष्टांत कहे हे. सुनोमचक्रवर्तां, ब्रह्मदुनचक्रवर्ती, सातमी नरकें गया ॥१॥ घणा परियह अने आरंजें करी मुम्मणज्ञेवादिक पण महाइःखी यया. माटे जे घणो परियह घणो आरंज तेने त्यागीने प्रियह्यी निवत्त्वी एवः नरतना पाटवी आहे तथा सगर, शांति, कुंधु अर्ने अरआदिक चक्रवर्त्ता ते सर्व देवगति सिद्धगति पास्था. ए त्रीजी गायानो अर्थ कह्यो ॥ ३ ॥

हवे विशेष पणें करीने समस्त बीजा पण अतिचारने प्रतिक्रमवा श्वांतो थको प्रथम ज्ञानना अतिचारने पिडक्कमे हे.

॥ जं वर्षामेंदिएहिं, चजकसाएहिं अपसहेहिं॥ रागेण व दोसेंण व, तं निंदे तं च गरिहामि॥ ४॥

अर्थः - आहिं ज्ञानन्। अस्ताव वे, माटे ज्ञाननं अतिचारनूत एवं (जं वर्द के॰) जे अग्रुनकर्म, बांध्यं तथा कखुं, ते रोणे करीने बांध्यं तथा कखुं? तो के (इंदिएहिं के०) कर्ण,चकु आदिक पांचे इंडियोयें करीने तथा (च उक्कसाएहिं के०) क्रोधादिक चार कषायें करीने उपलक्ष्णधी मन, वच न अने काया, ए त्रणे योगें करीने बांध्युं कखुं, ते अग्रुन कर्म जाणवुं.

हवे आहिं शिष्य आशंका करे हे, के इंडियादिकें करीने दर्शनादिकने अतिचार कर्म बंधाय, जेमाटें नवमा ग्रणनाणानी अवधिसुधी सर्वजीव समयें समयें सात अथवा खात कर्मना बंधक हे, तथा जगवानना वच न हे जे "जीवे अडविह बंधएवा आठवचं सत्तविह बंधएवेति" ते मा टें ग्रं इहां ज्ञानने पण अतिचार रूप कर्मबंध कह्यं ?

हवे आचार्य एनो उत्तर कहे हे. इहां पिडक्रमणने विपे सघला अ तिचारमां प्रथम झानना अतिचारनो प्रस्ताव हे. तेमाटें झानने अतिचा रपणुं कहुं, परंपरायें वीजां पण कमें बांधे, सम्यग्झानने अनावें नेद झानविना जीव कमेने वांधे हे, तेमां मुख्यता झाननी हे. माटें प्रथम झा नने अतिचार लागे. परंपरायें दर्शनने लागे, जेवारें नेदझान होय, तेवा रें अग्रुनकर्मनुं करवापणुं न थाय. अनें जे झान हतां पण रागद्देपनो जोरो वधे, दीपे, तेने झानपणुं न कहीयें. जेम सूर्यनां किरण उदय पा मे थके अंधकारनी शिक्त न रहे, तेम नेदझानने उदयें रागद्देप केम र हे? माटे जेने पांच इंडियो अने कपायना वर्ग, ए सर्व वश न होय, ते निश्चें अझानी जाणवो. जो पण नव नवां शास्त्र सांनं हो हो, तो पण झा नचुं अतिचारपणुं लागे, ते झान शा कामनुं? जे झान हतें तेने पांचेंडि योयें जीत्यो, कपायें जीत्यो, तो तेने ते कहेवा मात्रज झान जाणवुं. निश्चें श्रीवीत रागनो धर्म ग्रुडगुरु अने ग्रुडधर्म रूप हो, ते ग्रुडधर्मथी एम केम होय? शालनुं बीज वाव्युं थकुं ज्वार केम नीपजे? तेम साचा झानयीज इंडियोनुं बल घटे, इत्यादिक लोकमार्गानुसारें झान आशातनाकारी हो.

हवे ते इंडिय तथा कषाय ए सर्व प्रशस्त अने अप्रशस्तना नेदें करी वे प्रकारें हे. तिहां प्रशस्त ते ग्रुन अध्यवसायरूप जाणवा अने अप्रशस्त ते अग्रुन अध्यवसायरूप जाणवा ते प्रत्येकें विवरीने कहे हे.

तिहां प्रथम श्रोत्रेंडियना वे प्रकार कहे हे:-देवगुरुना गुणतुं वर्णन श्र ने धर्मदेशना प्रमुख कानें सांजलवां, ते ग्रुज अध्यवसायनो हेतु हे. एथी श्रोत्रेंडियने ग्रुजपणे जोडी हे, माटे तेने प्रशस्तं.श्रोत्रेंडिय कहीयें. तथा जे इष्ट अनिष्ट शब्द कानें सांजली रागद्देष उपजे, ते रागद्देषना वशयकी हीन अध्यवसायें प्रवक्ति चेतन अग्रजकर्म बांधे, तेने अप्रशस्त श्रोत्रें डिय कहीयें.

हवे चकुरिंडियना बे प्रकार कहे है:—देव, ग्रुरु, संघ, शास्त्र, धर्म, ते ना स्थानक जोवे करीने नेत्र पवित्र थाय, तेणें करी ग्रुन अध्यवसाय प्रवर्ते, तेथी ग्रुनकर्मबंध थाय, तेने प्रशस्त चकुरिंडिय कहीयें तथा स्त्रीया दिकना अंगोपांग जोवाथी आत्माना परिण्मि मिलन थायं, ते अप्रस्त चकुरिंडिय कहीयें.

हवे घाणें ियना वे प्रकार कहे हे:—ितहां श्रीश्चरिहंतनी पूजाने निमिनें फूल, केशर, चंदन, वरास, श्चगर, कस्तूरी, कर्पृर प्रमुख सौगंधिक वस्तुने इतर बीजी परीक्षा करीने लीये, श्चथवा गुर्वादिक ग्लानिने माटे पथ्य श्चौ पधादिक लेवां होय, तेनी परीक्षा करीने लीये, तथा साधुने सरस श्चा हारादिक श्चापे, तेवारें शुन श्रध्यवसाय प्रवर्ते. माटे तेने प्रशस्त घाणें दि य कहीयें. श्चने सुगंधें श्चथवा हुगंधें करीने गग देप उपजे, तेथी माते श्चध्यवसायं प्रवर्ते, तेने श्चप्रशस्त घाणें दिय कहीयें.

हवे रसेंड्यिना वे प्रकार कहे हे:—जे रसेंड्यें करीने श्रीतीर्थंकर, िन कि, आचार्य, जपाध्याय, साधु, देशविरति, सम्यगृहष्टि, इत्यादिक गुणीज नोना गुण बोले. पंचिष्य सद्याय करे, गुर्वादिकनी निक्त करे, परने धर्म प्रमाडवा माटे जपदेश आपे, पोतें शास्त्र नणे, बीजाने नणावे, बंचावे, शि खामण आपे, गुर्वादिकने आहार आपवा माटें नात पाणीने जिव्हायें आखादी परीक्षा करी आपे, अथवा प्रतिष्ठा महोत्सवें अष्टोत्तरी स्नात्र महोत्सवें गोल साकर मेवा प्रमुख लेवा पड़े, तेने परीक्षाने आपें जिव्हायें आखादे, अथवा बाल, ग्लान, तपस्ती, थिविर इत्यादिकना आपेधनी परी क्षा माटे जिव्हायें आखादे, जेथकी ग्रानपरिणामें वर्ततो ग्रानध्यवसायी यको रहे तेमांटे तेने प्रशस्तरसेंड्य कहीयें. तथा जे रसनायें करीने रा जकथा, देशकथा, नककथा, स्वीकथा करे अने पापशास्त्र पोतें नणे, बी जाने नणावे, पापोपदेश आपे, ग्रणीने निग्रणी कहे, पंचपरमेष्ठीना तथा चतुर्विध श्रीसंघना अवर्णवाद बोले, पारकी निंदा करे, इष्ट अनिष्ट आहा रादिक आखादतो इष्टनां वखाण करे अने अनिष्टनी निंदा गर्ही करे, एवा राग्घेपपरिणामें वर्ततौ अञ्चन अध्यवसायने योगें अप्रशस्तरसेंड्य कहीयें.

हवे स्पर्शेंडियना बे जेद कहे हे:—जे परमेश्वर परमगुणी एवा श्रीवीत रागदेवनी प्रतिमानी पूजा, स्नात्र श्रानिषेक श्रांगीरचना प्रमुख करवे करी परिणामनी विद्युद्धतायें निर्कारानुं कारण थाय. तेमज श्रीश्रारहंतादिक द शनुं वेयावच करतां गुवीदिकने शरीरें शाता करवा माटें विलेपनादिक क रन्नं, इत्यादिकथी तीर्थंकर नामकर्म बंधाय, माटें तेने प्रशस्त स्पर्शेंडिय क हीयें. तथा स्त्रीयादिकना श्रालिंगन, चुंबनादिक, कुचमर्दन, श्रने शरीरना स्पर्शे, ए सर्व स्पर्शेंडियं करी थाय, तेमज संसार संबंध यापार युद्ध सं यामादिक करवां. ए सर्व श्रपशस्त स्पर्शेंडिय कहीयें.

ए एकेक इंडिय जो वश न होय, तो मृगादिकनी पेरें इःखदाता था य हे,ए महा अनर्थनी हेतु हे. तो जेनी पांचे इंडियो मोकली होय, ते जी व इःख पामे, तेमां छं कहेवुं ? कह्यं हे के ॥ कुरंग मातंग पतंगनृंगा, मी नाहताः पंचिनिरेव पंच ॥ एकप्रमादी स कथं न हन्यते, यः सेवते पंच निरेव पंच ॥ १ ॥ अर्थः-मृगलाने काननो विषय घणो होय, पतंगने नेत्र नो विषय घणो होय, च्रमराने नासिकानो विषय घणो होय, मञ्चने जी ननो विषय घणो होय, हाथीने स्पर्शेंडियनो विषय घणो होय. ए पांचे जा तिना जीवने यद्यपि बीजा इंडियोना विषय तो हे तथापि एकेका इंडिय नी मुख्यता कही देखाडी, एम एक इंड्यिन वश पड्यो थको जीव प्रमा दवशें हणाय है, तो जीव पंचें िं यने वश पड्यो, थकों केम इः व नपामे ? एवं जाणीने इंडिय वश करी राखवी ॥ उक्तंच ॥ मनोनियह जावनाया मि एटले मनोनियह जावनाने विषे कह्यं हे ते कहे हे:-इंदियधुत्ताण श्रहो, तिलतूसिमंपि देसुमापसरं ॥ श्रहदिन्नोतोनीर्ठः, जञ्जिखणो कोडि वरिस समो ॥ १ ॥ • अर्थः - तुं ईिस्यरूप धूर्त्ताने एक तिल तुपमात्र पण मोकला मूर्कीश नहीं. दृद्पऐं जेएो इंड्यि वंश करी है, तेनो एक क्रण ते पण क्रोड वर्ष सरखो जाणवो.

हवे ए पांचे इंडिय दमवा उपर ज्ञातासूत्रमां वे काचवानो दृष्टांत कह्यों है ॥ तृष्टुक्तं ॥ विसएस इंदियाइं, इनंता राग दोस निम्मुक्का ॥ पावंति निवृ इसुदं, कुम्मु व मयंगदद सुर्कं ॥ १ ॥ अवरेणच एव परं, पराच पावंति पा वकम्मवसा ॥ संसार सागर गया, गोमा चयगिसबकुमु व ॥ १ ॥ अर्थः— विषयने विषे इंडियादिकने रुंधता रागद्देपथी मुंकाणा एवा जे जीव, ते

निबुइसुहं एटले मोक्ता सुख पामे. (मयंगदह के०) मृदंगनामा इहने विषे जेम (कुम्मुब के०) कूर्म सुख पाम्यो तेनी पेतें जाएवो. अने (अव करे के०) अपर ते बीजा जीव जेएों इंड्यि वश करी नथी, ते जीव अनर्थनी परंपरा प्रत्यें पामे हे. पापकर्मना वशयकी संसार समुइमां पड़े हे. (कुम्मुब के०) बीजा कूर्मनी पेरें जेम बीजा काचवायें इंड्यि न गोपवी तो तेने शीयालीयें हुएयों ते महाइ:ख प्रम्यों ॥ १ ॥

ते वे कूम्मेनी कथा कहे वे:-वाराणसी नगरीयें गंगाने विषे मृदंगइह एवे नामें इह है. तेमां गुप्तेंडिय अने अगुप्तेंडिय एवे नामें बे काचबा रहे वे. ते मांसना अर्थीयका स्थलने विषे न्हाना महोटा कीटकादिकनुं नक् ण करवाने अर्थे इहची बाहिर निकत्या हे,ते काचबा तिहां वे इष्ट पापी शीयालीयानी दृष्टें पड्या. काचवा पण शीयालीयाने देखी नय पाम्या थका पोताना चारे पग अने कोटने करोटीमांहे गोपर्व। निश्रेष्ट निर्जीवथ का पड़ी रह्या. हवे ते वे शीयाजीया पण तिहां आव्या, अने काचवाने दांतें करी करडवा लाग्या, पण काचबाने दांत नेस नहीं, तेवारें नखें करी हुंदवा लाग्या, तेथी पण काचवाने कांइ इजा थइ नहीं, तेवारें उंचा उढा लीने वली नीचा नाख्या, वारंवार चोख्या, इहांची तिहां अने तिहांची इ हां पटक्या, तो पण काचबाने कांइ थयुं नहीं. सर्व उद्यम निरर्थक थयो जाणीने तें पापी शीयाजीया जेम ते काचवा देखे नहीं एवी रीतें केटलेए क दूर जइ एकांतें तूपी रह्या ते वखत अगुतें इिय काचबायें चपलपणाधी हलवे हलवे पोतानो एक पग बाहेर काढ्यो, वली बीजो पंग पण बाहेर काढ्यो, एम यावत् कोट पण बाहिर काढी, एटले शीयालीया ताकी रह्या हता, तेऐं आवी काचबाना पग त्रोडी खाधा अने सर्व शरीरना खंमोखंम करी नक्तण करी गया. अने बीजो काचबो तो सुप्तेंड्यिपणे हढ थइ रह्यो, चट्यो नहीं. घंणो कालपर्यंत तेवीज स्थितिमां रह्यो. तेवारें ते वे पापीशी याजीया थाकीने पोताने स्थानकें गया. पढ़ी ते कांचवायें कोट काढ़ी चा रे दिशायें शीयालीयाने जोइने तिहांची कुदको मारी शीघपणे इहमांहे जइ पड्यो, पोताने स्थानकें पहोतो. सुखीयो थयो. माटे जे पोताना इंडीयोने मोकली मूके ते अगुप्तें दिय काचवानी पेरें इःखी थाय अने जे मोकली न मूके, ते गुप्तेंडिय काचबानी पेरें परम सुखी थाय.

हवें कपायने प्रशस्त अने अप्रशस्त नेदें करी वखाण तो प्रथम प्रशस्त को ध कहे हे. डिविनीत शिष्यने शिखामण आपवाने अधें गुर्वादिक कोध करे, जेम श्रीकालिकाचार्यजी, प्रमादी शिष्योने सूता मूकी जता रह्या. तेम प्रमादी शिष्यने शिखामण आपवा माटें जे कोध करवो, ते प्रशस्त जाण वो. तथा तेतलीपुत्र मंत्री प्रतिबोधवाने अधें पोटिलदेवें राजा देखाच्यो ते राजाने कोष उपनो, तेथी तेनो व्या करवा तत्पर थयो, तेने कोधधी राख्यो. तथा नीतिशास्त्रमां कहां हे॥ लांलिक्तंतो दोसा,ताडिक्तंतो गुंणा बहू हुंति ॥ गय वसह तुरंगाणव,ता हुक्त सिक्त परिवारो ॥१॥ अर्थः—बालकने घणो लालीयें तथी दोष एटले अवगुण थाय अने ताडना करीयें, तेवारें कोधपण ए उपजे. परंतु तेनाथी घणा गुण उपजे हे, वली हाथी बलद अने घोडा ने वाव्यावस्थायें कोधथी ताडना करी शीखवे हे तथी सुशिक्तित थाय हे, तेम परिवार कुटुंबने पण शिखामण अपाय हे. ए सर्वस्थानकें प्रशस्त कोध जाणवो. तथा कोइ इष्ट पुरुष, श्रीजिनशासननो प्रत्यनीक होय तेने शिखामण देवाने अर्थें कोध करे, ते पण प्रशस्त कोध जाणवो.

हवे अप्रशस्त क्रोध कहे छे:—कलहादिकने विषे जे क्रोध करवों, परजी वने दमवों, व्याकुल करवों,पोताना शरीरने तपाववों,एवो जे क्रोध ते ड्रगे तियें पहोंचाडे, ए अप्रि समान छे. एवो कयो अनर्थ छे के जे क्रोधणी न पामीयें? ते अप्रशस्त क्रोध जाएवो ॥ यतः ॥ डम्मेइ जएंता वेइ, नियत एुनेइ डुग्गइविदि ॥ कोहो जलएुव जए, किमए इ जं क पावेइ ॥ १ ॥

दवे अप्रशंत मान कहे हे:—नमवा योग्य एवा जे श्रीअरिहंतादिक पांच परमेष्ठी तथा ग्रवीदिक तथा माता पितादिक तेमनें नमे नहीं एवो जे अनिमानी होय ते सर्वने अनिष्ट थाय अथवा सर्वने अनिष्टपणुं पाम वानो हेतु थाय. कोइने वझन लागे नहीं ॥ यतः ॥ नासेइ सुयंविणयं, च इस्सइ हणेइ धम्मकाम ॥ गृह्मगिरिसंग लग्गो, नरो न रोएइ पिछणेवि ॥ र ॥ नावार्थः—जे अत्यंत मानी पुरुष होय तेनुं श्रुत नाश पामे. एट ले ते शास्त्रनां रहस्य पामे नहीं. तथा ते विनय ग्रुण ने (इस्सइ के०) इषवे तथा धर्म, अर्थ अने कामने (हणेइ के०) हणे, मानक्ष्पपर्वतना शिखरने विषे वलगो एवो जे (नरो के०) पुरुष ते (पिछणेवि के०) माता पिता प्रमुखने पण (नरोएइ के०) न रुचे वहान न लागे. ए अप्रशस्त मान कहां.

हवे प्रशस्त माननां लक्क्णनुं पिरमाण कहे ने:—जे उत्तम जीवें कोई प्रतिक्वा करी होय, ते आ जन्मपर्यंत निर्वाह करी हूटे जेम उदयनमंत्री प्रत्यें निर्यापनाने अर्थे वंत पुरुषने साधुनो वेश पहेरावीने अंत्यावस्थायें निर्याप्या सहुयें प्रणाम कस्बो, तेवार पत्नी ते वंते साधुवेश मूकी दीधो.

हवे प्रतिका करे, तेनो महिमा कहे वे:—यतः ॥ लक्कागुणीयजननीं ज ननीमिवार्याः मत्यंतग्र ६ हृदयामनुवर्त्तमानाः ॥ तेजस्वनः 'सुखमस्निप संत्यजंति, पत्यंस्थितव्यसनिनो न पुनः प्रतिक्कां ॥१॥ नावार्थः—लक्का प्रमुख जे गुण, तेना समूहनी जणनारी अने अपरमाता समान अत्यंत ग्रु६ हृदयपुक्त एवी प्रतिक्वाने अनुवर्त्तन करनारा एवा जे तेजस्वी पुरुषो वे, तेणे जे प्रतिक्वा करी तंज ध्यान राखी यावत् ने संपूर्ण कार्य करवानिमित्तें पोताना सुखने तथा प्राणने पण त्याग करे वे, परंतु साची स्थितितुंज जेने व्यसन वे एवा जे पुरुष ते पोतानी करेली प्रतिक्वाने वोडता नथी.

तथा हरिचंड्राजानी पेरें आपदा प्राप्त थया वतां अदीनपणुं पण न करे. यदाह ॥ विपद्युचैः स्थेयं पदमनुविधेयं च मह्नां,प्रिया न्याय्या वृत्तिमील नमसुनंगेप्यसुकरं ॥ असंतोनान्यर्थ्याः सुहृद्दि न याच्यः स्वायेनः, सतां के नोहिष्टं विपममित्याराव्रतिमेदं ॥ १ ॥ नावार्थः—आपत्ति आवे वते पण उच्चनाव राखवो तथा महोटा पुरुपना पदनो आश्रय करवो, न्यायनी वृत्तिने वाहाली राखवी, प्राणनाशने समयें पण मिलन कार्य न करवुं. असज्जन पुरुपनी माचना न करवी, निर्धन वतां पण पोताना मित्रनी या चना न करवी, एवं आ विपम असियाराव्रत सज्जनजनोने कोणे बताव्युं वे ? अर्थात् कोइ्यें नहीं. पण तेवो तेनो स्वनावज्ञ वे. तथा दशार्णनद्ररा जायें श्रीमहावीरदेवने वांदवा माटे मान कखुं. ए सर्व प्रशस्तमान जाणवुं. हवे अप्रशस्त माया कहे वे:—जे इच्यनी वांवाग्ने एरवंचना करवी वाणिज्य कलामां तथा इंइजालिकादिकने विपे होय, ते सर्व अप्रशस्त माया जाणवी.

हवे प्रशस्त माया कहे वे:—जे माया करीने आहेडी थकी मृग वगेरेने उ गारवा अथवा कोइ रोगीयाने कटुक औषध पीवराववा माटे माया करवी, तेवी रीतनी माया ते पण प्रशस्त वे. तथा वली कोइक पुरुष दीका लेवा ने तत्पर थयो होय, ते माया केलवीने स्त्रीने तथा माता पिताने कहे, के आज रात्रियें में कुस्वमं दीवुं वे, तेथी जाएं बुं. जे महाहं आयुष्य अ ह्य वे माटें दीक् लेवानी आका आपो, एम कहीने पोतें दीक् लीये, इत्यादिक जे माया ते पोताने अने परने हितकारी जाणवी. तथा सम्य क्प्रकारें यितनो आचार यहण कराववाने अर्थे श्रीआर्यरिक्तजीयें माया प्रयुंजीने पोताना पिताने ग्रुद्ध साधुपणुं पलाव्युं, रखाव्युं, ते माया पण ग्रुज जाणवी ॥ यतः ॥ अमायेनेव जावेन, माययेव जवेत् कचित् ॥ प रयेत् स्वपरयोयेत्र, सानुवंधिद्ताद्यं ॥ १ ॥ जावार्थः-निश्चं अमायी जावें करीने अने क्यांहिक मायीजावें करीने जोवुं जे पोताने अने परने जिहां हितना उदयनुं अनुवंधपणुं होय, तो ते धारवुं, हितोदय करवो.

हवे अप्रशस्त लोन कहे हे:—धनधान्यादिक नवविध परियहने विपे जे अद्यंत सूर्जा राखवी ते अप्रशस्त लोन जाणवो. लोनने वशयको ग्रं करे ? ते कहे हे ॥ यतः ॥ वंचई मित्त कलतं, ना विस्कई माय पीय सयणेयं ॥ मारेई बंधवेविहु, पुरिसो जो होई धण लुदे ॥ १॥ नावार्थः—जे पुरुप धननो लुद्ध होय एटले लोनी होय ते पोताना मित्रने, पोतानी स्त्रीने, वंचे, व गे, हेतरे तथा माता पिता अने पोताना सक्जन तेने पण (नाविस्कई के ०) न देखें, न गणे, सर्वने वंचे अने निश्वं पोताना सहोदर एटले नाई सर खाने पण मारे एवा अनर्थ करतां थकां पण कांई विचारे नहीं.

हवे प्रशस्त लोन कहे हे:— क्वान, दर्शन, चारित्रनो लोन करवो, विन य वेयावच्चनो लोन करवो, शिष्यनो संयह करवो, श्री उमास्वाति वाचकनी पेरें नाना प्रकारना सूत्रार्थनो संयह करवो. इत्यादि सर्वे प्रशस्त लोन जा एवो. ए चार कपायना नेद प्रतिनेद घणा हे ते आगल प्रांत्रीशमी गाथा ना अर्थमां कहेशुं.

हवे त्रण योगनुं प्रशस्त अप्रशस्त पणुं कहे नेः तिहां मनने विषे आ र्नथ्यान अने रौड्थ्याननुं चिंतवन करे,ते अप्रशस्त मनोयोग जाणवो तथा धर्मथ्यान ग्रुक्कथ्याननुं थ्यावनुं, ते प्रशस्त मनोयोग जाणवो.

तथा धर्ममय एवी निरवद्य वाणी मुखयकी बोले, देवग्ररुना गुणतुं मु खथी वर्णन करे, ते प्रशस्त वचनयोग जाणवो. तथा ए चोर हे, ए जार हे, इत्यादिक पापमय वाणी बोलवी, ते अप्रशस्त वचनयोग जाणवो.

तथा उजमाल थइने धर्मनी करणी करे, दाई पुष्य पूजाने विषे उजमा

ल थाय, ते प्रशस्त काययोग जाणवो छने विषयसेवा करवी, छगटुं रमवुं, सात डुर्व्यसनादिक सेववां, ते छप्रशस्त काययोग जाणवो.

द्वे 'रागेणव दोसेणव 'ए गाथाना मूलपाठनो अर्थ करे छे:— तिदां रागें करीने ते रागना त्रण चेद छे. कामराग, दृष्टिराग अने स्नेहराग, एवा त्रण राग जाणवा. तिहां काम राग ते स्वी सेवाने विपे जेम श्रीजंबूस्वामी ना जीव चवदतें पोताना चाइना दाहिण्यथकी अर्थपरिणीत नागिलनामा स्वीने छोडीने चारित्र लीधुं पण पाछो कामरागने वश होवाथी चारित्र छोडी तेज स्वीमां आसक थयो. माटें कामराग इर्निवार्य छे. हवे स्नेह राग कहे छे, ते जेम पोताना स्वजन धन धान्यादिकने विपे स्नेह राग छे, तथा दिगम्बर मतनो प्रवर्चावनार शिवजूतिने पोतानी उत्तरा नामें बहे ननी उपर जे राग ते पण स्नेह राग जाणवो. तथा दृष्टिराग ते शाक्यम तादिक कुदर्शनीयाने विपे जे राग ते दृष्टिराग कहीयें. ते दृष्टिराग महाव लवंत छे, उत्तमपुरुपोने पण इःखें तजवा योग्य छे. जेम प्रनावती राणीनो जीव देवता थयो छे, तेणे घणे कप्टें करी तापसना चक्त उदायीन राजाने प्रतिबोध्यो. तथा चाहुः श्रीहेमाचार्याः ॥ कामरागस्नेहराग, वीपत्करनि वारणे ॥ दृष्टिरागस्तु पापीयान, इरुबेदः सतामि ॥ १ ॥

जावार्थः— कामराग अने स्नेहराग ए वे निवारवा सुलज्ञ हे, पण दृष्टि राग ज़े हे; ते पापीयों हे, माटे ते सत्पुरुपने पण टालवो इःक्कर हे.

तेम हेषें करीने एटले हेप ते अप्रीति तेणें करीने गोष्ठामाहिलनी पेतें जाणवो तथा "रागेणव दोसेणव " इहां वा शब्द जे हे ते विकल्पार्थवा ची हे, ते वाझब्दैथी विकल्पने अर्थे रागहेष प्रशस्त अप्रशस्त रूपें हे.

तिहां रागना वे प्रकार कहे हे:—स्त्रीयादिकने विषे जे राग, ते अप्रश्न स्त राग किह्यें अने श्रीअरिहंतादिकने विषे जे राग करवो, ते प्रशस्तराग जाणवो. श्रीगौतमस्वामीनी पेतें ॥ उक्तं च ॥ अरिहंते सुयरागो, रागो साहूसु बंजयारिसु ॥ एस पसन्नो रागो, अस सरागाण साहूणं ॥ १ ॥ जावार्थः—श्रीअरिहंतने विषे जे राग राखवो,तथा साधुने विषे अने ब्रह्मचारीने विषे जे राग राखवो, ते राग सर्व प्रशस्त जाणवो, एवो राग राखनार (अस के०) जे आर्थ ते सराग संयमी साधु जाणवो ॥

हवे देपना बे प्रकार कहे है:-तिहां पापाणादिकने विषे जे देप कर

वो, ते तथा दास, दासी आदिकनें विषे जे देव ते अप्रशस्त देव जाण वो तथा माठा कर्मप्रमादने जीतवा माटे कर्मक्य करवाने विषे देव कर वो, जेम इःकर्म प्रमादादिकने जीतवा माटे उजमाल थयेला श्रीवीरजग वाननी पेठें देव करवो, ते प्रशस्त देव जाणवो॥

आशंका:- राग, देप,ए बेहु प्रथम कहेता चार कपायमां जलेताज हे, तो वली जूदा शा माटें लीधा? तिहां कहे हे, के राग, देप, ए वे किशेप ख नर्थना हेतु हे, तेमाटें जूदा निधा हे, अने वली ते अत्यंत इःखें जीताय तेवा है माटें राग हेप है ते नावकर्म है अने क्रोधादिक कपाय तो इव्य कमे हे ॥ उक्तं च ॥ जं न लहइ सम्मत्तं, लहुएांवि जं न एइ संवेगं ॥ विस यसुहे सुय रक्कइ, सो दोसो राग दोसाणं ॥ १ ॥ नावार्थः-जे रागरोप, जीवने समकेतपणुं पामवा न दीये, अने जो समकेतपणुं पामे तो पण संवेगपणुं पामवा न दीये, कारण के रागी देवी जीव होय,ते विपयसुखना सुखमां रक्त रहे, माटे ते (दोसो के०) दोप एटले अवग्रण सर्व राग अने देपनो जाणवो ॥१॥ तथा ॥ राग देपो यदि स्यातां, तपसा किं प्रयो जनं ॥ तावेव यदि न स्थातां, तपसा किं प्रयोजनम् ॥ १ ॥ जावार्थः-जो सत्तामां रागद्देप हे, तो तप करवानुं द्यं प्रयोजन हे ? अने जो रागद्देप नथी रह्या तो पढ़ी तप करवानुं पण ग्रुं प्रयोजन हे ? ए राग देप तथा पू वें कह्या जे इंड्यिकपायादिक (तं के०) ते सर्वने (निंदे के०). निर्डे बुं, गर्ड्ड बुं, खालोवुं बुं. इत्यादिक पूर्ववत् कहेवुं॥इतिचतुर्थ गायार्थः॥४॥ हवे दर्शनना अतिचार पडिक्कमे हे:- .

> ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे आणां नीगे॥ अनियोगे नियोगे, पडिक्रमे देसियं सबं॥ ५॥

अर्थः—(आगमणे के॰). मिथ्यादृष्टियोना रथयात्रादि महोत्सव दे खवाने अर्थे कुतूह्र के करीने तिहां आववुं एमज ते मिथ्यादृष्टिनाज रथयात्रादिक महोत्सव जोवाने अर्थे पोताना, घरथकी (निगमणे के॰) निकलवुं तथा मिथ्यादृष्टियोना देवगृहादिकना (वाणे के॰) स्थान कने विषे चनुं रहेवुं तथा चपर चडवुं, (चंकमणे के॰) तिहांज पुनः पुनः परिच्रमण करवुं, तिहांज नमतुं रहेवुं, चपलक्षण थकी बेसवुं, आसन शयनादिकनुं करतुं तेथी जे अतिचार दोष लाग्यो होय, ते आलोठं बुं. जेमाटें श्रावकने अन्यदर्शनी कुतीर्थीं उना तीर्थने विषे जोवा जातुं निषेध्यं हो, तेनी उपर दृष्टांत कहे हे ॥ यतः ॥ वेसागिहे सुगमणं, जहा निसि हं तहा कुलं वहुणं ॥ जाणावि तहा सावय, सुसावगाणं कुति हेस ॥ १ ॥ नावार्थः—जेम वेश्याना घरने विषे गमन करतुं कुलवधूने निषेध हे, तेम श्रावकने पण जाणो. जे श्रावक सुश्रावक होय, नावश्रावक होय, तेने कुतीर्थींने देहरे जातुं निषेध हे ॥ १ ॥

हवे ए आगमन निगमन शायकी याय? ते कहे हे:— (आणानोंगे केंगे) अनानोंगंथी एटले अनुपयोंगें प्रमाद वहों करी समकेतने विषे उपयोंगं न रहे, तेवारें कुतीर्थाने देहरें गमनादिक याय, तेथी अतिचार लागे. परंतु जो उपयोग हते गमनादिक करे, तो अनाचार थाय. तथा (अनियोंगे केंगे) राजादिकना अनियोगादिने बलात्कारें कुतीर्थें आगमनादिक थाय, ते रायानि उगेणं इत्यादि ह आगार हो. तेमां एक राजादिकना परवशपणे जवुं पड़े, ते रायानि उगेणं. बीजो सगासंबंधीना समुदायना परवशयकी जा वुं पड़े, ते गणानि उगेणं. त्रीजो राजथकी व्यतिरिक्त बलवंतना परवशयकी जावुं पड़े, ते वलानि उगेणं. चोथो इप्टदेवताना परवशयकी जावुं पड़े, ते वलानि उगेणं. चोथो इप्टदेवताना परवशयकी जावुं पड़े, ते देवानि उगेणं. पांचमो गुरु जे माता, पिता, कलाचार्य, प्रमुख वडेराना ब लात्कारथी जावुं पड़े, ते गुरुनिग्गहेणं ॥ यतः ॥ माता पिता कलाचार्य, एतेषां ज्ञातय स्तथा ॥ ह्या धर्मोपदेष्टारो, गुरुवर्गों सतां मतः ॥ १ ॥

नावार्थः माता, पिता, कलाचार्य, तथा पोतानी ज्ञातिनां जे मुख्य होय ते, तेम वली हर्द्धं ते धर्मना उपदेशक एटला पुरुषने गुरुवर्ग किह्यें. ए पां चमो श्रागार तथा छठो डर्निक्हादिकने विषे सर्वथा निर्वाह चलाववाने माटे जवुं पडे, ते विनिकांतारश्रागर ए प्रमाणे. श्रिन्चोगनो श्रर्थ कह्यो.

हवे (नियोगे के॰) नियोग ते श्रेष्ठिपद्वी अथवा प्रधान पदवी आ दिक अधिकार आवे थके. जे मिण्यात्व सेवे, ते अतिचार जाणवो. शेप, प डिक्कमे इत्यादिकनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो. ए रीतें दर्शनना अतिचार कह्या.

हवे सामान्यपणेज व्याख्या करे हे:-जेम अनुपयोग पणे घरथकी तथा हाटथकी आववुं, जवुं, अथवा हाटने पगे लागी वेसवुं, तथा काम पढे थके अन्यतीर्थीने प्रणामादिकनुं करवुं, तथकी अतिचार अथवा असावधा नपणे कुतीर्थने विषे जवुं श्राववुं, ययुं होय, तिहां पंचें दियना यथना हेतु नो पण संजव हे माटे सर्वजावें करी श्रावकोने त्यां जवुं निषद करेतुं हे. तथा राजादिकना श्रज्ञियोगपणाथी स्विनयम खंमनादिक थाय तथा नियोग शेव मंत्रिश्रादिकनी पदवी मले थके जवुं पढ़े, ते दर्शनना श्रितचार, शेप श्राला वो पूर्वपरें जाणवो. एम क्रानातिचार श्राश्रयी पाहली गायायें व्याख्या करी. तथा दर्शनातिचार श्राश्रयी पण-सामान्यपणे व्याख्या कही॥ इति॥ ५॥

हवे समकेतना पांच अतिचार पिडक्समवाने गाया कहे हे:-संका कंख विगित्ता, पसंस तह संघवो कु िंगीसु ॥ संमत्तसईयारे, पिडक्समे देसियं सबं ॥ ६ ॥

अर्थः-एक धर्मने विषे शंका राखवी, बीजो कांद्वा ते अपरधर्मने विषे अनिलापा करवी, त्रीजो धर्मना फलनो संदेह राखवो ते वितिगिन्ना, चोथो मिष्यात्वीनी प्रशंसा करवी, (तह के०) तथा पांचमो कुर्तिंगी मिष्यात्वीनो संस्तव ते परिचय करवो, ए समकेतना पांच अतिचारने पडिक्कमुं बुं. दि वससंबंधि इत्यादि पूर्ववत्. तिहां दर्शनमोहनीय कर्मना ऋयोपराम यकी उदय पाम्यो जे आतमपरिणाम तेथी वीतरागें कह्या जे जीवादिक तत्त्व तेनी उपर ग्रु इश्रदानरूप जे आत्मानो ग्रुन परिणाम तेने समकेत कदीयें. सिद्धंचाशिकासूत्रवृत्ति, तथा सिद्धप्रानृतवृत्ति, धर्मरत्नवृत्ति, कर्म यंयसूत्रवृत्ति, दिनकृतवृत्ति आदिक अनेक यंथोमां कह्यं वे. तथा पूज्यश्री देवेंइसूरियें कहें। हे ॥ जिय अजिय पुस्पपावा, सवसंवर बंध मुरक निक्तर णा ॥ जे ण सदद्ध तयं, सम्मं खइगाइ बहुचेयं ॥ १ ॥ श्रम्यत्रापि ॥ जीवा इ नवपयं के, जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं ॥ नावेण सद्दंतो, अयाण मा णेवि सम्मनं ॥ तथा त्रण.तत्त्वना अध्यवसाय ते समकेत कहियें ॥ उक्तं च ॥ खरिहं देवो गुरुणो, सुसाहुणो जिणमयं मह पमाणं ॥ ३चा६ सुह नावो, सम्मनं बिंति जगगुरुणो ॥ १ ॥ नावार्थः-देव श्रीश्ररिहंत, गुरु सुसाधु, धर्म ते श्रीजिनेश्वर नगवानप्ररूपित. ए त्रण तत्त्व मुफने प्रमाण वे, इत्यादिक ग्रुननाव होय तेने जगतना ग्रुह समकेत कहे वे.

समकेत ते श्रीवीतरागना धर्मनुं मूलनूत हे, ज्रेमाटे इविहेणं तिविहेणं इत्यादि नांगे श्रंगीकार करवे करीने श्रावकना बार व्रत ते समकेतादिक

उत्तरगुण रूप वे नेदें करी युक्त तेने आश्रयीने तेरहों कोडी उपर चोराशी कोडी ते उपर बार लाख सत्तावीश हजार श्रने बसें, एटला उत्तरनेद नां गा थाय, ए नांगामांहे केवल समकेत ते प्रथम नांगो जाएवो. पए ए सम केतविना एके नांगानो संनव थाय नहीं. एटला माटें कहां ने के ॥ मुलं दारं पइन्नाणं, छाहारो नायणं निहि॥ इगन्नकस्सवि धम्मस्स, सम्मत्तं परिकितियं ॥ १ ॥ एनुं फल छा प्रमाऐं कहे हे: छंतोमुंहुत मित्तंपि, फासियं जेहि हुं क सम्मनं ॥ तेसिं अवह पुंगाल, परिश्रहो चेव संसारो॥ ॥ १ ॥ सम्मिर्द्धि जीवो, गञ्चइ नियमा विमाणवासीसु ॥ जइवि नगय समत्तो, श्रद्धव न बदावर्च पुर्व ॥ ३ ॥ जं सक्कइ त किरई, जं च न सक्कइ त यंमि सद्दर्णा ॥ सद्दरमाणो जीवो, पावइ अयरामरं गणं ॥ ४ ॥ आ त्रण गाथामां पदेली गाथानो अर्थ सुतन हे अने बीजी तथा त्रीजी गा थानो नावार्थ कहे हे:- सम्यगृदृष्टि जीव जो समकेतथी पड्यो न होय तो अथवा समकेन प्राप्तिथी पहेलां परनवनुं आनुषुं न बांध्युं होय तो निश्चें वैमानिकवासी देवोमां जइ उपजे ॥ २ ॥ जेहवी शक्ति होय तेवी न पः क्रिया करे अने जो क्रिया करवानी शक्ति न होय तो धर्म उपर साची सद्दल्णा राखे, सद्दल्णा करतो जीव अजरामर स्थानक पामे ॥ ३ ॥ ६ ॥

हवे ए सम्यक्ति। जपर जय अने विजयराजानी कथा कहे हे:— आ जंबुद्दीपना जरतकेत्रने विषे स्वर्गपुरीनी स्पर्धा करे एवं, विश्वने आनंद उपजावनारुं नंदिपुर नामें नगर हे, तेने विषे दोःस्थ्य, दोर्नाग्य, द रिष्टीपणुं इःखदोर्निकादिक सर्व जयना समूह क्ष्य थड़ गयां हे, अने ते सर्व संपदानुं आस्पद केतां स्थान हे. त्यां श्रीधर्म नामें राजा राज करे हे. सर्व शत्रुने त्रास पमाडनार ते राजा न्याय, धर्में करी राज्य, तथा प्रजाने पाले हे. याचक लोकने संपदा आपवाथी प्रियमेलक यक् सरखो हे. तेने र श्रीकांता, १ श्रीदत्ता अने ३ श्रीमती, एवे नामें त्रण पट्टराणीयो हे. ते मां श्रीकांतानो पुत्र जय अने श्रीदत्तानो पुत्र विजय ए वे अतुल पराक मवाला हे, अने बालपणाथीज जाणीयें पाहला जवनुं समिकत लेता आ व्या होय निहं ? एवा हे, तेथी पाहला जवने रंगें रंगाणा हे. सरखा आ कारवाला तथा सरखी व्यवाला विद्या, कला, आचार तथा गुणें करी स रखी क्रिवाला हे. ते वे नाइ जाणीयें वे नेत्रज होय निहं. कहेलुं हे के, माह्यो पुरुष, हाथने उपकार करवातुं, स्त्रीने सत्त्वपणुं, जागा श्वानने बल, जी जने बोलतां माहापण, श्रांखने सखीपणुं शीखवे, ए सत्पुरुषनां लक्क्णहोय.

हवे प्रकृतियें करीने छुमैति एवी त्रीजी जे श्रीमती नामें राणी हती ते ने पुत्र थयो. ते न्यायमार्गने विषे बुिह्मान है, तेनुं नयधीर एवंनाम स्थाप्युं, ते जेम कादववाली धरतीने विषे कमल उत्पन्न थाय, ते जेवी शोजाने पामे, तेम श्रीमतीने नयधीर पुत्र शोजतो हवो.

हवे जय विजयनुं पुष्य अतुंल हे, तेणें करी प्रजानो राम विशेष देखीने शोक्यपणाना मत्सरथी ईच्यों करती, देप धरती एवी श्रीमती चिंतवती हवी, जे ए वे जाइ जेगा मली रहे हे, तेनी आगल मारा पुत्रने दासीना पुत्रनी तोलें पण कोइ गणतुं नथी, त्यारें वली राज्यनी आशा तो क्यांथी ज ? जय, विजय हते मारा पुत्रने राज मलवुं दोहिलुं हे, एटलामाटे एवं करूं जे महारा पुत्रने राज्य मले, पण ज्यांसुधी ए वे जीवता होय, तिहां सुधी न मले! एवो विचार करीने ए वेने मारवानो छपाय चिंतवे हे, तेमनां हिड़ो छए हे, पण कोइ हिड़ हाथ आवतुं नथी, तेमाटें दिन दिन इवली याती जाय हो. मुखें अन्न, पाणी न रुचे, रात दिन, निड़ा नावे, मुखें निसासो मूकती, रात दिवस फूरती, इःख अनुजवती रहे हे.

अन्य दिवसें कामण टुमण करवावाली एक तापिसणी पारिवाजिका श्री मती पासें आवी, ते तेने वश करवा माटें कहेवा लागीं के, तुमने शुं इःख हे ? श्रीमती पण तेना खावा पीवानी घणी खबर राखती तथा पारिवाज काने घणी रीफ पमाडती वश करती हवी. एम एक एकने वश करती श्रीम तीना कह्याथकी तेना मननी वात जाणीने मुखें मधुरुं बोलती पारिवा जिका कहेवा लागी के, हुं एवं करीश के, तारा पुत्रनेज राज्य मलशे. एम कही घणो विश्वास पमाडी पोताने वेकाणे गइ.

हवे पारिव्राजिका अनेक मंत्र, चेटक, मोहन, उच्चाटन इत्यादिक अने क शक्तियें करी राजाने स्वप्तमध्यें एम कहेती ह्वी जे हुं राज्यनी अधिष्ठा यिका देवी बुं, तारा हितने काजें कहुं बुं, माटें तुं सावचेत पणे रहेजे. तारा जय विजय कुमार, तुजने थोडा कालमां हणीने तारुं राज्य केज़े. ए वे तारा वैरी हे, तुजने ए वे डर्जय हे, जाणीयें नवा कोइ दैत्य उदय पाम्या होय नहिं ? एम जाणजे. ते माटें तारें ए वे मारवा घटे हे. वेरी

अने रोग ए बेहुने मूलमांथी उखेडी नाखवा, ए नीति है. तारा हितने अर्थे हुं जणाववासारु. आवी हुं. पही तुफने जेम सूफे, तेम कर, हुं तो कहे नारी हुं. एम स्वप्नमध्यें कही गई, एटले राजा जाग्यो, उज्ञाट करतां श्री मती पासें गयो, अने स्वप्ननी सर्व वात मांनीने कही.

राणीयें कहां में पण एवं स्वप्त दीवुं के, ए वात सत्य के. एवी वात राणीना मुखयी सांजलीने राजा अति ख़ेद करतो यको चित्तमांहे चिंत ववा लाग्यो जे पुत्र तो ए वे उत्तम के, महासत्त्वना धणी के, राम केशव सरखी जोड के, तेमाटें एनाथी ए अकार्य पण याय नहीं. तेम ए देवीचं स्वप्त ते पण जुहुं होय निहं! वली पुत्र पण मराय नहीं! अने माखा विना चाले पण निहं! एटला माटें एके तरफनो विचार स्राफतो नथी! ते वखत राजाने एक तरफ नदी ने एक तरफ वाघ, एवं ड्वंट ययुं. माटे हवे केम करवं ? शास्त्रमध्यें एम कह्यं के के,विपन्नं हक्त पोतें हाथे वावी महोटं कर्खं होय, तो ते पोताने हाथे बेदवं घटे नहीं, तो आ साक्वात कल्पतृक्त सरखा पुत्र के तेने महाराथी केम मराय? अने एनो विश्वास पण कराय निहं. तत्का ल केटलो एक विचार करी निश्वय कर्खो जे ए वे जाइने महारे दशवर्तीं करं, वंदीखाने राखं, बूटा राखं नहीं, एटले मुफने कांइ जय रहेशे नहीं.

हवे प्रनातें राजा सेनामांहे आवी वेगो, तेवारें जय विजय वेहु नाइ राजाने प्रणाम करंवा आव्या, तेवाज पोलिये रोक्या, त्यारें दीनमन करी चिंतातुर थया थका, मौनपणुं धारीने तिहांथी पाठा वव्या. वेहु नाइ वि चार करवा लाग्या के, आपणे कशो राजानो अन्याय कथो नथी, अवि नय कथो नथी, 'कशी अवङ्गा पण करी नथी, के जेथी राजायें आप णने अपमान दीधुं! आपणी अवङ्गा करी, एटलामाटें आपणे इहां रहेवुं घटतुं नथी ॥ यतः ॥ मा जीवतु परावङ्गा, इःख़दःधस्तु योजनः ॥ तस्या ऽजननीरेवास्तु, जननी क्षेत्रकारिणी ॥१॥ जावार्थः—परनी अवङ्गानामा इःख्यी दग्य थइने जीववुं ते करतां मरवुं सारुं ठे अने जे परनी अवङ्गा यया ठतां पण जीवे ते पुरुषनी माताने माता न जाणवी अर्थात् माताने क्षेत्रकारी जाणवी. एटलामाटें आपणने अवङ्य स्वेद्धायें देशांतरें जवुं, अर्दीं पराधीन एटले परवशपणे कोण रहे. देशांतर जवाथी शुनाग्रजनी परीक्षा पडे हे, तेमाटे देशांतर जोवाना मनोरथ आपणा पूरा करवा. वली

राजा पण पोताना पुत्रना अनिमानपणानो नाव ग्रुं जाणे जे में पुत्रने अपमान दीधं हतुं? जेमाटें शास्त्रमां पण कह्यं हे केः→

॥ त्रयः स्थानं न मुचंति,काकाः कापुरुपा मृगाः॥ अपमाने त्रयो यांति सिंदाः सत्पुरुपा गजाः॥ अर्थः—अपमान ययायी त्रण जणा स्थानक न मूके. कागडा, कापुरुप ते मूर्खपुरुपो, अने मृगजां. तथा सिंद सत्पुरुप अने दायी, एं त्रण जणा स्थान मूकी आपे हे. वजी एम विचारता दवा के, कांइक अपर मातायें पितानुं चित्त निश्चय फेरच्युं हे, तेणे करी पितायें आ पणो अनादर कस्नो, पण आपणो पिता कांइ एवो हे निहं. पिता तो सरज हे, कपटरित हे. परंतु ए हक्को तो पितानेज घटे हे. एवं विचारीने सिंद्धारें आवीकांइक युक्तियें करी अन्योक्तियी अनुक्रमें त्रणकाव्यें करी उंजंनो जख्यो.

॥ तुनेऽवनेपं सहसे वृथेवं, समं प्रमाणं निखिलान्नयेऽहम् ॥ गुरूनथं सादगुरुन्यड्यान्, करोष्यगेपान् कुटपत्समांश्र ॥ १ ॥ रत्नानि रत्नाकरं मावमंस्था, महोर्मिनिर्ययपि ते बहूनि ॥ हानिस्तवैवेह गुणेस्विमानि, जा वीनि जूवल्लनमोलिजांजि ॥१॥ नचेष दोपस्तव किन्तु कस्या, प्यन्यस्य यः हो जकरस्तवापि ॥ गुणोयवाऽयं कथमन्यथास्ति,तेषां गुणेः स्वैमीहमप्रवृत्तिः॥३॥ अर्थः — हे तुले ! सर्वनुं सरखुं माप हुं करुं हुं, एम अनिमान तुं कर नहिं. कारण के तुं महोटा पदार्थने नीचा करे हे, अने हलकाने उंचा करे हे. अने वली ते सारा पदार्थोने कूटपापाणनी समान करे हें ॥१॥ हे रत्नाकर ! यद्यपि घणां रत्नो होवाथी महोटा एवा तारा तरंगोयें करी अनिमान आणी तुं रत्नोनुं अपमान कर नहिं. जो अनिमान आणीने एम जाणीश जे मारे घणां रत्नो हो, तो तेमां तारुंज अपमान थाशे, कारण कै ते ताराथी अपमान पामेलां रत्नो तो महोटा एवा राजानेना मुकुटमां जइने रहेशे ॥ १॥ तेमां काहिं तारो दोप नथी. परंतु को अन्यक्तदोप जे हे, ते तुने होन करनारो थयो हे. नहिं तो गुण जे हे, ते अन्यथा केम थाय ? अने ते स्त्नोने तो पोताना गुणोयें करी पोतानी महिमानी प्रवृत्ति थइ हे.

एवा त्रण श्लोक सिंह्हारें लखी सिंह्नी पेतें.साहसिक थया थका बे हुजणा बाना सांज समे नगरथकी निकलता हवा. एवे नगर बहार जिहां नित्य मिणना दीवानो प्रकाश हे एवा श्रीशांति नाथना प्रासादने विषे आ वी परमेश्वरने नमी, परमेश्वरनी स्तुति करवा लाग्या.

॥श्लोक॥ नित्यानंदपदप्रयाणसरणी श्रेयोविनिःसारिणी, संसाराणवताः णैकतरणी विश्विवित्तारिणी। पुण्यांकूरनरप्ररोद्दधरणी व्यामोद्द संदारिणी, प्रीत्ये कस्य न ते खिलार्तिदरणी मूर्तिमेनोद्दारिणी॥१॥ अर्थः—निरंतर आनं दपदना प्रयाणना रस्तासमान, कल्याणने विशेषें करी उत्पन्न करनारी, संसार समुद्द तारवामां नावसमान,विश्वनी क्रिने विस्तार करनारी,पुण्यरूप अंकूर नरना प्रकट करवानी प्रथ्वी,व्यामोद्देने संद्दार करनारी,अखिलाआर्तिने नाश करनारी,मनोदरं,एवी अरिदंतनगवाननी जेमूंर्ति,तेकोने प्रीतिनेमाटे न थाय?

ए रीतें स्तुति करी आगल प्रयाण कखुं. दूर गया थकां थाका, एवामां एक वड खाब्यो, ते वड हेवल विश्राम कहां. त्यां रूडी जगा जोइ पथारी करी, बेहु जणा स्ता. एवामां विजयकुमारने निज्ञ आवी ने जयकुमार जागे हे. एवा अवसरनेविषे ते वड उपर यक्त अने यक्तिणी रहेतां हतां. तेमांथी यक्तिणी यक्तने कहेवा लागी के हे प्राणनाथ ! याज यापणे आंगणे प्राहुणा उत्हा है, ते उत्तम है, एमनी घणी निक्त युक्तियी करवी घटे हे. प्राहुणो सर्वने सर्वथा प्रकारें पूजनीय होय. आपणा आज पूर्वजव ना पुष्यनो उदय श्रयो, त्यारें त्रण जगतमांही जेनी ख्याति हे, एवा राज क्वंवरो आव्या है. माटें केम निक करता नथी ? ते सांनजीने यक्त, यिक् णीप्रत्यें रूडी वाणीयें करीने कहे वे के तें रूडुं कह्यं ? आपणी पासें अमू व्य त्रण दिव्य वस्तुं हे,ते छापीने छा प्राहुणानी निक करीयें. एक तो महा मंत्र नित्यप्रत्यें सूत्रपातें सात वार जणवो,एम सात दिवस जगण मन,वचन, कायानी ग्रुक्यें करी गुणे,तो ए मंत्रना प्रनावधी सातमे दिवसें महा राज्य क्तिनो अधिकारी याय. बीजो मिण वे तेनो मिहमा कहे वे. एना प्रनाव थी जेवुं वांबे, तेवुं रूप थाय, आकाशमार्गे चाल्यो जाय अने वली सर्व जातिनां विष टले,तथा चिंतित क्रि पमाडे अने वांतित नोजनादिक सर्व आपे. ए मिणनी प्रार्थना करवाथी एटली वस्तु पामे. त्रीजी एक महोटी म हा औषि वे तेनो महिमा कहुं बुं. शस्त्रना नय, अग्निना नय, सर्पना नय, तथा जूतिपशाचादिकना दोपनी हरनारी ए श्रोषधी हे तो हे स्त्री! ए त्रणे दि व्य वस्तु हे,ते आपीने ए प्राहुणानी निक करीयें. हे प्रिये! ए त्रण जगतमां सार वस्तु हे. एवं संजलावीने जयकुमारने हर्षसहित ते त्रण वस्तु आपतो हवो. जेनुं नाम्य त्रण जंगतंने विषे आश्चर्यकारी वे तेने हुं इर्जन वे? ए त्रण

वस्तु पामीने महा श्रोषधीने माहात्म्यें करी निरुपड्व थयो थको निश्चित थइ निर्नयपणे सुख्यी स्तां, ते उंघ्यो. श्रवुल पुष्यना धणीने क्यांथकी नय होय ? हवे पाढली रात चार घडी रही तेने ब्राह्ममुहूर्न कहीयें ते वखत ते जाग्यो. जेम बाप दिकराने हेत करे, तेम जयकुमरें विजयकुमरने जगाडीने यक्ता प्राहुणानिकतुं वृत्तांत कह्यं. विधिसहित राज्य पामवानो मंत्र ते विजयकुमरने जोइयें. एवं चिंसवीने मंत्र श्रापतो हवो. निष्कपटपणे विज यकुमार ते मंत्र लेइने एम चिंतवतो हवो के महोटो नाइ जयकुमार हे माटे जयकुमारने राज्य होवुं जोइयें. एम विचारीने जयकुमारने श्रत्यंत वि नय सहित कहेतो हवो,के हे बंधो ! राज्यने योग्य तमें हो श्रने हुं तमारी सेवाने योग्य हुं. रामचंड्जी श्रागल लक्क्षणनी पेते हुं हुं. राज्यनो धार क तो महोटो नाइज होय, हुंतो तमारो श्रवुचर हुं माटे मंत्रजाप करो.

हवे विजयकुमरने राजनी क्रिक्ष देवा वांवतो एवो जयकुमर हर्षे करी बोख्यों के हे आर्य ! तुं राज्य योग्य नथी अने हुं राज्य योग्य हुं, ए केम घटे ? आपणे वेंद्र राज्य योग्य वैयें. एवो न्याय वें,माटे आपणे वेंद्र जण जाप करीयें, जेथी आपण वेहुने राज्य होय. ते वात विजय कुमारें अंगीकार करी जयकुमारनी आङ्गायें विजयकुमार जाप करतो ह्वो. अने जयकुमार तो मात्र विजयने प्रतीत उपजाववा जाप जपतो ह्वो. पण हृदयमां मंत्रजप तो नथी. किव कहे ने के स्नेहनी धीरता जूर्र कहेवी ने? विजयकुमारें तो महोटा नाइना कहेणची मर्यादा सहित जाप कहारे. न्हानो होय ते म होटानुं कह्यं करे. एवी सत्थापना करतो थको सात वार मंत्र जप्यो. एम करतां प्रनात काल थयो एटले वेहु जणा चाव्या जायं खे, जतां जतां मार्गने विषे विजयकुमारने थाकी गयेलो देखीने जयकुमार चिंतववा ला ग्यों जे एवो कोण मूर्ख दे जे निःकारण कायाने इःख उपजावे ? वली सुखसामयी पामे वते चालवाना इःखनो सेवनार थाय ? एम विचारीने ते महामणिने पूजी प्रार्थना करीने विद्याधरनी प्रेरें आकाश मार्गें स्वेज्ञा चारि गतियें चाव्या. विविधप्रकारनी तीर्थयात्रा करतां पोतानो जन्म रुता र्थ मानता ह्वा. नानाप्रकारनां कौतुको जोता अनुक्रमें बेहु नाइ दूर देशांतरें निकली गया. ग्रुन पुल्यना उदयथकी ग्रुं न संनवे ? एमज ते महा मिए ना प्रनावषकी इक्षित जोजनादिकने करवे करीने धे जाइ सर्व स्थानकें सर्वीमें सुख जोगवता स्वेष्ठायें आकाशमार्गे विचरता नानाप्रकारनां आश्चर्य जोता सूर्यनीपेरें चालता सातमे दिवसें प्रजात समयें कामपुर नामें नगरें आब्या. ते नगर क्रियें करी देवलोकनी स्पर्की करतुं, घणा जिनना प्रा साद तेना शिखरें करी शोजतुं एवं हे, तेने देखीने मार्गने खेदें आंबाना वन मां एक फत्याफूव्या आंबाना तृक्ती नीचें बेता. जयकुमारनी आङ्गा मार्गी विजयकुमार पण तिहां वेसतो हवो. त्यारें जयकुमार चिंतववा लाग्यों के, आजे सातमे दिवसें जाप पूरों थयों हें, तेथी ए आज अवस्य राज पामशें. एटलामाटें जो हुं इहां रहीश तो मने महोटो जाइ जाणी ए रा नय खेशे नहिं, सुफने बलात्कारें प्रसन्न थइने राज्य देशे; केम के ए नि तिनो जाण हे, एटलामाटें सुफने एनी पासें रहेवुं घटतुं नथी. एवुं विचारी जयकुमार कांक्क मिप करीने शीघपणे तिहांथी निकत्यों आहो ! महोटे रानी निःस्प्रहता जूरी. कहेवी हे जे पोते न लीये, अने जाकने अपावे हे ?

हवे ते नगरनो राजा अपुत्रीयो मुड, तेथी मंत्री आहि सर्वे मलीने प्रजातें हाथी, घोडा, ठत्र, चामर, कलश, ए पंच दिव्य प्रकट करीने नगर मां फेरव्यां. पण राज्यने योग्य कोइ न मत्यो, त्यारे सर्वे नगर बहार वि जयकुमार पासें आव्या. ते विजयकुमारने पुण्य प्रेखुं थकुं ठत्र विकस्वर थयुं. हाथीयें गर्जारव कखो, घोडे हेपारव कखो, कलश एनी मेले ढत्यां, वे पासें चामर विंजाणां,ते समयें उंचा पुरुपने उंचुं स्थानकज योग्य हे ए वुं जाणीनेज जापो होय नहीं? तेम हाथीये सुंहें करीने पोताना होद्दा मां बेसाड्यो, शृंगार आप्यो,त्यारें सर्वे प्रजा प्रणाम करवां लागी.

हवे राज योग्य ए राजा हे एम प्रजा हर्षवंत थइने सहु जय जय श द करवा लाग्या. एवे पंच शब्द वाजां वाजवे करीने अद्वेतशब्द थया,तथी काने पड्यूं पण न संजलाय. एवा अवसरनेविषे देवतानी एवी आकाश वाणी थइ के, ए विजयकुमारने में राज्य दी्युं हे. ए अतिशय गुणवंत एवो विजयराजा मदरहित है, माटे जे कोइ राजाना वर्ग एने निहं माने, नहीं नमे,तेनो हुं नियह क्रीश. अहो राजवीत्र! सहु को सांजलो. ने वाणी सांजलीने जेम इंइनी वाणीयें देवता जय पामे, तेम सर्व सामंत राजा, जय पामीने नमता ह्वा. हवे विजयकुमार सचिवादिक सर्वने पूछवा लाग्यो के, मारो महोटों जाइ जय एवे नामें आटलामां क्यांहिं हे? तेने

खोल करी इहां लावो, अने तेने शीघ राज्य आपो; ते सर्व गुणें करी विराजमान हे. राज्यने योग्य ते हे, हुं नथी. वली ते मारो महोटो जाइ वे, तेथी नानाने राज्य घटे नहिं, तेमाटे माराथी केम लेवाय ? ए वुं विजय राजानुं विनीतपणुं देखी, उचितादिक गुण देखी मंत्री वगेरे चमत्कार पाम्या थका, एम कहेता हवा, के हे देव! जे देवतायें राज्य त मने आप्युं, ते अन्यया न थाय..माटें हे प्रनो ! अमारा खामी तमेज र हो अने नगर पावन करो. एमं कहीनेज हाथी नगर जणीं चलाव्यो. देव तानी करणी केम उखंघाय ? पढ़ी ते नगरमांहे प्रवेश करतो ह्वो. ते राजानी कीर्ति पण दिशार्चनां श्रंतप्रांत जगे विस्तार पामी. उत्सवसहित राजा राज द्वारने विषे सिंहासने वेवो. सामंत,मंत्रीवगेरे सर्व मलीने वासुदेवनी पेरे अ निपेक करता ह्वा. हवे जयकुमार विजयकुमारने राज्य पाम्यो जाए। पो ताना आत्माने कृतार्थ मानतो त्यांथी आगल जातो हवो, अने मनमां एम चिंतवतो हवो जे रखे एने मुजयकी शंका उपजे! एवं जाणीने, वि जयने मत्या विनाज मिणना महिमायी विद्याधरनी पेरें आकाशमां ली लायें फरतो हवो. जे कोतुकनो रसीयां होय,तेने आलस न होय. एम फरतां अन्यदा जयापुरी नगरीयें गयो. त्यां जोनाराने लंकानगरीनी शंका उपजावे एवां सोनानां घर हे. त्यां जेत्रमद्य एवे नामें राजा हे, तेनी जेत्री देवी आदिक राणीयों हे, ते राजाने ज्ञेंकडा गमे पुत्र हें, तेनी उपर ज्ञो नायें करी जगतने जीते एवी जेत्राश्री नामें एक पुत्री है. हवे ते नगरमां साद्वात जाणीयें कामनी जताज होय नहिं? एवी एक कामजता नामें गणिका रहे हे. तेनाथी जयकुमार आसक्त थयो थको घंणा काल लगण ते गणिकाने घेर रहेतो हवो.

हवे उपायविना वंडित धन पूरे हे माटे एने धन प्राप्त क्यांथी थती हतो ? एवं विचारी धननी लोन्। अक्का ते पोतानी कामलता पुत्रीने कहे ती हवी के हे वत्से ! तुं तहारा धणीने एनं कारण पूड, के जेथी आपणं दारिय जाय. तेवारें निपुण कामलतायें कहां के आ तु इ बुियें करीने इं थवानं हे, आपणने रोटला साथें काम हे पण टपटप साथे काम नथी ? इत्यादि रीतें समजावी तो पण ते लोनणी अक्का जेम कोइने नृत वलग्यं होय तेम तेनी केड केमे न मूके, इप्टस्वनावने लिधे पोतानो कदायह मूकती

न हवी. त्यारे तेना कदाग्रहथकी जयकुमारने कामलता पूछती हवी. जय क्रमार पण प्रीतिनंग न याय तो सारुं! एवा नयथकी ते वात कहेतो हवो. गुह्मनी वात कोइनी आगल न कहेवी. तेमां वली स्त्रीने तो विशेष पर्णे न ज कहेवी. एवं जाणे हे तो पण ते कामलता नणी जयकुमरें वात कही. स्त्रीने वश पड्या हुं न करे ? ॥ यतः ॥ न कस्यापि प्रकाइयं स्या, जुह्यं स्त्रीणां विशेषतः ॥ तस्ये तथापि स प्रोचे, स्त्रीवशाः किं न कुर्वते ॥ १ ॥ पत्नी स्त्रीने सर्व वात कही तेवारें कामजतायें पण जयंकुमरने इव्य आव्यानुं कारण सर्व माताने जइ कह्युं. ते सांजली ते इष्ट परिणामवाली अक्का दर्षवंत थइथकी कुमरनी पासेंथी मिएरत्न यहवानी इज्ञायें नीतिनो नंग कर नारी ते श्रका एकांतपणुं ताकी जेम दूधने लोजें मांजारी ढल जोती रहे, तेम बन जोति चारे दिशायें ते महामिणिनी खोल करती रहे पण क्यांहि देखे नहीं. तेवारें जाए्युं जे ए पोतानी पासें राखे हे, एवुं विचारी ते कपटी ऋकायें जयकुमरने चंड्हास्य मदिरा, दिधने मिषें पीवरावी. तेवा रें जयकुमरने मूर्जा आवी के तरत ग्रुप्तवस्त्रें जे मिए बांध्यो हतो, ते लइ लीधो. ते स्थानकें तेज वस्त्रमां मिण जेवडोज पापाणनो कटको वांधी मू क्यो. श्रनुक्रमें मदिरा उतरी के तत्काल कुमर सावधान थयो, तेवारें म णिनी गांव बांधेली दीवी तेथी विषाद न पाम्यो. केटलाएक दिवसांतरें इव्य याचवाने ऋषें मिणनी पूजा करी गांव बोडी जोइ तो केवल पाषा ण दीवो. त्यारें महोटो विषाद करतो हवो. हा मुक्तने आ पापणी अकायें वंच्यो!!! कदापि चंड्हास्य मदिराना प्रयोगथकी मस्तक कापी जीये तो पण लेवाय एवो संनव हे, तथापि एणीयें तेम नथी कखुं थोडुंज कखुं हे, फकत मिणज लीधो है ! एम खेद करतो, अनेक विचार करतो, कामल तामां आसक थयो थको, जेम वृद्धनी खंदर अग्नि लागे, तेनी पेरें खंतः करणने विषे बलतो, व्यसनासक थयो थको कामलताने घेर रहेतो हवो.

हवे जयकुमार निर्धन हे एम जाणीने श्रक्का पोतानी पुत्रीने वारंवार कहेवा लागी के, ए निर्धन हे, माटे तुं एने काढी मूक. कह्यं हे के:-विज्ञ वो विज्ञसंगीनां, वैदग्ध्यं कुलयोषितां ॥ दाहिष्यं विणजां प्रेम, वेश्यानाममृतं विषं ॥ १ ॥ जावार्थः-निःस्पृहीना वैज्ञव, कुलवंति स्त्रीनुं विदग्धपणुं, व्यापारीनुं दिहणपणुं, श्रने वेश्यानो प्रेम, ए चारे जो ते श्रमृतसमान

देखाय, तो पण विषसमान जाणवां. हवे ते कामलता स्नेहवंती क्रमरना गुणे खेंचाणी थकी अग्रुनकर्मथी दूर रहेती पोतानी निर्देशी माताने क हेवा लागी के हवे हुं एने निहं ग्रांहं, हुं धननी अर्थिनी नथी, हुं तो ग्र णनी रागी हुं. आपणुं पूर्ण पुष्य हे, तो ए आपणे घरे वे दिवस रहेलों हे, एनुं क्रोडों गमें इब्य आपणे खाधुं हे. ते तुं जाणती नथी के ग्रुं?

कामलताना मुखथी एवी वाण्ली सांचली तो पण ते खकाने चित्तमां न आवी अने जयकुमार उपर विरक्त थई थकी दासीयों पासे अनादर करावती ह्वी. वेश्याना व्यसनीने निश्चें एमज विडंबना घटे हे. तेवारें जयक्रमार पण अनिमानी बतो अपमान पामीने दरीइीनी पेवें जङ्का अने विषाद तेणें करी सिहत एवो थको ते स्थानकथी निकलीने ग्रून्य घरने विषे जइ बेवो. एवा अवसरनेविषे ते नगरना राजानी पुत्री सखीयोना परि वारें परवरीयकी नदीयें कीडा करवा गइ है, हंसनी पेतें नदीमां उतरी तेट लामां दैवना योगथी तिहां तेने प्रेत वलग्यो. त्यारें जेम वृक्तनी माल बेदी थकी नीची पडे,तेम राजकुंवरी अचेतन थइ थकी नृमिकायें पडी. ते वात सां नली राजायें घणो खेद धरी क्रमरीने घेर तेडी अनेक उपचार कराव्या, तो पण जेम वजने, टांकणे टांकतां टांकणुं लागे नहीं, तेम उपचारें पण कुंव रीने करार न थयो, मंत्रवादीनो महिमा पण निःफल थयो. जेम हिममां बले तेने कोई उपचार न लागे, तेम एना पण जेम उपचार करे; तेम तेम दोष वधे. त्यारें राजा ञ्चार्तध्याने पीड्यो यको इःख धरता नगरमध्ये पडहो वजडावतो ह्वो के,जे कोइ गुणी होय अने,कुंवरीने शाता करे,तो तेने रा जा ते कुंवरी परणावे,ने वली क्रोड सोनैया आपे. एवं सांमूली जयकुमार हर्ष पामी पडहो वबीने राजाने दरबारें आब्यो. राजानी आङ्गा पामी, मं त्रवादिनी पेरें स्नान कछुं. ज्ञपादिक मिथ्या आमंबर कखो, कारण के म होटे स्थानकें आमंबर करवो ज़ोइयें. ते औषधीने पाणीमां त्रण वखत बोली ते पाणी दूरथी ढांटीने कुमरीने साजी क़रतो हवो. दिव्य छौ षधीना बलयकी ग्रुं न याय ? आ को हा लोकोत्तर महा उत्कृष्ट कलाना प्रनावषी राजा चमत्कार पाम्यो, त्यारें मुदित थयो थको विचारतो हवो के ए कोइ उत्तम कुलनो पुरुष हे. पही पोतानी कन्याने धरती उपर बेठी नागकन्या सरखी देखीने महा माहोत्सवे तेनी संघाते परणावीने,क्रोड सो नैया आपतो ह्वो. सत्पुरुषमुं वचन अन्यथा न थाय. ते दंपतीने रहे वा माटें घर आखं. त्यां रह्यां थकां बेहुजण दोगंडक देवताना सरखां सुख नोगवतां ह्वां. ते कुमर महामणि पाठो मेलववाने काजें उपाय चिं तवतो ह्यो. राजानी पुत्रीने साजी करीने पठी, ते ओपिध ग्रुप्तपणे राखी हे ते ग्रुप्त ओपिधीनो महिमा कोइक धूनें जाएषो, तेवारें ते धूर्न उपधी ह रवाने वांठतो थको क्त्रीनो वेश करी कपटथी जयकुमारने वश करवा माटें विनयवंत थइ बहुमान करी विश्वास पमाडी तेनी पासें रह्यो, पठी जे ग्रुप्तस्थानकें ओपिध हे ते चोरी लझने हर्ष पामतो शीघपणे नाठो. ज यकुमार खेह धरतो कहेतो ह्यो के धिकार हो विश्वासने के जेथी अनर्थ उपन्यो? इहां जयकुमारने वे वानां थयां. एक कन्यानो लान अने बीजी ओ पधीनी हाण एम शोकने हर्ष ए वे थया. देवतानी आपी वे वस्तुनी हाण थइ, तेणें करी घणो खेद थतो ह्वां. देवतायें आपी देवें अपहरी, एटला माटें देव अपावे तोज जहे,नहिंतर बीजाउने कहीने तथा दीनपणुं देखा ढवाथी छुं थाय! एम चिंतवी जेम समुइमा वडवानल लागे थके समुइ जलने वाले, तेम कुमरने पण अंतःकरणने विषे ते इःख बालवा लाग्युं.

हवे जयकुमरने काढ्या पढ़ी ते श्रक्कायें मिणनी पूजा करीने घणा प्र कारें याचना करी पण ते महामिणयें कांइ श्राप्युं नहीं. कारण के जा ग्यवंतनेज दिव्य वस्तु वांढितनी करनारी होय हे, धर्मिष्टने सुखदायी होय, परंतु पापीने तो तेज वस्तु इःखदायी होय हे. श्रन्यायीने इक्षित वस्तु क्यांथी मुले? पढ़ी ते श्रक्काने कामजतादिक सर्वजनोयें तिरस्कार करीने कह्युं के जां. फरी पाढ़ो ए मिण जयकुमरने श्रापी श्राव. वली वि चार कर,जे ते राज्य जीजानो जोगवनारो हे,राजानो मानीतो हे? एवा सा हात् कल्पहक्त जेवा पुरुपने तें घरमांथी काढ्यो. इत्यादि कामजताना उलं जा सांजव्या. तथा सर्व परिवारनो पण हप्को पामी. सर्व परिवारें धिक्कार वचन कह्युं. तेवारें कांइक मनमां विचारी, ते रत्न जइ,जयकुमार पासें श्रा वती हवी. दंजें करीने रोती पोतानुं इःख देखाडती कहेती हवी के हे व त्स! केम श्रमने सूकीने श्रमारी सार संजाज करता नथी? जेम कोइ ख्रेंं गयोथको पूर्वनी श्रवस्था न संजारे, तेम तमें पण श्रमने शुं करवा संजा रो? श्रीढ राजानुं माम पाम्या,राजाना संबंधी थया,तेथी श्रमने विसारी सू क्यां ! पण अमें तमने केम वीसारी मूकीयें ? कामलता तो तुने विसारती जनशी. जेम सूर्यविकासी कमल सूर्यविना विकखर न थाय,तेम महारी पुत्री कामलता तारा वियोगरूप अग्नियें करी बले हे,तेने शीतल कर कामल्व रतुं ओषध तमाराविना बीजो कोइ वैद्य नथी, तमें आवशो तोज जीवज़ें. वली मिण देखाडीने कह्यं के आ कांक्क अपूर्व वस्तु अमने घरमांहेथी मली हे ते वस्तु कोनी हज़े ? ते अमें जाणतां नथी. पण अमारे तो तमाराथी व खन बीजो कोण हे के जेने ए आपीयें ? माटे तमने आएं हुं, ते ब्यो. तम हते जे नवनवी वस्तु घरने विषे नित्य आवती, ते हवे आवती नथी. एट ला माटें अमारा चपर अनुग्रह करीने अमारा घरने विषे आवो. जे उत्तम होय ते प्रार्थनाचंग न करे, एम कहीने ते मिण आपती हवी. जेम गयुं पुष्य स्पष्टपणे पाडुं आवे तेम गइ वस्तु पाढी आवती हवी. जूडे कपटतुं पटुतापणं कहेवुं हे:—यतः ॥ पह्निणां वायसो धूर्नः, श्वापदेषु च जंबुकः ॥ नरेषु द्यूतकारश्च, नारीषु गणिका पुनः ॥ १ ॥ अर्थः—पंखीयोमां काक धूर्न, चतुष्पदने विषे शीयालीयो धूर्न, मनुष्यने विषे जूगारी धूर्न अने स्वी जातिने विषे गणिका धूर्न जाणवी ॥ १ ॥

हवे श्रक्कानुं कपट अने तेनी पुत्री कामलतानुं स्मरण तथा रह्ननो लान ते समकालें नेलां थयां, पण गणिकानी पुत्री सांनरी तेथी विचाखुं जे हमणां कोध करवानो श्रवसर नथी. एम जाणी कोधने संवेरी प्रीतिषू विक श्रक्काने कसुं के हुं श्रावीश ! पठी जयकुमार कामलताने ध्यातो हवो, जेम हाथी विंध्याचलनी श्रटवीने ध्यावे,तेम ते राजकुंवरीने, मूकी, कामलता ने घरे जतो हवो.माटे व्यसनीने धिक्कार हो, व्यसननो पास ठोडवो इःकर ठे. वली पूर्वनी परें त्यां रहेतो हवो. तेनी उपर श्रासक्त थयो थको केटला एक दिवस मणिना प्रनावें इिन्नत क्रि पूरतो सुख नोगवतो रह्यो. पुष्यवंत प्राणीने शुं इक्कर ठें ? महोटा पुरुषनी पण ए स्थित ठे,तो सामान्यनुं शुं कहेवुं ?

हवे पोतानी कुंवरी जरतारना वियोगने इःखे करी पीडित शोकसमु इमां पडेली तथा वेश्याने घेर रहेला जमाइनो वृत्तांत सांजलीने राजा खेद धरतो विचारे के ए व्यसनथकी निवर्ते निहें,तो ते लक्का मुफने हे! एवुं चिं तवी राजा प्रधानने तेडी तेने कामलताने घरे मोक् ज़तो हवो. प्रधान त्यां का मलताने बारणे रहीने कुमरने बोलावतो हवो तेटलामां राजायें तेडाव्यानी खबर सांजलीने तेने लक्कारूप पीडानुं इःख प्रगट ययुं. तेने लीधे चिंतानुर ययो यको एम चिंतववा लाग्यो के हा मुफने राजायें पण विट पुरुषनी पेतें इहां रहेतां जाख्यो, तो हवे हुं महारुं मुख केम देखाडुं! तेमाटे हवे हुं दूर देशांतरे जाउं. एम चिंतवी गरुडनी पेरें उमीने शीघ्रपणे गणि काना घरचकी निकली पोतानुं रूप परावर्तन करीने नगरचकी बहार गयो. जाखुं जे इहां मुफने कोइ देखनार नथी. एम विद्याधरनी पेतें मणिना प्रजा वयकी उंचो उठलीने कांइक दूर गयो. अनुक्रमें आकाश मागें अतिशय दूर देशांतरें क्यांइ जतो ह्वो. त्यां ग्रून्य अरख्य मध्यें अवधूत योगीने वेपे न मतो परे तेवामां ते गइ वस्तु पामवानां सचक शकुन थयां. ते देखीने म नमां एवं विचारे ठे जे महारी श्रोषधी गइ ठे. ते हुं इहां केम पापीश ? ए वामां कोइ अवधूत जयकुमारने मत्यो अने जयकुमारने पोता सग्यो जा णीने ते महा श्रोपधी प्रत्यें देखाडीने पूठतो हवो के हे खामी! आ श्रोपधीमां ग्रं गुण हज़े ? जयकुमार पण पोतानी श्रोपधीने उल्ली, वर्षित ययो थको अवधूतने कहेतो हवो. आ श्रोपधी तुं क्यांची पाम्यो ? ए विपे साचुं बोलीश तो तुफने ए श्रोपधीना गुण अने आश्राय कहीश.

ते सांनली अवधूत बोखो, कोइक महापुरुष पासेंथी ए महोटा उद्यम यही तेनी घणी सेवा करीने घणे प्रयासे महोटी विद्यानी परें ए श्रोपधी हुं पाम्यो हुं. परंतु एटलुं विशेष हे जे गारुडनी शक्तिनी पेरें ए श्रोपधीने ग्रुप्तपणे राखीयें तो तत्काल तेज क्णने विषे महोटा होपरूप महायह प्रत्यें ए श्रोपधीने में श्रुन्तवी हे. एमां होप रहेवानो हेतु शुं हे? माटे हुं तमने पूडुं हुं के, एना विशेष श्रामाय ग्रुण तमें जो जाणता हो,तो कहो. तेवारें जयकुमारें ते चोर प्रत्यें स्पष्टपणे निश्चितपणे रोष करीने कह्यं के हे श्रनाय! जो तुं चोरी यही श्रा वस्तु पाम्यो हश्श,तो ते दिव्यरूप वस्तु पाम्यानुं फल तो तुकने वेगलुं हे, पण श्रा नहें तथा परनवें तुकने श्रन्थ थशे. विश्वासघात करवाशकी जहय थशुं जे पाप ते पापनुं तुने शुं फल कहुं? हे धूर्तना धूर्च! तें जेम सुकने वंच्यो हे तेम जगतने पण वंचतो हश्श, ते माटे तुं कोइ दिवस पापनुं फल निश्चें पामीश. ते धूर्त जयकुमारना सुख्यी एम सांनलीने धूजतो थको ते श्रूर्च जीव लेइने नासतो हवो. कह्यं हे के होष

वान् प्राणी कंपायमान याय हे. पही समर्थ अने कतार्थ एवो कुमर गई वस्तु पामीने रीक पामतो थको तेनी पूर्वे न गयो, कारण के पापी होय ते पापमां प चे. कहां हे के: "पापी पापेन पच्यते" हवे जयकुमार एम विचारवा लाग्यों के, अटवीने विषे रहेवुं, प्रवास करवो, इत्यादिक्करों करी प्राप्त थयेला औषधने पा मीने जेम रोगी आनंद पामे, तेम हुं क्वेशची खार्चिति इ थयो, ते योग्य हे, तेमां चिंता नहीं. एवं। रीतें ते हर्ष थरतो ह्वो. एकदा विनोदयकी अत्यंत बिन त्स इयाम वर्ण युक्त एवा वामणां हुं रूप करीने जोगनीज करनारी एवी जोगा वती नगरीयें ते कुमार आव्यो, तिहां संपदायें करी विद्याधरनी परें क्रिवंत एवो सुनोग नामें राजा है, तेनी नोगवती नामें राणी है, अने विश्वने नोग योग्य एवी नोगिनी नामें तेने पुत्री हे, तिहां कुइ, नयंकर, बिहामणा अं गवालो एवा वामन रूपें जयकुमार चारे बाजुयें कीतुक जोनारा घणा लो कें वींटेजो थको जेटले ते नगरनां चहुटामां आव्यो, तेटलेज एवी उद् घोषणा सांजलतो हवो, जे राजानी कुंवरीने इष्ट सर्पें मसी हे, माटे तेने जे जीवाडी आपे, तेने राजा पोतानी एज कन्या तथा हजार घोडा अने एकसो हाथी आपे. हवे जयकुमार लोकने हांसी कुतूहल उपजावतो, नृ त्य करावतो, विस्मय पमाडतो, ते पडह प्रत्यें फरसतो हवो, तेवारें लो क वामनने कहेतां हवां के हे वामन! तुं कन्यादिकना लाज माटे फो कट मनीषा म कर ? वैद्यादिक मंत्रवादी प्रमुख सर्वे उपचार करी थाकी गया है, कोइथी सारुं ययुं नथी, तो तुं ग्रुं एने सारुं कसीश ? एवां जला पुरुषोनां वचन सांजलतो वामन सर्वने उवेखतो हवो. तथा वली हीन पुरुषोयें प्रेरणा करी के हे वामनजी! तमें तो महोटा चंतुर देखाई हो? माटे जपाय करो. एम हासी कीधी, तेम मध्यम लोकोयें जपेक्ना करी ए टले हा ना कांइ न कही, ए रीतें आ जगतनी स्थिति त्रण प्रकारनी हे. हवे कौतुक करतो एवो ते लोकना समूहें परवस्तो. अहो अहो आ पुरुष पणुं !!! इत्यादि बोजता जोकोनां वचन सांजलतो अत्यंत शक्तिनो धणी ते वामन राजसनायें जइ, राजाने प्रणाम करी, कहेतो हवो. के हुं कन्याने साजी करुं ! एम कही, राजादिक सर्वनी आङ्गायें कन्या पासें गयो. तिदां ते वामन पंनितें माहाखोषधीने महिमायें करी पूर्वली पूरें ग्रप्त प्रयोगें ते कन्या ने तुरत जीवती करी. सर्वे सनानां लोको विस्मय धरतां कन्याने जीवाडवा

थकी हर्ष अने वामनरूप जोवाथकी विषादने पामतां हवां, वली सर्वे ए म विचार करे के जे,ए वामन, पुरुषोने विषे उत्तम है, माटे गुणेकरी कन्या ने यहवा योग्य ने पण तेमां वामनपणुं ने, माटे केम देवाय ? विधातायें जो तेनुं रूप सारुं कर्युं होत, तो घणुं रुडुं! पण जेवा एमां ग्रण हे, तेवुं रूप नथी. तेथी धिकार हे दैवने के जेएो रत्नने विषे दूषण निपजाव्युं!एम सर्व लोक खेद धरता हवां. हवे कन्या,राजा तथा कन्योना मातादिकें विचाखुं जे आप एने व्यर्थ चिंता करवाथी ग्रुं थाय? देवनुं कंधुं अन्यथा न थाय, जो वामनने कन्या आपुं,तो लोकमां अपवाद थाय एवी चिंतायें ग्रुं थाय ? जेमाटे म होटा पुरुषतुं वचन फरे नहीं, कन्या आपवा माटे कन्याने खेद, माताने शो क, इशमनने हर्ष अने वरप्रत्यें वामन पणानो लोकापवाद थाय है, पण वचन दीधं हे ते अन्यथा केम थाय ? एम विचारीने राजा जेटले कन्या आपवानुं कहे हे, तेटलामां निःकपट वाणीर्थ। अनिमान मूकीने वामन बोल्यों जे, त्रावा इर्जागिया हीनांगने कन्या रत्न आपवुं, ते तमोने पटे न हि. हंसली कागडाने केम देवाय ? माटें ए कन्या वरवाने हुं अयोग्य हुं,तमें जो कदाचित आपशो, तो पण ते कन्या मुक्तने केम अंगीकार करशे? नेमज सामंत, प्रधान प्रमुख लोक पण अत्यंत अनुचित कार्य केम देखी शकशे ? ॥ कह्यं हे के ॥ यद्यपि न नवति हानिः,परकीयां चरति रासनोड़ाक्तां ॥ वस्तु विनाशं हेष्ट्रा, तथापि परिविद्यते चेतः ॥१॥ अर्थः -- कदाचित् आपणी कां इहानि यती न होय तो पण पारकी इाख जो गईन चरे, तो ने वस्तु नो विनाश थतो देखीने चित्रमां खेदतो थायज ॥ १ ॥ तैसाटे ए कन्या दीधी थकी पर्ण महाराधी केम जेवाय ? पोताना वस्त्रने अनुसारें पगनुं पसारबुं थाय. तथा पोतानुं स्वरूप न जाएो ते पुरुप, केरडा, जिंबडा वगेरे पदार्थने विषे रक्त थयेलो अने इाक्वादिक उत्तम वस्तुना वनथी दूर रहेलो एवो जे उंट हे,ते थकी पण हीणों है अर्थात् जे पोतानुं पराक्रमे, तोव्या विना काम करे, ते दीणो जाणवो. वर्जा श्लेष्म तथा बडखाने सेवन कर नारी छाने चंदनथी विमुख रहेली एवी जे मिक्का है, तेनाथी पण जे पो तानुं स्वरूप न जाएो, ते पुरुष दीएो जाएवो.

देवुं, क्षेवुं, वंदन, दान, चिकित्सा, घर, नोजन, बेसवुं, सूवुं, वा हन, उञ्चान, स्थापन, प्रार्थना, ध्यान, विधान, मिलाप, युद्ध, जगाडवुं, धन, हानि, मान, अपमान, तेडवुं, विवाहनुं जोडवुं, उपाडवुं, जूड़ंजू इं करवुं, घडवुं, खेडवुं, फरवुं, विदारवुं, कूटवुं, इ्ञान, विज्ञान, सेवा, वन, जणवुं, जणाववुं, मान, क्रोध, ग्रप्तपणुं, जोजन, इत्यादिक सर्व स्थानक निविषे जे पोतानुं स्वरूप जाणे, ते माह्यो जाणवो. पोताना घरने विषे अथवा बीजाना घरने विषे सर्वकार्यने विषे जे कर्तव्य हे, तेने विषे पो तानी प्रतिष्ठाने योग्य जेहवी शक्ति होय तेवो प्रवर्ते.

ए रीतें ते वामननुं उत्तमपणानुं अविसंवाद वचन सांजनीने राजादि क सर्व लोक घणो चमत्कार पामतां हवां, जेमाटें गुणना रागी सर्वेथी थो डा होय, तेथकी गुणवंत जन घोडा, तेथकी गुणी जनना गुण उपर रक्त थयेला थोडा, तेथकी वली पोताना अवग्रणने देखनारा थोडा होय. हवे पोताना मुखरूप रंगनूमिने विषे वाणीरूप नर्नकीने जाणे नचावतो होय नहीं ? तेम राजा कहे है,के जो जइ ! तुफ्रने हुं कन्या आपीश. एमां कांइ विचारणा करवी नहिं पुरुषने जेमाटें प्राणप्रतिष्ठानी पूर्वे सत्य वाणी हे, तेज राखवा योग्य हे अर्थात् प्राण जवाथी पण सत्य वाणीतुं रक्तण करवुं तेमाटें विशेषें करी महाशयना धणीयें पोतानी वाणी सत्य करवाने अर्थे ग्रुं न करवुं ? अर्थात् सर्व कां इकरवुं. पिता एवा दशरथना वचननिर्वाहने अ र्थे रामचंई वनवास कस्रो,राजा हरिश्रंई नीचने घेर पाणी आण्युं. एम व चन पालवा माटें नीच काम पण कछुं. ए रीतें बोलीने राजा अन्यलोकनी अपेक्षा न करतो अन्यलोकना वचनने उवेखतो थको प्रोतानी कन्या वा मन प्रत्यें शीघपेणे देतो हवो. वली विचारे हे जे जे आगल नावि लक्सी पण याज्ञे. हाल हुं लक्की तो छापुं! एम मानी वामन नर्खी लक्कीने पण राजा देतो हवो. तेमज कन्या तथा कन्यानी मातादिकें पण ते वात प्रमा ण करी, खहोइति खाश्रवें ! ज़ेमाटें वचननो निर्वाह ते महोटा पुरुषोने महो टा उत्साहनुं कारण ने शीघपणे संपूर्ण ते कन्यारूप कार्य यवाथी देवता नी पेरें सत्यवादी राजानी परीक्वा वामने करी ज़ीधी.

हवे पोतानुं रूप तथा पोतानी शक्तिने प्रगट करवा माटें वामन कहे तो हवो के हे राजन ! या महारा यावा कुत्सितरूपें करी या रूपवान् कन्या साथें हाथ मेलावो केवी रीतें हुं करुं ? माटे कांहिक खरूपपणुं करुं ? पण वांडित साध्यकार्यनी सिद्धि जे थाय हे ते जीवने साहसपणायकी

थाय है. जे बत्रीशें लक्क्णे करी रहित पुरुष होय ते पुरुष पण सहिस त या धेर्यने बसे बत्रीश सक्ता याय है. कहां है के ॥ यतः ॥ अस्थिस्वर्धाः सुखं मांसे, त्वचि नोगाःस्त्रियोऽिक्षु ॥ गतौ यानं स्वरे त्राज्ञा, सत्त्वे सर्वे प्र तिष्ठितं ॥ १ ॥ अर्थः-अस्थिने विषे धन अने मांसने विषे सुख, तथा नेत्रने विषे स्त्री,गतिने विषे वाहन, तथा स्वरने विषे आज्ञा,रहीं हे. ए सर्व सत्त्ववंतने विषे प्रतिष्ठित हे. ए रीतें पोतानुं सत्त्व आदरीनें ते पुरुष,जात्यवं त सुवर्णनी पेरें शोचे हे. जेम सुवर्ण अधियें तपाव्युं यकुं विशेष शोचाने पामे, तेम हुं पण साहसिक थइने शीघ्रपएं महारा देहने खानाविक रूप वालो करीश! देह कहेवो है ? तो के संदेहरहित उत्कृष्टी शोनानो करनारो वे. एम कदीने चय रचवानी सङ्गाइ करी. पढी कोतुक नय अने खेदना चदयादिकें करी विचारयुक्त थयेलां एवां सकल लोकनां देखतां थकां सत्त्व सहित ते वामन दीप्तिवंत ज्वाजानीजटा रूप अग्निने विषे पतंगनी पेतें पडतो ह्वो. पडीने तेज क्लों तत्काल पाठो अग्निथकी बाहिर निकल्यो इहां एटली विचित्रता है, के पतंग जे दीपकमां पड़े है, ते पाहो निकल तो नथी, पण ए वामन पाठा निकल्यो ? ते आश्वर्य हो. अने महा महोटी श्रीषधीना महिमायकी एक रंचमात्र पण श्रिप्तमां ते बखो नहीं, तेमज तेने मणिना महिमाथकी अग्निथी निकलतां पूर्वेलुं दिव्यरूप प्रगट थयुं.

ते जोइ सर्व जोक अत्यंत विस्मयवंत थयां थकां सर्व हास्यपणुं पाम्यां. तेवारें सर्व राजादिकें अत्यायहें करी कुमरने वामननुं कारण पृत्वयुं ते वखत यथार्थ साचेसाची वात कुमरें कही दीधी. मंत्रनी शक्ति कही महामणि तथा ओषधीनों महिमा पण कह्यो, ते कहीने पत्नी ते कुमर ओपधीने गो पन करतो हवो. कारण के तेमज ते बेनुं रक्षण करवुं, ते योग्यज हे.

हवे राजा अतिशय हर्षें करी, अतिशय महोत्सवें करी, जयकुमार त या जोगवती कन्यानो विवाह महोत्सव करतो हवो. जोगनी जपमावाजी जोगवती कन्या तथा एकशो हाथी अने हजार घोडा राजायें कुमर जणी आप्या, तथा महेल, धन, वस्त्रादिक सर्व आप्यां. पठी जेम जोगिनी नाग कन्या साथें शेषनाग जोग करे, तेम महोटा आग्रहनो धणी जयराजा पण संपदा प्रत्यें पामीने जोगवती कन्यासाथें संसारनां सुख जोगवतो, आश्रर्य करतो, स्वेद्यायें रहेतो केटलोक काल व्यतीत करतो हवो. द्वे एक दिवसें जयकुमार महा आमंबर संघातें अश्वकी डायें निकत्यो. चहुटा वच्चें आत्रो, तेने जोइ कोइक स्वी सखीने पूठवा लागी के, आ कुंवर क्यांनो रहेनार हे ? कोण हे ? अने क्यां जाय हे ? तेवारें ते सखी डोल जेवा गाढे शब्दें तेने केहेती हवी के हे सखी! आ समे तो तें आश्वर्य उपजाव्युं ? कारण के ए तो आपणा राजानो जमाइ अश्वकी डायें जाय हे, तेने पण वुं जाणती नथी? एवं लक्काकारी वचन जयकुमार सांजली ने आमण दूमणो यइ खेद धरतो थको एम विचारतो हवो, जे मानी पुरुषने ससराने घेर रहेवुं न घटे केम के शास्त्रमां एम कह्युं हे ॥ उन माः खगुणेः ख्याता, मध्यमास्तुपितुर्गुणेः ॥ अधमामातुलेः ख्याता, श्वसुरे रधमाधमाः ॥ १ ॥ अर्थः – उत्तम पुरुष पोताने गुणें जाणीतो थाय, अने मध्यम पिताने नामें उलखाय, तथा अधम पुरुष मोसालने नामें उलखाय, तथा अधमाधम जाणवो.

पढ़ी जेवो उत्साह सहित अश्वकीडायें जतो हतो, तेवो उत्साह रहित थयो. तद्नंतर परिवार संघातें पाढ़ो पोताने घेर आब्यो. चित्तमां एम चिंत वतो हवो जे, सर्वथा मारे इहां रहेबुं घटतुं नथी, अने वली जयपुरीयें पण जवुं घटतुं नथी, शा माटें? के ते तो महोटा राज्यमां जोडाणो है अने में राज्यनी उपार्क्जना करी नथी माटें जेम यह सूर्यसाथें मर्खे शोना न पामे, तेम महारुं पण जाणवुं. तेथी महोटुं राज्य चपार्की जो नाइ पासें जाउं, तो मारुं महत्त्व कहेवाय ! ते महारा वशयकी राज्य पाम्यो हे, पण गुणें महोटो हे माटें फदाचित् हुं राज्य रहितथको जाउं, तो मारो , अनादर करे, वली हुं सामान्य हुं माटें में निशाने घा पण देवाय नहीं. एवुं विचारीने राज्य पामवानो मंत्र संनारतो ह्वो,पण प्रमादना वशयकी मंत्र न सांन्ह्यो, पद पदमां चूक पडवा लागी, प्रमादथकी विस्मरण थयो त्यारें जयकुमार खे द धरतो ह्वो के हा ! में प्रमादना वशयकी ए ग्रुं कधुं ? वांबित राज्यनो आपनार एवो महा मंत्र विसाखो ? अहो धिकार हे मने, के जे में प्रमा दमदें, श्रंध थइने एवी दिव्य वस्तु खोइ! हवे विजय,नाइ पासें जवाविना अन्य स्थलें मंत्रनी प्राप्ति निहें थाय ! एम चिंतवी ते जयकुमार आकाश मार्गे जतावलो मिणने प्रनावें कामपुर नगरें, जेम् मेघ समुइपासें जाय, तेम जयकुमार नाइनी परीक्वाने अर्थे गयो. अष्टांग मिमितियो घइने ना

इना महेल आगल प्रकट थयो. प्रनात कार्ले जह नाह प्रत्ये एम कहेतो हवो, के ज्ञानें करीने हुं सर्व जाएं हुं, के तमो वे नाइ हो. घरथकी निकल्या, ने दिव्य वस्तु पाम्या, ते सर्व हुं जाएं हुं. बीजो पण सर्व संकेत कह्यो. ते सां जलीने विजयकुमार आश्चर्य पामतो, चित्तने विषे चमत्कार पामतो, जाइना वियोगनुं इः स संनारतो, नेत्रनेविषे आंसु धरतो, एम कहेतो हवो, के हे ने मित्तिक! कहो के ते महारो नाइ हमणां क्यां हुई। अने मुक्तने क्यारें मलई। ? निमित्तियो बोख्यो तहारो नाइ देवतानी परें स्वेज्ञायें परम सुखीयो अइने प्रथ्वीनेविषे विचरे छे,ते क्यां इमणां तुक्तने मखे? नित्य कलायें वधतो जे चंड्मा तेनी साथें किरणनुं मलवुं जेम दूर हे, तेम ए वात पण इष्कर हे, तो पण देवतानी परें दिव्य शक्तिना धणीने कांइ ढानुं नथी. जेमाटे विद्या ना उद्यमयी तत्काल मलवुं पण थाय, परंतु तुक्तने नाइनी संगत रूडी नहीं, ताहारे तो वेगलुंज रहेवुं सारुं. केम के ते महोटो ने तुं नानो. नाना नाइनी भीढ क्दि देखी ते सही नहीं शके, एटलामाटें तुं ए वात जवा दे! निमि नियाना मुखयी एवी वाणी सांजली विजयकुमार कहेतो ह्वो, के तमें कहो बो तेवी वाणीयें तो बेहु नाइने त्रूट पडे ? हे नइ ! ए वात तुं मुक्तने न कही श,ए मुक्तने नथी गमती. हुं कोई रीतें राज्य आपवा माटेज नाइने मलवा इहुं डुं, पण ते निःस्पृद्ध हें, स्नेद्धवंतो हे, वालकरूप जाणी मुफने जोजननी पेरें पोतानुं राज्य आपीने गयो. ए महोटानो न्यायज हे. अने हुं तो एने पुत्रनी पेवेंज डुं,राज्य एनुंज हे,मारे राज्यनो खप नथी,में राज्य पामवाने समे सर्व वेकाणे तेने खोट्यो, पण ते क्यांहि न जड्यो. जेम पापीना हाथ मांथी निधान जांय,तेम ते महारा हाथमांथी गयो है माटे एवो अनियह वे के,ज्यारें नाइ मलको,त्यारेंज बत्र धरावीश,त्यारें चामर विजावीश, त्यारें ज राजचिन्ह धरीश! एटलामाटे तुफमां जो ग्रिक होय तो ते आर्यने शीव पणें लाव. त्यारें तेणे कहां के कहां तो आकर्षण विद्यायें खेंचीने लावुं! एम कही हर्ष धरतो क्यांहि अहझ्य घइ गयो. तेनी खबर पण न पडी. ए टलामां जेम वादल थकी सूर्य प्रगट थाय, तेम जयकुमार प्रगट थयेलो, पोताना मुख आगल आवी उनो रहेलो दीवो.

हवे राजा जयकुमारने देखीने हर्ष पामतो विस्मित चिनें साहात्रण क्रोड रोमराजी विकस्वर श्रये संज्ञमपणे जय जय शब्द कहेतो जयकुमारने नमतो ह्वो. जयकुमारें तेने पोतानुं वृत्तांत कही, विजयकुमारने राज्य आपतां निषेधीने राज्य पामवानो मंत्र खेतो ह्वो. मंत्र खेइने आकाश मार्गें थई नोगवती नगरीयें आवीने सात दिवससुधी मंत्रनो जाप कर्खो, एटखे सातमे दिवसें राजानी सनानेविषे निमित्तियो आवी राजाने एम कहेवा लाग्यो के हमणांज जो ताहारो पट्टहस्ती बखें करीने आलानस्थंन उन्मूलीने नगरमां फरतो, लोकोने उपइवकरतो थाय, तो तुं एम जाण जे आजयी पांच दिवस पर्यंतज मारुं आठखुं हे!माटे हे राजन! तुं परलो क योग्य नातुं बांधजे. ते सांजलीने राजा उद्देगित थयो, वैराख्य धरतो, निमित्तियाने तुष्टिप्रदान आपीने पुत्रने अनावें जयकुमारने राज्य आपीने तेज दिवसें सद्गुरु पासें जइ, चारित्र खेइ, चारे आहार हांमी, प्रमादनो परिहार करी, एकायध्यानें कायोत्सर्ग मुझ्यें रह्यो. पांचमे दिवसें घाति कमें क्वय करी, अंतगड केवली थइ, मोकें पहोतो.

हवे जयकुमार प्रधानने राज्य सोंपी चतुरंगिणी सेना साथें एथ्वी अचल हे तेने सेनाचकें चल विचल करतो थको जयपुरीयें आवतो हवो. तिहां चर पुरुप साथें कहेवराव्युं जे तमारो जमाइ जयकुमार आव्यो हे. ए स माचार सांजली ते राजा महोत्सवयी पोतानां जमाइने नगरमां प्रवेश कराव तो हवो. राजा पोताना पुत्रने अयोग्य जाणीने जयकुमारने राज्य सोंपी पोतें चारित्र लइने मोक्ष्रूप राज्यलक्कीनो जोका थयो. हवे जयकुमारने, कामलता गणिकासाथें पूर्व जवनो प्रेम हे ते प्रेम मूक्यों न जाय तेमाटे वे राणीनी साथें त्रीजी कामलताने पण राणी करतो हवो. राजाना पुत्रयी ह्यं न थाय ? अनर्थ उपजावनारी ते अक्काने देशयी बाहेर काढतो हवो. जेमाटे महोटानो संतोष, अने राग, ते निष्पल न थाय.

त्यांपण प्रधानने राज्य ज्ञावी,त्रण प्रियासहित प्रेमरूप रागें वहेंचाणो यको ते पोताना जाइ विजय पासें जतो हवो. पढी ते जयराजा पोतानी त्र ए स्त्रीयें करी,प्रचुशक्ति, मंत्रशक्ति, उत्साहशक्ति, तेणें करी जेम राजा शोजे, तेम शोजतो हवो. तथा पराक्रमें करीने जेम न्याय शोज़े,तेम जयें करीने विज य शोजतो हवो. पढी त्यां विजयकुमारने श्रोपिध श्रने महामणिनुं जेटणुं श्रा पतो हवो. हवे विजयकुमार स्वप्त देखतो हवो के, रूपें करीने जगतने जी तती तथा विजया एवे नामें करीनेज विजयनी क़रनारी एवी जयंती नग

रीना राजानी पुत्री विजयायें स्वयंवर मंमपने विषे मुफने वस्तो. एवं स्वप्त दे खीने प्रचातें जयकुमारने राज्य सोंपी मिणिने प्रचावें आकाश मार्गे विद्याधर नी पेरें जयंती नगरीयें जइ, कौतुकथी अति कुरूप एवं कुबडानुं रूप करीने गोल जेम माखीयें वींटाय, तेम कौतुकी लोकोथी वींट्यो थको स्वयंवर मंम पें जइ उंचा आसन उपर वेतो. लांबा दांत, लांबा होत, वांकी आंख, वांकं नाक, हाथ पग वांका, एवा रूयनी चेष्टा देखीने कोने हास्य न उपजे ?

हवे स्वयंकर मंमपने मांचें बेठा एवा रूपवान राजार्ड मध्ये जेम श्र श्वनी श्रेणिमां मांकडुं शोने, तेम ते विजयकुमर शोनतो हवो. हवे स्वप्तमां गोत्रदेवीयें कुंवरीने श्रधिकपणे कद्यं के श्रा विश्वमध्ये गुणें करी सर्वधी उत्कष्ट वरने वरवानी तुं इन्नक हो, तो स्वयंवर मंमपमां जे कुंबडो वेठो हे, तेनेज तुं पोतानी मेखे वरजे.

पढ़ी ते कुमरी राजवीयोनां मन हरती ढती सुखासने वेसी स्वयंवर मं मणें आवी. एट के वेत्रधारिणीयें त्यां स्वयंरमां रहे ला राजकुमारोना राज, देश, नगर, वय प्रमुखना वर्णन कखां, यद्यपि ते सर्व राजकुमरो ए क न्याने वरवा माटें इन्ने हो, तो पण जेम निर्गंध कुसुमने जमरो हां में तेम ते कन्या, तेर्ने हां मती हवी. त्यारें दासीयें विचाखुं जे, राजकुमर तो सर्व में वर्ण व्या हे, परंतु बाकी एक कूबडो रह्यो हे. जो तेने नहिं वर्ण वुं, तो पंक्ति जेदनुं पाप लागशे! एवं विचारी खीजी थकी एम कहेती हवी के राजानी पंक्ति तो मूकी, बाकी हवे तो आ एक रूपनुं निधान कूबडो रह्यो हे, जो वरती हो तो आ कुबडाने वर. तेवारें ते राजकुंवरीयें वेत्रधारीनुं वचन सत्य करवाने अर्थ देवीयें दीधे ला स्वप्ने अनुसारें उत्सुक थइने कुबडाने कंतें वरमाना नाखी.

ते जोई कुबडानी उपर ईर्ष्यांवंत एवा सर्व राजा बोलता ह्वा के अरे कुबडा! तुं वरमाला ढांम, जो निहं ढांमीश, तो तारुं मस्तक ढेदशुं. ते सांजलीने कुबडो कहेवा लाग्यों के हे इजाग्यों! तमो तमारा इजीग्य उपर देव केम न थी करता? महारी उपर शामाटे देव करो ढो? विधातायें तमोने इजीगीया कह्या, तो मुक्त उपर शुं हसो ढो? ते सांजली सर्व राजार्ड कुबडाने हणवा तथा कन्या हरवाने आयुध लेइने साहामा धाता ह्वा. त्यारें कुबडो जे थ की त्रण लोक आश्चर्य पामे एवं कांइक पराक्रम देखाडी, जेम सिंह हाथीने नसाडे, तेम सर्व राजांडने नसाडतो ह्वो. एथी कन्याना मातापिताने पो

ताना कार्यनी चिंता थइ, राजाउने मत्सरजाव थयो, देखनारा लोकोने जय ने आश्चर्य चयुं, एटला वानां सर्वे साथेंज चयां. एवामां तिहां एक देव ताना विमान सरखी कांति धरतुं एवं विमान आव्युं, तेमांथी "विजयरा जा जयवंतो चिरंजीव रहो " एवी बिरुदावली बोलतो एक पुरुष आव्यो, विजयकुमरें जाए्युं जे कोइक बंदिजन मागए आव्यो हे, एवामां तो ते बोव्यो के हे विजय ! तुं राजा मध्यें एतम हो. कारण के दक्षिण श्रेणिना राजायें पोतानी कन्या परणाववाने हेतुये प्रकृप्ति विद्याने वचनें तुने तेडवा माटें मुने मोकत्यो है, ते कन्या, रूपें करी उत्कष्ट है, माटे तेने उत्कष्टा वर जुवे बें, तेथी तमें प्रसन्न थइने विमानमां उतावला बेसो. एटली मारी प्रार्थना सफल करो. एवामां वली वीजो तेनो सखाइज आव्यो होय नहीं ? एवा वि मानमां वेसी वैताढ्यनी उत्तर श्रेणिना राजानी कन्या परणाववाने अर्थे कुमारने तेडवा माटे एक पुरुष आव्यो,तेने जोइ कुमरें विचाखुं जे एक प्रा द्रणो होय तेने जोजनने अर्थे जेम बे नोतरां आवे, तेम पूर्वना पुण्यना उदय थी ग्रुं न होय ? इहां जाएावुं हतुं ते सर्वे में जाए्युं. एम विचारीने कुबडा पणुं ढांमीने मूल स्वरूप प्रगट करीने जेम राम सीताने परणे,तेम पहेलां तो ते स्वयंवरवाली कन्याने परणी,पढी विमानमां बेसी वेहु श्रेणिपति राजा नी विजयवती अने जयंती एवे नामें बे कन्याने परएयो. तिहां जेम कामदेवनी साथें रित अने प्रीति वे शोने, तेम कुमर शोनतो थको ससराना आयहथी केटलोएक काल त्यां रही, नित्य शाश्वता परमेश्वरनी पूजा करतो, पोताना ञ्चात्माने कतार्थ मानतो दिवस निर्गमतो. जेवुं बीज वाच्युं होय, तेवा फल पामीयें एम विचारी बन्ने ससरानी आज्ञा मागी, विद्याधरना सेन्य सं घातें कामपुर नगरें आव्यो. तिहां सर्व पुर लोकें महोत्सवें करी कुमरने त्र ण त्रिया सहित नगरमां प्रवेश कराव्यो. पठी प्रथिवीने संकीर्ण करतो थको विद्याधर राजानुं सैन्य साथें लेइ आकाशमार्गे विमानमां बेसीने जयकु मार सिहत पोताना पिताना नंदीपुर नगरें आव्यो. नंदी पुरनो राजा अ न्य राजाना सैन्यनुं ञ्चागमन जाणी, त्रास पामी, निमित्तियाने पूढीने तेने वचने कव्याण मानतो, पोतानुं सेन्य जइ उत्साहवंतयको महोटा ञामंबरें युद्ध करवा सन्मुख ञ्राच्यो. जेम वे नदीनो समागम थाय ते म बे सैन्यनो मांहोमांहे समागम थयो. विजयकुमार सर्वने निवारीने

योतें एकलो संग्राम करतो महिमायें वध्यो. श्रोषधीना महिमाधी कोई श स्त्र अंगें लागे निहं. पितानी सेनाना सर्व शस्त्र हेदतो, सर्वने शस्त्र रहि त करतो ह्वो. ए रीतें पिताने तथा सेनाने शस्त्ररहित जेवारें कखां, तेवा रें राजा पाठो फखो. राजाने शस्त्र कान घणुं ने पण शस्त्र नथी तेवारें वि लखो थतो हवो. एवामां विजयकुमार अने जयकुमार बेहु पितानी पासें आवीने अपराध खमावी नमता हवा. प्रत्रोमे तिहां उलखीने परम उहा स पामतो हर्भने वगें आलिंगन करी राजा एम कहेतो हवो के हे वत्स! तमारां वियोग इःखें करीने तमारां देशाटणना शो वर्ष ते सो कल्प सरखां मुजने थयां, एम पितायें पुत्रप्रत्यें जेम स्वप्नादिक दीवां हतां तेम सर्व स्व प्रादिकनी वात कही, अने वजी ते राजा पोताना पुत्रनी मनुष्य बतां देवता जेवी क्राइ देखीने घणुं रीज पामतो हवो. हवे जयविजयें पण घरथकी नि कत्या पढी पाठा घेर क्रि तहने आव्या त्यांसुधीतुं सर्व वृत्तांत कहां. एवं पुत्रोतुं अतिशयवंत वृत्तांत सांजलीने पिता रीज्यो. पढी महोटा महोत्सवें पुत्रोने घेर तेडी लाब्यो, अने वे पुत्रने राज्यनी प्रार्थना करवा लाग्यो, त्यारें विजयना कहेवाथी जयकुमारने राज्यनो नार सोंपी राजा त्रण रा ए। सहित मोक्र पामवाने अर्थे दीक्रा खेतो हवो.

हवे जयकुमार नयधीर कुमारने राज्यनो जार आपीने विष्णुने वलदेव नी पृठें विजय राजानी पासें जय राजा स्वेज्ञायें रहेतो हवो. पठी जय वि जय वेहुजाइ देश साधवा निकल्या, जेम क्रियो त्रण योगनुं नाधन करें, ते म जयराजा त्रण खंमप्रत्यें साधतो हवो. त्रणे खंममध्ये आण वर्जावी कामपुर नगरें आव्याः तिहां विजयराजाना नामधी कामपुरनुं नाम विज यपुर राख्युं, तिहां विजयराजा घणा कालसुधी वासुदेवनी पेठें राज्य जो गवतो घणा राजवीयोयें सेवातो काल निर्मामन करतो हवो.

एकदा जिनकव्पीनी पेरें एकला विहार करता एवा ग्रेणाकर नामें केव ली नगवान तिहां आवी समोसखा. ते जाणीने जयविजय वे नाइ महो टी क्रिड अने पोतानी स्त्रीयो प्रमुख परिवारसिहत केवली नगवानने वां दवा आव्या, वांदी यथोचित स्थाने वेसता हवा. पढ़ी केवली नगवानें ध मेदेशना प्रारंनी ॥ यतः ॥ अरिहंत देवो ग्रुरुणो, सुसाहुणो जिणमधं मह पमाणं ॥ इच्चाई सुह नांवो, सम्मन्तं बिंति जगगुरुणो ॥ १ ॥ सम्मनंमि च

लंदे, विमाणवक्कनबंधए आज ॥ जइति न सम्मन जहा, अहवा न बंधए बुद्धि ॥२॥ इत्यादिक धर्म देशना सांजलीने पढ़े जय विजय पोताना पूर्वला नव पूछता हवा. तेवारें केवली नगवान कहेवा लाग्या के नूतिलक पुर न गरने विषे क्रिवंता एवा जानु अने जामर नामें बेहु जाइ वसता हता. एक दिवसें पोताना पितानुं श्राद्ध है, तेमाटे खीर रांधी ते खीर कुतरीयें आबी अजडावी देखी बेहु जाइयें कुतरीने मारी, तेथी तेनी कड जांगी गई, तेने लीधे ते जूमियें पडती ह्वी. एवामां एक पाडो अति याकेलो, जूख्यो तर स्यो, आंसु नाखतो ते कुतरीपासें आव्यो. वेहुनी आंखमांथी आंसु जरे हे, तेवारें ते पाडोकुतरीनी साथें आलाप करवा लाग्यो अने मनुष्यवाणीयें महो टे सादें परस्पर वेहु बोलवा लाग्यां. ते वेहुनो शब्द सांजलतां त्यां सर्व को इश्रा श्चर्य पाम्यां. एवामां तिहां एक ज्ञानी मुनि आव्या, तेमने वे नाइयें पूर्वधुं त्यारें मुनि कहेवा लाग्या के ए ग्रुनी! अने महीप! वेहु ए तमारां पावला नवनां माता पिता हे,पाहल्या नवें एमने मिण्यात्व हतुं,तेना उदयथी सात जव कुतरी अने पाडाना थया. तिहां साते जवने विषे ए रीतें मनुष्यना हाथें मार खाइने मरण पाम्यां हे. आ आहमो नव हे, ते अकाम निर्क्तरायें करी, एमने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं, तेथी मनमां जाणे हे जे आज अमारे अर्थे श्राद करे हे, अने अमारी तो आ अवस्था पमाडी हे? माटे धिकार पड़ो ए मूढपणाने! एम मांहोमांहे बेहु सुख इःखनी वातो करे हे. तेमाटे हंत इति खेदे ए मिथ्यालने ग्रांमीने आदरसहित समिकतने अंगीकार करो, ते विना देवलोकनी गति नथी, ए सर्व धर्मथकी उत्तम धर्म हो. जेथी मोक् पामवो सुलन हे, ए समकितथकी जिननामकर्म पण श्रेणिकादिकनी पेहें पामवुं सुलन थाय हे. जेने बीजुं कोइ व्रत मात्र पण नथी तो पण एकज समकेत पाजवाथकी शीघ्र तीर्थंकर पदवी बांघे, जो पूर्वकोटि पर्यंत अत्यंत श्राकरी तपश्रर्या करे तो पण समकेतविना मिण्यात्वी जीव पांचमा ब्रह्म देव लोकसुधी जाय. एवी गुरुनी वाणी सांजलीने जानु खने जामर खादें देइने सर्व परिवार प्रतिबोध पाम्यो. समकेतवंत थया. वेली कुतरी अने पा डो पण समकेत पामी शीघ्र अनशन आराधी सौधर्म देवलोकें गयां. ते बेंद्ध देवता देवलोकची आवीने पोतानी देवता संबंधी ऋदि देखाडीने नानु तथा नामरने धर्म पमाडी देवलोकें गया. देवतत्त्व, गुरुतत्त्व अने धर्म तत्त्वना आराधनने विषे बेहु नाइने एकायता थइ, परंतु संसारस्खना लालची हे, तेथी धर्मनी कियाने विषे ते बे नाइ आलसु हे. तेथी विष्णुने जेम एक सुदर्शनचक्र जगतने जीतनारुं हतुं तेम सुदर्शनरूप एकज समकेतने पाम्या थका रह्या. हवे ते बे नाइनी बे बे स्त्रीयों हे तेमनी एके कनी बे वे वाहाली सखीयों हे,ते बे स्त्रीनी वाणीयें ते चारे सखीयों पण समकित पामती हवी. सत्संगतिनों एदोज छण हे ॥ दोहों ॥ साधु मह्ये सुख उपजे, जल मले मल जाय ॥ साहमाने पावन करे, पोतें पावन थाय.

एकदं। श्रन्य दर्शनीने वचने नानुने त्रण तत्त्वने विषेशंका उपनी, जेम उज्ज्वल वस्त्रने माघ लागे तेम शंका करवाथी माघ लागो पण निंदा करे नहीं. वली नानुनी स्त्री महोटा कुलनी उपनी हती तेणे स्त्रीनी तृष्ठ जाति माटे कुलनो मद कह्यों तेणे करी नीच कुलें उपनी, सर्वे श्रायुष्य पूरुं करी सौधमें देवलोकें जङ्ग उपन्या. त्यांथी चवीने सर्वे तमो इहां श्रावी उपन्यां हो. त्रण तत्त्वना श्राराधवायी त्रण दिव्य वस्तु पाम्यां. वली श्रावी त्रण स्त्री मली श्राने त्रण खंमनुं राज्य पाम्यां. नानुने पूर्वनव त्रण वार त्रणतत्त्वने विषे शंका उपनी तेथी त्रणदिव्य वस्तु गइ. जयराजानी पूर्वनवनी स्त्रीयं कुलमद कह्यों तेथी गणिकाना नीचकुलें श्रावी उपनी, एवी वाणी सांजली जयादिक सर्वने जातिस्मरण उपन्युं. तेथी सर्व जनो धर्मविषे दृढ यइने श्रावकनो धर्मे समिकत सहित श्रंगीकार करता हवा. केवलीयें विहार कह्यों. जयविजयादिक सहु पोत पोताने घेर श्राव्या.

हवे विजयराजा पृथ्वीने विषे समिकत धर्म प्रवर्तावता हवा. जैनधर्म च लाववे करीने एक उत्र पृथ्वी करी. राजानी आक्वायें सर्व तेम करता हवा. चार श्रद्धादिक सडसठ बोर्जें करीने ग्रद्ध समिकतने पालतो, पलावतो थको विषम संकटने विषे पण क्यां ही स्खलना पामतो न हवो. नाना प्रका रें करी नानाप्रकारनी चैत्य पूजादिक करतो, देवयात्रा संघनिक इत्यादिक नित्य करणीना करवायी समिकतने दीपावतो, सर्व मिण्यालनो नाश कर तो हवो. विजयराजाने विजया देवी प्रमुख त्रणे राणीने १ नंदन, १ आ नंदन श्रमे ३ संदर, एवं नामे त्रण पुत्र थया.

एकदा शकेंड पूर्व महा विदेहहेंत्रें विहरमान परमेश्वरने पूर्वतो हवो के, हमणां नरतहेत्रे जिन्धमेने विषे हढ एवो कोइ श्रावक है ? जेम स

मुइने विषे लवण समुइनी पृष्ठानुं प्रयोजन नही, तेम नरतक्त्रनी पृष्ठानुं ग्रं प्रयोजन ? एम कोइ पूने तिहां कहे ने, के नरतक्त्रनी साथें सौधमें इने स्वामिपणानो संबंध ने, ए प्रयोजन माटें पूनगुं, त्यारें परमेश्वरें कहां के पोताना धर्मने विषे वज्र सरखो दृढ एवो विजयपुर नगरने विषे विजय राजा ने. जेम वायराथी मेरु पर्वत चलायमान थतो नथी, तेम तेने पण कदापि कोइ देवता आवीने पोताना पराक्रमधी चलावे, तो पण ते पोता ना धर्मथकी न चले. एवं परमेश्वरनुं वचन सांजलीने इंइ हर्षित थइने पोतानी सजामध्यें विजय राजानी प्रशंसा करतो ह्वो. ते प्रशंसा सांजलीने कोइक मिथ्याली देवता एम विचारवा लाग्यो के,हुं जइने इंइनुं वचन खोटुं करुं! हवे ते देवता जैन अवधूतनो वेष करी,विजय राजानी पासें आवी, पोतानी कलाना कुशलपणायें करी,राजाने रीकवी वश कखो. जेम विनीत शिष्य गुरु वचन सत्य करी माने, तेम अवधूतना वचन राजायें मान्यां.

ह्वे एकदा राजानी साथें अवधूत धर्मचर्चा करतो, निगोदादिकना स्न क्य विचारना संशय देखाडतो राजाने पूछवा लाग्यो. तत्त्वप्रकाशमां माह्या एवा राजायें जेम हाथी संढे करी वृद्धने समूल वन्मूलन करे तेम युक्तिरूप सुंढे करी शीव्रपणे तेनो मूलमांथी सर्व संशय काढ्यो, त्यारे अवधूत रा जाने कहेवा लाग्यो. अहो ! सर्वज्ञनो धर्म घणो रूडो हो, जेथी कर्मेक्य करीने मोद्दें जवाय,परंतु विशेषपणे ते धर्मनो कोइची निर्वाह याय नहिं, ते घणो इष्कर हे, खङ्गधारानी गित सरखो हे,माटे तेने रूडी रीतें करवाने को ण समर्थ थाय? अपि तु कोइ न थाय. त्यारे राजायें कद्युं जे ए धर्मना निर्वाहक साधुजन हे. राजानुं ते वचन सांजलीने ते खंबधूत मस्तक धू णावतो कहेवा जाग्यो के, ए ऋषियो तो आमंबरी हे. एना अंतःकरणनी स्थित कोण जाणे हें ? राजा, अवधूतनुं एवं वचन सांजलीने खेद करतो एम कहेवा लाग्यो के,हे चूंमा ! तुं ए हां बोले हे ? जैनमुनि माहानाग्यना थणी है, वीतरागना मुनियोना धर्ममां आवो संवाद क्यांय नथी? जेम सर्वेक् नुं वचन तेम जैनमुनिनुं वचन पण जाणवुं. त्यारें फ़री ते अवधूत कहेवा लाग्यों के पूर्वें हुं ए क्षियोमां रह्यों हुं,तेथी सर्व जाएं हुं जे ए कहे हे ए क, अने करे वे बी जुं, जो एम न होय तो हुं केम कहुं के ए मात्र दर्शन रूप ने पण महारा सर्व जाएोला ने तो हुं जूनुं केम बोलुं ? माटे हे राज

न ! प्रथम साधुनुं पारखुं कखाविना आदर करवो नहीं. कारण के ड्रिंदि यितिने जितें िवपणुं क्यांथी होय ? अरिहंतना यितने यितपणुं विशेषें हो यज नहीं. तेवारें राजा बोख्यो क्षिनी परीक्षा ते शी करवी है ? में तो सु वर्णनी पेरें रूडी रीतें परीक्षा करेलीज है, तो पण तुं कहे है, ने जो तुफ ने संदेह होय तो वली पण यथायोग्यपणे आपणे परीक्षा करछुं.

एवामां देवमायायें करी तिद्धां कोइ उत्तय ग्रह आचार्य घणा साधुना प रिवारें वनमां आवी समोसखा. तिहां अवधूत अने राजा गया ते वखत महारो आ जन्म सफल थयो,एम कह।ने राजायें मुनिना गुण वर्णववा मां म्या. त्यारें ते अवधूत कहेवा लाग्यों के,मिणनी पेरें परीक्वाने विषे उद्यम करो, पढ़ी गुण वर्णवादिक यथायोग्यपणे जे करबुं घटे ते करजो. परीक्वा ते नष्टचर्यायें थाय. त्यारे राजा कहे के तमें कह्यं एमज करीयें. हवे राजा अवधूतनो प्रेखो, परीक्षा करवाने अर्थे अवधूतने लइ अंधारी रात्रें ति हां गयो एवामां राजायें एक मुनिने मिदरा, मांस, वेक्या आसक बात क्रीडा करतो देख्यो ते वखत राजाने रोष, मद, इंड्यि, संसारवैराग्य, उद्देग अने विचम, धर्मने विधे एकजाव धरतो थयो, तेएों करी तेने सर्व नावनुं मिश्रितपणुं थयुं, पढी विज्ञोपनो जाण राजा कहे हे, हे मुने ! श्रा ग्रुं करो हो ? ए श्रसमंजस करवुं तमने घटतुं नयी ॥ यतः ॥ क क्रीडितं सूरींड्स्य, क विष्टा कीटकस्य च ॥ क चारित्रं पवित्रं ते. कचे दं इष्टचेष्टितं ॥ १ ॥ किं क्वानं दर्शनं किं वा, किं चारित्रं च किं तपः ॥ कोजापः का क्रिया का ड्वीः, काजीरेवं करोपि किं॥ २ ॥ धिक् त्वां धिक् तां च डुर्बुदिं, धिक् ते वेषं च दांनिकम् ॥ धिक् ते निःशंकचित्तत्वं. धिग्नवं विषयांश्र धिक् ॥ ३ ॥ अत्रापि च परत्रापि, नविता नवतः क तु ॥ स्था नं च तस्य इःखानि, सोढा प्रौढान्यहो कथं ॥४॥ निःकलंकस्य धर्मस्य,कलं कोन्नावनान्नवान् ॥ अनंतद्वःखप्रनवं, ह्यनंतं च्रमिता नवं ॥५॥ हे मुने ! सूरीइनुं जे कीडित ते क्यां, अने कीटकनी जे विष्ठा ते क्यां ? वली तारुं पवित्र एवं जे चारित्र ते क्यां ? अने आ हमणां तें आदरेखं एवं जे डुश्रेष्टित ते क्यां ? ॥१॥ वली हे मुने ! तारुं ज्ञान ग्रं हे ? तारुं द रीन शुं ने ? तारुं चारित्र शुं ने ? तारुं तप शुं ने ? तारो जाप शुं ने ? ता री किया ग्रं ने ? तारी लंका ग्रं ने ? तारो नय ग्रं ने ? ए सर्व विचार कर.

श्रनें श्रा तुं ग्रुं करे हे ? ॥ १ ॥ तुने धिक्कार हो, तथा तारी बुिहने पण धिक्कार हो. तारा दांनिक मुनिना वेपने पण धिक्कार हो. तारा निःशंक चि नपणाने धिक्कार हो, तथा तारा संसारने श्रने विषयोने पण धिक्कार हो ॥३॥ श्रा लोकमां श्रने परलोकमां कोइ वेकाणें पण तारुं इःखनुंज स्थान हे. श्रहो इति श्राश्चर्ये ते स्थानकनां श्रीह एवां इःखने तुं केम सहन करी श कीश ॥४॥ वली निःकलंक एवा जिनधमेने कलंकना उत्पन्न करवाथी तुं श्रनंताइःखनी जेमां उत्पत्ति हे एवा संसारमां श्रनंता नव च्रमण करीश ॥५॥

एटला माटें हे तत्त्वना जाए ! ए क्रुकमे ढांम. तुं ग्रुं तत्त्व जाएंतो न थी जे कुकर्म करे है ? एम कहेते थके राजाने साधु कहे है. अहो राजा ! तुं तत्त्वज्ञाननो अजाण थइने ग्रुं मुजने कहे हे ? सर्वे यतियो एमज करे हे, ए वस्तु ढांमवाने कोएा समर्थ है ? तुं आगल जाइश तो अमारां बीजा यतियोनां आचरण जोइश, तो तारी मेखे तुं जाणीश. हवे राजा विचारे हे जे ए पतितनुं वचन हे. पण सर्वे कांइ एम करता नयी. एम विचारतो आ गज जाय हे,तो एक साधुने स्त्रीजंपट,एकने चोर,एक खाहेडी,एक कसाइप एं करतो, एक माढीनुं कमें करतो, एवा देख्या. तेवारें राजायें विचाखुं जे ए सर्वे च्रष्ट हे, ए सर्वने गुरुने कहीने शीघ्रपणे गन्न बहार सूका पान नी पेरें कढावीश! एम चिंतवतो पोताने ज्ञवने खाव्यो. तेटलामां खंतः पुरमांची गुरु निकल्या तेने राजायें दीवा. हवे राजायें चहेगने संबेद धरतां जेवो तेने दीवो,तेवुंज अवधूतने कह्युं. त्यारें अवधूत बोख्यो हे राजन् ? अमा रुं वचन वेदनी पेरें जुढ़ुं न याय,ते माटे ए सर्वनें धूर्त जाणीने विश्वास न करीश. हवे ते राजा पोतें मार्गानुसारी हे माटे पोताना चिनमां विचारवा लाग्यों के, ए असंनाव्य वचन हे. एवं संनवेज नहिं. ज्यारें एवं कुकर्म क रे, त्यारें सूर्यथी ख्रंधकार केम नासे ? तेमाटे युगांतने विषे पण ए वात ब ने नहीं,साधु एवा होयज नहिं. साम्हात् साधु पण लोकमां हे. साचुं अय वा जूतुं सर्वने विषे एम न होय, सर्वे हीणा हे एम् जाणीने अनास्ता राख वी ए ग्रुक्त निहं. एकवार मार्गें साथ लूंटाणो एटलामाटें ग्रुं सदाय साथ लूंटाज़े ? एम ज्यारें होय, त्यारें तो कोइ मार्गे चालेज नहिं. एटला माटे चारित्रिया तो सदाय पूज्य हे. एने तो कोइ च्रम मत आवी उपनो वे, तेथी निन्हवपणानो नाव नजे वे,एवो राजाना मनमां विचार उपन्यो.

त्यारें राजाने प्रतीत उपजाववा माटें वली अवधूत कहें के दें राजन ! वुफने दृष्टिराग आकरों हो. कामी नरनी पेठें वुं खोटुं देखीने पण राग हांम तो नथी, माटें दृष्टिरागीने धर्म न होय धर्म तो तत्त्वनो निर्णय करे, ति हां रहे. राजा कहे में निर्णय कखोज हो. सर्वकृतुं वचन सत्यज हो, ते सर्वकृं कह्युं हो जे गुरुपणानो जाव तेमां संदेह न राखवो. साधुने वुं जूहों करे हो, तेमाटे वुं मिय्यादृष्टि हो, तेथी तहारी साधें बोलवुं गुक्त नथी. एवा राजा नां वचन मांजली कपटनुं घर ते अवधूत पोताना प्रयासमां निष्फलताने पाम्यों, तेथी ते धूर्च विलखो थयो थको तिहांथी उही गयो. राजायें तेने मिथ्या त्वी जाणी फरी पाही ते धूर्चनी खबर पण लीधी नही, धूर्च पण जतो रह्यो.

अन्य दिवसें रात्रिने विषे राजा,प्रधान आहें देइने सर्व सन्नाना लोकोने कोइक दिव्य पुरुष स्वप्नमध्यें आवीने कहेवा लाग्यों के आ नगर मध्ये के वारें पण न थयों होय एवा आकरों कोधवंत यमनी क्रीडाना आकार जेवों सर्पनों उपइव यज्ञे,तेमाटें नगरने देहरे देदीप्यमान नागनी मूर्तिनी आदर सहित पूजा करों, तो उपइव टलें, जेम व्याधिने औषधनों उपाय छ, तेम एनो एक एज उपाय छे. बीजों कोइ उपाय उपइव टलवानों नथी.

वली प्रातःकालें कोइ निमित्तयो राजसत्तायें आवी, तेमज दिव्यपुरुष ना स्वप्तनी पेठेंज कहेतो ह्वो. स्वप्त तथा निमित्तियानी वात एकज म ली, जे वातनी वे निज्ञानी मली, ते वात निःसंदेह थइ. एवं समजीने सर्व कोइ ते नागराजानी पूजा अनेक प्रकारें विशेषें करी करतां ह्वां. मरवानो नय कोने न होय? समिकतवंत राजाने सर्व प्रजायें नागनी पूजा करवा कहां, पण राजायें ते मान्युं नहिं. पूजाने विषे मन स्थाप्युं नहीं. ग्रुइबुद्धि थी राजायें विचाखुं के, जे कांइ थवानुं हे ते सर्व कमीधीन हो, ते ग्रुजाग्रुज जोगवेज हुटे, माटें इहलोक सुखनी वांहायें कोण पोताना धर्मने मलीन करे ? एम विचारी निर्जयपणुं कखुं. एवामां राजाना घरमां आकरा बी हामणा सर्प आव्या. ते किलकालने विषे खल जेवा फूंफाडा मारता,फणा टोप करता,लोकने जय पमाडता,विकराल मुखवाला जाणे प्रथ्वीनेज फाड शे के ग्रुं? एवा सप्पें राजाना अंतःपुरमां पण पेठा. तेने देखीने राजलोक सघलो त्रास पामतो ह्वो, तेवारें सर्वलोक क्षेशनुं ठेकाणुं जाणीने नातां थकां बीजा घरमां ग्रुयां, तिहां पण तेमज जेम जीवने कर्म पाहल आ

वी लागें, तेम सर्प आवी तेमनी पाढल लागा. तेवारें सर्व प्रधानादिकें मली आस्थान सनायें आवी राजाने कह्यं के हे राजन्! तमें माह्या बो,मा टें तमारे कदाग्रह करवो घटे नहिं. धिक्कार पडो तमारा कदाग्रहने. पंिन तने क्यो कदाग्रह करवो ? जो नहिं मानो, तो पोतानाज पोतें शत्रु थइ ने कदायह आरंन्यो कहेवाज्ञे, तेथी थोडा माटें घणो अनर्थ थाज्ञे. एटला माटें क्षेश शांतिने अर्थें शुं हमशां प्रण नागनी पूजा करता नथी ? पढी जेम वैद्यविना व्याधि वधे तेनी शी गति याय ? इत्यादिक मंत्रीयें घणुं कह्यं, तो पण राजा दृढ थको नागनी पूजा न करतो ह्वो. त्यारें क्रोधवंत थयो थको ते नाग स्वप्न मध्ये आवी,राजाने कहेवा लाग्यो के रे रे मूर्खा ! तुं मु जने अवगणे हे,पण तें मारुं पराक्रम दीहुं नथी! हुं रूहो यको साह्मात् यम सरखो बुं, अने त्रूवो थको कल्पवृक्त सरखो बुं, ते माटें तुं मुफने पूज. स मिकतनों कदायह वांम. अन्वयव्यतिरेकें करी जे वते ते वतुं अने जे अ वते ते अवतुं, तेणे करी प्रगट फल प्रत्यें जोतो थको पण तुं महारी पू जा करतो नथी. समकेतरूप कदायहें करी यहां वे हृदय जेतुं एवा हे राजा ! आज प्रातःकालें ठठीने पोतानी मेलें प्रनातें महारी पूजा तुं ज रूर करजे, जो तुं निहं कर, तो तुजने, तारी नार्याने अने तारा पुत्रने य मने घेर मोकलीश. एम साञ्चात् नागें कह्यं तो पण समकितना दूषणने नयें राजा ते नागप्रत्यें पूजतों न हवो. त्यारें ते काल जेवो नाग आवी ने राजाना पुत्रने मंसतो द्वो,तेज वेलायें ते राजपुत्रने मूर्जा आवी,तेथी चूमिकायें पड्यो,तो पण राजा पूजा न करतो हवो, पढी राजानो परिणा म फखो नहीं, त्यारे ते नाग, पटराणीने पण मस्यो,ते पणं पुत्रनीज दशा पामी. एम बीजा बे पुत्र तथा बे राणीने पण मस्यो तेथी तेनी पण ए ज दशा थइ, तो पण राजा .लगारे न चट्यो ! त्यारे मंत्र, तंत्र, खोषि प्र मुख उपचार कह्या, ते सर्वे निष्फल थया. राजादिक सर्वने घणो शोक थतो ह्वो. ह्वे ग्रुं थरो ? ग्रुं करग्रुं ? एम विकल्प. करे हे, एवामां अक स्मात् जाए। यें कोइक देवतायें ज मोकव्यो होय निहं ? एवो सर्व गारुडी मां अयेसर एक गारुडी तिहां आय्यो. ते गारुडीने देखवा मात्रधीज जो पण जीववानी आशा सर्वने गइ हे, तो पण सर्वे मुदित यता ते गारुडी ने घणी आगता स्वागता करी आदरमान करता हवा. ते गारुडी कहे

वा लाग्यों के हे पृथ्वीनाथ ! ए सर्पनुं विष घणुं विषम हे, असाध्यनी पेरें हे, तो पण हुं मारी शक्तियें करीने कोइक उपाये करी उतारीश. एम कहीने एक कन्याना हाथमां अक्ततनुं पात्र स्थापीने मंत्रित कखुं, पढी ते अखंम अक्त जेवा गारुडीयें मंत्रीने ढांट्या,तेवामां तो ते देवता तिहां क न्याना शरीरमां उतरतो ह्वो. तेवारें ते गारुडी देवप्रत्यें कहेतो ह्वो के हे फिएपित ! तुं प्रसन्न थइने आ इःख पामता सर्वने मूकी आप. ते वात सांजलीने कत्याना दिलमांथी ते देव बोव्यो के ए राजा निरंतर कदायही हे, श्रमे श्रमने तो जाएतोज नथी माटें हुं तेने नहि मूकुं, मुने घएो एनी उपर रोप हे. साहामुं ए राजाने पण नयानक पणे हुं मशीश. कारणके देवता ना रोप विषम होय ते सांजली गारुडी कहे जे एटलुं कह्याथी रोपनुं फल य युं. हवे प्रसन्न थार्ज. महोटाना क्रोध,प्रणाम करवाथी उतरी जाय. जो त्र्या गलो नमे,तो महान् पुरुष रोप जनारी नाखें,माटें तुं कहीश ते करावद्यं. ते सांजली नागदेव बोव्यो हे गारुडीमुने! आखुं जगत माने हे,पण सुका काष्ठ नी पेरें आ राजा तो नमतोज नथी. एटला माटें मुक्ते एनी उपर कोथामि घणो है. ते केम शमे? शत्रु सरखाने पण मूके है तो नम्यानेज केम जीव ता न मूके ? एटला माटें तुं मुक्तने कहीश मां,हुं नहीं मूकुं,जो नमे,तोज मूकुं.

मंत्रवादी कहे हे हे राजन ! तुं एने नम, एटले हुं एने कही ए अनेषे यकी तुने मूका तुं, बीजा सर्व उपायें सखुं. जो तुं प्रत्यक्तन नमे नो मनधीज नम, एटले तारो नियम पए न नांगे. जीवने पुएय पाप तुं हेतु एक मनज हे. व ली व्रतने विषे देवा नियोगादिक खागार पए कह्यां हे, माटे तेमां दोप थोडा ने गुए घए। हे. जोयरुं पए क्यांहि द्वार विना न होय महोटा कार्यने ख थें एक खंशमात्र दोप खादरीयें तो व्रतनंग न थाय. ताव खाव्याना प्रथम दिवसें खन्ननो त्याग करवो ते गुएकारी हे माटे खाहीं लांघणो थी उत्पन्न थयुं जे कशपणुं ते पथ्यादिकथी टले हे माटे खाहीं कदाचि त् दूषण लागे तो तुं प्रायधित लेजे. हे राजन ! यतिधमेंने विषे उत्सर्ग खने खपवाद, ए बे धमें कह्या हो. तो शावकने केम नहिं कह्या होय ? एटलामाटे तुं एकांत ताणे हे ते खोदुं करे हे. तुक्तने एकांत ताण हुं घटेन हिं. धमें तो स्याद्दाद खरो हे. खने स्याद्दादी तो एकांत ते मिथ्या हे. माटे हे राजन ! कदायहर हांनीने तुं नाग राजाने पगे लाग,ताहरां वहान स्वी पुत्रों हे राजन ! कदायहर हांनीने तुं नाग राजाने पगे लाग,ताहरां वहान स्वी पुत्रों

ने जीवाड. नहिंतर ए सर्वनी हिंसा थरो. कयो बुदिमान् पोतानुं हित न साधे! ए प्रमाणे अईतमतने जाणनारो अने मंत्रवादीयें सयुक्तिक गारु डीनां वचनथी उत्पन्न थयुं हे ज्ञान जेने एवो अने सत्त्वगुण तथा गौरवें करी गीर हे कांति जेनी एवो जिनमतनो जाए राजा कहेतो हवो के हे गा रुडी ! आ तारं कहेवुं सर्वे कायर मनवालाने मानवायोग्य हे, मने तुं ए वात कहीशज मां. धर्मने विषे धीर थयेलो एवो जे डूं ते जो महारां प्राण जातां हो तो, नर्से जार्र, पण ढुंएने नहिं नमुं. कारण के खब्प खतिचारथकी पण धर्म नुंसारपणुं जाय हे. जेम पगमध्यें कंटो वागवाथी प्राणी खोडो याती नथी शुं ? तेमाटे जे दूषण लगाडीने प्रायश्चित्त लेवुं, तेथी दूषण न लगाडवुं ए ज रूडुं! जो उत्सर्ग मार्गने विषे शक्ति न होय तो अपवाद आदरवो,पण स मर्थने अपवाद मार्ग सेववो घटतो नथी. वली तुं स्याद्वाद कहे हे ते परमे श्वरें कांइ पापकार्यने विषे स्याद्वाद कह्यो नची. स्याद्वाद ते हुं हे ? कांत मार्ग हो. ते स्याद्वादीने करवा योग्य हो, खने संसार संबंधि पुत्रनार्याद कने तो अनंतीवार हुं पामी आव्यो हुं, पण धर्म क्यांहिं न पाम्यो. तेथी ते पुत्रादिकने माटे धर्मने नहीं इहतुं, धर्म नहिं हांहुं. स्वीपुत्रादिक सर्व व स्तुथकी पण प्राण वल्लन हे. तेनो पण नर्खे विनाश थार्ड, परंतु अंगीकार कचो जे धर्म, तेने अल्पमात्र पण हुं निहं खंग्रं, एटला माटें हे गारुडी! जो तुफमां बीजी कोइ शक्ति होय, तो जीवाड. नहिं तर तुं तारे मार्गे शीघ चाव्यो जा. जाजी प्रार्थना करवी ते पण वृषा हे. जेमाटें जीववुं ते आयुः कर्मने आधीन हे. आयुष्य त्रृटे, जीवाडवानो प्रयास निष्फल हे. एवं रा जानुं बोलवुं सांनली गारुडी कोप्यो थको कहे ने हे राजन् ! तुफने धि कार हे. तुं कदायहें यस्त हतो महारी अवगणना करे हे. तो जे प्राणी हि तने ऋहित करी माने हे, ते डुर्बुद्धि जाणवो. तेनुं कव्याण न थाय. जेम रोगियो पुरुष जला वैद्यनुं वचन न माने, तो तेनो रोग केम जाय ? तुं कदायहरूप जे विष, तडूप जे वृक्त तेनां फलने हम्णांज नोगवीश. हे नाग देव! ताहरे इन्ना होय ते तुं कर, हुं हवे जाउं हुं. एम कहीने मंत्रवादी गारुडी उठ्यो, तेवारें सूर्य पण उदय पाम्यो, ते जाणीयें विजयराजाना सत्त्वनुं अतिशयपणुं जोवानेज उग्यो होय नहीं ? तेवारें वली सर्प, बूटा मूक्या पाणी ना पूरनी पेरें अत्यंत दूरची मदोटा वेगें करी क्रोंधें जराणी यको राजानुं

सत्त्व जोवाने काजें राजाने कहेतो हवो के हे अधम! तुं निःशंकचितें उन्म त्तनी पेठें सर्वने तृण समान गणे हे पण नथी जाणतो जे देवतानी शक्ति अत्यंत इःसह है! जे मूर्ख होय ते निर्घात कथा विना तथा अवलो सवलो फेरव्या विना वेकाणे आवे नहीं. माटें हुं ताहारा मूढपणानुं फल हमणाज तुजने देखाडुं डुं, ते तुं जोजे. एम कहेतांज राजाने सर्व श्रंगें सर्प विंटाणा ने निर्दय थर् मंक देवा लाग्या. ते मंक्यकी राजाने कालज्वरनी पेरें सर्व प्रकारें सर्व शरीरें आकरी वेदना प्रगट थइ. सर्वे अंग सडीसडीने त्रूटी पडवा लागां, जाणीयें कोई बुरीयें करी बेदतोज होय नहिं ? पढी हा हा आइप्टनी चेष्टा जूर्त्र! एमकहेतो यको सर्पनो मंसयी इःख ययुं तेथी राजा आकरी चीश पाडवा लाग्योः ते सांचलीने केटलाएक कहे हे के राजाने मूर्जा आवी बे. पीडामां पण आकरी पीडा पाम्यो बे, इःखमां पण आकर्र इःख थयुं है, बीहामणामां बीहामणो एवो राजा थयो है. कोइ सामुं पण जोइ न शके, ते अवस्थानी वेदनायें करी राजायें पूर्वज्ञवने विषे केवारें नरकनी वेद ना अनुनर्व। हरो, ते विस्मृत यह गयेजी हमणां पाढी जाणी होय नहि. एवी जावनायें राजा जेटले चिंतवे हे तेटले त्रण राणी त्रल पुत्रनी मृत्यु अवस्था सेवकने मुखें सांजली, तेवारे जेम दाज्या उपर ह्यार मूके, तेम थयुं. हवे ते वखत जे राजाने वेदना हे, ते जे नोगवे, तेज जाणे अथवा क्वानी जाएो! एवी उपमारिहत इःखनी अवस्थायें करी राजा वेदना जोग वे हे. एवामां वली ते मस्तक धूणावतो हृदयमां नम्रपणुं, दीनपणुं प्रगटकर तो राजा उपर दया आएतो एवोगारुडी आवी कहेतो हथो के हजी पण तमें तमारा आंद्मानुं हित विचारी नागराजाने नमो, के जेथी तमारुं तथा तमारा कुटुंबनुं इःख टबे, ए विना बीजो कोइ जपाय नथी! ते सांनलीने यद्यपि इःखरूप वायरे तो कंपित हे तथापि व्रतने विषे मेरुनी पेरें अकंपित हे एवा ते राजायें पूर्वनी परें उत्तर आप्यों के सत्पुरुषनी वाणी फरे नहीं. वली ते गारुडी प्रत्यें कहेंतो हवा के हे गारुडी! एवात तुं सर्व प्रकारें मुक्तने कहीश मां, पण एक वात हुं पूजुं जुं,माटें जो तेनो मर्म जाणतो हो तो तुं कहे के, ए अत्यंत पीडा महाराथी सहेवाती नथी, एटला माटें महारु आयुष्य केटलुं वे ? तथा बीर्ज ए सर्प मारी पेवें बीजा कोइने करडे तो, ते केटलो काल जीवे ? त्यारें गारुडीयें कंद्यं के व महिना पीडा नोगवीने मरे माटे तुं तेट

ला काल केम इःख जोगवीश? ते कहे. तुं ते शामाटे इःख जोगवे हे? हवे अतुख्य सत्त्वनो धणी राजा निर्विकल्प थको कहेतो हवो जो पण हुं फूलनी पेरें इःख सहन करवा असमर्थ हुं, तो पण धर्मने हेतुयें हुं म हाक्तिनी पेरें इःख जोगवुं बुं. माटें परमास तो ग्रं ? पण व ग्रुंग पर्यत कां ए इःख रहेतुं नची ? इःख ते धर्महेतुयें अवस्य गुण नणीज चज्ञे. जो धर्म खंमचो हाँय तो अनंता जब नव नवां इःख जोगववां पडे, तो तेथी कांइ गुण याय नहीं. अने इःख जे हे, ते इष्कृत जे पाप तेनाथी याय हे, तेमाटे पापना क्षय यएज इःखनो क्षय थाय ने सुकतथकी सुख थाय, माटें ते सुकृत करवाने विषे कोण दृढ परिणाम नधरे ? एवं राजा बोले हे, तेवामांज तिहां पंच दिव्य प्रकट थयां. १ वस्त्रनी वृष्टि, १ फुलनी वृष्टि, र सुवर्णनी वृष्टि, ४ देवइंडुनि घवा लाग्यां. ५ त्राकारों रह्यो देवता अहोसत्त्वअहोसत्त्व एवी वाणी बोलवा लाग्यो, जेम श्रीअरिहंतने दान देतां पंचिद्वय प्रगट याय, तेम इहां पण पंचिदव्य प्रगट थयां. ए सर्व दृढ धर्मनो मिह्मा जाएवो. राजाना शरीरने विषे शाता थइ कांइ पए वेदना रही नहिं. राजायें पोताना मुख ञ्चागल देदीप्यमान एवो देवता बोलतो यको दीवो, तेवामां स्त्रीयोने तथा पुत्रोना शरीरें शाता थइ, ते दे खीने राजाना सेवकोयें आवी राजाने वधामणी दीधी मुखें मांगलिक बो जता हवा. देवता राजानी स्तुति करतो कहें हे, के हे नरदेव !·जगतमां तारो चिरं जय थार्ज. सत्त्वने विषे शिरोमणि एक तुंज बो, तेमाटें तुंने धन्य वे. तुं श्लाघनीयमां श्लाघनीय, तुं माननीयमां माननीय वो. जगतने विषे ताहरा सरखो अन्य कोइज नथी. हे जगत्पते ! महा विदेह केत्रमां शकेंड् नी आगल परमेश्वरें धर्मने विषे तारी हढता वर्णवी. ते सांजली इंदें तहा री प्रशंसा करी, ते हुं अधमथको न मानतो हवो, तेथी तुक्तने चलाववा श्राव्यो. में देवमायायें करी सर्वदा शीलवंत साधुने इःशीलिया करी देखा च्या, पण अढीद्दीपथी बाह्रिरना समुइ जेम स्थिर हो तेम में ताहारा अंतः करणने विषे अने बाह्यने विषे धर्ममां स्थिरपणुं दीवुं, तथा सर्पादिकना जे में जपड्वो कस्वा, ते पण तुजने धर्मथी चलाववा माटें कस्वा. वली अ ग्रनाचरण वाला मुनियो देखाड्या, तेथी कोइ पण पुरुषनां चित्त अद्य मात्र पण विकार पाम्याविना रहे नहीं. पण धन्य है. तुक्तने जे तुं क्लोज

पाम्यो नहीं. वली स्त्री तथा पुत्रने पण तें धर्मने अर्थे तृण तुत्य गण्यां. बी जो कोइ होय तो स्त्री पुत्रने अर्थे माठां कमें आचरण करे, पण तें ताह रा व्रतने विषे किंचिन्मात्र पण अतिचार लगाड्यो नहीं. माटें धन्य हे त हारा परिणामने ! तथा वली में तुक्तने वजािष्म सरखी वेदना करी ते वेदना तो तुंज सहे, बीजुं कोण सहन करे ? हे राजन् ! हुं तुक्तने चलावी शक्यो नहीं, तो बीजो कोण तुक्तने चलावी शक्या समर्थ थाय ? में मातुं कखुं. हुं माहा इश्वेष्टित अमर्थे करी नखो हुं. तुं अमर्थ रहित हो. जे महोटा पुरुषों हे, ते सर्व सहन करे हे, तेमने अवग्रण ते साहामा ग्रणरूप थाय हे, माटें हे राजन्! हुं तारो अपराधी हुं. हवे मुक्तने किंकर जाणीने कां इक कार्य कहे, जे हुं तत्काल आङ्गाकारी थको करुं.

राजा बोख्यो जेथकी सर्व वांवितार्थ सिद्ध थाय, एवो कल्पवृक्ष सरखों जे जैनधर्म, ते महारा हृदयने विषे अत्यंत स्थिरपणे रह्यो हे, तेने मूकीने छुं मागुं? तथा ए उपर बीजी वस्तु शी हे? जे तमें मुफने आपशो? मा टें जो तमें मुखबी बोख्या हो, तो हुं कहुं हुं ते मने आपो. तेवारे तेणें क छुं के छुं आपुं? तेने रें राजायें कहुं के तमो मिथ्यात्वने हांमीने समिकत ने आदरो जेथकी तमारुं देवतापणुं सार्थक थाय! ए मागुं हे. ते देवता, राजानुं एवुं वचन सांजली समिकत अंगीकार करी, हर्ष धरतो राजाने प गे लागी, आङ्गा मागी पोताने स्थानकें गयो. ए रीतें विजय राजा समिक तने विषे हृद थयो थको घणा कालपर्यंत राज्य जोगवतो ह्वो.

हवे एक दिवस राजा एवं चिंतवे हे जे धिक्कार हे मुर्जन के जेमाटें हुं आजसुधी पांगलानी पेहें चारित्र लेवाने उजमाल थतो नथी. तो तेविना मने मोक्त क्यांथी मलज़े ? तथापि श्रद्धा जे समकेतनी ग्रुद्धि ते जो करं, तो मुफने तेथी चारित्र सुलज थाय, श्रुने ए सम्यग्दर्शनथी मुफने केवल दर्शननो संजव थाय, तेमाटें उजमाल थहने सम्यग्दर्शनने आराधुं! एवं ध्यायीने राजा उजमाल थको देव, ग्रुरु, धर्मना ध्यानने विषे एक ध्या न, एक तान, एकायचित्त थयो थको समकेतनुं जूषण जे तीर्थसेवा ते क रवाना हेतुयें राजा पोताना ज्येष्ठ पुत्रने राजपाटें स्थापीने श्रीसिद्धाचल जीनी यात्रा करवाने अर्थें जतो हवो, गढ जीतवाने श्रुर्थें जेम कोइ निक खे तेम मोह वैरीना गढने जीतवानी इन्हा करतो एवो राजा मोक्किसिद्ध

ने अर्थे त्रण लोकने विषे उत्कृष्ट तीर्थ जे श्रीसिदाचलजी जेनो श्रनंत म हिमा है, जे नित्य है, तेनो सर्वागें करीने जेम विधि कह्यो है, तेवा विधि सहित सर्व शरीरनी समर्थाश्यें करीने ते तीर्थसेवा करतो त्रिकाल परमेश्वरनी पूजा करतो, चैत्यनी आशातना टालतो, पोताना जन्मने सफल करतो हवो.

हवे विजय राजा अन्यदा संध्या समयें सुस्थिर आत्मायें परमेश्वरनी महोटी पूजा करीने अञ्चत एवी सम्यग्दर्शन नामे नावना नावतो हवो. छहो परमेश्वर! तमें सुखें सधाय एवो बोधिधर्म कह्यो. जेना बलथकी तप, दान, क्रियादि कष्टकखाविना पण संसारनो पार पामीयें, तिहां सर्वे दोष रहित परमात्मा देव, सर्वे आचारवंत एवा ग्ररु, सर्वेज्ञ नाषित धर्म, ए जैनमत उपरांत कोइ अन्य धर्म वे निहं. ए व्यवहारथी देव,गुरु तथा धर्म जाएवो. एवी रीतें विजय राजा नावना नावतो आत्मस्वरूपन्नं चिंतवन करतो परमात्मपणुं ध्याववुं, जे ए आत्माज ग्रुद देव वे अने परम आ चारवंत जे नावात्मा तेज ग्रुरु है. तथा आत्माना ग्रुद्ध परिणामरूप ते नावधर्म जाएवो. एवी रीतें निश्रयथी देव, गुरु अने धर्मनी नावना नाववाना एकाय विद्युद्ध्यानें करीने मोक्ष चढवानी निःश्रेणी एवी इपक श्रेणियें चढ्यो. अहो! जीवनी शक्ति केवी हो? जूर के ते वेला ए तिहां रात्रि हे, तो पण राजाने श्रंथकारना समूहना नाशनुं करनार ए वा केवलज्ञानरूप सूर्यनो चदय थयो, जे वस्तु कष्टें नीपजे, ते कष्ट विना प्राप्त थइ. पिता करतां पण पुत्र अधिक थयो, जेमाटे गृहस्य बतां पण के वलक्वान पाम्यो. एटले कोइ चारित्र लइ खत्यंत तप क्रिया प्रमुख करे, तो पण केंवलकान, कप्टें पामे. ते चारित्रियो तो गृहस्थना पिता तुव्य हे अने पुत्रने गृहस्थपएोज केवलकान जपन्युं. ए मोटुं आश्वर्य ? ते राजक्षिने दे वतायें वेश आप्यो, देवतायें पूजा करी, उत्सव कथो. हवे विजय राजक्षि पोतानी त्रण स्त्री तथा पोतानो नाइ जयराजा अने वे पुत्र ते सर्वने प्रति बोधी शीघ्र दीक्का खेवरावतो ह्वो. घणा कालसूधी प्रथ्वी उपर विचरी ला ख वर्षनुं आयुष्य पाली, पोताना सर्व परिवार संघातें मोहें पहोतो. अ हो ! जुर्र रूडा समिकतनुं फल ! ॥ यतः ॥ आराधने च दृढता विषये फल स्य,प्राप्तावपीति विजयस्य जयस्य चोचैः॥ श्रुत्वा सुदद्गीन निददीनमञ्जतं जो, नव्याः सुदर्शनविधो विधिवद्यतध्वं ॥ १ ॥ जावार्षे म् ए समकेतना आ

राधनने विषे हढता छने तेना फलनी प्राप्तिने विषे जय छने विजय राजा तुं हष्टांत कक्षुं ते सांजलीने हे जव्यजीवो ! तमें समकेतने विषे विधिसहि त यह करो ॥ इति सम्यक्खविषये जयविजय नृप कथानकं समाप्तं ॥

द्वे प्रथम सम्यक्तनो लाज, चार गितने विषे संज्ञी पंचेन्डिय पर्याप्ता ने थाय, कोइक अनादि मिथ्यादृष्टि जीव मिथ्यात्व प्रत्ययीया अनंतापुद् गल परावर्त्त संसारमां जमी पर्वतना प्राषाणनी तथा नदीना पाषाण ने न्यायें अनाजोगें निपजाव्युं एवुं जे यथा प्रवृत्तिकरण परिणाम विशेष रूप, तेणे करी एक आयुःकमे वर्जित सात कर्मनीस्थित पत्योपमने अ संख्यातमे जागें न्यून एक कोडा कोडी सागरोपमनी करे.

इहां जीवने राग हेपने परिणामें इष्कर्में करी नीपजावी एवी निविड क केश घणा कालनी शंथि गांवनीपरें इःखे नेदवा योग्य जे पूर्वे क्यारे पण नेदी न हती, ए शंथी देशलगें अनव्य पण यथाप्रवृत्तिकरणें करीने अनंती वार आवे. ए शंथिदेशने विषे वर्ततो नव्य अथवा अनव्य जीव असंख्या तो काल रहे. त्यां रह्यो थको इव्यश्चत कांक्क कणा दश पूर्व नणे. यावत् श्रीजिनतीर्थकरनी कृदि देखवाथकी, स्वर्गना सुखनो अनिलापी थको दी ह्या छेइने उत्कष्टो यावत् नवमा श्रेवेयकसुधी अनव्यजीव पण जाय. इहां कांक्क न्यून दश पूर्व ते मिण्यालीयें यह्यो, माटेंमिण्याश्चत पण होय एट छे ज्यांसुधी नव पूर्व पूरण अने दशमा पूर्वनी त्रण वस्तुपर्यंत नणे तिहां सुधी समिकतनी नजना जाणवी,अने जेहने चौद पूर्व अथवा दश पूर्व सं पूर्ण श्चत होय तेने समिकत श्चत कहीयें. तेने नियमा समिकत होय. शे प कांक्क न्यून दश पूर्वधरादिकने समिकतनी जजना जाणवी कोक्कने समकेत होय अने कोक्कने न होय ॥ यहकं कल्पनाष्ये ॥ चउदस दस य अनिन्ने, नियमा समन सेस नयणा इति वचनात् ॥

हवे ते यंथिने तीक्षण कूहाडानी धारनी परें जीव अत्यंत विद्युद अ ध्यवसायें नेदीने मिण्यात्वनी स्थितिने अंतर मुहूर्त उदय क्षणयकी उपर अतिक्रमीने अपूर्व करण अने अनिवृत्ति करण लक्ष्ण विद्युद्ध जनित जे सामर्थ्य तेणे करी अंतर्मुहूर्त्त कालप्रमाण प्रदेशें वेदवा योग्य दलियाने अनावरूप अंतर करण करे.

हवे ए त्रण करणनों अनुक्रम कहे हैं. ते कल्प नाष्यमां कहां है।। जा

गंिता पढमं,गंिं सम इिंड नवे बीयं ॥ अनियिह करणं पुण, समत्त पुर रकडेजीवे ॥१॥ जावार्थः—ज्यां यंथिदेशें आव्यो त्यां (पढमं के०) पहेलुं यथा प्रवृत्तिकरण कहीयें तथा यंथिने जेदवाने इन्नक ते बीजुं अपूर्वकर ण जाणवुं अने (अनिअद्विकरणंपुण के०) त्रीजुं अनिवृत्ति करण ते व ली (समत्त पुरस्कडे जीवे के०) समकेतने आगल कखुं हे, जेणें एटले जेजी वने समकेत दूकडुं हे, ते जाणवुं,

हवे अंतरकरण करे थके मिण्यात्वनी बे स्थित थाय है: एक तो अं तरकरणथकी पहेली हेवली स्थिति श्रंतर्मुहूर्न प्रमाणनी होय अने ते हथकी उपरती बीजी स्थिति जाएाबी तेनी स्थापना. ०॰ तिहां प्रथम स्थितिने विषे तो श्रंतरमुहूर्न कालप्रमाणे मिण्यात्वनां दलियां वेदवायकी मिथ्यादृष्टिज कहीयें. वली ते अंतरमुहूर्च काल गयापढी अंतरकरणने प हेले समयेंज मिण्यालनां दलियां वेदवाना अनावधी जीव अंतरमुहूर्न का जप्रमाण उपराम समकित पामे. पढी ते खोषधन्त उपराम समकेतना वर्ले करी शोध्या मीणाला कोदरानी तुव्य मिथ्यालदिलकना ग्रुद्, अर्दवि ग्रद अने अग्रदहर त्रण पुंज करे एटजे उपशम समकेतनो काल पण पूर्ण थाय, तेवारें उपशम समिकतथी पड्यो थको जो ग्रु६ पुंजनो उदय यावे, तो हायोपशम समकेत पामे, अने जो अर्६विग्रं६ पुंजनो उदय या वे, तो त्रीजे मिश्रगुण वाणे आवे, अने जो अग्रहपुंजनो उदय आवे तो पाठो मिथ्यात्वें जाय ॥ उक्तं च ॥ कम्मगांथे सुधुवं, पढमोवसमी करेइ पुं जितयं ॥ तबिंडि पुण गन्नइ,सम्मे मीसंमि मिन्नेव ॥ १ ॥ . नावार्थः -क र्भयंथने विषे निश्चें प्रथम उपरामवालो त्रण पुंज करे,तेथी पड्यो थको हा योपरामे अथवा मिश्रें अथवा मिय्यात्वें जाय, ए कमीयंथनो मत जाएवो.

हवे सिद्धांतनो मत कहे हे:— कोइक अनादि मिण्यादृष्टि तथाविध सा
. मयीना वशयकी अपूर्व करणें करीने त्रण पुंज करे ते त्रण मांहेला ग्रुद्ध
पुद्गल वेदतो थको उपशम समिकतने अणपामेज प्रथम हायोपशम सम्य
गृदृष्टि थाय तथा अन्य कोइक तो यथाप्रवृत्ति आदिक त्रण करण करीने
अनुक्रमें अंतरकरणें उपशम समिकत पामे, ते जीव त्रणपुंज तो करेज न
हीं. ते उपशम समिकतथी पच्चो थको अवश्य मिण्यात्वेंज जाय कल्पना
च्यें कह्युं हे के:—आलंबण मलहंती, जह संवाणं नमुंचए इलिया॥ एवं अ

कयतिपुंजी, मिइंविय जवसमिए ॥ १॥ जावार्थः — आलंबन अए पा मती एवी इलिका जेम पोतानुं स्थानक न मूके, तेम जेणे त्रएपुंज कखा नथी एवो जे जपशम समकेती जीव ते पाठो मिण्यात्वें जाय पोतानुं स्थानक मूके नहीं ॥ १॥ प्रथम समकित पामेथके कोइक समकित साथेंज देश विरति अथवा सर्वविरति अंगीकार करे हो. ते शतकनामें पांचमां कमेयंथनी वृहत् चूर्णीने विषे कह्यं हे॥ गाथाः — जचसमसम्मिद्दिहि, अंतरकरणे विजेजीने कोइ॥ देसविरईपि लप्नइ, कोइपमत्तोपमत्त जावंपि॥ सासायणो पुणनिकं पि लहइति पुंत्रय संक्रमणं कल्पनाष्ये जकं॥

मिथ्यात्व पुर्गलना दिलयां लेइने समिकत दृष्टि जीव प्रवर्दमान परि णामे समकेत पुंजमां तथा मिश्र पुंजमां संक्रमावे, त्र्यने मिश्रना पुजल ल इ समकेतमां संक्रमावे. तथा मिथ्यादृष्टि जीव समकेतना पुजल लइ मिथ्या त्वमां संक्रमावे, पण मिश्रमां संक्रमावे नही.

मियाल हीण कहा विना सम्यग्दृष्टि नियमा त्रिपुंजी होय अने मियाल हीणें िहपुंजी होय, मिश्र हीणें एक पुंजी होय, समकेत मोहिनी ह्य थये थके हायिक समकेती थाय. मीणाला कोदरानी कल्पनायें समकेतना पुजल शोधेला होय तेने विरोधि तैलादिक इव्यतुत्य एवा कुती थींना संसर्गथी कुशास्त्र सांजलवारूप मिथ्यात्वें करीने मिश्रित थया थ कां तेहिज ह्णाने विषे मिय्यालपणुं थाय, तथा समकितथी पड्योथको वली समकित पामे, तेवारें अपूर्वनी पेठे अपूर्व करणे त्रण पुंज करी, अ निवृत्ति करणें करी,सम्यक्लना पुंजने विषे जाय. तेवारें पूर्वे पाम्युं जे अपूर्वकरण तेनोज लाज थाय, तेथी एने शी रीतें अपूर्वपणुं कहीयें ? एवी शं काना निवारण माटे कहे ठे, के अपूर्वनी पेरें अपूर्व थोडी वारज पामे. माटें अपूर्वज कहीयें एम वृद्ध पुरुषों कहे ठे.

तथा सिदांतने मतें तो समकेत पाम्यानी पेठें जेवारें देशविरति अथ वा सर्वविरतिपणुं पामे, तेवारें पण यथाप्रवृत्तिकरण अने अपूर्वकरण करें, पण अनिवृत्तिकरण न करे अपूर्वकरणनो काल संपूर्ण थयें तेना अनंतर स मयेंज देशविरति अथवा सर्वविरतिनो लाज थाय. देशविरति सर्वविरति पा मवा अनंतर अंतर्मुहूर्न यावत् अवस्य कोइक जीव प्रवर्धमान परिणामे जं चो चडे, तेने जपर चडवानो नियम नथी तिहां कोइक वधते परिणामें व धतोज रहे, अने कोइएक खनावेंज रहे अने कोइएक हीनपरिणामी थाय.

जे कोइ जीव अनानोगें जाएया विना कोइ कारणें परिणामनी हस्वता थकी देशविरति अथवा सर्वविरति थकी पड्यो होय, ते जीव अनिवृत्त्या दिक करण कथा विनाज फरीने दशविरति सर्वविरति पणाने पामे.

एमज जे समकेती जीव आजोगें एटले जाणीनेज मिण्याल प्रत्यें गयो, ते जघन्यथकी अंतरमुहूर्त कांत रहे अने उत्रुष्टो रहे, तो घणे काले जे पूर्वें करण कह्यां हे, ते करण पूर्वकज ते समकेतना जाव प्रत्यें पामे. ए क म्मपयडीनी हित्तमां कह्यं हे तथा सेदांतिकने मतें तो विराधित समकेत वालो अथवा समकेत सहित पणे होय, तो पण कोइक जीव हिंदी नरक पर्यंत जाय अने कमेग्रंथने मतें तो समकेंत सहित जीव वैमानिक विना अन्यस्थानकें उपजे नहीं. एम प्रवचनसारोद्धारनी टीकामां कह्यं हे. तथा कमेग्रंथिकने मतें समकेत पामीने फरी समकेतथी पडेलो जीवकमें प्र हितनी उत्रुष्टी स्थित पण बांधे अने सिद्धांतने अजिप्रायें तो जेणें ग्रं थिनेद कह्यो होय ते उत्रुष्टी स्थितनो बंध करेज नहीं.

हवें ते समकेंत श्रोपशिमक, क्वायिक, क्वायोपशिमक वेदक श्रने सा खादन ए पांच नेदें हे. तिहां जे मिण्यारूप दर्शन मोहनीयनो उपशम न खरूप ते यंथिनेद करे, ते उपशमश्रेणिना श्रारंनकने विकद्षें होय.

बीजो क्वायोपशम ते समकेतपुंज, मिश्रपुंज अने मिश्याखपुंज, ए त्रण पुंजरूप दर्शनमोहनीयनुं क्यरूप जाणवुं ते क्वपकश्रेणि प्रारंजकने होय.

त्रीजा क्षायोपशमनुं लक्ष्ण कहे हे:—जे उदिरेला मिण्यालंमोहनीय तेने विपाकोदयें करी जोगवी क्ष्यकचा तथा अणउदिरेला मिण्यालने उपशमा व्युं हे ते क्षायोपशम समकेत जाणवुं. एने विषे ग्रुद्ध मिण्यालपुंजना पुजलने विपाकोदयें करीने जोगवे तथा प्रदेशोदयें करीने तो अग्रुद्धमिण्याल पुंजना पुजलने जोगवे. अने उपशमने विषे तो सर्वथा कोइ पण पुंजना पुजल वे दे जोगवे नहीं. सर्व उपशमावी मूक्या है, माटें ए उपशम ते अपीजिलक है अने क्षायोपशम पौजलिक है. ए रीतें ए वे समकेतनुं जेदपणुं समजवुं.

चोथा वेदक समकेतनुं स्वरूप कहे है:-अनंतानुबंधीनी चोकडी अने मिण्यालना त्रण पुंजमांथी बे पुंज संपूर्ण क्य करे हते अने समकेत पुंज

ना पण सर्व पुजल क्य करतां मात्र वेहला पुजल क्य करवाने जनमाल यको चरमपुजल वेदनरूप क्योपशमनो वेहलो समय तेने वेदक समकेत कहीयें.

पांचमा सास्वादननुं स्वरूप कहे है:- उपशम समकेतनुं वमन करनुं ते सास्वादन कहीयें. उपशम समकेतथी पडतो सास्वादनने फरसे.

हवे ए पांचे समकेतनी स्थितिमानादिक कहे हे:—उपशमनो काल श्रं तरमुहूर्त्तनो, साश्वादननो काल ह श्राविकानो, वेदकनो काल एक सम यनो, क्वायिक समकेतनो तेत्रीश सागरोपम जाजेरा श्रने क्वायोपशम स मकेतनो काल हासन सागरोपम प्रमाण जाणवो.

सास्वादन अने उपशम, ए बे समकेत उत्कृष्ट पणे आवे तो जीवने पांच वार आवे. अने वेदक तथा क्वायिक ए वे एकज वार आवे तेम वली क्वायोपशम असंख्यातीवार आवे तथा प्रथम मूक्यो तेनुं वली यह ए करवुं तेने आकर्ष किह्यें ते एक नव आश्रयी तो श्रुतसमकेतीने उत्कृष्टा एक सहस्र प्रथक्त आकर्ष होय अने देशविरतिने एकशो प्रथक्त आकर्ष होय तथा जघन्यथी तो सर्वने एकज आकर्ष होय.

सास्वादन समकेत बीजे गुणगणेज होय तथा जमशम समकेत चोथा गुणगणाथी मांमीने अग्यारमा गुणगणासुधीना आठ गुणगणे होय अ ने वेदक तथा क्योपशम एबे समकेतने चोथाथी सातमा सुधीना चार गु णगणां होय,तथा क्वायिकने चोथाथी चोदमासुधी अग्यार गुणगणां होय.

समकेत पाम्या पढ़ी उत्रुष्टियी नव पत्योपमें श्रावकपणुं पामे, तथा सर्व विरति उपशम, इयोपशमने असंख्याता सागरोपमना आंतरा होय.

अप्रतिपाति सम्यग्रहिं देवनव अथवा मनुष्यनवने विषे एक श्रेणि वर्कितने जेणे श्रेणि न करी होय ते सात अथवा आठ नवमां मोक् जाय. तथा क्वायिक समकेत वालो त्रीजे नवें अथवा चोषे नवें अथवा तेहीज नवें मोक्टें जाय,ते समकेत देवता, नारकी अने संख्यासंख्याता वर्षायुवाला चरम शरीरी मनुष्यने होय, तिहां जेणे सातप्रकृति क्वय कखानी पूर्वेंज आयु बां ध्युं होय,ते देवगित अथवा नरकगित प्रत्यें जइने तिहांथी मनुष्य यइ मो कें जाय तो त्रीजे नवें सिद्धि पामे, अने कदािष कोइयें तिर्थेच मनुष्यनुं आयु बांध्युं होय ते अवृत्य असंख्याता वर्षायु वाला युगलीयामां जइ उपजे पण संख्याता वर्षना आउखावालामां न उपजे. पत्नी ते युगलिया मरी

देवता थाय, तिहांथी मनुष्यपणुं पामी चोथे नवें मोहें जाय तथा जेणे आगला नवनुं आयु न बांध्युं होय, एवा अब ६ । युवाला तो तेहीज नव मां क्रपकश्रेणि करी मोहें जाय. ए एक जीवनी अपेक्सपें कह्यो.

हवे घणा जीवनी अपेक्संयें समकेतनो उपयोग जघन्यथकी अने उ त्रुष्टो अंतरमुहूर्त्तकाल अने क्योपशम रूप लिच्च तो एक जीवनी अपे क्संयें जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्रुष्टीलिच्च ग्रासव सागरोपम मनुष्य नवें अधिक जाणवी, एटले वे वार विजयादि विमाने अथवा त्रण वार बारमा देवलोकें जाय, तेवार पृत्ती समकेतथी अणपड्योथको मोकें जाय अने घणा जीवनी अपेक्संयें तो समकेत सर्वकालें पामीयें.

हवे समकेतनुं आंतरं कहे हे. जघन्यथी तो कोइक जीव समकेतथी प ड्यो थको वली दर्शनावरणीय कर्मना क्योपशमथकी पाहो अंतरमुहूर्नमां समकेत पामे, तो अंतरमुहूर्ननुं अंतर पड़े, अने उत्रुष्टथी घणी आशात ना वालो तो अर्दपुजलपरावर्ननुं आंतरं नाखीने पही परी समकेत पामे,ते तीर्थकरनी, प्रवचननी, ज्ञाननी,आचार्यनी, गणधरनी, महर्दिकनी एटला नी आशातनावालाने अनंतो संसार थाय. अने घणा जीवनी अपेक्सयें आंतरानो अनाव जाणवो. इत्यादि आवश्यकवृत्तिने विषे कह्यं हे.

अथवा समकेतना त्रण प्रकार है, एक कारक, बीजो रोचक अने त्री जो दीपक. एवा त्रण जेद है तेमां जे जली रीतें क्रयानुष्ठाननी प्रवृत्ति करवी, कराववी, ते कारक समकेत विद्युद्ध चारित्रीयाने होय तथा वीतरागना धर्म उपर रुचिमात्र होय पण क्रिया अनुष्ठाननी प्रवृत्ति पोतें न करे,ते रो चक समकेत,श्रेणिक कृक्षादिकने जाणवुं. तथा जे पोतें मिण्यात्वी हतां पण परने जीवादिक पदार्थने यथार्थपणे देखाडे, ते दीपक समकेत अनव्य एवा अंगारमईकाचार्यने दृष्टांतें जाणवुं.

अथवा समकेत अनेक प्रकारें कहें है. तिहां समकेतने विषे रुचि राखे ते एकविध समकेत,हवे वे प्रकारनुं समकेत कहे है. निसर्ग ते स्वनावयी अने उपदेश ते गुर्वादिकना उपदेशयकी, ए बे प्रकारें. तथा इव्यथकी ते गुर्वादकना जावयकी ते तत्त्वरुचिह्रण तथा निश्रययकी ते अपी जिलक अने व्यवहारयकी ते पौजिलक इत्यादिक सर्व वे नेदें समकेत जाएा दं. हवे त्रण नेदें कहे है:-उपशम, कृषिक अने क्योपशम, ए त्रण नेदें

तथा कारक, रोचक छने दीपक ए त्रण नेदें तथा क्वायिकादिक. त्रणमां सास्वादन नेजीयें तेवारें चार प्रकारनुं समकेत थाय तथा ते चारनी साथें वेदक समकेत जोडीयें तेवारें पांच नेदें समकेत थाय.

हवे दशप्रकारनी रुचि ते दश प्रकारनुं समकेत जाणनुं. तेनां नाम कहे हे. १ निसर्गरुचि, १ उपदेशरुचि, ३ आक्वारुचि, ४ सूत्ररुचि, ५ बीजरुचि, ६ अनिगमरुचि, ७ विस्ताररुचि, ० किरियारुचि, ए संदेप रुचि, अने १० धर्मरुचि. हवे एनां खरूप कहे हे:—

र जीव अजीवादिक नवपदार्थ ते बता बे एवी पोतानी बुिंध करी ते नी उपर खनावें रुचि धरे, ते निसर्ग समकेत जाए बुं. एट खे जीवादि पदा र्थ बता बे अबता तथी एवी जातिस्मरण रूप बुिंध करी अथवा मित श्रुत ज्ञानने बलें करीने एवं जाएों जे श्रीवीतरागें दीवेला नाव ते एमज बे. ए रंचमात्र पण जूवा नथी तेनी उपर खयमेव पोतानी मेलें चार प्र कारनी सददणा कराय ते निसर्गर च जाए वी.

श जीवादि पदार्थने इच्य, केंत्र, काल, नाव, ए चार नेदें करी तथा नाम, स्थापना, इच्य, नाव, ए चार निक्रेपे करी सद्दे, उद्मस्य तथा वीत रागना उपदेश सांनलीने तेनी उपर रुचि रखाय, ते उपदेश रुचि जाएावी.

३ राग, देप, मोह अक्वानपणुं जेथकी नाश पाम्युं हे, तेनी आक्वा उप र रुचि धराय, ते आक्वारुचि जाणवी. आक्वा ते आचार्य संबंधिनी जाणवी.

ध जीवादिक पदार्थने पिडविक्कतो यको मापतुप ऋषिनी पेरें सूत्रने नणतो यको अग्यार अंग तथा अंगबाह्य सूत्रने अवगाहवे करी समकेत प्रत्यें पमाय, ते सूत्ररुचि जाणवी.

५ समकेत पामवाने माटें पाणीने विषे जेम तेलनो बिंड पसरे,तेम रह स्य यहण करवाने अर्थें शाक्यनो जक कपट साधुजूत गोविंद वाचकनी पेरें एक पद लीधायी अनेक पदनो प्रसार याय गुण वधे,ते बीजरुचि जाणवी.

६ जीवादिक एक पदनी रुचियें करी जीवादिकना अनेक पदने विषे रुचिवंत थाय ते अनिगमरुचि जाएवी,

अगीयार अंग तथा पयन्नादिक, दृष्टिवादादिक प्रकीर्णक ते पयन्ना उत्तराध्यन प्रमुख, इत्यादिकने श्रुतङ्कानें करीने जेएो सर्व इव्यना समस्त नावने सर्व प्रमाणे करीने जाएया हे, सातनय प्रमुखनो विधि जाएयो हे, ते विस्ताररुचि जाएवी.

ण दर्शन ज्ञान चारित्रने विषे, तप तथा विनयने विषे, समिति ग्रिप्तने विषे, एम समस्त क्रियाने विषे नावथी रुचि रखाय,ते क्रियारुचि जाणवी.

ए जेएों करी कुदृष्टि पाखंमीनी कुदृष्टि यहए कराय नहिं, ते संदेपरुचि.

१० आगमना जाएपए।यें करी बीजा शेप पदार्थ जे सांख्यादिकनां प्रवचन शास्त्र, तेनें विषे चिलायति पुत्रनी पेरें अनियहीत छे,अनियहीत नथी वली अस्तिकायधर्म, श्रुतधर्म,चारित्रधर्मने विषेज वीतरागना वचन प्रमाणेज सददणा करे, ते समकेतरुचि जाएवी. ए समकेतनुं खरूप कह्यं. हवे ए परमरहस्यनूत समकेत छे तेने विषे शंकादिक पांच अतिचार छां मवा, ते कहेवा माटें छिं। गाथा कहे छे.

॥ संका कंख विगिचा, पसंस तह संयवो कुलिंगी सु॥ सम्मत्तस्स इयारे, पडिक्रमे देसियं सवं॥ ६॥

अर्थः—प्रथम (संका के०) संदेह ते वे प्रकारनो हे, एक सर्वथकी सं देह अने बीजो देशयकी संदेह. तिहां सर्वथी संदेह ते छुं? तो के धमे हे के नथी? अथवा जैनधमें सत्य हे के असत्य हे? इत्यादि सार्वविपयि क शंका जाणवी. अने देशविपयिक शंका, ते एकेक वस्तुना धमेगोचर,ते जेम जीव तो हे परंतु ते सर्वगत हे के असर्वगत हे? अथवा पृथ्वी आदि कने विषे जीवपणुं केम घटे? तथा निगोदादिक केम घटे? तथा हमणां ने कालें चारित्रयाने विषे चारित्र हे किंवा नथी? इत्यादिक वे प्रकारनी जे शंका ते श्रीवीतरागोक जे तत्त्व,तेने विषे अप्रतीति असद्दर्णारूप समकित ने दूषण पमाडे हे. इहां केटलाएक हेतुगम्यनाव हे. जेम के वनस्पतिआदि कने विषे सजीवपणाना प्रयोग कहे हे. वनस्पति सचेतनवंत हे जलादिक आहारें दृद्धि पामे हे आहारविना सूकाइ जती देखाय हे, मनुष्यदिकनी पेरें चय अपचयने पामे हे.तेनुं दृष्टांत श्रीआचारांगसूत्रमां कह्यं हे. ते जेम के:— मनुष्यनो पण उत्पत्ति धर्म हे, अने वनस्पतिनो पण उत्पत्तिधर्म हे. मनुष्यना शरीरनो हिद्ध पामवानो स्वनाव हे, तेम एनो पण हे, मनुष्यनुं शरीर सचेतन हे, तेम एने पण हे, मनुष्यनुं शरीर सचेतन हे, तेम एने एण हो पण शरीर सचेतन हे, तथा मनुष्यना शरीरने हे

दवाथी तेमां रहेला हस्तादिक कुमलाय हे, तेम वनस्पतिनां पण शाखा दिक हेदवाथी ते पण कुमलाइ जइ स्काइ जाय हे, मनुष्यनुं शरीर अन्न पानादिक आहार लीये हे, तेम वनस्पतिनुं शरीर पण उदकादिक आहार लीये हे. तथा मनुष्यनुं शरीर अनित्य अशाश्वत हे, उरक्षष्टुं त्रण पत्योप मायु नोगत्या पही अवस्य नाश पामे हे, तेम वनस्पतिनुं शरीर पण अ नित्य अशाश्वतुं हे. तथा मनुष्यनुं शरीर इष्ट आहारें दृद्धि पामे अने अ निष्ट आहारें हानि पामे हे, तेम वनस्पतिनुं शरीर पण थाय हे तथा म नुष्यना शरीरें रोगोत्पित पांहरपणुं पामवानो स्वनाव होय हे, तेणें करी विविध परिणाम नजे हे. तेम वनस्पतिनुं शरीर पण विविध रोगना वश्य की विविधपरिणामने जजे हे,तेमाटे वनस्पतिमां सचेतनादिनाव हेतुगम्य हे.

वली यतिने चारित्रनो पण बतो जाव बे. जेमाटें इप्पसह आचार्यसुधी चारित्र बे, जगवत्यादिकसूत्रने विषे कह्यं बे, के आज्ञा सिहतने चारित्र हो य अने आज्ञा रहितने चारित्र न होय माटें व्यामोह न करवो.

तथा निगोदादिक संबंधि केटलाएक जाव केवलिगम्य है, कहां है के लो कमां असंख्याता गोला है, ते एकेक गोलामां असंख्याती निगोद है, वली एक निगोदने विषे अनंता जीव है, कोई पण कालें केवली जगवाननें कोई पूहे, तो एक निगोदमां जेटला जीव है तेनो अनंतमो जाग मोहें गयो है, एवं केवली कहे, माटे इहां हेतुह्रष्टांतादिक नथी. आक्वायें यहवा योग्य पदार्थ है ते आक्वायेंज यहण करवा.

श्रीजननइगणि क्तमाश्रमण पण कहे हे, के किहांएक मितने हुर्वलप णे जो तथाविध श्राचार्यनो विरह होय, श्रयवा क्ञानावरणीय कर्मना उद यथी जिहां हेतु उदाहरण न पामे, वारंवार पूहे थके प्रतिबोध न पामे,तो पण जाणे जे श्रीसर्वक्षनो मत खरो हे. तथा तेमज बुद्धियें करी चिंतव जे परमाणुरूप परने श्रनुग्रह करवाने तत्पर, जगतने विषे प्रधान, राग हेष मोहने जीतनारा एवा जे जिनेश्वर ते श्रन्यथावादी नज होय सत्यनाषीज होय. माटे श्रीजिनेश्वरना वचनमां शंका न करवी.

इहां शंकाने विषे दृष्टांत कहे हे:— कोइक बे पुरुषें घणा कालसुधी सि इ पुरुषनी सेवा कीधी, त्यारें तेणें प्रसन्न थइने, बन्नेनी कोटमां एकेकी मंत्राधिष्टित कंया नाखीने कहां के, ह माससुधी निरंतर रात्रिदिवस ते कं वमांज राखवी, पढ़ी काढीने जेवारें खंखेरशो,त्यारें पांचशें सोनैया पडशे, ते माटे ए कंघा कंवमांज राखजो, काढशो मां. पढ़ी तेमांघी एक जणे तो लोकनी शंकायें काढी नाखी अने बीजायें पहेरी राखी, ते सुखियो घ यो. अने जेणें काढी नाखी ते इःखियो थयो. माटे शंका न करवी॥

हवे बीजो कांक्स नामें अतिचार कहे हे. अन्यदर्शनीनो क्रमादिक ग्र ण जेशमात्र देखीने, तेना दरीननी अनिजापा वांग्र करे,ते आकांद्वा कहि यें. ते पण एक सर्वथकी आकांक्ता अने बीजी देशथकी आकांका है. तेमां सर्व पाखंमीना धर्मनी वांबा. ते सर्वथकी आकांक् जाणवी अने देशयकी आकांक्का ते सौगतादिक कोइ एकज दर्शननी वांग्रा रूप जाणवी. जेम के सौगत निकुयें खक्केशरूप धर्म उपदेश्यो हे, जे धर्मने विषे कष्ट नथी, नहाइं. खावुं, वस्त्र पहेरवुं, सुकुमाल शय्यायें सूवुं, इत्यादि सुख नोगववां एऐ करी धर्म माने हे ॥ यदाह ॥ मृही शय्या प्रातरुवाय प्रायं, पेयं मध्ये हप्टः ॥ १ ॥ नावार्थः-अतिसुकुमाल शय्यामां सू रहेवुं, प्रनातें उठी कढेलुं दूध पीवुं,मध्यान्हें पंचामृत नोजन करवां, पाठले पहोरे झाखनुं खा वुं, ऋर्दरात्रें साकर प्रमुख खावां, एम करवाथी मरणने खंतें मोक् पामे. एम शाक्यसिंह, धर्म कहे हे. तेमज पारिव्राजक तापस जौतवादिक ब्राह्म णादिक जे हे, ते पण न्हावुं, धोवुं, स्वज्ञ रहेवुं, संसारना विपयन्जोगववा प्रमुखें करी परलोकने विषे इिंहत सुखसाथें जोडाय, एबी रीतनो धर्म सा धवा जद्यम करावे हे. वली जेम जंची तथा नीची नूमीनुं देत्र होय, तेवुंज बीज तथा तेवोज खेड करनारो पण तेने मखे. पठ। तेनुं फलतो ते चूमि,बीज, कर्षक वगेरे जेवां होय,तेवुं प्राप्त थाय. तेम मुग्धबुद्धिवाला जीवो नीच उंच सर्वदर्शन आराधन करे हे तो तेने पूर्वीक देत्रादिक वगेरेनी पेहें थाय हे. माटे वांढा पण परमार्थथी राखवी.एम जगवत्त्रणीत ञ्चागम तेनी ञ्चनास्था अप्रतीतिरूप जे समकेतने दूपण जगाडे हे. ते उपर एक हप्टांत कहे हे:-

कोइक धारानिध एवे नामें ब्राह्मण गोत्रदेवीनो आराधक हतो, ते वली चामुंमानो प्रनाव सांनलीने चामुंमादेवीने आराधतो हवो, एकदा ते ब्राह्म ण नदीना पूरमांहे तणाणो, तेवारें बोट्यो के हे चामुंमादेवि! मुक्तने राख, राख. वली हे गोत्रदेवि! मुक्तने राख, राख. एम वेहुनां नाम पोकारतां बन्ने देवीयो आवी अने बेहु देवीयें मांहोमांहे ईर्ष्या आणी तेषी तेमां एकें पण ते ब्राह्मणने काढ्यो नही, तेथी ते पाणीमां मुबी मूवो. माटे नवनवा धर्म उपर वांडा न करवी. ए बीजो अतिचार.

हवे त्रीलो वितिगिन्ना नामा अतिचार कहे हे. तपस्या करवी, तडके बेसवुं,महाकष्ट करवुं, इत्यादिक धर्मकार्यने विषे जे फलनो संदेह करवो,म नमां एवुं जाएो जे आ धर्मकार्य करुं हुं, एनुं फल आगल याजे के नहीं याय ? ते वितिगिन्ना, ते एक सफल अने बीजी निःफल ए वे देखाय हे. जेम कृषिकरनारने सफल अने निष्फलता देखाय हे ?

तिहां एवं चिंतवे के श्रीजिनधर्मने विषे महोटा कप्रक्रिया अनुष्ठानादि क क्लेश है, वेद्धना कवजनी पेरें स्वाद रहित है, वजी ते धर्म आगल फ ल आपशे के निह आपे ? वली ते मूर्ख एवं विचारे के साधुधर्म तथा श्रावकधर्मने चली रीतें आराधन करीने महोटा तपस्वीयो जे अंत अव स्थायें अनशन करी पंजित मरणें अंतसमयें संकेत करीने कालधर्म पाम्या ते जो देवता थया होय तो इहां आवी आपणने पोतापणुं केम देखाड ता नथी? जे अमें धर्मने प्रनावें देवरूपें थया हैयें? माटे तपस्या करवी, ते क्वेशमात्रज फल पामे. एवी संनावना करीयें वैयें. एवी रीतना विकल्पो ते मूर्ख कखा करे, पण ते तत्त्वप्रत्यें जाणे नहिं. जे जली रीतें धर्मना आ राधक जीव परनवें देवता थाय. ते तिहां विमानमां देवांगनादिक अने दिव्यमहर्दिकना लानें करी पूर्वनव संबंधना जे संबंधी होय, तेने क्यारें पण संनारे नहिं. कदापि स्मरण पण करे जे हमणांज हुं महारा पूर्वनव ना संबंधीयोनें जइ मद्धं अने तेमने महारुं देवपणुं देखाईं! एवं चिंतव तो थको पण देवतासंबंधि नोगनी ऋदिने विषे आसक्तपणे घणो काल व्यतीत थइ जाय, तेटलामां तो पूर्वनव संबंधिया मनुष्यना त्राज्यां पण पूर्ण थइ जाय, माटें एवी अडचणयी कोण आवीने पोतापणुं देखाडे? तथा क्यां एक देवता प्रगट थइने पोतापणुं देखाडे पण हे. अने देव सं बंधि जोगनी क्रि पण पूरे हे. तिहां अत्यंत स्नेहादिकें खेचाणो थको आवे हे, जेम गोजइ शेंहनो जीव देवता थयो हतो, तेऐं पोताना पुत्र शा लिनइने इन्नित पूर्ण कखुं. तथा संयहणीकार कहे ने के देवता प्रेममां, तथा विषयमां संसक्त है, अने करवा योग्य कार्य संपूर्ण जेणें कह्यां है ते

थी मनुष्यना कार्यमां मनुष्यनवना अग्रुनने इन्नता नथी, चारशें अथवा पांचशें योजन मनुष्यलोकनो गंध उंचो उठले हे, उंचो इग्ध जाय हे, ते थी देवता मनुष्यलोकमां आवता नथी. मात्र तीर्थकरना पांच कल्याणिक ने विषे तथा महोटा क्रिपना तपना महिमाथकी अथवा पूर्वनवना स्नेह थकी देवता इहां मनुष्यलोकने विषे आवे हे. माटें प्रज्ञना वचनने विषे अविश्वासरूप विचिकित्सा पण न करवी. ए समकेतमां दोष उपजावनारी हे.

इहां आशंका करे हे, के शंका जे हे, ते पण संदेह वाचकज हे, तथा पि ए शंकायकी विचिकित्सा जुदी कही, तो तेमां ग्रं विशेष हे ? इहां ग्र रु उत्तर कहे ने:-के शंका जे ने, ते इव्यविषयी तथा गुणविषयी ने अने विचिकित्सा ते क्रियाविषयीज हे, जे कोइ जीव ऋत्यंत विषरीतमतिवालो होय अने रूडा धर्मनुं आराधन पण करतो होय, तो पण पूर्वकृत अग्रज कमेना जदयथकी कांइक कप्ट पामे, तेवारें एम कहे जे धर्म करवाथी आ मने इःख प्राप्त थयुं, एवी चिंतवणा जे करवी ते विचिकित्सा जाणवी. इवे तेवी विचिकित्सा करनारने आंधलानी पेवें समकेतज क्यांथी होय ? कारण के तेने धर्मना स्वरूपनुंज अजाएपएं हे, अने ते धर्मने जाएतोज नथी. का रण के अमृत पीवाथी कोइ वखत मरण निपजे नहीं सूर्यथकी अंधकार प सरे नहीं, चंड्माथकी श्रंगारा वरसे नहीं, कब्यवृक्ष्यकी दारिड्नो उपड् व न याय, अभियकी शीतल पराजव न याय, ते पण कदापि को इवखत दैवयोगें पूर्वोक्त अकस्मातो बने, तथापि धर्मकरणी करवाथकी कोइ दिवस माठुं यायज नहीं! कारण के एवा विरूपनो संनव क्यारे थयो पण नथी, यातो पण नथी अने याज्ञे पण नहीं. वास्ते जो कोइ सामान्यजनने आल देवुं ते पण महोटा दोषनणी थाय हे,तो वली त्रणलोकने विषे अतिशयवंत, समस्तक व्याणनो करनारो जत्क छो निमित्तनूत एवो जे धर्म हे तेना देपकर नारा, वली परने पण बोधबीजना नाशना करनारा जे हे, ते पोतें इर्जन बोधी अनंतसंसारी होय ते जीवोनुं आ नवें अने परनवें पण क्यांयकी क व्याण थाय ? ऋषि तु नज थाय ॥ यतः ॥ न निमित्ति हिषां देमो,नार्युविद्यकवि हिषां ॥ न श्रीनीतिहिषा मेकमिषधमेहिषां नहि ॥ १ ॥ जावार्थः नह्यं हे के नैमित्तिकना देवीने कुशल न होय, वैद्यना देवीने आउखुं न होय, नी तिना देपीने लक्ष्मी न होय अने धर्मना देपीने तो एमांची एक पण न होय. इहां महानिशीयमां रक्का साध्वीनुं दृष्टांत कह्यं ने ते कहे ने. नड़ाचार्यना गन्नमां पांचशें साधु अने बारशें साधवी हे, तेना गन्नने विषे एक कांजीनुं पाणी, बीज्ञं नातनुं उसामण, त्रीज्ञं त्रण उकालानुं पा णी, ए त्रण मूकीने बीजां पाणी कोइ वावरतुं नथी. एम करतां देवयोगें रक्का साध्वीनुं शरीर गलतकोढें बगड्युं, तेवारें बीजी साध्वीर्चें कह्युं के डुकरकार ! डुकरकार !! एवा प्रश्नोत्तरें रद्धायें कह्यं के ए ग्रुं मुफने कहो वो ? ए प्राद्यकपाणीयें करीज महारुं शरीर बगड्युं हे, एवां तेनां वचन सांचलीने साध्वारीनां हृदय क्लोन पाम्यां, जे हवे आपएों पण उसपाणी न पीवुं, ते मां पण एक साध्वीयें एवं चिंतव्युं जे हमणां अथवा पढी महारुं शरीर सडी सडीने कटका थइ जाय तो नखें थार्च, पण महारे तो उस जलज पी बुं. उसपाणी पीवाथी शरीरनो विनाश न थाय,परंतु पूर्वनवरुत अञ्चनकर्मे करीज विनाश थाय. एम विचारी खेद करवा लागी के हा धिकार हजो ए पापणीने के एणे न कहेवा योग्य असमंजस एवं आ वचन कह्यं!॥यतः॥ किंकेण कस्स दिक्कइ, विह्यिं को हरइ हीरएकस्स ॥ स्थमप्पासाविदत्तं, अित्राह सुद्धि इस्कंपि ॥ ए रीतनुं ध्यान करतांज ने साध्वीने केवलकान उपन्युं तेथी तेऐं सर्व साध्वीयांना संदेदने टाव्यो. पढी रक्क आयोंनो संदेद पूठ्यों जे एने शायकी रोग थयो ? तेवारें केवलीयें कह्यं के रक्तिपत्तने दूपणें दूपित एइ एऐं करोलियांसहित स्निग्ध आहार कस्रो. तेथकी एने रक्ति नेनो रोग थयो, वली सचेतपाणीयें संघट्टीने श्रावकनी दीकरीनुं मुख धो युं, तेयी शासनदेवीयें ते रक्कुश्रायीनी उपर रुष्ट यक्ने शिखामण श्रापवा मा टें कांइक चूर्ण, तेना आहारमां नाख्युं, तेथी एनुं शरीर बगड्युं, पण प्रा ग्रुक पाणीयी बगड्युं नथी. एवं सांचलीने रद्धायें कह्यं के हे चगवति ! मुक्तने खालोयणा खापो, तो हुं ग्रु६ थाउं ? तेवारें केवलीयें कह्यं के तुं ग्रुं था,एवुं कोइ प्रायिश्वत्त नथी,कारण के तें एवां इवेचन कह्यां,तेथी तुने निकाचित कमेनो बंध चयो. ते कमें करीने कुष्ट, नगंदर, जलोदर, श्वास, अतिसार,गंममाला आदि महा इःखो अनंत नवसुधी तारे नोगववां पड्रो? एम कही. बीजी आर्यां छेने केवलीयें आलोयणा आपी तेथी सर्व ग्रुद थइ. माटे अगीतार्थपणाना आकरा दोष जाणीने धर्मविरुद वचन बोलवुं निहं. ए वितिगिन्नानेविषे आषाढनूति आचार्यनुं दृष्टांत कहे हे. जे आ

षाढाचार्यें घणा शिष्यो निजाम्या. अन्यदा एक शिष्यने रूडी रीतें निजाम्यो, तेनी साथें संकेत कखो, के तुं देवता यइने मुफने दर्शन देजे. ते शिष्य म री देवता ययो. पण देवांगनाना विषय सुखमां आसक ययो तेथी शीष्र आवी शक्यो निहें. त्यारें आचार्यें चिंतव्युं जे में फोकट चारित्रनुं कष्ट सद्यं. तेमाटे हवे हुं ए चारित्र ढांहुं! एम विचारी गन्न ढांमीने निकद्यो एटले ते शिष्यें उपयोग दीधो. गुरुने पतित देखी जीघपणे आवी मार्गने विषे ना टक देखाडगुं, ते नाटक जोतां ढ महिना थया पण थाक्या निहं. पढी ते आषाढाचार्य नाटक जोइने आगल चाद्या.

मार्गने विषे प्रथिवीकायादिक व राजकुमार श्रानरऐं सहित देखी, श्रा चार्यें ते वये राजकुमारोने मारी, आनरण लेइ, जोली नरी. बोहोलो नार थवाने जीधे हज़वे हज़वे चाव्या जाय हे, एवे ते शिष्यदेवतायें कटक सहित श्रावक राजा देखाड्यो, ते देखी श्राचार्य जय चांत ययायका ना सवा लाग्या, पए। नासीने जाय क्यां ? ते कोइएक वृक्त हेवें जइ जना र ह्या, एवामां राजायें आवी आचार्यने वांदी, आहारनी घणी विनति करी, पण आचार्ये मान्युं निहं. त्यारें बलात्कारें राजायें कोली मांहीथी पात्रां काढवा निमित्तें हाथ घाव्यो, ते जोली मांहे अलंकार देखीने राजा कोप्यो, अने तेने लीधे आचार्यने नय, लङ्का, विस्मय अने खेद मनमांही उपन्या, विचाखुं जे पापनुं फल प्रत्यक्त दीसे हे. एवी आस्ता थये थके, ते शिष्य देव तायें पोतानुं स्वरूप प्रगट करी, आचार्यने प्रतिबोध्यो. देवता पोताने स्था नकें गयो. आचार्य चारित्र पाली खोंगें गया. इति विचिकित्सा खरूपं॥ हवें किहां एक विज्ञति एवो पण पाठ है।। विज्ञतिपाठे तु विद्रहुगंज्ञा विद्रक् गुप्ता, विद्वांसोविदा ज्ञाततत्त्वतया ये युक्ताः साधवस्तेषां जगुप्ता ॥ नावा र्थः-पंमितजननी निंदा ते विद्यु गुप्सा कहीयें. तथा तत्त्वना जाण जे साधु ्तेनी जे निंदा ते विघ्रकुगुप्सा तेज देखाडे हे. जे साधुना मलमलिन गा त्र उपरथी देखीने,मूढ बुदियें करी एम चिंतवे जे ए नाय नहीं, वस्त्र धोवे निहं, परसेवाथी तथा मेलथी गंधाय हे शरीर जेनुं एवा हे, माटे जो ए मु नियो फासु पाणीयें नाय, वस्त्र धूवे, तो एने शो दोप हे? एम चिंतवे पण ते मूढ एम न जाएो जे, मुनि कपट रिहत ब्रह्मचर्यनी विद्युद्धिने अर्थे अलं कारादिक शोनायें रहित, एवा बता पण अन्यंतरथी मंद्रारहितज बे. विशेष

शोना ग्रुणना हेतु हे. शास्त्रमां पण कह्यं हे, के ॥ मलमइलपंक मइला, धूली मइला न ते नरा मइला ॥ जे पावपंक मइला, ते मइला जीवलोगंमि ॥१॥ नावार्थः—मेलें करी मिलन, कादवें करी मिलन, रजें करी मिलन जे होय ते पुरुषने मिलन न किह्यें परंतु जे पापरूप कर्दमें करी मिलन होय ते जीवो, लोकने विषे मिलन जाएवा.

तथा लोकिक शास्त्रमां पण कह्यं वे ॥ थतः ॥ ग्रुचि नृमिगतं तोयं, ग्रु चिनीरी पतिव्रता ॥ ग्रुचिर्धर्मपरो राजा, ब्रह्मचारी सदा ग्रुचिः ॥ १ ॥ स्नानमुद्दतेनात्यंगं, नखकेशादिसिक्रयां ॥ गंध माल्यं च तांबूलं, प्रदीपं तु मुनिस्त्यजेतु ॥ २ ॥ सत्यशौचं तपःशोचं, शौचमिन्डियनियहः ॥ सर्व नूतदया शौचं, जलशोचं च पंचमं ॥ ३ ॥ स्मृतिरिष ॥ ब्रह्मचर्यस्थितोनैव, मन्नमदादिनिंदितं ॥ दन्तधावनगीतादि, ब्रह्मचारी विवर्जयेत् ॥४॥ मनुस्मृता विष पंचमाध्याये ॥ क्वांत्या ग्रध्यति विद्वांसो, दानेनाकार्यकारिणः ॥ पापिनश्रतु जापेन, तपसा वेदवित्तमाः॥ ५ ॥ अभिगीत्राणि शुर्द्यति, म नः सत्येन ग्रुद्यति ॥ विद्यातपोन्यां नूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन ग्रुद्यति ॥ ६॥ नित्यं ग्रदः कारुह्स्तः, पएयं यज्ञ प्रसारितं ॥ ब्रह्मचारिगतं नैक्यं, नित्यं ग्र क्रिमिति स्थितिः॥ ७ ॥ जावार्थः- जूमिने विषे रहेलुं पाणी पवित्र, पति व्रतास्त्री पवित्र, धर्मवंतराजा पवित्र, ब्रह्मचारी सर्वदा पवित्र हे ॥१॥ स्नान, उवटण, तैलमईन, नखकेशनी शोना, सुंगधिवस्तु, पुष्पमाला, तांबू लादिक, एटला वानां ब्रह्मचारी त्यागे ॥ २ ॥ प्रथम सत्य ते पवित्र, बी छुं तप ते पवित्र, त्रीजुं इंड्यिनुं जीतवुं ते पवित्र, चोधुं सर्वजीवने विपे दया राखवी ते पवित्र, अने पांचमुं पाणीयें करी शौच ते पवित्रपणुं जाणवुं ॥३॥ तथा याज्ञवद्क्यस्मृतिने विषे कह्यं हे:-ब्रह्मचर्यमां रह्यो थको जीव अनिंद्य नोजन करे, एकवार जमे बीजी वार न जमे, घणुं अन्न न जमे, दातण न करे, गीतगान न सांजले, एटली वस्तु ब्रह्मचारी वर्क्के ॥४॥ तथा मनुस्मृ तिने पांचमे अध्यायें कह्यं वे के, पंनित क्तमायें ग्रुह थाय, हीणाकार्यनो करनार दानें ग्रुद्ध थाय, पाप कखुं होय ते जाप करवे करी ग्रुद्ध थाय, वेद तत्त्वना जाण तपस्यायें करी ग्रुड याय ॥ ५॥ शरीर,पाणीयी ग्रुड याय, सत्यवचन बोलवे, मन ग्रु६ थाय, विद्या तथा तपें करी पंचनूत आत्मा ग्रुद थाय, अने बुद्धिं, ज्ञानें करी ग्रुद थाय ॥६॥ कारिगरनो हाथ नित्य

ग्रुड थाय, किरियाणें मांमग्रुं हाट सर्वदा ग्रुड हे, ब्रह्मचारीने हाथे गये जी जिक्हा नित्य ग्रुड हे. एवी शास्त्रमां स्थिति हे ॥ ७ ॥

माटे शौचपणुं ते लोकने विषे जेहवो निर्वाह थाय, तेहज व्यवहारें जाणवुं. पण बीजो प्रकार समजवो नहीं. जेमाटें बालक, स्त्री, गोप्रमुख, मिलन, धोयुं समाखुं कोरुं वस्त्र आदें देइ पटकूलवस्त्र, कर्वत, चर्मनी कुम ली, चरणत्राण, नसें बांध्युं सूचडुं, शस्त्रनो कोष, ते मीयान, हित्तदंत, र जकरणी, चामर, कांबलादिकनुं यहवुं, कस्तूरी, जबादी, पोइसडो, गोरुचं दन, नख, धूप, अग्रुचिने स्थानकें वृद्धि पामे एवा केतकीनां पत्रादिक, सोपारी, सेलरा, खजूर, गोल प्रमुख, जूदा जूदा स्थानकना समशानने विषे मृतकना मलमूत्रादिकें चन्युं एवं नदी प्रमुखनुं पाणी, स्तनपानादिक, ए सर्वने विषे पवित्रपणानोज व्यंवहार हो.

मनुस्मृतिने विषे कह्यं हे के अग्रुद्ध एवो वायस शेरीना कादवें करी स्प शिंत यको ग्रुद्ध याय हे. वली पाकेली इंट, चिता, ए सघलां पवनें करी स्पर्श कह्यां यकां ग्रुद्ध याय हे. तथा माखी, विद्याननी हाया, गाय, अश्व, सू र्यनां किरण, नृमिनुं रज, वायु, अग्नि, एटलावानानो जे स्पर्श ते पण पवित्र जा एवो. तथा मिताक्त्राने विषे कह्यं हे के, चंड् अने सूर्यना किरणयी तथा वा युथी मार्ग ग्रुद्ध याय, दाढीमूहना केश, मुखमां रहेला दांत पण पवित्र जाण वा. एमाटें विवेकीने तेमज माह्याने जुगुप्सा सर्वथा हांमवी. इहां कथा कहे हे.

विवाहने कारणें कोइ व्यवहारियानी बेटीयें सर्व अंगें बिनूषित थकां सा धुने प्रतिलाज्या,तेवारें साधुना अंगना मेलनो इर्गंध देखीने ते विचारती हवी जे रूडो जैनधम निरवद्य हो, पण फास पाणीयें मुनिने जो स्नान कराव्युं होय तो तेमां क्यो दोष हे ? इत्यादिक इगंहा करी, ते पापने आलोया विनाम रण पामीने राजगृही नगरीयें गणिकाने पेटे पुत्री थइ, ते गर्नमां हते मा ताने घणुं इःख थयुं, माताना मनने विषे अरित उपनी. पही पुत्रीनो जन्म थया नंतर मातायें उकरडे नाखी दीधी, तेनो अति इर्गंध जोइने श्रेणिक राजायें ते इर्गंधवालिकाना इर्गंधनुं कारण श्रीवीरने वांदीने पूह्युं. तेवारें श्रीवीरें पूर्वजव कहीने राजा श्रेणिकने कह्युं के, सुपात्रदानना माहात्न्यें ए तारी नार्या थशे. कीडा करतां तारा वांसा उपर चहशे. एवी ए वहान स्त्री थशे. तेथी तुं जाएजे के, ए इर्गधानो इर्गंध एक मुहूर्न, पही गयो.

हवे एक आजीरणीयें ते इग्धाने पोताने घरे जइ जइ,पाजी पोषी महोटी करी, यौवनावस्थायें आवी, त्यारें को मुदी महोत्सवने विषे श्रेणिकराजाने इग्धाना स्पर्दाथी राग उपन्यो. राजा श्रेणिकें जघु जाघवी कलायें स्वना मांकित मुझ तेना वस्त्रने ठेहडे बांधीने अजयकुमारने कहां के, में नामां कित मुझ खोइ छे. पढी अजयकुमारें तेहिज देवकुजहारें जइ, एकेका मा एसने जोतां जोतां इग्धाना वस्त्रने ठेडे मुझका जोश्ने, इग्धाने अंतःपु रमां मूकी. राजा ह्षेवडे तेनी साथें परण्या. पढी कीडा करतां र जानां वांसा उपर ते कन्या चढी बेठी, तेवारें राजा हस्यो. ते जोश आजीरीयें हसवानुं कारण राजाने पूछ्यं, त्यारें श्रेणिकराजायें सर्व पूर्वजवादिकनो संबंध कह्यो. ते सांचजी वैराग्य पामी, प्रजु पासेंची चारित्र छेइ, पाप आ जोइ स्वर्गें गइ. इति तृतीयोऽतिचारः ॥ ३॥

हवे चोथो कुलिंगीनी प्रशंसानो अतिचार कहे हे:-कुलिंगी जे शाक्या दिक तेने विषे एम कहे के छाहो! ए माहा तपस्वी हे! इत्यादिक मिथ्या दृष्टिनी प्रशंसा करतां जोला प्राणी सांजलीने मिष्यात्वतुं आदर बहु मा न करे, अने ते बहु मानतां समिकतने दूपण उपजावे हे ॥ उक्तं च ॥ मि क्वत्त थिरीकरणं, अतत्तसदा पवित्ति दोसो य ॥ तद्द तिवकम्मवंथो, पसंस र्च इह क़दंसणीणं ॥ १ ॥ जावार्थः-मिच्यात्वने स्थिर करवायी अतत्त्व श्रदाननी प्रवृत्तिरूप दोप थाय, तेमज तीव्रकमेवंध थाय. एम कुद्ंसणीनी प्रशंसायकी एवा गुण नीपजे ॥ १ ॥ जेमाटे सम्यग्दष्टि जीव तो, मिथ्या त्वीनां महातप देखी अहो आ महोटुं अज्ञान कष्ट है? इत्यादिक मनमां चिंतवन करे, तथा मुखयी पण एमज कहे के ॥यतः॥ जं अन्नाणी कम्मं, खवें इब बुयाई वासकोडीहिं॥तं नाणी तिहिं गुनो, खवें इ ग्रसासि मेनेणं ॥१॥ सिं वास सहस्सा, तिसत्तखुत्तो दएण घोएणं ॥ अणुविन्नं तामलीणा, अ नाए तवुं नि अप्पफलो ॥ २ ॥ तामलिनए इतवेणं, जिएमइ सिंफेइ अन सत्त जर्णं ॥ ए अन्नाण वसेणं, तामिल ईसाणिंद गर्छ ॥ ३ ॥ नावार्थः-जे घणा वर्षनी कोडीयें करीने अङ्गानी जीव कर्म खपावे, ते त्रण ग्रुप्तियें स हित थको ज्ञानी एक श्वासो ब्वासमां खपावे ॥ १ ॥ शाव हजार वर्षमां सा डत्रीश वखत मुख भोंइने अन्तराणी लीधुं एवं तप, तामली तापसें आचखुं

ते अङ्गान तपथी अल्पफल पाम्यो ॥ २ ॥ जेटलुं तामली तापसें तप कखुं एटला तपथी जिनमती बीजा सात जण मोक्टें जाय, पण अङ्गान दोषें करीने तामली, ईशान देवलोकें गयो ॥ ३ ॥

हवे ए परदर्शनीनी प्रशंसारूप अतिचार उपर दृष्टांत कहे हे:—सिंहपु रवासी लक्क्मणश्रेष्ठी नामा श्रावक जैनधर्मने विषे परमार्थनो जाण, गीता र्थनी निष्ठायें रहेनारो हतो. एकदा तेणे सजाने विषे बेहे यके मासखमण तपस्वी परिव्राजकनी प्रशंसा करी, ते सांजली बीजा बे श्रावक ते तापसने आदरसहित वांदवा गया. ते जोइ पारिव्राजकें तेर्नां चित्त ब्युद्धाहित कह्यां. ते जैननी अवङ्गा करता थका मरण पामी नरकादिकमां बहु जब रफत्या अने लक्क्मणश्रेष्ठी श्रावकनो धर्म पाली, सौधर्में देवता थयो, अने तेणे च्य वन समयें श्रीवीरने पूह्यं, के माहारा केवा जब थाशे? तेवारें श्रीवीरें कह्यं के सातजब तिर्थचना करी, तुं मनुष्यपण्यं पामीश, पण पूर्वजवें मि प्यात्वनी प्रशंसा करी हो, माटे बोधबीज तुफने इर्जन थशे? त्यार पही के टला एक जब संसार जमण करी श्रीपद्मनाज तीर्थकरने वारे तुं सिद्धि पा मीश. समिकतने दूपणे उपलक्क्णथी निन्हवादिकनो पण परिचय न करवो.

हवे कुलिंगी साथें परिचय करवानो पांचमो छितचार कहे हे. कुलिंगी संघातें संवास एटले वसवुं, जोजन करवुं, बोलावुं, बोलाववुं, परिचय, संस्तव करवो, ते विवरीने कहे हे. मिथ्यादृष्टि संघातें परिचय तथा एकवां वासे न रहेवुं. केम के तेनां अनुष्ठान देखवाथी तथा तेनां शास्त्र सांजलवाथी छने तेनी किया देखवाथी मंदबुदिवालाने नवा धर्मनी प्राप्ति इर्लेज थाय. दढ सम्यक्लवंतने पण छितचार लागे. प्रसंगथी निन्हवादिकना परिचयथकी पण समकेतने छितचार लागे ॥ यतः ॥ छंबस्सय लिंबस्स य, इन्हंिप समा गयाई मूलाई ॥ संसग्गेण विण्हों, छंबो निंबचणं पत्तो ॥ १ ॥ जोजारी सं मित्तं, करेइ छवरेण तारिसं होई ॥ कुसुमेहि यवसंता, तिलावि तं गंधिया हुंति ॥ १ ॥ जावार्थः—छांबानां तथा लींबडाना फाडना मूल साथें होय, तो छांबो पण नष्ट थाय हे, छांबो लींबडा पणाने मले हे ॥ १ ॥ जे जेनी साथें मित्रता करे, ते तेना जेवो होय, जेम के पुष्पना संगें रहेता एवा तिल पण सुगंधयुक्त थाय हे ॥ १॥ इहां शिष्य गुरुने पूहे हे:—सुचिरंपि छा माणो, वेरुलिन काच मिण्छ जम्मीसो ॥ न नवेइ काचुजावं, पाइिसा गुणे

ण नियएण ॥ ३ ॥ सुचिरंपि अज्ञमाणों, नल्यंनो इज्जुवाडंमि ॥ कीस न जाय महुरों, जइ संसग्गी पमाणंते ॥ ४ ॥ नावार्थः—घणोकाल समारी तेजवंत कखो एवो वैमूर्य मिण, तथा काच होय, परंतु तेमां वैमूर्यमिण काचपणाने पामे निहं, कारण के पोतानो मिणपणाना पाषाणनो गुण हे माटे ॥ ३ ॥ एरडानो हक कदाचित् समारीने शेरडीनी वाडीमां घणो व खत राख्यो होय,तो पण ते शेरडीपणुं पामे निहं. तेम जो को इिमप्याली साथें संसग्गे थाय तोपण जातिस्वनाव जीव होडे निहं ॥ ४ ॥

वली कवि कहे ने के सत्पुरुष असाधु संसर्गधी साधुपएं न नांमे अने असत्पुरुष साधु संसर्गथी असाधुषणुं न ग्रांमे. अहीं मणि नोरिंगनो दृष्टां त कहां जुं ते सांजलो. जोरिंग अने मिण, बेनी उत्पत्ति साथें हे, अने ते ब न्ने एकवा रहे हे, बेहुनो परस्पर जन्मपर्यंत संबंध हे, तो पण मिएनो गुण नोरिंगमां नथी आवतो अने नोरिंगनो अवगुण मिणमां नथी आवतो. अत्रोत्तरं ॥ नावुग अनावुगाए। य, लोए इविहाइ हुंति दवाई ॥ वेरुलिउं तज्ञमिण, अनावुगो अन्नद्वेहिं ॥ १ ॥ जीवो अणाइनिह्णो, तप्नावणना विडे अ संसारो ॥ खिप्पं सो नाविक्क ६, मेल एदोसाणु नावेणं ॥ १॥ जहनाम मद्भरतिलं, सागरतिलं कमेण संपत्तं ॥ पावेश लोणनावं, मेलणदोसाणु नावेणं ॥३॥ एवं सुसीलवंतिह, असीलवंतेहिं मेलिट संतो ॥ पावइ ग्रुणपरि हाएी, मेजण दोसाणुनावेणं ॥ ४॥ नावार्थः-नावुक अने अनावुक, ए लोकनेविषे वे प्रकारनां इव्य हे, तेमां अजावुक ते वैमूर्यमणिसमान हे, का रण के ते अन्य इव्यथकी अन्यगुणने न फरसे हे ॥१॥ अने जीव अनादि निधन है, संसारने विषे ते ते जावमां जावित है, ते शीघपणे जे जाव जे जवे पामे, ते मिलापादिक दोषना प्रजावें करी ते जीव ते जावने पामे हे, ॥१॥ मित्रं पाणी ते सागरना पाणीने मलेशके खूणपणाने पामे हे,ते केवल मेलन दोपने प्रनावें जाएवं ॥३॥ ए प्रमाणे निश्चें शीलवंत पुरुष कुशील यानो संग करे, तो तेना गुणनी हाणी थाय हे, ए सर्व मेलनदोषनो प्रचा व जाएवो. माटे मिथ्यात्वीनो संसर्ग करवो नहिं. ए गुरुयें उत्तर कह्यो.

इहां सत्संग कुसंग उपर बे सूडानो दृष्टांत कहे हे ॥ श्लोक ॥ माताप्येका पिताप्येको, मम तस्य च पिहणः ॥ अहं मुनिनिरानीतः, सच नीतो गवा शिनिः ॥ १॥ गवाशनांनां सगिरः शृणोति, अहं च राजनमुनिषुंगवानाम् ॥ प्र

त्यक्मेत्रवतापि दृष्टं, संसर्गजा दोषगुणा नवन्ति ॥ २ ॥ श्रास्तां सचेतस त्संगः, सदसत्स्यात्तरोरि ॥ अशोकः शोकनाशाय, कलये तु कलिडुमः ॥३॥ जे माटें वृक्तने पण जलो अने जूंमो संग हे, जुवो अशोकवृक्त हे ते शोकनो नाश करनार है अने बेहडानो हुक् है ते क्षेशकारी है एटला माटे कुलिंगि श्रादिकनो परिचय सर्वथा प्रकारें ढांमवो. संवेगी, गीतार्थ, साधु अने सा धर्मिकनो परिचय, विशेषें करी करवो. ज्यां एटली सामिय होय, त्यां श्रा वकने रहेवुं, अन्यस्थानकें न रहेवुं. जेस्थानकें पोताना धर्मनों निर्वाह थाय अने स्थिरतानी वृद्धि थाय इत्यादि गुणसंज्ञवे अन्यथा नंद मणियारनी पेवे अंगीकृत धर्मधी च्रष्ट थाय. कह्यं वे के:- श्रावकने रूडे वेकाएीं रहेवुं, ॥ उक्तं च ॥ जन्नपुरे जिएान्रवएां, समयवि उसादु सावया जन्न ॥ तन्न सया विसयवं, पचरं जल इंधणं जन्न ॥ १ ॥ आद्यपंचाशकेषि ॥ निवसेज तन्न स हो, साहूणं जञ्च होइ संपाच ॥ चेइयघराइ जंमिय, तयन्नसाहम्मिया चेव ॥ १॥ नावार्थः-जे नगरने विषे श्रीजिनेश्वरनां प्रासाद होय, तथा ज्यां सदा ञ्यागमना जाए। साधु श्रावक होय, तिहां सर्वकाल वसवुं. जिहां प्र चुर जल अने इंधण मले तिहां रहेवुं ॥ १ ॥ वली आद्यपंचारक यंथने विषे पण कह्यं ने के. जिहां साधुनुं आवागमन होय, वली जिनप्रासाद जे गामने विषे होय,ज्यां तत्त्वना जाए साधर्मिक होय त्यां श्रावकें निवास करवो.

हवे ए मिथ्यावीना परिचयने विषे श्रीहरि जड्सूरिना शिष्य सिहर्षि साधुनो हष्टांत कहे हे. ते साधु बौहना मतना रहस्य यहवाने अर्थे गया, ते वखते गुरुयें वचन लीधुं जे जणीने पाढुं श्राववुं, शिष्यें पण ते कबूल कीधुं. पढी तिहां बोधनी श्रहा थइ, पण वचननो खेंचाणो पाढो गुरु पासें श्राव्यो. गुरुयें बौहमतनी श्रहा फेरवी, त्यारपढी पाढो बौहना मतनुं रहस्य य हवा गयो. वली पाढो गुरु पासें श्राव्यो, त्यारें गुरुयें वली पण बौहनी श्रहा फेरवी. एम एकवीश वार गयो ने श्राव्यो. तेवारें गुरुयें प्रतिबोधने श्र यें शकस्तवनी लिलतविस्तरा नामें टीका करी. तेणें करी तेने प्रतिबोधने हट किश्वो, पढी श्रीगुरु पासेंज रह्यो. पांचमो श्रितचार कह्यो, एम समिक तना श्रितचार संबंधी जे पाप बंधाणुं होय, ते सर्व निंडं इत्यादि पूर्ववत्.

ए सम्यक्त्व ते सर्व प्रकारें सर्व रीतें मिण्यात्वने परिहारपणे निष्कलंक नावें आदरवुं, ते मिण्यात्व वे प्रकारनुं हे. एक लोकिक मिण्यात्व अने

बीज्ञं लोकोत्तर मिथ्याल. तेमां लोकिकना वे जेर हे. अने लोकोत्तरना पण बे जेद हे. एक देव वैपयिक अंने बीजं गुरुवैषयिक. ए रीतें मिण्यात्वना चार जेद हे. तिहां लौकिक देवगत मिथ्यालनां स्थानक कहे हेः १ हिर, हर श्वने ब्रह्मादिकना जवनने विषे जवुं, प्रणाम पूजादिकनुं कर्वुं. १ कार्यने प्रारंनें हाटे वेसती वखतें जानने अर्थें गणेश प्रमुखनुं नाम खेवुं. ३ चंइमा रोहिणीनां गीत गावां. ४ विवाहने विषे गणेशनी स्थापना करवी. ५ पुत्र जन्मे त्यारें उत्सव करवो, ब्रहीने दिवसें ब्रही देवतानी पूजा करवी. ६ विवाहमां हे मातानुं स्थापन करवुं. ७ चंिमका नवानी प्रमुख देवीयोने मा नवी. ए तोतला मातानी तथा यहादिकनी पूजा करवी. ए सूर्ययहण,चं न्ड्यहणने दिवसें तथा व्यतिपात द्वादशी प्रमुखने विषे विशेषें धर्म जा णीने स्नान करवुं. दान देवुं, पूजनादिक करवुं. १० पूर्वजने पिंम आपवा. ११ रेवतपंथदेवतानुं पूजन करवुं. १२ कृषिने प्रारंने हलदेवतानुं पूजन करवुं. १३ पुत्रादिकना जन्म मातृकानुं पूजन करवुं. १४ सोनेरी रूपेरी रंगें रंगित वस्त्रने पहेरवाने दिवसें सोनानी रूपानी रंगिणी देवता विशे षनी जाहाणी करवी. १५ मृतकने ऋर्षे जन्न चढालवां. तिल, दर्न, पाणी ना घडानुं दान देवुं. १६ नदी प्रमुख तीर्थादिकने विषे मृतकने दाह देवां. १७ मृतकने अर्थे वाढडा वाढडीना विवाद करवा तथा दींगला दीगली परणाववां. तथा १ ७ धर्मने अर्थे शोक्यनुं पगलुं पूर्वज पितृनी प्रतिमानुं स्था पन करी राखवुं. १ ए नूतादिकने सरावलां नरी देवां, २० श्राद करवुं, बा रमुं करवुं, मासीसो करवो, ब्रमासी करवी, वरसी करवी, २१ पाणीना पर्व मंमाववां, २२ कुमारिकाने जोजन देवां, वस्त्र देवां, २३ धर्महेतुयें पारकी कन्याना पाणियहण कराववां. १४ अश्वमेध, अजामेध यक्त यांग करवा. १५ लोकिक तीर्थनी यात्रा करवी, तिहां ब्राह्मणने दान देवुं,केश उतारवा. मुंमन कराववां, आंक देवराववा, ढाप प्रमुख खेवी. १६ वर्जी घेर आवीने ते यात्रा निमित्तें जोजन कराववां. २७ धर्महेतुयें कूवा वाव्य खणाववा. २० हेत्रादिकने विषे गोचरण दान करवुं. २ए पितृनिमित्तें नोजन कराव्या प बी काग मांजरादिकनें पिंम करी मेलवा. ३० पिंमदान देवुं. ३१ पिंपलो, लींबडो, वड, आंबो, इत्यादिक वृक्तना आरोपण करी सेवनादिक करवां. ३२ पुष्यने अर्थे आंकेला सांढनी पूजा करवी, ३३ गायना पुन्ननी पूजा

करवी.३४ शीतकालादिकने विषे धर्मार्थे ख्रिय बालवो, ख्रंगीठी करवी.३५ **जंबरो, आंबली, चूली इत्यादिकनुं पूजन कर**हुं. ३६ राधाकसादिकनां रू प करी तेनां नाटकादिक करवां, तथा जोवां. ३७ सूर्य संक्रांतिने दिवसें विशेषें पूजा स्नानदानादिक करवां. ३० उत्तरायणने दिवसें विशेषें स्ना नादिक करवां. ३ए आदित्यवारें तथा सोमवारें एक वार नोजन करवुं. ४० शनिवारें पूजाऋर्थें विशेषें तेलनुं दान देवुं. तथा स्नाना दिक करवां. ४१ कार्त्तिक मासें स्नान करवुं. ४२ माघमासें स्नान क रवुं, घृतकांबलनुं दान देवुं. ४३ धर्महेतुयें चैत्रमासें सांवत्सरिक दान आ पवुं, गरबो मानवो. ४४ आजा पडवाने दिवसें गोहिंसादिक करवां. ४५ नाइबीज करवी, ४६ शुक्कपक्ति। बीजने दिवसें चंइदर्शनें दशिका दान देवुं, एटखे तांतणो देवो, ४७ माघग्रुदि त्रीजें गौरीनिमिनें नोजन क राववां. ४० अखात्रीजने दिवसें कांतवुं, लाहाणी आदिकनुं दान कर वुं, ४ए नाइपद मासना कसपद्यनी कज्जलतृतीया तथा ग्रुक्कपद्यनी हरि तालिका, ए वे दिवसें कज्जली देवतानुं पूजन करवुं. ५० आसो महि नानी ग्रुक्क त्रीजें गोमय तृतीया. ५१ मागशिर महिनाना अने महा म हिनाना कृक्षपक्तनी चतुर्थीयें चंड़ोदयें जोजन करवुं, ते गणेश चोथ जाण वी. ५२ श्रावण ग्रुदि पंचमीयें नागपांचमने दिवसें नाग देवतानी पूजा करवी. ५३ पंचमी आदिक तिथियें दूध वावरवा वलोववुं, कांतवुं, आ दिक न करवुं. ५४ माघग्रुदि ठठने दिवसें सूर्यना रथनी यात्रा करवी. ५५ श्रावण ग्रुदि 'ठेहें चंदन ठह जूलणा ठह करवी. ५६ नादरवा ग्रुदि ठेहें सूर्य पष्ठी. ५७ श्रावण ग्रुदि सातमें शीयल सातमीयें शीतल जोजन क रवुं, वासी अन्न खावुं. ५० जादरवा ग्रुदि सातमने दिवसें वेजनाथ महा देवनी सातम है, तेनी पूजा करवी, उपवास करवो, स्त्रीयें सात घरनी त्र ्ण त्रण कणनी निक्चा लेवी. इत्यादि लोकरूढी करवी. ५ए बुधाष्टमीने दि वसें केवल एक गोधूमादिक अन्नतुं नोजन करवुं. ६० नादरवा वदि अष्ट मी जन्माष्टमीने दिवसें जागरण जत्सवादिक करवां, नादरवा ग्रुदि अप्टमी ते दूर्वाष्टमीयें पलालेलां धान्य, श्रंकूरित धान्य खावां. ६१ श्राशो चैत्रना सु क्लपक्तने विषे नवरात्रें बेसवुं, शक्तिदेवीनुं पूजन नागादिकनी पूजा उपवा सादिक करवा. ६२ चैत्र अने आसोनी ग्रुदि आतमी नवमीने दिवसें गो

त्रदेवताविशेषनी पूजा, गोत्रिजारणां करवां. ६३ नादरवा ग्रुदि नवमी ते अक्यनवमी तेने दिनें आखा धान्यनुं नोजन करतुं. ६४ नादरवा ग्रुदि दश मी ते ख्रविधव्य दशमीने दिवसें जागर करवां. ६५ विजयदशमीयें खीज डीना वृक्तनी प्रदक्तिणादि पूजा करवी. ६६ देवपोढणी एकादशी तथा दे व उठणी एकादशी तथा फोल्गुन ग्रुद एकादशि श्रामली श्रग्यारश त था ज्येष्ठ ग्रुक्क अगीआरश ते पांमवी इग्यारस इत्यादि सर्व महीनानी एकादशीने दिवसें उपवास करवो, फलाहार करवो, ६७ संतानादिकने अर्थे जादरवा विद बारजो करे ते वत्स बारस तथा वली उद्धवहादशी. ६० जेठ मासनी तेरशें ताकनुं दान देवुं. ६ए धनतेरशें धन धोवां,धननी पूजा करवी. ७० फाग्रण वदि चौदशें शिवरात्रियें उपवास रात्रिजागरण करवुं. ७१ चेत्र विद चौदुर्शे नवरात्रनी यात्रा करवी. ७२ नादरवा विद चीदुर्शे पवित्र करणादि. ७३ अनंतचौद्रों अनंतना दोरा बांधवा. ७४ अमावा स्याने दिवसें नाएोज जमाइने जमाडवां. ७५ सोमवती ते सोमवारी अमा वास्यायें तथा वर्षनी पहेली प्रारंजी अमावाम्यायें नदी तलावने विषे वि ज्ञेषें स्नानादिकनुं करवुं. ७६ दीवालीनी अमावास्यायें पितृ निमित्तें दीवा करवा. ७७ कार्त्तिकी पूर्णिमायें स्नानादिक विशेषपणे करवां. ७० फाल्य न ग्रुदि पूर्णिमायें होती प्रगट कराववी, होतीने प्रदक्षिणा देवी. ७ए श्राव एनी पूर्णिमायें बलेव करवी, ते देशप्रसिद्ध अनेक प्रकारें हे. ए सर्व लोकिक देवगत मिथ्याल जाएवां.

हवे लोकिक गुरुगत मिथ्याल कहे हे:— लोकिक गुरु ते ब्राह्मण नाप सादिकने नमस्कार करवो,ब्राह्मणनी आगल पार पाड.एवं कहेवुं,तापसादि कनी आगल जैनमः शिवाय इत्यादिक कहेवुं. ब्राह्मणादिकना मुख्यी क या सांचलि तेमने गोतिलादिकनुं दान देवुं, ब्राह्मणादिकना घरने विषे बहु मान अर्थे गमनादिक करवुं, ए सर्व लोकिक गुरुगत मिथ्याल जाणवुं.

हवे लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व कहे हे:— परदर्शनीयें यहण कछुं जे जिनिबंब तेनां पूजादिक करवां. सप्राजाविक श्रीशांतिनाथादिकनी प्रतिमाने इहलोकना सुखने श्रर्थे महोटी यात्रायें जावुं, मानतादिक करवी, ए सर्व लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व जाणवुं.

इवे जोकोत्तर ग्रुरुंगत मिथ्याल कहे हे: - जोकोत्तर जिंग ते पासचादि

कने गुरुबुिं वंदनादिक करवां,गुरुना यूजादिकनी इहलोकना फलने अ यें यात्रा करवी, मानता करवी. ते लोकोत्तर गुरुगत मिथ्याल जाणवुं.

इहां वादी युक्ति कहे हो, के जेम वैद्यादिकने व्याधि रोग मटाडवाना ज्यायने अर्थे धन, नोजन, वस्नादिकें करीने बहुपरें मानीयें हैयें, तेम स प्रानाविक यक्त् यक्त्णीने इहलोकना फलादिकने अर्थे पूजा वेयावच्च करी मानीयें तो तेमां हो दोप हे ? जे माटे ते देवोने मोक्तने अर्थे मानीयें पूजीयें तो मिध्याल थाय, पण तेवी बुिक्यें तो आराधता नथी, कह्यं हो, के कुदेवने देवनी बुिक्, कुगुरुने गुरुनी बुिक, अधर्मने विषे धर्मनी बुिक, तेने मिप्याल कहीयें. ते मिप्यालनों जे विपर्यय एटले उलट, तेने समकेत कही यें. अने सांजलियें पण हेयें. जे निर्मलहढ समकेत पालनारा एवा रावण श्रीकृष्ण, श्रेणिकराजा, अनयकुमार आदें हता, तेणें पण हानुने जीतवा पुत्र प्राप्ति आदिक इहलोकनां महोटां कार्य साधवाने अर्थें विद्यासाधन, देव तानुं आराधन, ते प्रत्यें करेलुं हो, तेमाटे इहलोकना सुखने अर्थे यक्तादि कना आराधनने विषे मिप्याल न कहेवाय?

हवे आचार्य कहे हे, के तमें साचुं कहुं तत्त्वयी विचारीयें तो कुदेवने देवबुिह्यें करी आराधवुं तेज मिथ्याल हे, तोपण यहादिकनुं आराधन इह लोकना सुखनें अर्थे पण श्रावकें वर्क्जबुंज. कारण के कुदेवने प्रसंगें अने क दोपोनो संनव याय माटे निषेध्युं हे. प्रायः सांप्रतकालने विषे मंद बुिह, सुग्ध, जोला, वक्रबुिहना धणी घणा हे, एवी परिणतिना धणी एवुं विचारे के जो विद्युद्ध समकेतवंत महोटा परिणामना धणी तेणे यहादि कना आराधन कह्यां हे, तो निश्चें ए देव पण मोह्नने दायक देखाय हे, मा टे तेने जली रीतें आराधवा. इत्यादिक परंपरायें मिथ्यालनी हिद्ध याय, मिथ्यालना स्थिरीकरणादिक दोपनो प्रसंग याय, मिथ्यालनी वधारो या. य, तेमज इहलोकना फलने अर्थे यहादिकना आराधनारा धणीने परजवने विषे बोधीनी प्राप्त इर्लेज थाय. कह्युं हे के ॥ यतः ॥ अन्नेसिं सत्ता णं, मिन्नचं जो जणेश मूंदणा ॥ सो तेण निमित्तेणं, न लहइ वोहिं जिणा निह्यं ॥ १ ॥ जावार्थः—ते मूढआरमा बीजा प्राणीने मिथ्यालनो उदय करे, ते मिथ्यात्वनिमिन्तें करीने परजवें बोधिपणुं न पामे, एम श्रीवीतरागें कह्यं हे. अने ते रावण कुआदिक तेणे ते समयमां प्रजना धमेने विषे बी

जा धर्मथी अतिशयपणे साची प्रतीति राखी है, तेमां कोइक कारणें जो कोइ विद्या प्रमुखनुं आराधन कखुं, तो पण ते महोटा पुरुषनुं आलंबन लइने यद्दादिकने आराधनुं घटे नही. ॥ यतः ॥ जाणिच मिन्न दिहि वि,जे पडणा लंबणाइ घिष्पंति ॥ जे पुण सम्मदिहि, तेसिं पुणोचडणपयडीए ॥१॥

तथा आवश्यकिन्युंकिमां कहां हे के साधुनो सेवाकारी श्रावक प्रथमज मिथ्याल पिडक्रमे, वोसिरावे, समकेत पिडवर्के. तिहां कहे के आजधी मांमीने मुक्तने न कल्पे. ग्रुं न कल्पे ? ते कहे हे:—अन्यदर्शनीने तथा अन्यदर्शनीयें भ्रद्या जे श्रीअरिहंतना चेत्य देहरा ते प्रत्यें वांदवा, नमस्कार करवा, तथा तेमनी साथें वोलवुं, बोलाववुं, आलापसंलाप करवो, न कल्पे तथा तेमने अशन, पान, खादिम, खादिम, देवां न कल्पे, तेमने मान आप्राप्ता परवशपणे करी, पान, खादिम, खादिम, देवां न कल्पे, तेमने मान आप्राप्ता परवशपणे करी, देवादिकने परवशपणे करी, ग्रुवोदिकने परवश्यों करी, बलवंत चोरादिकने परवशपणे करी, इर्जिक्हादिकने परवश्यों करी, बलवंत चोरादिकने परवशपणे करी, इर्जिक्हादिकने लीघे आजीविकाना निर्वाह करवे करी सेववुं पहे. ते मिध्याल तथा पहेला स्नेह रिहतपणे लोकापवादना नयथी बोलाववा पहे,के तुं क्यांथी आव्यो ? इत्यादि. ए रीतें ग्रुहनी समक्त समकेतनो आलावो संपूर्ण कहीने आलोवे, ते वारे तेनुं ग्रुद्ध समकेत थाय. पढ़ी समकेतनो निर्वाह पण तेमज थाय. नहीं तो अतिचार अनाचार दोष लागे.

इहां शिष्य आशंका करे हे, के जो एम कहा हो तो ब्राह्मण तथा वी जा निक्ताचरने अशनादिकनुं देवुं सर्वथा नज घटे, अने घणाकालना मे लापी ब्राह्मणादिक हे तेने देवानो निषेध कछाथी लोकापवाद लोक विरु ६ करवाथी धर्मनी हिनतादिक घणा दोष थाय ?

हवे आचार्य उत्तर कहे वे के:—तेउने जे दान प्रमुख आपवुं, ते पात्र नी बुिंचें न आपवुं, दीन हीन उपर दयानी बुिंचें आपवुं. जेमाटेती र्थंकरादिक पण उचित, कीर्च्यादि दान क्यांहि पण निषेधता नथी. तीर्थं करें पोतें पण दान दीथां वे.

तथा श्रीरायप्पसेणी स्त्रमां ज्यां परदेशी राजाने नवो धर्म पमाडघो, तेवार पठी शिक्षा अवसरें केशीगणधरें कह्यं ठे, के हे परदेशी! तुं पहेला रमणिक थइने पठी, अरमणिक थाइश नहीं. एटले प्रथम ब्राह्मणादिकने विषे दाता यइने श्रीजिनधर्म पाम्या पढ़ी खदाता यइश मां. एयकी छंत रायकर्म बंधाय तथा श्रीजिनधर्मनी खपचाजना एटले निंदानो संनव चाय. तेवार पढ़ी कहेलुं जे मिण्यात्व ते सर्व प्रकारें ढांमवुं.

तथा दर्शनग्रहि प्रकरणें कहां हे ॥ यतः ॥ इविहं लोइय मिन्नं, देवग यं गुरुगयं मुणेयवं ॥ लोडनरंपि इविहं, देवगयं गुरुगयं मुणेयवं ॥ १ ॥ देवगत अने गुरुगत, ए वे प्रकारनुं लोकिक. मिण्यात्व हे. तथा लोकोत्तर मिण्यात्व पण एम वे प्रकारनुं हे. ए चार प्रकारना मिण्यात्वने त्रिविध त्रिविधं जे वर्झे, तेनुं निष्कलंक समकेत होय.

हवे ए मिथ्यात्वना पांच नेद कहे हे:—तिहां जे पाखंमी पोतपोताना शास्त्रनेविषे ग्रंथाणा हे ते पोतपोताना धर्मने साचो मानता परना पक्तने तिरस्कार करवा माह्या हे, तेने आनियहिक मिथ्यात्व कहीयें.

२ सामान्यजनने मनें सर्व देव, सर्व ग्रुरु तथा सर्व धर्म सत्य है, माटे सर्वने आराधवा पण कोइने निंदवा नहीं ते अनानियहिक मिथ्याल.

३ जे यथार्थपणे वस्तु तत्त्वने जाणे है, पण गोष्ठामाहिलनी परें कोइ क कदायहने आरोपणे करी बुद्धि विपर्यास पामे, ते आनिनिवेशिक मिण्यात्व.

४ जे देव गुरु धर्मनेविपे आ सारुं के आ सारुं ? इत्यादिक संशयमां रहे, ते चोथुं सांशयिक मिण्यात्व जाणवुं.

प विचार रहित एवा एकेंडियादिक जीवने जे विशेषें ज्ञानरहित है, तेने मिथ्यात्व जाणवामां आवतुं नथी ते अनाजोगिक मिथ्यात्व. एम सर्व प्रकारें करीने मिथ्यात्वनो परिहार करवो तेवारें समकेत, चार सद्दहणादि क सडशव जेदे करीने निर्मल थाय ते सडशव बोलनो विस्तारें अर्थ एज पुस्तकना त्रीजा जागमां दर्शनसित्तरी यंथमां हाप्यो हे तेथी जाणवो.

इति तपागञ्चनायक श्रीसोमसुंदरसूरि तिञ्चष्य श्रीच्रवनसुंदरसूरि तिञ्च ष्य उपाध्याय श्रीरत्नद्रोखरगणियें करेजी अर्थदीपिका एवे नामें अपरनाम ंश्राक्षत्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति, तेने विषे प्रथम समकेतनो अधिकार समाप्त थयो १

> हवे चारित्रना अतिचार प्रतिक्रमवाने इन्नतो थको प्रथम सामान्यपणे आरंचने निंदवा माटे गाथा कहे हे. हकाय समारंचे, पयणे य पयावणे य जे दोसा॥ अतृहा य परहा, इनयहा चेव तं निंदे॥ ॥॥

श्रथः—(त्रक्कायसमारं ने कें) त्रक्कायना समारं नने विषे ते कया ? (पय एोयपयाव एो कें) पचव चुं पचाव चुं एट छे रांध चुं अने रंधाव चुं (य कें) विषे अनुमोद चुं तेने विषे (जे दोसा कें) जे दोप थया ते (अतहायप रहा कें) पोताना आत्माने अर्थे अथवा परने अर्थे अथवा (उनयहा कें) चे दुने अर्थे दोष लागा (तं निंदे कें) तेने निंडं चुं. इत्यादि.

तिहां बिकाय ते पृथ्वी, अप्; तेज, वाज, घनस्पित तेनो अने त्रसकायनो समारंज ते परितापादिकनुं जपजाववुं. इहां शिष्य पूबे बे के, शास्त्रमां तो सं रंज समारंज ने आरंज, ए त्रण कह्या बे,तो तमें एक समारंजज केम जीधो ?

त्यां ग्रह उत्तर कहे हे:-मध्यना यहणथी आदि अंतनुं पण यहण थयुं तुलाना दंमने न्यायें समारंजना यहणयकी संरंज अने आरंजनुं यहण थ युंज, एम जाणवुं. तिहां संरंज ते प्राणवधादिकनो संकल्प, विचार कस्बो होय ते. अने समारंन ते प्राणीने परितापनादिक किलामणा उपजावी हो य ते. अने आरंज ते प्राणीना प्राण हरवां जीवनी हिंसा करवी ते ॥ यतः॥ संकप्पो संरंनो, परितावकरो नवे समारंनो ॥ आरंनो चद्दवर्ड, सव्ववयणं वि सुद्धाणं ॥ १ ॥ ते काणमाटे ए त्रणेने विषे पाप आचरणादि जे दोप लागा होय ते पाप जाएवं पए अतिचार न जाएवा. केम के श्रावकें ढ क्कायना आरंनतुं टालवुं अंगीकार कखुं नथी. माटे जे आदखुं न दोय ते ने अतिचारनो अनाव जाएवो. हवे समारंन ते पोतें रसोइ करे, अने परनी पासें रंधावे, च शब्द थकी आरंजनी अनुमोदना करे, ज़ेने अधिं? तो के पोताना आत्माने अर्थे तथा पर प्राहूणादिकने अर्थे अथवा पोता ने अने परने वेहुने अर्थे तथा च शब्दथकी अर्थ विना रांधे, अथवा हेपें करी रांघे, रंधावे, पचन पाचनादिक करे, करावे, रसोश्यानी वृत्ति करे, अने निरर्थक पाकादिक करवा ते तो लोकनेविषे पण निंदवा योग्य हे. कहां हे के, ॥ श्लोक ॥ पंक्तिचेदी वृषापाकी, नित्यं दर्शननिंदकः ॥ मृतशय्याप्रति, याही,न नूयः पुरुषोन्नवेत् ॥ १ ॥ नावार्थः-पंक्तिनेद करे,निःकारणे रांधे, निरंतर दर्शननी निंदा करे, मूखानी शय्या लीये, मृतकतुं दान लीये, ते फरीने पुरुषनो अवतार न पामे ॥ १ ॥

इहां शिष्य पूछे हे के " इविहे परिग्गहम्मि " ए गायायें पूर्वें आरंजनी निंदा करी हती, तेम हतां फरी आ गायामां शा कारणें आरंजनी निंदा कही वे ? तिहां ग्रुरु कहे वे:-पूर्वें जे कहां ते तो सामान्यपणे अनेक प्रका रना आरंज ते उद्देशीने कहां, अने इहां तो पोतानो निर्वाह याय, एटलो ज आरंज लेवो, ते पण पूर्वें आरंजनुं पिडक्कमनुं कहां वे, अने इहां तो आ रंजनी निंदा मात्रज कही वे.

वली सम्यग्दृष्टि तो निश्चें पापरूप आरंजने विषे रह्यो है जे आरंज वि ना तेनो निर्वाह न थाय ते सर्वेमां प्रवर्जे. परंतु मनमां विचार करे जे धि कार पड़ो मुफने हुं हक्कायनो आरंजी हुं! पापी हुं इत्यादिक मनने विषे जावना जावे ॥ यतः ॥ हिअए जिएाए आएा,चिरयं महएव रिसं अन्न स्स ॥ एयं आलप्पालं, अच्चो दूरंवि संवयइ ॥ १॥

अथवा पक्तांतरें अर्थ कहे हैं:—तिहां आत्मार्थ ते मुफने पुष्य थारों एवा नोलपणे करीने साधुने अर्थें साधु जहेशीने अन्न रांधे पाक करे, त या पर ते माता, पिता, पुत्रादिकना पुष्यने अर्थें साधुने दान आपग्रं, ए वा हेतुयी पाक करे, ते परार्थ जाणवो. एमज पोताना तथा परना वे पुष्यने अर्थे पाक करे, ते जनयार्थ कहियें. च शब्दथकी हेषें करी साधुनो नियम नांगवा नणी कोइक पचन पाचनादिक करीने आपे. इत्यादि क अनेक नेद जाणवा.

अथवा बक्कायनो समारंजादिक ते यत्नविना अएगल पाए। वावरे, अएशोध्यां एवां इंधए धान्य प्रमुखने वापरवे करी जे दोष कस्वा-होय, ते दोपने हुं निंडुं डुं, ए सार्थकता जाएवी.

श्रावकें तो त्रसादि जीवें रहित स्थानकें संखारो रूडी रीतें जालववादि कें करी विधिसहित ढिइ रहित काता वस्त्रें गालेला पाणीयें करी वर्त्तवुं ते मज स्कां काष्ठ ते घणां जूनां न होय, तेमज तेमां पोल न होय, कीटका दिकें खाधां न होय, एवा काष्टें करी धान्य, पक्कान्न, सुखडी, शाक, स्वादि म, पत्र, फूल, फलादिक ए सर्व त्रसजीवादिके रहित नजरें जोइ करीने सर्व वस्तु वापरवी रांधवी, श्रने पाणी प्रमुख थोडुं वावरवुं. रूडी रीतें श्रद्ध करीने श्राचरवां. जो एम न करे, तो निर्देयपणुं थाय, श्रने समता संवे गादिक लक्क्णों सहित एवं जे समकेत तेनां पांच लक्क्ण मांहेला श्रंतर्गत श्रवुकंपा लक्क्णनो नाश थाय ॥ यतः ॥ परिसुद्धं जलगहणं, दारु श्र ध न्नाइ याण तहेव ॥ गहियाणय परिनोगो, विहीइ तस रस्कणहाए ॥ १ ॥

नावार्थः-जल गली ग्रुद्ध करी लेवुं अने काष्र धान्य प्रमुखपण ग्रुद्ध करी लेवा, ते काष्ठ धान्यनो परिनोगनो विधि त्रसजीव राखवाने अर्थे श्रावकने कहारे हे र

तथा अन्यद्दीनने विषे महानारतमां पण कह्यं वेः—श्लोक ॥ संवत्स रेण यत्पापं, कैवर्नस्य हि जायते ॥ एकाहेन तदाप्तोति, अपूतजलसंयही ॥ १ ॥ विंशत्यंगुलमानं तु, त्रिंशदंगुलमायतो ॥ तहस्रं हिगुणीकत्य, गाल येक्जलमापिवेत् ॥२॥ तिस्मन् वस्त्रे स्थितान् जीवान्, स्थापयेक्जलमध्यतः ॥ एवं कत्वा पिवेनोयं, स याति परमांगतिं ॥ ३ ॥ नावार्थः—माठीगर जेटलुं एक वर्ष पर्यत एाप करे तेटलुं पाप एकदिवसमां अणगल पाणी वावरना रने थाय ॥ १ ॥ वीश आंगुल पहोलुं अने त्रीश आंगुल लांबुं, एवा यस्त्र ने बेवडुं करीने ते वस्त्रें पाणी गलीने पीवुं ॥ २ ॥ पाणी गल्या पठी ते वस्त्रमां जे जीव रहे, ते फरी तेज जलस्थानकमां स्थापवा. एम करीने जे पाणी पीये, ते सदा परमगित जे मोक् तेने एामे ॥ ३ ॥

तथा ञागममांहे प्रथिव्यादिकने विषे पण जीवपणुं कह्यं हे ॥ यतः॥ यद्दामलय पमाणं, पुढवीकाए हवंति जे जीवा ॥ ते पारेवय भिना, जंबू दीवे न मायंति ॥ १ ॥ एगंमि चदगबिंडमि, जे जीवा जिएावरेहिं प स्मत्ता ॥ ते जइ सरिसव मित्ता, जंबू० ॥ २ ॥ नावार्थः-(अद्दामलय के॰) नीला आमला प्रमाण एक माटी पाषाणनो कटको होय तेमां प्र चुयें जे जीव कह्या हे,ते एकेका जीवना शरीर जो सरशव जेवडा करीयें,तो ञ्चाखा जंबूद्दीपमांहे समाइ शके नहीं ॥ १ ॥ एक पाणीना विंडुमांहे जे जीव जगवानें कह्या हे ते एकेका जीवनी काया पारेवा प्रमाण करीयें, तो ते जंबूद्वीपमां हे समाय नहीं ॥२॥ इत्यादि जाण वुं. तथा वत्तरमीमांसा दिकने विषे पण कह्यं हे ॥ श्लोक ॥ जुतास्यतंतुगलिते, ये बिंदो संति जत वः ॥ सूद्याचमरमानास्ते, नेव मांति त्रिविष्टपं ॥ १ ॥ कुसुमकुंकुमांनश्च, निर्मितं सूक्त्रजंतुनिः ॥ तद्घट्टेनापि वस्त्रेण, शक्यं शोधियतुं जलं ॥ २ ॥ नावार्थः-करोलीयाना मुखयकी जे तंतु गले हे, तेना बिंडुना जे न्हाना जीव हो, ते एकेका जीवनी चमर जेवडी काया करीयें, तो त्रण लोकमां हे पण समाय नहीं ॥ १ ॥ कसुंबाने विषे, कुंकुने विषे, पाणीने विषे, सू क्यजीवो नखा ने अर्थात् ते सर्व पदार्थ जीवमय ने,तेमाटे काना वस्त्रं पाणी गलीने ग्रुद्ध करी वावरवुं, ते युक्त हे ॥ २ ॥

तथा नगवतजीताने विषे पण कह्यं के:—श्लोक ॥ प्रथिव्यामप्यहं पा थी, वायावग्नों जलेऽप्यहं ॥ वनस्पतिगतश्चाहं, सर्वनूतगतोऽप्यहं ॥ १ ॥ योमां सर्वगतं क्वात्वा, न विहिंसेत्कदाचन ॥ तस्याहं न प्रणक्यामि, न च मां स प्रणक्यित ॥ १ ॥ नावार्थः— हे अर्जुन ! प्रथ्वीने विषे पण हुं हुं, वायुने विषे, अग्निने विषे पण हुं हुं, वनस्पतिमां पण हुं हुं. सर्व प्राणिमात्रमां हुं हुं ॥ १ ॥ जे मुफ्ते सर्व व्यापी जाणीने कदापि हिंसा न हिं करे, तेनो हुं नाश करीश नहिं. ते मारो पण नाश नहिं करे, अर्थात् तेने मारे परस्पर प्रेम पूर्ण रहेशे ॥ १॥ तथा वनस्पति आदिकमां सचेतनपणं हे, तेनी युक्ति तो प्रथम कही आव्या हैयें. ए सातमी गाथानो अर्थ थयो ॥ ९॥ हवे सामान्यपणे चारित्रना अतिचार प्रत्यें पिष्ठक्कमे हे.

॥ पंचएह मणुवयाणं, ग्रणवयाणं च तिन्हि मइयारे ॥ ॥ सिकाणं च चजएहं, पडिक्कमे देसियं सर्व ॥ ७॥

अर्थः पांच अणुव्रतना त्रण गुणव्रतना अने चार शिक्ताव्रतना जे अतिचार, एथी जे कर्म बांध्युं होय,ते पिडक्कमुं बुं. इत्यादि पूर्ववत् ॥ ७ ॥ जे कारण मारे समकेत पास्या पत्री साधना माहावतनी अपेकारें

जे कारण माटे समकेत पाम्या पढ़ी साधुना माहाव्रतनी अपेक्सयें (अणु के॰) सक्ता एटले न्हानां व्रत जाणवां. ए पांच अणुव्रत ते श्राव कने मूलगुण रूप ढे,तथा ते पांच अणुव्रतनेज विशेष गुणनां कारण एवां जे व्रत, ते दिग्विरमण आदें देश्ने त्रण गुणव्रत जाणवां. तथा ते गुणव्रत शिक्षारूप छे. ते शिष्यने विद्या यहण करवानी पेरें फरी फरी अन्यास करवा योग्य एवां ए सामायिकादिक चार शिक्षा व्रत जाणवां, ते व्रतना अति चार आश्रयीने जे कर्म बांध्युं, ते पूर्वनी पेरें पिडक्कमुं छुं.

इहां पांच अणुव्रत अने त्रण गुणव्रत ए आव प्रायः जावजीवनां हे, अने चार शिक्ताव्रत जे हे, ते तो वारंवार जेवाय हे अने मूकाय हे जेवा रें अवसर होय तेवारें अन्यास करवा योग्य हे ॥ ए ॥

> हवे जेम उद्देश्या है, तेमज निर्देश करवा माटें प्रथम पांच अणुव्रत मांहेला पहेला अणुव्रतने गाथायें करी कहे है. ॥ पढमे अणुव्यम्मि, थूलग पाणाइवाय विरई ।। आयरिय मणसहे, इह्यमाय णसंगेणं ॥ ए॥

अर्थः प्रथम अणुव्रत स्यूजधी प्राणातिपात विरमण आश्रयीने जे आचखुं होय, (अप्पसंत्रे के॰) अप्रशस्त क्रोधादिक नाव वते. ते इहां प्रमादना प्रसंगें करीने अतिचार जागे.

हवे प्राणीयोनी हिंसा १४३ नेर्दे थाय,ते आ प्रमाणें के:-ए॰वी,अप्, तेज,वायु, वनस्पति,ए पांच स्थावर तथा एकेंड्य, बेंड्य, तेंड्य, चौरिंड्य अने पंचेंड्य. ए नवप्रकारना जीवने मन, वचन अने कायायें करी हणातां सत्त्यावीश नेद थाय, तेने करवुं, कराववुं अने अनुमोदवुं एम त्रणे गुणतां एकाशी थाय, ते एकाशीने अतीत, अनागत अने वर्तमान ए त्रण कार्से गुणतां १४३ नेद, पहेला व्रतना थाय.

तथा इव्यथी अने नावथी हिंसानी चौनंगी थाय, ते कहे हे:—एक तो हुं आ मृगलाने मारुं! एवे परिणामें परिणम्यों जे आहेडी तेने नावथी हिं थइ, अने ते मृगलाने हणे, तेवारें इव्यथी हिंसा थाय. ए इव्यथी पण हिंसा अने नावथी पण हिंसा थइ, ते प्रथम नांगो जाणवो. वीजो इव्यथी हिंसा हो पण नावथी हिंसा नथी ते ईर्धासमितिवंत साधुने जाणवी. ए बीजो नांगो ॥ यदाह ॥ विक्रेमिति पिण्डि,संपत्ती एवि मुच ए वेरी ॥ अवहंतेवि ए मुच्चइ, किन्ध नावो इवाजस्स ॥ १ ॥ ए बीजो नांगो. तथा त्रीजो नांगो ते जेमां नावथी हिंसा हे पण इव्यथी हिंसा नथी ते जेम अंगारमईकाचार्ये जीवनी बुद्धियं महावीरना कीडा कचराय हे एम कहेतां रात्रियें अंगारानुं मईन कछुं. तेमज अंधारामां दोरहुं पड्युं होय, तेने सर्पनी बुद्धियं हणतां थकां नावथी हिंसा थाय. पण इव्यथी हिंसा न थाय. ए त्रीजो नांगो जाणवो. तथा इव्यथी पण हिंसा न थाय अने नावथी पण हिंसा न थाय. ए चोथो नांगो ते मन, वचन अने कायानी सुद्धतायें सुद्ध उपयोगें वर्तता एवा साधुने जाणवो.

ए चार प्रकार कह्या. तेथी अन्यरीतें प्राणीनो वध वे प्रकारनो कह्यो है ते कहीयें हैयें ॥ गाथा ॥ जीवा सुहुमा यूला, संकष्पा रंजर्र जवे छिवहा ॥ सावराह निरवराह, साविस्का चेव निरविस्का ॥ १ ॥ जावार्थः – जीव नो वध वे प्रकारनो है. तिहां एक स्यूल ते वेंडियादिक बादर जीव अ ने बीजा सुक्षा ते एकेंडियादिक पांच स्थावर जे दृष्टि गोचर आवे, तेवा जीव समजवा पण सुक्षानामकर्मना उदयवाला समस्त लोकव्यापी दृष्टि

गोचर न आवे, ते जीवोने वधनो अजाव है, ते कांइ कोइना माखा मर ता नथी परंतु पोतानी मेर्जेज आयुना क्यें मरण पामे है.

इहां साधुने तो बेहु प्रकारना वधयकी निवर्त्तवुं कह्यं हे. एणे त्रस अने स्थावर बेहुनी हिंसा टाली हे,तेथी साधुने तो वीश विश्वानी दया जा एवी. अने गृहस्थने तो स्यूल बेंडियादिक जीवोना वधयकी निवृत्तवुं कहे जुं हे, पण सूक्ताना वधयकी निवृत्तवुं कह्यं नथी कारण के तेनी पृथ्वी ज लादिकना आरंजने विषे निरंतर प्रवर्त्तना हे, तेना आरंजथी टलवुं बनतुं नथी माटे वीशमांथी अर्दा दश विश्वा गया, बाकी दश विश्वानी दया रही.

हवे वे इंड्यादिक जीवोनो वध पण वे प्रकारें हैं एक संकल्पयकी अने बीजो आरंजयकी. तेमां आ अमुक जीवने हुं मारुं! एवो जे मनमां संकल्प उपजे, ते संकल्पयकी श्रावक टब्या हे, पण आरंजयकी टब्या नथी. जेमाटे किपआदिक आरंजने विषे वेइंड्यादिक जीवने हणवानो संजव याय हे, जो ते न करे, तो शरीर कुटुंबादिकनो निर्वाह थाय नहीं, एम करवाथी फरी दशमांथी अही गया बाकी पांच विश्वा दयाना रह्या.

हवे संकल्पणी उपनी जे हिंसा तेना वे जेद हे. एक सापराध ते अपरा धसहित अने बीजी निरपराध ते अपराध रहित. तेमां गृहस्य निरपराधी जीवनी हिंसाणी तो टल्यों हे, अने सापराधने विषे तो न्हाना महोटा अ पराधनो विचार करीने पही जे शिक्षाकरवा योग्य होय ते करे माटे पां चमांची अडधा गया, बाकी अही विश्वा द्या रही.

हवे निरपराधी जीवनो वध बे प्रकारें हे. एक अपेक्स सहित अने बी जो अपेक्स रहित तेमां निरपेक्स पकी तो श्रावक निवस्त्यों हे, पण अ पेक्स सहित पकी निवस्त्यों नथी, केम के चालतां हालतां जीवनी हिंसा षाय हे, तथा पाडा, हषन अश्वादिकने चाबका प्रमुखनो मार मारे हे, तेमज प्रमादि पुत्रादिकने पाह निणाववा माटे शिखामण आपवी पडे हे. एम अपेक्स सहितने विषे वधबंधादिक कराय, ए गृहस्थनो व्यवहार हे. तेवारें वली अहीमांथी अर्द गया, बाकी सवा विश्वानी दया श्रावकने रही ते पण आनंद कामदेव सरखा अद श्रावकने सवा विश्वानी दया रही.

एवा श्रावकने प्रायः प्रथम अणुव्रत होय ते प्रथमव्रत, सकलव्रतमांहे सारजूत हे, ए पहेला व्रतने विषे जे खरूप कहां, ते स्यूल महोटा जीव

जे चाले, हाले, जेने जीवपणानुं प्रगट चिन्ह हे, एवा बेंडिय, तेंडिय, चेंरिंडिय, पंचेंडियादिक जे जीवो,तेनां इंडियादिक जे प्राण, तेनो संकल्प थके हाम, चर्म, नख, दंतादिकने अर्थे अतिपात एटले जे विनाश करवो, ते हिंसा जाणवी ॥ यतः ॥ पंचेंडियाणि त्रिविधं बलं च, उह्यासिनःश्वा सस्तथेवमायुः ॥ प्राणा दशैते नगविष्ठरुक्ता,स्तेषां वियोजीकरणं तु हिंसा ॥ १ ॥ नावार्थः—पांच इंडिय, त्रण बल, श्वासोह्वास, अने आयु, ए दश प्राण नगवानें कह्यां. ते दश प्राणनो जे वियोग करवो, ते हिंसा जाणवी.

अथवा वेइंडियादिक स्यूज महोटा जीवनो जे अतिपात एटले विनाश करवो, ते स्यूजप्राणातिपात जाणवो. तेनी जे निवृत्ति ते स्यूजप्राणाति पा त विरमण व्रत कहीयें. माटे प्राणातिपातिवरमणव्रत आश्रयीने आच्छुं जे आगज कहेशे एवुं वधवंधादिक माठुं कर्म कछुं अथवा प्राणातिपात विरमणना समीपथकी अतिच्छुं अतिचार जाग्यो होय अतिकांत अतिक म व्यतिक्रमादिकें करीने मजीन कछुं होय.

इहां शिष्य पूछे छे कोइक मंदवाडना दोषनी उपशांतिने अर्थे वधवंधादि क आचरवुं पण रूडुं होय? कोइ गाम जवाने अर्थे अतिचखुं जे अन्यत्र गमन कखुं जे अतिचार, ते कोने कहीयें? जे पोताना स्थानक थकी परस्था नकें जावुं. तेने अतिचार कहियें ते अतिचार देशविरतिने होय अने सर्व विरतिने पण होय पण ते पडिक्रमवा योग्य न होय?

हवे गुरु उत्तर कहे हे:—अग्रुननाव तो अप्रशस्त कोधादिकने औदिवक नावें थाय, वधवंधादिक अतिचार कोधादिक अग्रुननावेंज होय, अने मृ षावाद प्रमुखने हारें करीने पण पहेला व्रतने अतिचार संनवे, जेम स्नेह नी परीक्षाने अर्थें देवतायें कह्यं जे रामचंड्जी मरण पाम्या, एटलुं कहेतां मात्रज लक्ष्मण मरण पाम्या. तथा कुमारपाल राजायें कौतुकथकी उंदरना एकत्रीश रोप्यक अपह्या, तेथी उंदर मरण पाम्यो, एटले अदनादान थ की पण प्रथम व्रतने विषे अतिचार लागे पण ते अतिचार बीजुं व्रत आ दे देइने तेमांज आलोववां परंतु प्रथम व्रतमां आलोववां नहीं, तेमाटें ते अतिचारने टालवाने अर्थें हवे कहे हे.

इहां प्राणातिपातिवरमणने विषे प्रमादने प्रसंगें करीने पाप थाय है. हवे ते प्रमाद पांच प्रकारें हे ॥ गाथा ॥ मक्कं विसय कसाया, निद्दा विक हाय पंचमी जिएया ॥ ए ए पंच पमाया, जीवं पाडंति संसारे ॥ १ ॥ जावार्थः-१ मिदरापान, १ विषय सेवन, ३ क्रोधादिक कषायनुं करवुं, ४ निज्ञा करएा, पांचमी विकथा, ए पांच प्रमाद है, ते जीवने संसारमांहे पाडे है.

बीजा पहांतरथी आव प्रमाद पण कहाँ। वे ॥ गाथा ॥ अन्नाणं संस चं चेव, मिन्नानाणं तहेव य ॥ रागो दोसो महिम्नं सो, धम्मंमि अ अणा हरो ॥१॥ जोगाणं इप्पणीहाणं,पमां अहहा नवे ॥ संसारुत्तार कामेणं, सबहा विक्तयवर्च ॥ १ ॥ नावार्थः—१ अज्ञाननाव धरवो, १ संदेह घणो राखवो, निश्चें (तहेवय के०) तथैवच एटले तेमज वली ३ मिण्याज्ञान नुं पोतें नणवुं, बीजाने नणाववुं, ४ घणो राग राखवो, ५ देप करवो, ६ मतिचंश करवो, ७ धर्मने विषे आदर न करवो, ॥ १ ॥ ७ मन वचन अने कायाना योगनां इःप्रणीधान करवां, एटले मनादिकने मातां प्रवर्ताववां, ए आव प्रमाद वे, ते संसारसमुइ जतरवाने अर्थें सर्वथा वर्कवां ॥ १ ॥

ए पूर्वोक्त पांच तथा आठ जे प्रमाद हे,तेने विषे अतिशय पणे करी जे प्रवर्तननो प्रसंग होय, ते प्रमादप्रसंग किहयें, ते कषाय तथा विषयादिक प्रमादने प्रसंगें करीनेज प्रायः जीव, व्रतने अतिचार लगाडे. अर्थात् प्रमा दने वशयको जीव कषायने वश थाय अने कषायने वश थयो थको नवा अतिचार लगाडे. प्रमाद प्रसंग जे हे, ते अतकेवलीने पण अनर्थनो हेतु हो, तो बीजानुं तो ग्रंज कहेनुं? कह्यं हे के ॥ चन्नदस पुविआहा,रगाय म एनाणि वीयरागावि ॥ हुंति पमाय परवसा, तयणंतर मेव चन्न गङ्या ॥१॥ नावार्थः—चोद पूर्वधर आहारक शरीरना धणी, मनःपर्यवङ्गानी, नपशांत मोही वीतराग पण प्रमादने परवश थका तदनंतर चारे गितमां जाय ॥१॥ तथा श्रीआचारांगसूत्रने विषे कह्यं हे ॥ पमत्तस्स सबन्न नयं, अप्यमत्तस्स वि न कुतोवि नयमित्ति ॥ एटले प्रमादने वशयी नय होय पण अप्रमादी ने क्यांहि पण नय न होय. इति प्रमादस्वरूपं ॥

उपलक्ष्णिश्वी आकुटी दर्पादिकें करीने जे अतिचार ते पण जाणवा. तिहां जे निषेध कखुं हे ते आतुरतायें करी तेवाने ए श्रुतविहित हे एम जाणी प्रतिषिद्धाचरणें उत्साह युक्त आत्मानो संकल्प होय, तेने आकु हि कहियें तथा जे वलगवुं दोडवुं जमवुं इत्यादिक उन्माद ते दर्प जाणवो. ॥ यतः॥ आग्रहिया च विच्चा,दप्पो पुण होइ वग्गणाईन ॥ कंदप्पाइ पमान, कप्पो पुण कारणे करणं ॥१॥ जन्मत्ततायें करीने वलगवुं,दोडवुं हिया अश्वने शकटने जस्मुकपणे खेडवां इत्यादिकने विषे तृथा पंचेंडियनो वध थाय आत्मोपघातादिक दोष थाय. ए रीतें जे आचखुं दोय ते निंडं बुं. अथवा इहां जे आचखुं दोय एम जे कह्यं, तेनुं जे आलोववुं ते आगली गायायें प्रगट देखाडहो. इति नवमगाथार्थः ॥ ए ॥

हवे जे खाचखुं सेव्युं तेज प्रगट पांच छतिचारपणे देखाडे हे:-॥ वह बंध छिवहेए, छाइनारे नत्तपाण बुहेए॥ पटम वयस्सइयारे, पिडक्कमे देसियं सबं॥ १०॥

श्रयः-प्रयम (वह के०) वध ते चतुप्पदादिक जीवने निर्दयपणे ता डना तर्ज्ञना करवी, बीजो बंध ते दोरडे करी गांढे बंधने बांधी मूकदां, त्रीजो विविवेद ते शरीर तथा चामडी तेनुं वेदवुं, एटजें कान बेदवा, ना सिका वींधवी, गलकंबल वेदवी, पुंवडाप्रमुखनुं कातरवुं. चोथो (श्रक्ष्तारे के०) श्रतिचार ते जनावरनी शक्ति जोया विना घणा चारनुं श्रारोपण क रवुं, पांचमो चचपाण एटले रीशवशें करीने चात पाणीनो विवेद करवो, ए सघला श्रतिचार प्रबल्ल कपायना चदयथी थाय परंतु कपाय विना श्रति चार न लागे, श्रावकें विनय शिखववाने माटें पुत्रादिकने पण श्राह्मेपस हितत्वें करी वध बंधादिकनुं श्राचरवुं. तिहां सकारण वधवंधनादिक कर वे करी श्रतिचार न होय, केम के तेमां परिणामे हितनी बुद्धि वे, तथा लाड करवाथी घणा श्रवण थाय अने ताडन करवाथी घणा ग्रण था य, माटें पुत्रने श्रने शिष्यने ताडवा,पण लाड करवां नहीं ॥ यतः ॥ लाल नाह्रह्वो दोपा,स्ताडनाह्रह्वो ग्रणाः ॥ तस्मात् पुत्रं च शिष्यं च,ताडयेन्न तु लालयेत् ॥१॥ ए पांच प्रकारें पहेला श्रणुव्रतने श्रतिचार वते जे कमे बांध्यं, ते निंडं बुं. तथेव तेमज श्रालोवुं बुं श्रयवा पडिक्कमे क्त्यादि पूर्ववत् ॥१०॥

इहां आवश्यकनी चूर्णीमध्ये तथा योगशास्त्रनी टीकाने विषे ए विधि कह्यों है, ते जेम के:- प्रथम तो श्रावकें बीहीतां रहेवुं, एटजे नय राख तांज रहेबुं, जे रखेने मुफने कोइ पण अतिचार जागे!

जेम पुत्रादिक तथा दासदासी प्रमुख कर्मकरादिकनी उपर एवी कूर ह ष्टि राखवी के जेथी, ते जय पामता थकाज रूडे मार्गे प्रवर्ते,इहां कर्मकरादि कमां त्रादिशब्दें करी पद्दी, अने दास प्रमुख द्दीपदजाति, तथा गोमहिष अश्वादिक ते चतुष्पदनी जाति, ए सर्वे लेवां. तथा कूर दृष्टिथीज जे वध बंधनादिक विना पण सर्वदा पोतपोतानां कार्य करतां रहे हे. तो तेने व धबंधनादिक न करवां, परंतु जो ते कूरदृष्टिथी वश न रहे रूडे मागें न प्रवर्ते, मर्यादामां न रहे, तेवारें कदापि सापेक्षपणे वधबंधादिक पण करे,पण अन्यथा न करे. कदापि जो ताडना करे,तो पण मर्मस्थानक मू कीने वेलडी तथा रासडी प्रमुखें करे. एक स्थानकें वे वार ताडना न करे, जो बांधे, तो पण लांबे दोरडे ढीली गांव देइ बांधे, केम के कदाचित् जो अधि प्रमुखनो उपइव थाय, तो तत्काल हूटी शके, एवां बांधे,जो आकरी गांव होय, तो तत्काल हूटी शके नहीं तथा अंग उपांगादिक सारी पवें फेरवी हेरवी शके, सुखसमाधियें फरी हरी शके एवा हूटा बांधे.

तथा व विद्वेदने विषे विचारवुं जे जोहिविकार गडगुंबडादिक विकारें वे दवुं पडे तो पण दयासिहतपणे प्रवर्ते, पण निर्दयता न राखे. तथा दि पदं चतुष्पदनी उपर नारवहन करवा विषे पोठीया गाडा अधोवाइ प्रमु खें आजीविका करवानुं तो श्रावकने मुख्यवृत्तियें वर्क्कवुंज कहेलुं हे,कार ण के जे नाडीकर्म ने ते तो घणादोषनुं घर ने, माटें एणे करी आजीवि का तो नज करवी, पण कदापि बीजी आजीविका न मखे, तेवारें नाडिक में करे, तोपण ते द्विपद मनुष्यादिक होय ते जेटलो जार पोतानी मेखें सुखें **उपाडीने** पोताना माथा उपर राखी शके तथा मस्तकथी हेवो उतारीने नू मियें मेली शके, तेमज तेने पूर्व के अटलो नार तहाराधी उपडशे? ते कहे के हा महारायी उपडरो तेटलो जार उपडावे पण अधिक जार उप डाववाथी दया रहे नही. तथा चतुष्पदनी उपर पण यथाशक्ति नार मूकवा योग्यहोय तेथी कांइक कणो जार जरे. तथा हलशकटादिकें बलद न चाले, गिलयो यइ पडे, तेवारें खेदें करी अन्न पाणीनो निपेध करे, कहे के तुं अ पराधकारी हो, वक्र हो, माटे ञ्चाजे तुक्तने जोजन नहीं ञ्चापी हुं! इत्या दिक वचन मात्र कहे पण तेम करे नहीं. कदाचित् तेम करवुं पडे तो पण नोजनने अवसरें तेने जमाडीने पढ़ी पोतें जमे, पण ते नूख्युं होय तिहां सुधी पोतें जमे नहीं. कदाचित् रोगादिकनी शांति यवाने अर्थें तेने चूल्युं राखवुं पडे, तोपण जेम पहेला अणुत्रतने दोष न लागे, तेम यत्न करे.

ए रीतें चोरी प्रमुखनो करनार महा अपराधकारी होय, तेने पण वध बंधादिक करवुं पडे,तो पण सापेक्ष्पणे करे,पण निर्दयपणे न करे,कह्यं हे के ॥ यतः ॥ वह मारण अप्रस्काण, दाण परधण विलोवणाईण ॥ सब जहन्न उदर्ज, दसगुणि इक्किसकयाणं ॥ १ ॥ तिबयरे पर्ण्यसम्य, गुणि सय सहस्स कोडिग्रणोय ॥ कोडा कोडिग्रणो वा, हुक्किविवागो बहुतरोवा ॥ १ ॥ नावार्थः— वध ते मार मारवो, जुतुं आल देवुं, परधन हरण करवुं, चोरी कराववी, ते सर्व, जघन्यथी दशग्रणा उदय आवे, अर्थात् जो एक वार कखुं होय, तो ते दशग्रणं थाय ॥ १ ॥ वली तेथी आकरे हेपें कखुं होय, तो शतग्रणं उदय आवे, तेथी वली तीव्रपणे कखुं होय तो सहस्र गुणुं उदय आवे, तेथी कोडीग्रणुं, तेथी कोडाकोडी ग्रणुं, एम एक वारनुं क खुं होय, तेनो बहुरीतें विपाक जोगववो पडे ॥ १ ॥

तथा पामा, बोकडा वगेरेनी जे उत्पत्ति हे ते बहु दोपनी हेतु हो, माटे महिप, बकरी प्रमुखनो संयह करवो नहीं. उपलक्ष्णधी कोषादिक ने वशें करी हिंसाना कारण एवा जे मंत्र, तंत्र, श्रोपधादिकना प्रयोग हे, ते पण वर्क्जवा. ए रीतें बीजा पण श्रतिचार इहां व्रतने विपे जाणवा.

श्रहींश्रां शिष्य श्राशंका करे हे, के इहां तो प्राणातिपातनुं व्रत हे, पण वध बंधादिक न्यतिचार केम कहो हो? त्यां श्राचार्य उत्तर कहे हे. के प्राणातिपात पञ्चरकाण करे यके मुख्यपणे जो विचारीयें तो श्रपेक्तारहित पणे ते वध बंधादिकनुं पञ्च रकाण श्रयुंज,कारण के ए पण प्राणातिपातना हेतु हे. इहां शिष्य कहे हे के, तेवारें तो वध बंधादिक करवे करी व्रतज जंग थाय पण श्रातिचार न थाय श्रने वली एथी तो नियमनुं पालनज न थयुं. एवी संजावना थाय हे?

तिहां ग्रह उत्तर कहे हे, के व्रतना बे प्रकार हे, एक अन्यंतर ह तिथी अने बीज़ं बाह्यहितथी. तेमां जेवारें कोधादिकने वज़ें अपेक्षा र हितपणे वधादिकने विषे प्रवर्ते तेथी कोई वारें ते जीव मरण पण पामे, तेवारें निरपेक्षपणे निर्दयपणे करीने अंतर्हित्तथी व्रतनो नंग थयो कहेवाय. कदापि हिंसाने अनावें बाह्यहित्तयें पाल्युं, तेवारें देशथी व्रतनंग थयुं क हेवाय. अने देशयी पाल्युं तेने अतिचारनुं आरोपण कहेवाय. ॥ तम्रकं ॥ श्लोक ॥ न मारयामीति कतव्रतस्य, विनेव मृत्युं कइहातिचारः॥ निगद्यते यः कुपितो वधादीन, करोत्यसौ स्यान्नियमेऽनपेकः ॥ १ ॥ मृत्योरना वान्नियमोस्ति तस्य, कोपाद्दयादीनतयानुन्त्रः ॥ देशस्य जंघादनुपालनाञ्च, पूज्या अतिचारमुदाहरंति ॥ १ ॥ नावार्थः—जीवने मारुं नहीं, एवं व्रत जेणें कखं हे, अने ते जीव मरण न पाम्यो, तेवारें तेने शा अतिचार कहीयें ? जे प्राणी कोधवशें वध बंधादिक करे, तेवारें व्रतनी अपेक् न र हे. अने जीव मरवाने अनावें नियम रह्यो पण तेनी उपर कोणें करीने दयादीण थयो, तेणे व्रतनंग थयो कहियें, देशथी नांगो अने देशथी पाल्युं तेने पूज्य जनो अतिचारज कहे हे.

अथवा अनानोगें सहसात्कारपणे अविचारवापणुं याय, तिहां अ नाजोग ते अनुपयोगपणें असावधानपणे अने सहसात्कार ते अवि मृ भ्यकारीपऐं ॥ यतः ॥ पुर्व अपातिकणं, तृढे पायिमम जं पुणो पासे ॥ न तरईतिय तेज, पायं सहसा करणमेयं ॥ १ ॥ ए व्रत जे हे, ते सघला व्रता दिक धर्मेनुं परम रहस्यनूत हे. कह्यं हे के ॥ यतः ॥ धन्नाणं रस्कन्ना, की रंति वश्ड जह नहेव हा। पढमवय रखण्जा, कीरंति वयाई सेसाई ॥ १॥ किं ताइ पढियाई, पयकोडीए पलालनूयाए ॥ जं इतियं न नायं, परस्स पी डा न कायवा ॥ २ ॥ किं सुरगिरिणो गुरुञ्जं, जलनिहिणो किं व हुक्त गंनीरं ॥ किं गयणात्र विसालं, कोय छहिंसा समोधम्मो ॥ ३ ॥ जावार्थः-ध नने राखवाने अर्थे जेम वाड करे है, तेम इहां पहेला व्रत राखवाने अ र्थे बीजा सघला व्रत ते वाडरूप जाणवां ॥ १ ॥ जेऐ एटलुं न जाण्युं जे परने पीडा न' करवी. तो तेणे शास्त्रोनां क्रोडो गमे पद ज्खां, तो पण ते सर्व तेने परालचूत जाणवां ॥ १ ॥ सुरगिरि जे मेरुपर्वत तथकी म होटुं ग्रुं ? समुज्यकी बीजुं गंनीर उंदुं ग्रुं ? आकाशयकी बीजो विस्तारवा लो पदार्थ कयो ? अहिंसारूप धर्मसमान बीजो महोटो धर्म कयो ?॥३॥ तथा श्रीतहास समुचयने विषे कह्यं हो॥ श्लोक ॥ सर्वे वेदास्तु तैर्ज़ा ताः, सर्वे यङ्गाश्च नारत ॥ सर्वतीर्यानिषेकाश्च, कता येः प्राणिनां दया ॥ १ ॥ महानारतादावि ॥ योदद्यात्कांचनं मेरुं, कृत्स्नां चैव वसुंधरां ॥ एकस्य जीवितं दद्या,न्न च तुल्यं युधिष्ठिर ॥२॥ इत्यादि ॥ तथा शतेषु जा यते ग्रूरः, सहस्रेषु च पंभितः॥ वक्ता शतसहस्रेषु, दाता नवति वा नवा ॥ ३॥ न रणे निर्जिते ग्रूरा, विद्यया न च पंक्तितः ॥ न वक्ता वाक्पटुत्वे

न, न दाता धनदायकः ॥ ४ ॥ इंड्याणां जये ग्रुरो, धर्म चरति पंमितः ॥ सत्यवादाश्रवेहका, दाता नृतानयप्रदः ॥ ५ ॥ नावार्थः-सघला वेद तो तेऐं ज्ञा स्वा यक यागादिक पण तेऐंज कस्वा, सवला तीर्थना अनिषेक पण तेणेज कहा, के जेणें सर्व प्राणी उपर दया राखी!॥ १॥ महाजारतने विषे कह्युं वे के, हे युधिष्ठिर! सुवर्णना मेरुनुं दान दीये, सक ल प्रथ्वीनुं दान दीये, ते सहुची वधारे ग्रुं है ? तो के जे एक जीवने जीवि तव्य आपे, अर्थात् ते जीवितदाननी बरोबर को पण दान आवेज न हीं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ तथा शतपुरुषने विषे शूरवीर तो एकज होय, अने हजार मनुष्यमां पंमित पण एकज होय, लाखोजनमां वाचाल पण एकज होय, अने दाता तो होय अने न पण होय ॥३॥ जे रण संयाममां जीत करे ते शूरवीर न कहीयें, विद्या जाएे ते पंमित न कहीयें, वचननी पटु ता वालाने वाचाल न किह्यें, धनना आपनारने दाता न कहीयें ॥ ४ ॥ पण जे इंड्यिने जीते, ते ग्रूरपुरुष कहीयें, धर्मन आदरे, ते पंमित कहि यें, सत्यवचननुं नाषण करें, तेने वक्ता कहीयें, अने जीवने अनयदान आपे, तेने दाता किह्यें ॥ ॥ अनयदाननो दातार तो तेनेज कहीयें के जे यूको जीख वगेरे कुइ जीवने इहवे नहीं, हणे नहीं. ते इतिहास समुच्चयादिकने विषे कहां हे के जे मंशमशकादि जीवने पाले, पुत्रनी परे तेमनुं रखोपुं करे, ते प्राणी, खर्गप्रत्यें जनारा जाणवा. एक विष्टानो कीडो, अने बीजो स्वर्गलोकने विषे देवतानो इंइ, ते बेहुने जीवितनी वांडा तो सरखीज होय हे, अने मरणनो जय पण बेहुने सरखोज होय हे, द याविना सघलाय धर्म निःफल जाएवा. केनी पेतें ? तो के पंचावि सा थक कमत तापसादिकनी परें. कह्यं हे के ॥ मय मंमणं व तुस, खंमणं व गयमक्जणं व सर्वेपि ॥ कासकुसुमं व वणगा,इञ्चं व वियल इमाइविणा ॥१॥ क्रपानदीमहातीरे, सर्वे धर्मास्तृणांकुराः ॥ तस्यां शोषमुपेतायां, कियन्नंदंति ते पुनः ॥ १ ॥ नावार्थः-(मय के०) मृतकने (मंमणंव के०) अलंकार पहेराववानी पेरें, तुस एटखे कुशकाने खांमवानी पेरें, (गयमक्कणं के॰) हाथीना स्नाननी पेरें, अर्थात् जेम हाथी नाइने रह्यो होय तो पण पाठो हतो तेमज याय. तथा कासना फूजनी पेरें, (वएगाइयंव के॰) अरख मां जे गावुं, तेनी पेरें, अर्थात् ए जेम विफल हे, तेम (इमाइविणा के॰)

ए एक दयाविना सघलुं (वियल के॰) विफल जाएवं ॥१॥ दया रूपी नदीना महोटा तीरने विषे समस्त धर्म, तृएना श्रंकूरा समान हे. अने ते रुपारूप नदी स्काये थके तो वली धर्मरूप तृएना श्रंकूरा क्यां सुधी रहे ? श्रर्थात नज रहे ॥ १॥

एम वतां पण कहे वे के यज्ञादिकने विषे हिंसा जे वे, ते देवपूजानी पेरें धर्म जाए। याय हे, एम वेदमां कह्यं हे. ते सर्व प्रलापमात्र जाएावुं. कारण के हिंसा तो सर्वत्र निंदित है. जो हिंसायकी धर्म है, एम क हियें तो विषमांथी अमृतनुं उपजवुं ? पाषाणनी नूमिकाथकी शीतलजल नुं निकलवुं ? अग्निना स्परीयकी शीतलता थवी ? सर्पना मुखयकी अमृत नो उद्गार ? खलपुरुषना मुखयकी रूडा पारका गुणनो उपचार थवो ? खीरसमुइना स्नेदल दूधमांथी पूरानुं निकलवुं ? कादवमांथी कर्पूरनो समूह निपज्ञ हुं ? इत्यादिक सर्ववातो कदापि केवारे देवसहायथी थाय तो पण हिंसायकी धर्मनो संनव याय नहीं. ॥ यतः ॥ अहिंसासंनवो धर्मः सहिंसातः, कथं नवेत् ॥ न तोयजानि पद्मानि, जायंते जातवेदसः ॥ ॥ १ ॥ नावार्थः-अहिंसायकी धर्म संनवे,धर्म हे, ते अहिंसायीज उत्पन्न थयो है, ते धर्म हिंसाथी केम थाय? कारण के जलथी कमल उत्पन्न थाय, पण ते अग्नियकी केम उत्पन्न थाय? हिंसा परदर्शनमां पण निषेधी हेः- ॥ यतः ॥ अग्निषोमीयमिति या, पश्वालंजनकारिका ॥ न सा प्रमाणं क्वातृणां, चामिका सा सतामिह ॥ १ ॥ यावंति पद्यरोमाणि, पद्यगात्रेषु नारत ॥ तावद्दर्षसहस्राणि, पच्यंते पश्चयातकः ॥१॥ श्रंधे तमसि मक्रंति, पशुनिर्येयजंत्यहो ॥ हिंसा नैव नवेदमीं, न नूतो न नविष्यति ॥ ३ ॥ नावार्थः-अग्निषोममां पश्चनी हिंसा करवी एम कहेनारी कारिका ज्ञाताज नने चम करनारी है ॥ १ ॥ जेटला पश्चना गात्रने विषे रोम हे,हे जारतः तेटला हजार वर्ष पग्रुघात करनार प्राणी नरकमां पचे हे ॥ २ ॥ पग्रुनी हिंसायें करी देवतानुं जे यजन करे हे, ते अंधतामिस्र नरकमां पडे हे. अने हिंसा तेज धर्म एम कोइ वेंकाणे होय नहिं. थयो पण नथी ने थाजे पण नहिं.

हवे यक्तने विषे ह्रेणेला प्राणी खर्गें जाय हे माटे यक्तने विषे हिंसा जे हे, ते दोष जणी न थाय? ए वचन जन्मत्तनां हे तेनी शी प्रतीति आवे? कारण के जीवने कुमरणें मारवो तिहां मारतां थकां ते जीव महा आर्च

ध्यान रोड्ध्याने मरीने स्वर्गने बदले डुर्गतियें जाय एवो संजव याय है. इहां धनपालपंनितनी कथा जे एज पुस्तकना त्रीजा नागमां आवेली है तिहां नोजराजाने प्रत्युत्तरना संबंधें यक्त आश्रयी उपदेश दीधो है ते नांचवो.

तथा श्रीहर्ष कियों पण यक्तने विषे हिंसा है ते दोषनी हेतु कही है, तथा वली नेषधमाहाकाव्यना बावीशमा सर्गना हहोंतरमा काव्यने विषे पण यक्तनेविषे हिंसानो निषेध कह्यो है. यक्तहिंसाने विषे रुड्शमी वि प्रनो हष्टांत कहे है. रुड्दन्तना पुत्रें यक्तने क्यों हाग बांध्यो है, ते हागने जातिस्मरण उपन्युं तेना जातिस्मरणनी वात साधुयें खावी कही, जे त हारो पिता जे रुड्शमी ते खा हाग धयो है, तेनो तुं वध करे है, ए तहारो पिता हतो, तेणे ए सरोवर कराव्युं, तेनी पाल उपर हक्तोंने रोपाव्यां, पही इहां वर्ष वर्ष प्रत्यें खजनो वध करीने यक्त करवो प्रवर्ताव्यो, तेथी ते रुड्शमी मरण पामीने हाग धयो है, एने ते पांच जवसुधी तो यङ्गने विषे इहां हण्यो है. हमणां ए हिंसा चप्तुं है, तेथी पुत्र प्रत्यें कहे है से हे पुत्र! तुं ग्रुं मुक्तने मारे हे हुं तहारो पिता हुं, जो प्रतीत न खावे, तो निशा नी देखाडुं? तेवार पही हागें घरमां जड़ने निधान दार्टी राखवानुं स्थानक देखाड्गुं. ते निधानने पामे थके प्रतीत उपनी, जैनधम मत्य करी जाएयो, बीजा जीव पण दयारूप धर्म पाम्या. तेमाटे सर्वथा हिंसा वर्क्जवी.

हवे ए प्रथमवत पालवानुं फल कहे हे. दयायकी महोटुं नीरोगपणुं पामीयें, कोइनुं हण्युं हणाय नहीं एवं खाङ्वानुं ख्रेश्वर्यपणुं प्राप्त थाय, स विधी ख्रिधक रूप पामीयें, निर्मलकीर्त्ति पामीयें, धन यौवन दीर्घायु पा मीयें, सर्व परिवार तेने वशवर्त्ती थाय, घणा पुत्र पौत्रादिक पामियें, तथा समस्त सचराचरमां विजय पामियें, ए निश्चें दयानां फल जाणवां.

हवे ए व्रतने श्रंगीकार न करे, श्रथवा श्रितचार लगाडे, तो ते पांग लो, ठूंठो, कोढीयो, काणो थाय, वामन थाय, कुष्टादि महोटा रोगवालों थाय, शोक, वियोग, श्रव्पायु पामे. इःख, दोर्नाग्य, इर्गत्यादिक पामे ॥ यतः ॥ पाणिवहे वटंता, नमंति नीमासु गप्नवसहीसु ॥ संसार मंमल ग या, नरग तिरिकासु जोणीसु ॥ १ ॥ नावार्थः—प्राणीना वधने विषे व र्नता एवा जीव संसार मंमलमां रह्या थका नयंकर गर्नरूप वसतिने विषे

नरक तिर्येचादिक योनिमां जमे वे ॥१॥ ए दशमी गायानो अर्थ कह्यो ॥१०॥ हवे ए प्राणातिपात व्रतने विषे हरिबल मान्नीनी कथा कहीये वैयें:-

रौप्य सुवर्णादिक लिक्सियें करी विराजमान एवं कंचनपुर नामें नगर है, तिहां वसंतसेन नामें राजा है. ते सर्व वैरी राजाना सैन्यने त्रास पमाडे एवो है. ते राजानी वसंतसेना नामें पटराणी है, ते रूपें करीने रुणिने जीते एवी है. ते राजा राणीने कांइ पुत्रादिक है नहीं तेमाटे मानतां, इ हतां हतां घर्णे मनोरथें गुणनुं पात्र एवी वसंतश्री एवे नामे एक पुत्री थइ ते केहेवी है ? तो के युवानजनना मनने उन्मादनी करनारी जाणीयें वसंतक्तुनी मूर्तिज होय नहीं! ते वसंतश्रीने योग्य एहवो वरराजा घ एं ए जुवे है पण मलतो नथी.

हवे एज नगरमां जड़क जावें हरिबल एवे नामें पाणीमां जाल नाख वामां निषुण एहवो माठी वसे हे. तेहने अनार्यमां शिरदार एहवी सत्या नामे नार्या हे परिणामे इष्ट हे. तेनाथी नित्य बीहितो उद्देग पामतो रहे हे. सुख तो स्वप्नमांहे पण नथी ॥ यतः ॥ कुत्रामवासः कुनरेंड्सेवा, कुनोजनं क्रोधमुखी च नार्या ॥ कन्याबहुत्वं च दरिष्ठता च, पड् जीवलो के नरकानि संति ॥१॥ एकदा ते माढीयें नदी कांठे एक मुनिने दीठो, ते ने देखीनें नमतो ह्वो. ते मुनियें पूठ्युं कांइ धर्म जाणे हे ? तेणें कहां ख कुलाचार ते धर्म हे ए हुं जाणुं हुं. उपरांत बीजो कोइ धर्म नथी. ते धर्म हुं एकायचिनें आराधुं हुं. तेवारें मुनि कहे के ते तो मात्र व्चनथी धर्म कहे हे, तेटलोज धर्म 'तुं माने हे, पण ए धर्म नथी. कुलधर्म ते तो सांजल. हे नइ ! जेहनो पिता डुर्नागी, डुराचारी डुर्विनीत दासपणुं इत्यादिकथी माहानिंदित एहवो हीणो कुलाचार सेवतो होय, ते दीकरो ढांमे नहीं ते द्यं जाएो हे ? नाना एवो कुलाचार ते धर्म न जाए। शर्म तो जीवदयाने कहीयें, जेमाटे जीवने राखवो. तेज धर्म, वांज्ञितनो आपनार कब्पवृक्त सरखो है. जे जीवने हणे है, ते निरंतर महा इरंत इःखनी श्रेणीने नो गवे हे. एक जीवदया ते अनेक इःख श्रेणिनी टालनारी अने अनेक सुख श्रेणीनी आपनारी हो. जो तुं इःखयकी उद्देग पाम्यो हो, अने इः ख टाजवा वांञ्चतो हो ? सुखपामवानी अनिजाषा राखतो हो. तो हे धीव र! हे गुणवंत! तुं जीवदया पालवानो उद्यम कर. ते वात सांनलीने धीवर प्रीति पाम्यो थको मुनिने कहेतो ह्वो के दया तेज सत्यधर्म व पण माह रं कुल माठीनुं वे माटे जेम रांकना घरने विषे जोजन न घटे, तेम धीवरना घरने विषे जीवदया केम घटे ? मुनि कहे वे के तुं सर्वथी ढांमी न शके,तो मात्र तहारी जालमां पहेलो मत्स्य जे पडे तेने तुं जीवतो मूकजे, ए टलो नियम रूडी रीतें पालीश,तो वडना खंकुरोने पाणी सिंचवाथी जेम वडनो विस्तार थाय, तेम व्रतरूप वृक्त पण रूडा जावरूप जलें सिंच्यो थको खनंत खतुल फलनो खापनार थाशे, ए नियम पालवो सुलन जाणी मा खीयें हर्षें करीने ते व्रत खंगीकार कखुं.

पढ़ी ते पोताना आत्माने कताथे मानता थको नदीना उंमा जलमां जाल नाखतो हवो. ते नाखतां वेंतज एक महोटो मत्स्य आवीने तेह नि यमनुं अतुल फल देखाडवा निमिनें जालमांहे पड्यो, तेवारें लोजना को नना समूहने रोकता एवा हरिबर्छे, जेवे ते मत्स्य जालमां आवी पड्यो, ते ज समयें पोताना नियमना राखवा माटें ते मत्स्यने कंतें एक कोडी वां धी दीधी, ने वली पाढ़ो जलमांहे नाखी दीधो. वली पाढ़ी जाल नाखी के तुरत तेज मत्स्य निर्नयपणे ते जालमां आव्यो, तेने पाढो जलमांहे नाग्वी दीधो, एम घणी वार तेनों तेज मत्स्य जालमां आवतो जोइ, तेणे ते स्था नक ढोडी दीधुं. अने पाढो वली बीजे वेकाणे जाल नाखवा लाग्यो, तो पण पाढो तेनो तेज मत्स्य जालमां श्राववा लाग्यो, एम करी वेका णां बदलतां बदलतां तेने सायंकाल थइ गयो. तो पण तेनो तेज मत्स्य श्राववा लाग्यो, परंतु तेने लगार पण पश्रात्ताप थयो नहिं. श्रने पोताना नियमनो हे दृढ आशय जेहने एहवा धीर धीवरें आपदामां पण धीरता न मूकी. सांक समयें ते मत्स्यने पाछी पाणीमां मूक्यो, तेवारें ते मत्स्य मनुष्यनी वाणीयें बोलतो हवो, के हे साहिसक ! ताहरे साहिसें करीने हुं तहारा उपर तुष्टमान थयों हुं, माटे वर माग. ते सांचली हरिबल वि. स्मय पामतो थको ते मत्स्यने कहेतो हवो के तुं मत्स्य थइने मुफने ज्ञुं आपीश ? ते कहे. तेवारें मत्स्य बोख्यों के, तुं मुक्तने मत्स्य म जाए, हुं ल वणसमुज्ञधिष्ठित देवता हुं, आईां समय विचारीने तहारा नियमनी मर्या दा में दीवी, कारण के घणा जन तो व्रत खेताज नथी अने केटलाएक खे हें, तो ल**इने पा**लता नथी, परंतु जे नियम लइने तेने बराबर पाले, एवा

ताहरा सरखा पुरुष तो घणाज उठा है. माटे आ तारा नियमनी हढता देखीने हुं तुष्टमान थयो हुं. तेथी तुं जे वरदान मागीश, ते हुं आपीश. तेवारें हरिबल हर्ष पामीने कहेतो हवो के जेवारें मने कांहि पण आपदा पड़े, तेवारें तत्काल तेमांथी मुफने तुं होडावजे. हुं ए वर मागुं हुं. वली तेवात तेणें अंगीकार करी वरदान आपी देवता अहक्य था गयो.

हवे ते हरिबल मत्स्यना अलाजधी पोतानी जार्याधी बीहितो धको न गरनी बहार कोइ देवकुलने विषे आवी रह्यो. अने त्यां विचारवा लाग्यो के महारे बे प्रकार शंका जरेला थया, तेमां एक तो हुं धीवर हुं ? बीज़ुं ते धीवर हतां मुने वहेलुं नियमनुं फल मब्युं ? ते केनी पेठें ? तो के जेम चक्री, प्रजातें शाल वावे, अने सांफे लुऐ। ? तेम मात्र एकज जीव उगा खाथी, मुफने देवतायें तुष्ट थइ वर आप्यो, तो जो हुं सर्व जीवनी दया पालुं, तो वली केटलुं फल प्राप्त थाय ?

माटे धन्यमां धन्य तेने वे के जे सर्व जीवने उगारता ह्हो ? छरे ! धि कार हजो मुजने, जे निरंतर जीवने हणुं बुं. जो कोइ उपायें महारी छा जीविकानो निर्वाह थाय तो सुकतनी नाश करनारी एवी हिंसाने विषज्ञ तानी परें हुं तत्काज बाहुं! जेणें छा जवने विषे धर्मनुं फज दीवुं वे, छने प्रकृतियें करी जड़क वे, तेवानुं कव्याण थाय वे ! हवे जेवामां एवी रीतें हरिबज चिंतवे वे तेवामां तिहां शुं थयुं ? ते कहे वे.

एकदा राजानी पुत्री गोंखने विषे बेठी हती, एवामां रूपें करीने जेणें इंड्ने जीत्यो हे एषा हरिबल एहवे नामें एक व्यवहारीयानो पुत्र हे ते गोंख नी नीचें चाव्यो जतो कुमरीयें दीठो. ते देखीने कुमरीने तेनी उपर राग उपन्यो. अने मनमां चिंतववा लागी के जो ए महारो नरतार थाय, तो मा हरां वांक्वित मनोरथ फले! एम विचारी तेणीयें पोतानो मनोगत नावा थे पत्रमां लखीने ते व्यवहारीयो ज्यां चाव्यो जाय हे, त्यां ते पत्र नाख्यो. पत्र पहतो देखीने ते व्यवहारी पुत्रें जेवामां उंचुं जोयुं, तो त्यां ते कन्या नी अने तेनी दृष्टियें दृष्टि मली. पही ते कन्याने कंदर्पनीस्त्री रितज जाणे होय निहं ? अथवा काम दीपाववानी जाणे औषधिज होय निहं ? एवी दीठी. पही परस्पर बेहुने राग उपन्यो अने मांहोमांहि संकेत पण कखो के कालिचौदशने दिवसें आपण बेहुयें मली दूर देशांतर जरूर जवुं. अने

कन्यायें कह्यं के दुं का तिचौदशनें दिवसें रातें देवीना दर्शननो मिष केइने देवीना मंदिरमां आवीश. तमें पण त्यां आगल जइने रहेजो. एम यथा स्थित वेराव कह्या. पढी कामरागें विनीत शिष्यनी पेवें जे कांइ कुमरीयें कह्युं ते मानीने पोताने घेर गयो. पढ़ी तेना संकेतनो दिवस अने इरिब ल मार्चीना नियमनो दिवस एकज आब्यो. ते दिवसें देहराने विषे चिंतायें पीडित थको माही जइ रह्यो है. हवे जे मति है ते कमेने अनुसारेंज आवे वे, तेमाटे ते व्यवहारी पुत्र हरिबल चिंतवे वे जे ए कन्या तो कामग्रहें करी घेली यह है, पण हुं कांइ तेवो घेलो नथी. वली स्त्री जातें प्रक्षन्न कार्य नी करनारी होय है, अने रात्रि है ते पण पाप कार्यनी सहायक है. व ली आगल मुने सुख थारो, ते कोणें दीतुं हे ? पण हमणां तो हुं अपरा धनो करनार थाउं! अने वली मुने माबापनो वियोग पण थाय? तेमज राजाने खबर पड़े, तो मने मारी पण नाखे ? एवी आशंका उपनी तेथी जवानो अनिलाप तो तेने घणो हतो, पण मनमां नय आणी घेरज बे सी रह्यो, गयो नहिं. जाते विणक है, माटे बीकए है ॥ यतः ॥ स्त्रीजा तौ दांनिकता, नाजुकता नूयसी विणग्जातौ ॥ रोषः क्त्रियजातौ, दिज जातौ स्यात् पुनर्लोनः ॥ १ ॥ नावार्थः-स्त्री जातने विषे कपटनाव घणो होय, विणकने नय घणो होय, क्तियने रोप घणो होय अने ब्राह्मणने विषतोज घणो होय ॥१॥ जे घणो बीकण होय ते इह लोकनां सुख जो गवी न शके, परलोकें आत्मानुं हित पण करी न शके,तेमज एवं नाग्य ए नुं किहांथी होय ? जेहनुं पूर्ण नाग्य हुशे तथा ते कन्या साथें पूर्वजन्मनो जेने संबंध ह्यो ते ए कन्याने परणशे ? हवे ते कन्या पोतानुं कार्य साधवा निमिनें मा संघातें कारमो कलह करीने जुदी रही. पठी ते कन्या, संकेत ने दिवसें जातजातनां रत्न, ञ्चानरण, वस्त्र इत्यादिक सारी सारी वस्तु ल इ,घोडा जपर बेसीने दरवाजे आवी अने प्रथम दरवानने मुिका रह्न आ पी पोल उघडावी कालिकादेवीने मंदिरें गइ. पढी निर्विघ्नपणे दर्ष पामती हरिबलने बोलावती हवी के, कोइ पुष्यवंत एहवो हरिबल नामें इहां हे? देवीनी परें दिव्य अलंकारें नूषित अने तुरंगें बेठी एवी कन्याना अमृत सरिखां वचन कानमांही पड्यां, ते सांजलीने माही हर्ष पाम्यो, अने पो तानी स्त्रीची छहेग पामेलो एहवो ते हरिबल विस्मयपूर्वक हर्षित चित्तें

देहरामांहि रह्यो थकोज ते कन्याना संतोष निमिन्तें हुंकार एवो शब्द बो लतो हवो. ते हुंकार सांजलीने ते कन्या बोली के वेहला तइयार थई आ वो, आज देशांतर जवानो आपण बेहुनो मनोरथ फत्यो. हवे हरिबलें नि श्रय कस्यो के माहरे नामें कोई बीजो हरिबल हशे, तेनी साथें संकेत है, पण वगर प्रयासें स्त्री मली ने मुफने ते प्रीतियें करीने तेहे है, तो हुं शा माटे तेनी संघातें न जाउं? पुण्य उद्यथी थोग बन्यो है? एहवुं विचारी देहरामांहिथी निकली ते कन्यना मुख आगल थईने आगल चालतो हवो. हवे हरिबलें चिंतव्युं जे ए सर्व एक जीवनी हिंसा न करवी, तेना नियम वुं फल है, एहवुं जाणीने निर्वाह माटे जे हिंसा करतो हतो तेने हांमतो हवो. कोईक रांकने जेवारें राज्य मले तेवारें ते जीख मागवानुं ठीकरुं जेम हांमी दीये तेम ते पण तेनी माहलां पकडवानी जाल तिहांज हांमतो हवो.

हवे ते हरिबलने नागो तथा वाहन रहित देखीने ते कन्याने शंका उप नी, तेथी ते कुमरी हरिबलने पूछती हवी, के तुं आम केम हो ? कोणे त हारी पासेंची वस्त्र तथा वाहन अपहलां हे ? ते सांचलीने माही विचारतो ह्वो के माहरं इःकम्मे आजज अपह्खुं माटे बोलवुं निहं. एवं मनमां चिं तवीने ते रूडी बुद्धिनो धणी हरिबल, ते कुमरी प्रत्यें उत्तरमां हुंकारमात्र ज करतो ह्वो. तेवारें ते कन्यायें एह्वोज निश्रय कस्रो के एए। सर्व इ व्य खोयुं देखाय हे, माटे तेहनो खेद करीने हुंकार मात्रज उत्तर करे हे. एह्वं विचारीने रूडां वस्त्र, अलंकार, तेने पेहेरवाने आपती ह्वी. वली कहेती हवी के कीइची गए। न शकाय, एटझुं इच्च महारीपासें हे, माटे तुं फिकर करीश निहं आपणुं वांतित सिद्ध यशे. तते धने माह्यो होय ते जेम हिएं खप्न न संजारे, तेम तुं खेद न संजार. एम कहीने हरिबलनी साथें विनोद माटे प्रेमरसनी वार्ता करवा मांनी. ते कन्या जे कहे वे,ते हरिबल सांजलीने विचारे हे जे हमणां तो सर्वत्र एक हुंकारज फलदाथी बे. एवं चिंतवीने फरी फरीने ते एक ढुंकार मात्रज उत्तर देतो हवो. तेवारें शंका पामती एवी कुमरी विचारे हे, जे कांइ जणातुं नथी के हुं ए अहंकारी वे, जे एक ढुंकारज करे वे !!! ते ढुंकार पण वली नावो थको वेगलो रही बोले हे ! हुं कांइ महारी उपर कोच्यो हुने ! झ्यामाटे महारी साहमुं पण जोतो नथी. वली ते कन्या एम पण विचारे हे,जे. आ उदत गतियें

चाले है, माटे रखे ने हरिबजने हेकाएों कोइबीजो तो न होय ? एहवी शं कानी व्यथायें पीडाणी थकी जेवे आगल चाले हे, तेवामां चंइमानो उट य थयो, तेवारें पासें जइने जोयुं तो वांज्ञित वरथकी अन्य पुरुष दीवो, त्यारें अति हाहाकार करती हवी,जेम कोइने आकरो वजनो घा वागे ने व्यथा पामे,तेम ते कुमरी इःख पामती वृती विचारे वे के धिर् धिर् होजो विधाताने के जेणे बेहुयकी मने च्रष्टकरी! हवे हुं कादवमां खूतेला हा थीनी पेरें थई बुं ॥ यतः ॥ निदाघे दाहार्तः प्रचरतरतृष्णातरितः, सरः पूर्ण दृष्टा त्वरितमुपयातः करिवरः ॥ तथा पंके ममस्तटनिकटवर्त्तिन्यपि यथा,न तीरं नो नीरं हयमपि विनष्ठं विधिवशात् ॥ १ ॥ नावार्यः - उष्ण कालने विषे दाहें पीड्यो अत्यंत तृष्णायें आकुल एवा कोइ हाथीयें पा णीनुं नरेलुं सरोवर दीतुं, तेवारं उतावलो तेमां पेतो, अने कादवमांहे खू तो, तेने कांंं पण समीपवर्ची है, अने पाणी पण पासें है, तथापि ते हाथी कादवमां पड्यो थको पाणी पण न पाम्यो, अने कांगे पण न पा म्यो, कमेने वहाँ बेहुथकी च्रष्ट थयो ॥४॥ तेम मने पण माबापनो विरह, राज्य लक्कीनुं वांमवुं, अने लोक विरुदादिकने आचरवे करीने पूर्व हस्ती समान थयुं. वली मने मिणने ठेकाणें माटी हाथ आवी, ए फल सर्व मु कने खर्डंदपणानुं थयुं! माटे पुरुष अथवा स्त्री जे कोइ खर्डंदाचारी होय, तेहने आवां फल मले हे! तेमां पण स्त्री जातिने तो विशेषें फल मले, ते में कखुं, माटे मुक्तने डुर्बिदनी धणीयाणीने धिकार हे जे वली पहेलांज में एने नागो निर्धनीयो जाएयो तो पण अन्य हे एम जाएयो नहिं, हवे मा हरी शी गति थाशे ! अरे हुं जीवितपर्यंत खेदनुं कारण थइ! अरे एनाथी जो हुं मुइ होत तो सारुं यात ॥ यतः ॥ इर्विध इर्नग इष्कुलइएनिष्ठादिद यितसंयोगात् ॥ नित्यं जीवन्मरणात्,श्रेयःकरणं सकन्मरणम् ॥१॥ इवे ते कन्या अत्यंत आर्त्तपीडित मरवुं वांञ्चती मूढपणे करी मार्गमां अचेतन यइ पडी. मूर्जा उत्था पढी धरतीयें आजोटती हवी.

इंहां हरिबंत चिंतवे हे,जे एनी साथें गृहवासादिकनी आशा करवी ते फोक ट हे, अने तेतो मुफने देखीने अग्निमां पड्यानी पेहें यह! हवे इहां मारे शुं क र हुं? जो देवता, महारा व्रत नियमना फलयकी माहरुं सान्निध्य करे,तो कार्य बने, एम मनमांहि, चिंतवे हे एटले कुमरी विचारवा लागी जे गया पुरुषनो शो शोचकरवो ? पोतानी प्रशंसा करवी, एह्यी पोतानो अर्थ बगहें, तेमाटे जे मूर्ष होय ते शोचना करे ॥ यतः ॥ गतं न शोचामि कतं न मन्ये ॥ एटला माटे हवे तो एहज नरतार देवें आप्यो ! एहनेज विशेष प्रकारें जोठं, जे ए कोण हे, एनी शी जाति हे ? शुं एतुं सक्ष्य हे ? अने ते तो जेगयो तेहने हे काणे एहज आगल नाग्यवंत यशे अयवा हुंज मंदनाग्यवान हो श्श, जे ए हनी पूर्वे चाली, पूर्वे कांइ धाखुं जोयुं नहीं. एढलामाटे एहने पूर्वीने निर्णय तो करं ? एम जेवामां विचारे हे, तेवामां आकाशें देववाणी यह के, हे कुमरी ! जोतुं समृदिने इन्जती हो तो तुं एने वरजे, ताहरो अने एनो बेहुनो शहीटो उदय यशे अने ताहरो महोटो नाग्य फल्युं माटे तुं एहने अंगीकार कर. एहवी आकाशयी देवतानी वाणी सांनलीने हृदयने विषे आनंति याचना कर ती ह्वी, तो पण शीवपणे जइ रात्रिने विषे जलतुं स्थानक शोधी पाणी लावीने अतिशयपणे पीवरावतो ह्वो. प्रीतिना वशें जे कार्य कटें निपज तुं होय, तो पण ते कार्य करतां कप्र जणाय नहीं.

द्वे कन्या विचारे हे जे रात्रिनी वेलायें श्रंधारामां श्रजाणे मार्गे जर्ने तु रत पाणी लाब्यो, वार पण न लागी, तेथी ए पुरुप विलष्ट,पराक्रमी,श्रने साहिसक देखाय हे! एहवा कुमरीयें निश्चय कखो, हरिवलें पण जाण्युं जे हवे कार्य निपजज़े! एम वेहुं जण मार्गे विचार करे हे. त्यां प्रनात थ युं, एहवे जाणीये सूर्य पण वेनो स्नेह जोवामाटे वहेलोज उग्यो होय निहं? तथा वली जाणीयें वेहुनी प्रीति वधारवानेज उदय थयो होय निहं? हवे ते कन्या प्रनात काल थयो एटले हरिवलनुं श्रत्यंत रूप देखीने सुप्रसन्न थर, वारंवार हरिवलनां रूप सोनाग्य श्रतिशय जोइने केहेती हवी के हे सुनग! हवे श्रवसर थयो श्रा लग्न वेला हे,एटलामाटे मारुं पाणिग्रहण करो. पूर्व में निर्धार कखो हतो, ते श्रवसर हमणा थयो हे. हवे हरिवल विचारे हे जे श्रहो! नियमनो महिमा केहवो हो! एम विचारी हर्षसहित ते कन्याने गांधवे विवाहें करी हिर जेम लक्क्षीने वरे, तेम परणतो हवो. तेहज दिव सथी हिरवलने पुण्यें लक्क्षीनो उदय थयो.

हवे आगल जातां कोइ गाम आव्युं, तेवारें ते कन्याने वचने याम म

ध्ये जइने लक्क्णवंतो एहवो घोडो लीधो, अने दास दासी प्रमुख सर्व नवां माणस राख्यां. उते इव्यें कोण शरीरने क्वेश उपजावे ? पठी दास्यादिक स हित चालतां बहु देश उलंघतां उलंघतां अनुक्रमें लक्कीयें करीने विशाल एह वुं विशालपुर नगर आव्युं,एहवे रूडे शकुनें नगरमांहि प्रवेश कस्बो,एटजे एक व्यहारियो मत्यो. तेवारें हरिबक्तें तेनी पासेची सात जूमिनो आवास नाडे लीधो, ते मध्ये रूडे मुहूर्ने वास कर्छो, तिहां सुखें रहें तो हवो अने क न्याने इव्यें करी सर्व घरनी सामग्री नवी करतो हवो. हवे हिशल विचारे वे जे दुं नीच मावी किहां अने पुख्यवंती ए कन्या किहां ? वली आ धननी सामयी किहां ? तथा हुं निर्धन किहां ? पण ए सर्व मुक्तने दैवना योगथी बन्युं हे,तो हवे एहवी लक्की पामीने हुं स्यामाटे लक्कीनुं फल न लहुं? एह्वं विचारीने दीन इःखीजनने दान देतो ह्वो तथा लक्कीने नोगवतो हवो, तेणे करी तेनुं अतिशय सोनाग्यादिक यश विस्तरतो हवो. नगरने विषे एहवी वार्ता विस्तरी के कोइ एक परदेशी राजपुत्र आव्यो हे,ते अस्ख लित दान आपे हे, माहा गुणवंत हे, उदार चित्तनो हे, दानथकी हुं न थाय ? ॥ यतः ॥ पात्रे धर्मनिबंधनं परजने प्रोद्यद्याख्यापकं, मित्रे प्रीति विवर्धनं रिपुजने वैरापहारक्तमं ॥ जृत्ये जिक्तजरावहं नरपतौ सन्मान पूजाप्रदं, नद्वादों च यशस्करं वितरणं न काप्यहो निःफलं ॥ १ ॥ नावार्थः-दान जे हे, ते पात्रने दीधुं थकुं धर्मनुं कारण थाय हे, पा

नाक्य निवास के है, ते पात्रने दीधुं थकुं धर्मनुं कारण थाय है, पा त्रविना अन्य जनने दीधुं थकुं दयानुं सूचक थाय है,मित्रने देवाथी प्रीति वधारवानुं हेतु थाय है,शत्रुने दीधाथी वेरनो अपहार करनारुं थाय है,चा करने दीधाथी ते निक्त करे है, राजाने दीधाथी निला मान पूजा सत्कार नुं आपनारुं थाय है, नृह प्रमुखने देवाथी यशोवादनुं करनारुं थाय है, माटे दान दीधुं ते क्यांहि पण निःफल थतुं नथी ॥ १ ॥

ए वात राजायें सांजलीने सजामध्यें महोटा बहुमाने तेडीने, बहु स नमान दइने, पोतानी पासें बेंसारी गोष्टि करी. हरिबल ते दिवसथी मां मीने नित्य राजानी सेवा करतो हवो. जेहने पुष्प पांशरुं होय, तेने सर्व पांशरुंज हे. एटला माटे हरिबलने राजायें रूडो प्रसाद कह्यो. हरिबलने ते राजा कहेवो थयो ? तो के जेवी कामधेनु होय, तेवो थयो.

हवे हरिब ें विचाखुं जे राजा साथें नवी प्रीति थइ, एटला माटें रा

जाने जमाडवो जोइयें,एहवुं विचारी घणे बहुमाने राजाने पोताने घेर तेडीने घणी निक्तयें जमाडतो हवो. राजा जमतां जमतां पकान्नादि पीरसती एवी हरिवजनी जार्या वसंतश्रीने देखीने कामातुर थको चिंतवे हे,के शीघ ए ह रिवजने हणुं तो ए स्त्री महारे हाथ खावे. धिकार हे कामी पुरुषने !

हवे एह्वा कामातुर थयेला राजाने प्रधान पण वारतो नथी, उलटो राजानो अनिप्राय देखीने ईर्ष्यायें राजाने प्रेरतो हवो. माटे धिकार हे ते प्र धानने के जे राजाने अनर्थनी खाणमां नाखे हे ? ॥ यतः ॥ सर्वत्र सुल ना राजन,पुमांसः प्रियवादिनः ॥ अप्रियस्य तुपय्यस्य, वक्ता श्रोता च इर्ल नः ॥ १ ॥ नावार्थः—हे राजन् ! मीठा वचनना बोलनारा पुरुष मलवा तो सर्वत्र सुलनज हे, पण कटुक वचनना कहेनारा रोगीने पय्यसा कहे नारानी पेरें तथा सांनलनारा एवा मलवा इर्लन हे.

ह्वे प्रधाननी बुद्धियें हरिबलने मारवा निमित्तें राजा बोख्यो.माहरे वि वाह महोत्सव उत्कृष्ट मांमवो हे ? एटला माटे एवो कोइ सत्त्ववंत हे जे सर्व परिवारसहित विजीपणने लंकायें जड़ने तेडी लावे. एहवो राजानो अघट तो आदेश सांजलीने सर्व नीचुं मुख करी रह्या, पण कोइयें राजा सामुं न जोयुं, तेवारें कपटनो नंमार एहवो प्रधान बोव्यो, के हे राजन! ताहरा सेवक केवा है जे स्वामीनो आदेश पामी असमर्थ थका नीचुं मुख करी रह्या हे ? पण कोइ साहमुंज जोता नथी,पण हुं जाएं हुं जे साहसिकमां शिरोमणि एवो एक हरिबंज हे, बीजो कोई नथी. ए तमारुं कार्य अवस्य करहो ? ए तमारो मानीतो हे,तमें पण एने मानो हो ते सांचलीने राजायें हरिबल साहमुं जोइने कद्यं, तेवारें हरिबलें ज़क्कायें करीने हा कही, जे माटे लङ्का ने ते महोटी वात ने. लङ्कायें पुरुष विषम कार्य होय ते पण श्रंगीकार करेज. ज़्जायें मरवुं पण कबुज़ करे. हवे ते वात हरिबर्जे वसंतश्री ने संज्ञावी. ते वसंतश्री सांज्ञाने विषादधरती, राजानुं इष्ट चित्र जाए . ती हरिबलने वबको देती हवी. के हे स्वामी! राजाने घेर तेड्याथी तुमने केवो अनर्थ थयो ? तेणे तुमने हणवाने अर्थे ए अनर्थ मांड्यो हे,एटलामाटे तमें विचाखाविना जतावल करीने हा केम कही ? अणविचाखा कामथी पतं गीयानी पेवे तमे अनर्थ पामशो ॥ यतः ॥ सहसा विद्धीत न क्रिया, अविवे कः परमापदां पदं ॥ वृणुते हि विमृश्यकारिणं, ग्रुणञ्जब्धाः स्वयमेव संपदः ॥

नावार्थः — विवेक रहित पुरुष जो अकस्मात् उतावलो थइ कार्य करे हो, तो अत्यंत आपदानुं स्थानक पामें हो. जे निश्चें विचार करीने करे हो, ते पुरुषने गुणनी लोजी एवी जे संपदान ते पोतानी मेलेंज वरे हो ॥१॥ ए दाहिएथ शा कामनुं! ए लक्का पण शा कामनी! जेथी पोतानो अर्थ विणसे? हजी कांइ बगड्युं नथी. कांइक मिप करीने राजाने उत्तर आपो. एवी वसंत श्रीना मुखर्थी वात सांजलीने हरिबल कहे हे के हे प्राणप्रिये! साहिसक पुरुषें जे प्रतिक्वा करी, ते पाही न फरे, प्राण जाय तो जाने, पण प्रतिक्वा जंग न करे चंइमाने आपदा पड़े हे तो पण ते मृगनुं लांहन नथी हांमतो? ॥ यतः ॥ अलसायंतेण विस्त, क्रणेण जें अस्तरा समुझविया ॥ ते पश्चर टंकणकरी, अवनदुं अन्नहा हुंति ॥१॥ हिक्क उसीसं अह हो, उ बंधणं चय उ सबहा लही ॥ पहिचन्न पालणेस, पुरिसाणं जं होइ तं होउ ॥ १॥

नावार्थः – नला सक्जन सत्पुरुषें तो जे पोताना मुखर्था अक्रर उच्चा बोव्या होय, ते अक्तर पञ्चरनी उपर टांकेला सरखा थया ते अन्यथा वी जा अक्रर न थाय ॥ १ ॥ चाहो तो मस्तक होदा छं, चाहो तो वंधनमां प डो अथवा सर्वया तक्कीनो नाश याउं जेम यावुं होय तेम जलें याउं, पण अंगीकार करेजी वात ते फरे नहीं. जे अंगीकार करीने निवीह न करे, ते कायर पुरुष जाएवा. तेहनो जगतमां अपयश हे, एटला माटे ए कार्यने छार्थे अवस्य जवुं पड़ज़े, जे यनार होय ते यार्ड. मुक्तने महारी पोतानी तो कांइ चिंता नथी, पण ताहारी चिंता रहे हे, जेंम सिंह हर णीने हरे, तेम राजा तुफने रखेने हरे ? ए चिंता है. एहवी वाणी सांच लीने वसंतश्री हर्ष पामीने जरतानुं उत्तमपणुं निर्धारती हवी. अने विर हाकुलयकी गदगद वाए।ियं एम कहेती हवी जे तमने पंथने विषे कव्या ण थार्ज. कार्य करीने वहेला आवो. माहरी चिंता राखशो नहीं. उत्तम स्त्री जीव जाय, तो जवादे, पण पोतानुं शील राखवाने सर्वथा माहीज होय, परंतु एक तमने हुं कहुं हुं, जे तमें पोतानुं जीवितव्य राखजो. अ विचाखुं कार्य करवाथी पतंगनी पेतें मरवुं नही. कह्यं ते के ॥ यतः ॥ जीवन्ज्ञाख्यवाप्नोति, जीवन्पुखं करोति च ॥ मृतस्वदेहनाशस्य, धर्माद्यु परमस्तथा ॥ १ ॥ नावार्थः-जीवतो पुरुष कल्याण पामे, जीवतो जीव पु एय करे अने मरण पाम्या पढ़ी शरीरनों नाश याय तेम धर्मथी पण वेगलों

थाय ॥ १ ॥ हे प्राणनाय ! माह्या पुरुषने स्त्रीनी शीखामण शी ! पण स्नेहें करीने घेजीथकी रहेवातुं नथी तेणें करीने हुं जेम तेम कहुं हुं.

स्नेहवती एवी नोली स्त्रीनी अमृतसरखी वाणी घणी वार पीने हिर बल,दक्तिणदिशायें जतो हवो. साथें एक सत्यरूप मित्रज हे,निःसंगीनी परे याम, देश तथा विकट अटवी वगेरे सर्वने मूकतो समुइने तटें आव्यो,स मुड् अति बीहामणो देखीने मनमांहि चिंतचतो ह्वो, जे एह्वो समुड् के म उलंघारो ? केम लंकायें जवारो ! नाव तो इहां कोइ हे नहिं अने कार्य कचा वगर पाढो पण केम वलुं! माटें हुं धीवर हतो तेमांथी अटली म होटी पदवी महोटुं स्थान पमाडवानो सान्निध्यकारी देवता थयो हे. मा हरुं माठीपणुं जेणें हखुं हे, ते देवताज मुक्तने लंकायें पहोंचाडज़े ! एवी रीतें हरिबल समुइना समागमें क्लोक वार विचारमांही पड्यो, जे हवे ग्रं करवुं! एवामां धैर्य अवलंबन करीने चिंतवतो ह्वो के हे जीव! कायरता करवी, ते तुफने घटे निहं! एहवुं विचारीने जे मरुं बुं के जीवुं बुं! जे थ नार होय ते थार्ड, मरवुं एकज वार हे. जे अंगीकार कख़ं कार्य, ते न थ ये मरवुंज रूडुं! एहवुं निर्धारीने जतावलो समुइमां जंपापात करतो हवो. जेट ले जंपा दीधी तेटले समुड्ाधिष्टित देव तिहां पुर्वनी परें वरदाननो खेंच्यो यको त्रावी प्रणाम करीने कहेवा लाग्यों के मुक्तने तहारा नियमनुं फल तो विसर्धं हतुं, पण निधाननी परें आपदायें हुं मारी मेलेंज तुक्तने सहाय करीश! ए व चने तुतो थको तुं कहे ते करवा तेयार डुं. तेवारें हरिबलें कह्यं. मुजने लंकायें मु कवो अंगीकार कखायीज कार्यनिवाद याय. पढी हिर सरखो हरिबल अ ने कालिनाग सरखो देवता, ते महोटा मत्स्यनुं रूप करी वांसा उपर हरिबलने बेसारीने समुइमार्गे चाल्यो, ते समुइपितयें पवनना प्रेखा वा हाणनी पेवें योडी वारमां लंकाना उद्यानमां जइ मूक्यो, ते हरिवल यो ड़ीक वार मध्यें विद्याधरनुं वन, सर्व ऋतुनां फूल, वृक्क वगेरेने जोतो वा म ठाम फरतो फरतो सुवर्णमय लंकामांहे प्रवेश करतो ह्वो. ते लंका न गरीनी शोचाने जोतो यको लंकानगरीनां कौतुक जोतो जोतो तृप्तिज पा म्यो नहिं. एवामां कोइक शूनुं कनकनुं चुवन खाव्युं,ते देखीने आश्रर्य पा मतो हवो ते ज्ञवन केहवुं हे ? तो के किहां एक तो मेरुसरखा अण घड्या सोनाना ढगला पड्या है, किहां एक टेकरा जेवा सोनेयाना ढगला हे,दा

णाना ढगलानी पेवें किहांक मोतीना ढगला वे, चणोवीना ढगलानी पेवें किद्दां एक परवालाना ढगला,खडीना ढेफाना ढगलानी पेवें किद्दांएक स्फ टिक रह्मनां ढगला, लीला घांसना ढगलानी पेतें किहांक नील रह्मना ढग ला, जांबुफलना ढगलानी पेतें किहांक रिष्ठ रत्नना ढगला, बोरना ढगला नी पेतें किहांक रातामाणिक्यना ढगला, काचना कटकाना ढगलानी पेतें किहांक हीराना ढगला, बीजा पण विविधप्रकारना मिणना ढगला, कांक रानी पेतें घणा पड्या हे. लाकडां जेम बालवाने माटें खडकी मूक्यां हो य तेम बावनाचंदनना ढगलाने ढगला खडकी मूक्या हे, तेऐं करीने सु गंधमय हे, बहु मूख्यवान वस्त्रना गांहडा, देवडण्ये वस्त्रना गांहडा बांधी मू क्या है, जाडा कीणा रत्न कंबल प्रमुख अनेक जातिनां उननां वस्त्रना गांवडा बांधी मुक्या हे,वली माटीना वासणनी पेहें मणिना सुवर्णना नाजन नी उत्रेडो खडकी मूकियो है. बीजा पण घणा घरने योग्य आसन सङ्घादिक हे, एहवा पदार्थी घरने विषे देखीने विस्मय पामतो हवो. एहवुं क्रि समृद्धि सहित घर ग्रुनुं केम हे ? एम विचारतो घरना उरडामांहि पेहो. तिहां जेम कमल करमाणुं होय, तेम सौनाग्यादिक गुऐं सहित एहवी स्वरूपवंती नवयौवना कन्या मुइ सरखी पडी देखीने, विस्मय पामीने चिंतवतो हवी. के अरे ! दैवनी गति कोण जाणे !!! घर तो आ ऋियें करी संपूर्ण हे ने कन्या एकजी शब सरखीज है. ते देखीने कांइक खेद धरतो थको एक तुंबडुं अमृतें नहुं देखीने विस्मय पाम्यो. तेमांथी अमृत जङ् ते कन्याना सर्वे शरीरें सिंचतो ह्वो. जेटले अमृतना ढांटानो स्पर्श तेना शरीरें थयो, तेज वेलायें जेम उंघमांहिषी उठी बेठी षाय,तेम ते कन्या उठी बेठी षइ. अने जेटलामां जुवे हे, तेटलामां तो तेणे इरिवलने दीहो, तेवारें प्रणाम करी स्नेहने वधारती एहवी वाणीयें करीने बोजावती हवी. के हे उत्तम! ताहरा उत्तमपणानो में निश्चय क्खो, जे तें मुफ्रने उपगार कखो, तेणें करीने हुं जाएं बुं जे तुं उत्तम बो तो पण तुं कोण बो? केम इहां आव्यों हो ? किहां रहे हे ? ते कहे. हवे हरिबल कहे हे के विशाला न गरीनो मदनवेग राजा वे, तेहनो हुं सेवक हुं. माहरुं नाम हरिबल वे, राजाने ख्रति वल्लच हुं. लंकानगरीनो राजा जे विजीषण वे, तेने नोतर वाने अर्थे मुफने मोकत्यो हे. अहिंसाधमे प्रनावें देवतायें मत्स्यरूप धा

रण करीने मुंफने इहां मूक्यों हे. हवे यथास्थित तुं ताहरुं वृत्तांत कहे. ते सांजलीने हर्ष पामी थकी, ते कन्या पोतातुं वृत्तांत कहेती हवी.

विजीषण राजानो माली पुष्पबटुक एहवे नामें माहरो पिता है परि णामें हीणो हे, हीणा कामनो करनारो हे. कुसुमश्री एवं मारुं नाम हे विषधरना विषनी हरनार एवा विषधरना मिण जेवी मने जोइने अन्यदा म हारा पितायें कोइएक सामुड्किना जाएने माहारां तक्रुएने मेले पूर्व्यं, के आने केहवो नरतार थाज़े ? त्यारे तेणें कह्यं के एहनो नरतार राजा थवों जो इयें. ते सांजलीने राज्यनो लोजी थको बोकडा सरखो ते मूर्ख मुक्तने परणवा **उजमाल थयो, लोनें करी अंध एवो जीव ग्रुं अनर्थ न करें?**॥ यतः ॥ रितं धा दीहंधा, जचंधा मायमाण कोवंधा॥कामंधा लोहंधा, इमे कमेणं विसेसं धा ॥१॥ नावार्थः-रात्रिञ्चंध, दिवसञ्चंध, जात्यंध, क्रोधांध, मायाञ्चंध, मान श्रंध है, ए पांच थकी कामांध श्रने लोजांध ते विशेषांध जाएवा ॥१॥ माटें एह्युं तेनुं इष्ट कर्म जाए। माहरी मा वगेरे सर्व खजन परिजन आकरो चहेग पाम्यां हे, ते सर्वजनोयें मारा पितानो जेम पथिक, स्मशान हुक्ते वेगलो करें तेम तेनो त्याग कर्षो हे. ते चंमाज कर्मनो करनार चंमाजनी पेहें नित्यें मुक्तने इःख दें हे. अति पापकारी एहवो ते, विद्यायें करी इहां घर करीने रह्यो है. जे वारें ते अनार्य कोइ कार्यने अर्थें बाहिर जायने,तेवारें मुफने मूइ सरखी करीने जाय है. आव्या पही अमृत हांटीने साजी करे हे, ए इःखें करीने हुं मरवाने उजमाल थइ हुं, ए अकार्यथी मरवुं रूडुं! हवे तुक्तने हुं एक प्रार्थना करुं हुं के तुं निश्चय वांबित ञ्चापवाने कल्पवृक्त् सहश समर्थ हो ॥यतः॥ इस्काण एउ इस्कं, ग्रुरुयं ग्रुरुयाण द्वियय मञ्जंमि॥ जंपिपरो पिठक्कइ,जंपि यरो पञ्चणा जंगो॥ एटलामाटे तुं मुक अनुरागिणीनुं विधियें करी पाणियहण कर. माहरा पूर्व

एटलामाट तु मुज अनुरागिणानु विधिय करे। पाणियहण करे. माहरा पूर्व पुष्यने उदयें तुं इहां आव्यो हो. मुजने जीवाड्यानो ए सार हे. हमणां ल य़नी वेला हे,माटेविलंबें सखुं, विलंब म करे. एहवुं ते कन्यानुं वचन सांज जीने हरिबल सम्यक् प्रकारें विचार करतो हवो जे ए महोटो महिमा एक जीव उगारवानो हे, जेणे देवांगनाने पण हेती करी हे तथा रूपें करीने विद्या धरी अने इंडाणीने तिरस्कार करती एवी आ कन्या हे! ते विद्याधरने हां मीने मुजने अंगीकार करे हे, माटे माहरुं महोटुं जाग्य हे! मुजने देवता प्र सन्न हे! एम विचारी तेहनुं वचन मानीने तेनुं पाणियहण करतो हवो. स्नेहें करीने ते कन्या केहेती ह्वी के हें प्राणेश! जो नीववानी इहा होय तो आ पापस्थानक हमणांज मूको ? इहां रहेवुं युक्त नथी. जो पुष्प बटुक जाणज्ञो, तो कोपें करीने अनर्थ करज्ञो ? एह्वुं जाणीने आ स्थान कथी शीघ्रपणे आपणे अलगां जर्न्ये. विजीपणने नोतरवानुं बंध राखो. ते विद्याधरना इंड्नी परें किहांये पोतानुं वेकाणुं मूकीने निहं आवे! तमे इहां आव्या एटले तेने नोतखाज. षठी नीशानीने माटें ते कन्यायें जर्रने राजानुं चंड्हास्य खड्ग लावीने हरिबलने आप्युं. आपीने कहां के एखड्गें करीने बल वंत वैरी साध्य थाय. तेहनी बुद्धियें करीने आश्चर्य पाम्यो थको ते हरिबल खड्ग लेंड कुसुमश्चीने तथा घरनी सारसार वस्तु, तथा अमृतनुं तुंबडुं लेंड्ने योग निडानी पेरें अति अद्चुत शक्तियें ते नगरथकी नीकलीने अनिमिष हिथ्यें हपन चपर जेम गोरीने शिव शोजे तेम वेतो. देवतायें हपन रूप करी बेहुने वांसा उपर वेसारी मार्गना कुतूहल देखाडतां विशाला नगरीना वनने विषे आवी उताखां. ते स्वी पुरुप जाणीयें नवां प्रगट थयां एम सहुयें जाणुं.

हवे हरिबल पोताना घर थकी लंका यें जबा पढ़ी जे कांइ थयुं, ते कहे हे:— राजा विकारसहित हरिबलनी स्त्री लेवाने अर्थें प्रजातें दासी प्रमुख नाणें ह रिबलने घेर खबर मोकलतो हवो. तेने प्रसन्न करवाने अर्थें नवनवी वस्तु मोकल्या करे, ते जोइ एकदा हरिबलनी स्त्री राजा शामाटे माहरे घेर नव नवी वस्तु मोकले हे? तेनुं कारण दास दासीने पूहती हवी. ते दास दा सीने पण राजायें पूर्वें शीखवी मूक्युं हे,तेथी कहेती हवी के,हे जड़े! हुं न थी जाणती जे ताहरो जरतार राजानुं प्रसादपात्र हे, राजायें पोताने कार्यें मोकल्यो हे. तेमाटे ताहरा घरनुं जे उचित कार्य ते राजाज करे हे, तेणे करीने सारासार वस्तु मोकले हे,तेवारे वसंतश्रीयें विचाखुं जे राजानो अनिप्राय छुट हे,तो पण राजानी मोकलेली सर्व वस्तु लड़ने दासीने मीह वचनें कहे जे अमारी उपर राजानो महोटो प्रसाद हे. कामांध राजा पण नवनवी वस्तु मोकलावे, एम सार संजाल लेवे करीने केटलाएक दिवस गया.

एकदा राजा कंदर्पने वश थयो थको दासीने मुखें वंसतश्रीने कहेवरा वतो हवो के में तारा स्वामीने कपटें करीने लंकायें मोकलेलो हे माटे तुं मुफने जज. खहो दृद्धिपाम्युं एवुं जे कंदर्पनुं पूर ते शुं खनर्थ न करे ? हवे दूतीना मुखयी तेवां वचन सांजलीने कानने विषे जाणे दाह थयो होय नहिं ? तेम तेनायी सहेवाणुं नही. तोपण बुिं व बें करी ते कष्ट रूप समुइने तरवा माटे दूतीने कांइ पण ना हा कही नही. तेवारें दूती पाढी आवी राजा आगल सर्व हकीगत कहेंती हवी. राजायें विचाखुं जे तेणे नाकारों न कखों, ते उपरथी समजाय हे के ए वातमां ते राजी हज़े. एम विचारी प्रमुदित थको कामीजनने कामदेवना धनुष्यनी समान एवी रात्रि ने विषे राजा चोरनी पेहें हरिबलना ज्ञवनने विषे आब्यो. अत्यंत कामार्च एवो राजा ते वसंतश्रीने देखीने परमहर्ष धरतो हवो. हवे ते सती पण पोतानो विषाद अंतःकरणमां गोपवी राजाने देखीने युक्तायुक्त करती हवी. अने ससंज्ञमपणे आज्ञानादिक उचित सर्व राजानुं साचवती हवी. वली कहेती हवी के हे राजन्! तमारा पधारवाथी मुजने महोटो हर्ष थयो हे.

ते वचन सांजलीने राजा मनमां अत्यंत खुशी थयो. हवे जगतमां एवी रीत है के सती स्त्री मन, वचन, कायायें करीने पोतानुं शील राखवाने असतीने पेठें आचरण देखाडे ? ते प्रमाणें वसंतश्री असतीनी पेठें आच रण करवा लागी. राजा कृतार्थताने मानतो थको कहे हे के,हे वसंतश्री! हुं तुफने तेडवा माटे आहिं आव्यो हुं, तेथी तुं जलदी चाल. कांचन वि ना जेम रत्न शोने नहिं, तेम तारा विना मारुं अंतःपुर शोनतुं नथी. ते सांजली माही एवी वसंतश्री युक्तियें करीने राजानें समजावे हे,के हे देव! तमें मुफने जे कह्यं, ए प्रिय हे,रूडुं हे,हितकारी हे,अने साचुं हे,पण तमो मारा नर्त्तारना खामी अने अमारा घरनी चिंताना करनार होइने तमने एवुं बोलवुं घटे नहीं ? जुवो जिहां सुधी सूर्यनो उदय होय, तिहां सुधी कोइ चंइमाने वां नहीं. ते वात सांचलीने राजा हसीने कहेतो हवो के तारे अर्थे ताहरा खामीने मारवा काजें विपम संकटने विषे में मोकव्यो वे, तिहांची ते केम जीवतो आवशे ? समुइमां पड्युं मनुष्य केम जीवतुं आवे ? कदाचित् प्रतिका चए करीने जीवतो आव्यो,तो पण हुं तेने हणीश! कवि कहे वे के धिक वे कामांधने जे पोतानो गोप्य अनिप्राय होय ते पण क ही दे हे ? ॥ उक्तं च ॥ कुवियस्स आ उरस्स य,वसणासत्तरस आयरतस्स ॥ मं त्तस्स मरंतस्सय, सप्नावा पायडा हुंति ॥ १ ॥ जावार्थः-कोपायमान थये लानो, ञातुरनो, व्यसनमां अति ञासक होय तेनो, रागें रातो होय तेनो, तथा उन्मत्तनो, मरण पामतानो, एटलानो स्वनाव स्वतः प्रगट थाय ॥१॥

हवे वसंतश्री विचारे हे, जे श्रग्जननो विलंब करवो कालकेप करवो ते श्रुनतुं कारण हे,श्रने एथी श्रागल ग्रुन थाय,एम चिंतवीने कहेती हवी के, हे राजन ! हुं ताहरे श्राधीन हुं, पण ज्यां सुधी मारा नरतारनी ग्रुदि न श्रावे, त्यां सुधी तुं महेरबानी करीने श्रुटक. तेवारें राजायें विचाखुं जे श्रास्त्री श्रापणा हाथमांथी क्यां जाय एम हे? एम विचारी कण्टहित्तयें रह्यो थको ते वसंतश्रीतुं वचन मानीने पाहो पोताने ज्ञुवनें गयो. एवी श्रुक्तियें करी वसंतश्रीयें पोतानी बुदिना पराक्रमें करीने पोतानुं शील राख्युं, पही ते शील रक्ष्णनो हर्ष धरती श्रुने पोताना नरतारना वियोग नुं इःखधरती हती नरतारनी वाट जोती बेठी हे. त्यां केटलाएक दिवस व्यतीत थया.

हवें माह्यो एवो हरिबल मही पोतानी निवन परऐली कुसुमश्रीने उ द्यानने विषे मूकीने पोताना घरनुं स्वरूप जोवाने अर्थे वानो मानो आ वीने पोताना घरने ढुकडो जेवामां एकांतमां रह्यो थको सांजले ने तेवा मांज वसंतश्री पोतानी सखीने पोताना अनिप्रायनी वात कहे है, के हे सखी! जरतार घणो काल थयो लंकायें गयो है, पण हजीसुधी सुखसमा चार कांहिं खाव्या नहिं,तो तेमनुं खावनुं तो क्यांचीज याय? हवे जो ते नहिं आवे,ने राजानुं करेलुं कपट प्रकट याय एटले मारो खामी नाश य यो, एवं अमंगल वचन कदाचित् संजलाय, तथा राजा इहां आवे, तो मा री शी वंदे थाय !!! अने हुं राजाने पण शो उत्तर आपुं ? अरे महारुं शील केम रहे ! एटलामाटे शील राखवासारु मुक्तने मरणनुं शरण हे, ते ज श्रेय है! ते वचन प्रियानुं सांजलीने हरिवल सतीपणानो निश्रय करी अति तुष्ट थईने प्रगट यतो ह्वो,ते जाएो ते वसंतश्री सतीने शीलना प्रजा वें ग्रुननोज उदय थयो होय नहिं ? हवे पोताना स्वामीने देखीने, रोमराय विकस्वर थयां हे जेनां एवी ते वसंतश्रीयें स्वामीनी आगता स्वागता करीने, कुशल देम पूर्वीने राजानुं सर्व वृत्तांत कद्यं. अने हरिबर्धे पण पोतें घरची निकल्यो तिहांची मांमीने पाठो घेर आव्यो तिहांसुधीनुं सर्व वृत्तांत वसं तश्रीने कह्यं. ज्यां खरो प्रेम होय, तिहां ग्रुं गोप्य होय?

हवे वसंतश्रीयें कुसुमश्रीनी बात पूठी ने कह्यं जे ते माहरी बेहन किहां हे ? तेवारें हरिबर्जें कह्यं के हुं वनमां मूकी आव्यो हुं, वसंतश्री क हे हे के केम आंही आणी नथी? हरिबल कहे के ताहरा जयथी आहीं ताव्यो निहं. वसंतश्री कहें तमारे मारो नय न राखवो कारण के मुफने तेने मलवानी उत्कंवा है,वली हुं हमणांज ते बेहेननी सन्मुख जङ्श ! ए हवुं वसंतश्रीनुं बोलवुं सांजलीने हिरबलने मनमां संशय उपन्यो,जे वसंतश्री जे कहे हे ते साचुं कहे हे के खोटुं कहे हे ? कारण के शोक्योनो स्नेह खरो होय निहं, देखाडवानोज होय ? एवो संशय थयो. एवी जातनो पोता नरतारनो संशय टालवाने माटे वसंतश्री कहे हे, जे हे स्वामी ! हे प्राणना थ ! तमारा हृदयमां हाल उत्पन्न थयेलो संशय तमें हांमो. मुफने तो ते बेहेननो स्नेह घणोज हे, अने हे स्वामी ! जे मूढ होय, तेज हृदयने वि ये शोक्यपर हेष राखे, सुख अथवा इःख पोताने विपाकेंज आवे हे. एम कहीने वसंतश्री हिरबलनी साथें पहवाडे पहवाडे वन मध्यें कुसुमश्रीनी साहमे गइ. ते वसंतश्रीने आवती देखीने कुसुमश्री पण हर्ष पामी, अने तेनी पण रोमराय विकस्वर थइ. हवे ते कुसुमश्री पण यथायोग्य उचित सर्व साचवती हवी. ए प्रमाणें ए बेहुने परस्पर आनंद उत्पन्न थतो हवो.

हवे हरिबर्जे पोतानी बेहु प्रियासार्थे पोतानो कांश्क विचार करीने कोइ एक पुरुपने तेडावीने तथा समजावीने राजानी पासें मोकव्यो. ते पुरुपें राजा पासें जड़ने हरिबलना आव्यानी सघली वात कही संजलावी. राजा ते वात सांजलीने इतबुद्धि तथा विषादयुक्त थयो थको विचारवा लाग्यों के छाहो ! धिक् वे विधिने ! के जे चिंतवे कांइ ने थाय कांइ ! व ली राजा विचार करे है, जे अरे! ते हरिबल लंकायें जइने विजीपणनी पुत्री परणे ! ए वात ते साची केम होय ? चाल, हुं ते वातनो सत्यासत्य निर्णय तो करुं ! एम अनेक कल्पना करतो थको धैर्यावलंबन करीने राजा हरिबलनी साहामो गयो. अने जइने महोटी ऋदिसिदि संघातें तेने नग रमां प्रवेश करावतो ह्वो. लोकोने जणावतो ह्वो जे माहरुं विषम कार्य, एणे कखुं हे. हवे हरिबल अने वेहु प्रिया जेवारें चहूटा वच्चें आव्यां, ते वारें हरिब ें बेहु प्रिया अने अमृतनुं तुंब डुं, तेने पोताने जुवने मोकव्यां, अने पोतें राजसनायें आवीने राजाने नमतो हवो. त्यार पढी राजा बहु सन्मान दक्ष्ते पूछतो हवो. अने तेनो हरिबल पोतें स्पष्टवाणीयें करीने रा जाने उत्तर देतो हवो. के हे राजन ! हुं तमारी पासेंथी कछें करी जेवे समु इकांवे गयो, तेवामां एक राक्तस खार्ज ! खार्ज ! करतो मारी सामो आब्यो,

तारे में कह्युं जे माहारा स्वामीनी आज्ञायें माहरे लंकायें विजीपणने नो तरवा जावुं हे, ते माहरी प्रतिका है, तेथी जो तुं मने खाइश तो खरो पण एथी माह्री प्रतिकानो जंग थर्गे,एटला माटे मुजने लंकायें जवानो उपाय बताव ? तेवारें राक्त्सें कह्यं के तुं जो काष्ठ जक्षण कर, तो परिक्र मायें करी ताराथी लंकायें जवाय. अने लंकामां प्रवेश पण थाय, अन्यथा लंकायें जवामां बीजो कोइ पण उपाय नथी. एवी ते राक्सनी वात सांज लीने में निश्रय कचो जे खामीना कार्य माटें मरण जो थाय, तो मरबुंज. अने मुवा विना लंकायें पण नहिं जवाय. वली अवस्य स्वामीनुं कार्य कस्वा विना नहिंज चाले ! एम केटलीक वार सुधी विचार उपन्यो. वली पा बो विचार थयो जे मरवुं, ते वीक नहिं! वर्जी विचार थयो के थिक् धिक् वे सेवकरूप मने जे स्वामीनुं कार्य करवा निकल्यो हुं,ने वली मरवा थकी बीहुं डुं! माटे मरवुं, पण लंकायें जवुं! एम विचारीने एक चिता रचीने एमां मारुं शरीर में पडतुं मूक्युं, तेज वेलायें हुं बली नस्म ययो. एटखे ते नस्म राक्त्सें लइ पोटलो बांधीने विजीपण पासें मूकीने मारुं सर्व वृत्तांत विजीपणने कह्यं. ते सांजलीने विजीपणे तुष्टमान यह पोतानी शक्तियें करी अमृत ढांटगुं, एटले हुं तेज वखतें उठीने वेठो थयो. पढी विजीपण माहरुं अद्ञतहूप देखीने अतिशय प्रशंसा करवा जाग्यो अने तेणें उच्छ यायहें करीने मुक्तने पोतानी पुत्री परणावी. ते वेजायें महो टो विवाह महोत्सव कखो, ते विनिष्णे हथेवालामां घणां देवड्प वस्त्र, आनरणादिक, घणो उपस्कर दीयो. घणा हाथी घोडा मने आपवा मांमयो, पण में ते न लीधा, कारण के हाथी घोडा सहित इहां आववुं इष्कर यह पडे. विजीषणे कह्यं, तुं इहांज रहे, अने नव नवां सुख जोगव, नव नवी स्त्रीयो नोगव. तेवारें में कह्यं जे माहरा स्वामी राजा मदनवेगें पोतानी पु त्रीना विवाहार्थें मुने तुफने तेडवा मोकत्यों हे, ते कार्य राजानुं बगडे, मा टे माहाराथी इहां न रहेवाय! कारण के उत्तम होय, ते परकार्य जो थतुं होय तो पोतानुं कार्य ढांमे. वली में कह्यं जे तमो मुक्तने शीघपणे विसाल पुर मूको. तेवारें विजीषणें कह्यं जे तुं जा. अने हुं तो जे दिवस लग्ननो ह्रो, ते दिवसें आवी पोहोंचीश. एम ज्यारें बिनीपएों कहां, त्यारें में तेने कह्यं जे तमें मुफने निशानी आपो ? त्यारें तेणें पोतानुं दिव्य एवं चंइहा

स्य एवा नामनुं खद्ग आप्युं, अने तेणे मुफने मारी स्वी सहित शीव्रपणे इहां मूक्यो. एवी जातनुं सर्व वृत्तांत हरिबक्षें राजाने कहीने चंइहास्य खद्ग हतुं ते आप्युं, ते जोइ खद्गनी निशानीयें राजायें सर्व वात साची मानी. एप्रमाणें हरिबक्षें कहेन्नुं सर्व वृत्तांत जो पण असत्य हतुं तो पण राजा यें तेना पुष्यना बक्षें सर्व सत्य करी मान्युं,परंतु एक प्रधान कांणा कागडा नी पेतें असत्य मानतो हवो. अने मने वचने करीने एम चिंतवतो हवो जे ए हरिबल कोइक स्थलधी ठल करीने आस्वी तथा खद्ग लाब्यो हे, पण ए कोइनी आपी वस्तु लागती नधी. हवे प्रधान घणो इष्ट हे पण ठल विना शुं करे ! ॥ यतः ॥ नृपसपंपिश्चनचौर, कुइसुरपारदारिशाकिन्यः ॥ इष्टारिप किं कुर्यु कुलं, विना निष्फलारंनाः ॥ १ ॥ नावार्थः—राजा, सर्ण, खल, चोर, कुइ,हीणो, देवता, परस्वीगमनकरनार तथा शाकिनी प्रमुख जे इष्ट होय ते पण ठल विना शुं करें ? ठल जो मले, तो ते जोर करे, निहें तो तेनो आरंन निःफल थाय॥ १ ॥

हवे राजा विचारे हे, जे माह्या एवा हरिबलने कपटथकी कुबुिह्यें क रीने में विकट संकटमां नांख्यो हतो पण एतो महारा कार्यने अर्थे नस्म जूत थयो, माटे जूड एतुं उत्तमपणुं ए हरिबल अतिशय मानवा योग्य हे.

एम चिंतवतो राजा हरिबल माछीनी सना समक् प्रशंसा करतो हवो. अहो जे उत्तम होय, तेज पोतानी प्रतिकानो निर्वाह करे ! बीजो कोइ न करे ! ते प्रतिका एक हरिबलेंज पाली. अहो ए सौनाग्यनाग्यनो निधि हे ! अहो एनी पोताना अर्थनी निःस्प्रहता केवी हे ! एनुं माहापण केवं हे ? एनी स्वस्वामीने विषे निक्त केवी हे ? तेथी एना जेवो परम मित्र को इ माहरे नथी. एम दोप रहित प्रशंसा करी घणो आदर सत्कार दइ, सा र सार वस्तु, सार सार वस्तु, सारां सारां आनरणादिक दइने महोटा म होत्सवसहित राजायें. हरिबलने पोताने घेर पहोंचाड्यो. हवे धर्मी पुरुषने जो कोइ कार्य विषम होय, तो पण ते सहेलथी यइ जाय. धर्म कहे वो हे ? तो के कामधेनु सरखो हो.

हवे राजा हरिबजनी क्रिक्क देखीने पोतें जे हरिबजनी स्त्री साथे अकार्य करवा विचार धाखो हतो, तेमां तेणे पोताना आत्मानी अत्यंत निंदा करी. ते दिवसथी मांमीने सजाने विषे तथा आखा नगरमां हरिबजनो यश वि स्ताखों, अने लोको कहेवा लाग्यां जे एहवुं विषम कार्य जे करे,ते राजानों प्रसादपात्र थायज. हवे राजाने कामग्रह नडतो हतो ते, तथा स्त्री उपर जे स्नेह हतो ते, हरिबलना आचरण कोतुकरसें करीने दिन दिन प्रत्यें ह लवे हलवे मंद थातो गयो. हवे हरिबलने पोतानी वे प्रियासार्थे संसारनां सुख नोगवतां घणो काल व्यतीत थइ गयो, तो पण ते सुखमां जातो काल जाणतो नथी. जेम रित अने प्रीतिनी संघातें कामदेव शोजे, तेम हरिबल पोतानी वे प्रिया साथें शोनतो हवो.

इप्रधान हरिबलनी क्रि तथा तेज देखीने ते अणसहेतो थको ई र्थायें करीने हरिबलने त्यां जमवानी प्रेरणा राजाने करतो हवो. हवे हरिबक्षें एवो राजानो जमवानो जाव जाणीने त्रियायें वास्रो, तो पण ते प्रियानं वचन उद्धंधीने पोताने घेर रसवती आदि सर्व सामग्री तैय्यार क रावीने ञ्चागल ञ्चनर्थ थाज्ञे तेने न जाएतां राजानी साथें प्रधान तथा सा मंतादिक सर्वने जमवा माटे तेड्या. जोजनने समयें हरिवलनी वेद्ध स्त्रीयो सारशृंगार करीने नव नवी चतुराइयें नोजननुं पीरसवुं प्रमुख करती राजा दिक सर्वने पोतानुं माहापण देखाडती ह्वी. ते वखत जेम कोइकने प्रेतनो बल थाय, जेम दरिइीना मनमां चिंता रहे, जेम कुपथ्यथी रोगवृदि थाय, जेम अन्यायथी अपयश थाय, जेम कटुक वचनथी क्रोधवृद्धि पामे,जेम व झननां मरणथी शोक वधे, जेम मेघना गर्कारवथकी तथा पाणी दीवाथी जेम हडकाया कुतरानुं विप प्रगट थाय, जेम पवनना योगर्थ। अग्नि वृद्धि पामे, तेम ते वे स्त्रीने देखवाधकी राजाने कंदर्प प्रगट धतो हवो. जे श मी गयो हतो ते फरीने वतो थयो. तेथी राजानी मित फरी अने विचार करवा लाग्यों के महानिपुण एवा हरिबलने जेवारें हुं हुएं, तेवारें ए बे स्त्री महारे वशवर्ती थाय. एम चिंतवी राजा कठण जावने गोपवतो थको बा ह्मथी हरिबलने सत्कार करी पोताने घेर गयो.

पढ़ी इमीतयोनो अयेसर एवो जे इप्ट प्रधान ते राजाना मननो आ शय जाणीने राजाने कहेतो हवो, जे एवे स्त्रीयो तमारी उपर राजी हे ते ऐं करीनेज जमती वखतें रागें करीने तमारी नवनवी चतुराइयें वे जणीयें जिक्त करी. एवां प्रधाननां वचन सांजलीने राजा बमणो कामातुर थइ घ णी रीक पाम्यो श्रको हरिबलने मारवानो उपाय मंत्रीने पूहतोहवो. तेवा रें जेम खलपुरुष अवसर पामीने हर्षित थाय,तेम प्रधान पण अवसर पा मीने रीज्यो थको हरिबलने मारवानुं कारण राजाने बतावतो हवो के हे राजन! हरिबलने यम राजाने तेडवाने मिषें अग्निमां प्रवेश करावो. जेथी ते फरी जीवतोज न आवे,ने आपण देखतां बलीने नस्म थाय. राजायें ए प्रधाननो कहेलो जपाय रूडो जाएयो. इर्बु दिना धणी जे परने कुबु दि आपे वे एवा निःकारण वैरी इष्ट जीवडाने धिकार वे.

अन्यदा हरिबलने राजायें सनावचें तेडीने कह्यं जे तमें महारा मित्र वो माटे तमने कहेवुं तो योग्य नथी पए एक कार्य असाध्य वे ते तमारा थीज संधाय तेम है माटे तमने कहुं हुं जे मारी पुत्रीनो विवाह है ते उपर यम राजाने किंकरादिक सर्व परिवार संघाते नोतरवो हे तो अधिमां पेवावि ना यमराजा पासें जवाय तेम हे नहीं. ए कार्य तुं करीश बीजाधी नहीं थाय. ॥ यतः ॥ सिंहस्य साहसज्जुषः, सुजनस्य घनस्य शशिनश्च ॥ नानोश्च रह ज्ञानो रनन्यसाधारणी शक्तिः ॥१॥ जावार्यः - सिंहनी, धेर्यवंतनी, सज्ज ननी, मेघनी, चंइमानी, सूर्यनी तथा अग्निनी, एटलानी असाधारण शक्ति वे बीजानी एवी शक्ति न होय माटे तमें सत्त्ववंतमां मुकुटसमान वो तो महारुं ए कार्य पूर्वनी पेरें साधो. तमारें खामी नुं वचन प्रमाण करवुंज जोड्यें. एवं राजानुं वचन सांजलीने हरिबल चित्तनेविषे विचारे हे जे पूर्वनी पेतें प्रधाननी कुबुदियें करीने राजायें ए सर्व प्रपंच कखो हे एह्वो निश्रे करीने कहे हे, के धिकार हे ए कुपात्रने में जे जोजन कराव्युं अने सन्मान कखुं तेतुं ए फल हुं पाम्यो. कुपात्रने दान देवुं, ते इःखदायी थाय, खलनो उपकार करवो, ते महोटा अवगुणनो हेतु थइ पडे, जेम रोगी पुरुपने मन गमतुं नोजन करावियें, तेथी रोग वधे अने अवग्रणनुं हेतु थाय, तेम थयुं. हवे जो हुं राजानो आदेश न करुं, तो पूर्वे लंका गमननी महारी वात सर्व मि ष्या याय ? एम विचारी राजानी वात प्रमाण करी.

पढ़ी हरिबल राजानो विषम आदेंश पोतानी वे प्रियाने कहेतो हवो. ते वे स्त्रीयो हरिबलनुं वचन सांजलीने उलंजो देती कहेवा लागीयो के हे स्वामिनाथ ? पूर्वें अमें तमने वास्ता हता तो पण तमोयें राजाने जमवा तेड्या, तेथी जुवो आ केवो अनर्थ थयो ? वली स्त्रीयो कहे हे के तमोने हेमकुशल रहो, तमो चिरंजीबी रहो अने तमो तमारी बुद्धियें करीने ए सर्व कार्य साधशो ! हवे राजायें नगर बहार एक महोटी चय खडकावी ने अप्रियें प्रज्ज्वित करी. तेथी जाणीयें राजा पोताना यश रूप सर्व धनने बालवा माटेज हरिबलना शरीरने बालवा इवतो होय निह ? पठी हरिबलने बहु मान देखाइवा माटे राजा, पोताना सर्व परिवार तथा प्रधानादि संघातें हरि बलने घेरथी तेडीने चिता समीपें आएथो. हवे नगरनां सर्वे लोकोयें कोलाहल करतां राजा तथा प्रधानने उलंजो देतां, हाहाकार करतां, कोतुक जोते यके हरिबलने अप्रिमां प्रवेश करतो दीवो. ते चयमां पडतां वेंतज सर्वना देखां जस्म थइ गयो. ते हरिबलना बिल जवाथी सर्वे नगरनां लोकोने अ त्यंत शोक थयो, अने राजा तथा प्रधानने अति हर्ष थयो.

हवे लोक सर्वे हरिबलनी प्रशंसा करे हे, अने राजा तथा प्रधाननी निंदा करे हे. हरिबल एटले सिंहना सरखुं बल तथा हरिबल एटले विष्णुना सरखुं बल तेमज इंड्ना सरखा तेजने धारण करनार हतो, एवा प्रतापी पुरुपने राजा तथा प्रधाने कपटथी मास्रो, ते बहुज खोटुं काम कखुं!!! ते अतुल खरूपवान एवी ललनानी रूपलक्कीनी लालचें राजायें एहवुं क खुं. माटे एना सरखो अधर्मी बीजो कोइ नहीं जेम सडी गयेला कलेवरमां थी इग्रीध विस्तरे हे,तेम राजाना अधर्मनो अपकीर्त्ति रूप इग्रीध विस्तरतो हवी.

हवे हरिबंधें श्रियमांहे पडतां यकांज सुस्थित देवताने संनास्तो,तेना सा निध्य थकी लगारमात्र पण शरीरें पीडा थइ निहं जेम सुवर्ण तपाव्युं दीनि पामे,तेम हरिबंज पण कांतियें करी दीपतो हवो. श्रंजन सिद्धिनी पेठें तत्काल चयमांथी नीकलीने श्रदृश्य थको एकांतें रह्यो. श्रने रात्रि पडी,एटजे पोताने घेर श्राच्यो. हरिबंजने देखीने तेनी बेहुस्त्रीयो प्रमुदित थइ,विस्मय पामी थकी पोताना श्रात्माने धन्य मानती तुंबडामांहीथी श्रमृत ढांटती हवी. तेणे क रीने हरिबंजनुं शरीर देवता सरिखुं थतुं हवुं. पुण्यना उदयथी शुं न संजवे ? पुण्यवंत पुरुषने इर्जन जोक, कप्टना समुइमां नाखे, तेज सुखनो समुइ याय. ए रीतें पुण्यवंतने श्रापदा ते संपदा रूप थाय, जेम श्रगरने श्रागमां नाखीयें तो उजटी सुगंधता विस्तारे.

हवे हरिबल, पोतानी बे प्रिया साथें प्रेमञ्चालाप करे हे. तेटले राजा कंदर्पज्यरें पीड्यो थको अत्यंत मदोन्मस थइने हरिबलना घरने विषे ञ्चा व्यो. तेने ञ्चावतो जोइने ते बे स्त्रीयो हरिबलने कहेती हवी. के तमें घरमां

ग्रप्त रहीने स्थमारी वे जणीयोनी चतुराइ तथा महापण जुवो. जे स्त्रीयो छं करे हे ? हरिबर्जे पण तेमज कखुं एटखे राजा आव्यो, अने ते वे जणीयो राजाने आदर सन्मान तथा आसन आपवादिक सर्व उचित साचवती ह्वी. अने राजाने पूछती ह्वी. के हे स्वामी! आ अवसरें आपने आंहीं श्राच्यानुं ग्रुं प्रयोजन हतुं ? तेवारें राजा घेलानी पेतें हसतो श्रतिशय उ छास पामतो कहेवा जाग्यो के हे कामिनीयो ! तमें ग्रुं नथी जाएतीयो जे हुं तमने माहरे घेर तेडी जवा आव्यो हुं ? माटे चालो पधारो. एहवुं राजानुं वचन सांजलीने ते बन्ने जणीयो कहेती हवी. के हे राजन ! ए ता हरं बोलवुं उचित नथी तुं सेवक जननो वाप सरखो हो. जे लोक अनधी करता होय, तेने तुं वारी राखे तो तुं पोतेंज अनर्थ करे हे. ते तुजने को ण वारे ! परस्वी जो देवतानी स्वी सरखी खरूपवाली होय, तो पण शीघ परहरवी! तेमां वली सेवकनी स्त्री तो पुत्रीनी पेठें तथा पुत्र वहूनी पे वें विशेषें ढांमवी जोश्यें. राजा जे ढे, ते प्रजाने अन्याय करतां देखी दंम क रीने वारी राखे, पण जेवारें राजा पोतेंज अन्याय करे, तेवारें तेने कोण वारवा समर्थ थाय ? जे चोकी करे, तेज चोरी करे ? जे वलावीया हो य, तेज धाडी थइने संघने छुंटे ? पाणीयकी जेवारें अग्नि उठें, सूर्य थ की जेवारें खंधकार व्यापे, तेवारें शो जपाय थाय ? तेमाटे तुजने ए शी घेलढा थइ हे, जे तुं खमारी वांहा करे हे ? खा तारी वर्त्तपूकथी खमा रां प्राण जारो, तो जावा देशुं तो पण अमें अमारा शीलने मिलन कर द्यं नहीं ? ॥ यतः ॥ वरं शृंगोतुंगाजुरुशिखरिणः क्वापि विषमे, पतित्वायं कायः किनदृषद्ंतर्विद् लितः ॥ वरं न्यस्तोद्दस्तः फणिपतिमुखे तीदृण दशने, वरं वन्हों पातस्तद्पि न वरः शीलविलयः ॥ १ ॥ नावार्थः-उं चां हे शिखर जेनां एवा महोटा जे पर्वत तेना विषम प्रदेशने विषे पडी ने आ कायाने किए पाषाणमांहे दली नाखवी ते श्रेष्ठ हे, वली तीखा दांतवाला शेषनागना मुखमां हाथ घालवो, ते श्रेष्ठ हे, तथा ख्रियने वि षे पडवुं ते श्रेष्ठ हे, पण शीलनो लोप करवो, ते श्रेष्ठ नथी ॥ १ ॥

ते कारण माटे हे राजन! अत्यंत कटुक हे विपाक जेना एवा पर स्वी संनोगना पापथकी तुं विराम पाम.॥ तडकं ॥ सुरुते सत्यिप कर्म णि,डर्नितिरेवांतरे श्रियं ॥ हरति तैलेसुडुकेऽपि हि,दीपशिखां हरति वाता ली ॥ १ ॥ जावार्थः—जेम दीवानी शिखाने तेल पोहोचे हे तो पण तेने वायरो हणी नाखे हें, तेम मनुष्यने सुरुत रूप कमें हते पण वचमां अन्याय आवीने तेनी लक्कीने हणी नाखे हे ॥ १ ॥

माटें दे राजन्! मांगितकने अर्थे अन्याय मार्ग गंमवो नें न्याय मार्ग वर्तवुं. कारण के न्यायमार्ग जे हे, ते सर्व संपदानुं मूल है ॥ यतः ॥ डुमेषु सिललं सिर्प, नरेषु मदने मनः ॥ विद्यास्वन्यसनन्यायः, श्रियामा युः प्रकीर्त्तितम् ॥ १ ॥ श्रुतेन बुिकः सुरुतेन विक्कता, मदनेन नारी सिललेन निम्नगा ॥ निशा शशांकेन धृतिः समाधिना, नयेन चालंकियते नरें इता ॥ १ ॥ नावार्थः हरूने विषे पाणी, पुरुषने विषे पृत, कामने विषे मन, विद्यान्यासमां न्यायनुं जाणवुं, लक्कीने विषे पूर्ण आयु शोनाकारी हे ॥ १ ॥ ज्ञाने करी बुिक् शोने हे, सुरुतपणे निपुणता शोने हे, कंदणें करी स्त्री शोने हे, जलें करी नदी शोने हे, चंइमायें करी रात्रि शोने हे. समाधिपणे संतोप शोने हे, अने न्यायें करी राजा शोने हे ॥ १ ॥

एवी रीतें हरिबलनी स्त्रीयोयं नव नवी युक्तियं करीने राजाने सम जाव्यो, पण जेम महाज्वरने विषे श्रोषध मिण्यानृत थाय तेम राजा स मजयो नहिं. हवे राजा कंदर्पनी पीडायें पीडाणो थको कहेतो हवो. के हे प्रियात्र! हुं राजा बतां तमने श्राटली प्रार्थना करुं बुं तो पण तमें नथी मा नतीयों, पण हवे तमारो जरतार जीवतो श्रावें, एवी श्राशा तमारे करवीज नहीं. तमारें श्रार्थ में तेने बाली जस्म कखो हे. एटला माटे नमे मुजने त रस्थानापन्न खामीरूप मानो ? तमारा सुख इःखनो हेतु हवे हुं हुं. श्राने तमें महारे वश हो, जो तमें महारुं कह्यं नहीं मानो तो बलात्कारें पण त मने यहण करीश, श्रामें श्रमषेवंत होइयें हैयें. माटे तमो तमारी रहायें मारी पासे जो श्रावो तो घणुंज रूं हुं हो, तमारे श्रमारे महोटो स्नेह थाओ !

एवां राजानां वचन सांजलीने स्त्रीयो कहेती हवी के धिकार पड़ो तु फने जेमाटे धीठा कागडानी पेठें कटुक वचनें निषेथ्यो थको पण कपट मां निपुण थइ साहामो एम बोले हे ? माटे जा पापी! अमाराथी दूर रहे! नहीं तो तुं तहारा महोटा पापनुं फल हमणांज पामीश!!!

एवां स्त्रीयोनां कटुक वचन सांजलीने जेवामां राजा बालात्कार कर वा जाय है, एवामां तो कुसुमश्रीयें विद्याने बलें राजाने तत्काल चोरनी

पेठें आकरा बंधने बांधी लीधो, अने बांधीने जेम तेना दांत त्रूटी पहे, तेवी रीतें धरतीने विषे तेने पाडी नाख्यो. तेथी तेज वखत राजाना दांत पण पडी गया. अहिं कि उत्प्रेक्षा करें हे. के:—ते दांतोयें विचाखुं जे अमें निर्मल हैयें, वली सर्वदा उपकारी हैयें, अने आ राजा तो मिलन हे, बीजाने कप्रनो करनार हे, माटे आपणे मिलनजननो संग न करवो. एम चिंतवी राजाने होडी जूदा पडी गया! वली बीजी पण उत्प्रेक्षा करे हे, के इःखे नियह करवा योग्य एवो कामरूप जे यह, ते पण तत्काल राजा ना अहंकाररूप यहनी साथेंज जाणे अत्यंत जय पाम्यो न होय? तेम राजाना दांतनी साथें ते पण तत्काल नाश पामतो हवो.

हवे आकरा पाशनुं बंधन तथा दांतनुं पडनुं, ते वे वानाथी नदय पा मी जे पीडा, तेणे करीने इःखनी अवस्थाने प्राप्त थयो एवो राजा अत्यं त मूर्खनी पेतें हलवे हलवे आकंद करतो हवो. ते कानें राजा, मुखमां थी लालनुं पडनुं, आकंद करनुं, दांतनुं पडनुं, शोजारहितपणुं, इत्यादिक अवस्थायें करी तरुण ततां पण जाणीयें नृद्धपणुंज पाम्यो होय निहं? एवो देखावा लाग्यो. जेम कोइ लाज मेलववाने इन्नतो ततो मूल पोतानी पंजीनो पण नाश करी आवे! तेम राजाने थयुं. ॥ नकं च ॥ कित पयदिवसस्थायिनि मदकारणयोवने हरात्मानः ॥ विद्धति तथाऽपराधं, जन्मैव यथा नथा जवित ॥ ११ ॥ जावार्थः—मद अहंकारनुं करनारुं एनुं रूप, यौवनपणुं ते सर्वथोडा कालसुधी रहे हे, तेने विषे जे इष्ट बुद्धिवाला अपराध करे हे, ते पोतानो अवतार मिथ्या करे हे ॥ १ ॥

जे परस्वीना नोगने विषे जीवे हो, ते आकरी विंटबना पामे हो. विपें करीने इष्ट थयेलो एवो जे विषधर तेनी दृष्टियी पण हां जीवने मरण न थी थतुं ? अपि तु थायज हो.

्रहवें दीनदयामणा मुखें करी आकंद करता एवा राजाने देखीने दया ना घररूप स्त्रीयोने दया उपनी, तेवारें ते बेमांथी कुसुमश्रीयें राजाने कहां के जो पण तुं पापने विषे तत्पर हो, तो पण अमो अपार दयायें करीने कोमल हैयें, तेथी आ लोकना इःखयी मुक्त करवा माटे तो अमें तुजने बंध नथी मूकीयें हैयें. पण परचवने विषे ए पापकर्में करीने वारंवार तुं नरका दिकमां जइश, ते इःखयी अमें मूकाववाने समर्थ नथी. माटे हवे फरीथी तुं एवं काम करीश नही. एम कही विद्याने बर्जे कुसुमश्रीयें वेगे करी राजानें बंधनमुक्त कस्त्रो. ते मूर्तिमंत महोटा कर्मोथीज जाएो मूकाएो होय नहीं?

पढ़ी राजा शीव्रपणे स्वस्थ श्रंग करी सावधान यह पृथ्वी उपर बेंगे थको कहेतो ह्वा के हरिबलनी स्त्रीयोना प्रसाद्यकी श्रं इष्प्राप्य था य हे? श्रर्थात् सर्व प्राप्त थायज श्रने इःख पण टले. एम कही श्रतिश यपणे बहुशोच करतो थको क्रांइक पोतानी श्रांख्यो ढांकीने मंदमंदगति यें राजा तिहांथी निकल्यो, श्रने मार्गमां घणो पश्राचाप करतो ह्वा के:— श्ररे हुं घणो वगोवाणो! एम विचारतो ग्रप्तपणे पोताने घेर श्राच्यो. तिहां बाह्य सुखना श्रापनारा एवा श्रनेक उपाय करीने रात्रि निर्गमन करी. प्रनातें दांत जवाथी लङ्का पामतो थको कांइक मिष करी मुख ढांकी राज सनायें श्रावी वेतो. श्रने ढानी रीतें सर्व पोतानी वात मंत्रीने कही, तेथी मंत्रीयें पण सर्व समाचार जाल्या. तेवारें जेम तत्त्वनो जालपुरुप संसार तुं स्वरूप विचारे, तेम मंत्री पण विचारतो थको कांइक नय, कांइक की तुक श्रने कांइक करुणा, ए त्रणवाना समकालें पामतो ह्वो.

हवे हरिबर्जे पोतानी स्वीयोनुं करेलुं अत्यंत विचित्र चिरत्र जोयुं, राजा घरयकी गया पढ़ी स्वीयो प्रत्यें कहेतो हवो के तमारे अघटितकार्यना क रनार राजाने एमज करेलुं उचित हतुं. कारण के मूर्व होय, ते आस्फाव्या विना अने अरहो परहो कखाविना पाधरो थायज नही! जेम हीणो सार थि रथने उन्मार्गें चलावे, तेम कपटी मंत्रीयेंज राजाने ड्रबृद्धि देश्ने उन्मार्गें नाख्यो ॥ यतः ॥ नृपतिर्नरश्च नारी, तुरगस्तंत्री च शास्त्रमथ शस्त्रं ॥ चा रुवाचारुत्वे, स्यातामेपां परायचे ॥ १ ॥ वल्लीनरिंद चिनं, वस्त्राणं पाणियं च महिलां । त ज य वच्चंति सया, यज्ञय धुनेहिं निक्कंति ॥ १ ॥ जावा थीः—राजा, पुरुप, स्वी, अश्व, वीणा, शास्त्र, तथा शस्त्र, एटलानुं सुंदरपणुं अने हीनपणुं ते सघलुं परने वश्च होय हे एटले जेवा तेने सोवती मले, ते वा ते शोना पामे ॥ १ ॥ वली कसुं हे के वेलडी, राजा, मन, व्याख्यानं तथा पाणी अने स्वीयो एटला जन तिहांसुधी पोताने मार्गें चाले, के ज्यां सुधी तेने धूर्न नथी मत्या. अर्थात् ते सर्व, नीच, जडनी सोबतें हीनपणा ने पामे हे, तथा उत्तमनी संगतिथी उत्तमपणुं नजे हे ॥ १ ॥

माटे जेम विषमज्वर विषम सन्निपातें करी मख्यो थको इःप्रतिकार

थाय,तेनो उपाय जेम इलर्न थाय,तेम इष्टमंत्रीयें ए राजाने कप्टमां नाख्यो वे. माटे प्रथम ते प्रधाननो कांइक जपाय करवो युक्त वे. जिहांसुधी ए इ ष्टपरिणामी मंत्री जीवतो हशे, तिहांसुधी ते पोतानी प्रकृति मूकशे नहीं माटे ए अनर्थना मूलने समूलुंज काढी नाखवो जे दया करनारनो घात करे, तो तेनी उपर शी कपा करवी? माटे अन्याय कारक ए प्रधान हणवा योग्य हे. कह्युं हे के इष्टने दमवो अने शिष्ट जला जननी प्रतिपालना कर वी, एन्याय मार्ग हे. एटला माटे ते प्रधाननो नियह करवाने कांइक कपट रचना करवी. ए मंत्रीनुं करेखुं कपट हे, तेज मार्गे आपणने चालवुं यो ग्य हे. कारण के कपटीने तो कपटथीज वश करवो. कविपण कहे हे ॥ व्रजंति ते मूढिधयः पराजवं, जवंति मायाविषु ये न मायिनः ॥ प्रविश्य निघ्नंति शर्वास्तथा विधा, नसंवृतागान्निशिताश्वेषवः ॥१॥ नावार्थः- जे क पटी पुरुषने विषे कपटपणुं नथी करता, ते मूर्खबुद्धिना धणी पराजव प्र त्यें पामे हे. अने ते पुरुपना हृदयमां प्रवेश करीने तेने हणे हे तेनी इ पर दृष्टांत कहे हे. जेम तीद्रण बाणो, जेणे बखतर प्रमुख पहेखुं नथी एवा पुरुषना हृदयमांहे पेसीनें प्राण लें हे ? विचार करनारानो विचार चार कानथी थाय है, तो सघले प्रशंसवा योग्य थाय है. अने जो ह काने याय, तो वली विशेष प्रशंसनीय याय हे. सिद्धफलने आपे हे॥३॥ पही ते वकाननो मंत्र करवाने अर्थे हरिबल समुइदेवताने संनारतो हवो; जेटले संजाखों के ते देवें आवीने हरिबलनो अतिअड्डत वेश बनाव्यो. देवता सं बंधि वस्त्रानरण पहेरावीने दिव्यस्वरूपवान कस्त्रो, तेमज बीजो एक नयं कररूप वालो यमराजानो ठिडदार बनाच्यो, तेने साथें लइने प्रजातें हरि बल राजसनाने विषे गयो. तिहां हर्षे सहित राजाने नमस्कार करी उनो रह्यो. इंइसरखा एवा हरिबलने स्वर्गथी खाब्यो देखीने राजा तथा सर्व पर्ष दानां लोको विस्मय पामतां इवां. राजा पोताना श्रंतःकरणमां विचार क रवा लाग्यो के धिकार वे पापसहित मंत्रीना वचनने जेमाटे में आ हरि बलने साहात् बाली राख कस्रो हतो, ते क्यांची आवी उनो रह्यो.

हवे राजा हरिबलने पूर्व वे जे तुं यमना घरषी आहीं केम आव्यो ? ने तारी साथें आ पुरुष कोण वे ? एम पूठवाषी हरिबल कहेतो हवो के हे राजन ! जेवो हुं चयमां पडीने बली नस्म थयो. तेवोज हुं यमराजाना दरवारमां गयो, ने त्यां यमराजानां किंकरें मारो सर्व व्यतिकर यमराजाने कह्यो, ते सांजलीने यमराजायें महारी उपर तुष्टमान थइने तरत जीवतो कचो, ते यमना प्रजावची माहरुं अति अध्वत रूप चयुं. एक कष्ट ने बीजुं सत्त्व ते वे यकी ग्रुं डर्जन हे ? सत्त्ववंतना कष्टें करी तुष्टमान थयेला देवता थकी सत्पुरुषने मनोवांबित केम न होय ? होयज. हवे यमराजायें मारा थी कहेवाय पण नहिं तेवी, तथा मनने पण अगोचर एवी जात जातनी क्रि मुजने देखाडी पण हुं कइ जो नं कइ न जो नं! एक जो नं त्यां बीजी छुली जांचं, त्रीजी जोंचं तो बीजी छुली जांचं, चोषी जोंचं तो त्रीजी जुली जार्रं! एवो हुं यश्गयो. वली हे राजन्! अहंकारें करीने इंड्नी नगरीने जीते एवी संयमनी नामें यमराजानी नगरी हे, तिहां धर्म राजा राज्य करे हे, तेमां पुण्यवंत लोक वसे हे, तेनी तैजसी एवे नामें ग्रुनका री सजा है. ते सजामां ताम्रचूड एवे नामें दंमधर है, ते खेखण, शाइ, अ ने पुस्तकने चार हाथने विषे धरे हे. इंडादिक सकल देवताई पण ते ध र्मराजानी सेवामां सावधान रहे हे. विष्णु, ब्रह्मा अने महेश, ते पण य मराजानें संतोष राखवा माटे घणुं कष्ट सह है. परमयोगींइ सरखा पण एहनी बीकथी योगान्यासने नजे हे. त्रण लोक जे हे, ते तेहना वननी पेरें सत्कार करे है, माता अंधकारना नाशनो प्रसवनार एवो सूर्य तेनो पिता है, तथा संकावंत जे जीवमां मुख्य एवी संकावती नामें तेमनी मा ता है, ने शनिश्वर एहवे नामे नाइ है, जे वज्जनी पेरें जगतने विषे अति इःसह हे, तथा स्याम हे तो पण जूलोकने पवित्र करनारी एवी यसना नामें तेनी एक बेन हे सर्वने देषकारी धूम्रमुखी एवी धूमोर्णा नामें तेनी पटराणी हे. मरण पामेलाने उत्तम अने धीरपुरुषोने खंधने विषे उपाडवा योग्य एटजे जगत्मां जेने लोको ठाठडी कहे हे, ते जेनुं वाहन हे त्रण जगतना लोक जेने घणो आदर आपे हे एवो वैद्युत एवे नामें तेनो परोलीयों हे, चंम अने महाचंम एवं नामें वे तेना दासो हे, चित्र ग्रप्त नामें तेनो खेखक हे, जे त्रण खोकना जननुं रूडुं तथा माहुं कर्म बेठो बेठो लखे हे, एवी क्रिनो धणी यम राजा त्रूठो थको कल्पहरू स रखो है, ने रूहो तो यम ते यमज है, एम लोको पण कहे है ॥ यतः ॥ यस्मिन्रुष्टे नयं नास्ति, तुष्टे नास्ति धनागमः ॥ नियहानुयहोनास्ति, स

जातः किं करिष्यति ॥ १ ॥ नावार्थः—जेनें रूवे थके नय न होय, अने जेने त्रूवे थके धननुं आगमन न थाय, जेने नियह अने अनुयह ए बेहु नथी ते उत्पन्न थहने शुं करहों ? तेथी कांइ न थाय ॥ १ ॥ एहवी यमराजानी क्रिइ देखीने में महारी दृष्टिने सफल करी मानी. लोक पण एम कहे वे के घणुं जीवीयें तो घणुं देखीयें.

हवे हे राजन ! में यमराजाने घणी युक्तियें करीने आपना नोतरानी निमंत्रणा करी, तेवारें ते मने प्रीतियें पूर्खी थको कहेतो हवो जे राजानो श्वित आदर हे, तो हुं आवीश, पण एक वात तुने कहुं हुं जे तारो रा जा मारो मित्र है, मारो मुरबी है,ने मारे ते घए। वात है, माटे ते जो तेना कुटुंबपरिवार तथा मंत्री प्रमुख सकल सेना सहित मारी पासें आवे, तो हुं तेनी जिक्त करुं ! एवी मने होंश हे. तेमाटे यमराजायें मने वारंवार घ एं करीने कह्यं हे, के तुं एक वार मारा मित्रने कुटुंबसिहत मारी पासें ज हर मोकलजे, एम कहीने मने दिव्य अलंकार तथा वस्त्रादिक दइने घणा आदर सहित घणी दिव्यरूपनी धरनारी एवी अनेक देवांगनाउ परणाव वा मांनी. पण ते परणवा में नाकारो कह्यो तेवारें यमराजायें वेवट एवं कह्यं के एमांची एक कन्यानुं तमें पाणियहुण करो के जेची दूं कतार्थ थानं. तो पण में तेने कह्यं के मारे एकेनो पण खप नथी,मात्र महारा स्वामीनुं विवा इसंबंधि कारण हे माटे तमने तेडवा सारु आव्यो हुं. ने ते देवांगना है राजा तथा प्रधानने देशो, एटजे मारे संतोष हे, कारण के ए कन्या तेनेज योग्य हे. वली शत्रुयें करेला बंधनने विषे, वधने विषे, युद्धने विषे, कोट खेवाने विषे, घरने विषे, उत्सवने विषे, जिहां सेवक कष्ट नोगवे, ते कष्टनुं फल सघलुं स्वामीने होय. एहवुं में कह्यं,त्यारें यमराजा बोख्या जे तुं राजा प्रमुखने इहां उतावले मोकल,एम कही घणु मान दइ मने विदाय कखो.

हवे यमराजायें तमने तेडवाने माटे तथा मार्ग देखाडवाने तथा तमा रा बहु मानने ऋषें वैद्युत नामें पोताना ढडीदारने मारी साथें मोकव्यों हो. माटे तमें हवे तेनी साथें शीघ्रताथी जार्ड, तमारे त्यां जवुं घटे हे. पढी हरिबलना बोलवा प्रमाणें ते वैद्युत ढडीदारें पण विशेषपणे एमज कह्यं तेवारें राजा प्रमुख सर्व सनायें विचाखुं जे एमां कांइ खोदुं नथी सर्व सत्य हे. महाधूर्त एवो जे मंत्री ते तो वली देवनी पेरेंज सत्य करीने मानतो ह्वो. श्राकरुं कपट है, तेने ब्रह्मा पण जाणे निहं. हवे राजा श्र ने प्रधान श्रादे दे१ घणा लोक यमने घेर जवाने उजमाल थयां. यमरा जानुं नाम केतां पण जय उपजे पण ते समयें तो सहुने कौतुक जोवानुं ज्ञान थयुं. लोजीया प्राणी हां न करें? सर्व कोइमां एकें कहां पहेलो हुं जाउं बीजायें कहां पहेलो हुं जाउं एम एक एकथी श्रागल यमने घेर जवा माटे ते यार थया राजाने पूर्वें जे दांत पड़्याथकी पीड़ा उपनी हे ते यमराजा पासें थी मुक्तने रुद्धि मलको एवा लोजना वश्यकी ते समयवेदना किहांए दूर जती ह्वी श्रने राजा यमने घेर जवामाटे सक्क थयो तथा राजाथकी पण पहेलां प्रधान तैयार थयो. तेमज सजानां लोक तथा नगरना लोक पण मांहोमांहे जवाने उत्सुक थयां. सर्वनी मित देवताना प्रजावयी ह्णाती ह्वी! केटलाएक देवकन्या परणवा तथा घणुं इत्य श्रने घणां श्राजूपण ना लोजथकी, केटलाएक कौतुकजोवाने श्रर्थे एम नगरनां लोक राजानी साथें नगरथी वाहेर निकलता ह्वां. जूउ लोजनी राजधानी कहेवी हे ?

हवे राजाना आदेशथी अत्यंत नयंकर वीहामणी एवी महोटी चय र चावी अग्नि सलगावी. कि मलवी तो वेगली हे परंतु नस्मथवाना तो नि श्रय हे तथापि ते कालें एकाय्यचित्तं सर्व कोइ नस्म यावाने जनमाल यता हवा जुवो संसारनुं स्वरूप कहेवुं हे? ॥ यतः ॥ जा दवे होइ मई, अहवा तरु णीसु रूपवंतीसु ॥ ताजई जिणवर धम्मे, करमलयक्रं िट्या सिदी ॥ १ ॥

नावार्थः — जेवी इत्योपार्जनने विषे बुद्धि रहे हे, अथवा रूपवंती स्त्रीने विषे जेहवुं मन रहे हे, तेवी मित जो वीतरागना धर्मने विषे रहे, तो हाथनी हथेलीमां मोक् जाएवो ॥ १ ॥ जाएो मिहरा पीधी होय निह् हुं ? तेम संसार सुखना अनिलाषी एहवा ते लोजना वशयकी नवनवे व चनें करीने गर्जना करता ह्वा, केटलाएक नाचता ह्वा, केटला एक गाता ह्वा, केटलाक हसता ह्वा, अने चयमां पडवाने एकएकथी उतावला थया, ते जोइ हरिबलने दया उपनी तेवारें विचारवा लोग्यो जे में कुबुद्धियं करी महोटो अनर्थ मांम्यो हे ए अपराधें करीनें मुक्त पापीने नरकमां पण क्यां हेकाएं मलजो निहं ? शिक्ता हेवी,ते अपराधीनें हेवी एज उत्तमनुं ल क्ष हे, जला जंमानो जे विचाग समजे नहीं तेनुं जाएपएं कांइ रहे नहीं. हवे इहां क्यो उपाय करुं, के जेथी ए सर्वलोक उगरे ? एवो हरिबल

विचार करें हे, तेटलामां कारिमो यमराजानो हडीदार बोखो जे जेटला श्रिमां पडवाने तैय्यार थया हो, ते सर्व थंनो, हे नाइन ! जो तमे फल ना अनिलाषी हो, तो उतावला न थाउं, कारण के अमारो खामी विषम वे. तेमाटे प्रथम जे कोइ राजानो अतिमानीतो होय, ते आगजधी माहरी सार्थे पडे. त्यारपढी राजा पडे, त्यारपढी सर्वे प्रजा पडे, एहवुं सांजलीने प्रधाने मनमां विचार कस्त्रो जे हुं आगलश्री पडुं, तो मुक्तने निश्रय इष्ट फल थाय. कविकहे हे के, जे मूर्क होय ते संपदाने अनिलाषें प्रथम आ पदामध्यें पडवुं पण न विचारे. एवो विचार तो कोइक बुद्धिमंत होय,तेने ज होय, के हुं अग्निमां केम पडुं ? घणाने मितनो विपर्यास होय हे जे संप दानी प्राप्तिने विषे आगल जर्ये, विपदानी प्राप्तिने विषे पठवाडे रहीयें, पण बुदिवंत जे होय,ते बुदियें करी पुरुषार्थ साधे, दानने विषे वाहनपर बेसवाने विषे, शय्याने विषे, श्राख्यानने विषे, जोजनने विषे, सजाना स्था नकने विषे, खेवाने विषे, देवाने विषे, माधुर्यने विषे, राज कुलने विषे, एट लाने विषे ञ्चागल पडनारने पूर्ण फल याय. तथा वली ग्रून्यने विषे, श्चर एयने विषे, पाणि प्रवेशने विषे, संयामने विषे, जवनने विषे, गाम उपर चढवाने विषे, हेते उतरवाने विषे, मार्गने विषे, रात्रिने विषे, एटखे तेका णे ञ्यागल जनारो इःखी थाय. हवे ते मूर्ख प्रधान एम मनमां चिंतवतो रा जाने कहेतो हवो के, हे स्वामिन ! कहा तो पहेलां हुं ठडीदारनी संघाते जाउं ? राजायें कीधुं के जाउं. एम राजानी आज्ञा थयाथी जाएीयें स्वर्ग सुख जोगववाज जतो न होय ? तेम कृतार्थपणुंज मानतो मनमां हर्ष धर तो थको ते प्रधान, बडीदार देवतानी साथें विकराल एवी अभिमां फंपा पात करतो ह्वो, पडतावेंतज नस्म थ गयो. ते पापबुद्धिनो धणी प्रधा न पोताना मनोरथें यमना घरने विषे महोटे कछें जातो हवो.

हवे राजा पण रंगसहित पतंगनी पेरें अग्निमां पडवा जतो हतो, तेट जामां करुणावंत जे हरिवल तेणें राजानो हाथ जाली राख्यो, पडवा न दीधो. तेवारें राजा कहे ने जे तुं कां मुफने अंतराय करे ने ? ए सांजली हरि बल राजाप्रत्यें कहेतो हवो, के हे राजन ! हुं जे तमने कहुं, ते स्वस्थ थइने सांजलो. अणविचाखुं जे कार्य करे ने, तेहने अत्यंत आलोकें अने परलो कें अनर्थ थाय ने. माटे जे निपुण होय तेणे रूडीरीतें जोइ विचारीने काम करवुं. हे स्वामी यमने मलवानी वात साची म जाएो. तमें क्यां पण मुवा जीवता थया एवं सांजब्युं हे ? मृत्यु पाम्यो,तेहने देवता पण जी वाडवाने समर्थ नथी तो वली बीजो तो क्यांचीज होय ! ए सघलुं में नि पुणतानुं कपट प्रगट कीधुं हे, कारण के कुबुिद एवो मंत्री तेणें कूडी प्रपंच रचना करीने वारंवार प्राणांत संकट मांहे मुक्तने नाख्यो हतो, तेमज तम ने पण इःखमांही नाख्या, तमारा दांत पडाच्या,तेनी तमोने महोटी वेदना थइ. इत्यादिक हेराजन्! ते पापीयें महाझःख दीधुं. तुम सरखा प्राणीने डुर्बुद्धि दीधी,तम जेवा सुजनने परड़ोह, परस्त्रीना लालची कस्रा. कारण के इष्ट मंत्रीयी राजा इःख पामे, ने सुंमंत्रीयी राजा सुख पामे, एटला माटे कपट रचना करीने इष्ट प्रधानने में अग्रिमांहे नाखी नस्म कीधो हे कहां हे. के व्याधि अने वैरी ए बे न्हाना होय त्यांधीज हेदवा पण वधवा देवा नहीं, तमें तो मारा खामी हो ! माटे हुं तमने अग्नि मांहे केम पडवा दु ? हंत इति खेदे जेमाटे कह्यं हे जे, खामीनो डोह करवो,ते महोटुं पाप हे. बीजा नो पण करेलो होह इखना समूहने पमाडे हे तो मित्र, खामी अने गुरु नो डोह कखायी महाडुःख पामीयें,एमां तो ग्रं आश्वर्य हे? एहवी वाणी हरिबलना मुखयकी सांजलीने राजा अत्यंत शंका पाम्यो, अने लाज्यो थको विचार करतो हवो के हा ! ! ए हरिबल महारुं सवलुं इश्रेष्टित जाएो हे ? राजा तेज वेलायें घणी लङ्काधी नीचुं मुख करी ग्लून्य मनयको उनो रह्यो. जाऐं मूर्ज्ञी खावी होय नहीं ? एवो यह गयो.

पठी हरिबंत मीठा वचन रूप श्रोषधें करी राजाने समजावी तेनुं इःख टालतो हवो. राजा पण हरिबंतना मुख्यकी देवतानुं सान्निध्य अने तेनुं श्रृङ्गत चिर्त्र सांजलीने विस्मय पाम्पो यको मस्तक धूणावतो हवो. श्रुने मनमां विचारवा लाग्यो जे एवो महोटो श्रुपराध करनार जे हुं तेनें श्रा महोटी शक्तिना धणीयें बलवा दीधो निहें! वली ए महा सा मर्थ्यवान वतां एणे महारुं राज्य पण न लीधुं? ने हुं श्रुसमर्थ ते एहनी लक्षी लेवाने जजमाल ययो. एटला माटे हुं श्रुधममां श्रुधम हुं. श्रा पर म जपगारीना रणमांथी हुं क्यारे! हूटीश ? इत्यादिक ते हरिबंतनी प्रशं सा तथा पश्चाताप श्रुने पोताना श्रात्मानी निंदा करतो जवथी उद्देग पा म्यो यको घणीवारे श्रुने घणे कष्टें राजा पोताने घेर श्राब्यो. तथा यमरा

जाने घेर जवानी निःफलताये करी विस्तार पाम्यो है शोक जेहने एवां,घणा लोको ते सर्व कौतुकवंत एह्बं जे हरिबलनुं चरित्र, तेहनुं वर्णन करतां थकां पोताना घर प्रत्यें जातां हवां. तिहां तेहिज अकस्मात् निमित्त कार ए थये थके ते राजाने वैराग्य चपन्यो जेमाटे महोटा पुरुषोनी एवी रीत है.

हवे राजा पोतानुं देवुं वालवा माटे हरिबलने पोतानी बेटी अने पो तानुं राज्य ग्रुनमुहूर्ने आपतो हवो. जुवो ए राजानी आश्चर्यता कहेवी हे ? के जेणे राज्यक्रि सर्व हरिबलने आपीने पूर्वला इःकृत क्र्य करवाने काजे सजुरुपासें जइ दीका लीधी दीक्षा लइने मोक्स प्रत्यें जातो हवो.

हवे कंचनपुरना राजायें पोतानी पुत्री नाशी गयानुं वृतांत जाणी,खेद पामी, देशोदेश खबर कढावी. त्यारे पंथीजनना मुखयकी हरिबलतुं वृ त्तांत सांजब्युं. कद्युं हे के:- ॥ वार्ताच कौतुकवती विशदाच विद्या, लोकोत्तरः परिमलश्च कुरंगनाचेः ॥ तैलस्य बिंडरिववारिणि डर्निवारः, मे तच्यं प्रसरतीति किमत्रचित्रम् ॥ १ ॥ नावार्थः-कोतुककारी वार्ता, निर्म ल तात्कालिक विद्या, मृगनी नानिनो लोकोत्तर परिमल एटले सुगंधमय कस्तूरी, ए सर्व पाणीने विषे जेम तेलनुं बिंड, विस्तार पामतुं इखें वारवा योग्य थाय हे एम ए त्रणे विस्तार लोकोमां पामे हे,तेमां आश्चर्य हां हे? ॥१॥ पढी ऋति दर्षवंत यइ हरिबलने पोतानो जमाइ जाणीने प्रधान आदि महोटा पुरुषोथकी निश्चय करीने, कार्यना जाए एवा राजायें बहुमान थकी पुत्रनी पेरें हरिबलने तेडावी लीधो, ते हरिबल पण प्रथ्वीने विषे इंड सरखो सकल ऋदि सेनायें परिवच्चो, पोतानी त्रण स्त्रीयो सहित, सर्व लोकोने कोतुक अने हर्ष करतो कांचनपुर नगरें आब्यो. राजा तथा राणी पुत्रीने कहेवा लाग्यां के हे वत्से ? तें खड़ायें वर वस्रो, ते अघटतुं कखुं, पण तहारां नाग्यथकी तुं विश्वने पूजनीय एवो नरतार पामी, ते तहारुं महोटुं नाग्य? एम मातापितायें पुत्रीनी घणी प्रशंसा करी. प्रेमने वेकाणें पोतानुं वेकाणुं आपवुं एम जाणी राजा पोतानुं राज्य पण हरि बलने आपी पोतें राणीसहित दीक्दा लक्ष्ने मोक्द जातो हवो.

हवे शत्रुनुं कटक, तथा शत्रुनुंबल, अने दर्प, जे अहंकार तरूप सर्पने टालवाने विषे गरुड सरिखो तथा नाग्यना उदयथकी महोटा राज्य पालतो, थको प्रजाने प्रीतिवंत थतो एवो जे हरिबल,ते त्रणे राणीने पटराणी करी यापतो ह्वो. तेमज बीजा राजाउनी कन्याउनुं पण पाणियहण करतो ह्वो. जेमाटे श्रीतिर्थिकर जे अतुल दान आपे हे,तेनां फल तेमने ते नव ने विषे एवा अञ्चतकारी नथी मलता,परंतु परनवें मले हे अने हिंबलने तो अल्प जीविहंसाना नियमनुं तेज नवमां अतुल फल थयुं. अमृत,कन्या, सूत्र, चरमरत्न, हत्ररत्न, आदि चक्रवर्तीनां जे रत्न, वह तृक्तुं बीज, बीजनो चंड्मा, सिंहनुं बालक, तंनु, जीव,जात्यवंत रत्नचिंतामणि प्रमुख, सु वर्ण सिदिनो रस, रसांग विद्या, एकाक्त्ररी महोटी विद्या, ए सर्वेनी उपमा हरिबलने लागु पडे हे. कारण के सुकृत थोडु ने फल तो अत्यंत महोटा थयां. हवे हरिबल पोताना नियमने पालतो थको एम विचारे हे, जे इःखनुं कारण एवं किहां मारुं मान्नीनुं कुल, अधम दिइपणं. अने क्यां आ राज्य कदि? आ सर्व संपदा अने सुख तेने आपनारी एक आ जीव दयाज थह हे एम नीरंतर नियमनी अनुमोदना करतो थको नियमने विसारतो नथी. बीजी सामान्य वात पण क्यारे वीसरे नहीं, तो नवा तत्काल फलने अनुनवमां लावतो एवो नियम ते केम वीसरे?

एकदा हरिबल, पोताना हदयमां विचार हे, के जे गुरुनी देशनारूप अ मृतथकी जाणुं हु जे मुक्तने देवता सरिखी कृद्धि पण दासी थह रही, हे ते गुरु जो खहीं खा पथारे, तो पूर्नु ने वली कृतार्थ थानं ! जन्म सफल क री मानुं ! एम ज्यां विचारे हे तेवामां जाणे हरिबलना ध्यानना खाकष्यी थकाज खाव्या न होय ? तेम ते गुरुजी पधाखानी वनपालके खावीने वधा मणी खापी. ते सांजली राजा हर्षवंत थयो थको वनपालकने वधामणी खापी महोटा खामंबरे करी गुरु पासें जइ वांदीने तेमना मुख्यी धर्म देश ना सांजलतो हवो ॥यतः॥ यदियावा तोये तरित तरिण्धियुदयित, प्रतीच्यां सप्तार्चियदि ह्यजिन शेत्यं कथमि ॥ यदि ख्यापीनं स्थान्तपरि सकलस्यापि जगतः, प्रस्तते सत्त्वानां तदिष न वधः कापि सुकृतं ॥ १ ॥ एहवी गुरुनी देशना सांजलीने मुदित थको विनित करतो हवो, के हे पुण्यनिधे ? तमा रा प्रसादथकी हुं तत्कालपणे खन्नत लक्षीनो जोगवनार थयो. पण हे म हाराज! हुतो निंदा करवा योग्य हुं, खने पापी हुं, माटे मुक्जणर करुणा करो. हे करुणानिधे ! हे दयाना निधान ! मुक्तने मोक् प्रतें पमाडो, मारुं हितपणुं तमारा चित्तने विषे धारो, मुक्त उपर संतोषित करो, एम कहेतो हरिवल ग्रुरुने प्रणाम करतो ह्वो. सुरुतने विषे एकाय राखतो एवा हरिब लने जोइ विचारीने सत्य वाणीयें करी ग्रुरु कहेता ह्वा के हे राजन्! तुने धन्य हे, जे ताहरी बुद्धि एक धर्मने विषेज हृद्ध है ॥ उक्तंचः—केचिक्रोजन जंगिनिर्नरिधयः केचित् पुरंधीपराः, केचिन्माव्यविखेपनेकरिसकाः केचिञ्च गीतोत्सुकाः ॥ केचियूतकथामृगव्यमिद्रानृत्यादिदत्तादराः, केचिद्या जाक्तेक्यानरिसका धन्यास्तु धर्मे रताः ॥ १ ॥ जावार्थः— केटलाक अनेक प्रकारना जोजनमां तत्पर हे. तथा केटलाएक स्त्रीना जोगने विषे तत्पर हे, केंटलाक फूलनी मालाउमां तथा शरीरें चंदन विखेपन करतुं तेहमांज एक रसीया हे, केटलाएक गीतगान सांजलवाने उत्साहवंत हे, केटलाएक जूगटुं रमवुं, आहेडो, मिद्रा, नाटक इत्यादिकने विषे बांध्यो हे आदर जेणे एवा हे, केटलाएक तो घोडा, हस्ती, त्रुपन, सुखपाल तेना रसीया हे, पण धन्य हे, तेने के जे धर्मने विषे राता हे?

हवे ते धर्म वे प्रकारनो हे. तेंमां एक साधुनो धर्म ने,बीजो श्रावकनो धर्म,तेंद्रमां निश्चे धर्मनुं मूल तो जीवदयाज हे. बाकी जे धर्म ते तो सघलो जीवदयानो विस्तार हे. ते जीवदयाने पालवाने निपुण जे हे, ते सर्व विरति साधुपणुं नजवाने रित करे हे. ते चारित्रविना दयानुं पालवुं रूडी रीतें न थाय, अने जे मनुष्य साधुनो धर्म पालवा समर्थ नथी, ते गृहस्य धर्म पाल वाने प्रवीणता राखे, तेने समिकत सिहत श्रावकनो दयाधर्म बारव्रतरूप जीवने राखवामाटे वीतरागें कह्यो हे. लोक पण लक्कीने विषे विविधप्र कारना जला जपाय प्रत्यें हुं नथी करता ? जेम नागरवेलथी पान वेगलां बे, पण नागरवेल बेदवाथी पान तुरत सुकाइ जाय बे, तेमदया विना स घला धर्म अवस्य योडा कालमांहि नाश पामे हे. एटलामाटें नो नव्या ? बीज़ं सर्व ढांमीने दयाधर्मनुंज आराधन करो, प्रमाद मूकीने दयाधर्म आ राधो. एवी गुरुनी देशना सांचलीने हरिबल पोताना गुरुपासेंची समिकत सहित श्रावकनां श्रणुव्रत श्रादरतो ह्वो. तेमज शेष बीजां व्रत पण यथाशक्तियें लक्ष्ने पोतानी स्त्रीयो सहित घेर गयो. जेम दरिइी, क ल्पनुक्तने पामे, ने दर्षवंत याय तेम हरिबल श्रावकना धर्मनी प्राप्ति य वाथी हार्षित थयो. पोताना देशने विषे अमारीनो पडह वजडावतो हवो. वली सात व्यसनने ढांमतो हवो. हवे ते सात व्यसन, कहेवां ढे ? तो के

जगत् जे व्यसनोमां सर्व रची रह्यं हे. एवा सात व्यसन ते सात नरक ना आपनारां हे तेने पोताना देशमांथी बाहार काढतो हवो. वली अमृत ने तुंबहें करीने घणा जगतना जीवना रोग टाली उपगार करतो हवो ॥यतः॥ मेहाणजलं चंदा,ण चंदणं तरुवराण फलनिवहो ॥ सप्पुरिसाणंजीवितं,सा फलं सयललोत्र्याणं ॥ १ ॥ नावार्थः - वर्षानुं पाणी, चंइमानुं तेज, बाव नांचंदन, वृक्तनां फल, फूल, स्रत्युरुपनुं जीवितव्य, ते सामान्यपणे सकल लोकने जपगारी है ॥१॥ इत्यादिक अगणित पुण्यें करी,न्यायनिपुणतायें करी धर्मनुं ते एक बन्न राज्य तेने हरिबल पालतो हवो. माटे जातथी,करणीथी, संगतिथी,कुलमयीदाथी जो पण ए हरिबल हलको हतो,तो पण जुवो एक द याधर्मना प्रतापथी राजा थयो,माटे कुलजात वगेरेतुं कांइ पण कारण नथी. कह्यं हे के:-॥ यतः ॥ कौशेयं क्रमिजं सुवर्णसुपला,दूर्वापि गोलोमतः ॥ पंका नामरसं शशांक उद्धे, रिंदीवरं गोमयात् ॥ काष्टादि प्ररहेः फणादि मणि र्गोशिषेगोरोचनः ॥ प्राकाइयं स्वयुणोदयेन युणिनो गन्नंति किं जन्मना ॥ १ ॥ नावार्थः-हिरागलवस्त्र ते कमीजीवयी उपजे हे, माटीयकी सुवर्ण, गाय नारोमथकी दूर्वा, कादवथकी रातुं कमल, समुद्दयकी चंद्रमा, ढाएमां हिथी स्याम कमल, काष्ठमांदीथी अग्नि, सपैना मुखयी मणि, गायना मस्तकथी गोरोचंदन, उत्पन्न थाय हे. एटले एवा हलका पदार्थथी पूर्वी क्त सर्व उत्पन्न थाय है, पण पोताना गुणने उदयें करीनें विख्यातिने पामे बे,ते विख्यातिमां कांइ जन्म कारण नथी. ऐश्वर्य,शौर्य, उत्तमपणुं, तेणें करीने हरिबल सिंह जेवो यातो हवो, आ एटले एवा गुणो हरिबलें, सिंहना लीधा, माटे सिंह सरखो ते थयो. परंतु चपलपणुं कर्दमादिकमां आसक्त पणुं, श्त्यादि अवगुण सिंहमां हे,ते हरिबर्जे लीधा नहिं, वली ते धीवर ते निछ जात जोवामां हे, परंतु ते निछ नथी पण ते निछनी नीति होडीने धीवर ते धी जे बुिहमान् पुरुषो तेहने विषे वरप्रधान हे. एटले प्रथमनुं धी वर पणु मूकीने हाल जे धीवर शब्दनो अर्थ कह्यो एवो ते धीवर थयो. तथा ते राज्यसंपदाने विषे पण दयाव्रतने न ढांमतो हवो. हवे हरिबक्षें पो तानी पहेली स्वी मारुणने तेडावीने शीखामण दश्ने प्रतिबोधी. पर्री संसा रनां सुख नोगवतां घणो काल गयो. एटले वली ग्रह सांचला तेथी सुस म समय सरिखो एहवो घणो उत्तम समय ए हरिबलने थये थके ते अ

वसरने जाए।ने आगमना जाए जे ग्रुरु ते पए वखतें ते पुरमां आवता हवा. ते महोटा पूजनीयनुं आगमन सांजलीने हरिबल घणो खुशी थतो थको चतुरंगिणी सेना लइने गुरुने वांदवा गयो. त्यां गुरुने वांदी यथोचित स्थानकें उपदेश सांजलवा वेतो. हवे गुरु कहे हे, के हे राजन् ! तुं जीव दयायकी आ सर्व क्रि पाम्यो, एम एक जीव उगाखायी एटलुं फल तुने षयुं. तेवारें जो सर्व जीवने जगारे, तो तुं मोक्त्नुं सुख पामे. ते सर्व थकी जीवदया तो केवारें पखे ? तो के ज्यारें चारित्र लीये, त्यारें पखे. अने श्रावकधर्मने विषे तो मात्र सवाविशानी दया कही हे परंतु साधुने वीशवीशानी दया कही है. ते अधिकार पूर्वें कह्यों है. एटलामाटें तुं हवे यतिधर्म अंगीकार कर, के जेथकी इःखें जीतीयें, एहवो जे मोह, तेहने हणीने पोतानुं त्रात्मिक राज्य खे, एवो ग्रुरुनो उपदेश सांजलीने परमवै राग्यवंत एवो हरिवल, घेर आवीने वडा पुत्रने राज्यपाटें थापी, पोतें त्र ण राणी संघातें दीक्वा लड़ने सदाकाल जयणाने विषे मन जोडीने, इःकर तप तपी कर्मक्य करीने, शाश्वतां जिहां सुख हे एवा मोक्तप्रत्यें जातो हवो. एटलामाटे नो नव्यो! ए जीवदयाने विषे हरिबलनुं चरित्र सांनलीने विशेष प्रकारें जीवदया पालवाने उजमाल थाशो, तो पारमात्मिक सुख पामशो॥ ए पहेला ऋणुव्रत उपर हरिवलमान्निनो द्रष्टांत कह्यो ॥

॥ अष ि्तीय अणुव्रत प्रारंनः ॥

॥ बीए अणुवयंमि, परियूलग अलिय वयण विरई ।॥ आयरिय मणसत्ते, इत पमाय णसंगेणं ॥ ११ ॥

अर्थः बीजं अणुव्रत कहेवं हे ? तोके (परि के०) समस्त पणे (यून के॰) महोटा अलीक वचननुं विरमणरूप है ? तेमांहे इहां अप्रशस्त एट से माठा परिणामें जे आचखुं प्रमादने प्रसंगें करीने इत्यादि पूर्ववत्.

ह्वे मृपावाद केटले कारऐं बोलाय हे ? क्रोधथी,मानथी,मायाथी अने लोचथी, ए चार प्रकारें बोलाय हे. तथा मन, वचन, कायायें करी राग थी देपथी, अने हास्यथकी ए त्रण प्रकारें जुतुं बोलाय. वली बीजा त्रण प्रकार कहें हो. चयथी, लङ्काथी, अने क्रीडारसथी, ए त्रण प्रकार तथा रतिथी, अरतिथी, दाहिण्यथी, वाचालपणाथी अने विकथादिकें करी खुतुं बोलाय. अर्थात् ए पूर्वोक्त सर्व प्रकारें करी जूतुं बोलाय हे.

जेथकी जीवने पीडा उपजे, ते जो सत्यवचन होय तोपण ते जुढ़ं जा णवुं. कह्यं हे के ॥ अलियं न नासियवं, अि हु सवंपि जं न वत्तवं ॥ सचंपि तं न सचं, जं पर पीडाकरं वयणं ॥ १ ॥ नावार्थः— जुढ़ं वचन बोलवुं नहीं, तथा ते साचुं पण न बोलवुं, के जे साचुं बोलवायी परजी वने पीडा उपजे, तेवुं साचुं पण न बोलवुं ॥ १ ॥

ते मुषावाद व्रत वे प्रकारें हे, एक तो स्यूज महोटुं जे अत्यंत इप्टपरि णामे मुषावचन नांखवुं के जेथकी लोकविरुद्ध राज दंमादिक नय उपजे, ते स्यूज जूव किह्यें अने तेथी विपरीत जेथकी राजदंमादिक लोक विरुद्ध नहीं उपजे, ते सुद्धा जूव कहीयें.

वली प्रकारांतरें मृपावाद कहे हे ॥ यतः ॥ इविहोय मुसावार्ड, सुह मो यूलो अ तह इह सुहमो ॥ परिहासाइण्पचवो, यूलो पुण तिव संकेसो ॥ १ ॥ जावार्थः — मृपावाद वे प्रकारनो हे. एक सुक्का अने बीजो स्यृल, तिहां हास्यादिकें मृषावचन वोलवुं ते सुक्का मृपावाद जाणवो. अने जे अ त्यंत आकरा तीव्रसंक्षेशें करी बोलवुं, ते स्यूलमृपावाद जाणवो.

इहां श्रावकने सूक्षा मृपावादनी जयणा है, तेनुं पच्चाकाण नयी श्रने स्यूल प्रृपावादनुं पच्चाकाण है.जेमाटे श्रावक्यकनी चूर्णीमां कह्यं है ॥यतः॥ जेण नातिएण श्रप्पणो परस्स वा श्रक्षववाघाउं॥ श्रक्षकं सोश्र जा यते तं श्रहाए श्रणहाए वा ण वयक्कित्त ॥ नावार्थः—जे वचन वो खे यके पोताने श्रने परने श्रत्यंत व्याघात थाय, श्रत्यंत संक्षेश थाय तेवा वचन पोताने स्वार्थे बो खे श्रथवा स्वार्थ विना बो खे.

हवे सूत्रनी गाथानी व्याख्या किरयें वैयें. मृपावादिवरमण रूप बीज़ं अणुव्रत परिस्यूल ते अति महोटुं स्थूल एटले बादर ते लोकने विषे पण अपकीर्त्त प्रमुखनुं कारण एवं अलीक वचन वे. हवे तेना पण पांच नेद वे, एक कन्यालीक, बीज़ं गवालीक, त्रीज़ं नूम्पलीक, चोथुं परनी थापण उलववी, पांचमुं कूडी साद्दी नरवी, ए पांच नेद जाणवा.

१ तिहां प्रथम कन्याजीक ते जे विष कन्या होय तेने रागथी एम कहे के ए विषकन्या नथी, तथा जे विषकन्या न होय तेने घेषथी विष कन्या कहे, तेमज वली जे कन्या शीलवती होय व्यनिचारणी न होय तेने डाशीला कहे अने जे डाशीला होय तेने सुशीला कहे, ते सर्व कन्यालीक जाणवुं.

र बीज़ं गवालिक ते जे गाय थोड़ं दूध करती होय तेने रागें करीने कहे के ए घणुं दूध करे हो, अने जे घणुं दूध करती होय तेने घेषें करीने कहे, के ए थोड़ं दूध करे हो, इत्यादिक जूतुं बोलवुं ते गवालिक जाणवुं.

र त्री जुं नो स्यालीक ते जे पोतानी नूमिका होय तेने रागधी पारकी कहे अने पारकी नूमिका होय तेने देवधी पोतानी कहे तथा जे उत्तर नूमि होय तेने रागधी उत्तम खेत्र कहे अने जे उत्तम खेत्र होय तेने दे पथी उत्तर नूमि कहे. इत्यादिक जूढुं वोजवाने नूमि संबंधि अलीक कहियें. ए उज्जलाववा माटें कह्यां, परंतु उपजक्रणधी कन्याजीक, गवाजीक, जू स्याजिकनी पेरें सघजाए दिपदाजीक चतुष्पदाजीक पण वर्क्कवां. कहेलुं हे यतः ॥ कन्ना गहणं इपयाणं,सूयगं चउप्पयाण गोवयणं ॥ अपयाणं दवाणं, सवाणं जूमिवयणं तु ॥ १ ॥ नावार्थः— कन्याजीक पदे सर्वे दिपदनुं अजीक जाणवुं, अने गवाजीक पदें सर्वे चतुष्पद गाय घोडादिकनु अजीक जाणवुं, तथा अपदें करी नूमि, इत्य एटजे धन प्रमुख इत्यादिक सघजा ए पद जाणवां ॥ १ ॥ इहां आशंका करे हे, के जो तमे एम कहो हो तो दिपद, चतुष्पद अने अपद ए त्रणना यहणधकीज सर्वे संयह केम न कह्यों? के जे माटें ए त्रणमां सर्वे आव्युं ?

हवे इहां गुरु उत्तर कहे हो. जे तमें कहो हो ते सत्य हे पण कन्या लीक आदें देशने लोकने विषे अत्यंत निंदनीय हे तेथी तेने विशेषें हांम वा माटें जूदां जूदां करी कह्यां हो. वली कन्यालीकादिकथकी नोगांतराया दिक अनेक प्रकारना रागद्देषादिकनी हिद्द प्रमुख दोष प्रगट थाय हे.

ध ह्वे पारकी थापण उलववी ते पण महापातकनी हेतु है. ते महा पापी विश्वासघातनों करनार है कारण के ए वात बे जणज जाणे त्रीज़ं कों कें जाणे नहीं जेमाटे बिचारों थापण मूकनारों धणी है ते एम जाणे जे म हारों ए अंतरनों परमवल्लन है, एम धारीने कों इनी साझी विना पण पो तानुं धनधान्य, तेने घेर मूके, पही ते राखनार धणी महालों पराज्यों यको विश्वासघात करीने उलवी नाखे, तो एना जेवो बीजो कों इष्ट पा पिष्ट समजवोज नहीं. इहां जो पण ए थापणमोसों जे है ते अदत्तादा नज ने एवी आशंकानुं निवारण करवा माटे कहे ने के इहां आ व्रतने विषे वचननुंज प्रधानपणुं वांन्धुं ने,कारण के थापण राखीने पनी ना कबूल थवा थी जुनुं बोट्युं तेथी अलीक वचन थयुं माटे तेने आ वीजा व्रतमां कह्यं ने.

प्रांचमुं कूडी साक्ती नरवी ते लेवडदेवडने विषे कोइने साक्ती कस्रो होय, तेने लांच आपे अथवा हेपने वहों करी पोतें जूठी साक्ती नरे, ते आ लोकने विपे अने परलोकने विपे पण अनर्थनो हेतु हो, जेम वसु रा जायें अज अब्दना अर्थनी जूठी साक्ती नरी, तेथी तत्काल मरण पामीने नरकें गयो ॥ लोकिकशास्त्रेप्युच्यते ॥ बूहि साक्त्यं यथाहनं, लंबतेपितरस्तव ॥ त्वदीयवचनस्यांते, पतंति न पतंति च ॥ १ ॥ नावार्थः—लोकिक शास्त्र मां पण कहे हो, के जेहवुं हे तेहवुंज कहे, तहारा पितरी हो, ते अधर रह्या हो, तहारा ते वचनने अंतें पड़े, अथवा न पड़े, एम हो तेमां कूडी साक्तीयी पितरीयो पड़शे नरकें जाशे ? माटें कूडी साक्ती नरीश मां ॥ १ ॥

इहां पारकी थापण उनववी अने कूडी साही नरवी, ए वे प्रकारनुं जुतुं बोलवुं, ते यद्यपि द्विपदादिक संबंधि अलीक वचनमांहे अंतर्जूत याय वे, तो पण लोकने विषे थापण मोसो अने कूडी साझी अति निंदनीय है. माटे जूदां जूदां कह्यां. जोिकिक शास्त्रमां कह्यं हे ॥ कूटसाङ्की सुहद्दोही, कृतन्नोदीर्घरोपवान् ॥ चलारः कर्मचांमालाः, जातिचांमालपंचमः ॥ १ ॥ तथा च ॥ इस्ते नरकपालं ते, मदिरामांस निहिषा ॥ नानुः प्रज्ञति मातंगि, किं तोयं दक्तिणे करे ॥ २ ॥ चांमाली प्राह ॥ मित्रहोही कतन्नश्च, स्तेयी विश्वासघातकः ॥ कदाचिच्चितियोमार्गे, तेनेयं क्रिप्यते हटा ॥ ३ ॥ क्रूटसा क्वीमृपावादी, पक्तपाती जगटके ॥ कदाचिज्ञ जितो मार्गे, तेनेयं किप्यते व टा ॥ ४ ॥ नावार्थः-कूडी साख नरे, मित्रडोह करे, कस्बो ग्रण न जाणे. दीर्घ रोष राखे, ए चार, कर्म चांमाल जाएवा अने पांचमो जाति चंमाल जाणवो ॥ १ ॥ तथा नानुपंमित पूर्व वे के तहारा हाथने विषे मनुष्यनी तुंबडी हे, परंतु मदिरामांसनी नक्षण करनारी, एवी हे चांमालि ! ताहारा दक्षिण हाथने विषे जे पाणी है ते शा माटे है ? ॥ २ ॥ तेवारें चांमाली कहे हे:-जे मित्रइोही, कस्या ग्रुणनो अजाण, चोरीनो करनारो, विश्वास घाती एटला जन मार्गने विषे चाल्या होय तेएो करी धरती अपवित्र धइ होय तेमाटे आ जलयी हुं धरतीयें ढांट नाखुं हुं ॥ ३ ॥ कूडी साद्धी जरे,

मृषा बोले, जूरा जगडानो पक्तपात करे एवा पुरुष धरती उपर चाल्या होय, तेने लीधे अपवित्र थयेली प्रथ्वीने ग्रांट नाखीयें ग्रेथें ॥४॥ ए पांच प्रकारतुं जूरुं वचन नांखवुं तेतुं जे विरमण एटले टालवुं ते मृषावाद विरमणव्रत कहियें,तेने विषे "आयरियमण्पसन्ने" एटले अप्रशस्तपणे प्रमादना वश्यी जे अतिचार आच्छुं होय इत्यादि पूर्ववत् ॥ ए अगीआरमी गाथानो अर्थ कह्यो.

हवे ए बीजा अणुत्रतना अतिचार पिकक्षमे है:-

॥ सहसा रहस्स दारे, मोसोवएसे छ कूड लेहे छ ॥ बीय वयस्स इयारे, पडिक्कमे देसियं सबं॥ १२॥

अर्थः—(सहसा के॰) अकस्मात् पणे अन्याख्यान, बीजो रहस्यान्या ख्यान, त्रीजो खदारा मंत्रचेद, चोथो जूठो उपदेश देवो, पांचमो कूट छेख ते जूठो कागल लखवो, ए बीजा व्रतना अतिचार प्रत्यें पडिक्कमुं हुं ॥१२॥

र पहेलो सहसा शब्दें सहसात्कारें कोइने जुतुं आल देवुं, जेम के आ चोर ते, आ परदारापहारक ते इत्यादिक अणविचाख़ं, अततुं आल कहेवुं, अतता दोपनुं आरोपण करवुं तेने सहसान्याख्यान कहीयें.

श्वीजो रहस्य ते केटलाएक एकांतें वेठा यका आलोच करता होय तेने इंगित आकारें जाणीने ए सर्व राज्यादिक विरुद्ध विचार करे हे, एवं जे कहेवुं ते रहस्याच्याख्यान कहियें, अथवा कोइनी चाडी करवी, ते पण रहस्याच्याख्यान कहियें. जेम कोइ वे जणने मांहोमांहे प्रीति थये ली जाणीने तेनी प्रीतिने त्रोडवा माटे एकएकने इंगित आकारें जोइने एक एकने कहे के तुजने पहेलो ए अमुकप्रकारनी वातो कहेतो हतो एम कहीने वेनी मित्राइ त्रोडावे ते रहस्याच्याख्यान अतिचार कहीयें.

३ पोतानी स्त्रीयें विश्वास राखीने ग्रह्मनी वात करी होय, ते स्त्रीना ग्रह्मनी वात पोताना मित्रादिकनें कहे, ते स्वदारामंत्रजेद कहियें, इहां शिष्य पूछे हे, के रहस्याज्याख्यान अने स्वदारामंत्रजेद ए बेहुमां साची वा त कहेवाय हे, पण तेमां कांइ जुहुं बोलातुं नथी, माटे एमां शानो अति चार लागे ? तिहां ग्रह उत्तर कहे हे, के ए वात जे हे, ते ममेनी हे, माटें ते सांजलवाथी कदाचित् स्त्री तथा मित्रादिकने मरणादिकनो अनर्थ थाय? माटें दोप जाणवो ॥ यतः ॥ न सत्यमि जापेत, परपीडाकरं वचः ॥

लोकेपि श्रूयते यस्मात्, कोशिको नरकं गतः ॥ १ ॥ नावार्थः जेवी पर ने पीडा उपजे, एवं सत्यवचन पण न बोले, जेमाटें लोकिकमांहे पण सांनलीयें वैयें. जे सत्यवचन बोलतां पण कोशिक क्षि नरकें गयो ॥१॥ इहां स्वदाराना यहणनेविषे उपलक्ष्णियी मित्रादिकनो पण मंत्रनेदं जाण वो अने स्वीपण नरतारना गुह्यनी वात अथवा पोतानी सखी संबंधी गु ह्यनी वात अन्यने कहे ते पण ए अतिचारमां लेवी.

४ चोथो मृपा उपदेश ते को इबे जएने परस्पर विवाद थयो होय तेमां जेनी उपर पातानो राग होय तेने वैरी जीतवाना उपायना उपदेश आपे,परने वग वाना उपाय शीखवे,मंत्र,यंत्र ओपधादिकना उपदेश आपे,जेमां निर्दियपणा नी मुख्यता होय एवां शास्त्र नणावे ते सर्व मृपा उपदेशरूप अतिचार जाणवा.

५ पांचमो कागलमां खोटी मोहोर करवी बीजाना जेवा अहर लखीने जूता अर्थ लखवा ते कूटलेख अतिचार जाणवो गाथानो ज्ञेप अर्थ पूर्ववत्.

इहां शिष्य पूर्व वे के,कूडा कागल लखवा, ते तो महोटुं असत्यज वे,तो ते करवाथी शी रीतें व्रतनंग न थाय? अर्थात् थायज. हवे गुरु केहे वे के हे शिष्य! तें कहां ते सत्य वे,पण एटलुं विशेष वे के असत्य महारे न बोलवुं, एवं पश्चरकाण करेलुं वे, तेथी खोटा लेख लखवा ते वात लखवामां आवी पण बोलवामां न आवी, एवे अनिप्रायें करीने मुग्धबुद्धिने व्रतनी अपेक्षा रहे वे: तेमाटे ए कूटलेखने अतिचारज जाणवो. जो जाणपणे लखे, तो अतिचारपणुं वे जे कारण माटे ॥ यतः ॥ सहस्साप्तरकाणाइ, जाणंतो जइ करिक्ततो नंगो ॥ जण पुणणाईनोगा, इहितो तोइ अइआरो ॥ नावार्थः—विचाखा विना जूवां आल आपे, ते जाणी करीने जो करे,तो व्रतनंग थाय पण जो अनुपयोग पणे लखे, तो अतिचार जाणवो ॥ १ ॥

हवे ए सत्यव्रत पालन करवानुं फल कहे हे. एनाथी लोकने विश्वास चपजे, जगतमां यश वधे, पोतानो स्वार्थ थाय,सर्वने प्रिय लागे, सर्व को़ड़ तेनुं वचन मान्य करे, तेनुं वचन अफल न थाय, तेनां वचन सर्वने मधुर लागे,एटला गुण थाय,जेमाटे सघलाए मंत्रादिक योगसिदि पामवी. तथा धर्म,अर्थ अने काम, ए सर्व सत्यनाज बांध्या हे, रोगशोकादिक पण सत्य यकी नाश पामे, जे सत्यवादिपणुं हे, ते यशनुं मूल हे. सत्यवचन ते पर मविश्वासनुं कारण हे, सत्यवचन ते स्वर्गनुं बारणुं हे, सत्यवचन ते मोहें जवानुं पगथीयुं हो, लोकने विषे पण सत्यपणे धरती रही हो, सत्यथी आ काजों सूर्य तपे हो, सत्यथकी वायु वाय हो, सर्व कांइ सत्यने विषे रह्यं हो. जोइये हैयें तो संप्रति कार्ले पण सत्यवादी धीज करवाने विषे तैयार थाय हो तो पण पाहो निर्मल थइने निकले हो, राजासरखा तेनी पूजा करे हो, जगतमां प्रशंसा थाय हो, सहुको तेने जलो जलो कहे हो.

हवे जे पुरुष ए बीज़ं वर्त नथी खेता, अश्ववा जरूने अतिचार जगाडे हे, अवला चाले हे, तेनां फल कहीये हैयें. ते जेम जेम बोले हे, तेम तेम अप्रियवादी थाय हे. ते जो ग्रुनकारी बोले हे तो पण तेनुं को ह सांजलतुं न थी केम के सहु जाणे जे ए जुहा बोलो हे, माटे ए बोलगे, ते साचुं नहीं जहोय. अने सत्यवादी एकज वचन बोले, तेने सर्व को इसत्य करी माने अने असत्य बोलवाथी परजवें डुग्ध ग्रुख वालो थाय, तेनो ग्रुखपाक थाय. तेनुं वचन सहुने अनिष्ट लागे, ते घणो कटुनाषी थाय, मूर्ख थाय, बिधर थाय, मूंगो थाय, तेनुं बोल्युं समजाय नही, इत्यादि सर्व पूर्वें घणा जुहां वचन बोल्यां होय, तेनां फल जाणवां. अने आ जवमां पण जुहा बोल नारनी जीन कपाय, घणा वध बंधादिक पामे, अपयश पामे, तेना धननो नाश थाय, एटला वानां जुहा बोलवाथी थाय.

जे असत्यवादी होय, तेनो कोइ पण विनय न करे, अने ते जो शांत दां तादिक घणा गुणें करी सहित होय, तो पण तेनो कोइ विश्वास करे नहीं जोिककव्यवहारमांहे तेनो कोइ आदर न करे अने धर्मने विषे पण अधि कारपणाने योग्य न होय ॥ यतः ॥ जाउ अ बीअं इकं, नासइ नारं गुड स्स जह सहसा ॥ तह गुण गण असेसं, असच्च वयणं विणासेइ ॥ १ ॥ नावार्यः— जेम कडवी तुंबडीनुं एक बीज नाखवाथी हजार नार प्रमाण गोल होय ते तत्काल कटुक विषरूप थइ जाय, तेम समय गुणना समूह होय पण एक असत्यरूप अवगुण होय, तो ते सर्व गुणनो विना श पइ जाय ॥ यतः ॥ वायसपयिम्म किंपिहु, सामुद्दिय लक्कणाण लकं पि ॥ अपमाणं कुणइ जहा, तह अलियं गुणगणं सयलं ॥ १ ॥ तालपुडं गरलाणं, जह बहु वाहीण खिनिउ वाही ॥ दोसाण मसेसाणं, तह अविगिन्नो मुसा दोसो ॥ १ ॥ नावार्थः— जेम सामुह्क शास्त्रमां कह्या प्रमाणें जेहवां जोइयें, तेवां सर्व लक्कण उत्तम होय पण जो एक कागडाना पगनुं अपल

क्षण होय तो तेने लीधे सर्व उत्तम लक्षण ते कुलक्षण जेवां थइ पडे,तेम मनुष्यमां जो एक मृपावादपणुं होय तो ते सघलाए गुणना समूहने अप्रमा ण करे हे ॥ १ ॥ तालपुट विप तथा सप्पीदिकनी गरल लाल प्रमुख जे हे, ते जेम कोइना उपर पडवाथी तेने अवगुण करनारी थाय हे, तथा श रीरनो क्य पण करे हे, तेम समस्त दोपमांहे मृपानापा रूप दोप ते महो टो इगंहनीय हे, एथी जीव धर्मना फलने न पामे ॥ १ ॥

हवे ए असत्य वचन उपर ज्ञेवना पुत्रनो द्वष्टांत कहे वे:- कोइ एक साधनी सेवा करनारो श्रावक हतो,तेनो पुत्र नोधिमन हतो, एटले धर्म रहित हतो, तेने तेना पितायें घणुं समजावीने बलात्कारें गुरुनी पासें आ एयो, जेवारें गुरुयें तेने धर्मोपदेश दीधो, तेवारें ते शेवनां पुत्र धूर्नपणे गुरु नो उपदेश सांजली रोमांचित् थइने गुरुनुं कह्यं सर्व सत्यकरी मानवानी पेरे सांजलवा लाग्यो. श्रावकना बारे व्रतनुं स्वरूप गुरुयें समजाव्युं, ते सां जलीने प्रतिबोध पाम्यानी परें उठी उजाे थइने गुरुने कहेवा लाग्यों के मने व्रत अंगीकार करावो तेवारें ग्ररु पण तेने धर्ममां दृढ करवा माटे तेनी घणी प्रशंसा करता हवा,ते सांजली ज्ञोवना पुत्रें गुरुने कह्यं के हे महाराज ! एक मृपावाद विरमणवत मूकीने वीजा अगीयारव्रतनो नियम मुक्तने आपो, कारण के असत्य त्याग करवानो व्रत हुं गृहस्य हुं माटे मुफयी पले नहीं. बाकी बीजां व्रत पण सत्य बोख्या विना पालीश एवो तेनो व्रत पालवाने अयोग्य आशय जाएीने गुरु तथा माता पितादिक सर्व कुटुंबें तेने ज्वेखी मूक्यो जेमाटे श्रीहेमचं इाचार्यजीयं कह्यं हे ॥ यतः ॥ पारदारिकदस्यूना, मिस्ति काचित्प्रतिक्रियाः ॥ असत्यवादिनः पुंसः, प्रतिकारो न विद्यते ॥ १ ॥ एकत्रासत्यजं पापं, पापं निःशेपमन्यतः ॥ इयोस्तुला विधृतयो, राद्यमेवा तिरिच्यते ॥ २ ॥ जावार्थः परस्त्री गमन करनार तथा चोरीना कर नार माटे प्रतिक्रिया एटले कोइक जपाय हे, पण असत्यवादी पुरुपनों प्र तिकार एटले उपाय कोइ नथी ॥ १ ॥ एक स्थानकें जुवा बोलवानुं पाप राखीयें अने एक स्थानकें बीजा सर्व प्रकारना पापने राखीयें, ए वेहुने त्रा जुञ्रामां नाखी साहामा साहामा तोलीयें तो मृषावचन बोलवाना पापतुं त्राजवुं जारे थारो अने नीचुं नमी जारो ॥२॥ ए बारमी गाथानो अर्थ ॥१ २॥ हवे ए बीजा व्रतने विषे द्रष्टांतरूपें कमज्ज्ञोतनी कथा कहे हे.

विजयपुर नामा नगरने विषे दीनडःस्थित जनने आधारनूत एवो नय सार नामें राजा राज्य करे हो. तेज नगरने विषे सरज स्वनावी, सत्यवा दी, नगरमां महोटी ख्यातिवालो, कमल सरखो सुकुमार, अल्पलोजी, अव्प मोह्वालो, परस्नीसहोदर, **उचितनो जाए, कत**क, वली सत्य प्र तिज्ञावान, धर्मिष्ठ एवो, कमज्ज्ञोठ नामें श्रावक वसे हे. वज्ञी ते कमज्ज्ञो वनी शीलगुऐं करीनें निर्मल एवी कमलश्री नामें स्त्री हे. तेहने एक विम ज नामें पुत्र हो, ते नामें तो विमल हो, पण करणीयें जो जोइयें, तो सम ज हो. एटले मिलन हो, लोकमां एवी कहेवत हो के " बाप तेवा बेटा " होय, पण ते विमल तो जेम रविनो पुत्र शनिश्वर हो, तेम तेना पिताय। उलटोज थयो हे. उक्तं चः-न म्लापितान्यखिलधामवतां मुखानि, नास्तं तमो न च कताच्चवनोपकाराः ॥ सूर्यात्मजोहमिति केन गुणे न लोका न, प्रत्यापियप्यसि शनेश पदैर्विना त्वं ॥ १ ॥ नावार्थः समस्त तेजवंत नां मुख पण तें म्लान केहतां मेलां नथी कखां,तथा अंधकार पण टाव्यो नथी, त्रण जुवनमां जपगार पण कोइने कस्रो नथी, अने कहे वे जे हुं सूर्यनो पुत्र बुं,एम हे शनिश्वर! शमकखा विना कये गुणे करीने तुं लोकने विश्वास उपजावीश ? हवें ते विमल जे हे, ते धर्मने नामें तो नाशी जाय, अने धनने नामें उजमाल थाय अने वली तेमां पण पोतानुं पंमितपणुं माने, तथा पोतानी प्रशंसा करे. एम करतां थकां एक दिवसें पुत्रने पिता कहे तो हवो के हे पुत्र ! धननी उपार्जना करे ग्रुं थाय ? माटे गुणनुं उपार्ज न तुं कर. कह्यं हे के ॥ यतः ॥ आत्मायने गुणाधानं, नैर्गुण्यवचनीयता ॥ दैवायते पुनर्वित्तं, पुंसः को नाम वाच्यता ॥ १ ॥ नावार्थः- गुणनुं जेरा खबुं, ते खात्माने वश हे, खने निर्धणपणुं ते निंदनीय हे, वित्त ते नाग्यने आधीन हे, नाम इति कोमलामंत्रणे एथी पुरुष एहवुं नाम ते ग्रुं कहीयें? एटंला माटे गुणनुं उपार्जन करे थके धननुं उपार्जन स्वतः रूडी रीतेंज निपजे हे, जो ग्रण न होय तो गृहस्थपणानो जे उद्योत ते निश्चें पहेवणा सरखोज जाणवो, एटला माटे हे पुत्र ! तुं गुणनुं जपार्जन कर. कहां हे के:- ॥ ग्रुणेष्वेवाद्रः कार्यः, किमाटोपैः प्रयोजनं ॥ विक्रियंते न घंटा निर्गावः हीरविवीजताः ॥१॥ नावार्थः- गुणने विषेज आदर करवो, घणे

आमंबरे ग्रं प्रयोजन ? जो दूधरिहत एवी गाय होय तो ते कां इ घंटादिकनी शोनायें करीनें मूख्य न पामें. पण तेमां जो दूध होय, तो मूख्य पामे,एम विविध प्रकारनी युक्तियें करीनें समजाव्यो, तेवारें लक्कायें करीने पितानुं वचन मान्युं, पण ते वचन,मने करी आद्धुं नहिं. त्यार पढी धूर्तनी पेरें ते कमलज्ञोतनो पुत्र विमलकुमार धूर्ततायी घणुं धन उपार्जन करीने पो ताना पिताने देखाडे. अने एम कहे जे हे पिताजी! जुर्र ! में धूर्चकला यें करीने घणुं धन उपार्ज्यु. गुण उपार्ज्ये शुं थाय ? जे तमें मने गुण उपा ज्यीं इसे धर्म उपाज्यीं फल देखाड़ों हो ? एम पिताने समजावीने वली कहे हे जे हे पिताजी! नीति शास्त्रमां कह्यं हे के:- जातियातु रसातलं गुणगुणास्तस्याप्यधोगञ्चतां. शीलं शेलतटात्पतत्विज्ञनः संदद्यतां वन्ति ना ॥ शौर्ये वैरिणि वज्रमाग्र निपतत्वर्थेस्तु नः केवलं, येनैकेन विना गुणा स्तृणलवत्रायाः समस्ता इमे ॥१॥ नावार्यः-जाति जे हे, ते रसातल प्रत्यें जार्ड, अने गुणना गण जे हे ते वली तेथी पण हेवा जार्ड, शील जे हे, ते पर्वतना तटथकी हेतुं पड़ो, पोताना परिजन ते अग्नियें करी बलो, वेरीने विषे जे पराक्रम करवुं तेहने विषे तत्काल वज्र पड़ो, पण अमारे तो केवल अर्थ जे धन, तेज हो, कारण के एक धन विना समस्त जे गुणो, ते तृ णना अंश सरिखा थाय वे ॥ १ ॥ एहवां पुत्रनां गर्वित वचन सांचली ने पिता बोव्यों के हे पुत्र! जेम सोजानुं जाडपणुं जे हे, ते इःखदायक वे, तेम अन्यायें करीने एकतुं करेडुं जे धन हे, ते पण इःखदायक जाणवुं. अन्याय करनारने आ जवनें दिये पण आकरा विपाक जोगववा पडे है, तेने विषे एक दृष्टांत कहुं हुं, ते सांजल.

शोरीपुरनगरनेविषे कोई जमतो जमतो महाधूर्न आव्यो. ते शाहुकार ने वेषें एक वाणियाने हाटें जोजननो सामान लेवाने अर्थें गयो, ते सामा नना वे पैशा थया, तेथी ते वाणीयाने कहेवा लाग्यो के हे शेव! तहारा पुत्रने मारी साथें मोकल, तो अमारा वाणीयानी इकानेथी हुं अपावुं, ते सांजली तेणे पोतानी पासें बेवेला पुत्रने ते धूर्ननी साथें शीघ्रताथी मोक व्यो, तिहां थकी ते धूर्न ए विषक पुत्रने यहीने दोसीने हाटें गयो, ति हां जारे जारे वस्त्र प्रमुख लीधां, ते लइने ते दोसीने कहेवा लाग्यो के आ मारो पुत्र तमारी पासें बेवो हो, ने हुं शीघ मूख्य लेइने आवुं हुं. कार ण के अमो शाहुकार हैयें, तेथी घडी एक पण कोश्तुं देवुं राखीयें निहं. एम कहीने ते हजामनी शालायें गयो. त्यां हजामत करावीने हजामने कहां के तारी स्त्रीने मारी साथें मोकल, एटले हुं हजामत करावाना पे शा आणुं, एम कही ते हजामनी स्त्रीने लक्ष्ने तंबोलीनी इकाने जातो ह वो. ते हजामनी स्त्रीने बाहार उनी राखी पोतें तंबोलीनी इकाने तंबोल प्रमुख यहीने तेने कहेतो हवो के मारी स्त्री क्हां वेठी हे, ने हुं ताहरा मा गणा पेशा हमणांज लावुं हुं. वली बाहेर आव्या पही ते स्त्री प्रत्यें एम क हेतो हवो के तारुं पण लेखुं हुं लक्ष्मावुं हुं. तिहांचकी पूर्वोक्त सर्वे वस्तु यहीने एक मोसीने घरे आव्यो, अने तेने कहेवा लाग्यों के हे मात! हुं त मारो पुत्र हुं, आ सर्व चीजों जे हुं लाव्यों हुं,ते तमे व्यो. मोसीपण ते वस्तु लक्ष्ने हर्ष पामी थकी तेहने पुत्रीनी पेरें जाणवा लागी अने इव्य आ व्यायी कोण संबंध, सिद्धि न पामे? सर्व कार्य सिद्धि पामेज. ते धूर्च हो निश्चिंत मन थको ते मोसीने घेर सुखयी रहेतो हवो.

हवे जेनी पासेंथी प्रथम जोजननो सामान लीधो हतो ते वाणीयो पुत्र न आव्यो जाणीने तेनी शोध करवा निकल्यो, त्यां तेने शोधतां पो ताना पुत्रने दोशी वाणीयानी इकान पासें रमतो देख्यो,तेथी ते दोशी वा णीयाने कहेवा लाग्यो के आ माहरो पुत्र तमारी इकाने क्यांथी आव्यो ? तेवारें ते दोशी वाणीयो बोल्यो के ए ताहरो पुत्र नथी, पण एहनो बाप तो वस्त्रनुं नाणुं लेवा गयो हे, त्यां सुधीते होकराने आंहीं वेसारी गयो हे. एटला माटे जो ताहरो पुत्र होय तो तुं इव्य आपीने लइ जा, तेम के हेवाथी ते बन्ने जणने मांहोमांहे घणोज फगडो थयो.

ते समयमां हजाम पण पोतानी स्त्रीने शोधतो शोधतो तंबोलीनी इ काने आव्यो, अने तंबोलीने कहेवा लाग्यो जे आ मारी स्त्री तारी इकाने क्यांथी आवी? त्यारे ते तंबोली बोव्यो के ए स्त्रीनो धणी तो तंबोलना पेशा लेवा गयो है, त्यां सुधी आ स्त्रीने आंही मेली गयो है. ते स्त्री जो ताहरी स्त्री होय तो तुं नाणुं आपीने सुखेंथी लइ जा. एम तंबोलीना बोल वाथी ते हजामने पण तेनी साथें घणीज तकरार थइ. एम ते चारे जणां वढतां वढतां राजा पासे गयां, राजा ते चारेनी वात सांचलीने विस्मय पामतो हवो. ने खेद पामी कोप्यो थको कोटवालने तेडावीने कहेतो

हवों के शीघ्रपणे चोर पकड़ी लाव. ते सांजलीने कोटवाले कहां के ठीक, महाराज! ए चोरने हुं सात दिवसनी श्रंदर पकड़ीने लावुं बुं. जो सात दिवसमां न लावुं, तो श्राप मुक्तने गमे ते दंम करजो.

त्यार पढ़ी ते कोटवाल प्रमाद ढांमीने चोरने खोलवा निकत्यो. ते वात ज्यारें पेहेला धूर्ने जाणी, त्यारें ते धूर्ने पण प्रतिज्ञा करी जे सात दि वसमां कोटवालने धूतवो. सातमो दिवस थयो, त्यारें ते धूर्ने कोटवालने घर ज़रने तेनी स्त्रीने कहां जे ताहरा धणीयें सात दिवसमां चोरने पकड़ी लाववानी प्रतिज्ञा करी हे, पण ते चोर न लाव्यो, अने आज सातमो दि वस हे, तेथी राजायें रोप करीने तहारा धणीने हमणां दृढवंधने बांध्यो हे, बांध्या थका तेणे मुक्तने संज्ञा करी जे तुं महारे घेर जा, ने मारी स्त्रीने कहे के तुं नासी जा. जो तुं नाशी नहिं जा अने जो छुष्ट राजाने हा थ पकड़ाइश्च तो महोटो अनर्थ थशे ! ते कोटवालनी स्त्रीयें धूर्चना मुख थी एवी वाणी सांचली के तुरत ते पोतानुं घर पण स्तृनंज मूकीने जागी गइ, तेवारें ते धूर्च घरमांहिथी सर्व इव्य लेइने पोताने स्थानकें गयो. त्या र पही ते कोटवाल घेर आवीने घरमां छुवे हे तो पोतानी स्त्रीने न देख तो कहेवा लाग्यों के अरे मारी स्त्री घरमांथी किहां जती रही ? पण कोइयें कांइ जवाब आप्यों नहिं, तेथी गाममां खोल करवा निकत्यों गा मनां संघलां लोक तेनी हांसी करवा लाग्यां, तेथी ते घणी लक्का पाम्यो.

हवे राजसनाने विषे ते चोरने पकडवानुं बीडुं कामपताका नामें ग णिकायें जाल्युं, ते वात ज्यारें पेला धूर्नें जाणी, त्यारें तेणे पण ते नायकाने बेतरवानी प्रतिका करी. हवे ते धूर्न देशांतरीने वेणें ते कामपताका गणि काने घेर जड़ने केहतो हवो के आज इहां कोइ सार्थवाह परदेशी आव्यो बे, तेणे पांचसो सोल टका मोकख्या बे, ते तुं खे, ने चाल मारी साथें के ते सार्थवाहनी साथें ढुं तुने मेलाप करावुं! ते सांनली ते वेश्या पोतानुं सघलुं काम बोडी धन खेवा माटे (५१६) टका तेनी पासेंथी लइ घरमां मूकीने ते धूर्ननी साथें चाली. ते बन्ने जणां गाम बाहिर गयां, त्यारें ते धूर्न बोब्यो के हे पद्मिनि! सार्थवाह आवे,त्यां सुधी आ परव बे तेनीपासें रहेवानी जगा बे, त्यां वेस, सार्थवाह थोडेक दूर बे, ते हमणां आवशे. एहवामां रात पड़ी, अंधकार थयो अने अर्थरात्रि गइ, तेवारें ते वनमां सिं

ह्ना जयथी बिह्वा लागी, जय पामी थकी धूर्जनी साथेंज रही, तेम करतां ते वेश्यानां निडायें यूर्मित नेत्र जेवारें थयां, अने निडा आवी, तेवारें सुव र्णमय रतें जिंदत एहवा सर्वे अलंकार तेना अंग उपरथी उतारी लड़ने धूर्त नागी गयो. पढी ते वातनी नगरमां खबर पडवाची गणिकानी हांसी थइ. त्यार पढी कामसेना नामें धूतारी गणिकायें चोरने पकडवानुं बीडुं फीव्युं. ते वात पण ज्यारें ते धूर्चें जाणी, त्यारें पंिततनी शालायें सांज व खतें गयो, त्यां जइ पंमितने कह्यं के शीघ्र कमाड उघाडो, अने आ पोधी हुं आपुं, ते त्यो, ए पोथी घणी रूडी है. निश्चें हुं तमने आपवाने आव्यो बुं, ते सांजली पंमित कहेतो हवो के हाल कमाड नहिं उघाडुं. त्यारें ते धू र्नें कह्यं के कमाड न उघाडो, तो तमारो हाथ बहार काढीने आ पुस्तक व्यो. तेवारे ते पंिनतें पुस्तक खेवा हाथ बहार काढ्यो, तेवोज ते धूर्नें पोताने शस्त्रं करीने तेनो हाथ हेदी नाख्यो. ते लक्ष्ने चालतो थयो. कवि कहे हे के ते महापापीनुं कपट अगोचर केणें पण कब्युं जाय निहं. हवे ते धूर्च ते पंनितनो हाथ पोताने हाथें बांधीने कामसेना गणिकाने घेर गयो. ते ग णिकायें धूतारो उलख्यो, तेथी तेने कारमो प्रेम देखाइती हवी. ते धूता रायें जाएयुं जे मने गणिकायें उलख्यो है, तो पण तेनी साथें स्वेज्ञाचारी पणें आपणे रमवुं ! एम विचारीने तेनी साथें रमतो हवो. दंनें करीने ते गणिकायें जाएयुं जे एज धूतारो हे तेथी जेवो जवा लाग्यो तेवोज तेनो हाथ पकड्यो. हवे ते धूर्नें जे पंमितनो हाथ वेदीने पोताने हाथें बांधेलो हतो, ते बेद्यो. पढ़ी ते गणिकाना घरमांची सार सार वस्तु लइ पोताने स्थानकें चाव्यो गयो. जेवारें प्रनातनो समय थयो, तेवारें राजानी सना ने विषे ते गणिका आवीने ते धूर्चना हेदेला हाथने देखाडती हवी. जेना हाथ हेदेला ह्यो, ते धूर्न जाणवो. एवी वात कहेती हती, तेटलामां ते पंिित बेदेला हस्ते पोकार करतो राजसनायें आब्यो, ने तेणे पोतानुं सर्व वृत्तांत कह्यं, तेथी सघली सनायें ते गणिकानी हांसी करी. त्यार पढी रा जानो धोबी जे महाधूर्त है, तेणे ते चोरने पकडवानुं बीडुं जीव्युं. ने क हेवा लाग्यों के ए चोरने हुं पकड़ी लावुं. अन्यायमांहे आसक एवा ते धूर्नें ते धोबी, मने खोले है, एवी वात जाणी, त्यारें धोबीने घेर रातने समय खाव्यो, ते धोबीयें तेने पूठ्युं के तुं परएयो हो के निहं? त्यारें धूर्नें

कह्यं के हुं वांढो हुं, ने फरतो फरतो किंतगदेशयी आत्यो हुं. एवी वात तेना मुखयी सांजलीने ते धोवीयें जाएयं जे ए कोइक परदेशी गरीव ह,एम जाए। पोताना घरमां तेने राख्यो. हवे ते धून वस्त्र धोवानी कलामां प्रवीए हे, तेथी तेने वस्त्र धोवा आपे, ते शीव्रतायी धोइ नाखे हे. ने वली वस्त्र पए सारां धूए हे, तेथी ते धोबी राजी थयो. ए रीतें ते धोबीने विश्वास पमाडीने एक वखत धोबी सुतो हतो तेवामां राजाना वस्त्र जइने ते धूर्च जागी गयो, तेथी ते धोबीनी पए लोकोमां हांसी थइ.

हवे ते पुरना बधा माणसो ते धूर्तने केम पकडवो? तेमां मूढ बनी ग यां, त्यारें अन्यायना हरनार राजायें पोतें ते धूर्चने पकडवानुं बीडुं जीव्युं. हवे राजा द्वारपालने तेडावी कहेवा लाग्यो जे रात्रें दरवाजे तालुं देवुं, ने महारा दुकुम शिवाय कोइने ते तालुं उघाडी देवुं निहं. एम कही नगरना तमाम दरवाजा बंध करावी पोतें घोडे चढीने धूर्चने खोलतो हवो. पेलो धूर्त राजानां वस्त्र गधेडा उपर नाखी पोतें धोबी यह दरवाजे आवी पो लीयानें दुखाजो खोलवानुं कहेतो हवो. नो तेएी दुखाजो उघाइवानी ना कही, ने कह्युं के राजानो हुकम नथी. त्यारे पेला धूर्न थोबीयें कचुं के राजानां ख़गडां बगडी जाज़े, तो हुं जवाब निहं दुनं, ने भारो बांक का ढीश, त्यारें तुं जवाब देजे. ते धूर्चधोबीनी एवी वात सांजलवाथी पोली यो बीतो थको दरवाजो उघाडी देतो हवो. तेथी पेलो धूर्न नगर बाहीर नीकली सरोवरनी पार्जे गयो, त्यां मिल्लिमारने मरोवरमां जाल नाख तां दीवो, तेथी तेने कहेवा लाग्यों के हे मूर्ख! इहां राजा धूर्चने खोल वा माटे आवे हे, माटे तुं जा, नहिं तर तुक्तने देखतां वंतज वांधशे. ते धूर्नना एवां वचनोथी ते मिल्लिमार पाणीमां नावो, तेवारें ते धूर्नें ते ग धेडाने सरोवरनी पाखें चरतुं मूकी, जे राजाना वस्त्र हतां, ते पोतें पहेरी ने नगर सन्मुख ञ्चाव्यो, ञ्चहो! जुड धूर्तनी गूढता कहेवी हे!

हवे राजायें धूताराने नगर बाहिर निकत्यों जाणीने पोलियाने आवी ने कह्यं के तें पोल केम उघाडी? तेवारें पोलिये सर्व वृत्तांत कह्यं. तेथी ते ने उलंजो दश्ने नगर बाहिर आव्यो, तो पेला धूर्तने व्यवहारिया रूपे दी वो, तेथी तेने पूर्व्युं के जो जड़! इहां कोइ नरने गर्दजसहित तमें दीवो ? तेवारें धूर्तें कह्यं हे नाथ! तेतो नावो थको सरोवरना पाणिमांहे पेवो हे. तेवारें राजायें कहां के आ महारो घोडो तमें पकडो,हुं तरतज तेने केशें प कडीने जगतनुं शव्य काढुं. एम कही तेने घोडो आपी राजा आगल गयो.

हवे ते धूतारो घोडें चडीने नगरमां पेठो. ने पोलीयाने कहेवा लाग्यो के में चोरने हुएयो है, माटे हुवे दरवाजा बंध कर, बीजो कोइ आवे, तो उ वाडीश मां. कारण के आ मारो पक्तपातियो बीजो राजा अमारी जेवोज वें, माटें तेने आववा दइश नहिं. ते वात सांजली पोलियो सत्य करी मा नतो ह्वो. धूर्चने वृत्तांतें ते राजा धूताणो यको पोले आवीनें पोलीयानें कहे के छरे दर्वान ! पोल उघाड. हुं राजा हुं, ते सांजली पोलीये कहां के, राजा तो हमणां घोडे चडी नगरमां गया, ने तुं राजा नथी पण अ न्य हो. एटजे धूतारो बोट्यो के दरवाजा चघाडीश मां? बहार अन्यधूर्च वे, तेज बे,एटजे विज्ञखे चित्तें ते राजा मनमां विचार करवा जाग्यो के ए कोइक धूर्तमां पण महाधूर्त हे,जेणे मुक सरखाने पण धूत्यो,माटे एहतुं च रित्र चिंतववा योग्य है, विधातानी पेतें लोकने विषे जयपताका निश्रय एणे वरी. कोइ न जाणे, तेम एह्नी प्रशंसा करुं, तो मुक्तने नगरमां प्रवेश करवा आपे. एवं विचारीने ते राजा धूर्तने कहेवा लाग्यो के हे धूर्त! त हारुं चरित्र उत्तम हे, ने तहारी कला घणी प्रशंसवा योग्य हे, तेणे करीने हुं तहारा उपर तुष्टमान थयो हुं, माटे तहारे जे वर मागवो होय, ते मा ग. तेवारें ते धूर्च बोव्यो हे राजन्! जो तुं वर आप तो हो तो मुक्ते अन यदान आप. तेवारें राजायें प्रमाण कखुं माह्यो माणस पोतानुं बोव्युं पाले. ते धूर्ने पोतापणुं प्रगट करीने द्वार उघडाव्यां, अने पोतें राजाने सामो पगे पड्यो. राजायें पण धूर्तने वांसे हाथ फेरव्यो, ने तेने प्रशं स्यो. धूर्न पोतानो नवो अवतार मानवा लाग्यो, ने राजाने कहेवा लाग्यो के खामि! तमे महोटो प्रसाद कह्यो, महोटानां वचन अन्यथा केम थाय?

्र हवे धूतारो राजाना प्रसादची निःशंक चित्त चको सांढनी पेरें मदोन्म त्ताची स्वेज्ञायें नगरमां जमतो चको विलास करतो. लोकोने पोतानी क लानो समूह देखाडी हर्ष उपजावतो विचरतो हवो.

एकदा ते धूर्च, सुखीयो यको विचारवा लाग्यो के इहां तो माहरुं धू र्नपणुं चालतुं नथी, कारण के हुं सहुमां जाणीतो थयो हुं, माटे हवे आ नगर होडीने बीजे वेकाणे जाउं तो ठीक. एम विचारी चोरनी पेरें

राजाने पण कह्याविना ते धूर्च नगरमांथी नीकलीने जूतनी पेते पृथ्वीने विषे जमतो जमतो पुर, पाटण यामादिक सर्वेने धूततो धूततो अनुक्रमें ज्ञवनावंत नगरना ज्यानने विषे राजचंपक वृक्त हेतें विसामों लेवा वेतो. ते वृक्त शाखायें करी अति विस्तीर्ण जोइने आदर सहित ते प्रत्यें जोतो हवा. तेना देखवाथी धूर्तना चित्तने विषे नाना प्रकारना मनोरथना कछोल उ बलता हवा. के आ वृक्त घणुं सुंदर है, माटे इहां सुवर्ण मिणनो सात जू मिनो महोटो प्रासाद करावुं, ने पासें नाना प्रकारना च्रवन करावुं. वली सर्व अंते उरने क्रीडाने अर्थे वाव्य करावुं, प्रासादने फरतो कोट करावुं, ते मज फरतो वनखंम करावुं. वली इहां हाथीनी शाला, घोडानी शाला, क रावुं, ने हुं चक्रवर्तीनी पेरें महर्दिक संपदायें युक्त एवो राजा थार्ज! एवा असंबद अने असंजव वचन धूतारानां सांजलीने ते चंपकरुक्तो अधि ष्ठायक देव ते धूर्न प्रत्यें कहेता हवाे. के हे धूतारा ! तें ताहारा इट ारित्रें करी घणा देश धूत्या, तुं जे बोले हे,ते सघलुं निविवाद याहो. हे मूट ! फो कट एवां वचन केम बोले हे ? हुं ताहरी पासें कांइ देखतो नथी. हे निर्लक् ण ! तुफमां कोइ सुलक्ष्ण नथी तो ते तुफथी केम निपज्यो ? एहर्न् ते देवतानुं वचन सांजलीने ते धूर्च कहे हे. हे देव! माहरूं वचन सांजल. आ जथी सात दिवसमां जो हुं कह्या प्रमाणे कदापि न करं तो ताहरी सन्मु ख अग्निमां प्रवेश करुं. त्यार पत्नी ते नगरना पोलनी रहेनारी देवीना दहे रामां गयो. ते धूर्ने त्यां घणा कोमाकोमी जेला कखां ने मनथी अथवा व चन कल्पना करीने गणेश, केंत्रदेवता, यक्त, यक्तिणी प्रमुख आदि देइने **द्वारपोलनी रहेनारी देवीनी साथे जुवटुं रमवा वेठो, तेमां ते लाखो टका** जीत्यो. खडीना कटकाथी आंकडा मेली राखेला तेनो सरवालो करी गएो शने कहेवा लाग्यों के महारुं धन जे तहारी उपर लहेएं हे ते तुं मने आप, नहिंतर त्रण खुणवालो तीखो पाषाण लइने तेनी अणीधी शीघ्रपणे तारुं महोटुं पेट फोडी नाखीश. हे लंबोदर! तुं हाखो बो,माटे केम नहिं आप? एम कहीने ते धूर्न जेटले महोटो पाषाण तेने मारवाने वास्ते उपाडे हे,ते टले लंबोदरे पण लय पामीने वे लाख टका धूर्तने आप्या,एम बीजा पण सघला देवता व्यंतरादिक पासेंथी ते धूर्ने पोतानुं लेखं लीधं. जेमाटे निः स्रुक मनुष्यना व्यंतरादिक पण चाकर थाय.

ह्वे ते धूतारो धनें करीने तिहां आवासादिक शीघपणे करावतो हवो. इव्ययकी क्युं काम सिद्ध न थाय? सर्वे थायज. महोलात तथा आवास स घला कराव्या पढ़ी स्त्री माटें हजारो टका खरची त्यां गणिकानुं टोलुं लाव्यो. तेमां मुख्य अनंगसेना नामें गणिका है, ते केवी है ? तोके कामनीज से ना हे, तेने पटराणी कीधी. ते संघातें विलास करतो थको, ते वृद्धदेवता नुं पूर्वे कहेलुं जे वचन,तेने वारंवार संनारतो,गर्वे करीने ते देव उपर रोष चढावतो ह्वो. त्यार पढी निकष्ट एवी ते गणिका रीसाणी थकी ते धूर्चने माथे उपाडीने नगरने विषे लइ जती ह्वी. ने नगरमां ते धूर्चनुं सघलुं व नांत कह्यं तेथी राजायें जाएयुं जे ए महाधूर्न हे. देवता सरिखाने धूत्या तो मनुष्यनुं तो ग्रुंज गज्जं? तेथी राजायें ते धूर्चने अनेक विडंबनायें करी नारकीनी पेरें विडंब्यो. ने तेने नगरमां फेरवीने उपाडीने दूर नाखी दीधो. कुमरणे माखो थको ते इष्ट निर्नाग्य मरीनें इर्गतियें गयो, घणा जब जम हो. ए रीतें ते पापीना पापनां फल केवां प्रगट थयां ? कमलहोत कहे हे के हे पुत्र ! ए धूर्न सर्व धूर्नमांही शिरोमणि हतो तेपण एवी विटंबणा पा म्यो, तो धूर्तपणुं केम नलुं होय? ते सांजलीने विमल पोताना पिताने एइ बुं कहेतों हवों के, हे तात! अन्याय करनारने ए दृष्टांत युक्त बे, पण द्वं हस्त कलायें करीने धन उपार्छ हुं, अन्यायें कोइनुं इव्य होतो नथी.

त्यारें पिता कहे है, हे पुत्र! तुं जें कार्यमां इच्च पेदा करे हे तेमां हुं कांइ अन्याय नथी? हुं ते न्यायज हे? जेमाटे कपटें करीने परतुं धन खेतुं, तेतो अन्यायज हे,हस्तकला ते वंचना हे. तेमाटे सर्वथा व्यवहार द्युद्धि यंज इच्च उपार्जें ते प्रगटपणे नरकें जाय. ए रीतें होतें पुत्रने अनेक वार कहां, पण तेनो खनाव टल्यो नहिं, जेमाटे पोत पोतानो खनाव मूकवो तेघणो इक र हे, इक्षें मूकाय. कहां हे के ॥ परीक्षणीयोयत्नेन, खनावोनेतरे गुणाः ॥ व्यतीत्य हि गुणान् सर्वान, खनावोमूर्धि वर्त्तते ॥ १ ॥ नावार्थः – यत्ने करीने खनावनी परीक्षा करवा पही बीजा गुण खोलवा, कारण के सघ ला गुणने हांमीनें खनाव ते सर्व गुणने माथे आवे हे ॥ १ ॥

एकदा ते विमलज्ञोतें घणां करियाणां नखां, ने त्यांधी देशांतर जवानों आरंन कखो, त्यारें तेनो पिता कहेवा लाग्यों के हे पुत्र ! ए देशांतर गम

न जे हे,ते इःखनुं कारण हे. इत्यादिक बीजी पण घणी युक्तियों कहीने पि तायें वास्त्रो तो पण विविध वस्तु यहिने वेपार करवामाटे ते सार्थवाहनी पेरें इजार पोठीया छेइने स्थलमार्गें चाल्यो,ते सोपारापुर पाटणनी पासें म लयपाटणमां गयो. त्यां रही सर्व करियाणां वेच्यां,तेमां ऋघावीश हजार सो नइयानो जान थयो,तेवारें घणो खुरा। थतो चिंतववा जाग्यो॥ कह्यं हे के॥ वाणिञ्चाणं वणिक्कंमि, माहणाणं मुहंमि श्र ॥ खितयाणं सिरी खग्गे,कारुणं सिप्पकम्मसु ॥ १ ॥ जावार्थः विषक्तें व्यापारनें विषे,ब्राह्मणने मुखने विषे, ऋत्रियने खङ्गने विषे, कारुनारुने शिल्प कर्मने विषे, लक्की हाय वे ॥ १ ॥ वली अधिक लानने अर्थे तिहांथी करियाणां लेइने पोताना नगर जाणी पाढ़ो वत्यो. तेटलामां वाटें वर्षाकाल थयो,ते पंथीजनने काल सरिखो हे ते गर्जारव सहित वीजली रूप दंमें करी सर्वने जय पमाडवा लाग्यो तिहां घणो कादव थयो तेवारें पामर जनविना कादवमां कोण चाले? एवो विचार करी ते ठावणी करी त्यां रह्यो एवे अवसरें विजयपुरनो वासी महाबुद्धिनिधान गुणनो तो जाएो समुइज होय निहं ? एवो सागरनामा व्यवहारीयो बुद्धिनो सागर हे,ते पहेलां धन उपार्जवा माटे परदेश गयो हतो, ते पण घणी सार वस्तु जेइने ज्यां विमल है त्यां आव्यो. विमल अने सा गर बेहु एक नगरनाज वासी हो तेथी विमर्खे तेने उत्तरयो, अने कुशलादिक पूठ्यां, अने तेने आयह करी राख्यो. वली कह्यं के,आपणे बन्ने साथें नग रमां जइग्रुं. ते सागर पण त्यां रह्यो थको, दिव्य जे जली मनोवांढित व स्तु ते त्यां वेचीने बीजी नवी वस्तु छेतो हवो. हवे ते महाधूतारो विमल पोतें तेना काममां वचें पडीने तेनो माल वेचावे,तथा बीजी वस्तु लेवरावे, तेमां चोर कलायें करीने तथा दलाली प्रमुख हस्तकलायें करीने दशहजार सोनइया जपाज्यी अने मनमां विचारवा लाग्यो जे महारो पिता महोटो मूढ हे जे मुक्तने वारे हे,में तो इमणांपण ए कपट युक्ति थीज धन मेलब्युं !

हवें ते वे जणा पोत पोतानुं इव्य तथा करियाणां सर्व लेशने वर्षाति कमें घोडे चड्या थका तिहांथी चाल्या, ते पोतानां नगर समीप आव्या. तेवामां ते कमलशेठें पोताना पुत्रनुं आगमन सांनव्युं जेथी साहामो आव्यो. उचितना जाण होय, ते उचितपणुं केम उलंघे ? तेथी ते वे जणे शेवने प्रणाम कथी. तेवारें स्नेहें करीने माहोमांहे कुशल हेमादिक पूठ्यां,

ते त्रणे जणा घोडे चड्या थका साथनी आगल जाय हे,तेटले हवे विमल प्रत्यें सागर कहे हे, के हे मित्र ! चित्तने चमत्कार उपजे एहवुं हुं अएदी हुं अणसां नत्युं, कांइक तुक्तने कहुं. ते सावधान चित्तें करी सांजल. इहां य की आगल पाकेल आंबानुं नरेलुं गाडुं हलवे हलवे चाल्युं जाय है, तेह नो सारिष ब्राह्मण हे,वली तेनी पासें पाणीनो नरेलो करबड़ो हे,ते गाड़ा नी पढवाडे जाकडीमां जराव्यो हे,ते ब्राह्मण कोढीयो हे तेना शरीरमांथी रक्तपित्त वहे हे वली पाणी निरुष्ट कप्टें करी हाले हे, तेणे करी पाणी गले हे गाडाना हालवाथी मोहोलुं हे, जे बलद जोतखा हे, तेमां जमऐ पासें जे बलद हे ते गलीयों हे, वली माबी बाजुनो बलद माबे पगे खोडो बे,वली ते बलद माबी आंखे काणों बे. अने ते बेडियुं गार्छ वे तेने पूर्वे रह्यो थको चांमाल आहेप करतो अणलातो थको हांके हे. वली ते गाडानी प ववाडे कोइकनी वहू रीसाइने आवे हे, ते स्त्री माबा पगने विषे सर्वथा प्र थान लक्क्णें करी सहित हे, पगे अणुआणी हे, तेना शरीरने विषे घणा यानरण है, निश्चें ते स्त्री विणकनी हैं,ते गर्नवंती है, दूकडो प्रसव थनार बे, अने ते वली पुत्र प्रसवशे, ते स्त्रीना सकल शरीरने विषे कुंकुमनो रंग बे, अने चोटलो बकुलना फूलें गुंच्यो हे,फूल वेणीमां गुंच्यां हे,ते बहु मूल्यवालां वे, ने ते स्त्रीनुं पहेरवानुं वस्त्र कसुंबी नवुं रंग्युं वे. वली ते गाडा चपर बेवी ते पण सांगने स्थानकें बेठी हे. पण गाडामां बेठी नथी. गाडानो खेडु बेडीया चपर बेठो हे. सागरना मुखयी एहवी वात सांजलीने विमल कहे हे. आ तुं ग्रुं असत्य बोले हे ? एवी अकिष्पत वात तो सर्वज्ञविना बीजो कोइ प ण कही शके नहीं माटे ए तहारी वात कोण सब्हे ? तुं आवी वातो क्यांची जाणी शके? पण तहारी जीन घणी लांबी हे, तेणे करीने तुं यहा तद्या जवारो कखा करे हे ? ते सांजजीने सागर बोख्यो, कल्पांतें पण हुं अ स्तय न बोलुं,में तो ग्ररु पासेंथी सत्यव्रत लीधुं हे, अने सत्यमांज महोटाइ रहेली हे, माटे महारुं बोलवुं केंवारें मिण्या न थाय. जो तुफने प्रतीति न होय,तो हाथमां कंकण बतां आरिसो शोधवानी जरूर नथी तेनी पेवें आ तहारा मुख आगल गाडुं जाय है, ते जइने जोई आव. किव कहे हे,के ए वात खरेखरी साची हती तो पण अनव्यनी पेठें सर्व प्रकारें ते विमजने सद्दर्णा न आवी, जेमाटें सुबुद्धियानुं वचन डुर्बुद्धियाना मनमां केम उतरे ?

हवे धीतामांहे शिरोमणि एवो विमल बोल्यो के,हे मित्र! तुं ञ्चाज ञ्चा टलुं बधुं धीठाइपणानुं अवलंबन केम करी रह्यो हो ? ते सांजली सागरें कह्यं के, धीवाना साथें धीवाइ करवीज युक्त हे,वांका साथें वांकुं थावुं, सर लनी साथें सरल थावुं,प्रवीणनी साथें प्रवीण थावुं. जेम के लोक पण कहे वे के आड़े लाकड़े आड़ो वेर, तेम वांके वांको अने समे समो. तेवारें वि मल लोजनें वरों करी जतावलो हलफल करतो थको कहेतो हवो के हैं विमल! जो ताहारी वात असत्य थाय, तो तारी सर्व वस्तु माहरी थाय. तेवारें क्रोध चढावीने सागर कहे हे के,तें कही ते वात महारे प्रमाण हे, जो ए वात साची याय तो तारी वस्तु इत्यादिक जे हे तेनो धणी पण हुं थाउं! तेनुं कहेनुं विमलें पण मान्युं, हाकारो कस्त्रो. एक एकना हा थमां ताली पाडी साबेत करी पढ़ी कमलज़ेवप्रत्यें सागर कहेतो हवा के, अमो बन्नेना तुमें इहां साक्ती थार्ड. तेवारें कमलज़ोठ कोमल वचने करी सागरप्रत्यें कहे हे के, हे सागर! तुं पण एहना जेवो केम थाय हे ? तुं तो माह्यामां मुख्य हो. ते सांजली विमल पोताना पिताने कहेतो हवा के, हे तात ! तमें ग्रुं हमणां पण मुक्त पुत्रने हलको पाडो हो ? एम करवाथी कां महोटा पामशो ? तेवारें कमलशेतें कह्यं के इहां जतावलानुं काम नथी तुं तो न्हानो थइ तूटे पण मुजने जोगववुं पडे !

वली सागर कहे हे कें,हे कमलशेत! जो तारो पुत्र माहरे पगे श्रावी ने पड़े, तो में जे होड करी हे ते हमणांज हुं मूकी श्रापुं,हजी कांइ बगड्युं नथी. तेवारें विमल बोक्यों ए ताहरुं समय धन में लीधुं एम नकी जाणजे. हवे तुं जिक्हा माग जिक्हा समयें तने कूतरा श्रावी पगे लागशे. ए रीतें घणा वाचाल थका विवाद करता ते वे जण गाडानी पासें श्राव्या,तिहां विमल म हर धरतो थको जुए हे तो ते शकटनो सारिय चांमाल प्रमुख सागरें कह्यो ह तो तेवो त्यां न दीनो, तेथी विमल जेटलामां चल्लासवंत थयो थको सा गरने पूने हे तेटलामां श्रादर सहित सागरें सारियने पून्धुं जे ते गर्नवती स्त्री क्यां हे? त्यारें ते सारिययें कह्यं के ते गर्नवती स्त्री नजीकना वनमां प्रसववा गइ हे. इहां पासेंना नगरमां ते स्त्रीनां माबाप रहे हे, तेथी ते स्त्रीनी माताने तेडवामाटें चांमालने मोकत्यों हे. हुं ब्राह्मण हुं ? श्राने ए तो विणकनी वहू हे. नर्चारे मार श्राप्याथी एमनाथी रिसाइने हुं पाडोसी

बुं तेनी प्रीतियें करीने मारी पूर्वे छावी बे,माटे महाराषी शी रीतें काढी मूका य ? विषम वेलायें बीजा कोई अण्डलिखताने पण राखवो घटे, तो वेली उलखीतानुं तो ग्रंज कहेवुं ? एटलामां तिहां ते स्त्रीनी माता पण यावी, यने ते चांमाल पण खाव्यो. तेने ब्राह्मणे पण पुत्र खाव्यानी वधामणी दीधी एम सघलो संवाद साचो थयाथी सागर बोख्यो के,हे विमल ! हवे ए तमारा सर्व माल करियाणां प्रमुख जे हे,ते महारा घरने विषे मोकलो,हवे ते बधां माहारां हे. तेवारें ते धूर्न विमल धूर्नपणानी धीरता राखीने कहेतो हवो के, हे नाइ! हुं तो तमारी साथें इसतो हतो. तमें मने इसो ने हुं तमने हसुं. तेवारें सागर कहे हे के,फोकट क्षेश करे ग्रुं थाय ? हमणां तो पोता ने घेर जार्र, मुक्तने जेम रचित करवुं घटशे, तेम हुं करीश. इत्यादिक वि चार करतो सघलां विमलनां करियाणां पोतानी वाडीमां उतारीने सागर पोताने घेर आव्यो. तेवारें ज़ृंटायानी माफक ग्रून्य थइ गयानी रीतें,मूर्जि तनी पेरें,जाए हए। नाख्यो होय नहिं ? एवा विमलने महोटे कछें करी ने कमलशेवे पोताने घेर आएयो. ते विमल जेवो मुखें वे तेवोज चित्तने वि पे पण अति मलिन हे,वली ते विमल पोताना पिता कमलशेवने विमलनी पेरें अति नम्र यइ विनति करे हे के, हे तात! आ आपदारूप समुइ केम तरवो ? जो वली तमे बुिदहरूप नाव आणो,तो निस्तार थाय,में तो आ हा स्यपणे कह्यं हतुं ने ते सागर धूर्नें तो प्रमाणज करी लीधुं,तेमाटे हे नात! तमें ते सागरना घरने विषे जइ तेने जेम तेम मनावो, कोइ बीजी युक्तियें करी वश करो, समुइनी पेरें इःखें यहवा योग्य एहवा ते सागरने तमे प्रतिबोधो, जेथी करी खापणुं धन ते न जीये,खथवा विविधप्रकारनी चिंता यें ग्रुं थारो ? इहां एकज उपाय हे. ते उपाय पण तमाराथीज सिद्धि पामे, तेम हे, बीजायकी सिद्धि पामरो नहिं. सागरें त्यां तमने साद्दी कह्या हे, माटे तमें राजानी सजाने विषे अवलुं बोली पोतानुं इव्य राखो. कहां वे के ॥ यतः ॥ निद्य गेह्स्स कर्ज्ञमि, नियद्वस्स रःकणे ॥ निद्यपुत्तकए कूड, सुरकेसु नविणिंदिखं ॥ १ ॥ नावार्थः-पोताना घरना कार्यने विषे, पोता नुं इव्य राखवाने विषे,पोताना पुत्रने ऋर्षे,एटला कारऐं जू हुं बोव्यामां दू पण नथी. कह्युं हे के ॥ यतः ॥ न नर्भयुक्तं वचनं हिनस्ति,न स्त्रीषु राजन्नवि वाह्काले ॥ प्राणात्यये सर्वधनापहारे, पंचानृतान्याहुरपातकानि ॥ १ ॥

नावार्थः - नर्मयुक्त वचन हुए। नहिं, स्त्रीने साचुं न कहेवुं, हे राजन्! विवाह अवसरें साचुं होय ते जूतुं कहेवुं. प्राणांत कष्टें प्राण जाते जूतुं बो लवं, सर्व धननो नाश थातो होय तो जू वुं बोलवं,ए पांच जुरानां पातक नहिं. एम पंमित कहे हे. तेवारें धर्मरूप कमला जे लक्क्षी तेनो आगर एवो जे कमलज़ेव ते विमलनुं वचन सांजलीने कोमल वाणीयें करीने समजा वतो हवो के, हे पुत्र ! तुं नीतिमार्ग मूकीने उन्मार्गे म जा. तुं तहारा चि त्तने विषे चिंतन करीने तहारुं वचन संनार. सत्पुरुष तो जे हांसीयें करी ने वचन बोव्युं होय तेनो पण सर्वथा प्रकारें निर्वाह करे, पण तेंतो कां इ हास्यथी कह्यं नयी परंतु सागरनुं इच्य क्षेवाना जोनयकी होड करी है, ते माटे हवे ग्रं खेद पामे हे ? हे वत्स ! साचुं बोलतां कांइ पण दूपण नथी. हे मृढ ! असत्य बोलवाथी दूषण कांइ नथी. एवं हुं केन कहुं ? शुं धुंवाडायी क्यामता न याय ? हे वत्स ! क्यां इ एकतो साचुं उचन पण अनर्थकारी थाय है. केम के जे वचन सांजलीने आगलो प्राणी जय पामे, त्रास पामे, अथवा मरण पामे, एवी रीतनुं साचुं होय तिहां मौनपणुं धा रण करवुं जेमाटे थोडुं असत्य बोलवा थकी पण अनेक जीव आ नवने विषे इःख पाम्या अने नवांतरें इगीत पाम्या तो धनने लोजें करीने जे कूडी साख नरवी, तेहना विपाक कडवा होय, तेहमां तो कहेवुंज ग्रुं?

ते सांजलीने विमल बोव्यों के हे पिताजी! परमेश्वरें जैनमार्गने विषे अपवाद नथी कह्यों छुं? सर्व प्रकारें उत्सर्गज कह्यों छे? परमेश्वरें तो वे प्रकारनों मार्ग कह्यों छे, तेमां एक उत्सर्ग अने बीजो अपवाद. जेमाटें जिहां महोटुं कार्य होय तिहां असत्य बोलवुं कह्यं छे,ने पढ़ी तेनुं प्रायिश्वत्त लड़ छुद्ध श्वर्यें. ते सांजलीने कमलक्षेत्र पुत्रने कहे छे के हे वत्स! धन पामवुं तो सुलज छे,पण धर्म पामवो इर्जन हे. एटला माटें एवो मूढ को ए छे जे धनने अर्थें धर्मनुं खंमन करे ? महोटुं कोइधर्मनुं कार्य होय,तिहां अपवाद कह्यों हो,पण पापने विषे जैनधर्ममां क्यांही अपवाद कह्यों नथी. वत्नंग करीने प्रायिश्वत्त लीधे कांइ छुद्ध न थाय. जे मनुष्य जाणीने व्रत जंग करे तेने प्रायिश्वत्त ते वली हां अपाय ? ते कारणमाटे सर्व धननो नाश थाय तो जलें थाने, जीवितव्यनो नाश थाय तो नलें थाने, परंतु जो कल्पांत थाय तो पण हुं थोडुं पण जूनुं न बोलुं.

एहवुं पितानुं वचन सांजली कोप्यो थको विमल कृतरानी पेतें थइने बोलवा लाग्यो के में निश्रय तहारो पाखंमधर्म जाएयो? जे में महेनत करी ने इव्य उपार्ज्यु ते तुं ग्रुं महारा वैरीने आपीश? वृद्ध थयो एटले तुं घेलो थयो वो धिक्कार वे तुफने? रे मूढ! बेसी रहे घरने खूणे. एवां वचनो पिताने कहीने विमल घरमांथी घणी जेट लइने राजापामें गयो. त्यां अइ राजाने जेट मूकी नमस्कार करी विनति करवा लाग्यो के, हे राजन्! में देशांतरें जइ घणे कछें लक्क्षी उपार्जी, ने घरतरफ सागर साथें आवतां हां सीने वचनें करी महारी लक्क्षी तेणें पडावी लीधी, ते सांजली राजायें सा गरने तेडावीने सर्व वृत्तांत पूर्वगुं, सागरें कह्यं के में मात्र हास्य वचनें ते लीधुं नथी, पण ए होडमां हाखो त्यारें लीधुं हो. पढी तिहां तेणे जे वृत्तांत बन्धं हतुं, ते सर्व राजानी आगल कह्यं, तेथी राजायें तेने पूर्वगुं के तें बलद प्रमु खनां लक्षण केम जाएयां? त्यारे सागर कहेतो हवो के, हे राजन! में महा री बुद्धिं करी जाएयां. ते कौतुक सांजली राजा उद्यासवंत थयो थको बो ख्यो के तें तारी शी मतियें करीने जाएयां? ते तुं मने कहे.

हवे सागर कहेतो ह्वा के,हे राजन ! सावधान पणे सांजलो. पाका आं बाना फलनी वासें वासित एवा कोइ पदार्थ तिहां जूमिकायें पड्यो हतो, तेना गंधें करीने में जाएयुं जे इहांथी आंबाबुं गांडुं गयुं हे. तथा धूडमांहे पगना प्रतिविंदें करी जाण्युं जे ते बलद गलीयो हे. तथा पगलाने अनु सारे करी जाण्युं जे ते बलद माबे पगे खोडो हे. तथा दिहण दिशानुं घास चखा हताे. अने माबी बाजुनुं घास पि रह्यं हतुं तथी जाण्युं जे ते बलद माबी आंखे काणो हे. तथा मुतरवाने हत्यों ने पाणी लीधुं तथी जाण्युं जे ते बाह्मण हे. तथा जूमिकाने विषे मार्गें जातां पाणी नखाणुं देखीने में जा ण्युं जे करबडो पाणीनो गाडानी पाहले लाकडीयें वलगाड्यो हे. तथा गा डुं.हांकतां परोणो जांग्यो, ते जोंये नाखी दीधो, ने चंमाल पासें लाकडी मागी ते तेणे जोंये नाखी दीधी; ते लाकडी पाणी हाटीने बाह्मणे लीधी पण हाथो हाथ न लीधी,तेना प्रतिविंदें में जाण्युं जे ते चांमाल हे. तथा बाह्मण लाकडी लेवाने गाडाथी हेतो हतस्वो,त्यां रसी कखुं हे तेनी गंधथी घणी माखीयों बण वणती दीही तथी में जाण्युं जे ते कोढीयों हे, अने ला कडी विना चाली शके नहि तेमाटे हाथमां लाकडी हे, एम में कह्यं. तथा

शकटनी पत्रवाडे पगलाने अनुसारें ध्रुडमां पगलां पडेला जोइ में लक्त्एावं ती स्त्री जाणीने कहां जे पावल लघु स्त्री वे तथा पावे पगें मुख करती जोती हती ते पाठा पगलांने अनुसारें में जाएयुं जे ए स्त्री रीसाए। यकी पीयरमां जाय हे,तेथी वहूज होय. वली रीसाणी थकी कूवामां पडे ने ए कूवामां प डवुं मूकी दइने जो गर्नवती है तो पीयर जाय है. एवं जाणीने में तेने गर्न वती कही तथा देह चिंताने अर्थे गाडाथी जतरीने बोरडीना वनमां जश वेठी ते जमणा हाथनो टेको देइने घणे कछें उठी, तथी जाएयुं जे तेने ग र्नने विषे पुत्र हे, अने तें दूडको प्रसवज़ें. तथा ते स्त्रीयें पाणीथी मुख धोयुं, ते रातुं देखीने कुंकुमनुं विलेपन जाएयुं. तथा ते स्त्रीना केशमांथी फूल नू मियें पड्युं ते देखीने में जाएयुं जे एहना चोटलामध्ये बकुलवृक्तनां फूल युं थ्यां हे. तथा बोरडीने कांटे रातो तांतणो वलगेलो देखीने में जाएयं जे तेणे कसुंबल वस्त्र उहयुं हे. तथा आंबानी निकट गाडां हांकनारने हेकाएँ। वेही,ते ने अनुसारे जाण्युं जे ते बेडियुं गाडुं हे. चोकीयुं गाडुं न हतुंने वेडीयुं गाडुं हतुं तेथी सारथिने वेकाणे बेवी. एम संघली वात सागरना मुख्यी सांजली राजा चित्तने विषे चमत्कार पामीने सागरने पूछवा लाग्यों के तमारा वे विना त्रीजो कोइ साहि। हे ? तेवारें सागरें कह्यं हा त्रीजो पण साहि। हे ते साहि। जगतमां वि ख्यात अने घणो माह्यो तथा परिणामें निर्मल एवो विमलनो बाप कमल ज्ञेव बे,ते सांनली राजायें कह्यं के घणुंज रुड़ं! एतो सत्यवादी बे, जो पण वि मलनो बाप हे तो पण पुत्रने अर्थें ते जूहुं निह बोले. तथापि तुं नूखो हो,जेमा टें शास्त्रमांहि ना कही वे ॥यतः॥ सयणो इक्कणो विदे, सीर्व लोहीर्व तहा ॥ गहिलो विद्यिसो जीरु,सस्की नूणं न किक्कए ॥ १ ॥ जावार्थः स्वजन, इ र्जन, वली देवी, महालोनीर्ड, तेम घेलो, कौतुकी अने नयानक एटलाने निश्चें साङ्गी न करीयें ॥ १ ॥ एटला माटे तें विमलना बापने साङ्गी रा ख्यो ए तुर्फने घटे नहि. त्यारें सागर बोद्यो, हे राजन् ! एतो महोटो धर्मा त्मा हे, सत्य बोलनार हे, माटे ते जे कहेज़े, ते महारे प्रमाण हे. तेवारे राजायें कमलज्ञोवनें तेडावीने मीवी वाणीथी पूबगुं के तुं आ वात जाणे वे ? जाएतो हो, तो कहे ? एवी राजाना मुखयी वाए। सांजलीने विमल ने धास्को पड्यो. जे महारुं सर्व इव्य गयुं, तेणे करी अति आकुलव्याकु ज थइने विचारवा जाग्यों जे हमणां महारो पिता सत्य कहेशे, एटर्ज

माहरुं सर्व इव्य सागर ज़इ ज़ेज़े. ते इव्य गयानी चिंता रूप समुइमां जा णियें बूड्योज होय निहं ग्रुं? एम विमल नीचुं मुख करी रह्यो.

हवे वे पद्मनां लोक सर्व जोवा आव्यां हे,तेथी राजसनामां तिल पड़े एटली पए जग्या खाली नथी. ते बधानी वचमां रह्यो थको कमल ज्ञेव साही आपवामाटे उनोरही कहेतो हवो के हे राजन ! महोटुं कार्य हे,तो पण हुं जूतुं निहं बोद्धं, जे जूतुं बोद्यो ते जिनधर्मने उत्तखतोज नथी. सो नुं नेमाण्स वे सरखां हे,तेमां सोनुं कसवटीयें चड्युं परीक्दाने प्राप्त थाय बे अने माणसने महोटुं कष्ट पडे थके पण असत्य न बोबे त्यारें तेनी परीक् थाय है. हे राजन ! धनने अर्थे जूहुं बोलीयें,ते धन तो पामवुं सु लन है,पण धर्म पामवो दोहिलो है. वली हमणां तो जे कारणे हुं साझी पूरीश तेथी तो महारो पुत्र इहवाशे, इर्जन हसशे, तेम कदापि सक्जन पेण हसज़े तो पण हुं असत्य नहिं बोद्धं. कह्यं हे के ॥यतः॥ निंदंतु नीति निपुणा यदि वा स्तुवंतु,लक्सीः समाविशतु गन्नतु वा यथेष्टं ॥ अधेव वा म रणमस्तु युगांतरे वा, न्यायात्पथः प्रविचलंति पदं न धीराः ॥ १ ॥ ना वार्थः- न्यायमार्गमां निषुण जे पुरुष तेनी कोइ निंदा करो. अथवा स्तवन करो. गमे तो स्वेज्ञापणे जन्मी आवो, अथवा जन्मी जार्ड, आज मरण थार्च, अथवा युगांतरें थार्च, पण जे धीरपुरुप होय ते न्यायमार्गथकी पदमात्र पण चलायमान थाय नहीं. तेमाटे हे राजन ! जेवुं वे तेह्वुं तम ने कहुं बुं के जे सागरें कह्यं ते सर्व सत्य करी मानजो. एवां कमलशेव नां वचन सांजली ते राजा तेने आशीप देतो अति विस्मय पामतो मा युं धुणावतो ह्वो, तेवामां राजाना कं**उमां पडेलो विशिष्ट हार उ**ढलीने कमलशेवना कंवमां पड्यो, एटले जाएो राजायेंज संतुष्ट थश्ने तेना गलामां हार नाख्यो होय नहिं छुं ? तथा प्रत्यक् पुण्यनो समूह अने नज़ा यशनो विस्तार,तेज जाए।यें गजामां पड्यो होय नहिं ? एमे जाग्युं. हवें तेम रमणिक दिव्य मणियें करी अत्यंत सुंदर हार ते कमलशेवने कंवे घणुंज शोनतो हवो. ते वखत राजा अति प्रशंसा करी कहेतो हवो के अहो ! ताहारी सत्यता जाणे साचुं सोनुंज होय नहिं ग्रुं ? अहो ! तहा री साधुनी पेरें लोकने विषे उत्कष्टी निर्लोनता, ऋहो! ताहारी निर्मोहता जे पुत्रने तृणखला सरिखो जाएयो? अहो! ताहारुं चित्र एकाय धर्मने

विषेज तें तत्त्वकरीने यहां हे, छहां! तारी दृढ प्रतिक्वा सत्यवंती, छहां! तुजने सत्यवंतमां सत्यवादिनी रेखा हे माटे राजानी पेरें तुजने पण मुकु ट जोइयें,ते माटें तुजने शेवाइ पणानो पट्टबंध हो. एम कही राजा छित शय प्रीतिने समूहें करीने शेव पदवीनो मत्तकें पट्ट बंधावतो हवो. पापने धुंवाहे करीने श्याम थयेला एहवा विमलने राजायें कहां के रे छृष्ट! रे धीष्ट! ताहरी जीज हेदवा योग्य हे,पण तुं कमल शेवनो पुत्र हे,ते माटे हुं तुजने मूकुं हुं. कमलना कांटा कोइ हखेडी शके नहि. हवे सागर पण क मल शेव हपर संतुष्ट थइने विमलना करियाणां हतां, ते लोज रूप मेल हांड्यो हे,जेणे एवा कमल शेवने छापी दीधां. प्रत्यक्त सत्य वचननो प्रजाव कोइक एवो हत्कष्टो हे के जे थकी गयुं इच्य पण पाहुं छाच्युं ने वली निर्मल कीर्त्ति पण विस्तार पामी तथा कमला जे लक्की ते पण विस्तार पामी.

हवे कमल शेवने राजा कहेनो हवो के तमें महोटो पसाय कथा जे न्याय पाद्यो. सत्यवचन केहेवुं हो ? तो के प्रत्यक्त कब्पवृक्त सरिखुं हो. एट ला माटें सत्यवचनथी ग्रुं न संजवे ? सत्यवचन सर्व पंमित लोकने मान नीय है. सत्यवचन बोलनारना वचनने सर्व लोक, मानवा योग्य थाय. सर्व लोकने विशेष प्रशंसवा योग्य थाय. अने जूतुं बोलनारो जे विमल ते सर्व लोकमां निंदनीय थयो. विमल सुश्रावकनो वेटो हतो पण जुलुं बो व्याची इर्गतियें गयो. हवे राजा सागरनी बुिंद्यें करी रीज्यो थको,तेने सर्व प्रधानोमां मुख्य प्रधानपेणें याप्यो. अहो ! लोको ए बुिबनुं फल जून कहे वुं हे ! हवे कमलशेव घणा कालसुधि गृहस्थनो धर्म पालीने अंते उत्तम साधुनो धर्म यहए करी रूडी रीतें विशेषपएं। नाषा समितियें युक्त थको क मल साधु मोक्त प्रत्यें पामतो हवो. सकल कर्म क्रय करीने परम पद वस्रो. ए रीतें वखाणवा योग्य तथा रसें करी सहित एवं जे कमज होवनुं चरि त्र तेने सांजलीने हे पंिित लोको ! तमे धननी तृष्णा मूकी अकृतकरण त्यागी असत्य वचन ढांमी नित्य उजमाल यइ धर्मने आदरीने परमपदने वरो ॥ उक्तंच ॥ चिरं चरित्ता गिह्र छथम्मं, सुसाहुधम्मं गहिसेण सम्मं ॥ वि सेसनासा समिर्न प्रचत्तो, जनाणुपन्तो कमलोगलोगं ॥१॥ इत्रं पसत्रं कमल स्स सेवी, सरस्सवित्तं निसुणिनुचित्तं ॥ चिचा अ किचं विबुद्दा असचं, किचं व निचं पि सरेह धम्मं ॥१॥ १ति दितीय छाणुव्रते कमलश्रेष्ठि कथा समाप्ता ॥

अर्थदीपिका, अर्थ तथा कथासहित. ॥ अथ तृतीयव्रत प्रारंजः॥

अर्थः—त्रीज़ं अणुव्रत ते स्यूजयी पारका इच्यनुं हरण करवुं तेथी वि रमवुं, तेने विषे अप्रशस्त इत्यादिनो अर्थ पूर्वनी पेतें कहेवो ॥ १३ ॥

अदत्तादान चार प्रकारनुं हो. एक कनकादिक वस्तुना स्वामी जे हो य तेना दीधा विना ते वस्तु जपाडी खेवी, ते स्वाम्यदत्त किह्यें. बीजुं फलादिक सचेत वस्तु हो ते फलाना जीवें विदारवानी आज्ञा दीधी नथी अने सचेत फल विदारे, होदे, नेदे, तेने जीव अदत्त किह्यें. त्रीजुं ग्रहस्यें आधाकमीदिक दोष सिहत आहार साधुने दीधो, ते देवानी श्रीतीर्थंकर नी आज्ञा नथी माटे एने तीर्थंकर अदत्त कहीयें. एम श्रावकें पण अचित्त करेलुं अनंतकाय अनद्दादिक जे खेलुं, ते पण तीर्थंकर अदत्त कहीयें. चो खं ग्रहस्थना घरषी निदोंष आहारादिक वस्तु वहोरी आव्या पही ग्रहमें निमंत्रण कखाविना जो शिष्य पोतें वावरे, तो ते ग्रह अदत्त कहीयें. ए चार.

तेमां इहां स्वाम्यदत्तनो अधिकार है, ते स्वामी अदत्त एक सुद्धा अने बीजुं स्यूल, एवा वे प्रकारें है. तेमां जे कांइ पारकी वस्तु लीधायी लो कमां चोर कहेवाय, राजा दंमे, ते स्यूल एटले बादर अदत्तादान किंद्र्यें. चोरीनी बुद्धियें खेत्र खलादिकने विषे थोडुं लेवाथी पण जेथी चोरी मा ये चडे, ते बादर जाणवो. तथा तृण पापाणादिक जेवी तुल्ल वस्तुनुं पण तेना स्वामीनी आङ्का विनानुं जे लेवुं, ते सुद्धा अदत्त कहीयें.

इहां श्रावकने सूक्कानी तो यजणा है, तेनो नियम नथी अने स्यूलयी पच्चत्काण है, एटजे जेथकी राजा दंमे. एवं पारकुं इव्य जेवं तेनुं पच्चत्का ण है, शेष पदनो अर्थ पूर्ववत् ॥ ए तेरमी गाथानो अर्थ कह्यो ॥ १३॥

हवे ए व्रतना पांच अतिचार हे, ते पडिक्कमे हे.

॥ तेनाहडण्डगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ॥ कुड तुख्ल कूडमाणे, पडिक्कमे देसिच्यं सर्व ॥ १४॥

अर्थः-एक स्तेनाहृत अतिचार, बीजो प्रयोगातिचार, त्रीजो तत्प्रति

रूप अतिचार, चोथो राज्यविरुद्धगमनातिचार, पांचमो कूडां तोलां अर्ने कूडां मापनो अतिचार हे. हुं ते पांचे अतिचारोने पडिक्कमुं हुं. इत्यादि ॥१४॥

? हवे ते विवरीने कहें हो. प्रथम स्तेनाहत ते स्तेन जे चोरी तेणे करी बीजा स्थानकथी चोरीने आहत एटले आएयो एवा जे केशर प्रमुख पदार्थ जे घणा मोघा जावना होय तेने सोंघा जाणीने व्यापारनी बु ियं अथवा जोलपणाथी लीये, ते प्रथम स्तेनाहत अतिचार.

१ बीजो तस्कर जे चोर तेने प्रयोग आपी एटले प्रेरकपणुं करी चोरी कराववी, ते जेम के चोरने कहे के कालें अमुक गामें गया हता, तिहांथी कांइ लाव्या हो के ? अथवा हमणां केम क्यांइ जता नथी? फोकट वे सी केम रह्या हो ? कांइ वस्तु खपती नथी के छं ? जो खपे तो ठीक हे अगर न खपे तो तेवी सर्व वस्तु अमे राखी छुं ? इत्यादिक वचने करी प्रेर रणा करे. तथा कोश, कातर,दोरडादिक, शस्त्रादिक, युधुरकादिक चोरी क रवाना उपकरण आपे. वली मार्गमां खावाने माटे जोइयें तेवुं संबल आपे ते प्रयोगातिचार कहियें. एवी रीतें चोरने चोरी करवामां प्रेरणा करे, ते पण जो तत्त्वथी विचारीयें तो चोरीज हे. जेमाटें शास्त्रमां सात प्रकारना चोर कह्या है ॥ यतः ॥ चौर श्रीरापको मंत्री, जेदकः काणक क्रयी ॥ अन्नदः स्थानदश्चेति, चौरः सप्तविधःस्मृतः ॥ ? ॥ जावार्थः—१ चोर, २ चोरनी पासें रहेनारो, ३ चोरथी विचार करनारो, ४ चोरनो चे दक्ष, ५ चोरीनी वस्तु लइ वेचनारो, ६ चोरने खावा माटे आपनारो, ७ चोरने स्थानक आपनारो, ए साते चोरज जाणवा.

र तत्प्रतिरूप ते वेचवानी वस्तुमांहे प्रतिरूप वस्तु ते तेना सरखी ज वस्तुनो चेल संचेल करी वेचवी. जेम ब्रीहिमां पलंजी नामा धान्य, घृ तमां चरबी, तेलमां मूत्र, हींगमां खिदर ते खेरनो चूको चेलवो, तथा चणानो लोट गुंदरथी चोपडीने चेले, कुंकुममां कर्चव्य कुंकुम चेले, के सरमां कसुंबो चेले, मजीवमांहे जात्यवंत चित्रावाल चेले, एमज कपूर, मिण, मोती, सुवर्ण, रूपुं, श्र्यादिकने विषे तेवीज कर्त्रीम वस्तु चेलीने सारी वस्तुना मूल्यें करी वेचे, एटले ब्रीही वगेरे मोंघा मूलनी होय ते मां सोंघा मूल्यनी पलंजी वगेरे वस्तु चेलीने मोघामूव्यें वेचे. अथवा चोरें चोरी आणोली गाय प्रमुखने सोंघाचावमां लक्ष्ने पढी तेना सींगडां जो

वांकां होय, तो पाका किंगडाना फलनो रस चोपडी तेने अग्नियें ज्ञेकी में पांशरां करे अथवा पांशरां होय तो वांकां करें, जेम को इंजिस हीं तेवां करें. ए सर्व तत्प्रतिरूप व्यापार अतिचार जाएवो.

ध राज्यविरुद्धगमनातिचरा. ते जे विरोधि राजाना राज्यने विषे एटले पो ताना राजानो इशमन जे राजा होय,तेना राज्यने विषे पोताना राजायें व्या पार करवाने अर्थे जावा माटे निषेध्यो होय तो पण तिहां जइ लोनना वशयी व्यापार करे. उपलक्क्णथी राजायें निषेधेला एवा दांत, लोह,करिया णादिक वस्तु पण जाणवी तेने यहण करे, ते विरुद्धगमनातिचार कहियें.

प कूडां तोलां अने कूडां मापां तेमां तोलां तो प्रसिद्ध हे, अने जे गजा दिकें तथा हस्तादिकें करी रेशम कापड प्रमुख नरीयें, तेमज जेथी अन्ना दिक वस्तु मिवयें ते माप कहीयें. तिहां माल लेवाना अधिकां तोल तथा माप राखे अने माल वेचवाना ठीढां तोल माप राखे, तेने कूट तोल कूड माप अतिचार किह्यें ॥ यदाह ॥ लोल्येन किंचित्कलया च किंचित्, मापे न किंचित्तलयां च किंचित् ॥ किचिच्च किंचिच्च समाहरंति, प्रत्यक्त्चोरा विष जा नवंति ॥ १ ॥ अधीते यिकंचित्तदिप मुपितुं याहकजनं, मृष्ठ बूते यदा तदिप विवशीकर्त्तुमपरं ॥ प्रदत्ते यिकंचित्तदिप समुपादातुमधिकं, प्रपं चोयं तृत्तेरहह गहनः कोपि बिणजां ॥ १ ॥ नावार्थः—केटलुंएक लोल्य तायें करी केटलुं एक कलायें करी, केटलुं एक मापें करी, केटलुं एक त्राजवायें करीने, कांइ कांइ हरण करी लीये. तेमाटे विणकने प्रत्यक्त चोर ज जाणवा ॥१॥ तथा विणक जे कांइ निर्मेत पण याहक लोकोने नेतरवा माटे जाणवुं. अने मीतुं बोले ते तेने वश करवा माटे जाणवुं, तथा लोकने जे गोल प्रमुख आपे ते अधिक नाव लेवा माटे जाणवुं, एम विणकना व्या पारनो प्रमुख कांइक अतिगहन उंमो हे. एम श्रावकने करवुं घटित नथी.

्रहवे श्रावकें केवी रीतें व्यापार करवो ? ते कहे हे ॥ यतः ॥ उचियमु जुणं फलं, दवाइक्कमायं च उक्करिसं ॥ निविविद्यमिव जाणंतो, परस्त सं तं निगितिहुङ्का ॥ १ ॥ नावार्थः—उचित व्याजनुं सेंकडे चार अथवा पांच नी वृद्धिरूप लेवुं. कह्यं हे के व्याजें बमणा याय तेम करवुं. हवे इव्य वली बे प्रकारें हे एक नालिकेरादिक गणीने वेचाय ते गणिम कहियें बी जी तोलीने वेचाय आदि शब्दथकी एमां तक्तत बीजा पण अनेक चेद हे तेमां जो कोइ पण सोपारी प्रमुख वस्तुनी अवत घइ गइ होय कोइनी पा सें मली शकती न होय तेवारें पण श्रावक जे होय ते पोताना घरमां क मागत रही गयेलुं जे सोपारी नालिकेरादिक इव्य विशेष तेमां पाम्यो जे (उक्करिसं के०) उत्कर्षनी वृद्धि एटले उत्कष्ट लान ते चार गुणो पांच गुणो यवा रूप तेने मूकीने ग्रुन परिणामें करी बमणा लानेंज ते वस्तु श्रा पे, पण मनमां एवी चिंतवणा न करे जे श्रा वस्तुनी अवत घइ गइ, ते घणी सारी वात घइ. हवे हुं चार गुणा दाम लइश तो पण चालशे ! एवो विकल्प न करे. परंतु बमणा नाणाचीज मनमां संतोष पामी रहे.

तेम वली रस्तामां पडेला परसंबंधि इव्यादिकने जाएतो थको महण करे नहीं. तथा व्याज लेवामां ऋयविऋयमां पण देश कालादिक जोइने जिहां जेम उचित होय तिहां तेम करे,जे थकी उत्तम लोक कोइ निंदा न करे, एवा लाज लेवानुं करे, नहीं कां पांचमो अतिचार जाएवो.

ए पांच अतिचारने विषे पण में व्यापारादिकें करी वाणिक कला करी है, पण कोइनुं खात्र पाड़ी चोरी कीधी नथी एवा अनिप्रायें करीने जोइयें तो व्रत नांगतुं नथी, लोकमांहे ए चोर हे एवं नाम थापवानो अनाव है, तेमाटे अतिचार जाणवो केम के नियम खेती वखतें कोइने घेर खात्र पाड़ी चोरी न करुं एवं पञ्चरकाण लीधं है माटे.

श्रमवा ए स्तेनाहतादिक पांच श्रतिचार जे हें, ते राजादिकना निय हना हेतु हे. प्रकट चोरी रूपज हे परंतु केवल श्रनाचोगादिक श्रतिक्रमा दिकें करी श्रागर्ले श्रतिचारपणे जाणवा.

श्रितचार ढांमवाने श्रुषं चोरनी श्रदार प्रस्तियो हे, तेने श्रावकें जाणीने त्याग करवो, ते श्रदारनां नाम कहे हे ॥ श्लोक ॥ जलनं कुशलं तर्जा, राजनोग्याऽवलोकनं ॥ श्रमार्गदर्शनं शय्या, पदनंगस्तथेवच ॥ १ ॥ विश्रामपादपतनं, चासनं गोपनं तथा ॥ खंमस्य खादनं चैवं,तथान्यनमृहि राजिकं ॥ १ ॥ पट्याश्युदकरद्भुनां, प्रदानं झानपूर्वकं ॥ एताः प्रस्ततयोक्षेया, श्रष्टादश मनीषिनिः ॥ ३ ॥ जावार्थः—जलनं एटले जेलुं जलवुं, ते चोरने कहे के तुं जय राखीशनहीं हुं पण तहारा जेलो जलीश, इत्यादिक वचने करीने चोरने उत्साहवंत करे, १ कुशल ते जेला थाय तेवारें सुख इःख पूढे, शाता पूढे, कुशल पूढे, ३ तद्धी ते हस्तादिकनी संझा करीने चो

रने चोरी करवाने खर्चें मोकखे, ४ राजनोग्य ते राजनोग्य इब्यने उल वे एटजे सार सार वस्तु उंची मूके अने असार वस्तु देखाडे, ५ अवलो कनं एटले चोरी करवानां वेकाणां देखाडे अवलोकन करी चौरने चोरीनी बुदिनी अपेक्सयें वेकाणां देखाडे, ६ अमार्गदर्शनं एटले कोइ आवी पूर्वे के अमुक चोर कया मार्गे जतो हतो ? तेवारें ते चोर जे मार्गे गयो होय ते मार्ग न देखाडे, अने जलतोज मार्ग देखाडे. जेम चोर अने जेनी वस्तु गइ होय ते धए। वे एकता मर्से नहीं एवो मार्ग देखाड़। आपे. अर्थात् चोर पूर्विदिशायें गयो होय तो पश्चिमदिशायें गयो हे, एम कही दीये, 9 शय्या एटले कोइ चोर चोरी करीने पोताने घेर आव्यो होय तो तेने सु वाने शच्या आपे, ए पदनंग एटर्झे चोरना पग नांग्या होय तो चतुष्पदा दिक वाहन वेसवाने आपे, ए विश्राम एटजे चोर चोरी करी आव्यो हो य, तेने विशामा माटे पोताने घेर वास करवाने जगा आपे, १० पादपत नं एटले चोरी करी आवनार चोरने पगे लागे तथा तेना गौरवने अर्थे निक करे, ११ ञ्चासन एटले चोरने बेसवामाटे मांची प्रमुख ञ्चासन ञ्चापे, १२ गो पन एटले चोरने ठानो राखे संताडी मूके, लोकोने कहे के इहां चोर नथी, १३ खंमखाद एटले चोरने खंम मांमादिक नातुं आपे, १४ माहाराजिकं ते लोक प्रसिद्ध हे, १५ पट्टी, ख्रिया, उदक,रज्जुनुं ज्ञानपूर्वक प्रदान करवुं एटर्जे जे चोर दूरदेशांतरथी चोरी करी आव्यो होय तेने पंग धोवाने अर्थे पाणी आपे, दूरेंची आव्यानो थाक टालवा निमित्तें पग चोलवाने अर्थे तेलादिक आपे, जेयकी तेनो थाक उतरी जाय. जिहां इःखतुं होय तिहां सेकवाने अर्थे अप्नि आए। आपे, श्रम टालवाने अर्थे उष्णपाणीयें करी स्नान करा वे, १६ रसोइ करवाने अर्थे अप्नि आए। आपे, १७ तडकामांथी तरस्यो थको आव्यो होय तेने शीतल पाणी आपे, १० चोरें चोरी करीनें आणे ला चतुष्पदादिक जीवोने बांधवा माटे पाटी दोरी आपे, तेमां ज्ञानपूर्व क ए पद सर्व वेकाणे जोडवुं अज्ञानपूर्वकने निरपराधपणुं वे, माटे ए अढार चोरनी प्रसूति जाणवी. ए जाणी होय तो व्रतनो निर्वाह थाय. व्रतनो निर्वाह ते व्यवहार ग्रुदियेंज थाय तो व्यवहार ग्रुदि तो मन, वचन, का यानी सरलतारूप अवक्रतारूप जाणवी. तेना उपायादिकनो विचार म हारा करेला श्राद्धविधियंथनी वृत्तिथकी जाएवो.

हवे ए व्रतनुं फल कहे हे. जे प्राणी चोरीनुं पच्चकाण करे, तेनो वि श्वास सर्व लोकने विषे होय, घणो यश होय, घरमां घणी लक्क्षी होय, घणी ठकुराइ होय, ज्ञा जवने विषे एटला वानां पामे, अने परजवने वि षे स्वर्ग देवलोकनां सुख जोगवी अनुक्रमें मोहें जाय. जे माटें कहां हे, के स्वेत्रने विषे, खलाने विषे, दिवस होय तथा रात्रि होय सथवारो बधो लूं टातो होय एटला स्थानकें इच्य नाख्युं थकुं विणसे नहीं शामाटे ? जे चोरीनुं पच्चकाण कखुं हे, तेना पुण्यना उदयें करीने ते हित्तनुं इच्य पूर्वों क स्थानकोमां पण नाश पामे नहीं. ए महोटो प्रजाव जाणवो. वली चो रीना व्रतनुं फल कहे हे:—गाम, आगर, नगर, इोण, मुख, मंनप, पाटण एटला स्थानकनो घणा कालपर्यंत राजा थाय.

हवे जे पुरुष ए व्रतने न पाले श्रंगीकार न करे, श्रथवा व्रत लक्ष्ने श्र तिचार लगांडे खंमन करे ते पुरुष इर्जागी थाय, दासपणुं पामें, श्ररीर हे दादिकपणुं दारिइपिणुं इर्गति श्रादिक घणा इःखनो नोगवनार थाय. ॥ उक्तंच ॥ इहएव खरारोहण, गिरहा धिक्कार मरण पद्धनं ॥ इस्कं तक्क र पुरिसा, लहंति निरयं परनविष्म ॥ १ ॥ निरयाउं उ वहंता, केवहाकुक्कु ट मंट वहिरंधा ॥ चोरिक्क वसण निहया, ढुंति नरा नव सहस्सेसु ॥ १ ॥ नावार्थः—श्रा नवें गर्दनारोहण थाय, गिरहा एटले निंदा पामे तथा मर एपर्यंत सर्व कोइ धिक्कार करे, तस्कर एटले चोर पुरुष होय ते एवा इःख श्रा नवने विषे पामे श्रने परनवने विषे नरकगितने पामे ॥ १ ॥ वली ते चोर पुरुष नरक थकी निकलीने टूंटा, मूटा, बहेरा, श्रांधला, थाय चो री रूप एकज व्यसने (निहया के०) हणाणा थका एवा (नरा के०) पुरुषो ते (नवसहस्सेसु के०) हजारो नवने विषे टुंटा मुंटा प्रमुख (हुंति के०) थाय ॥ १ ॥ ए चौदमी गाथानो श्रर्थ कह्यो ॥ १४ ॥

हवे ए त्रीजा अणुव्रत उपर पिता पुत्र एवा वसुद्त अने धनद्त्त नी कथा कहे वे:—न्याय मर्यादाये पामेलुं जे वित्त, तेणे नरेलुं एवं पोतन पुर नामें एक नगर वे. ते नगरमां घणा गुणें करी युक्त एवो जितशत्रु नामें राजा राज्य करे वे. त्यां सर्वश्रेष्ठीमांहे विख्यात, सरल खनावनो, चंड्मानी पेरें शीतलतावालो, संपदायें करीने देवता सिरखो, एवो सोमदेव नामें ज्ञेव र हे वे. तेने धनदत्त नामें पुत्र वे, ते युवावस्थामां व्यसनने विषे आसक्त थ येलो हे. तथी खिवनीत थको ग्ररुजनने तथा माता पिताने लगारमात्र पण गणकारतो नथी. तेज नगरने विपे एक बीजो वसुदत्त एवे नामें रोत वसे हे, ते सोमदेवनो मित्र हे. ते वसुदत्तने घणे ग्रणे सिहत जर्क जावि, क्रियें करी प्रसिद्ध, खने ग्रणे ग्रुक एवो धनदत्त नामें पुत्र हे. वेढु रोतने व्यापार घणो तेणे करी बेढु क्रियें प्रसिद्ध हे. ते वेढुने सरखापणा माटें परस्पर प्रीति हे. परंपरागत कोइक पुष्य योगें करी लक्ष्मी पण परंपरागत चाली खावे हे. हवे सोमदेव रोतने धन तो घणुं हे, तो पण धन जपांज वाने पोताना पुत्रने खयोग्य जाणी पोतेंज परदेश जवानो विचार करतो हवो. कह्यं हे के:—तृक्षाखानिरगाधेयं, इष्पूरा केने पूर्यते॥ या महिक्षरिक्ष्तिः, पूरणेरेव खन्यते॥ १॥ नावार्थः—तृक्षाह्मप खाण खति उमी हे, ते इःखें करी पण कोइथी पूराय नहिं. जे तृक्षा खाणमांहि महोटा महोटा उने नाक्ष्या हे तो पण ते खणातीज जाय हे, पण पूराती नथी॥

द्वे ते ज्ञेव पोताना पुत्रने ज्ञातु सरिखो गणतो, अने पुत्र व्यसनी हे, तेथी तेनी उपर ऋणविश्वास ऋाणतो थको, संसारमां सार, तथा सर्वे ब्र त थकी अधिक एवा जाणियें पंचमहाव्रतज होय नहिं ग्रुं ? एवा कोडि मूख्य नां एकेकां एवां पांच रत्न ग्रप्त पोतानी नाम मुझ करीने, रूडे यत्ने करी, रूडी रीते बांधी, प्रशस्त वस्तु मध्ये मूकी, जीवनी पेरें गोपवीने, तेनी उ पर रूपुं, सोनुं अने सार वस्तु जरीने, करंमियो तैयार करी, पोताबा मित्र वसुदत्तने घेर मूकतो ह्वो. ने तेने रूडी रीतें वारंवार जलावीने, घणी वस्तु खेइने ते दूर देशांतर गयो. त्यां न्यायमार्गे व्यापार करी सर्व वस्तु वेची, जेम थोडाकालें आपाढ मासमां वर्पादें करी घएं जल नराय, तेम सोमदेवशेवने धननो नरावो घोडा वखतमां घतो हवो. तेघी ते शेव वि चारे हे जे हुं इहांथी अनेक प्रकारनां करियाणां नरीने ते पोताने देश ज्इ वेचि नाखीश, तो मने सहस्रगणो लान थाशे, एवा मनोरथ धरतो करियाणां लइ पोताना नगरनणी चाल्यो मार्गने विषे ऋटवीमां ऋाव्यो, त्यां निख्न लोको हाथमां विविधप्रकारना हथियार लेइने, मारो, मारो, हणो, हणो, एवं मोढेथी बोलता एकदम त्रावीने साथनें ज़ंटवा लाग्या, ज़ेवनो पण सर्व माल लुंटी गया. धिक्कार हो ! कर्मने जे मनुष्य चिंतवे कां इ ने याय कांइ. जीव विविधप्रकारनां मनोरय करे हे पण धारेखुं यातुं नथी जे माटे ते जीव पोते एक विचारे वे तो दैव वली बीर्जंज कांइ वि चारे वे. ते वातने ते रांक वली कांइ जाणता नथी. माटें जे कोइ माण स लोजनो अजिलापी होय ते लोजने विपाकें करीने पोतानुं मूल इव्य खुवे वे. अति कोध, अति लोज, अति इोह, अतिमद, अति मोह, एटला परज्ञवने विषे तो वेगलां इःख दीये वे, परंतु ते जीवने आ ज्ञवने विषे पण इःखना हेतु याय वे, तो पण ते अबूज लोको कांइ पण समजता नथी.

हवे ते लोमदेव शेवनुं सर्व इव्य गयुं तेथी शोक सहित, जेना चित्तनो जत्साह लोपाणो ते एवो, केवल पोतानी छजानी सहाय सहित पोताने घेर आव्यो, तेवारें वसुदत्त तेने मलवा आव्यो, तेने होतें पोताना इःखनी वा त कहीने पढ़ी पूछवा जाग्यों के करंमियों तो कुशज है ? कवि कहे है अहो ! इव्य उपर केवो मोह हे ? हवे वसुदत्त चित्तमां विचारवा लाग्यो जे रूपा दिक असार वस्तु जपर एहवो मोह होय नहिं,माटे घेर जइ जोजं. कारण के करंमियामांही कांइक सार वस्तु लागे हे. एवं विचारी घेर जइ वसुद्तें करंमियो बोड्यो तो साद्वात् जाएो महादेवना पांचनेंत्रज होय नहि? एवां पांच रत्न तेणे जोयां, जेथी तेनुं हृदय लोजं हृणाणुं विवेकरूपनेत्र देवा णां. तेथी तेणे मित्राइ पणानी कीर्त्ति मूकी दीधी अने राजानो नय पण अवगणीने, मित्रने विपे डोह करवो धाखो. हवे तेणे आ जवने अने परज वने विषे होहना समूहना मूल कडवां हे, एवं पोताना आत्मामां अणवि चारीने करंमियामांथी पांच रत्न काढी जइ चोरी किधी ते चोरी केवी है ? तोके त्रा नवने त्रने परनवने विषे इःखनी हेतु हे. तो थापण उलववी तेतो वली जेम संस्कारथी वघारेलुं महा विष, श्रहंकारथी वधेलो सर्प होय, तथा जेम पवन युक्त अमि होय तेम ते उत्तवेती यापण जाणवी. वती ते पूर्वोक्त पदार्थों तो तेनो अवधि पूरण थये शांत पण थाय. परंतु लोनियानी धिहाइ पणानो तो पार आवेज नहिं. एटला माटे लोनी प्राणीने धिकार हजो.

हवे एक दिवसें सोमदेव शेव वसुदत्त शेव पासेंची थापण आणी पोताने घेर आवी करंमियों संनाली जूए वे तो ते मांहे पांच रत्न दीवां निहं,तेवारें ते शून्यमने क्लोकमांहे मूर्ज्ञावंतनी पेरें, यंनाणानी पेरें, सत्यवंतमां अधि क वे, तोपण शोचना करतो थको विचारवा लाग्यों के मित्रनुं ने महारुं एक चित्त वे,कार्यनो जाण वे,माटे ए अकार्यकाम केम करे ? अथवा लोनरूप स मुइने तरवाने तो जे कलामांही माह्या होय ते पण बुढे हे. माटे लोकमां अपवाद थयाथी लक्कायें करी मानज्ञो निह, तथी हानो एकांतें जइ तेनी पासे माग्रं. जे सक्कन होय ते हीणुं काम न करे, एम करतां करे तो पश्चाचाप करे, अने जो लोकमांहि वात उघाडी पढ़े,तो मरण पामे. पण लीधी वस्तु माने निहं! एवं विचारी वसुदत्तने घेर जइ युक्तियें करीने जेटले मागवा जाय हे, तेटले वसुदत्त धीरजधी कहेवा लाग्यों के अपे घेला! रत्न ते छुं? पण हुं जा णुं हुं जे तुं निर्धन थयों हे,तथी तुक्तने लवरी थइ आवी हे अथवा वायरे स्त्र ताथी तुक्तने वायु थयेलो जणाय हे, जेमाटे जेम तेम लवे हे. कह्य हे के साम पलपित रहित प्रनं,प्रत्ययदनेऽपिसंशयं कुरुते ॥ क्रयविक्रये च लुंहित, तथापि लोके विणक् साधुः ॥१॥ जावार्थः— एकांतें आप्युं होय ते उलवे, प्रत्यक्ष पणें दीधुं होय तेहनो संदेह करे, लेतां अने देतां छ्टे, तो पण लोक कहे जे वा णियो गरिव हे. सोमदेव प्रतिहत वचने दीनमुख थको उठीने पोताने घेर गयो.

तेने चिंतारूप श्रियों करी हृदयने विषे ताप प्रज्ज्वित यतो ह्वो, ते यी ज्ञेव विविध प्रकारना धूत्ताराउने बुद्धि पूढतो श्राने श्राने प्रकारना धूत्ताराउनां वचन सांजलतो ह्वो. एकदा कोइ धूत्तारो वाणियाना वे पुत्रनी मित्राइनो हृद्यांत सोमदेव ज्ञेवने कहेतो ह्वो. ते जेम के कोइएक वे वाणि याना पुत्रोने मित्राइ घणी ह्ती तेथी तेउधन उपार्जवाने परदेश गया,त्यां कांइक इव्य कमाणा, ते वेमांथी एकने घेर जवानी उत्कंवा थइ,त्यारें मित्रने कहेवा लाग्यों जे हुंतो घेर जइश. माटे तारे कांइ घेर मोकलवुं हे ? तेवारें वीजे पोतानी स्त्रीने निर्वाह चलाववासारु ते मित्रने एक रत्न श्रापी कह्यं जे श्रा एक रत्न मारी स्त्रीने हाथोहाथ श्रापजे. ते घणुं श्रव्पमूख्यतुं हे,ते थी तेने कोइ श्रवसर काम श्रावज्ञे, तेथी तेणें हा कही. श्रादर सहित ते रत्न लइ घर तरफ चाल्यो. ते श्रवुक्रमें पोताने मंदिर श्राव्यो तेवारें लोजने वश थइ ते रत्न मित्रनी स्त्रीने श्राप्युं नहिं.

हवे ते बीजो मित्र घणा रत्नो उपार्जिने हर्षित वदनथयो थको पोताना न गर तरफ चाढ्यो. एम करतां पोताना नगरनी नजिक आब्यो,तेटले सांज पडी गइने असुर थइ गयुं. तेथी एम विचारवा लाग्यो के असुरी वेला है, ने रखे ने कोइ पडावी लेशे तेथी कोइ धनाढ्य हुई ब्राह्मणने घेर रत्ननी गांसडी मूकीने पोताने घेर आब्यो. हर्षित हृदयथको स्त्रीन पूहवा लाग्यो,

मित्र साथें में रत्न मोकब्युं,ते तेणे तुने आप्युं ? ते सांचलीने स्त्री बोली के मने तो कांइ आप्युं नची, तेची ते विपाद पाम्यो यको विचारवा लाग्यो जे एक रत्नमां मित्र, लोनमां पड्यो, तो घेर घेर नीख मागनार माणसनुं मन एटलां बधां रत्नो देखीने केम नहिं चले ? अने तेने हाथ आवेलुं धन मने पाडुं केम आपे ? एम आर्चध्यान धरतो क्रोध सिह्त घणे तेणें कप्टें रात्रि गुजारी, ते एकरात तेने एक वरस जेवडी महोटी थइ. प्रनात थयो के तुरतज ते ब्राह्मणनें घेर गयो,ने पोतानी थापण मागी, त्यारें ते ब्राह्मणने जाणियें रोग ययो होय निह शुं ? तेम वेहेरानी पेते पूत्रे कांइ ने जवाब दीये कां ? तेथी ते विषक आशा रहित थयो इःखेंसहवा योग्य एवा इःखनें धरतो थको लोक ञ्चागल कहेतो फरे पण उपाय पामे नहि. एकदा श्रीजि नज्ञवनने विषे गयो, त्यां कोइ श्रावकना पुत्रें बोलाच्यो तेवारें तेएों ते पोतनुं सर्व वृत्तांत कद्यं ते सांजली श्रावकपुत्रें उपाय बताव्यो जे इहां धूर्त मध्यें प्रधान एह्वी फुंफा नामें गणिका है,तेह्यी ताहरुं कार्य याज्ञे. ते वात सांज ली ते फुंफाने मंदिर गयो, ने तेने धन आपीने वशकरी त्यारें ते शेवनुं काय सा थवा तैयार थइ ते व्यवहारीये पोतानुं सर्व वृत्तांत तेनीपासें कहां,ते सांजली कहेवा लागी के हे ज़ेत! ताहारं कार्य जतावलयी हुं करीश. तुं कांइ चिंता करी शमां. इवेते फुंफा गणिका चार पेटीयोने विचित्र जातना चित्रामण करावी, तेने तालां दइने घरमां मूकीने विप्रने घेर जइ,तेने एकांते तेडीने जांखुं मोढुं करी कहेवा लागी के माहरे एकज पुत्र हतो ते समुड् मार्गे व्यापारने अर्थे ग यो इतो, ते घेर आवतां रस्तामां वाहाण नांगवाथी समुइमां हुबीने मरण पाम्यो, तेने चार स्वीयो हे, पण तेमां एकेने पुत्र नथी, अने घणा रतें न रेली एहवी चार पेटी तथा बीजी पण सार सार वस्तु प्रमुख घणुं इव्य अमारी पासें हे. ने अमें तो हवे अनाथ थयां, तेथी हवे अमारी गति कोण जाणे केवी याजे ? पुत्र नथी तेथी अमारुं सघलुं इव्य राजा लइ ले हो, माटे राजा न जाएो ते पेहलां जे कांइ उपाय होय, ते तमें कहो, के जेथी अमारुं इव्य रहे. तमे पोताना हो तेमाटे तमोने कहुं हुं के जेम को इन जाएो तेम ढानी रीतें ते चार पेटीयो तमारे घेर मूकीयें. एवी तमे ञ्राका ञ्रापो. एवं ते गणिकानुं बोलवं सांचली ते ब्राह्मण हृदयमां हर्ष धरतो यको जाएो घेलो ययो होय नहिं ? जाएो नृत वलग्युं होय नहि ?

एवो इव्यने लोनें परवश थयो. तेथी जेम नव्यने उपदेश सांनव्याथी प्रती त उपजे तेम ते ब्राह्मण पण वेश्यानी कहेली वातने सत्य करी मानतो ह्वो. अने गणिकाने केहेवा जाग्यो जे जेटलुं धन होय,तेटलुं तुं लड़ आवी अहीआं मूक, आ घर तारुं हे, इहां कांइ विणसज्ञे नहिं. महारा घरने विषे महारी कायानी पेरें यत्नथी ते इव्यने हुं राखीश. सघदुं तमारुंज हे, जे वारें तमारे जरूर पड़े, तेवारें क्षेजो. माटे एमां पूठवुं हां हे ? अने विचारवुं शुं हे ? अने वली विलंब पण स्यो करवो ? माटे जें धन होय ते उतावले ला वो. किव कहे हे खहो ! धूर्तनी धूर्तता जुवो केहवी हे ? एम कही ते गणि का पोताने घेर जइ चार दासीयोने माथे चार पेटीयो मूकी रात्रिने समये ते वाणिया साथें संकेत करी ते विप्रने घेर आवी. तेने देखी विप्र पण संतु प्ट यइ उठीने ते गणिकाने घरमां जइ गयो अने जेवामां ते पेटीयो अंदर मूकवा जाय हे, तेवामां ते वाणियो पण तिहां आवीने ब्राह्मण प्रत्यें क हेवा लाग्यों जे में जे रत्ननी गांसडी ताहरे त्यां अगाउ मूकी हे, ते मने ञ्चाप. ते सांनली विप्र विचारवा लाग्यों जे जो हमणां नहिं ञ्चापुं, तो क्षे श थाज़े अने अवस्य धन पण नहिं मूके ! माटे ए थोडे रत्ने शुं थवावानुं हे ! एम चिंतवी ते रत्ननी गांसडी ते विश्वकने आपी दीधी अने कह्यं के तुने ता रा रत्नो सोंप्यां हे, हवे ताहरे माहरे कांइ खेवादेवा नथी. हवे तुं आ वात कोइ ञ्चागल कहीरा मां,एहवामां पूर्वें करी राखेला संकेतवाला कोइक पुरुषें यावीने ते गणिकाने वधामणी यापी के तहारो पुत्र कुशलक्तेमें घेर याव्यो वे,एवी वधामणी सांजलवाथी ते कारमोज हर्ष देखाडती चार दासीयो सा थें नाचवा लागी, तेटले ते वाणियो पण पोतानी थापण पाढी आववा थी तेनी साथें नाचवा लाग्यो, ते सर्वने नाचतां जोइने वित्र पण नाचवा लाग्यो, त्यारे ते गणिकायें पूछ्यं जे हे ब्राह्मण! तुं केम नाचे हे ? ते सांच ली ते बोख्यों के आ धूत्तारों धिवों हे,तेणे हुं नाचुं हुं. ए प्रकारें ते वाणियों ग णिकाना पसायें करीने ब्राह्मण पासेंथी पोतानां रत्न पाम्यो, तेमांथी गणि काने देवायोग्य दइने हर्षवंत हृदयें पोताने मंदिरें गयो.

हवे मित्रने जे रत्न आप्युं हतुं, ते मागवाने ज्यारे ते विणक गयो, त्या रें ते धूर्च मित्र कहेवा लाग्यों के में तो तारी स्त्रीने हाथोहाथ ते रत्न आ प्युं हे. ते सांचली ते विणकें पूह्युं के तें रत्न आप्युं, ते वखत कोई साहि।

हतो ? तेवारें तेणे कह्युं के हा हतो. एम कहीने ते धूर्नें कोइएकने कांइक लोन देखाडी, तेने साचो साहि। बोले, तेवुं शीखवीने जूनो साहि। उनो करीने तेडी लाब्यो. तेने जोइने पहेला विणकने कांइ उपाय निह जडवा थी खेद पामतो ते कुमित्रने तथा जूतासाङ्गीने अने पोतानी स्त्रीने साथें लइने नजिकना गाममां एक घणो बुद्धिवंत अने न्याय करवामां अतिनि पुण एवो कोइ पुरुप हतो, तेनी पासें न्याय कराववा गयो. त्यां जतां कोइ यें खबर आपी के ते न्याय करनार तो परलोक गयो है ने तेमना होकराई बे.ते सांनर्जा तेने घेर जइ घरमां जोवा जाग्यो,तो ते न्याय करनारना बोकरा ने तेनी मातायें जमवा बेसाड्यों हे, ने जाणामां उनी उनी राब पिरसी हे, पण ढोकरो घी मागवाने मिशें जमवाने विलंब करतो हतो ने विचारतो ह्तो के जो माहरी माता घी छापशे, तो ठीक, नहिंका पठी ए रावडीज उपाडीने हुं पी जइरा ? एवी ते बालकनी बुद्धिजाणी विस्मय पामी तेविण के तेनी पासें पोतानुं सर्व वृत्तांत कह्यं. त्यारें तेणे चारेने जूदा जुदा बोला वी पूठ्युं. पठी ते विणकने कह्युं जे ताहरा रत्न जेवो कणकनो नमुनो क रीने लाव, ते प्रमाणे वीजाने पण नमुनो करवानुं कह्यं तेथी बन्ने जण नमुनो करी लाव्या अने विणकनी स्त्रीयें कह्युं जे में तो ते रत्न दीतुंज नथी तो नमुनो क्यांथी बनावी शकुं ? वली जुवी साझी आपनारे कह्यं के मुने ते रत्नोनों आकार सारी पेवें सांचरतो नथी, पण रत्न बहु मूखवाद्धं हतुं, तेमज घणुं रूडुं हतुं, कांति सारी हती. तो पण न्याय करनारे तो कह्युं के तुं पण जेवुं जोयुं होय, तेवो तेनो नमुनो करी लाव. ते चारेमांथी जूवो सा ही जे हतो तेनाथी ते रत्ननो बरोबर नमुनो थइ शक्यो नहिं. तेथी तेनुं कूड प्रगट थयुं, ने ते रत्न ते विणकने तेना मित्र पासेंथी पातूं अपाव्युं. हवे ते न्याय करनार, उमरेंतो बालक हे, पण बुदिमां कांश्र बालक नथी, जुवो बुद्धियें कयुं कार्य सिद्ध न याय ? सर्वें कांइ यायज.

एहवी वात सांचली सोमदेव शेवे पण माही गणिकाने, तेमज ते बुद्धि मान न्यायना करनारने पूबवाधी पण कांइ कार्य सखुं निहं,त्यारें तेणे नि श्रय कखो जे मारा अजाग्यना योगधी रत्न गयां, तेमज मार्गमां पण हुं खू टाणो तेथी निराश घइ घेला सिरखो बनवानुं विचारी घेलो बनी,जेम तेम लवतो राज दरबारें गयो. त्यां दैवयोगधी राजानी नजरें पड्यो,तेवारें राजायें वकने पूर्वयुं के ए कोण है अने खं ज़वे है ? ते एने जइ पूर्व. सेवकें शेवने आवी पूर्वयुं के तुं कोण है ? त्यारे तेणे पोतानुं सर्व हत्तांत कह्यं. सेवकें आवी राजाने कह्यं, राजायें ते शेवने पोतानी पासें तेडावी सघद्धं हत्तांत पूर्व्युं.

ते शेवें पोतानुं सघ छुं छः खराजा आगल कही विनित करी जे हें रा जन ! तमें सेवकजनना आधार बो, तेमज मारे तो एक तमारोज आधार बे. तेवारें राजा कहें हे के तुं खरथ था विश्वास राखी ते रत्ननां नाम, प्रमा ए मूल्य प्रमुख सर्व कहे. तेथी तेएों ते रत्ननां नाम, मान तथा मूख्य आदि सर्व कहाां ते प्रमाए मूख्य सांजलीने राजायें जाए जे आ कहे बे ते सत्य बे, जूवो नथी. एम विचारी राजायें कहां हे जह ! कांइक जपाय विचारी ताहरुं कार्य करीश, एम कहीने शेवने । वसर्क्तन कर्छो.

हवे एकदा राजायें सर्व रत्नना वेपारीने तेडावी कह्युं जे महारे रत्नज डित मूकट घडाववो हे, तेमज राणियोनां आजरण पण रत्नजडित घडा ववां हे, माटे देशमां अथवा परदेशमां जेनी जेनी पासें रत्न आव्यां होय अथवा पोताना घरमां होय ते सघलां मंगावीने जे मारा माणसोने सोंपशे तेने हुं मो माग्युं मूख आपीश? ते सांजली सर्व व्यवहारिया विचारवा ला ग्या जे राजानो हुकुम केम लोपाय? तेथी सहु पोतपोताना रत्नना करं मिया घेरथी लावी राजाने सोंपता हवा.

तेवारें वसुदत्त मनमां विचारवा लाग्यों जे मारां रत्नो घणां किम्मती है, तेथी राजा पासेंथी मो माग्युं धन लड़्श, एवं विचारी रत्ननो करंमियों घे रथी मंगावतो हवो. ते सर्व करंमिया परीक्क पासें होडाव्या. हवे राजा ना हुकमथी ते परीक्कें वसुदत्त शेवनो करंमियों होड्यों तो तेमां सोमदे वनां पांच रत्न राजायें दीवां, तेथी पूर्वे सांकेतिक करेलो पुरुष बोल्यों के सहु सहुना करंमियानें निशान करी मूकी जार्च, कार्लें मूल्य वेरावीने लेखं. एम कहीने सर्वेने राजायें विदाय कह्या. सर्व पोतपोताने वेकाणे गया.

पाउलधी राजायें ते बड़ा व्यापारीयोना रत्नोने एकठा मेलवी जेल से ल करी सोमदेवने तेडावी कद्युं के आ रत्नोमांहे जो ताहारां रत्न होय तो तुं उलखीने जुदां काहाडी आप. ते सांजलीने जेम पंखिणी पोतानां ब चांने उलखी काढे, तेम सोमदेवें पोतानां पांचे रत्नोने उलखी काढ्यां. ते समयें सर्वजनोयें जलो जलो एम कह्युं राजाने पण सत्यवादीनो टढ प्रत्य य थयो, अने कद्युं के काले हुं तेडावुं त्यारे आवजो, एम कही रजा आपी. बीजे दिवसें रत्नना व्यापारी तथा परीक्तक अने सोमदेव सर्व मजी राजसनायें आव्या, त्यारे राजायें परीक्षकने कहां के आ रत्नोमां जे ना रेमां नारे रत्नो होय तेनुं मूख्य कहो. तेवारें परीक्तक वसुदत्तनो करंमियो बोडीने अपूर्व पांच रत्नोनुं जेवामां मूत्यकरवा लाग्यो तेवामां राजायें पू र्वे शीखव्याप्रमाणें सोमदेव ज्ञोठ तिहां आवीने बोव्यो के हे स्वाभिन! ए पांचरत्न ता माहरां हे. ए पांच रत्न में वसुदत्तनी पासे थापणें मूक्यां हतां, तेज आ रहां हे ते सांजली राजा जाएं अजब ययो होय निह ? ए वीरीतनी मुखमुदा करीने वसुदत्तने कहेवा लाग्यों के हे वसुदत्त! आ सो मदेव ग्रुं कहे हे ? ते सांचली वसुदत्तने तो हृदयमां अणचिंत्यो धासको पड्यो. तो पण धिराइयें करी कहेवा लाग्यो के हे स्वामिन ? ए सोमदेव नुं धन गयुं, तेथी घेलो ययो यको यहा तहा एंखे हे, तेनुं चिन तेकाणो नथी. तेने सोमदेव कहेतो हवो के पारका रत्न उंजव्यां हे,तेथी तुक्तने जव री यइ आवी हे अने तारी बुद्धि हणाणी हे. एम वज्ने जणा कलह करवा लाग्या, त्यारें राजा वसुदत्तने पूठवा लाग्या के ए रत्नो तुने क्यांथी मत्यां वे ? तेवारें वसुदत्त कहेवा लाग्यों के हे स्वामिन ? ए पांचे रत्न श्रमारे पे ढीगत चाव्यां त्र्यावे हे. राजायें कह्यं के ए रत्नो पूर्वे तमारा घरमां हता तनो क्रोइ साझी है ? त्यारें वसुदन कहे हा है, ने ते साझी सारी पेंहें जाएो हे, जे मारे घेर त्रा रत्न परंपरा चाव्यांज त्रावे हे, ते सांजली रा जा अति कोपायमान थयो थको कहेतो ह्वो के कुलने विपे प्रमाण नूत एटले कुलीन अने प्रामाणिक एवा साह्तीने शीघपणे हजार कर.

तेटले ते वसुदत्त साद्दीने तेडवा माटे निकल्यो. तेने एक पापिष्ट अने विधाताना कोपयी जेना दांत पड़ी गयेला हो, जेनुं सर्व धन कोइयें हरी लीधेलुं हे अति इःखयी शरीरे इर्वल ययेलो हे, तथा जेना मुखमांथी लाल पड़े हे वली मोढा उपर घणा पली हे, एवो दरिड़ी जीर्ण शेह म त्यो, तेने देखीने एकांते तेड़ी जइने कह्यं के जो हुं मारी साद्दी पूरीश, तो हुं तने एक रत्न आपीश! ते सांचली मात्र इव्यना लोनें करी ते इप्टें जूही साद्दी पूरवानी हा कही. आशारूप पिशाचीयें हणाणो एवा लोनीने माथे वज्र पड़ो. कह्य हे के:—योवनं जरया यस्तं, शरीरं व्याधिपीडितं ॥

मृत्युराकांक्ति प्राणान्, तृष्णे किं निरुपइवा ॥ १ ॥ नावार्थः यौवनपणुं जरायें लीधुं, शरीर व्याधियें करी पीड्युं, मरण तो प्राणने वां हे, पण हे तृक्षे ! तुं कां निरुपड्व रही बो ? ॥१॥ हवे वसुदत्त हर्ष पामतो, लोचें करी क्षोन पाम्यो थको विचार रहित, धिष्ठ हे हृदय जेहनुं एहवो थको जीर्ण ज्ञोवने साद्धी जरवा माटे सार्थे तेडीने राजा पासें गयो. तेवारें राजादिक सर्वे कहेवा लाग्या के हे दरिई। ! तुं वृद्ध वे,माथे पत्नी आव्यां वे,माटें जूतुं बोलीश मां. सत्यवचन बोलजे तेवारें शीघपणे सत्यवादीनीपेरे ते इष्टारमा राजाने पगे ठबतो किएत जूठी वाणीयें करीने कूडी साख नरतो हवो. तेथी राजा हृदयने विषे इस्तह क्रोध करीने अत्यंत नमर चढावतो श्रको बोख्यो के हे लोको ! जूर्र ए वेहुनुं इष्टपणुं. जेमाटे पापें करी दृढ थको एहवो ए वृद्ध तेहनी इप्ता जूर्ड, कहेवी हे ? अहो ! एनी नयनी अघटता, अ हो ! एनी निःकष्टता, अहो एनी पापिष्टता, केवी हे ? ते तमें जुर्ज. जे कारण माटें सचा पण एऐ न उलखी, असत्य बोलवामां ते जरा पण न लाज्यो, मारी पण एने बीक न लागी, एहने देवनी पण शंका न उपनी. वली पोताना आत्मानो वैरी जे वसुदत्त,ते धूर्त्तनी धीवाइपणानुं धेर्य तो जूर्त, ए पण केवुं आश्चर्य कारक हे, जे मारा मुख आगल अन्यायनो करनार बे. डोहने विषे मित्रडोह करवो. तेमां महोटुं पाप बे, ते प्रमाणें एणे मि त्रनी साथें विश्वासघात करी तेनी थापण उत्तवी. वजी बीजुं कूडने वि षे अप्रेसर यइ कूडी साख जरावी, एम कपट करी विश्वासघात करवो ते वे महोटां पाप जाणवां. माटें ए वे पापी अधिक पापना करनारा हे. जे माटें ए महारायी पण शंकाणा नहिं, एहना चित्तनी इप्टता जूर्ज. एम ते बेहुनुं मातुं चरित्र उच्चरीनें नाम प्रमुख प्रत्यय देखाडीने राजा का रुणिक पुरुषोने कहेतो हवो के आ वे जुणे अन्याय कहा है, तहने स्यो दंफ देवों ? तेवारे कारुणिक न्याय करनारा कहे हे के,जेम स्वामी दुकम करो तेम करीयें. तेवारें राजायें क्रोध रहित थइ हुकम कखो जे जेणे कुडी साद्दी नरी है तेनी कूडी साख नरनारी जे जिहा है, तेने पंखीनी पांखनी पेरे वेदी नाखो. अने वसुदत्तना हाथ वेदो, ते वसुदत्तने हाथ वेदातो थको सो मदेवे पोतानो मित्र जाणी मूकाव्यो. श्रहो जूर्छ! वे मित्रमां श्रंतर केटलो हे. तेवारें राजायें अन्यायकारी जाणीने वसुदत्त होतनुं सर्व इव्य लूंटी लइ तेने

देशनिकाल कस्वो. ते वसुदत्त कोया काननो कीडे खाधेला कूतरा सरिखो किं हायें पण रहेवानुं वेकाणुं पाम्यो नहि. धिकार हो हतबुदि पापिए इए अघोर पापना करनारने ! जेम इहां क्यांही पण एने रहेवानुं वेकाणुं नथी तेमज परनवने विषे पण वेकाएं नथी. धिक्कार पडो गृद, मुग्ध, जुब्ध ऋणविचाखा कामना करनार,कष्ट अनुष्ठाने करी सर्व लक्कीना क्तयना करनारने ? प्रत्यक् अनर्थनो उपजावनार,माहानयनो उपजावनार एवं अग्नि सरिखो,गले फांसी सरिखो, सर्प सरिखो जे आकरुं विप तेने परिएामावीने तेज जवने विषे इः सह इख जोगवतो थको पुत्रादिक सहित दूर देशांतरें गयो. त्यां कोइक गामने विषे पूर्वनो मित्रहतो ते तेने मख्यो, तेने करुणा उपजवाधी पोताना मंदिरने विषे राख्यो, ने हृदयने विषे विविध प्रकारनुं इःख जोगवतो ह्वो. कह्यं हे के:-दहई सयण वियोगो,दहइ अणाह्नणं परविएसे॥दह्श्य अप्नखाणं,दह्श अकर्कं कयंपन्ना ॥१॥ जावार्थः-मनुष्यने स्वजननो जे वियोग हे,ते दहे बे. परदेशने विषे अनाथ पणुं होय,ते पण दहे बे,कोइने खोटुं आज दीधुं होय ते दहे हे, अने अकार्य कखुं होय, ते पश्चात्तापें करी दहे हे ॥१॥ हवे ते विण क विचारे ने जो ए पोताने पापें हणाणो ने,तो पण हुं एने सुखियो करुं ! श्रापदवखतें इःखियाने उदारवो, ते महोद्धं पुण्य हे. कह्यं हे के:-विहलं जो श्रवलंबइ, श्रावइ पीडिश्रंच जो समुद्ररइ ॥ सरएगयं च रखइ, तिस्सुने सुलंकीत्रा पुद्वी ॥ १ ॥ नावार्थः-निर्वलने त्रालंबन दे, पोते त्रापदा मां पड्या वतां पण बीजानो उदार करे, शरणागतने शरण आपे, एवा त्रण पुरुषो प्रथ्वीने अलंकत करे हे ॥ १ ॥ एवं चिंतवीने ते विणक वसुदत्तने जेम नवुं जीवितव्य आपे, तेम मूडी आपीने व्यवहारने विषे प्रवर्तावतो हवो. कवि कहे हे छहा ! संसार तो छसार हे, परंतु तेमां जे कोइने काहिं पण जपगार करवो ते सार हे. हवे वसुदत्त ज्ञेत पापकर्मे डः खियो धर्म रहित थइ मरीने कर्मने अनुसारें जेवी गति घटे तेवी गतियें गयो. हवे शोकें करी गलित हो नेत्र जेनां, दीन जेनुं वदन हो एवो वसुद त्तनो पुत्र, पिताना मरणयी पोकार करतो अति शोकें करी पोताना पिता ने अग्रिसंस्कार करतो हवो. अने ते वेकाणें तेणे पोताना पिताना नामनो विस्तीर्ण चोतरो कराव्यो. अने ते मध्ये वरस, मास, तिथि, वार, नक्त्र, सर्व ज़खाव्यां, ज़खीने पोताने घेर छाठ्यो.

तेवार पढ़ी केटलेक दिवसें ते गतशोक थयो, त्यारें वणजने अखाडे पड्यो, एटले तो सर्व इःख विसरीज गयुं. ने विचारवा लाग्यो जे हा! माहारा पितायें अन्याय करीने अनेक अनर्थ कह्यां, तेथी सर्व इव्य खोयुं, देशमांथी देश निकाल थयो,इत्यादिक इःसह इःख पाम्यो. सज्जनपणानो प्रेम हत्यो. फोकट मनुष्यनो जन्म पण खोयो, माटे ते महारो पिता थयो तो पण ग्रुं ययुं माहरें तो सघले मारा अने परनां कार्योंने विपे एक न्यायमार्गमां यत्न करवुं के जे न्यायमार्गें चाब्याथी सर्व वेकाएी माहरो यशोवादज थाय. कह्यं हे के:- अरुत्वा परसंताप, मरुत्वा खलनम्रतां ॥ अनुसर्य सतां मार्गे, यत्वब्पमिप तद्वहु ॥ १ ॥ नावार्थः-बीजाने संताप न करीने, खल सा यें नम्रता न करीने, नला मनुष्यना मार्गने अनुसरीने जे करवुं, ते थोडुं पण घणुं याय. हुं एकलो हुं, माहरुं कोइ इहां स्वजन संबंधी नथी, कोइ सखाइ नथी,धन नथी, अने तेधनविना अरख्यनी पेरें सघडुं ग्रून्य हे. कहां वे के:-अपुत्रस्य गृहं ग्लून्यं,दिशःग्लुन्याह्यबांधवाः॥ सूर्वस्य हृदयं ग्लून्यं, सर्व ग्रुन्यं दरिष्ठता ॥ १ ॥ नावार्थः-अपुत्रियानुं घर ग्रुन्यं हे, जेने नाइयो नथी, तेने सघली दिशार्र ग्रून्य हे, यता मूर्खनुं हृदय ग्रून्य हे. अने दिर्हीने तो सघतुं ग्रन्यज हे. एवं घणुंये विचारीने आपदामां सुमित आपे,न्यायमार्गे वेपार करवानो उपदेश करे, तेवो मित्र करवानो निर्धार कस्रो अने तेवो मित्र मेलव्यो. हवे ते सुगुरुनो योग पामी, धर्मनो उपदेश सांजली, पारकुं इव्य जेवानो पच्चकाण करी, समिकतसहित गृहस्थनो धर्म श्रंगीकार करी, सार नावसहित पालवा लाग्यो. अने वली रूडो आचार राखे, व्यापारमां कोइने चेबुं आपे निहं, अधिकुं निये निहं, कूडां तोनां मापां सर्व बांमीने व्यवहार ग्रुद्धियें चाले, एम अति इष्कर पर्णे व्यापार करवा लाग्यो. कह्यं वे के:-श्राहारे खद्ध सुदि, इतहासमणाण समण धम्मंमि ॥ ववहारे पु णसुदि, गिहिधम्मे इक्करा नणीत्रा॥ १॥ नावार्थः-साधुमार्गने विषे साधुने,चार प्रकारना आहारादिकनी जेम चार ग्रुदि पालवी डुर्लन हे, ते म गृहस्थने पण धर्मने विषे ग्रुद्धि पालवी डर्जन हे. हवे धनदत्त ए रीतें व्यवहारग्रु ६ यें वणज करतो थको सर्व लोकने विश्वासनुं नाजन थयो. व्यापारी लोक सर्व घणाकालनां परोचित्तने मूकीने धनदत्त संघातें वणज मांमता हवा. देशी परदेशी याहक लोक सर्व प्रख्यात वेकाणां मूकीने सर्व

धनदत्त संघातें लेवड देवड कन्ता हवा. अहो जुर्च व्यवहारस् कि केवी हे ? सर्व ऋित्समृदिनुं कारण हे. जेहना महिमाथी आ नवने विषे लक्की पामे हे, परनवने विषे परमपदनी प्राप्ति थाय हे. हवे ते नगरमां धनदत्तनो यश वधवा लाग्यो, तथा व्यापारमां लान थवा लाग्यो तेथी ते नगरना कूड कपटना करनार तुच्च बुिवाला वेपारीयो, धनदत्तनी साथें शत्रुनी पेरें हेप करवा लाग्या. ते एवी रीतें के जाणे तेना नेत्रने विषे फेरज वरसतुं होय नहिं? जेमाटे पारकी ऋदि देखी जे मनुष्य मत्सर धरे, ते पापी याने धिकार होजो. तं मनुष्यो इहां पण इःखिया थाय, अने परनवे द रिइी थाय. एटला माटे कोइ गुणिजन उपर जरा पण मत्सर धरवो नहिं. कह्यं वे के-वरं प्रव्विति वन्हा, वन्हाय निहितं शिरः ॥ न पुनर्शणसंपन्ने, कृतः स्वव्योऽपि मत्सरः ॥ १ ॥ नावार्थःजलदी अग्निमां मूकेलुं शिर बले ते सारुं, पण गुणवान् पुरुषने विषे घोडो एवो पण मत्सर करवा ते घ णोज जूंमो जाणवो. हवे धनदत्तने दंमाववाना हेतुची कप्रमां नांखवाने ते व्यापारियो तनां ढिड्रो जोता ह्वा. पण ते सत्यवतनुं तिल जेटलुं पण विइ तेउने जड्युं निहं. केहवत वे के दूधमां पूरा ते क्यांचीज होय ? अमृ तमां विप क्यांथी होय ? हवे ते इप्ट वाणियो धनदत्तना घर तेमज हाटनी ञ्चागल बहु मूल्यवाला मणिनी मुझ नाखी चालवा लाग्यो, त्यारे धनदत्त जे पारका धनने विषे निःस्पृह चित्तनो धणी हे, ते तेने महोटे सादे कहे वा लाग्यों के नाइ ? आ मिएनी मुझ कोनी पड़ी है ? ते सांनली जेएों ते मुड़ा नाखि हती, ते आवी कहेवा जाग्यों के मारी है. एम कही ते पोतानी मुड़ा जपाड़ी लीधी. एवी रीतें तेर्च घएं कपट करे, पण कांइ फावे नहिं.

वली वचमां केटला एक दिवस जवा दइने पाठी कपटनी रचना तेर्ड यें मांमि, पण सत्यवादी धनदत्त पोताना कार्यमां सावधान रहे, तेथी को इ पण ठलथी फसायो निहं, पठी घणाएक दिवसनुं ठेटुं नाखिने कोइक आकरो कपटी धूत्तारो तिहां धनदत्तनी पेढीयें आवी वेठो. ते धनदत्तने को इएक कार्यमां एकाय चित्तवालो देखी पोतानी मुड्कारत्न धनदत्तना आन रणना करंमियामां नांखिने चाल्यो गयो, ने ते एवो विचार करवा लाग्यो जे हवे तेना उपर चोरीनुं तहोमत नाखी आपणे दंमावद्यं, ने राजा सर्व इव्य लूंटी लेडो. हवे दैवयोगथी तेज दिवसें धनदत्तने करंमियानुं काम प

डयुं तेथी ते उघाडिने जूए तो बहु मूल्यवाली रत्ननी मुिका दीवी देखी ने विचारवा लाग्यों जे आ ते कोनी हुई। ? केम इहां आवी हुई। एम विस्मय पामतो निरिह् चित्त थको कांकरानी पेतें पारकुं धन गएतो लोकोने जाहेर करे हे तेटलामां तेनो एक मित्र कहेवा लाग्यो जे आ एक मुड़ि का अनेक सुवर्णनी कोडिना मूल्यनी हे, जेम नूख्याने जोजन ने तरस्या ने पाणी मखे तेम तारा पुण्यना योगथी तुफने ए मखी है, ते तुं लोकमां केम प्रकाशे है ? कोइ धूर्च सांजलशें,तो ते लेवाने प्रगट थशे,त्यारें तेतारी पासें रहेशे नहिं, ने तुं खोइ बेशिश जो के, इव्यने अर्थे तो लोको अनेक कप्ट सहन करे हे, अटवीमां जाय हे, विदेश जाय हे, स्मशान सेवे हे, ज लमध्ये, असिमध्ये प्रवेश करे हे, पर्वत उपर चढे हे, नीचनी सेवा करे हे, इत्यादिक अनेक इःख धनने अर्थे सहन करे हे, एटला माटें हे बांधव ! जीवितव्यसरिखी ए मुझ तुं राख. हुं कोइने निहं कहुं. एवा मित्रनां वचन सांजलीने धनदत्त कहेतो हवो के हैं जाइ ? मुफने चौरीनो नियम हे,तेथी बे वात रहे नहिं, जो मुझ रहे तो नियम न रहे, ने जो नियम रहे तो मुड़ा न रहे तेमाटें ए वस्तु मारा कामनी नथी. पूर्वें पण दिव्यरत्न, मा रा हाटनी पासें पड्युं हतुं, ते हाथें चड्युं देखीने में प्रगट कखुं हतुं, ने ते रतन, तेना धणीने आप्युं हतुं. जे लीधायकी आ नवमां अने परन वमां अनर्थ थाय, ते अनर्थ जाएतां वतां एवा कोए मूढ प्राणी होय के पारकी वस्तु जीये ? एवां धनदत्तनां वचन सांजजी तेनों मित्र कहेवा जा ग्यों के हे मित्र ! तें कोइनी वस्तु जीधी नथी, त्यारें ते चोरी केम कहेवा य? ताहरा पुण्यना उदयें कोइ मूकी गयुं हे,ते तुं कांइ जाएतो नथी. अ रे नाइ! मने तो एम लागे हे के तहारा पुण्यनी खेंचाणी ते मुड़ा, तहा रा करंमियामां आवी पडी हे, अथवा तहारी गोत्रदेवीयें प्रसन्न थइने तुफ ने दीधी है, निहतर तहारा करंमियामां किहांथी खावी पडे ? खावां मि त्रनां वचन सांजलीने धनदत्त कहे हे के जो एहनो धणी यइ कोइ पण आवी प्रगट थइने ते रत्न मुफने आपे, तेवारें हुं राखुं. त्यारें तें मित्र कहे के तुं बीजा सर्व विकल्प मूकी दे अने जा में ते तुकने आपी. हवे तहारी इहा आवे, ते प्रमाणें कर. वली ते रत्न तुं लक्ष्ने जो धर्म अर्थे खरचीश तो तेथी तहारा धर्मना नियमनो लोप नहिं थाय. एटलामाटे हे मित्र! तुं

एवो खोटो इत मूकीदे. वली जो पारकुं इव्य लेवानी तुजने शंका जत्पन्न याती होय,तो ते इव्य तुं मुक्तने आप,तेथी पण तुक्तने धर्म यज्ञे. अने मि त्रतानुं तुने फल थशे, वली तुजने हुं कोइ दाडे अनर्थ थवा नहिं दनं,तुं कांइ पण वीहीशमां. एवां मित्रनां वचन सांजलीने धनदत्त कहेतो हवो के हे मित्र! एवं कखाधी लाज तो वेगला रह्या, पण आ जवने विषे अने परनवने विषे प्रत्यक् अनर्थ धाय हे, माटें पारकुं धन जाएतां तथा अ जाणतां दूरज ढांमवुं. कह्यं वे के:-पतितं विस्मृतं नष्टं, स्थितं स्थापित माहितं ॥ अदत्तं नाददीतवं, परकीयं कचित्सुधीः ॥ १ ॥ नावार्थः-पडि गयेलुं, वीसरी गयेलुं, खोवाइ गयेलुं, पड्युं रहेलुं, थापण मूकेलुं, एवुं जे पारकुं धन, तेने क्यारें पण माह्यो पुरुष न लीये. तेमाटे हे मित्र! हुं तु फने घणुं छुं कहुं, जो देवता अथवा बीजो कोइ ए मालनो धणी प्रगट थइ मने खेवानुं कहे, तो हुं जहुं नहिंतर इस्सह अग्निना जालनी पेरें द्धं एने जोठं. पण नहीं अने अडकुं पण नहिं. इर्जन एवो पोतानो नियम कोण मूकें? कोण एवो मूरख होय जे स्तरना दोरासारु मोतीनो अमुख हार त्रोडे ! एक खीला माटे जाजुं इव्य खरचीने चणावेलो एवो महोटो प्रासाद कोण त्रोडी पांडे ? वली इंधण काजें बावना चंदन कोण बाले ? व जी ठीकरी माटें कामकुंजने कोण जागे ? माटें तुं आप, तो पण हुं न ज हुं. कारण के तुं ए धननो धणी नथी. तेमज तुं कहे वे जे मुने आपो पण ए तुक्तने पण महाराष्ट्री न अपाय! कारण के हुं ते धननो कांइ धणी नथी. वली ते धन ज्यारें आपणुंज नथी, त्यारे ते बीजाने पण आप्याथी ग्रुं पुष्य हे ? न्याये उपाज्यी धनतुं योडुं पण दान आप्युं होय तो पुष्य थाय, परंतु अन्यायें उपाज्यी धननुं घणुं दान आपीयें, तो पण पुष्यवि ना पापरूपज याय. वली पारकुं धन खेइ दान देवानुं पाप तो दावानल नी पेरें विस्तार पामे हे, कारण के ते दान थोडा जलनां जेवुं हे, तेथी ते पापरूप दावानलने उपशमावी शके नहिं, माटें अदत्तइव्यनुं दान करवुं, ते अप्रमाण हे. तेथी हे मित्र ! तुक्तने पण एमां चित्त प्रवर्ताववुं युक्त नथी. कारण के पारका धननो जे अनिलाष हे, ते इःखना समूहनोज आवास वे. कह्यं वे के:-प्राणेहिंतो वि पिर्ड, अञ्चो पुरिसाण तो कुणं तेणं ॥ परध णहरणं मरणं, मरणं विहिञ्जं तेसिं न संदेहो ॥ १ ॥ नावार्थः-पुरुषने प्रा

णयकी पण अर्थ केतां जे धन ते वद्यन हे, तेमाटें पारकुं धन खेवाय न हिं? पारकुं धन हरवुं ते तेना प्राण हरवा बराबर हे. तेमां कांइ पण संदे ह नथी. कारण के कोइ पण पुरुषने हणतां तो तेने क्रणमात्रज इःख याय, एटखे ते प्राणीने हणियें, तेटलीज वार इःख याय हे पण मुवा प ही यतुं नथी. परंतु जेनुं धन जाय हे, तेहने तो आखा जवनुं जन्मपर्य त इःख याय हे, अने ते पही पण तेना पुत्रना पुत्र,तेना पुत्र लगें आक रुं इःख वेववुं पडे हे, वली सुविवेकी अने सुबुद्धिनो दातार एवो जाणी तुजने में माहरो मित्र कीधो हे, तो तुं मुफने कुबुद्ध केम आपे हे? कोइने कुबुद्ध आपवी, ते तो महोटुं पाप हे, ते विषे शास्त्रमां एक कथा कही हे.

एक अटवीमध्ये पाराधिना पाशमां एक हरणी आवी, तेवारें ते दीन मुखी थइ पाराधिने कहेवा लागी के माहरां बच्चां सर्वे नूखें मरतां हशे, माटें बच्चांने धवराववा सारु एक वखत मुक्तने जवा दें. हुं तेने धव रावीने जरूर तहारी पासें पाठी आवीश. त्यारे पाराधियें कह्यं के तुं पाठी आवे एवी मने प्रतीत केंम आवे ? ते सांचली हरणीयें बालहत्या दिकना आकरा सम खाधा, तो पण ते पाराधियें मान्युं नहीं, तेने हर एथिं कह्यं के केमे करतां तुं मने बोड त्यारें पाराधीयें कह्यं के जेहनी जपर विश्वास राखीने आपणे सुबुि पूठीयें अने ते पाठो आपणने कुबुि आपे, सुमार्ग पूठे थके ? जन्मार्ग बतावे, तेहनुं जेटलुं पाप थाय, तेटलुं पाप जो हुं नावुं तो मुफने हजो,एवा सम जो तुं खाइश तो हुं तुंने जावा दइश. ते सांनली ते हरणीयें तेवाज सम खाधा तेवारें ते पाराधि यें मान्युं, अने तेने जवा दीधी. हवे ते हरणी पोताने वेकाणे जइ बाल कने धवरावी तरत पाछी आवीने पारिधनी सामें उनी रही, तेथी ते पाराधि विस्मय पामीने हरणीने ञ्चाणिने वाडमां घाली. अने तेने हणवाने सक्त यइ कहेवा लाग्यों के ताहरे माहरा हायमांची नासवुं हो य तो जलदीथी नाशि जा. त्यारे ते हरणी बोली के हुं क्यां नासुं ? तुफ थी उगरुं एवो तुं मुक्तने मार्ग देखाड, एटजे त्यां नासि जाउं. तेवारें पारा धियें विचाखुं जे एहने हुं हणी न शकुं एहवो मार्ग बताववुं जोश्यें. एम विचारी पापची बिहितो यको हरणीने नासवानो मार्ग बतावतो हवो,तेची मार्गे नासीने ते हरणी पोताने वेकाणे गइ. पाराधि महापापनो करनार, तेणे पण उन्मार्ग न बताव्यो, तो तुं जे मुक्तने आवो उन्मार्ग बतावे हे, ते तुने केम घटे? माटें हे मित्र! संतोषह्रप शक्षें करीने लोजने हणीने ए मुिका इहां केम आवी! अने एनुं शुं करवुं? ते तुं मुक्तने हवे कहे. एवां धनदत्तनां वचन सांजली हृदयथी लोजनी मित हांमीने विचारीने पोताना आत्माने विषे सत्य परिणमावीने ते मित्र कहेतो हवो.

हे मित्र ? तें युक्त कह्यं, में ताहरा सत्यनी ने ताहरा चित्तनी परिका करवाने आ बधुं कह्यं. हवे हुं जे कहुं हुं, ते तुं सांजल आ बधुं धूर्चतुं कपट हे. आ गामना केटलाएक वाणियायें ताहरो घणो व्यापार देखि ने देव धरी ढलथी ए कपट रचना करी है. कह्युं है के:-पोपकाः स्वकुल स्यैते, काककायस्य क्रुकुटा ॥ स्वकुलं घ्रंति चलारो, विणक्थानो गजा दिजाः ॥ ₹ ॥ जावार्थः-कागडा, कायस्य, कुकडा ए त्रण पोताना कु लना पोपक हे, अने विणक, थान, हस्ती अने दिज, ए चार पोताना कुलना हणनारा है. ते माटे तुक्तने कप्टमां पाडवाने ए धूर्नोयें प्रश्नरित्र रच्युं हे, कह्युं हे के:-मुनिरिस्म निरागसः कुतोमे, नयमित्येप न नृतयेऽ निमानः ॥ परवृद्धिषु बद्ध मत्साराणा, किमपि ह्यस्ति इरात्मनामलेघ्यम् ॥ १ ॥ जावार्थः-हुं मुनि साधु हुं, निरपराधी हतां, अमने जय स्यो ? एवं अनिमान संपदा अर्थे न करवुं कारण, के पारकी वृद्धि देखीने मत्स र, देप जेएो बांध्यो वे एवा इष्ट परिणामीने नहिं करवा योग्य कांइ न थी. माटे रुडुं थयुं जे तुजने लोज न थयो. अने मारी बुद्धिने धिक्कार प डो, जे पूर्वें लोजने वर्शें मारी सुयुद्धि गई? वली ते विशक कहे हे जे लो कोयें तने वगवा धाखो वे,ते लोको प्रगट कपटना निधान वे. कूडा चरित्रनां थए। वे. माटे तेमने पए राजा पासें दंमाववा शिक्वा कराववीज घटे वे.

एवां मित्रनां वचन सांनली धनदत्त कहे हे,के हे मित्र! आपणने एम करवुं घटे निहं अन्योऽन्य एटले मांहे मांहे ज्यारे आपणे अनर्थन करीयें, त्यारे सक्जन अने इर्जन वचें फेर क्यो ? तेमाटे हे मित्र! ते इष्टोनें एकां ते नय देखाडीयें, के जेथी ते नयनीत थइ बीजा कोइ पण वखतें एवं कपट न करे. धनदत्त मित्र सहित एवं विचारीने ते इष्ट विणकने कोइ कामने विषे तेडीने कहे हे के, हे नाइ! एक मारुं वचन सांनल. को इने चोरीनुं कलंक जे माणस दीये अगर बीजा पासें कपटथी देवरावे, ते ने छुं दंम देवो योग्य है ? ते तुं कहे. एवीवात सांजलीने यद्यपि ते विण क मनमां शंका पाम्यो तो पण अशंकित जेवी मुखमुडा करीने कहेतो ह्वों के हे जाइ एवो जे होय तेने तो अवस्य दंमावीयें. इहां कवि कहे हे, केजूर तेनी धिष्ठाइ केवी हे ? ते सांजली मुिका प्रगट करीने धनदत्त कहे तोहवो के आ मुिका कोनी हे ? ने माहरा करंमियामां कोणे नाखि ? ते सत्य केहेजो, नहिंतर हुं हमणां राजाने कहि दश्श. ते सांजली ते विणक ने पेटमां धासको पड्यो तेवारे धिष्ठाइ मूकिने पाढो प्रत्युत्तर देवा समर्थ न थयो. खीलाइ गयेला सापनी पेठें तेने कांइ उत्तर दइ न शक्यो, ऋणेक नीचूं मो घालीने रह्यो पढ़ी कह्युं के हा ? में आ काम अणविचाखुं कह्युं. चिंतव्युं परने अने थयुं घरने ! तेवारें ते बिहीतो थको, बीजो मार्ग सर्व था अणपामतो धनदत्तने पगें लागीने विनयवंत शिष्यनी पेरें पोतानुं कपट चरित्र कबुल करीने, मागण लोकनी पेरें दीनपणे तेना गुणनुं वर्ण न करीने कहेतों ह्वो, के हे सज्जन? ए मुिका मारी है, ते तमें यहो, पण मने मूको. महोटा अपराधनो निधान एवो हुं तेनी उपर प्रसन्न थइ जीवितदान आपो, अने आ धननी निक्ताने पण आपो, हवे पढी एवं कदि पण हुं निह करुं तेवारें! मित्रसिहत धनदनें अति गांढ तर्जना करीने तेने मूक्यो अने मुिका पण पाठी आपी. इहां कवि कहे हे, अ हो उत्तमनो मार्ग तो जूर्ड ? के जे पोतानी उपर अत्यंत खोटी चोरीरूप क लंक चडावनार इतो ते विशकने पण तेणे तेमज बोडी मूक्यो. माटे तेवा उत्तम गुणना निधानजनने मारो वारंवार नमस्कार हो. जे गृहस्थाश्रम मां रह्या थका पण परवस्तुथी वेगलाज रह्या हे.

हवे ते दिवसची ते पण बिहीता चका सुविनीत अचवा व्यवहारनी सु हि सहित चालनारा एवा चया. जेमाटे व्यवहार सुहि जे हे ते जगतमां इर्ज़न हे, अने ते व्यवहार सुहिची शी सिहि न संपजे? सर्व संपजे. ह वे धनदत्त न्याय सुहियें व्यापार करतां घणी लक्की पुण्यना उदयथी उपा जीतो ह्वो. कह्यं हे के:—दानमौचितविज्ञानं, सत्पात्राणां परियहः ॥ सु कतं सुप्रसुखं च, पंच प्रतिस्रवः श्रियः ॥ १ ॥ नावार्थः—दानदेवुं, उचित पणुं जाणवुं, सुपात्रनो आदर करवो, सुकृत करणी करवी, अने प्रसुपणुं, ए पांच वस्तु जे हे ते लक्की पामवानी नूमिकार्ड हे.

हवे पोतनपुरना धणीने घणे कालें वस्तुदत्त उपरथी कोध विस्मृत थ यो, तेथी धनदत्तनी चर पुरुषें अवसर पामीने राजाने विनति करी के हे स्वामिन! ते वसुदत्त इष्ट चरित्रनो धणी पापें करी वगोवाणो, देवें हल्यो देशमांथी काढ्यो यको मरण पाम्यो,पण तेनो पुत्र घणे गुण करी युनाम होटो न्यायवंत धनदत्त एवे नामे हे,तेएो हमएां घएं धन वधाखुं हे. ते मा टे हे खामिन! जो आप आज्ञाकरो, तो तेधनदत्त इहां नगरने विषे अ वे. ते सांनली राजायें त्राङ्गा दीधी,त्राने धनदत्तन तेडवाने त्रार्थे माणस मोक ल्युं. ते पुरुषें जइधनदत्तने कह्यं के राजा तमने तेडावे हे,त्यारे धनदत्तें कह्यं के हुं शीघ्रपणे आवुं बुं. पण मने अहिंयां पांच दिवसनो विलंब हे कारण के मारे चघराणी लेवी हे,बीजी कांइ वार नथी,माटे जा हुं परवारीने आवीश, एम कही ते पुरुषने विदाय कथो. गाममां वातचाली जे धनदत्त खदेश जाय है, तेथी ते गामना सर्व देपी प्रधान प्रमुख एकता मर्जी विचारवा लाग्या जे ए शरीर मात्र लइ पूर्वे निर्धन एवो यको इहां आव्यो हतो एनी पासें कांइ फ़टी कोडी पण न इती, अने हवे तो धनवान थयो, माटें ते ग्रुं ऋहिंयाथी ऋदि लइ जरो ? ना एने जवा नज देवो. कांइ पण आपणे जपाय करी तेने दंमावियें. इहां कवि कहे हे, अहो जूर्र कुमंत्रीनी कुमंत्रिताने. कह्यं वे के:-मृगमीनसक्जनानां, तृण जलसंतोषविहितवृत्तीनां ॥ जुब्यकधीवरियम् निष्कारणवैरिणो जगति ॥ १ ॥ जावार्थः-मृगनी श्राजिविका तृण हे, महानी श्राजीविका जल हे, अने सत्पुरुपनी श्राजीवि का संतोष हे. तेनी उपर पण निष्कारण वैर धरनारा हे. ते जेम के मृग **उपर पाराधि, मत्स्य उपर मा**ञ्ची, श्चने सत्पुरुप उपर चाडीया, निष्का रण देष धरनारा है, तेम ते देपी विणको, सर्व वातें ग्रुद एवो जे धनदत्त तेहनुं कांइ विइतो देख्युं निहं, तेवारें ते इष्ट प्रधानने एक जूना कागल उपर खत लखी ध्रवाडे जुनुं करीने राजाने देखाडीने बोख्या के हे रा जन् ! पोतनपुरथी पेहेलां वसुदत्त नामें शेव इहां आव्यो हतो, तेणे व्यापारने अर्थे आपणा नंमारमांथी दस हजार सोनइयां लीधा हता. ते वसुदत्त तो मरण पाम्यो हे, पण तेह्नो पुत्र घणा धननो धणी धनदत्त एहवे नामें इहां हे ते हाल पोताने खदेश जवानी इहा राखे है, ते माटें तेने तेडावी पूर्वनुं मागणुं धन मागी त्यो. एम कही ते खत त्यां रा

जाने देखाड्युं, राजायें वरस, मास, दिवस प्रमुख दश सहस्रना आंक स हितनुं जीर्ण खत जोयुं, तेथी ते सर्व क्षेणुं सत्य करी मान्युं, अने धनदत्त ने तेज वखत तेडाव्यो. ते पण आवी प्रणाम करी राजा समक् उनी र ह्यो, एटले राजायें ते जीर्ण खत तेने देखाडीने कहां के हे जड़क ? पिता नुं देएं होय, ते पुत्रें खवश्य खापवुंज जोश्यें, माटें ए देएं तमे जलदी ञ्चापो. जगतमां देणुं कहेवुं वे ? तो के पराजवनुं करनारुं वे. वली शास्त्रमां पण क्ण तो देवुंज कह्यं हे,तेथी ते क्णना देवाने विषे सत्पुरुषने विलंब करवो घटे नहिं. वली विशेषें कह्यं हे के:-धम्मीरंने क्रणं होदे, कन्यादाने ध नागमे ॥ शत्रुघातेऽभिरोगे च, कालक्षेपं न कारयेत् ॥ १ ॥ नावार्थः-ध र्मना कार्यने विषे, क्रणना कापवाने विषे, कन्यादानने विषे, धन आव तुं होय तेने विषे, शत्रुना घातने विषे, अप्नि तथा रोगने विषे, कालविलं ब करवो, ते युक्त नथी. त्यां प्रत्यक्त अनर्थ जोइने धनदत्त हृदयमां त्रास पामतो थको ते खतपत्रने जोइने विचारवा लाग्यो के खहो! आ महा श्रन्याय क्यो ? एवं विचारी व्यापारने विषे माह्यो एवो धनदत्त कहेतो हवो के हे राजन्! हुं तपासीने आपने धन आपीश. जो आपने विश्वास न श्रावतो होय तो घेर जइ जेटली वार चोपडा मारा तपासुं तेटलीवार कांइ श्रापने त्यां मुकी जाउं, ते राखो. ते सांचली राजा कहे के कांश नही,जाउं तपासी आवो. त्यार पढ़ी धनद्तें पोताने मंदिर जइ सर्व चोपडानां पानां जोयां, परंतु चोपडामां कांइपण नाम के निशान दीतुं निहं, तेथी राजाने ज कहां के चोपडामां तो कां इदेखातुं नथी. तेवारें राजा कहे हे के चर वाडनी पेवें कांइ राजा वेतराय नहिं, अने विशक तो धूत्तारा होय ते इंड् सरिखाने पण जेतरे. ते सांजली धनदत्त बोट्यो हे महाराज हुं व्यवहारमां ग्रु हुं. परने हेतरवामां अने पारकुं धन खेवामां हुं कां जाणतोज नथी, मुग्ध बुं, निरंतर घणो लोजी नथी, माटे हे स्वामिन ? तेणें करी सर्व वात विचारवा योग्य हे. काने सांचलीनेज साचुं न मानवुं, अने प्रगटपऐं जे दीवुं होय तेहनी पण प्रतीत करवी नहिं, तेमज प्रगटपणे जे दीवामां आ व्युं होय, तेनो पण युक्तिथी विचार करवो, एवं सांचली वली उपगारमां ही तत्पर एवा व्यवहारिया पण नेगा मजीने राजाने विनंति करता हवा पण राजायें कोइनुं कांइ पण मान्युं नहिं. कुमंत्रियें राजानुं मन अधिक

फेरवी नाख्युं कारण के न्यायमार्गमांहि निपुण एवो राजा नो घणो सा रो वे पण जिहां प्रधान महोटो इर्जन वे त्यां राजा ग्रुं करे ? जम घरनो धणी घणो उत्तम होय, पण घरनी स्त्री महा कूहाड होय, त्यारे घरना ध णीनुं धाखुं ग्रुं घाय ? पठी राजायें कद्युं के जेम ग्रुक्कध्यानविना मोक्ट् नथी तेम तुजने पण पितानुं क्ण आप्याविना बूटको नथी. ते सांज ली धनदन चिंतातुर थको मित्रसहित जामिन आपी पोताने घेर गयो.

ग्रुद्ध चित्रमांहे मुकुटसमान एवो धनदत्त विविध जपाय चिंतवतो, वृद्ध बुद्धिवंतने पूछतो, सहस्रदेव मूलदेवादिकनां आख्यान सांजलतो यको जिहांसुधि जपाय कशो जड्यो नयी त्यांसुधि अति इःसह इःख धरतो हवो. आशा सहित अति इःसह इःख होय तो माणस सहे, पण आशा रहित जे इःख होय, ते तो महोटा लोकोने पण सेहवुं अति इस्सह धाय छे. हवे धनदत्तने पोतानो मित्र कहेवा लाग्यो हे मित्र! ताहरुं धन केवाने अर्थे ते धूर्त व्यापारीयोयें खोटुं खत करी राजाने देखाडगुं छे, एटला मा टें तुं खेद कर मां. प्रायः पुष्पयी सर्वथा ताहरो जय थाशे. पूर्वे पण अनुजव्युं छे, जे धमें जय, अने पापें क्य, ते माटे ते पापीनो क्य थाशे. एवां जत्म सुरुत्तनी पेरें ते मित्रनां वचन सांजलीने आशा सहित आप दाह्रप समुद्भां पडेलो ते धनदत्त जेम समुद्भां पडेलाने प्रवहणनुं पाटि युं मखे तेवारें तेने आनंद प्राप्त थाय. तेम आनंदने प्राप्त थयो.

हवे एकदा पुष्यथी प्रेखो थको ते धनदत्त वनमां स्मगान नूमिका ने विषे गयो. त्यां पूर्वनां पुष्यना उदयथी एक वांदरो आव्यो ने ते वांदराने खरज आववाथी स्मगानमां पडेला कुंन संघातें तेणे ग्ररीर घस्युं तेथी ते कुंनमां धनदनें पोताना पिताना आक्तर दीवा, ते वांच्या, तेथी जाण्युं जे ए राजानुं खत तो खोटुं हे,हमणानुं लखेलुं हे. कारण के तेमां तेना पितानां मरणितिथि विगेरे नोंधेलां हतां अने ते खत तो मुवा पहीनी मितिनुं हतुं ते जोइने जेम कोइ नव निधान पामे तेने जेटलो हर्ष उपजे तेटलो हर्ष धनदत्तने उपन्यो. हवे हर्षनो नखो मित्र सहित राजा पासें जइ, वीनवतो हवो के हे राजन्! ते खत खोटुं नवुं धूर्नें किंपत करी लखीने आपने दीधुं हे, ए मारा वापनुं लखेलुं नथी. हे राजन्! मारा पिता मू वा पहीना वरसनुं आ खत हे. न मानता हो तो मारी साथें स्मज्ञान चूमिमां चालो, ने दाघस्थानकनो घडो उखेडी पोतानी मेखे,ते दिवसनो निर्धा र करो. ते सांजलीने ते न्यायवंतो राजा विस्मय पाम्यो थको तेनी साथें स्मशा नजूमियें जइ वरस, मास,तिथि वार वांचीने प्रधान पासेथी पेलुं खत मंगावी जूए हे, त्यारे ते खतमां तफावत पडवाथी खोटुं जाणी घणो कोप्यो थको कहेवा लाग्यो अरे इष्टो ! निर्दयीयो ! धिष्टो ! पापिष्टो ! माहरा राज्यने विषे तमे एवा अन्यायनुं कार्य करवाने केम सक्क थया हो ? द्वे कोइ एवं फरी करे नहिं, ते माटे सर्वेने राजायें मारवानो हुकम कखो. ते जोइ धनदत्त रा जाने पगें लागी विनति करतो हवो के हे राजन! ते सर्वेने माहारा खातर माहरी उपर उपकार करी मारो नहि. अने अनयदान आपो तो पण राजा यें मान्युं निहं. वेवट घणो आग्रह करी राजाने मनावीने सर्वेने मूकाव्या, परंतु राजायें सर्वनुं इव्य जूंटी, दंिमने निर्धन कह्या, ने तेने देशमांथी काढी मुक्या. धनदत्तनी राजायें घणा मानथी, आदर सत्कारथी प्रशंसा करी, ने दोण जगात माफ करी. तेवारें धनदत्तनी सर्व लोक मध्ये सत्यवादीपणानी यश कीर्त्ति विस्तरती हवी. त्यांथी उत्सवसंघातें मित्र सहित पोताने मंदिर आव्यो. इहां कवि कहे वे खहो ! खहो ! धर्मनुं फल जूर्र ? राजाने प्रासादें पोतानुं लेएं प्रमुख लोकोपासेंथी सुखे समाधे लेइने, धनदनें राजापासें स्व देश जवानी रजा मागी, राजायें मित्रनी पेरें उत्कंवा सिहत घणे आयहें रजा आपी. त्यांथी पोतनपुर नगरने विषे आब्यो. तिहां पोताना खजन तथा राजाना अनुचर पुरुष सहित उद्घिति प्रेमें सर्वने मुख्यो. अने धन्यपणाने माने करी राज वर्गने पण मख्यो. तिहां पण प्रशंसवा योग्य एवो जे व्यापार तेहनी उत्कृष्टी ग्रुद्धतायें करी ते घणो प्रसिद्ध थयो. वली सर्व लोकमांहि पा रकुं धन खेवुं तेहनां खोजने ढांमी न्यायमार्गे प्रधान ऋिं उपार्किने सर्व ने प्रमाणजूत थयो. ए धनदत्तना पितानुं मातुं चरित्र अने ते सुपात्र धनद त्तनुं, अति आश्चर्यकारि चरित्र सांजल्यायी कयो पुरुष मस्तक न धूणावे? सर्व तेने जलो जलो कहे. तेज जवनेविषे श्रावकनो धर्मपुत्रनी परें पोपीने धनने उत्तम बीजनी पेरें सात देत्रें वावरे जेम अनंति संपदा थाय एम त्रीजा व्रतने सम्यक् प्रकारें आराधिने देवलोकनां सुख पाम्यो. अनुक्रमें मोक् पण जर्गे. एहवुं पिता पुत्रनुं चारित्र सांनली नो नव्यो ! तमे अदत्तने ढां मशो, तो परमपदने पामशो. इति श्रीतृतीयव्रते वसुदत्त धनदत्त कथा सण

॥ अय चतुर्थ ब्रह्मचर्यव्रत प्रारंनः ॥ ॥ चज्रे अणुवयंमि, निच्चं परदार गमण विरइजे ॥ ॥ आयरिय मणसत्रे, इत्र णमाय णसंगेणं॥ १५॥

अर्थः चोथा अणुव्रतनेविषे नित्यें परस्वी गमनथी विरमवुं तेमां अ प्रशस्त जावें जे आचखुं होय इत्यादि पूर्ववत्. मैथुन वे प्रकारनुं हे एक सूक्षा अने बीर्ज स्थूल तिहां जे कामंना उदयथी इंड्यिनो कांइक अल्प विकार करवो ते सूक्षा मेथुन तथा मन वचन अने कायायें करी औदारिक अने वैक्रिय शरीरवाली स्त्रीनिनी साथें संजोग करवो ते स्थूल मेथुन जाएावुं.

श्रयवा मेशुननी विरित करवी तङ्गपजे ब्रह्मचर्य तेना वे नेद है. एक सर्वथी श्रने बीजो देशथी तिहां जे मन वचन श्रने कायायेंकरी सर्पथा सर्व प्रकारनी स्त्रीउंसाथें संनोग करवानो त्याग करवो ते सर्वथी ब्रह्मचर्य जाएवुं श्रने तेथी इतर ते जे श्रावक सर्वथी ब्रह्मचर्य पालवाने श्रसमर्थ होय ते देशथकी ब्रह्मचर्य श्रंगीकार करे तेहज देखाडे हे.

चोथा अणुव्रतनेविषे नित्यें एटले सदाइ जे पोतानी स्वीधी जिन्न ते परस्वी किह्यें ते मनुष्यनी तिर्थेचनी अने देवतानी जे स्वीठ ते एक परणेजी अने वीजी संयहित एवा जेदे करी जिन्न जिन्न जे स्वीठ तेमनी साथे गमन आसेवन तेनी विरति इत्यादिक तेमज अपरियहित देवी एटले कोइ देव तानी परणेली न होय एवी देवी तेवीज तिर्यचणी जेने कोइयें राखी पण नथी ते गणिका तुत्य जाणवी कोइकनी किष्पत वेश्या जे आ अमुक वेश्या हे तोय पण ते प्रायें परजातनी परजातने जोग्य माटे ते परदाराज किह यें तेने वर्क्कवी जेमाटे स्वदारा संतोपीने तो पोतें परणेली स्वीधी जे जिन्न ते सर्व परस्वीज जाणवी इहां दार शब्दना जपलक्षणथकी स्वीयें पण एक पो ताना परणेला स्वामीथकी बीजा पुरुष सर्व वर्क्कवा एम जाणवुं ॥ १५॥

हवे चोथा व्रतना अतिचार पडिक्कमे हे.

॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग विवाह तिव अणुरागे ॥ चज्रज्ञवयस्स इया रे, पडिक्कमे देसियं सर्व ॥ १६॥

॥ अर्थः- १ अपरियहिता गमन, २ इत्वर, ३ अनंगक्रीडा, ४ परिववा ह करण, ५ तीव्रानुराग धरवो ए चोषा व्रतना अतिचार दिवसना पडिक्कमुं बुं ॥ १ तिहां प्रथम अपरियहिता ते विधवास्त्री तथा कुमारिका कन्या आ दि दक्ष्मे जे स्त्रीत हे तेने जाणे जे एतो परस्त्री नथी एवी बुद्धियं करी तेनी साथे गमन करे ते अपरियहितागमन अतिचार कहियें.

१ बीजो इत्वर ते अव्पकाललगें नाडुं दइने कोई एकें पोताने वश्य करी एवीजे गणिका तेने जाणेजे एतो साधारण स्त्री वे एने माथे कोइ स्वामी नची एवी बुिंद्येंकरी तेनी साथें गमन करे ते बीजो इत्वरपिय हितागमन अतिचार जाणवो.

र त्रीजो अनंग जे काम कंदर्प ते संबंधि जे क्रीडा अधर चुंबन, क्रचम र्दन चुंबन तथा आितंगनादिक परस्त्रीने विषे करता एवा श्रावकने अनंग क्रीडा अतिचार लागे कारणके श्रावकने परस्वीना अंग विकार सिहत जो वा कब्पे नहीं कह्युं वे के ॥ यतः ॥ वन्नंग दंसपोफा, सपोश्रग्गो मुन गहणं कुस्सुमिएो ॥ जयणासवञ्च कारइ, इंदिय अवलोयऐाअतह ॥ १ ॥ इत्या द्यपंचाशकवृत्त्याद्युक्ता ॥ जावार्थः स्त्रीनां ढाकेलां अंग प्रत्यें रागनी ब दियें दृष्टि यापीने जोवां नही एने सुग उपजवानां कारण जेवां समजवां तथा स्त्रीने दीवे थके स्पर्श करे थके कोइपण प्रकारें राग न करवो ॥यतः॥ सुशक्यं रूपमुद्दष्टुश्रक्तुर्गोचरमागतं ॥ रागद्देषौ तु यौतत्र, तो बुधः परिवर्ज येत्॥१॥ नावार्थः - दृष्टिगोचर आव्युं जे रूप ते देखवाने समर्थ हे हिष्टें पदार्थ जोवामां आवे पण पंमित तेमां रागद्देप नकरतां दूरथी तजी देते ? तथा जो गोमुत्र लेवुं पडे तोपण योनि मईन करीने न लेवुं कदाचि त् घणुंज आकरुं अवस्यकार्य पडे तो योनि मसली मूत्रावीने लेवुं पण तिहां विषयानिलाषा राग न करवो छने स्वप्नमांहे स्त्री सेवन यइ जाय तो तेनी जयणा राखे कदाचित् एवं कुस्वप्न आवे तेवारे श्रावक एवी ना वना नावे ते कहे हे ॥ यतः॥ सद्धं कामा विसं कामा,कामा आसिविसोव मा ॥ कामे पत्रेमाणा, अकामाजंतिष्टुग्गई ॥ १ ॥ खिणमित्तसुरका बहु काल इस्का, पगाम इस्का अनिकाम सुरका ॥ संसार मुस्कस्स विपरक चू या, खाणी अणहाणव कामनोगा ॥ १॥ नावार्थः कामते महोटुं शब्य वे,काम ते महाविष वे,कामते नाग सरखो वे,कामनी घणी प्रार्थना करतां इर्गतियें जाय ॥१॥ क्लमात्र सुख वे अने घणोकाल इःख वे, निष्कारण सुखकरी जाणे हे, कामते संसारमांहे मोक्ट पामवामां शत्रुनूत हे, वली कामजोग जे हे ते अनर्थनी खाण हे ॥ १ ॥ इत्यादिक वैराम्य नावना जा वीने मुखणी नवकारगणी पही शयन करवुं तो कुस्वप्त होय ते सुस्वप्त या य कुस्वप्तनो लाज नथाय एम करतां हतां पण जो कोइ मोहना उदयथी स्वी सेवनादिक कुस्वप्त लाघे तो तरत उठी इरियावहिया पडिक्कमीने एक सोने आठ श्वासोन्नासनो का उसग्य करवो.

तथा स्त्रीनां इंडियोनुं अवलोकन अने स्त्रीनी साथें बोलवुं पडे तिहां सर्वत्र दृष्टि निवर्त्तनरूप यत्न करवो. यदाद् ॥ जेमके कह्यं हे गुक्कोरूवयण करको, रखंतरे तहथणंतरे दिष्ठं ॥ साहर् त उदिष्ठि, नयवंध्व दिष्ठिएदिष्ठि ॥ १ ॥ जावार्थः – कामगर्जित वचन जांखवां तथा काखना खंतर, जं घाना खंतर, तथा स्तनना खंतरमांहे जोइने तिहांथी दृष्टि संहरी होवी अने स्त्रीनी साथें दृष्टियें दृष्टि बांधवी नही.

एमज परस्वी आश्रयी गृह्स्थने ब्रह्मचर्यनी तवग्रिप्त पालवानी उद्यम करवो तेनां नाम कहे छे:— र स्त्रीनी विक्तमांहे न रहेवुं, १ स्त्रीनी कथा न करवी, ३ स्त्रीने आसने न वेसवुं, ४ स्त्रीनी इंडियो न जोवी, ५ नींत ने अंतरे न रहेवुं, ६ पूर्वें करेली कामकीडा न संजारवी, ७ घणुं स्निग्य नोजन न करवुं, ७ घणुं चांपी पेट जरी जमवुं नही ए शरीरनी विजूपा न करवी. ए नव वाड जाणवी यहा ज्योतिषनेविषे वात्स्यायन शास्त्रनेविषे क ह्यां जे कामनां चोरासी आसन तेनुं सेवन करे अतृप्त यइ नपुंसकादिकनुं सेवन करे, हस्तकमें करे तथा काष्टनुं पाटीयुं स्त्रीना रूपनुं माटीनुं तथा चम्मीदिकनुं घड्युं इत्यादिक जे कामनां उपकरण तेणेकरी जे कंदर्पनी कीडा करवी ते त्रीजो अनंगकीडा अतिचार जाणवो.

ध चोथो विवाह ते पारका पुत्र पुत्रिकादिकने कन्यादान फलनी लाल चें अथवा स्नेहादिकें करीने विवाहनुं करतुं तेने परविवाह करण अतिचा र किह्यें. इहां स्वदारा संतोषी सुश्रावकें पोतानी स्त्री थके परदारा वर्क्ज नादिकें पोतानी स्त्री तथा गणिकाथकी अन्यस्थानकें मन वचन कायायें करीने मैथुन न करतुं, न करावतुं एवीरीतें जेवारें व्रत अंगीकार कखो होय तेवारें अन्यना विवाह करवानेविषे तत्त्वथकी जो जोइयें तो मैथुनज करा व्युं होय ए जांगो ते श्रावकें लीधो अने ते एम कहे के ए विवाह में कखो करुं हुं पए मैथुन करतो नथी एवी जावनायें तो व्रत रहे हे परंतु जंग थ तो नथी एम जंग तथा अजंग रूप अतिचार जाणवो. तेमाटे सुश्रावकें तो पोताना पुत्रादिकना विवाहकार्यविषे पण जो बीजो को इचिंतानो करनारो होय तो तेमनो विवाह करवानो पण पोतें नियमज करवो जला श्रावकने ए वात उचित्रहे. जेम रुष्ण वासुदेव तथा चेडा महाराजाने बीजो को इविवाह नी चिंतानो करनार न हतो, तेमजो होयतो तेवारें तेनो निर्वाह करवा माटे वि वाहनी संख्यानो नियम राखवो, जे महारे वर्ष प्रत्ये अथवा जन्म पर्यंत पांच किंवा पचाशनी संख्या जेटला पारका कुटुंब संबंध अथवा महारा पोताना कुंटुंब संबंधि विवाह जोडवा, एवी संख्या राखीने पच्चकाण करे ए वात युक्त हे अथवा स्वस्त्री संतोषना अजाव थकी वारंवार पारका विवाह अने पोताना विवाह करे. स्वदारा संतोषीने ए अतिचार जाणवो ॥ ४॥

५ पांचमो तीव्रावुराग ते काम एटले शब्द अने रूप तथा जोग एटले गंध,रस अने स्पर्श एम काम अने जोगनेविषे अत्यंत आकरो अनुराग धरे ए कामजोगनेविषे तीव्राजिलाषनो अध्यवसाय पामीने आत्माने कतार्थप एं मानतो अतृप्त थको जाणे क्यारे ए मत्योज नथी एम मानतो थको स्त्रीनुं मुख जूवे तथा काक्ता गुद्यादिक स्तनादिकनुं चिरकाल पर्यंत वारंवार सेवन करे. केशपाश ताणे, प्रहार दीये, दांत नख तथा ऋतादिकें करी कामने उद्दीपन करे तथा जेथकी कामनी वृद्धि थाय एवां श्रोषधादिक सेवे. जेमाटे पापनीरु एवो जे व्रतधारी श्रावक ते पापची बीतो रहेतो हो य तो पण वेदनो उदय तेनाथी सहन न थइ शके तेथी स्वदार संतोपा दि व्रत अंगीकार करे तेटला मैथुनमात्र पणे करी वेदनी उपशांति करे प रंतु पोतानी स्त्रीनेविषे पण अधिक कामनो विस्तार करे नहीं पोतानी स्वीनेविषे पण अनंगक्रीडादिक तीव्रानुरागादिकनो सर्वथा परिदार करे कारण के अनंगक्रीडादिक करवाथी कांइ ग्रण यातो नयी पण उत्तटा व जक्यादिक अनेक अनर्थ **उपजे हे ॥ यतः ॥ कंपः स्वेदः अमोमू**र्जा, जमि र्ग्जानिर्बेलक्क्यः ॥ राजयक्मादयश्चापि, कामाद्यासिकजारुजाः ॥ नावार्थः-कंपवायु थाय, प्रस्वेद थाय, श्रम उपजे, मूर्ज्ञी आवे, च्रमित थाय, शरीरें ग्लानि याय, बलहीन याय तथा क्यरोग विगेरे एवा रोग कामनी अति आसिकथी उपजे ए पांचमो तीव्रानुराग अतिचार जाएवो.

इहां परस्त्रीना त्यागीने तो ए पांचेय अतिचार होय अने जे खदारा

संतोषी होय तेने ढेला त्रण अतिचार होय अने आगला पहेला बें नेद ते अतिचार पणे रहे नहीं. प्रथमना वे अतिचारें करीने तो तेनो व्रतजंग ज याय तेथी ते अतिचारमां गणाय नहीं. एम स्त्रीने पण जे स्त्रीयें परपु रुषनो त्याग कह्यों ढे ते स्त्रीने पांचेय अतिचार जाणवा अने जे स्त्रीने स्व पुरुषनो संतोप ढे ते स्त्रीने ढेला त्रण अतिचार होय अने प्रथमना वे अ तिचारथी तो तेना व्रतनो जंग याय माटे त्रणज अतिचार कहेवाय अथ वा पांच अतिचार पण लागे ते कही देखाडे ढे.

तिहां अनापयोगपणे परपुरुप ब्रह्मचारीनी अथवा पोताना स्वामी ब्र ह्मचारीनी साथें गमन करे तो तेने पहेलो अतिचार लागे अने जेवारें पोता ना स्वामीना वारानो दिवस सोक्यो प्रमुखें जीधो होय तेवारें सोक्यनो वारो लोपीने पोतें पोताना स्वामीने जोगवे तेने बीजो अतिचार लागे त था त्रण अतिचार तो बेला लागेज बे एम पांचेय अतिचार पणे कहेवाय ॥ उक्तंच ॥ परदारा विकाणो पंच, दुंतितिन्नि सदार संतुहे ॥ इिहाति ति न्नि पंचव, जंग विगप्पेहि नायवा ॥१॥ जावार्थः-परदारा वर्क्जनारने पांच अतिचार होय अने स्वदारासंतोषीने त्रण अतिचार होय एमज स्त्रीने पण त्रण अने पांच नांगाना विकल्प जाणवा ॥ १ ॥ जेम पोतें नाडुं दश्ने स्वब्पकाल सुधी अंगीकार करेली जे गणिका तेनेविषे पोतानी स्त्रीनी बुद्धि यें गयन करे ते इत्वर परियहितागमन अतिचार कहियें, तेम खदारासं तोषीने पण ए बीजो अतिचार लागे अने अनाजोगें अतिक्रमादिकें करी प्रथम अतिचार पण थाय एम खदारासंतोपीने पांचे अतिचार संजवे सि डांतमां पण कहां हे के खदारा संतोषीने पांच अतिचार जाणवा पण आचरवा नहीं. इति एनेविषे जे पाप बांध्युं होय ते आलोउं डुं इत्यादि क अर्थ सर्व पूर्वनी पेतें जाएवो.

शक्ति वतां गांगेयादिकनी पेवें बाख्यपणाश्रीज विश्व श्रावकें शिल पालवानेविषे यत्न करवो जेनां मोटां फल वे विशेषेंकरी गृहस्थने इःखें पालवा योग्य वे. कह्यं वे के ॥ जो देई कणयकोडिं, श्रहवा कारेइ कणय जिणनवणं ॥ तस्स ण तित्रय पुस्मं, जित्रश्च बंनवए धरए ॥ १ ॥ देव दाणव गंधवा, जस्क रस्कस किन्नरा ॥ बंनयारिं नमसंति, इक्करं जं करंतितं ॥ १ ॥ श्राणाई सरियंवा, इह्वी रक्कं च काम नोगाय ॥ किनियबलंच सग्गो, श्चासन्नाति विवंना । ३॥ किलकार ठिव जणमा, रठिव साव जोग वि रठिव ॥ जं नार ठिव सिर्च ६, तं खलु सीलस्स माहणं ॥ ४॥ नावार्थः— जे नित्यप्रत्यें सुवर्णनी कोडी दान दीये अथवा सुवर्णमय जिनप्रासाद क रावे तेने तेटलुं पुष्य न होय, जेटलुं ब्रह्मचर्यत्रत धरनार ने पुष्य होय माटे ब्रह्मचर्यत्रत धारक ने तेथी पण अधिक पुष्य हे॥ १॥ देवता, दानव, गां धर्व, यक्त,राक्स, किन्नर,ए सर्व ब्रह्मचारी पुरुष ने नमस्कार करे हे माटे जे शील पाले हे तेने पण शील इष्कर हे॥ १॥ ए ब्रह्मचर्यत्रत पालवा थकी अखंम आङ्गा, ईश्वरपणुं, घणी क्रिह्न, राज्य, कामनोग, कीर्नि, बल, स त्संग एटलां वानां तो सहेज मले अने मोक्त पण समीपज प्राप्त थाय॥ ३॥ क्षेत्रनो करनारो, लोकने हणनारो पण सावद्ययोगथी विरम्यो एवो जे नारद ते पण मोक्तें गयो, ते निश्चें शीलनो महिमा जाणवो॥ ४॥

ए शीलनो महिमा अन्यदर्शनीना शास्त्रोमां पण कह्यो है ॥ श्लोक ॥ एकरात्र्युषितस्यापि, यागितर्ब्रह्मचारिणः॥ न सा ऋतुसहस्रेण, वकुं शक्या यु धिष्ठिर ॥१॥ एकतश्रतुरोवेदा,ब्रह्मचर्य तु एकतः ॥ एकतः सर्वपापानि,मद्य मांसं तु चैकतः ॥१॥ यजुर्वेदेपि मोक्तरिच प्रोक्तं ॥ सत्येन तपसा ब्रह्मचर्य ण वेपश्ति ॥ नावार्थः—हे युधिष्ठर ! एक रात्रि पण ब्रह्मचर्यव्रतमां रहेना रने जे गित मले हे ते गित हजारो यक्तो करवायी मले एम कही शकातुं नयी. एक बाजु चारेय वेद,एक तरफ ब्रह्मचर्य, अने एक तरफ सर्वेपाप, तथा एकतरफ मद्यमांस विगेरेथी थयेलां पाप जूदा मुकीयें, नावार्थ एके, ए सर्व पुष्य पण ब्रह्मचर्यव्रत पालनारनां पुष्य करतां चडतां नथी. तथा पाप पण ब्रह्मचर्यवानने स्पर्श करतां नथी. यजुर्वेदनी मोक्कचीमां कह्यं हे जे सत्यथी, तपथी अने ब्रह्मचर्यथी आ मोक्क प्राप्त थायहे.

वली हमणां पण दिव्यादिकनेविषे तथा धीज करवाने विषे विद्युद्ध शील नो महिमा देखीयें तैयें. माटे आ बाल अवस्था थकी जो ब्रह्मचर्यव्रत धा रण करवानी शिक्त न होय तो सुदर्शन शेवनी पेरें पोतानी स्वीनेविषे संतो ष करवो, एवो पण जे शीलवंत गृहस्थ होय ते पण ब्रह्मचारी बरोबर जा णवो. कदापि स्वदारा संतोषीपणामां पण असमर्थ होय एटले तेवी पण शिक्त न होय तो पण परस्त्रीनुं वर्क्जन तो अवस्य करवुंज.

॥ यतः ॥ वह बंधणववंधणे, नासिंदि अ ह्रेय धण खयाइय ॥ परदा

राच बहूहा, कयन्नणाचे इह नवेवि ॥ १॥ परलोए संबितिस्क, कंटगािलं गणाई बहुरूवं ॥ नरयंमि इहं इस्सहं, परदाररया लहंति नरा ॥२॥ हिन्नि दियानपुंसा, इरूव दोहगिणो नगंदरिणो ॥ रंमकुरंमाविंजा, निंइस्र विस कन्न हुंति इस्सीला ॥३॥ तथा ॥ नरकणे देवदवस्स, परिक्वि गमणेणय ॥ सत्तमं नरयं जंति,सत्तवारार्च गोयमा ॥ ४ ॥ नावार्थः वध बंधादिक पामे, जंचा बंधाय, नासिकानुं होदन थाय, धननो क्तय थाय,एरीतें परदारा गम नथकी आ लोकनेविषे पण घणी कद्रथेना पामे ॥ १ ॥ अने परलोकने विपे जे संबल मले ते कहे हे. परलोकने विपे संबलना तीखा कंटकतुं आ लिंगन कराववुं इत्यादिक अनेकरूपें नरकनेविपे घणुं डःस्सह डःख ते परदारागमन करनारा पुरुष पामे हे ॥ १ ॥ इंड्यि हेद हिन्नेंड्यिपणुं, नपुंस कपणुं, कुरूपपणुं, इनीगीपणुं, नगंदर,नोगतरंम, रंमापणुं, कुत्सितविंध्या, एकज बालक प्रसवे एवी निंद्य स्त्रीपणुं, विषकन्यापणुं,ए सघलां वानां पूर्व जन्मांतरें कुशील सेव्यां होय तेथी थाय ॥ ३ ॥ तेम जे पुरुप देवइव्यनुं नक्षण करे, परस्वी गमन करे. हे गौतम! ते पुरुष सात वार सातमा नर कने विषे जाय ॥ ४ ॥ अन्यद्दीनी पण कहे के:-श्लोक ॥ तस्माद्धमीर्थि निस्त्याज्यं, परदारोपसेवनं ॥ नयंति परदारास्तु, नरकानेकविंशतिः ॥ १ ॥ नावार्थः-परदारानुं सेवन जे हे ते एकवीश वार नरके पमाडे माटे धर्मा र्थी पुरुषे परस्त्रीनुं सेवन ढांमवुं ॥ १ ॥

वली जूर्र के परस्वीनी मात्र अनिलापा करवायकीज रावण अने गई निलादिक आ नव अने परनव एम वेहु नवनेविषे महोटा अनर्थ ने पा म्या तो जे साक्षात् परस्वीने नोगवे ते अनर्थ पामे तेमां तो कहेवुंज शुं ? एटलामाटे उत्तम जीवें परस्वीनो त्याग करवो. स्वदारा संतोषीयें तो साधा रण स्वी जे गणिका वे तेने पण त्यागवी. ते गणिका केहवी वे तो के लो ननेवशें मद्यमांसमांहे रक्त वे तथा लोजनेवशें करी कुष्टी पुरुषोने पण कं दर्पावतार करी जोगवे एवी वे तथा निःस्नेही, निर्लक्ष, निंदवा योग्य अने वींटपुरुषें वींटीथकी एवी गणिकावे, तेने वर्क्षवी.

तथा जो नित्य शील पालवाने असमर्थ होय तो पर्वतिथिनेविषे तथा श्रीतीर्थंकरना कल्याणिकादिकनेविषे तथा अष्ठाइना दिवसोनेविषे तो अ वश्य शील पालवुं तेमज दिवसनेविषे तो सर्वदा शील पालवुं अने रा त्रिनेविषे पण एकवार अथवा वे वारनी संख्या राखवी. वली लेंकिक शास्त्रमांहे पण मनुस्मृतिनेविषे पर्वदिवसें अब्रह्मचर्यनो निषेध करेल हे ॥ यतः ॥ अमावास्या अष्टमीच, पूर्णमासी चतुर्दशी ॥ ब्रह्मचारी नवित्र त्य, मप्यृतो स्नातकोद्विजः ॥ १ ॥ विष्णुपुराणेषि ॥ चतुर्दश्यप्टमीचेव, अ मावास्याच पूर्णिमा ॥ पर्वाष्ट्रेतानि राजेंड, रविसंक्रांतिरेवच ॥ १ ॥ तेल स्त्री मांस संनोगं, पर्वस्वेतेषु वे पुमान् ॥ विष्मूत्रनोजनं नाम,प्रयाति नरकं मृतः ॥ १ ॥ नावार्थः—अमावास्या, आहम,पूर्णमासी, चतुर्दशी एटले दि वसें नित्य ब्रह्मचारीपणुं राखे, ते स्नातक दिज जाणवो ॥ १ ॥ तथा विष्णुपुराणनेविषे पण कह्यं हे के हे राजेंड ! चतुर्दशी, अप्टमी, अमावा स्या अने पूर्णिमा ए पर्व जाणवा तथा संक्रांति वेसे ते दिवस पण पर्व जाणवो तेनेविषे तल, स्त्री, मांस, संनोग एटलांवानां पुरुषने विद्या अ ने मूत्रना नोजन कह्या जेवां जाणवां ते पुरुष मरीने नरकें जाय ॥ १ ॥

वली अवसरें पोतानी स्त्रीनेविषे पण शील अंगीकार करबुं जेमाटे पु रूप हे ते नोगने नथी हांमतो पण नोगतो पुरुपने हांमे हे एवं जाणी ने नोगनो त्याग करवो. जेम फलरहित हक्कने पंखी तजे हे तेम काम नोगने पण पोतानी मेखेज हांमधाथका जला जाणवा. जेमाटे नर्हहरि पण कहे हे के, विषय जे हे ते घणाकालपर्यंत जोपण जीवनी साथें नेला रहीने पण अवस्य जता रहेशे. सहेजे विषयनो वियोग थाय तेवारें कोई जन हांमे पण ते विषय तो अवसर आवे तेवारें पोतानी मेखेंज ते जनने हांमे हे तेमाटे पही खाधीनपणें जाता थकां ते जनने अतुख्य ताप थाय तेथी पोतानी मेखेंज हांमवा थकी अनंत समताहृप सुखने निपजावे ॥१॥

हवे वली मेशुनथी यता दोषने दर्शावे हे. मेशुन संङ्घायें आह्र धये ला पुरुषने सुद्धा नव लाख जीवोनी हिंसा थाय इत्यादि वार्जा स्वसिद्धां तने, विषे प्रसिद्ध हे तेमज परदर्शनीना शास्त्र जागवत पुराणनेविषे पण हे ॥ यतः ॥ यास्तामिस्त्रांधतामिस्ता, रौरवाद्यास्तुयातनाः ॥ छक्तेनरोवा ना रीवा, मिथः संगेननिर्मिताः ॥१॥ जावार्थः—नर अथवा नारी तामिस्त, अं धतामिस्त अने रौरवआदि नरकनी पीडाने मेशुन करवाथी जोगवे हे. तथा महाजारतना आदिवर्वने विषे कह्यं हे के श्लोक ॥ जरत्कालक्षिर्वा लएवात्ततपाः संतानक्ष्यात्पितृन्नारकेऽधोमुखान पितृन हृष्ट्वाडः खितः पितृव चनाहार परिग्रहं प्रतिश्रुत्य वासुिकस्वसारंनाग कन्यापरिणी तवान । आप क्रसत्वांचतां निरपराधामपिविरहण्डः खािहलपंतीमपिच । पुनस्तपसेतत्याज क वयोपियतिकल्पतया अल्पबंधक एवेति ॥१॥ नावार्थः—जरकारक्षि बालक अवस्थायीज तपधारी हतो तेथी तेने तेना संतानना अनावयी पितृ नरकमां नीचे मुखें पच्चा दता, तेर्चनं जोइ पोतें जुःखी थयो तथा ते पितृर्चना वचन थी दार परिग्रह करवो एवी अप्रका सांजलीने वासुकीनी वेहिन नागकन्याने पोते परिण्यो ते ज्यारे गर्निणी थइ त्यारे ते निरपराधी अने विरहना जुःख थी विलाप करती एवी ते नागकन्यानो त्याग करीने पोते वनमां गयो. वली उपनिण्दमां कह्यं हे के जे दिवसे वेराग्य याय ते दिवसेंज प्रव्रज्या केवी. घरमांथी अथवा वनमांथी निकली जइ संन्यास न करवाथी ब्रह्मना स्थानमां जायहे ॥१॥ एरीत श्रावक पण यित मुनिने तुत्य होवाथी अल्प प्रतिवंध वालो हे. ए सोलमी गाथानो अर्थ थयो ॥ १६॥

हवे चोथा अणुव्रत उपर दृष्टांत रूपें बीलवतीनी कथा कहिये हैंये.

घणी क्रिव्यं करी नरेलुं नंदनवन सरखुं नंदनपुर नामें एकनगर हे.तेमां जेलुं नाम तेवांज ग्रुणवालो अरिमर्दन नामें राजा राज्य करे हे. ते नगर मां बधा व्यवहारिमां मुख्य, अने जेने जडपणानो लेशपण नथी, एवो र लागर नामें शेव वसे हे. ते शेवने सानाग्य लक्कीयें करी साक्चात लक्कीज जाणियें होय निहं ? एवी श्री नामें खी हे. ते श्री नागरवेलनी पेरें नले ग्रुणें करी जगतने मानवा योग्य हे. परंतु तेने पेटे पुत्र नथी तथी ते पोतें पोताना जन्मने निष्फल माने हे. तेम शेव पोतें पण श्रीजिन धर्मनो जाण हे,तथा घरमां क्रिनो पारनथी एवो हे तोपण पूत्रना अनावथी घणी संप निथी नरेला एवा पोतानां घरने शून्य अरण्य सरखुं माने हे. कह्युं हेके॥ यत्र न स्वजन संगति रुचे, यत्र संति न लघू निश शूनि ॥ यत्र नेव गुण गोरविचंता, हंततान्यिप गृहाण्य गृहाण्य ग्रहाणि ॥ १ ॥ नावार्थः— ज्यां अत्यं त पोताना स्वजननी संगति नथी, जेहना घरने विषे नाहनां नाहनां बा लको नथी, जेहना घरने विषे ग्रुलनी साहनां बा लको नथी, जेहना घरने विषे ग्रुलनी स्वारं होता नथी,हंत शित खेरें तेहना घरने घर न कहीयें. हवे आ प्रमाणे पुत्र रहित घर होवाथी ते शेवनी स्वीयें कह्यं के गमे तेम करी आपणे घेर पुत्र

थाय तेवो उपाय करवो जोये, एवो पोतानी स्त्रीनो अत्यंत हववाद देखी ते रत्नागर जोव स्त्रीयें प्रेखो थको एकदा ते नगरना उद्याननेविषे अजित नाथ नगवानना प्रासादनें बारणें गयो. तिहां अजितबला एवे नामें एक देवीनुं स्थानक हे, ते देवीनो प्रचाव पण घणो हे, एवी प्राचाविक देवी जाणीने ते देवीनी पासें पुत्रनी प्राप्ति सार जोह, विधियुक्त उपवासो करवा लाग्यो. कि कहे हे के जे अत्यंत किया थाय तो ते कालें करी फलदायक थाय हे. अने जो ग्रुनकर्मनो उदय आहे,तो ते तत्काल फले. हवे देवीनी चिक्त करवाथी ते जोहनी स्त्रीने कल्पहक्त सरखा पूत्रनो जन्म थयो. जोहें दश दिवसपर्यंत पूत्रना जन्मनो महोटो उत्सव कखो, बारमें दिवसें देवीये ते पुत्र आप्यो तेथी पुत्रनुं नाम सर्व कुटुंचें मली देवीना नाम उपरथी अजितसेन एवं नाम पाडगुं.

अनुक्रमें ते अजितसेन पुत्र, महोटो थतो गयो अने प्रयासविना सर्व कला शिख्यो. कवि कहे हे के ते सर्व कला हुं जे जाए हुं, ते तेने युक्तज हे, त्यां कवि चत्प्रेक्षा करे वे के जे रत्नाकरनो पुत्र होय तेतो सकलकलायें युक्तज होय ? माटे जेनो बाप रत्नाकर नामक हो, तेथी तेनो पुत्र पण सर्व गुण संपन्न ययो. हवे ते वालकने युवावस्था प्राप्त यइ जाणीने रत्नाकर ज्ञेव वि चार करवा लाग्यो जे हवे आ महारा पुत्रने योग्यज कन्या जोश्यें. माटे शोध करवो, जेम कविश्वर नवा नवा अर्थोंनो विचार करे, तेम ते शेव कन्या नी खोल करवा लाग्यो. ने मनमां विचार करवा लाग्यो जे आ मारा पुत्रना जेवी गुणवाली,स्वरूपवाली एवी कन्या कइ अने किहां मलशे? जो आ पुत्र समान कन्यानो योग क्यांही पण नहि याय तो आ लोकमां विधातानो सघलो उपक्रम, उद्यम,ते निष्फल थाज्ञे. कह्यं हे के:-सामी श्रविसेसञ्ज, श्र विणीर्र परि अणो परवसत्तं ॥ जङ्जाय अणणुरूवा, चत्तारि मणुस्स सल्लाइ ॥१॥ नावार्थः-स्वामी जे होय ते गुणनो जाण न होय, पोतानो परिवार अविनीत होय, पराधीनपणुं होय, स्त्री होय ते पोताना समान स्वरूपवंत न होय, ए चार वानां मनुष्यने महोटा शब्यसमान हे ॥१॥ एवो विचार करे हे, त्यां एक विशकनो पुत्र आव्यो, तेेेे रत्नाकर शेवने प्रणाम कस्बो. त्यारे रोतें कुरालादिक पूत्रयां, अने कहां के तारो व्यापार केवोक चाव्यो ?

तेवारें तेणें कह्यं के है ज्ञेवजी ? तमारी आका जर्ने हुं देशांतरें गयो, त्यां फरतो फरतो जिहां निरंतर मंगजज वर्चे वे एवी कयंगजा नामें नग रीने विषे हुं गयो. त्यां जइ मे जिनदत्त नामें कोइ एक व्यवहारियो हतो तेनी साथे घणो व्यापार कखो, तेथी तेनी साथें मारे अत्यंत प्रीति यइ. ए कदा ते जिनदत्तें जोजनने अर्थें मुजने निमंत्रणा करी त्यारें हुं पण तेने घर जमवा गयो. त्यां त्रण चुवननो सार जाणे विधातायें एकवो कस्यो होय निह? अने त्रण जुवनमां रूप तथा गुणोयें करीने अति अङ्गत कन्या एना जेवी बीजी को इनहिज होय, एवी ममोहर कन्या में दीवी. तेने देखीने में जिनदत्त रोठने पूरुयुं के आ पुत्री कोनी हे ? त्यारे तेणे कह्युं के ए अतुलगुणवाली माहरी पुत्री हे, अने तेने जायक वर शोधी परणाववानी मने चिंता रहे हे, ते इःखे करी हुं इःखी डुं. कारण के पुत्रीना बापने घणीज चिंता रहे हे. तेमां एम न जाणवुं जे ए कन्याने योग्य वर साथें पाणियहणनीज चिंता बे ? परंतु तेमां प्रथम वरनी, पढ़ी प्रीतिनी, पढ़ी सासरियानी, पढ़ी खज ननी, पढ़ी शोक्यनी, पढ़ी शील पालवानी, पढ़ी ग्रण अवगुणनी, पढ़ी स्वामिना सुखनी, पढी संताननी, इत्यादिक चिंताउंयें करी दीकरीनो पिता सदाय इःखियोज जाणवो. वली ए कुमरी विशेष थकी समय गुण पामी हे, जेहनुं मुख सुंदर हे, नामें पण शीलवती विख्यात हे, अने परि णामें पण शीलवती हे, तथा सोनाग्यने रहेवानुं तो ए स्थानकज हे. चो शव कलानी जाए हे, वली तेमां पए शकुनशास्त्रनेविषे तो तं घणीज माही हे, के जेम कागडो, घुड, मोर, डुग्गी, किप, तित्तर, नैरव, शीयाल, इत्यादिक जानवरनी नाषा जाणे हे. शकुनशास्त्रमां कह्यं हे के:-त्रिविध मिह्नवित शकुनं, देत्रिकमागंतु यात्रिकं चान्यत् ॥ देत्रे स्थाने वर्त्तमिन, शकुनविनागाच ग्रनमग्रनं ॥ १ ॥ नावार्थः - शकुन त्रण प्रकारे द्रीय. एक हैं त्रिक, बीज़ुं यात्रिक, त्रीज़ुं स्थागंतुक. द्वे पेदेलुं हेत्रने विषे, बीज़ुं स्थानकने विषे, त्रीजं मार्गने विषे, ए शकुनना त्रण नाग है, तेमां ग्रुना शुन शकुननो विचार करवो. हवे प्रथम देत्रिकशकुन ते देत्रनेविषे ज्ञे श कुन एटले तोरण थाय तार बांधे तेमां प्रचकने निश्रयफलना कालनुं कहेतुं. तथा देत्रने विषे क्यांइक वृक्त उपर कोइ पण शास्त्रमां कहेला पक्ती वगेरेने बेवा देखी तेनुं फल कहेवुं ते हैं त्रिक शकुन कहीयें. बीजुं आगंतुक शकुन ते जे अकस्मात् वाम वाम दिशाने विनागें शकुन थाय एटले जे दिशें शकुन याय तेनो विचार करवो,के आ दिशायें आवां शकुन थयां, तथा शांतता श्रमें दीप्तता इत्यादिक नेदें करी विस्तारपणे प्रगट फल कहे, ते श्रागंतुक शकुन कहीयें. त्रीज़ं यात्रिक शकुन ते माबी जमणी, सन्मुख, श्रमें पूठें, एटली दिशाउं मार्गमां चालतां जोवुं के गामनां, वस्तीनां, श्रमे वननां जे जीवो हे ते संबंधि श्रावां शकुन थयां, तेमां वली खर, श्रमे चेष्टाना जाव जोवा, तेह्नुं नाम यात्रिक शकुन कहियें. एवा शकुननी पूर्ण जाणनारी हे.

एम सर्व कलामां निपुण एवी ए पुत्री अपरिमित गुणे करी सहित हे. तेमाटे तेने योग्य वर साथें वराववानी चिंता मने हृदयमां अत्यंत हे. एइवुं ते जिनदत्तनुं वचन सांजली ने में कह्यं के हे बुद्धिनिधान ! तुं वरनी चिंता म कर. जेएो एने उत्पन्न करी हे,तेएोज निश्चे तेना सारु वर पण उत्पन्न कचो ह्यो. कह्यं हे के:-तित्रह्यो विहि राया, जाएइ दूरेवि जोजिह वसइ॥ जंज स्स होइ जुग्गं,तं तस्स विइक्जयं देइ ॥१॥ नावार्थः-जे ज्यां वसतां होय, तथा जेहने जे योग्य होय तेने तेवुंज धारीने जो तेनाथी राजा तथा विधाता वेगलां होय तो पण आपे हे ॥१॥ ते माटे हे ज्ञेत? हुं कहुं हुं ते तुं सांजल. नंदनपुर नगरने विषे रत्नाकर ज्ञोठनो पुत्र घणा ग्रुणनी जूमिकानो धणी अजितसेन नामे अमितकांतिवंत हे. चंइ जेम रोहिए। ने वरवा योग्य हे,तेम तेतारी कुमरीने वरवा योग्य हे. ते सांजली जिनदत्त शेव प्रमुदित चित्त थ को केहेतो हवो के वाह! रत्नाकर ज्ञेवना पुत्रनो संबंध ते केने वछन न होय ? माटे एमज थार्च. आ ग्रानकार्यमां पंमित पण विलंब न करे, एम कही पोतानी पुत्रीने आपणा अजितसेनने देवा माटे तेणे तेना जिनशे खर नामें पुत्रने मारी चेलो मोकव्यो हे, ते जिनज्ञेखर मारी साथें इहां श्राच्यो है, माटे जेम श्राप श्राङ्गा करो, तेम श्रमें करीयें. ते सांनली ज़ेव हृदयमां अति हिपत यइने कहेतो हवो के बहु सारुं काम कखुं ? एम कही जिनशेखरने घणा मानधी पोताने मंदिरे तेड्यो.

्पढी ते पवित्र मनवालो जिनदत्त शेवनो पुत्र जिनशेखर पण पोतानी बेननुं घणा आदरपूर्वक शेवना पुत्रनी साथें वेशवाल करतो हवो. हवे अ जितसेन पण सारां लग्न जोइ जिनशेखर साथेंज जान सजीने घणा महो त्सवें त्यां जइने शीलवतीनुं पाणिग्रहण करी महोटी क्रिक्क सहित पोताने घेर आव्योः ते शीलवती वहुमां घरना सर्व कारनार उपाडवानुं समर्थ पणुं हे एम जाणी रह्नाकर शेव, घरनो सर्व कारनार तेने सोंपतो हवो. तेमज एवी स्त्रीची अजितसेन पण जेम पूर्ण मासीनी कांतियें करीने चं इमा शोने तेम अत्यंत शोनतो हवो.

एक दिवसें ते शीलवती स्त्री, रात्रिने विषे सुखश्यामां स्त्री थकी शी यालीयानो शब्द सांजली विचार करवा लागी के निश्चें ए शियालीयुं एमकहे हे जे, त्या नदीनो प्रवाद वह्यो त्यावे हे, तेमां मनुष्यनुं शब तणातुं आवे हे, तेहनी केडने विषे पांच कोडीनां पांच रत्न हे, वली ते शब नदीमां आ राने नजीक हे, माटे जेहने रत्न लेवानी इश्वा होय ते ए मडाने ताणी खो, अने हुं नूख्यो हुं तथी मने ते मडानुं जक्कण आपो अने पांच रत्न लक्ष्यो.

एवां शब्दो वारंवार सांनव्यायी शीलवती मनमां विचार करवा लागी जे हुं ते शीयालीयाने नक्ष्ण देवं, अने इव्य लवं ! कारण के ए शकुन व चन जूढुं होय निहं. तेमज आपणा घरमां पण एहवुं धन नथी. माटे हुं जइने जोइने निर्णय करं, जो साचुं होय तो ते शीयालीयाने नक्ष देवंने इव्य लइ लवं, आ वात, जो हमणां कोइने जगाडीने हुं कहुं तो. कोइ माने निहं. एवं विचारी शब्यामांथी वर्वी घडो लइ पाणी नरवाने मिशें नदीयें गइ. अने त्यां जइ जूए हे,तो नदीमां तरतुं एक शब आवतुं दीवुं, ते जोइ तुरत नदीमां पडी अने ते शबनी केडची पांच रत्न लेइने ते शब शियालने आपी दीधुं,पही नाही पाणीनो घडो नरीने पोताने मंदिर आवी. त्यां रत्ननी गांसडी शब्या उपर शक्षपणे मूकीने विचारवा लागी के प्रातः कालें मारा खामीने रत्नो देखाडी सर्व वात हुं कहीश. एम विचारीने सूइ गइ.

ते शीलवतीनुं जबुं आवबुं जाणीने अजितसेन चिंतववा लाग्यों के ए स्त्री, निश्चें स्वेज्ञाचारिणी, असित हे. एणियें अमारां निष्कलंक कुलने आ वा कामयी कलंक लगाडगुं,वली ए स्त्री निश्चें अनर्थयी नरेली हे. ए स्त्रीनुं इष्ट चरित्र ते केवुं आश्चर्यकारी हे ? वांज्ञित पदार्थ आपवामां कल्पहरू जेहवो हुं तेने मूकीने अन्यसंघाते आसक्त थइ, माटे तेने धिक्कार हो. अ हो जूडे ए स्त्रीनुं हृदय केवुं हे ? कह्युं हे के:—न स्नेहेन न विद्यया नच धिया, रूपेण शोर्येण वा, नेष्पीचाटुनयार्थ दानविनय, क्रोधक्तमामाद्वेः ॥ लज्जायोवननोगसत्यकरुणा, सत्वादिनिवाग्रणे, गृह्यंते न विन्तिनिश्चलल ना, इःशीलविनाय्हते ॥ १ ॥ नावार्थः—स्नेहेथी, विद्यायथी, बुद्धियी, रूप थी, पराक्रमथी, ईप्याथी, मीठां वचनथी, नयथी, अर्थथी, दानथी, विनय

थी, क्रोघेंथी, क्रमाथी, नम्रताथी, लद्धाथी, योवनथी, नोगथी, सत्यपणायी, करुणाथी, सत्तव, इत्यादिकनी संपत्ति रूप गुणोयें करीने पण याह्यमांही आवे निहं. जे स्त्री व्यनिचारिणी थइ, ते पोतानी केंमे न थाय. एम विचारी तेनो पति विरक्त थको प्रचातें उठी शीलवतीनुं सर्व वृत्तांत पोताना पिता नें जश्ने कहेतो हवो, ते सांचली जेटलुं तेने इःख ययुं हतुं, तेटलुंज ते ना पिताने पण थयुं. दवे पुत्र तथा पिता ए बेहुयें विचार कस्रो जे डुर्गंध सरिखो जोकापवाद न थाय ते पेहेजां तेने पियर मोकजीये, तो घणुं सारु ! एम धारी शीलवतीने कह्युं के तुजने मोकलवानो तारा पितानो कागल आ व्यो वे ? त्यारें शीलवती पोताना पित तथा ससरानुं चित्त जाणी विचारवा लागी जे, में खोट्टं कखुं ! जे, में मारा जरतारने कह्यं निहने एमज नदीपर हुं चाली गइ. हवे हुं ग्लंकरुं !!! हवे खेद कखायी ग्लं याय ? हवे विचार क खो पण द्यं कामनों ? कह्यं हे के:-या मितर्जायते पश्चा, त्सा यदि प्रथमं न वेत् ॥ न विनर्येत्तदा कार्य, न हसेत्कोपि डर्जनः ॥१॥ नावार्थः-जे बुद्धि पठी उपजे हे, ते बुद्धि जो प्रथम उपजे, तो तेह्नुं कार्य तिहां न विणसे, अने इर्जन पण कोइ हमें नहि॥१॥ माटे हवे एमां संकल्प विकल्प करवो, तेथी ग्रुं थाय ? ए कुमित्रना वचननी पेरे निष्फल हे. जो माहरुं शील निर्मल वे, तो कांइ थवानुंज नथी, एम चिचारी शकुन जूए वे तो शकुन रुडां आ व्यां. किव कहे ने के शकुन जे ने ते आपितमां पडेलाने सक्जननी पेरें म होटुं अवलंबन हे. हवे सागरज्ञेत रथ तैयार करावी ज्ञीलवतीने रथमां बे साडी तेनो पोते सारची यइने तेने नगर बाहिर छाएी. एवामां पोताना स्यानकयी उड़ी केटलीक चूमिका दूर जइ जेना मुखमां जक्त है, एवी इगी पिक्णि। त्यां पाठी आवीने बोली, तेमां तेणे तिहां दिशिनुं प्रमाण कह्यं के "प्रियने घणी वाह्जी" एवी तेष्ट्रगा पिक्स्णीनुं बोजवुं सांजजीने ते माही शीजवती विचार करी निर्णय करती हवी के, मुफने जाज घणो याज्ञो, अने अर्थपंथे जइ पाबुं वलवुं षाज्ञो, अने वहु मान सहित पाबी म हारे घेर आवीश. इर्गा शकुनमां कह्यं हे के:-दर्शनचेष्टा स्वरगति, नद्य यह ऐषु अधिकमधिकं स्थात् ॥ क्रमशोबलमे तेपां, समुदायः सकलफलहे तुः ॥ १ ॥ नावार्थः-हर्गाना शकुनने विषे हर्गानुं दर्शन चेष्टा,स्वर, गम न, मुखमां नक् एनुं ग्रहण इत्यादिक अधिक अधिक फल आपे. अनुक्रमें ए सघलानो समुदाय जेलो थाय, तो संपूर्ण फल आपे. अने जो शकुन बगबर न होय तो जे कार्य आरंन्यु होय, ते सिद्धि न पामे, प्रस्तानुं कखं होय ते पण प्रमाण न थाय, अने जीवजनावरना शकुने करी बगड्युं कार्य होय तो पण ते शकुने सिद्ध थाय तथा ते जीवादिकना शकुन जो शास्त्र थी उल्लं थयां होय तो सिद्ध वस्तुने बिगाडे. वली विघटित अर्थ नीपजे, अने शुज्जशकुनथी जे कार्यनो संशय होय ते थोडा कालमां साधे, अने अशु जशकुनथी थयुं कार्य पानुं फेरवे, तिहां दिशाने प्रमाणे शकुनना उदयथी अशुज्ज ते शुज्ज थाय. माटे विद्यमां पड्याने तथा दिग्मूहने तथा ज्ञमतामां पीड्याने, जय विवहलने प्रायें शकुन, ते प्रमाण साधवो.

हवे ते शीलवती ने बीजां पण शकुन घणां उत्तम थयां तो पण ते हदयने विपे इःखने वहती हवी. कारण के कलंक दीधुं ते रूप शंकाना वि धिनुं इःख ते इस्सह हे. हवे पोतानो ससरो सारथी हे, ते जेम स्वार, घो डाने दोडावे तेम ते रथने अत्यंत चलावतो हवो. तेवामां एक मार्गणां अ ति फल्युं मगनुं होत्र आव्युं, तेने देखीने ससरो वोख्यो के आ होत्रना धिनें धान्य धणुं थाशे. एटले शीलवती बोली के ते साचुं. पण ए धणी ते धान्य खाशे नहिं. एवां वचन सांजली ससरो विचारवा जाग्यो जे ए हे त्रनो धणी हतां ते केम जहूण न करे ? थोडुं पण ते खायज. माटें आ बो लनारी अविनीत हे, अने निश्चें आ अवलावोली पण हे.

हवे ससरों कहे वे के आगल घणा कादववाली नहीं आवे वे तेथी रथ पाणीमां चाली शकशे निहं, माट हे वहु तमें हेगां उतरीने मोज़िंडी हाथ मां लिश्न नहीं उतरों, एम कहीं मोज़िंडी उतारी पोते नहीं उत्तखों. अने शी लवती तो मोज़िंडी सिहतज नहीं उतरवा लागी,ते जोश तेना ससरायें कह्यं के ए मोज़िंडी कादवमां बगड़िशे ! एम घणुं कह्यं तो पण तेणे मोज़िंडी उ तारी निहं अने मोज़िंडी सिहत उतरी. त्यारे ससरों विषादवंत थतो.मन मां कहेवा लाग्यों के, धिक्कार पड़ों ? ए स्त्रीने, में वारी तो पण एणे कह्यं मा न्युं निहं. वली आगल चालतां एक सुनटने घणा घा वागेला हो, एवो नाशी जतो दीनों, ते देखीने ते शेन प्रशंसवा लाग्यों के ते सुनट वासुदेव स रिखों पराक्रमी हो. ते सांनली वहु बोली के कूतरानी पेरें तेने कोश्यें कू व्यों हो. उत्पात सिरखा इन्हों सहवा योग्य एवा घा एणे केम सह्या हो?

माटे ए सुनट नथी. एम कहेवाथी ते शेव पोताना मनमां अत्यंत खेद धरतो विचारवा लाग्यो के छहो ! जूर्ड ए इष्ट परिणामी स्त्री माराथी छव लूंज बोसे हे. वली आगल चालतां एक स्वर्ग जेवुं मोटुं देवल आव्युं ते देखीने ज्ञेव कहे वे के आ देवल घणुं श्रेष्ठ वे, ते सांजली जीलवती कहे वे के ए श्रेष्ठ नथी, अने आपणा कामनुं पण नथी. एवं सांनली शेव मनमां चिंतववा लाग्यो के सर्व वेकाएो ए उन्मत्तमी पेरें बोले वे. वली आगल चालतां घणी वस्तिवालुं क्रियें संपूर्ण एवं एक सुंदर नगर आध्युं. ते नगरनी वचमां रथ निकट्यो, ते देखीने शेव कहेवा लाग्यो के केंबुं सारुं, महोटुं वित्तवाद्धं, ऋिष्यी संपूर्ण एवं आ शहेर हे ? माटे आपणे इहां ए क रात वासो रहीयें. त्यारें शीलवती कहे हे के आ नगर, अराखनी पेरें ग्रन्य नासे हे. ते सांनजीने वजी पण ससराने खेद थयो, वजी आगल चालतां एक गामडुं आव्युं तेमां प्रवेश कखो, ते गामडुं देखी शेंव कहेवा लाग्यों जे आ उजंड गामडुं हो. त्यारे शीलवती कहेवा लागी जे, आ गामनो वास घणो श्रेष्ठ हे. आवां वचन सांचली ते शेव कोमल हृदयने विषे खेद धरतो मनमां विचरतो हवो के अरे! ए वहु विपरित शिक्तिक अथनी परें इविनींत हे, अने इप्ट हृदयवाली सिर्पिणी सरखी हे. आ व हूनुं मातुं चरित्र मारा पुत्रें कह्यं ते समय निश्वें साचुंज है. कह्यं, न कह्युं ते तो कोण जाणे हे ? पण आवुं वाकुं बोलवाथी ए प्रत्यक्त जूतुं बोलनारी हे.

हवे तेनो रथ गाममां चांख्यो जांय हे तेवामां शीलवतीनो मामो ते गाममां वसे हे, तेने खबर मद्याथी त्यां आवीने घणा आदर्यी ते शेवने पोताने घेर तेडी गयो. अने नली युक्तियें करी तथा बहु नक्तिथी बन्नेने नोजन कराद्युं, अने घणुं सन्मान कखुं. अवसरें बीजो कोइ मले तोपण घणां वानां करे,तो वली सक्जन मले तेनुं तो ग्रंज केहेनुं ? हवे बपोरनो व खत होवाथी ताप घणो हतो तोपण शेवें रथ आगल चलाव्यो. कि कहे हे के, अथिर चित्तनो धणी ग्रुनस्थानकने विषे पण घणी वार केम रहे ? तेथी केटलीक नूमि आगल चाल्या त्यां एक सारो वड आव्यो, एटले ते शेव रथथी जतरी हेवो बेवो,अने शीलवती पण रथथी जतरीने रथनीज हाया यें बेवी. तेवारे शेवे कह्यं के हे वहु, तमे वडनी हायां नीचे आवी वेशो. पण जाणे ते रीसाणी होय नहिं ? तेम ते वडनी हांया हांमीने वेगली

योगिनीनी पेरें जाएो संसार असार हे एवुंज चित्तमां विचारती होयनी? एवी यकी बेठी. तेवामां पासें केरडानां जाड उपर एक कागडो बेठो हे,ते जाणे ज्ञानीज न होय? तेम अतिशय शब्दें करी वारंवार बोलवा लाग्यो. तेथी तेनो शब्द मांनली शीलवती अर्थने अण्इन्नती,वे प्रकारनुं यथास्थित समजीने निर्मय सरिखी, अर्थने अनर्थरूप विचारती, संसारना इःखना खेद युक्त थकी कागडाने पाठो उक्तर देती ह्वी के, एक अन्याय कखायी घेरथी निकली, अने हवे जो बीजो अन्याय करुं तो पियरे पण हुं न पहोंचुं. ए यां शीलवतीनां वचन सांचलीने, निपुण बुद्धिनो धणी ते शेव वहुने पूछ तो हवो, के हे वहु! ए तमें ग्रुं कह्यं ? त्यारे शीलवती बोली के हे तात? कांइ नहिं. तो पण शेवे घणो हव करी पूबतां निसासो नाखीने शीजवती कहेती हवी के हे पिताजी! हुं ग्रुं कहुं ? मारुं मंदनाग्य हे. जेहने ग्रुण करीयें ते कमेना वशयी दोपरूप थायजे. मजीव, सुघाट वृक्क, पापाणनी खाण, कपास, वांस, ज्ञेलडी, माटी, मोती, परवालां, वावनाचंदन. रेश म,सुवर्णादिक, दक्तिणावर्त्तशंख, मधुमिक्किता, मृग, उंट, अथ, इस्ती, वृष न, ए सर्व सुखरूप हे, तो पए मनुष्यने माता कमेना योगयी इःखरूप या यहे. तथापि तमे घणा आयहची वारंवार पूहो हों तो हुं कहुं हुं ते सांजलो.

रात्रिने विषे शीयालना शब्दना शकुनथी हुं निदयें गई, ने त्यांथी पांच रत्न लावी, ते में माहरी शब्याचपर ग्रमपणे मूक्यां हे,इत्यादिक सर्व ह तांतो शीलवतीयें घरथी बहार काढी त्यां सुधी नां कह्या. ते रत्नना प्रनावे माहरे घर मूकवुं पड्युं, अने मार्गमां वली आ कागडो पण मूकाववानुं कहे हे. तेएम कहे हे जे, आ केंरडाना हुक् हेहे दश कोडी सोनेयां हे ते, जे हने लेवानी इष्ठा होय ते त्यो अने हुं घणो नूख्यो हुं माटे मुफने नक्ष आपो. तेवारें मुफने इःख सांनलावाथी में कह्युं के माहरे सोनेयानो खप नथी अने हुं नक्ष पण निह दृष्टं. आवां वचन सांनली ते शेव हुप पाम तो हृदयमां विचार करवा लाग्यो जे ए वहु विशेष विज्ञानवंती हे, एनां विज्ञानपणानी मर्यादाज नथी. तो पण ए साचुं कहे हे, के जूहुं कहेहे! तेनी इहांज हमणां हुं परीक्षा करुं! एम धारी निज्ञकना गाममां जई कोश कोदाली प्रमुख आणीने तेज कृणे जाणे त्यां पूर्वें पोतेज धन मूक्युं होय निहं? तेम खोदवा लाग्यो. तेवारें तेमांथी निधान प्रगट थयुं. पढी ते

कागडाने नक्त आपी सुवर्णमणि अने माणिकें नखुं एवं दशकोटी निधान ग्रुप्तपणे हर्षवंत थको रथने विषे शीघ्रताथी मूकतो हवो.

हवे शेव खेद धरतो विचारवा लाग्यो के छहो ! ए शीलवती वहु तो महारा घरने विषे प्रत्यक्त कामधेनुं हे, छरे ! धिक्कार पड़ो मुफने तथा मारा पुत्रने जे मूढपऐं एने घरमांथी बाहार काढ़ी ! ए छमें मातुं कखुं. हवे पही जे उचित करवुं घटे, ते करवुं. छएविचाखुं जे कार्य होय तेनो प्रतीकार उपाय रूप कार्यथी करवो. एम चिंतवी शेव तुरत रथने पाढ़ो वालतो हवो.

हवे शीलवती सारा शकुन थया तेथी खेद टालीने अत्यंत हर्ष पामी. ते ज्ञेव पण रथमां बेवो यको पाबो घेर जणी रथ हांकतो निर्मलबुद्धिवाली शीलवतीने पूछतो हवो के तुं आवी माही हे तो पण अवलुं केम बोली? त्यारे शीजवती कहेती हवी के तमे कह्यं ते सत्य, पण हुं कहुं ते सांजजो. पेहेलां केत्रना धणीयें पारकुं धन लइ मोढा बमणा कढारा काढी महेन त करीने द्वेत्र तैयार कखुं हे,तेमां जे माल नीपजशे ते तो लेणियात लइ जर्रा, थणीने थोडुं पण निह रहे,तेथीमें कह्यं हतुं जे देत्रनो थणी ए माल खाज्ञे नहीं. वली पग सहिसलामत राखवा सारु में नदी उतरती वखत मो जडी पगमांथी काढी नहिं, कारण के जेमां मार्ग दीवामां न आवे एवी नदी ने विपे गमन करतां कंटकादिकनो अनर्थ थाय. वली मोजडी नीजाय तो सूकवीयें तथा मोजडी तो नवी पण थाय,परंतु पग नवा न थाय. एटला मा टे हे तात! में पगमांची मोजडी काढी नहिं. तथा ते सुनटनी पूंठे प्रहार थया हता ते सामे मुखें प्रहार थया न हता,पण पाठो नासतां ते कूटाणो हतो तेथी ते जलो कूटाणो एम मे कह्युं. वली वगडामां देवल तमे कह्युं के घणुं श्रेष्ठ वे, पण त्यां कोइक चोर जारादिकनें रहेवानुं वेकाणुं वे तेथी में कह्यं के ते श्चापएो ग्रुं कामनुं ? ते सारुं नथी. तथा नगरने विषे पोतानो कोइ स्वजन अथवा मित्रादिक न दोवाथी कोइ बोलावें निहं तेथी में कह्युं के ए नगर ग्रुन्य वे ? कह्यं वे के ॥ इक्केणं विणा पिमाणुं,सेण सम्नाव नेद निरएण ॥ जणसंकु लाविपूद्वी, ऋबोसुन्नवपिंदाइ ॥१॥ नावार्थः – जे नगरमां एक पण मनुष्य सजावना नेहे करी नह्यों न होय अने ते सिवाय बीजा लोकोची नगर नह्युं होय तो पण ते नगर ग्लून्य सरखुं जाणवुं ॥१॥ तथा जोजन प्रमुखना आद रनो करनारो, खेदनो हरनार, एवो ते गामडाने विषे माहरो मामो निश्चे रहे

वे,तेमाटे ते गामडुं वे तो पण नगरहप वे उत्तम वास एम में कहां. ज्यां ग याथी घणुं मान पामीयें, ते गामडुं होय तो पण नगर जाणवं, अने ज्यां बोलाववानो पण संदेह होय ते नगर पण गामडुं जाणवं. वली वडना वृक्त् हेवल तमे बेसवानुं कहां अने में ना पाडी तेनुं कारण ए हतुं जे वृक्त्नी जपर कागडा प्रमुख जीवोनी विष्टा साखायें पडी होय ते माथा उपर पडे तेथी नरतारादिकनो अनाव थाय, अने लिक्कानो नाश थाय. ते कारण सारु ज्यां विष्टा प्रमुख पडवानो संनव नथी एवी रथनी बांयाने विषे हुं बेठी.

श्रावां युक्तियें युक्त शीलवतीना वचन सांजलीने तत्वरूप ते वहुना वच न धारीने कोतुकवंत थको हर्षथी उल्लित एवो ससरो विचारे हे के जेम कोइक बुद्धिवंत पुरुषनी बुद्धिना विषयनो परिमित न थाय एवी जेनी बुद्धि ना विषयनी मर्यादा न होय,श्रथवा श्रविथि मूकाणी एवी मोटा जननी मती होय,योगेश्वरना ज्ञाननी पेरें मोटुं ज्ञान होय, तेम ए वहुनी बुद्धि पण मोटी हो. कह्युं हे के:—चूमिनुं मान हे तेमज ते चूमिमां समुद्द हे तेहनुं पण लक्त्प्रमित मान हो. तथा शास्त्रना जाण जे माह्या पुरुषो हो,ते निरंतर चालनारो एवो जे सूर्य तेना गमननुं परिमाण जाणे हो. जे सूर्य वर्षमां एटलुं चाले हे,इत्यादिक प्रायें जाव ते सर्व बुद्धिमान जाणे हो. ते देदीप्यमान, श्रविक्षाने विकसित एटले ते सर्वनी श्रवि मर्यादा हो,पण सत्पुरुषनी बुद्धिनो जे प्रागनार हो, तेना विषयनी मर्यादा नथी.

एम शेव हर्पित थको पोताना नगर समीपे आत्यो एटले वणे उंचे वेकाणे तेतर जनावर बोल्युं,तेथी निवतव्यतानो अधिक निश्रय करती थ की पोतानो मिहमा घणो वधशे एवी जे शीलवती तेणे युक्त थको विवेक सं पदा सिहत नली संगते अनुक्रमे पोताने घेर आव्यो त्यारे ते शेवनो पुत्र पोताना पिताने पोतानी स्त्रीसिहत पाठो आवतो देखीने कोप्यो थको क हेवा लाग्यो के हे तात ? तुफने धिक् हे,ए पातिकनुं वेकाणुं जेहनुं चित्र मातुं हे एवी ने तमें शुं करवा पाठी लाब्या ? तुजने तेणे वग्यो. अरे तमे माह्या हतां पण तेनाथी केम नगाणा ? एवा पुत्रनां चल्लंव वचन सांनलीने शेव बोल्यो के हाह्या तुं शुं जाणे हे ? एवा तोहडाइना वचनन बोल नहीं. ए तो साक्षात् सरस्वती हो, तथा लिक्स हो. शब्याचपर पांच रत्न हो, ते जइने जो ? तेमज रथने विषे दश कोड़ी निधान थाएं हो, ते पण जइने जो . ते वहु

यं पंदर कोडी सोनैया घरमां आएया तेथी कुलदेविनी पेरें ए वहु कुल मां साक्षात लिक्स सरखी है. ते पुत्रे एवां पितानां वचन सांजली शच्या मां जइने जोयुं तो पांच रत्न दीवां, तेमज रथमां दश कोडी. सोनैया जो यां तेथी ते पंदर कोडी सोनैया एकवा करी हर्ष पामतो शीघपऐं जंमारगृ हने विषे स्थापतो हवो. धन यह एकरवामां कोए विलंब करे ? कोइ न करे.

हवे अजितसेने पोतानी स्त्रीनुं आश्चर्यकारि वृत्तांत पोताना पितानें पूरवाथी तेणे सविस्तरपणे सर्व वृत्तांत कह्यं, ते सांजनी तेने ज़िक्का, पश्चात्ताप, अति कौतक अने हर्ष ए चारे प्रकार विस्तारपणे जेनां थयां ते थी ते निश्चें ज़िक्का पामी नीचुं मुख करी रह्यो. किव कहे हे, के आवे वख ते मोटार्चने अपराधीपणानी ज़िक्का घणी आवे.

हवे अजितसेन विचारवा लाग्यों के धिक्! मुजने तथा महारी निष्ठ एताने, के जेम सक्कवि पोतानी किव चतुराइयें पंमितपणुं करी मानें, तेम हुं मानुं हुं,कारण के निष्कलंक स्त्रीने में जूहुं कलंक दीधुं. लोकोत्तर चित्र नी धिणयाणी एवी ए स्त्रीने में इहवी हे,तो तेनी रीस हुं शी रीते टालीश १ एवो खेद करतो हतो तेवामां तेना पिताये बोलाव्यों ने कह्युं के तुं शुं क रवा खेद करे हे ? खेद धरीश नहीं, कारण के जे अज्ञानपणें कह्युं होय ते हनों अपराध कहेवाय नहिं. हवे ते स्त्री तारो अपराध खमशे.

एम कही न्यायमां निपुण एवा ते बन्ने जणे शीलवतीने खमावीने कहां के हवे अमे आज पठी एवं निहं करीयें. एवां जरतार तथा ससरानां वच न सांनिलने प्रीतियें करी विनीत एहवी शीलवती कहे हे के हे खामि? हे तात? एमां तमारो एकनोज दोप नथी? कारण के में पूर्वें रत्ननी वात तमने न कही, तेथी ए अविनीतने शिखामण हे. ते दिवसथी मांमीने ते म होटी बुद्धिना थणी एवा पिता पुत्र वेहु जणां वाणोतरनी पेरें जेम विनीत शिष्य जो के पोतें महोटी बुद्धिना थणी होय तोय पण गुरुने पूठीने सकल कार्य करे, तेम ते अपूर्व बुद्धिवाली शीलवतीने पूठीने कार्य करे. तेमज विपम आपदा रूप अंधकारमां पडेला एवा बीजा जनोने पण अंधकारना पूरने विपे जेम दीवी प्रकाश करे तेनी पेठें शीलवतीनी बुद्धि तेमने दीवी रूप यइने आपदानी टालनारी थई. जूर्ड बुद्धिनुं सफल पणु कहेवुं हे? कह्यं हे के:-श्रियंप्रसूते विपदंरुणिह, श्रेयांसिसूते मिलनंप्रमार्षि ॥ संस्कार योगाञ्च परं

पूनीति, ग्रुद्दिबुद्दिः किलकामधेनुः ॥ १ ॥ नावार्षः — क्रदिने प्रसवे, विष तिने रोके, मिलनपणुं टाले, बुद्धिना संस्कार योगथी बीजाने अत्यंत पवित्र करे, ते माटे ग्रुद्ध बुद्धि ते निश्चें कामधेनु जेवी है ॥ १ ॥ रत्नाकर रोहना घरने विणे शीलवती विषम एवी आर्ति जे पीडा तेहनी टालनारी थइ. वयें करी लघु होय पण गुणे करी ज्येष्ट होय ते केम न पूजाय? कह्युं हे के:— गु णेरेव महत्त्वं स्था, न्नांगेन वयसापि वा ॥ दलेषु केतकी नैव, लघीयस्सु सुगंधता ॥ १ ॥ नावार्थः — गुणेज मोटापणुं थाय, मोटा अंगथी तथा मोटी वयथी कांइ मोटाइ आवे निहं, जेम के केतकीना मोटां पांदडांमां सुगंध होती नथी, अने नाना पांदडामां सुगंध घणी होय हे ॥ १ ॥ हवे रत्नाकर शेव देवलोकनी वस्तीनो प्राहुणो थयो पही घरनो स्वामि अजितसेन थ यो, तथी राजडुवारे ते मोटो व्यवहारी थको हमेशा जाय.

एक समय राजाने चारसें नवाएं प्रधान हे पण तेमां को इमुख्य प्रधा न नची तेची मुख्य प्रधान स्थापवा सारु राजायें सर्व सनाने एवो सवा ल पूठ्यों के जे मुजने पाटू मारे तेहने हुं करीयं ? तेवारें सर्व सनाजनो ते राजाना बोलनो अनिप्राय जाएया विना केहेता हवा के तेहने दंम आ पीये. पत्नी राजायें अजितसेनने पूत्र्युं, त्यारे तेणे कह्यं के हे राजन्! हु विचारीने कहीश. एम कही घेर छावीने चार प्रकारनी जेने बुढ़ि हो एवी शीलवतीने पूत्रशुं तेथी तेणे कद्यं के, जे राजाने पाटू मारे तेने निश्चें मोह टो सत्कार, त्रादरमान देवो घटे. पुरुष होय तो राज्य आपवुं जोइपें, स्त्री होय तो सोल शणगार त्रापवा जोड्यें. त्रावां स्त्रीनां वचन सांनलीने त्र जितसेने पूरुशुं के ते केम ? त्यारे शीलवती कहेती हवी के, राणी तथा पुत्र सिवाय बीजो कोइ राजाने पाटू मारि शके निहं. एवी रीतें प्रश्ननो संदेह टब्यो. पढी बीजे दिवसे अजितसेन राज्यसनामां जइ राजानी आ गल ते वात केहेतो हवो. ते सांजली वली राजायें कह्युं के खापणो खा ख मुक हाथी है तेने जेम तेम करी तोलों ते पण अजितसेने पोतानी स्त्रीनी बुदिथी हाथीने नावमां चढावी जल प्रमाणनुं एंधाण करी हाथीने बहा र काढी ते नावमां पूर्वें करेलां एंधाणसुधी पथरा नखा, पत्नी ते पथरा तोव्या एटजे हायीना तोलनुं प्रमाण ययुं जे आटला मण हायी ययो. ते श्रजितसेननी बुद्धि, पराक्रम जाणीने राजायें घणी प्रशंसा करी.

एकदा एक विशक आवी राजाने नमस्कार करी कहेवा लाग्यों के हे राजन ! एक विशक, किंपाक हुन्ता फलनी पेरें, मोढें मीनो अने परिणा में इप्ट हे, ते धूर्च साथें मुग्थपणे में इर्नु दिनां धणीयें कमेने वज़े करी जे म बोरडी साथें केलनुं जाड मित्राइ करे तेम में मित्राइ करी. कहां हे के, योवनपणामां जूवटुं रमे, दासी साथें अने धूर्च साथें प्रीति करे, एवो म नुष्य कोण उद्देग नथी पाम्यो ? जे एनाष्टी वगोवाणो नथी ते मोटो नाग्यवंत जाणवो. हवे ते धूर्च मित्रने माहरुं घर नलावी हुं व्यापार अर्थे परहेश गयो. पही जेम फल्या खेतरनी रहा करवा सारुं रह्क मूक्यों होय अने ते रह्क जेम खेतरमांहेली सघली वस्तु खाय तेम ते धूर्चें मारुं सघ लुं स्व खाधुं. अवसर मलवें माहरी स्त्री साथें पण लोनायों तेथी ते पापी पा पकर्म केम न करे ? करेज. एम करतां विदेश थकी हुं आव्यो अने धन उपार्ज्यानी बधी वात मित्रने कही. ते सांनली ते धूर्च मित्रे कह्युं के तें कांइ आधर्य दीतुं होय तो कहे. तेथी में कह्युं के अहिंथी ढूंकडुं एक उद्यान हे, तेमां जलें नखो एक कृवो हे, ते कृवामां एक फल रसे सहित, पांदडा सहित, नारी हतुं तो पण ते पत्रनी पेरें तरतुं में दीतुं.

ते सांजली ते धूर्म मित्र बोखों के जो ते बात सत्य होय तो मारा घर नी क्रिमांथी ताराथी वे हाथें लेवाय तेटली क्रिक्त तुं लेजे अने जो ते बात खोटी होय तो तारा घरनी क्रिमांथी माराथी वे हाथे जेटली उपडे ते टली क्रिक्त हुं लग्नं, एम कही ते धूर्म गयो, अने रात्रे ग्रामो मानो एकलो जह ते फलने क्रुवामांथी काढी लाब्यो. प्रचाते मने आवी कहेवा लाग्यो के चाल ते बताव ? तेवारें अमे बन्ने जणायें त्यां जहने जोयुं तो कांइ फल हीतुं निहं. एम ते धूर्में ग्राम करवाे शते मारी क्रिक्त तथा स्त्री लेक्ने. तेटला माटे हवे ग्रुं ग्राम करवाे ? ते मुफने कहाे. हे राजन ! जेम जमरो कमलमां हांय,ने सूर्य अस्त पामवाथी कमल मिंचाय तेथी जमरो बंदीखाने पहे, ते ज्यारे सूर्यनो ग्रद्म थाय अने कमल ग्राहे त्यारे जमरो ब्रुटे, तेम मूजने तमे गमे तेम करी ग्रोहावाे. हे प्रचाे ! विषम वख ते राजानुं शरण हाेय ! कह्यं ग्रे के:—हर्वलानामनाथानां, वाल व्रक्तप खिनां ॥ अनार्थैरनिनूतानां, सर्वेषां पार्थिवाे गितः ॥ १ ॥ हर्वलने, अना

थने, वालने, वृद्धने, तपित्वने, अने कोई अनार्यथी पराजव पामेलाने, ए सघलाने राजानी रीते राजा सार संजाल करे.

ते वात सांजली राजायें ते कार्यनी अजितसेनने आङ्डा आपी. सरल बुिना थणी अजितसेने पण कूलदेविनी पेरें पोतानी स्त्रीने पूढीने ते व णिकने कह्य के तुं ताहरे घेर जड़ ताहरी स्त्रीने मेडाउपर चडाव तथा सर्व धन, माल,वस्तु पण मेडाउपर चडाव, अने दादरो बंध कर,तथा दादरे च डवाने ठेकाणे एक मोटी जारे निसरणी लावी मूक. पढी ज्यारे ते धूर्च तारा घरने विपे क्रिड लेवा आवशे,त्यारें ते कोइने देखशे नहीं तथी मेडा उपर च डवा माटे नीसरणीने वे हाथें जालशे त्यारे तेने कहेजे के तारा ठेराव प्रमाणे तें वे हाथे नीसरणी यहण करी माटे तेने तुं लड़ने ताहरे स्थान कें जतो रहे, त्यारे ते धूर्च नीसरणीने पडती मूकी खेद पाम्यो थको,हणा णी हे बुि जेनी एवो थइ पोताने थेर जाशे. एवं पोतानुं हितकारी वचन सांजलीने ते विणके धूर्चने तेडावीने तेमज कखुं. एवं। अजितसेननी बुि देखीराजा हर्षित थइ सर्व प्रथानोमां महोटो प्रधान करी अजितसेनने थाप तो हवो. अहह ! जुड एवं। गुणवाली स्त्री केने होय ? पुण्यवंतनेज होय.

ह्वे शीलवती कांक्क विचार करीने अजितसेनने कहे हे के हे प्राणना य! माहरुं शील इंड्सरखो पुरुप जे होय ते पण खंमवाने समर्थ नथी, तो पण हे आर्यपुत्र! राज कार्यना परवशपणा थकी तमारुं घरनेविपे थोडुं रहेवानुं थाय हे अने अहियां पोतपोताना कार्यने अर्थे घणां लोक आवे हो, माटे डुर्देवना वश थकी पूर्वनी पेतें तमनें कुविकल्प उपजे अथवा बी जा कोक्ष्ने पण कुविकल्प उपजे तेमाटे शीलनी परीक्षाने अर्थे एक कमल तमनें आपुं हुं. जो परपुरुप उपर माहरुं मन बगडशे तो ते कमल तुरत करमाइ जाशे, अने ज्यां सुधी माहरुं मन इह हशे त्यांसुधी विकसित रहे शे, एम कही परमेश्वरनी पूजा करी परमेश्वरनी साल्यें कमल अजितसेन ने आप्युं. अजितसेने पण विस्मय पामी ते कमल लीधुं. हवे ते कमलनुं परिमल घणुं विस्तरे, नित्य जोगि थको रहे. ते कमलने सर्वदा विकस्वर थ येलो देखीने सर्व नगरनां लोक पोताना चित्तमां चमत्कार पाम्या अने वि चारवा लाग्या के बीजा कमल तो मात्र श्वासोङ्घासथी पण तरत करमाइ जाय अने आ कमल तो सर्वदा विकस्वर रहे हे,ते सर्व शीलनुं माहात्म्य हे.

एकदा राजा पोताना वैरी राजाउने वश करवा सारुं कटक करी श्रजितसेनने साथें जड़ने चाव्यो. जेम सूर्यनी साथे बुध रहे ने तेम राजानी पासे सर्वदा प्रधान जोइयें. श्रनुक्रमें चाजतां थकां मार्गमां ज्यां मरुधरनी पेरें जज़ इर्जन मले ने, ज्यां फूजनुं नाम पण नथी, तो त्यां वली कमलनी वात ग्रं करवी? त्यां श्रजितसेनना हाथनेविषे श्रत्यंत पणे विकसित कमल देखीने राजायें निर्वधपणे तेनुं कारण पूनगुं, तेवारे श्रजितसेनें यथार्थ वात कही. ते स्वरूप जोइने राजा श्रसंनाव्यपणें श्रनव्यनी पेरें श्रद्धा न धारण करतो यको केहेतो हवो के ए तहारुं बोलनुं साचुं केम मनाय? तेवारे बीजा चार कपटी प्रधान ने तेहने राजा ग्रमपणे पूने ने जे ए ग्रं ह्यों? ते चारे जणा क हेता हवा के हे नरेश! एहने स्त्रीयें नग्यों ने. एहवी कोण स्त्री शीलवती होय, जेहनुं विग्रद्ध शील निर्मन्तुं होय. जे स्त्री जन्मश्री मुग्धा, ग्रद्ध स्नेह वंती ने वली माहि एवी पातालसुंदरी, तेणें पण पंमित स्नेही जयवंतसेन रा जाने वंच्यो हतो, तो वली बीजी स्त्रीयोनो स्यो विश्वास करवो? ते सांनली राजायें पूनगुं के पातालसुंदरी कोण? श्रने तेणे राजाने केम वंच्यो? तेवारें ते चार प्रधानमांहियी एक जण बोव्यों के हे नरेश! सावधानपणे सांनलो.

जेहनी मोटी पाल है, तथा न्याय अने लक्क्वीनी शाला है, एवा विशा लपुर नामना नगरने विपें कलामां घणो प्रवीण, तथा शत्रूनी सेना जे णे जीती है एवो जयवंतसेन नामे राजा राज्य करे है. ते राजा एकदा गर्वथी सर्व सजाना लोकप्रत्यें कहे है के एवी कोइ कला रही है के जे हुं नथी जाएतो ? ते सांजली सजाना लोक सर्व कहेता हवा के हे महाराज! आप सघली कलामां प्रवीण हो. तेवामां एक माह्यो पुरुप बोल्यो के तमे सर्व कला तो जाणो हो. पण एक स्त्रीचरित्र जाणता नथी. कहां है के ॥ देवाणदाण वाणं,मंतंमंतित मंतिन ज्ञालां ॥ इिचिरिश्चं निज्ञणो, ताणविमं ता कहिंनहा ॥१॥ जावार्थः—देव, दानवने मंत्रादिके करी वश करेहे एवा मंत्रमांहि निपुण जे मंत्रवादियो तेना जे मंत्र तेपण स्त्रीना चरित्र आगल क्यांही नाशि जाय है ॥१॥ जालंधरेहिंजूमि, हरेहिंविविहेहिंश्चंगररकेहिं ॥ न विरक्ति आवि रमणी, दीसइ पष्टा क्यां स्त्रीन राजायें स्त्रीने राखी तोपण ते चष्ट मर्यादावंत देखाणी ॥१॥ मन्न पयंजल मक्को, आगासे पिक्तआणप

यपंती ॥ महिलाहि अयमगा, तिन्नवि लोए न दीसंति ॥३॥ नावार्थः— जलमांहि महाना पगलानां जाए हो, त्राकाशमांहि पिक्तना पदनी श्रेणिना जाए हो, पए स्त्रीना हृदयना मार्गनो जाएनार कोइ त्रए लोकमांहे देखा तो नथी ॥३॥ एवा पंक्तिना वचन सांचली राजा माधुं धूएावतो विचा रवा लाग्योजे, ए साचुं हे. स्त्रीयो ग्रप्त हृदयवंत एवीज दीसे हे, तो महा रा अंतरपुरनी स्त्रीयो निश्चे सितयो नथी, एवी मनमां शंका उपनी. अने संबंध तो वली निर्मल शीलनी धरनारी होय तेनी साथेंज करवो युक्त हे.

तेमाटे हुं कोइएक राजानी पुत्री हुने तेने जन्मतांज परणी नृंयरामां राखी मोटी सती करीने जोगवीश. घणुंकरीने प्रायः स्त्रीने अने पुरुपने कुसंग तिथी दोप उपजे हे, माटे जोंयरामां रह्याथी दोपनी शंका केम थाशे ? एवो निश्चयकरी राजायें पोताना सेवकोनें कहीने कोइक राजानी कन्या अत्यंत रूपवंति लक्षणे करी सहित एहवीने मंगावी लइने तेनी साथे जन्ममात्र परणीने पोताना वास ज्वननी हेहे नृंयरांमां विश्वासु धाव राखी ते धावे तेने लाली पाली मोटी करी. तेवारें ते धावने पण राजायें तिहांथी काही मूकी पण मात्र तेना केश समारवा आनृपणादिक पहराववा शरीरनी शो जा करवा जाय परंतु धाव तेनीसाथें वार्चा करे नहीं, तेपण जेवारें ते यु वावस्था पामी तेवारे धावने पण जवानुं वंध कखुं. तेहनुं पातालसुंदरी ए हवुं नाम राजायें पाड्युं. कारणके एकतो पातालमां रही, अने वली तेनुं रूप घणुं मनोहर हे तेणे करी पातालसुंदरी एवं यथार्थ नाम थाप्युं.

जन्मथकी ते मुग्धास्त्री, विद्युद्ध, स्नेह्वती हे, एवी पातालसुंदरी सा थें राजा स्नेह सहित विविध विलासे नांग नांगवतो हवाे. ते स्त्री परपुरुप नुं नाम पण न जाणे, तेमज मनयकी द्युद्धिलनी धरनारी एवी जाणीने राजा चलासवंत स्नेह धरतो त्यां नूमिगृहमांज घणो वखत रहे, ज़्रुरनुं काम होयतोज बहार आवे. हवे मणिष्टीपथकी अनंग जेवुं जेनुं रूप हे, तेवो अनंगदेव नामनो कोइक सार्थवाह घणो सथवारो तेमज घणीवस्तु सार्थे लक्ष्ने ते नगरमां आव्यो. तेणे आमला प्रमाण एवो निर्मल मोति नो एक हार जे त्रणे जगतमां सार नूतहे ते लक्ष राजाने नेट कस्त्रो. ते मज बीजी पण केटलिएक सारवस्तुनुं राजाने नेटणुं कस्तुं. तेथी राजा

पण तेनी उपर तुष्टमान थइने तेह्नुं दाण मूकतोह्नो. हवे ते अनंग देव मोती, मिण, परवाला, सोनु, पटकुंलादिक सर्व वस्तु वेचीकोट्याविध धननो धणी थयो. तेणे पोताने रहेवासारु मिणनुं ज्ञवन कराव्युं अने रा जाने चामरनी धरनारी काम पताकानामे गिणका हती तेने घणु इव्य आपीने पोताने वस्यकरी. एकदा अवकाश पामीने अनंगदेव गिणकाने पूढवालाग्यो के राजा पोते तो सिथिल मन वालो जाणियें बीजुंज चित्त थइ गयुं होय निहं तेम राजकार्यने विपें रहे हे, अने सनामां पण असूरो आवेहे, तेपण वली तत्काल पाहो उतावलो जतोरहे हे,ज्रूगटानुं तथा पर स्त्रीनुं व्यसन पण कांइ एहमां प्रगट दीनामां आवतुं नथी,तेमहतां राजानुं एवं व्ययचित्त केम जणाय हे?

तेवारे ते गणिका पण सम्यक्षणे सार्थवाहने कहे हे के बीज़ं तो हुं कांड़ जाणती नथी पण एक वात जाणुं हुं. जे खंतः पुरमां एक एवी वात हे जे ए राजा एक खीथीज रित सुखमां प्रीतिवंत रहे हे. ते जन्म मात्र पर ऐली खी हे,जेहने जन्मथकी चूमिग्रहमां राखी हे,तेथी एकलो तेनी साथें ज विलास करे हे. एवां गणिकानां वचन सांचली खनंगदेव विचारतो ह वो के जे खी सूर्यने पण देखित नथी तथा जेहनी पासे राज्यनुं सर्व कार्य हांमीने राजा तिहांज पड्यो रहेहे तो ते खी केवी हशे ? तेहनुं दर्शन थहुं पण इलीज ? तो तेना शरीरनो स्पर्श तो क्यांथीज थाय. एमकामयहे पी ड्यो थको, कंदर्षे जेहनुं हृदय हृष्युं हे,एवो अनंगदेव पातालसुंदरीने मल वानो उपाय विचारवा लाग्यो. कह्युं हे के जे खी मलवी इलीज होय ते कामीपुरुपने उत्रुष्ट रितसुखनुं कारण हो, तेमाटे विशेपें निवारवुं.

हवे ते सार्थवाहे फरी घणुं चेटणुं राजाने कखुं अने बहु माने करी राजाने वश कखाे. तेथी ते सार्थवाह अंतःपुरमां जाय आवे तो कोइ तेने मनाइ न करे. एमकरतां एकदा ते चोंयरानुं वेकाणुं जाण्युं. तेवारें पोता ना विश्वास माणस पासे पोताना घरथी ते चूमियहसुधी सुरंग खोदावी ते चोंयरानी चींतने कोइ न जाणे तेवी रीते सजीसंच कखाे. ते जाणियें सा क्वात नरकनोज मार्गहोयनी ? एवो सुरंगनो मारग हो. एकदा ते सजंग द्वारे चोंयरानी चींते आवी सार्थवाह चचो रह्यो, अने जेवो राजा पातालसुंदरी पासेथी बहार निकत्यों के तुरत ते सार्थवाह सुरंगथकी चूमी ग्रहने विषे

गयो. तिहां पातालसुंदरी सुखशच्यामां सुती हे,तेने रतीनी पेरें जोइने वि चारवा लाग्यों के रूपे करीने पातालनी स्त्रीयों जेएों जीती हे,वली ए राजा नी स्त्री हे अने अवर राजानी पुत्री हे जेनां जन्म मात्रग्रु६ चरित्र हे,तो ते अ न्यायकारी माहरा वचन केम मानज्ञे ? तेनां हृदयनी वात हुं केम पामुं ? एम विचारी ते स्त्रीने जगाडीने स्नेहची बोलावी. तेवारें ते स्त्री आश्वर्य पामीने घणुं उज्ञासवंत यइ अने जाणियें घणा दिवसनो एनीसाथें परिचयज होय निहं ? तेवीरीतें शीघ्रपणे तेनी साथें हास्य करती मली गइ अने कामनोग विलास पण कखो. अहह ! जूर्ड अनादि नवनो अन्यास, ए हमणा एने कोणे शीखव्यो ? ए तो जीवनो सहज स्वनाव वे. कह्यंवे के:-गगदोसक साया,हार नयरुच्च निद्द मेंहुन्नं ॥ पुवनवद्मासार्च, लप्नइ असुऋं ऋदिर्हिप ॥१॥ नावार्थः-गा, देप, कपाय, छाहार, नय, रुदन, निड़ा, मैथुन, ए सघनां अणलांच्या तेमज अण दीवां पूर्वजवना अञ्यासयी जीव पामें ॥ १ ॥ एम चित्तने विषे शंकातो हतो तो पण निशंक चित्त थको ते स्वी साथें मु ख विलग्ने. तेजंयें ते सुरंगमां आववाने माटे एक मोटी दोरी करी मूकी. ते जेवारें राजा रमीने सनामां आय के तुरत पेली स्त्री दोरीने खेंचे एट क्षे सार्थवाह त्यां त्रावे. एम निरंतर चोरनी धेरें ते सार्थवाह गमना गम न करतो विलास नोगवतो ह्वो. अने ते स्त्री अति धूत्तारी हे तो पण रा जाना मुख ञ्यागल वली ग्रुद यइ चालवा लागी.

हवे अनंगदेव सार्थवाहने पातालसुंदरीयें कहां के तुंलगार मात्र बीक राखीश नहीं. तुं मुफने ताहरे घेर नेडी जइने बधूं नगर देखाड. एम वारं वार कहेवाथी ते बीहितो थको पातालसुंदरीने पोताने घेर तेडी जइ नगरनी बिध शोना बतावी. हवे ते पातालसुंदरी एक दिवस गोखे वेठी थकी नगरनी सोना जोती हती तेवामां मोटी क्रिक्त सहित राजाने रेवाडीयें जतो देखीने विचारवा लागी जे, राजा पोतें एकलो बहु प्रकारनी क्रीडा करे के अने मुफने आज जन्मपर्यंत ग्रप्त गृहने विपे बंदीखाने नांखी के. तेथी ते राजा कपर विरक्त थइ थकी अनंगदेवने कहेवा लागी के राजायें मुज ने बंदीखाने राखी के,एटला माटे हुं राजाने महा विग्रह्मणुं देखाडुं. ते माटें तुं कपटथी थोडा दिवस आजारी पड अने पाढो सारो थयो बुं एवो ढोंग करी राजाने जमवाने बोलाव, ते वखत हुं राजाने जमवानुं पिरसीने

चमत्कार देखाडुं. आवुं सांजली अनंगदेव सार्थवाह कहे वे के हे मुग्धे ! ए अनीती माराथी केम थाय ? राजाने केम नोतराय ? वली तुं पण राजाने केवीरीतें पीरसी सके ? ए प्रत्यक् अनर्थ केम थाय ? ते सांजली पातालसुं दरी बोली के वाणीया जातें बीकणज होय, निरंतर जय विना बीहीतो रहे, पण तुं अमारुं चरित्र जाणतो नथी. अमे स्त्री जाति वेयें ते इंड् सरखाने पण वेतिरयें, तो वली ए राजा, जे पोतामां व्यर्थ पंमित पणु मानी रह्यो वे, तेनो क्यो जार ? घणुं कुं कहुं तेमाटें जो तुं महारुं कहुं नहीं करीश तो जीवतो पण केम बूटीश ?

आवुं स्त्रीनुं वचन सांनली ते सार्थवाद नयचांत चित्त थको ते वात तत्काल अंगीकार करीने घणा दिवसनो मांदो थइने अनुक्रमे फरी कप टे करीने साजो थयो. अने सर्व जोजननी सामग्री तैयार करीने राजाने जमवानुं नोतरुं देवा गयो. त्यां राजापासे जइ बोख्यो के हे राजन्! मने घणो मंदवाड हतो, पण हवे तमारा पसायची सारीरीते करार चयो हे, तो तेनो हवे आजे मारे घेर उन्जव हे माटे तमे कुटुंब सहित मारे घेर ज मवा पधारो,एम घणो आयह करी राजाने जमवानी हाजणावी, हवे राजा कुटुंबसिहत जमवाने आब्यो, तेवारें अनंगदेवे घणो आदरसत्कार करी रा जाने जमवा बेसाड्यो. चोजन पीरसवाने पातालसुंदरी आवीने घणि युक्तियें करी राजाने पिरसती हवी. कवि कहे हे के खहह जूर्ड स्त्रीनुं धूर्च पणुं ? राजा वली ते पातालसुंदरीने जोतो थको विस्मयवंत थइने विचार वा लाग्यो के ए पातालसुंदिर इहां क्यांथी आर्व। ? पण निहं हुं चुलुं हुं ? ए अहियां क्यांथी आवे ? हमणाज हुं एनीपासेथी आवुं बुं ? तेतो जन्म थकी जोली हे, अने आतो एनीज खी हे, पण निपुणतायें तो तेना जे वीज हे, अने नेत्रधी जोइयें तो एक रित मात्र पण आंतरुं देखातुं नधी. वली.ए बेहुनुं आवुं बरोबरीपणुं पण केम आवे ? इहां तत्वनी वात को ए जाएो ? एनुं निर्णय पण केम थाय ?

एम धारी तेने उलखवाने अर्थे जेवी ते पातालसुंदरी पीरसीने पाठी जती हवी तेवांज राजायें तेनां वस्त्र उपर घीना ठांटा नांख्या. ते धूर्न पातालसुंदरी यें जाणी लीधा अने विचाखुं जे मारा मों आगल तुं कोणमात्र ? मुजने तुं ग्रुट्ट जाणे ठे, तेमाटे तें घृतना बिंडु नांख्या. एवो मनमां गर्व धरी हाथमां वीं जणो जि जन्तिरने वायरो नांखती केहेती हवी के हे राजन! जेम विषने मुखमां न घाजीयें तेनी पेठे ए जोजन तमे केम मुखमां नथी घाजता? ए जोजन तो जरूण करवा योग्य हे. पण विणकना जोजन राजाने केम गमे ? तेथी तमे आरोगता नथी. अथवा हे प्राणनाथ! अमारुं छवन देखि त मारा चिन्तने चमत्कार उपन्यो? तेथी झून्यचिन थयुं हे,माटे केम जमो? अथवा मोटा माणसनें कुधा अहप होय,तेथी तमे खाता नथी, एम धीहाइ नां वचन कहेती हवी. किव कहे हे,अहो जूडे एह स्त्रीनी चेष्टा? हवे राजाना चिन्तने संशय अने विस्मय ते स्त्री तथा सार्थवाह उपर थयो अने सार्थवाह हास्यपणाना जावनें आश्रय करतो थयो. ते स्त्रीयें राजाने साक र नांखेडुं ड्य आप्युं पण राजाने व्यय चिन्त होवाथी विप सरखुं जाग्युं. तो पण मुनिनी पेरे निःस्वादवंत ते दूध पीधुं अने सार्थवाहे तंवोज वस्नाहि क आन्वपण प्रमुख आप्यां ते जइ उतावड़े राजा घरतरफ गयो.

इहां ते पातालसुंद्री पण तरत ते राजाना करावेला अपर वस्त्र पहेरि ने सुखने ढांकी पूर्वनी पेरें नूमि गृहमां जंइ श्रुग्यामां निश्चित यकी सूता. पाढलथी ह्वें राजा सर्व तालानी कूंचीयों लेइ ज्याडीने नोंयरामां आवी जूएढे तो जेवीरीतें पोतेस्ति मूकि गयो हतो तेवी रीतेंज तेने स्तृति देखी. त्यां राजाये तेने जगाडी,तेवारें ते स्त्री बगासां खाती, आलस मोडती जठी ने बेठी थइ. ते जोइ राजा विचारवा लाग्यों जे ते स्त्री तो बीजी हती,वस्त्र तथा रत्नजडित आनूपण, जे कांइ जोइयें ते सर्व दीवां. नले मने करी ते राजा स्त्रीने जोतो हवो, पण ते स्त्रीने विषे कल्प्यतापणुं लेश मात्र पण न दीवुं. तथी निःशंकहद्वयें ते पातालसुंद्री साथें पूर्वनी पेरें नोग विलास करे. धू र्च चिरत्र ते धूर्चज जाणे. साचूं होय ते खोटूं करे अने खोटूं होय ते साचूं करे.

एकदा ते पातालसुंदरी गर्वे करती सार्थवाहने रीजवीने कहेवा लागी के हवे सक्क थार्ड, चालो आपणे देशांतर जड़्यें. ते वचन सांनलीने उत्त र देवा असमर्थ एवो सार्थवाह कहेतो हवो के हुं राजा पासे रजा लेवा जाउं तो राजा केम जाणे नहिं ? तेवारे पातालसुंदरी कहेती हवी के वा णिया जातनां बीकण कह्या हे ते वात खरी है.

हवे तुं मारुं माहापण जो राजा मने बोलाववा आवे ते पेहेलां आ पणे समुड् उलंधि जइयें एवा घणा वाहाण तैयार करो. तमारो व्यापार सघलो समेटो, उघराणी लेहेणुं प्रमुख जे लेवा योग्य होय ते सघलुं त्यो, माटे जेम हुं बुिह्यी विस्तारुं तेम तमे प्रतिबंधरहित थार्च. ते सार्थवाह अति कायर एवो पण जाणियें बंदीवान बंदीखाने पड्यो होय तेम, जय जीत थको तेनी साथें चालवा सक्त थयो. किव कहे हे के कामिनीना सुखना अर्थि एवा जे कामि पुरुषो हे तेने धिक्कार पड़ो. कह्यं हे के:—स्या बेत्रावेमातृमुख,स्तारुण्ये तरुणीमुखः ॥ वार्बकेतुपुत्रमुखो, मूढो नात्ममुखः कचित् ॥ १ ॥ जावार्थः—बाव्यावस्थामां माता साहमुं जूए, युवावस्थामां स्वीनां मुख साहमुं जूए, वृदावस्थामां पुत्रनां मुख साहमुं जूए, पण ते मूढ पुरुष पोताने विपे तो क्यारे पण जूए नहिं.

हवे पातालसुंदरीयें सार्थवाहने कह्यं के तमे राजाने जड़ने कहाे के म हारा पितायें मुजने तेडाव्यो हे, एटला माटे हे राजन् ! हुं ताहरी आज्ञा सेवा आव्यो हुं, तेथी तमे प्रसन्न हो तो हुं जा**नं. एवां पाता**लसुंदरीनां वचन सांजलीं ते सार्थवाहे विनीत शिष्यनीं पेरें तेना कह्या मुजब सर्व हिकगत राजा पासे जइ कही. अने विनंति करवा लाग्यो के हे राजन! माहरां मातिपता वृद वे,तेमने माहरा विरह्तुं इःख घणुं वे, तेथी तेमनो कागल आव्यो है,माटे तेमनी पासें जवा सारु तमने पूहवा आव्यो हुं. त मारे प्रसादे में घणी लक्की उपार्कन करी, ते तमारो उपकार महारी उपर वे माटे खुशी यइने कपा करी रजा छापो. ते सांनजी राजा बोट्यो के तुज सरखा पुरुपनें चालवाने रजा केम अपाय ? अने ना पण केम कहे वाय ? कहां वे के:-मामाइत्यपमंगलं व्रजइति स्नेहेन हीनंवच, स्तिष्टेनि प्रज तायथारुचि कुरुष्वेत्यप्युदासीनता ॥ किंते सांप्रतमाचराम चितं तत्सोप चारंवचः प्रस्थानोन्मनसीत्यनीष्टमनुजेवकुंनशक्तावयं ॥ १ ॥ नावार्थः-जा उमा एम कहीयें तो अपमंगिलक वात याय, जाउ एम कहीयें तो स्नेहें हीएं वचन थाय, रहो एम कहीयें तो प्रजताइनुं वचन थाय, जेम इज्ञा मां आवे तेम करो एम कहीयें तो उदासीनुं वचन थाय, हुं तुजने हम णां उचितपणुं करुं एम कहीयें तो सोपचारक वचन थाय, तेमाटे प्रस्था नाने सन्मुख जे वहालुं मनुष्य थाय तेने कहेवा अमे समर्थ नथी ॥ १॥ जो तुफने जवानुंज मन वे तो तुं कांइ कार्य मने कहे, जो हमणां कहेवुं होय तो हमणां कहे अने पठी कहेवुं होय तो पठी कहेजे.

आवां राजानां वचन सांजली सार्थवाह बोख्यों के हे राजन ! तमारा पसायथी माहरुं संपूर्ण कार्य नीपनुं ने तो पण जो तमें मारा जपर प्रस क्र हो तो मने कांगसुधी चालती वखत वोलावा आवो. कारण के तेथी करी देशांतरने विषे माहरी कीर्चि कांइक आश्चर्यकारी पसरे, यशवाद घणो थाय. राजायें तेनुं वचन अंगीकार कखुं. किव कहे ने के अहह ? जून मोटा पुरुषनी अनुवृत्ति केवी ने ? के जे कांइ साहामो धणी कहें ने ते सर्व प्रमाण करे ने.

दवे ते सार्थवाहे ग्रुन मूहुर्ने घणां वाहाण करियाणांथी नरीने समुड् मां तेयार राख्यां अने पोते सुखपाने वेसी समुइ कांवे गयो. त्यां राजा पण सुखपानें बेसी तेने वोनावा आव्यो. पातानसंदरी पण सुखपाने वेठी पोतानी बुिंदियी त्या कार्य नीपन्युं तेथी हर्ष पामती राजा पासें जइ कहेती हवी के हे खामिन ! अमोने प्रचुयें मोहोटो पसाय कहां. हे रा जन ! तमारा पसायथी महारा स्वामीयें मोटी ऋि उपार्जी. तमारा पता यथी खमारां सघलां कार्यनी सिद्धि यइ. हे राजन ! बहु मानथकी खघवा अज्ञानथकी जे कांइ माहरो अपराध थयो होय ते कुमा करजो. हे राजन ! अमने तमारा सेवक जाणीने कोई वार पण संजारजो! अमने विणकने कोण संनारे ? तो पण अमारे कहेवुं उचित्त हे. किव कहे हे के जूउं अ सतीनुं धीष्ठाइपणुं. आवां वचन सांचली राजा विचार करतो हवो के धिक थार्छ ? एस्त्री पातालसुंदरीज हे. वली विचारवा लाग्यो के पातालसुं दरी इहां क्यांथी होय ? पूर्वें पण मुजने नर्म उपनो हतो तेम आ हम णा पण जर्म पडे हे. समशीर्षपणे विधात्रानी स्पर्हीयें जाणीयें राजानो, ज्ञेवनो अने पातालसुंदरीनो ए त्रणेनो सुखपाल बराबर चालते थके थोडीवा रमां समुइकांवे सद्घ परिवार संघाते आव्या. ते सार्थवाह राजाने नमीने पातालसुंदरी सहित मोटा वाहाणमां शीघपणे बेवो. हवे कदाच पाढल थी आपणी शोध करवा माटे राजा आवशे एवी शंकायें पातालसुंदरीयें सार्थवाहने कहां के बीजे मार्गे वहाण चलावो. तिहां नयन, मन अने प वनना वेगनी पेरें तथा कछोलहणांतानी पेरें ते वाहण चालता हवा.

हवे ते पातालसुंदरी, वाहाणमां व महीना सुधी तो सार्थवाहनी सा ये आशक रही. त्यार पठी ते सार्थवाहनी जाइबंध सुकंव नामें यथार्थ नामनो धणी हतो तेनी साथें देवरना संबंधयी हास्य करती, तेना सुखरे करीने पातालसुंदरी तेनी साथें रक यइ यकी ग्रमपणे रमण करे. अहो! जूठ स्त्रीयोनुं चंचलपणुं कहेवुं वे? कह्यं वे के:—कछोलादिष बुहुदाहिषच लिह्युहिलासादिष, जीमूतादिषमास्तादिषतरत्ताद्वयोध्वेषद्वादिष ॥ चित्रं चित्रमयंचलात्रिज्ञवनेकिंश्रीनंतेशेमुखी, नैवंकिंखलसंगतिनंनननुस्त्रीजातिर स्येनमः ॥ १ ॥ नावार्यः—पाणीना कछोलयकी पाणीना पर्णोटा चपल वे, तेथकी वीजली चपल वे, तेथकी वीजलीना चलकार चंचल वे, तेथ की वर्षाद चपल वे, तेथकी वायु चपल वे, तेथकी वली गरहनी ठई पांख चपल वे, ते गरहनी ठई पांखनी पेरें, आश्र्यमांहि आश्र्यकारी एवी त्रण लोकमां वस्तु नथी. लक्की पण चपल वे, खलनी संगति ते पण चपल वे, एवी रीतें निश्चें स्त्री जात चपल वे, ते स्त्री जात निण नमस्कार थाठ ॥१॥ हवे सुकंव संघाते विलास करतां अनंगदेवने अंतरा यनूत जाणीने पातालसुंदरी मनमां चिंतववा लागी के जो हुं अनंगदेवने मारुं तो सुकंव संघाते प्रगटपणे जोगविलास करं.

एकदा अर्दरात्रीने समयें अनंगदेव शरीर चिंतायें चवघो, तेवारें पा तालसुंदरीयें शीघपणें पखरनी पेठें तेने समुइमां नांख्यो. कहां हे के के-जंचि चे चित्तं चं, जंन सुविणेवि पिथी सका ॥ लीलावइण लीला, वावारोतिम कक्किम ॥ १ ॥ नावार्थः—जे चित्तने विषे विचाखामां न आवे तथा जे स्वप्तमां पण जोयामां न आवे, ते वात, लीलानी करनारी एवी स्वीनी लीलानो व्यापार ते कार्यमां आवे ॥ १ ॥ हवे ते असती केटलोक वखत चंचे स्वरे पोकार करती, विषाद करती हवी के धाउ! हे लोको धाउ? मा हरो स्वाम इहां समुइमां पडी गयो. जेम रांकना हाथमांथी रतन खोवा य तेम मनें थयुं. एवां पातालसुंदरीनां मुखथी विलापनां कटुक वचन सांचितने सर्व साथना लोक इःख धरवा लाग्यां. जेम पुख्यहीनना हाथ मांथी रत्न गयुं होय तेने शोधे पण जडे निहं तेम अनंगदेवने सघला स थवारायें मली घणोयें समुइमां खोट्यो पण क्यांहि जड्यो निहं. पठी ते पातालसुंदरी कुलटा सतीनी पेरें महोटे सरें नव नवां विलाप करती मर वाने वास्ते तैयार थइने कहेवा लागी के हुं पण हवे मरीश. कि कहे के अहो! जूउ कपटनी चतुरुष्टी मर्यादा कहेवी हे?

हवे एवं सांजली सुकंगदिक सर्व सयवाराना लोक पातालसुंदरीने वा रवा माटे दोड्या, अने सर्व कोइ कहेवा लाग्या के तुं ताहरुं अकस्मात पणें मरण केम करे हे? इप्ट देवना इप्ट व्यापारथकी अनंगदेव आपणने मले एवो कोइ हवे जपाय नथी, तो हवे ते सार्थवाह अमारो स्वामी गयो ते स्वामीन वेकाणें तमेज अमारा स्वामी हो. ते सांजली सुकंव मोन्य धरीने रह्यो. अने पातालसुंदरी तो वाह्यजावें शोक धरती पण अंतरजावे हर्ष धरती हवी जे सुकंव संघाते सुखविलास करवानी निर्जयता थइ. धि कार हे! ए इप्टाने के जेणे शवपणु करी तीहण बुिहना धणी सार्थवाह ने समुइमां नांखी दीधो, तेथी जो हुं तेनी सार्थे विलास करुं तो मारा पण एवा हाल करें धिकारहे ए स्वीने? के जेणे धीठपणाथी राजाने अने सार्थवाह बन्नेनें हांम्या तो ते मने पण केम नहिं हांमे ? कोण जाणे मुने पण हां करने ? एम विचारीने सुकंव विरक्त चिच थको हे तोपण जयें करीनें ते स्वीने अनुजायीयें चाले. जेम मािकणीना हलमां पड्यो होय तेम केटलोक काल ते स्वी सार्थे तेणे निर्गमन कह्यो.

दवे सार्थवाद समुइमां पड्यो थको तेने कोइक पुख्यना उदयने लीधे देवयोगयी क्यांहीयी तणातुं आवतुं एक नांगेला वाहाणनुं पाटीयुं हाथ आव्युं. ते पाटीयाने अवलंबे नव प्राणी जेम धर्म पामे तेम समुइने क लोखे प्रेक्षो थको सिंहलिइीप प्रत्ये पाम्यो. त्यां स्वस्थ थइने विचारवा ला ग्यो जे निर्देशी स्त्रीने अर्थे में पापीयें स्वामिझोहादिक अणकरवा योग्य कार्य कखुं, तेहनुं आ स्वरूप थयुं. पण ते स्त्रीने ए अनुरूपज हे. कह्यं हे के:—वंचिक्तइ निअसामी, दिक्तइ जीयंपिकिक्तइजिस्सा ॥ कक्तेगस्अमकर्क्तं, हा इही सावि विह्रडेइ ॥ १ ॥ नावार्थः—जेनें अर्थे पोताना स्वामिने हेतरे, जेहने माटे जीव सरखो दीये, विल जेहने अर्थे मोटुं अकार्य करे, हा इति खेदे ? एवी पण ते स्त्री पोताना स्वामिने मूकी आपे तथा हणे ॥१॥ एवी स्त्रीने विषे हुं आसक्त थयो माटे मूह,अज्ञानी, कामांध एवा मुफने धिक्कार पडो. आकरा पापनो करनार पापी हुं माहरा पापथकी हवे केम हुटीज ? एवा नयथी उद्देग पामी चित्रमां वैराग्य उपन्यो तथी वैराग्य पामी सुजुरु पासे जइने चारित्र लेइ अनुक्रमें निरवय चारित्र पालतो हवो.

हवे देवयोगधी ते वहाण पण सिंहज़ ही पें आव्या. तिहां सुकंत पाता

लसुंदरीने लड़ने जिहां अनंगदेव ऋषी काउसगो रह्या हे ते वनमां क्रीडा करवा आव्यो. त्यां ऋषिने अकस्मात् देखीने शंका उपनी, तेथी ते सुकंठ विस्मय अने लझावंत थयो. पही पोतानुं चित्र प्रकाशी ते साधुने तेहनुं च रित्र पूठीने विरक्त चित्त थका ते सुकंठे सम्यक्षणो पोतानो अपराध खमा व्यो. उत्तमनो एज आचार हे. हवे ते अनंगदेव मुनिने सुकंठ मख्यो एवं जा णीने पातालसुंदरी ते सुकंठने पण मूकीने त्यांथी नाशी एक वहाणमां उता वली चिहने वहाण हंकारीने ते पापणी बीजे घीषे गइ. तिहां पण जाव जीव लझा मूकी स्वेष्ठाचारीपणे वेश्यापणुं करीने ते पापणी नरके गइ. घणा जव संसारमां रजलशें. हवे संपूर्ण वेराग्यनी उत्कंठा जेहने हे एवो सुकंठ पण चारित्र लेइ, तेने निरतिचार पणे पाली बन्ने जणां देवलोकें गया. ते वेहु जाइ थोडा कालमां मोक्ट पण पामशे.

ह्रवे जयवंतसेन राजा सार्थवाह्ने वोलावी मननी शंका टालवा माटें चू मिगृहमां गयो. त्यां पाताजसुंदरीने नहिं देखवाथी अत्यंत विपाद धरतो,मंत्री सामंत प्रमुखने तेडावीने कहेवा लाग्यों के ते सार्थवाह धूतारो अहह जूरे? मारी समक्त माहरी स्त्री हरी गयो,माटे कोइ एवो धीरवीर कोटायुधार हे, जे वेगे करीने ते अत्यंत माठा चरित्रना धणी बेहु पापीने इहां लावे,के जे थी हुं ते बन्नेने सना समक् शिक्ता आएं? ते सामंतादिक सर्व सांनलीने अ ए सदहता थका ते जोयरुं जोवा लाग्या, त्यां चोमेर जोवाथी एक सुरंग नजरे दीवी. ते देखी विस्मय अने विपाद तेएो करी दोलायमान मन थ का एम केहेता हवा के हे राजन ! ते स्त्रीने जाती वखते तमे पण केम ड लखी नहिं ? राजा कहे वे के तमे पड्या उपर पाटूं ग्रुं करवा मारो वो ? चांदा उपर खार ग्रुं मूको हो ? हमणा महारो वांक न काढो, पण शीघ पणे उपाय करी तेने पंकडी लावो. एम सर्वनी साथे वातो करतो राजा स मुइने कांवे जोवा आब्यो. ने कहेवा जाग्यों के वाहाण शीघपणे सक्त करो, त्यारे प्रवहण सक्क करवाने विषे निपुण एवा पुरुष कहे हे के ए कांइ वैद्यनी गोली नथी ? के कांइ गांधीनी पुडी नथी ? ए वहाण तो घणे काले सक थाय. तेमज ते वाहाण गयाने घणी वार थइ ते क्यां जइने लावीये ? अने वाहाण पण कोइ आंही सिलिक रह्यं नथी के तैयार करीने जाइयें. सर्वे वाहाणो सार्थवाहनी साथें गयां हे. राजा हृदयमां निराश यइ विचारे हे के हा हा जूर्र ? महाधूर्तपणायें ते पापीयें मुजने प्रत्यक्त हेतस्वो. जन्मय की नूमिगृहने विषे रही अति मुग्धा, माहरी उपर घणुं हेत राखती तेणे मुजने बेतरीनें एवं केम कखुं ? धिकार पड़ो स्त्रीचरित्रने ? एम ते राजा सं शय, विषाद, खेद, विस्मय, निर्वेद्य तडूप आपत्तिमां पड्यो वे एवे सम यें घणा राजायें तथा घणा देवतायें पूज्या एवा केवलि नगवान जेम वादलां थया विना अकस्मात् वरसाद आवे तेम त्यां अकस्मात् आव्याः ते देखीने राजा घणुं रीज्यो अने केविज जगवानने नमस्कार करीने पाताल सुंदरीनुं चरित्र पूछतो हवो. तेवारें ते केवलीनगवान तेनुं चारित्र कहेता ह्वा. कान दइ तेनुं सर्व वृत्तांत सांजली राजाना हृदयमां वैराग जरा णो तेवारें दीक् ा ज़ सातमे दिवसे केवज़ज़ान पामिने केटजो एक जाल केवजीपणे विचरीने मोक्ने गयो. तेमाटे हे राजन ! एवी पातालसुंदरी कू सती यइ तो वाणियानी स्त्री रखोपाचिनानी कूसती याय तेमां केहेवुं गुं? एह्वां चार मंत्रियोनां वचन सांचली राजा तत्वार्थेथी वेगलो यको चार प्रधानने कहे हे, ए सर्व प्रत्यक्त कपट हे एटला माटे कोइ पण प्रकारें ते नुं कुशीलपणुं जोइ ए कपट प्रगट करो. ते वात चारे प्रधाने पण कबूल करी केम के प्रपंचमां हे चतुर हे एवा ते चार प्रधान परस्वीमां लंपट हता अने वली तेर्रोने राजानी आङ्का थइ. एक तो मार्जार अने वली तेने उध जला व्युं होय तो केवी खुशी याय, ते प्रमाणे ते चारे खुशी यया. यका ते चारे जणा शीलवतीनुं शीलरूप जल शोपवाने अर्थे साद्यात वडवानल सरखा थइ, कांइक मिस करी घर तरफ पाता वव्या.

हवे ते चारे जणा उद्गट वेष धरीने शीलवतीनी पासे हूतीने मूखे का मीपणाना नाव प्रत्यें जणावी अने सार सार वस्तु मोकलावी विपयनी प्रार्थना करे. ते जाणीने शीलवती मनमां विचारवा लागी के धिक्कार पड़ो १ ए मूढोने के जे मारुं शील लेवाने तत्पर थया हे, अरे १ ते तु मितना धणीयो सिंहणनुं इध लेवानी पेरें मारुं शील लेंवाने इन्नेहे. कह्यं हे के:— किविणाण धणं नागाण, फणमणी केसरी सीहाणं॥ कुलबाली आण सी लं, कत्तो घिणंति अमुआणं॥ १॥ नावार्थः—रूपणनुं धन, नागनी फणनी मिण, सिंहना मस्तकनी केसरा, अने कुलवती स्त्रीनुं शील एटली वस्तु ज्यां सुधी तेर्र जीवतां होय त्यां सुधी कोइथी लइ शकाय नहि॥१॥

माहरा खामिना हाथमां कमल देखीने श्रद्धा न धरतो एवो राजानो कछो ए अनर्थ हे, निहंतर निःशंक हृदय थयानी पेरें ए आवा अकार्यने विषे केम सिंक थाय, तेमाटे एने कांइक चमत्कार देखाडुं. एवो विचार करी शील वती दूतीने कहे हे के हे सिख ! आवडो स्नेह क्यो ? वली सांजल, कहा हे के साधुने इव्यनी संगत करवी न घटे, उत्तमने मिदरानो संग करवो न घटे, तेम कुलवती स्त्रीने परपुरुषनो संग करवो घटे निह.

तो पण जेम चोपडेलानी लालचे एतुं अन्न खाइयें तेम जो मों माग्युं इव्य पामीयें तो परपुरुपनो संग पण करीयें. तेमाटें जो लाख सोनेया कबुल करे तो सुखे पांच रात्रि पढ़ी एक रात्रिना चारे पहोर चारे जणा महारी पासें आवे, एम कही दूतीने विदाय करी. दूतीयें जइने ते हकीक त ते चारे जणाने कही. हवे शीलवतीयें ठरडा मध्ये पल्यंक प्रमाणे एक मोटी उंमी खाड करावी. पांचमा दिवसनी रात्रे आत्माने कृतार्थ मानता लाख सोनेया लइने शीलवतीने घेर ते चारे जण अनुक्रमें चारे पोहोरे आव्या. हवे जे पेहेले पोहोरे आव्यो तेने शीलवतीयें घणो आदर दइ, ने खाड उपर पाटीया चला विनानो पलंग राख्यो हतो, तेनी उपर लुगड़ं ढांकी राखेलुं हतुं, ते उपर वेसवानुं कह्युं. तिहां जेटले ते पलंग उपर वे शवा गयो तेटले ते कामांध खाडमां जइ पड्यो. एम चारे पोहोरे चारे जणां खाडमां पड्या. जे अणघटतुं काम करे तेने तेवुंज करवुं जोइयें.

हवे ते चारे जणां खाडमां पड्या यका विचारवा लाग्या के, अहो ? एणियें सारु कखुं जे आपणां हाडकां न नांग्या ? ड्रिटोनां हाडकां नांगवा ज जोश्यें ? पण तेने दया उपनी. हवे ते प्रधानो तिहां कूप स्वरूपने विपे पोतानें कमें करी नारकीनी पेरें बंदीखानाना ड्रख नोगवतां, पोतानां वि पाक संनारतां, विविध प्रकारे हृदयमां फूरता रहे हे.

शीलवतीने पण दया उपजवाथी कोदरा प्रमुख निःस्वादवंत अन्नन्नं ए केकुं सरावलुं, अने एकेको पाणीनो करबडो दोरीयें बांधीने खाडमां मूके, ते खाइने ते चारे जणां पड्या रहे. एम बुद्धियें करीने वैद्यनी पेरें जेम वैद्य मोटो रोग टाले तेम तेउनो अंतरंग रोग महोटो हतो ते टालती हवी. एम करतां ब महिना गया, तेवारें ते जीवता पण मुवा सरिखा रह्या. माटे विषयनी तृष्णाने धिक्कार हो कह्यं बे केः—विषस्य विषयाणांच, दृश्य ते महदंतरं ॥ उपज्रकं विपंहंति, विपयः स्मरणादिष ॥ १ ॥ जावार्थः — विषमां अने विषयमां मोटुं अंतर माजुम पडे हे,केम के विष जे हे तेतो खाधायकी मरण नीपजावे हे पण विपय तो स्मरण यकी पण मारे हे ॥ १ ॥ चक्रे विषेण नीजल, मात्रं कंहे महेशितुः ॥ विषयेस्तु तदंगार्ध, हतेमेश महोमहः ॥ १ ॥ जावार्थः — विप जे हे तेणे महेशना कंहने विषे नीजा पणुं कखुं, अने विपयें तो शिवनुं अर्थोग हखुं ॥ १ ॥ हवे ते राजा समुक्ती पेरें शत्रुने जीतीने सार वस्तु ज्यं अजितसेन सहित पोता ने नगरे अख्यो. अजितसेन पोताने मंदिर आव्यो त्यारे शीजवतीयें पो तानुं चित्र तथा चार प्रधाननुं सहप सर्व जेम वन्युं हतुं तेम कही संज जाव्युं. अजितसेने पण पोतानुं हतांत कद्यं. जजी प्रीतिनुं एज जक्रण हे.

हवे राजायें पोताने मंदिर आव्या पढ़ी चार प्रभाननो शोध करतो पण क्यांइ पत्तो न लाग्यो. त्यारे हसिने अजितसेनने कहां के, तमे अमने ज मवाने पण निमंत्रणा करता नथी ते शुं? अजितसेने ते वात शीलवतीने कही तेथी तेणे कहां के हे स्वामि? सुखें राजाने जमवाने नोतरो,विपयना फल आ जवने विपे प्रधानो पाम्या हे ते देखाडुं. एवं सांजली अजितसेने स्वीना कहेवाथी राजाने जमवानी निमंत्रणा करी. तेथी राजा हार्पित थ यो के हवे ते चार प्रधाननी शुद्धि अजितसेनने त्यां पामीश, माटे तेने घेर केटलाक परिजननी साथे जइयें तो मारुं जवुं उचित कहेवाय. एम विचारीने राजायें चर पुरुपने अजितसेनने घेर जमवा माटे रसोइनी खबर काढवा मोकत्यो. ते जइ पाहो आवी उंचे खरे राजाने केहेतो हवो के हे स्वामिन! कशी पण रसोइनी सामग्री देखाती नथी, वीजुं तो रह्यं? परंतु धूम्र पण तेहना घरने विपे देखाता नथी. एवी वात सांजलीने राजा वि समय पामतो चितववा लाग्यों के, आ श्रं आश्चर्यं? जो हुं घणो परिवार साथे लइने जमवा जइश तो त्यां ए सुजने श्रं जमाडशे?

हवे मोटा तपस्वीनी पेरें जेहनां शरीरमां हाड ने चामडां मात्र रह्यां हे, एवा चार प्रधानने ते शीलवती कहेवा लागी के जो तमे मारुं कह्यं मानो तो हुं तमने बहार काढुं. अन्यथा करशो तो पाढा खाडामां नांखी दृश्य ? तेवारें बीहीना थका जेम शीलवतीयें कह्यं तेम ते चारे जणे अंगीकार क खुं. पढी कूपरूप बंधीखाणामांथी तेचने शीलवतीयें बाहार काढी नवरावीने

सघलाने अंगे रातुं चंदन चोपड्युं. अने ते चारेने यक्त सरखा दाढी, मूढ, कुसम पूजित यक् करीने घरमां राख्या अने कह्यं के जे मागीयें ते आप जो पण चक्कु मात्र जरा हलावशो नहि. जो तेम करशो तो हुं तमने पाठा खाडमां नाखी दइश. एम कही घर मध्ये ढानी विविध जातना पकान प्र मुख रसो इकरावीने घणा नक्द नोजन सक्ज करी ते सर्व यक्दोनापासें मूकी ने हर्षित थको अजितसेन राजाने तेडवा सारु गयो. राजा घणा परिवार संघाते अजितसेनने घेर आव्यो. तेवारें स्नानादिकनी सामग्री, पाणी, आ सन, नोजन, पक्कान, शाकादिक प्रमुख जे जे वस्तु जोइयें ते सर्व यक्त आ पे. राजा जमतो जमतो विचार करवा लाग्यो के उरडामां कोइक यक्त है ते आपे हे, पण अंधकारे कांइ खबर पडती नथी, तथापि प्रत्यक्त कल्पहरू सरखा ते यक् हे. माटे सर्व पुरुपने वांहितना आपनार एवा ए यक्तो माह रे घेर जोइयें ? केमके जो ते माहरा घरमां होय तो हुं वां ज्ञित सकल क दियें करीने कतार्थ थाउं. इत्यादिक ते यक्तने विषे एकांत चित्त एवो ते राजा चार प्रधाननी ग्रुद्धिनुं नाम पण वीसरी गयो अने जोजन पण ग्रू न्य मने करीने उठ्यो, एटले अजितसेने वस्त्र आनरणादिके करी घणो स त्कार कच्चो. त्यारे राजायें लङ्का ढोडीने दीननी पेरें घणा मनुहारे करी य हो माग्या. ते सांनजी अजितसेन पूर्वे स्त्रीना शीखव्या प्रमाणे कहेतो हवो के हे खामिन ! बीजो कोइ मागे तो न छापुं पण तमने खामिने ना केम कहेवाय ? तमे ज्यारे माग्या त्यारे हवे तो आपवाज जोइये अरे खामि! एमां ग्रुं विशेष हे ? बधुं घर पण तमारुंज हे. माटे तमे मंदिर पथारो, हुं हमणां ते यक्तोने तमारी पत्रवाडे मोकलुं हुं. केमके ते चार यक्तोनें चार पेटीयोमां घालिने तमोने हुं जेटणुं करीश. अने ते पेटीयो मोहोटे उत्सवे करीने सन्नामां ज्याडजो. एवा अजितसेननां वचन सांनलीने राजारीक पाम्यो थको पोताने मंदिर जातो ह्वो. तेटले अजितसेने पण ते चार य होने पेटीमां घालिने राजदरबारमां राजानी पाठल पेटीयो मोकली आपी.

हवे राजसनामां राजा हर्षथी जेटले पेटीयो चघाडे हे तेटले, ते पेटीयो मां चार प्रधान विकराल वैताल सिरखा देखीने, कांइक नय, कांइक विस्मय, वली प्रीतिथी, ते चारे अनिमिषनेत्रें राजाने जोइ रह्या अने ते चारेने देखी राजा पण अनिमिषनयणे जोइ रह्यो. चपलशरीर मनुष्यनी पेरें तेउने देखी ने, राजायें कृतूहर्से करी चल्लासवंत थइ तेर्रने बोलावीने कह्यं के,तमे कोण हो ? तेवारे ते शीलवतीना नयथी अने लक्काथी मौन रह्या. घणीवार जोइ रह्यायी राजायें तेमने उजख्या जे ए तो चारे महारा प्रधान हे, बीजा कोइ नथी. त्यारे विस्मय विपाद, लङ्का, अने प्रीतियें करीने राजायें ते चार प्रधा नने पूढ्युं, तेथी तेर्र लाजता थका पण सर्व वात यथार्थपणे जेम नीपनी तेम सर्व पूर्व वृत्तांतनी कही. जेम घेलो माणस धूड जडाडे ते पोताना म स्तकनी उपर पड़े तेम अमे शीलवतीने करवा गया तो तेवुं अमे थोडा काल मां पाम्या. ते चारे शीलवतीना शीलनी कला संबंधी प्रशंसा करता हवा. ते शीलवती सर्व लोकने प्रशंसवा योग्य थइ. एहवुं कोइ नथी के जे शीलव तीना शीलनी प्रशंसा न करे ? शरीरे करी शील पालबुं तेनां करतां धचने करी विद्युद्ध शील पालवुं ते इक्कर हो, अने तेथी मनेकरी शील पालवुं ते वली घणुज इकर हे. ए शीलवतीनां इष्कर चरित्र हे. दीक् पालवाधी जेम साधु परोक्कायें उत्तरे, अग्नियकी तपाव्युं जेम सुवर्ण तेजवंन थाय, तेम ते शीलवतीनो परीक्वायें करीने सनामां मोह्टो महिमा थयो. राजायें त या प्रधानें ते शीलवतीने खमार्वाः शीलवतीयें ते प्रधानोनुं लीघें छुं धन ने उने पाडुं ञ्चापी प्रतिबोधीने परदारा गमन करवाना नियम खेबराव्या. ञ्च हो जूर्र के सतीनो मार्ग केवो उत्तम हे ?

द्वे ग्रुनिकर्मना उदयथी त्यां दमघोप नामे मुनि श्राच्या ते सांनलीने श्र जितसेन स्वी सहित गुरुने वांदवा गयो. त्यां गुरुने वांदीने श्रजितसेन पाठ ला नव पूठतो ह्वो. तेवारे चार ज्ञानना धणी गुरु कहें हे, के पूर्वे पुष्पपुरनगर ने विषे पाप करवाने श्रालस एवो सुलसा नामे विषक रहेतो हतो, नली सुय शा नामे तेनी स्वी हती, तेहना घरने विषे हुगे श्रने हुगी नामे निहक परिणा म वाला स्वी श्रने नर्नार बेहु जण दास हता. एकदा ग्रुक्त पंचमीने दिवसे सुयशानीसाथे हुगी पण साधवीनीपासें उपाश्रये गइ. त्यां सघलाने कान, पूजा, करता देखीने हुगी जे हे ते साध्वी पत्यें पूछती ह्वी के श्राज कयी तिथी हे? साध्वीयें कह्यं ग्रुक्क पंचमी हे. तेवारे हुगीये पूछ्यं ग्रुक्क पंचमीनुं ग्रुं फल ? त्यारे साध्वी कहे हे. कह्यं हे के:—इह पुष्ठयाइ जे वह, गंधकुसुमच एहिं श्रच्वेति ॥ ढोश्रंति नाण पुरुन, नेवक्कं दीपविदेति ॥ १॥ सत्तीइकुणंती, तवं तेदुंति विसुद्ध बुद्धि संपन्न ॥ सोहग्गाइ ग्रुणहा, सब्रुपयंच पायंति ॥ १॥

नावार्थः-इहां पुस्तकने विंटाघणा वस्त्रादिकना करे अने सुगंध धूपादिक, पुष्पादिकना समुचयें करीने अर्चें एटले पूजे अने क्ञानना मुख आगल नैवेद्यने दीप प्रमुख थापे ॥ र ॥ शक्ति सहित तप करे, ते निर्मल बुद्धि वाला थाय. अने सौनाग्यादिक गुण सहित थका सर्वे इपद पण पामे ॥ १॥ एवं सांजलीने इर्गा पूछे हे के, हे जगवति ? जाग्यवंतने धर्मनो संयोग होय, पण अम सरखाने वली किहां यकी संयोग होय? तेवारें गुरुणी कहे के यथाशिक प्रमाणें दान करवुं, शिक्तने अनुसारें तप करवुं तथा शी ल पालवुं ते तो पोताने वश्य हे. जे परपुरुपनें त्यागीने निर्मल शील पा ले ? अने सघला पर्वदिवसोने विषे तो वली पोताना खामिनी साथें जोग करवानो पण त्याग करे,एवुं ब्रह्मचर्यव्रत पालवुं. एवा गुरुनां वचन सांजली नें डगीयें परपुरुषनो त्याग तथा पर्वदिवसनेविषे पोताना स्वामीने त्याग क रवानुं शीलवत अंगीकार करी समिकत उपार्जिने पोताने घेर आवी. जे सघली अपूर्व वस्तुनी प्राप्ति ते निश्चें प्रीतिने वेकाणे केहेवी जोइयें, एम धारीने डुगींयें पोताना धणीने धमेनी, शीलनी सर्व वात कही तेथी तेना स्वामियें पण निश्चयथकी शील पडिवज्युं. ते डुगें पण प्रशंसा करवा यो ग्य पोतानी स्त्रीना वचनधी सर्व स्त्रीनां जाव जीव सुधी पचस्काण कस्ना अने पर्वदिवसें तो पोतानी स्त्रीने सेववानुं पण पच्चकाण कखुं. एम स्त्री नी पेरें सर्वथा शील धरवुं तेनुं पच्चस्काण डुगें कखुं. ते नियमना आराधवा थी अनुक्रमें ते डुगे पण समिकत पाम्यो. जेम दीवाथकी दीवो करीयें तेम धर्मथकी धर्म थयो. जेमने स्वनावे अधिक धर्मनी रुची हे एवां डुगी अने इर्ग वेंद्र जए ज्ञान पांचमीना दिवसें ज्ञाननी पूजा करे, शील पाले. ए रीतें सम्यक् प्रकारें धर्म ञ्चाराधी मरण पामीने बन्ने जणां सोधर्म देवलोकें जइ उपना. त्यांथी चवीने डुगैनो जीव तमें अजितसेन थया अने डुगीनो जीव-ते ताहरी शीलवर्त। नामें स्त्री थइ. जे माटे पूर्वनवें ते ज्ञान आराध वाषी इहां मित्रज्ञान पामी अने पूर्वजवना अन्यासंघी शील पालवाने प ण दृढ थइ अने पूर्वें ए स्त्रीना वचनधी तुमे धर्म आराध्यो तेना प्रनावधी श्रा नवने विषे घणी लक्की, प्रतिष्ठा, बहु मान्यता प्रमुख तमे पाम्या. एम गुरुनां मुखयी पाढलो जब सांजलीने ते बन्ने स्त्री जरतारनें जाति स्मरण उपन्युं, तेथी कहेवा लाग्यां के हे नाथ! तमे जेटलुं कहुं तेटलुं अमें प्र

गटपणें दीतुं. तेवारें गुरु बोख्या के ए तो तमें देशथी शीयल पाल्युं तेहतुं ए फल पाम्या माटे हवे दीक्या लेइने सर्वथी ब्रह्मचर्यपणुं पालो. एवा गुरु रुना वचन सांजली ते स्त्री जरतार बेहु जणे दीक्या लीधी. ते शीलब्रतना प्रजावथी ते बेहु ब्रह्मनामा पाचमें देवलोकें गया. तिहांथी चवी मनुष्यनो जब पामी निर्मल शील पालीने मोके जज़े. एहवी शीलवतीनी कथा सांजलीने जे जब्यप्राणी शील पालज़े ते आ जवनेविषे सर्व संपदा जोगवीने परजवनेविषे सर्वा, अपवर्गना सुखनो जोक्ता थाज़े.

॥ इति चोथा अणुव्रतने विषे शीलवतीनी कथा समाप्तः ॥

॥ त्रय पंचम परीयह परिणामवत प्रारंनः ॥ ॥ इत्तो त्र्यणुवए पंच, मंमि त्र्यायरिय मणसर्ह्नमि ॥ परिमाण परिहेए, इत्वपमाय णसंगेणं॥ १५॥

अर्थः— (इत्तो के०) ए चोष्ठंत्रत कह्या पठी ह्वे एथी आगल पांचमा अणुत्रतने विषे अप्रशस्त परिणामें आचखुं होय जे इहां परियह परिमाण व्रतने विषे लोजना उदयथी प्रमादना प्रसंगें करीने दूपण लाग्युं होय इत्यादी. हवे परियहना वे जेद हो. एक बाह्य अने बीजुं अन्यंतर. तेमां बाह्य ते धन धान्यादिक नव प्रकारें जाणवुं अने अन्यंतर ते राग हेपादिक चौ द प्रकारें जाणवुं. तेमां इहां बाह्यनो अधिकार हे ॥ १७॥

हवे ए व्रतना पांच अतिचार आलोवे हे.

॥ धणधन्न खित्तवतु, रूप सुवसेय कुविय परिमाणे॥ इपए चजप्पयंमि, पडिक्रमे देसिच्यं सबं॥ १८॥

अर्थः - धन, धान्य, देत्र, वास्तु, रुपुं, सोतुं, कुप्य, ि्पद, चतुष्पदना परिमाणने विषे जे दोप लागो होय ते पडिक्कमुं डुं इत्यादि पूर्ववत्॥ १०॥

श्री जड्बादुस्वामी रुत दशवेकालिकनी निर्यूक्तिमां गृहस्यनें श्रेषें परि ग्रहना व नेद कह्या वे १ धान्य, २ रत्न, ३ थावर, ४ हिपद, ५ चतुष्पद श्राने ६ कुप्य ए व प्रकारतो सामान्ये कह्या श्राने विशेषथी एना नेद चो सव थाय. तेमां प्रथम धान्यना चोवीश नेद कहे वेः— १ जव, २ गहुं ३ शालि, ४ व्रीही, ५ शावीचोखा, ६ कोदरा, ९ युगंधरी, ० कांग, ए रा ल धाननीजाति, १० तिलं, ११ मुंग, १२ श्राडद, १३ श्रालसी, १४ च णा, १५ त्रिपुटक ए धान्य मालवामांहे थाय हे, १६ वाल, १७ मह, १० चोला, १० बरटी, २० मसूर, २१ तूयर, २२ कुलच, २३ मणची, २४ वटाणा, ए चोवीश धान्य प्रसिद्ध कह्यां हे.

हवे चोवीश जातिनां रत्न कहे हो. १ सोनुं, १ तरुनं, ३ त्रांबु, ४ रूपुं ५ लोहादिक, ६ सीसुं, ७ जात्यकांचन, ७ हीरानीजाति, पापाण, पारस, ए वज्जहीरा, १० मिणनीजाति, ११ मोती, ११ प्रवाला, १३ दक्षिणाव र्तशंख. १४ तिन्निसो ते कोइएक जातिनुं हक्ष्, १५ अगर, १६ चंदन, बा वनाचंदन, १७ रक्तचंदन अथवा वस्त्रनी जाति, १० चिर्णका उननावस्त्र नी जाति, १ए काष्टतेसाग, शीसम प्रमुख, १० सिंहादिकना चर्मनी जाति, ११ गजादिकना दंतनी जाति, ११ चमरी गाय प्रमुखना वालनी जाति, १३ गंधादिक वस्तु, १४ औषधीना इव्य ते पिंपर, पिंपरीमूल इत्यादिक जाणवा. ए रत्नना चोवीश चेद कह्या.

हवे यावर परीयह त्रण प्रकारनुं ने ते कहे ने. एक खेत्रनी नूमी,बीज़ं घर प्रासाद प्रमुख ते प्रसिद्ध ने अने त्रीज़ं नृक्तना समूह ते नानियरी प्रमु ख आरामवाडी प्रमुख ए त्रण प्रकार कह्या.

हवे ि्पद परीयह वे प्रकारनुं हे. तेमां एकतो चक्रने आरे बांधेला ए वा गामलां प्रमुख जाएावा अने बीजा मनुष्य ते दासदासी प्रमुख जाएावा.

हवे च उपद परीयह दश प्रकारनुं हे ते कहे हे. १ गाय, १ नेंस, ३ उंट, ४ वकरी, ५ गामर, ६ जात्यवंत वाब्दिकदेशना उपना घोडा, ९ अ जात्यवंत घोडा ते वेसर प्रमुख, ७ स्वदेशी घोडा, ए गईन, १० हाथी.

तथा कुप्य ते नाना प्रकारना कोसी कुटनो एकज चेद गणवो. ए सर्व व चेदना परियद्दसंबंधी उत्तरचेदजे कह्या तेने एकवा करियें तेवारें चोशव चेद थाय. ते नवविध परीयहमां श्रंतचूत थाय एटजा माटे इहां श्रितचा रने श्रनुक्रमें करी नवविध परीयहज देखाड्यो.

हवे धन धान्यातिचार तिहां धनना चार नेद कहे हे. एक गणिम, बीजो धिरम, त्रीजो मेय, चोथो पारिहोद. तेमां जे जायफलादिक गणीने वेचाय ते गणिम तथा कुकुम केसर गोल प्रमुख तोलीने वेचाय ते धिरम जाणवो, तथा घृतादिक लवणादिक मापें नरीने वेंचाय ते मेय जाणवो तथा वस्त्रा

दिक परीक्वायें वेचाय ते पारिष्ठेद जाणवो. ए प्रथम धन परीयह कह्यो. अने धान्यना चोवीश जेद प्रथम कह्या हे. वली सत्तर जातिना धान्य पण कहेवायहे अथवा धान्यना अनेक जेद हे, ते प्रथम श्रीप्रवचनसारोदार तथा बार व्रतनी टीपमां सविस्तर लखाइ गया हे.

इहां धन अने धान्य ए बेहुनुं मजीने एक अतिचार जाए नुं. कारण के धननुं तथा धान्यनुं परिमाण कखुं हो, ते उपरांत कालांतरादिके जेवारें व ध्युं, अधिक अयुं जाणे, तेवारें पूर्वें जेनी ऊपर लहेणुं होय ते याहकने कहे के हमणा हुं तहारे घेरज राखी मूक, जेवारें महारे खपशे तेवारें हुं तहा री पामेंथी जङ्ग. अथवा संचकार आपीने तेनेज घेर राखी मूके अने तेने कहे के आ महारो थको पड्यो हो, तुं बीजा कोइने आपीश नहीं, अथवा महोटा न्हाना कोठारादिक होय तो ते सर्वने महोटानी गणती करी राखे, ते धन धान्य प्रमाणातिकमहूप प्रथम अतिचार जाणवो.

वीजो खेत्र वास्तु प्रमाणातिक्रम श्रातचार, तिहां खेत्र त्रण प्रकारना हो. एक सेतु, बीजा केतु श्राने त्रीजा सेतु तथा केतु ए उनयात्मक जाणदा, तिहां श्ररहृष्टिकने जलें करीने जे धान्य नीपजे तेने सेतु कहियें श्राने वरसातना पाणीयें करी जे धान्य नीपजे तेने केतु कहियें तथा जे वरसा तना जलें श्राने वाव्यना जलें ए वेहु थी ज्यां धान्य नीपजे ते त्रीजो उनया तमक कहियें, एत्रण जेद कह्या. तथा बास्तु जे यह यामादिक तिहां घर ना त्रण जेद हो. एक खात, बीजुं उल्लित श्राने त्रीजं खातोल्लित. तेमां खा त ते जुंइरा प्रमुख श्राने उल्लित ते प्रामाद शिखरबद्ध. तथा खातोल्लित ते जुंइरानी उपरें प्रासादादिक करवा ते जाणवुं. ए खेत्र वास्तुनुं एक श्रथवा व इत्यादिक परिमाण कखुं होय श्राने तथी श्रधिक श्रानिज्ञापा थाय तेवारें पोतानुं खेत्र श्रथवा घरनी पासेनुं खेत्र श्रथवा घर वेचातुं लझ्ने पढी व्रतनं गना नयथी वाह तथा जींतादिकने त्रोडी पूर्वला घर श्रथवा खेत्रस्त्रथें ने ली बेहुनुं एक करी सूके ते खेत्रवास्तु प्रमाणातिक्रमरूप बीजो श्रितचार.

त्रीजो रुप्य तथा सुवर्णनुं पूर्वे प्रमाण कखुं हे तथी अधिक थतुं देखे तेवारें लोजने वशें स्त्री पुत्रादिकने आपे ते त्रीजो रुप्य सुवर्णातिक्रमरूप अतिचार.

चोथो कुप्य ते रुप्य अने सोनाविना शेप कांसुं, लोहोढुं, त्रांबुं, पीतल, सीसुं अने माटीनां वासण तथा वांसना, काष्ठना हल, गाडा, शस्त्र, मांचा, मांची, मसूरकादिक सर्व घर वखरीना उपकरण तेना स्थाल कचोलादिक नी संख्यानुं परिमाण कखुं होय पठी जेवारें तेथकी अधिक राखवानी अ निलाषा थाय तेवारे पूर्वकत परिमाणनी संख्या कायम राखवा माटें न्हा ना स्थाल कचोलादिक जे होय तेने जाडा स्थूल करावे, ते कुप्यप्रमाणाति कमरूप चोथो अतिचार जाणवो.

पांचमो हिपद ते स्त्री, दास, दासी प्रमुख मनुष्य तथा हंस, मोर,कुर्कु ट, सूडा, सारिका, मेना,चकोर, पारेवा,प्रमुख पट्टी जाणवा. अने चतुष्प द ते गाय महीषी आदिक पूर्वें दश जेद कह्या हे ते जाणवा. तेमां कोइ गाय प्रमुख गर्नवाली होय तेवारें एवं विचारे जे ए गर्न तो बाहिर जोवा मां नथी आवतो माटे तेने गणनामां गणे नहीं, इत्यादिक दिपद चतुष्पद प्रमाणातिक्रमरूप पांचमो अतिचार जाणवो.

अथवा धन धान्यादिक, खेत्र वस्तु आदिकना चार मासना नियम क खा होय अने आगलानी साथें निश्चय करे के महारो नियम पूरण थरो तेवारें आ वस्तु हुं तहारी पासेंथी लक्ष्य, तिहांसुधी तुं बीजा कोइने आ पीश नहीं एम कहेवाथी थापणरूप अतिचार जाणवो ॥ ५॥ शेप सुगम

विवेकी प्राणीयें धन धान्यादिक नवविध परीय्रह जे पोतानी पामें होय तेनो पण संद्वेपीने अवश्य परिमाण करवो. ते करवानी जो अशक्ति होय तो पण जेटली पोतानी इज्ञा होय तेटलो इञ्जापरिमाण तो निश्रयें क रवोज. जेमाटे पोताना अनिप्राय प्रमाणे अंगिकार करवुं सर्वने ग्रुलंज हे.

इहां शिष्य पूर्व वे के घरमां तो शो सोनैयानो पण संदेह होय अने जेवा रे परियह परिमाण लीये तेवारें हजारो लाखो अने कोडो आदिकनो प रिमाण करी लीये एवी रीते इज्ञानी वृद्धि करे तेमां स्यो गुण याय?

इहां ग्रह उत्तर कहे हे के, इज्ञानी वृद्धि तो सर्वकाल सर्व संसारी जीवो ने प्रथम पण हे ते कांइ पूरी पडती नथी. नेमीराजक्रपीनी पेरें ॥ यतः ॥ सवन्न रूपस्सय पुवया नवे, सिया हु केइलास समा असंखया ॥ नरस्स जुद्धस्स नितिहें किंचि, इज्ञा हु आगास समा अणंतया ॥१॥ नावार्थः— जीवें पूर्वें केलास सरखा सोनाना अने रूपाना असंख्याता पर्वत कथा पण जुद्धनरने ते किंचित्मात्र इज्ञा पूरण माटेन थया. इज्ञा जे मननी दोड ते आकाश सरखी अनंती जाणवी ॥१॥ पण इहां परिमाणने विषे एटज्ञं वि

रोष हे के बीजानें इन्नानी हिन्नो विस्तार हणाणो नथी अने इन्नापरिमा ण करनारने तो अंगिकार करेलां परिमाण सुधीज इन्ना रहे परंतु तेथी उ परांत इन्ना वधे नहीं तेमाटे तेथकी अधिक इन्ना तो निषेध थइ. इन्नानी हिन्न हणवाने परिमाण करे तेवारे परिणामें संतोपज थयो.

जेम जेम इज्ञानुं अधिकाधिकपणुं थाय तेम तेम तेने इःखनी वृद्धि जा णवी. इःखनुं मूल ते इन्ना हे. जो सुखें घरनो निर्वाह यतो होय तो पण अधिक अधिक धन उपार्क्कवानी आशायें ते प्राणी अनेक क्षेश सहन क रतो निरंतर इःख जोगवतो मरीने इगैतियें जाय ॥ यतः ॥ यङ्गीमटवी मटंति विकटं क्रामंतिदेशांतरं, गाहंते गहनं समुइमतन् क्वेशां कृषीं कुर्वते ॥ सेवंते रूपणं पतिंगजगटा संघट इसंचरं,सपैति प्रधनं धनांधितिधय स्तद्धो न विस्फुर्जितम् ॥ १ ॥ नीचस्यापिचिरं चटुनिरचयं त्यायांतिनीचैर्नत, श त्रोरप्य गुणात्मनोपिवदधत्त्युचेर्गुणोत्कोर्त्तनं ॥ निवेदं निवदंतिकिंचिदकत इस्यापि सेवारुते, कप्टांकेंनमनस्वीनोपिमनुजाः कुर्वति विचार्थिनः ॥ १ ॥ नावार्थः-ने धननो अर्थी होय ते विपम अटवीमांहे फरे हे, विकटदेशांत र प्रत्यें अतिक्रमें हे, महोटा समुइने अवगाहे हे, जेमां घणुं कप्ट हे ए बी रुपी करे हे, रुपण स्वामीनी सेवा करे है, जिहां गजनी घटाने संघटे, इःखे संचार थाय एवो स्वामी हे ? श्रंधबुद्धि हे जेहनी एवा पुरुप धनने अर्थे फरे हे, ते लोजनो पराक्रम जाएवो ॥१॥ नीच पुरुपनी आगल पए। घणा कालसुधी नम्रतायें करी मीठां वचन बोले तथा नीचो वलीने नीचने नमस्कार करे, शत्रुना पण अतिशय गुण वखाणे, जे कप्टने नीपजावे पण कस्बो ग्रण न जाणे तेनी सेवा करे, तेमाटे मनस्वी जे निपुण मनुष्य इ व्यना अर्थी होय ते ग्रंन करे ? अर्थात् सर्व कांइ करेज ॥ २ ॥

कदाचित् पुण्यने योगे इन्नित धननी प्राप्ति थइ तो वली तेने साचवी राखवानी चिंता थाय. कामजोगादिकनी आशायें मनोवांदित स्त्रीनो संयो ग मलवानी चिंता रहे, तेनी पण प्राप्ति थाय तो वली सिद्धराज जयसिंघ नी पेरें पुत्रादिक अपत्यनी वांद्वायें इःखित थको रहे. ते पुत्रादिकनी प्राप्ति थया पढी वली ते पुत्रादिकना जीववानी चिंता रहे, कदाचित् जीवता र ह्या तो रोगादिकना ओषध वैद्यादिकनी चिंता रहे, एम करतां महोटा था य तेवारें जणाववानी चिंता, जला गुणवान पणानी प्रतिष्ठा पमाडवानी चिंता रहे पढ़ी जली रुडाकुलनी कन्या परणाववानी चिंता रहे.

एम करतां कदाचित पूर्वजन्मना सुरुतें करी सर्व वांग्नित संयोगनुं सु ख पामे तो वली ते पामेला सुखनी चिंता रहे, के रखेने ए पामेली वस्तु नो महारे वियोग थाय? कदापि ते वियोग पण न थाय तेवारे वली ए वी चिंता थाय के रखे महारा शरीरे रोगाहि पीडा उपजे? रखे मुजने जरा अवस्था आवे? रखे हुं मरण पामुं? एवी आश्यायें पीड्या थका परीयह वंत मनुष्य ते सदाकाल इःखीया जाणवा. जेमाटे सुखनिर्वाहने विषे पण सुख न जाणवुं. जे घणोज परीयह पाम्यो होय एवा धनवंत पुरुषने पण पोताने वापरवामां तो थोडोज परीयह उपयोगी थाय हे. शेष थाकतो परि यहतो परने जोगमां आवे, तथापि निःकेवल तेवा परीयहनी चिंतादिकें करी शहनवे अने परनवे इःखनोज हेतु हे.

जो शो गायो घरमां होय तोपण एकज गायनुं दूध नोगमां आवे तथा जो शो मुडा धान्य घरमां पड्युं होय तोपण जीवने नोगमांहे तो सेर अ यवा मोढ सेर आवे हे, तथा गमे एटलुं घर रहेवाने महोटुं होय तो पण मांचो ढालीयें एटलुंज नोग्यमां आवे हे, अनेक वस्त्र घरमां होय तोपण पहेरवा माटे वे वस्त्रज नोगमां आवे हे. तेमज स्त्री पण प्रतिदि न एकज नोगमां आवे हे, एक दिवसमां वधारे नोगवाय नहीं. तेमज श य्या, आसन,हाथी, घोडा,रथ इत्यादि सर्व चीजो एकेकी नोगमां आवे हे, ते उपरांतनां बीजाने अर्थें जाणवां. एटला माटे अल्पपरीयह राखे थके ज सक्ष्यचिंता रहे अने निर्नयपणुं पण थाय. इत्यादिक गुणनी हिद्ध जा णवी ॥ यतः ॥ जहजह अप्पलोहो, जहजह अप्पोपरिग्गहारंनो ॥ तह तह सुह पबढ़क, धम्मस्सय होइ संसिद्धि ॥ १ ॥ नावार्थः—जेम जेम थो डो लोन होय, जेम जेम थोडो परीयह आरंन होय, तेम तेम सुख प्रव र्दमान थाय अने धर्मनी पण नली सिद्धता थाय ॥ १ ॥

ते कारण माटे मननी इज्ञा रुंधीने संतोष पोपवाने ऋर्थें यत्न करवा. सु खतुं मूल ते संतोष हे. कह्यं हे के ॥ यतः ॥ ऋरोग सारिश्रं माणु, सत्त णं सच्चसारित्र धम्मो ॥ विद्या निज्ञय सारा, सुहाइ संतोस साराई ॥ १ ॥ नावार्थः—मनुष्यपणानुं सार ते निरोगतापणुं हे अने सत्यनुं सार ते धमे हे, तथा विद्या जे हे ते निश्रलपणे सार हे अने सुख जे हे ते संतोषें सार हे ॥ १ ॥ तेथी जिहां तिहां जेम तेम करीने संतोषनी साथें तहारुं चित्त बां धीश तो इःखनुं नाजन यश्य नहीं. माटे संतोषरूप पाल बांधी करीने लोजरूप जे महोटो समुझ तेना चहलता कलोलना विस्तारने वारीने ए व त अंगिकार करी रूडीरीतें पालनुं. निरंतर वली संनारनुं, अवसर पामीने वली ते वतनुं संदेप करनुं इत्यादिक रीतें अंगिकार कखुं जे परीयह परिमा एवत तथकी जेवारें धन धान्यादिक संपदा वधे तेवारें आवकें गुं करनुं ? ते कहे हे. अंगीकार करवाथी उपरांत धनादिक थाय तो ते सर्व धर्मस्था नकें खरचवो पण व्यापारने विपे तथा नोगादिकने अर्थें जोडवो नहीं. एम करवाथी कांइ दोप नथी अने एथी वतने थोडुं पण अतिचार लागे नहीं. दान प्रमुख सुकृतने आराधवाथी चंचल एवी जे लक्षी तेनुं नियंत्रण कखुं होय तो ते लक्षी स्थिर रहे, जाय नहीं. जेमाटे पूर्व पुष्यना वैनवना व यथकी बांधी एवी जे संपदा ते विचारीयें तो आपदाज हे.

हवे ए व्रतनुं फल कहे के:— इह नवेतो शंतोष, सुख, लक्का स्थिर रहे, लोकमांहे प्रशंसा वधे, अने परनवने विषे मनुष्यनी संपदा, देवतानी क्र दि, यावत् मोक्तना सुखनो नोक्ता थाय. तथा जे प्राणी अतिलोने करीने ए व्रत नथी लेता अथवा लड़ने विराधे के तो ते प्राणी दारीड़ी, दास, ड नांगी, ड्रगत्यादिकनां डि:ख पामे के. ए आढारमी गाथानो अर्थ थयो ॥ १ ०॥ हवे ए पांचमां अणुव्रत उपर धनशेवनी कथा कहे के.

अत्यंत स्वर्णनी क्रियं करी आश्चर्यकारी एवं कंचनपुर नामे नगर हे, तेमां प्रकृति स्वनावे घणो सुंदर एवो सुंदर नामे शेव वशे हे, तेहने सुंदरी नामे स्वी हे, सक्जन लोकनें आनंदकारी लक्कीवंत एवो धनशेवनामे तेनो पुत्र हे, तेने धनशीनामे स्वी हे, तेने वली धनसार आदि पुत्रो हे. एकदा सुंदरशेव परलोक प्राप्त थया तेवारें जेम गुर्वादिक हतें शिष्य निश्चिंत रहे, तथा जेम शेव हतें वाणोतर निश्चिंत रहे,वली जेम बाप हतें पुत्र निश्चिंत रहे,तथा सासु हतें वहु निश्चिंत रहे, तेम ज्यांसुधी सुंदरशेव जीवता हता त्यांसुधी तो धनशेव निश्चिंत रहेतो हतो पण सुंदरशेव मरण पाम्या पही घरनी तेमज धन चपार्जवानी सर्व चिंता धनशेवने चपनी.

एकदा धनज्ञेते पोतानीपासें धन केंटचुं ते तेनो मेल काढ्यो तो सरवा से नवाणुं लाख टका थया. तेमां पंचावन लाख तो पूर्वला वहेराचेना चपा र्जेल हे अने चुमालिश लाख पोताना बापना चपार्जेल हे तेवारें धनहोहें म नमां विचाखुंके जो एक लाखटका वधेतो महारा घरने विषे कोटीनी ध्वजा बांधु. तेमाटे एकलाख टकाने अर्थे ते शेव अनेक प्रकारना व्यापार विस्ता र पणें करतो हवो. एम एकवर्ष पर्यंत कखुं, वली खेखुं करीने जोयुं तो तेटलाज नवाणु लाख टका थया, तेवारे विचारवा लाग्यो जे महारे खर च घणुं हे, तेथी करी धन कांइ वध्युं निह. एम धारीने खरच डेंडुं करवा माटे निर्दय पणे रुपणनी पेरें रेहेतो थको जूना वस्त्र पेहेरे, सोंघुं धान वापरे. एम कुटुंबसहित घणा कालसूधी दारीडीनी पेरें रह्यो तोपण धन वध्युं निह. त्यारें वली विचारवा लाग्यों जे वाणोत्तर प्रमुख बधुं इव्य खाइ जाय हे, माटे तेने सर्वेने रजा आपी, अने पोते अतिशय ज्यमथी व्यापा र करवासारु घणा करियाणां जेइने दूर देशांतर गयो. चित्तमां जाख सोनइ या जपार्जवानो अनिलाषी थको दूरयकी पण दूर एवां देशांतरने विषे ज इ उद्यम करवाथी घणुं इव्य उपाज्युं, तेथी संतोष पामी पानो पोताने घे र आब्यो, एटले सांनव्युं जे चोरोये धाड पाडी घरमांथी सघदुं धन जूंटी लीधुं. ते सांचली घणुं खेद धरतो कुटुंबना माणस जे पोताना स्त्री पुत्रा दिक ते सर्वनी साथें वढतां सर्व कुटुंबने ते अनिष्ट थयो. अति लोनियो होय ते ग्रुं इःख न पामे ? कह्यं वे कें- अतिलोनो न कर्तव्यो,लोननैव प रित्यजेत् ॥ अतिलोनानिनृतस्य, चक्रं चामित मस्तके ॥१॥ नावार्थः-अतिलोन नकरवो,तेम लोनने ढांमवो पण नहि,अति लोने जे परानव्या हे, तेने माथे चक्र नमे हे ॥ वली ज्ञेतें लेखुं कखुं तो पण नवाणुं लाखज थया. कारणके धन है तेपण जाग्यने वस है. तेथी ते इर्बु ६ ज्ञें विचार कस्रो जे बधा इव्यने नूमिमां दादुं के जेथी चोरादिकना हाथमां को इवखत न जाय. एवं विचारी ते शेवे मध्य रात्रिने समये नगरनी बहार जइने पोतानां स्त्री पुत्रादिक पण जाणे निह तेम यत्नथी सारसारवस्तुने धरतीमां दाटीने पूर्वेली पेरें लिक्स उपार्जवाने पाठो जातो हवो. पाठलथी ते ज्ञेठें नोयमां याप्युं जे धन ते कोइक धूर्नें जाएयुं तेथी ते ज़ेव गया पढ़ी तेएो धरती खो दीने खंदरथी धन काढी लीधुं खने त्यां ते धूर्त्ते कांकरा नरी मूक्या.

हवे ते ज्ञेत परदेश जश्वणी वस्तू चे लश्वणा हर्षसहित घणुं धन जपा र्जिने घेर आव्यो. अने रात्रिने समयें ज्यां नूमिमां इव्य दाट्युं हतुं तिहां आवी खोदीने जोवा लाग्यो तो त्यां कांकरा देखीने विलखो थयो. पढी जे करियाणां जाव्यो इतो ते सर्व वेचीने हीसाब गएयो तो फरीपण नवा एं जाख टका थया, कांइ वधारे थयां नहिं. जेम घणो वरसाद वरसे तो पण पलास खाखरानां पत्र त्रणज रहे वधे नहिं एवीस्थित हे, तेम एने पण नवाणु जाख टकाज थाय वधारे थाय नहिं. वली एकदा प्रस्तावे घर ना सघलां माणसोनो ऋणविश्वास करतोथको सघलुं इव्य साथे लइने प रदेश गयो. त्यां जइ वांबित धन चपार्जतो हवो. पढी हार्षित घइने पोता नुं कतार्थपणुं मानतो मोहटा सथवारायें सार्थवाहनी लीलायें करी पा वो वजतो थको पोताना देश तरफ आवतो हतो त्यां मार्गमां सर्व साथने चोर खूटवा लाग्या. तेथी जेम आहेडीना हाथमांथी मृगली नाशि जाय तेम ते ज्ञेत घणे कष्टें चोरोनी नजर चुकावी देवयोगथी शून्य अटवीमां नाशिगयो. त्यां जमतो जमतो पोतानी पासे जे जात्यवंत रत्न है तेने यत्नथी राखीने पोताने घेर आब्यो. तिहां सर्व रत्न तथा बीजी वस्तू रे वेची पात्रो मेल काढ्यो, तोपण तेटलुंज इव्य थयुं,त्यारे तेने हर्ष अने शोच थयो. एम ने ज़ेवें लोने परानव्यो कोटीधन पूरण करवानी इज्ञायें अनेक व्यापार कथा तोपण कोड पूरा न थया तेमज तेनो उद्देग पण न टब्यो. कवि कहे ने अहो ? तृष्णारूप मोटो यहते जूर्र कहेवो ने ? एकदा ते शेव विचार वा लाग्योके जो हुं वेकाएं फेरवुं तो मारुं नाग्य फले, अने महारुं धाखुं था य. एवं विचारी सर्वे इव्य लइने समुइ यात्रायें वाहाणना अधिकारीनी पे रें घणां वाहणो हंकारीने रत्न घीपे आव्यो. त्यां अनेक जातनां घणा व्या पार करतां कोडी धन उपार्ज्यु. मननो जाए अने पोताना अग्रज कर्म थ की नयनीत एहवों ते ज्ञेव विचारवा लाग्यों जे में पूर्वे पाप उपाज्यों हे, ते पापना उदयथी कदापि वाहाण जांगजो तो समूलगुं सर्वधन जाजो अने कां रहेशे नहिं,माटे महारी जंघा चीरीने तेमां कोडीमूख्यनुं एक रत्न घालुं तो गमेतेवी आपदायें पण हुं जीवतां सुधी ते रत्नकायम रहेशे पढ़ी हुं ज्यारे घेर जर्ने ते रत्न काढी वेचीश त्यारे कोटीध्वज थइश ?

एवं विचारी पोतानी जंघा चीरीने ते होतें कोडी मूल्यनुं रत्न जंघामध्ये

घाली व्रणसंरोहणी श्रोषधियें घा रुजवी वाहाणमां बेवो. नरदियें वाहाण श्राव्या एवामां तोफान थयुं, तेथी जेम मुष्टियें पापड नांगीयें तेम सर्व वाहाण नांगी चकचूर थया. हवे तृष्णांनी विडंबनाज जाणीयें हाथ श्रावी होयनी तेम एक पाटीयुं ते शेवने हाथ श्राव्युं, तेना श्राधारथी ते शेव अनेक पीडा सहतो दस दिवसे कांवे आवी मूर्जित थयो थको पड्यो, ते जाणियें मृतक होय नहिं शुं ? एदो थइ गयो. पण आयुष्य दृढ बे तेथी करी मूर्च निहं ॥ १ ॥ अने पोतानी मेले ज्ञेवनी मूर्जा वली. हवे मननी अने शरीरनी महोटी पीडा जोगवतो ते मंदबुद्धिनो धणी एवो शेव निव्वनी पेरें अरएयमां नमवा लाग्यो. पण ते रत्नने विषे जीव लाग्यो हे ते थी रांकनी पेरें जीका मागी गामो गाम फरतो घणां कष्ट सहेतो पोताना न गरना उद्यानमां आव्यो. तिहां तेना पुत्रने खबर पडवाषी स्नेहथी सामो जइ घेर तेडी लाव्यो. ते ज्ञेव इव्यना नाशनुं इःख अने जंघामध्ये रह्यं जे रत्न तेनो हर्ष एम शोक हर्षे मिश्रितपणाने विषे रह्यो थको गोपवेला रत्नथकी कोटी ध्वज थवानी इज्ञायें शस्त्रें वेदी जंघामांथी रत्न काढीने परीक्तकोने देखाड्युं. तेवारे ते सघला परीक्तको जाएीयें ते ज्ञेवनां कर्मथी प्रेखा थकाज बोजता होय निह ? तेवीरीते तेर्र बोख्या के ए रत्ननी कि म्मत नवाणुं लाख हे,पण अधिक नथी. केम के ते रत्न असल तो एक कोटी मूत्यनुं हे परंतु जंघानी उष्णतामां रह्यं तेना योगथी तेजें करी हीन थइ ग युं वे माटे एनु मूख्य उबुं थयुं. एवुं सांजली कोटीनी आशायें रहित थयो थको ते ज्ञेव घणो खेद धरतो विचारतो हवो जे धिक हो? एटलुं मोटुं मर णांत कष्ट सह्युं तो पण कोटी धन न थयुं. जे माटे में मोटो व्यापार करी घणी हिंसा करी, पण सामो अनर्थेज थयो, अने कोइ कार्यनी सिद्धि थइ नहिं, माटे ह्वे कोइक बीजो जपाय चिंतवुं. घणीवार सुधी एवी चिंतायें व्याकुल रहेला. एवा शेवने जोइने एकदा एक धातुरवादी धूर्न आवीने शेवने कहेवा साम्यों के, तुं फोकट चिंता ग्रुं करे हे ? व्यर्थ खेद ग्रुं धरे हे ? हे ज़ेत ! धा तुरवादना प्रसादयी हुं तुजने वांश्वित करीश ? तेवारें जेम नव्य जीव केव जीनुं वचन सत्य करी माने तेम ते शेव ते धूर्चनां वचन सत्य करी मानतो थको ते धूर्तना कह्याथकी सर्व धातूनी सामयी प्रत्यें एकाय चित्त थइने ते करतो ह्वो. तेवारें ते धूर्च केटलुंक कारिमुं सूवर्ण कपटे करी निपजावीने

ते शेवने आपतो हवो. हवे ते सूवर्ण साचुं वे के नहिं तेनी परिका सार शेवे चार जणने बताव्युं तेणे साचुं कह्यं तेथी ते शेव हृदयमां संतोष पामीने साची वात मानतों हवो. ते शेवने जाणे पोतानोज जाणिने ते धूर्च घणुं क त्रिम सूवर्ण करतो ह्यो. ते जाणियें मोटा पाषाणनाज कटका होय नहि ? एवा कटका करीने देखाडे,तेने ज्ञेठ खुशि थतो निरंतर चूमिग्रहने विषे ग्रप्त पणें थापे. अहो ! कोइक इव्य कमावानो उपाय कायानें कष्ट आप्या विना पण याय है, एम हर्ष पामतो थको ते शेव ते धूर्तनी मोटी निक करतो ह्यो. जगतमां परने छपकार करवो तेज सार है, बीजुं कांइ सार नथी, एवं निस्प्रहीपणानुं मोल घालतो ते दंनी, कपटी पण शेवने विश्वास पमा डतो ह्वो. कह्यं वे के:-व्रतदंनः श्रुतदंनः, स्नातकदंनः समाधिदंनश्र ॥ निः स्प्रहद्नस्यतुलां, व्रजंतिनतेशताशतः ॥ १ ॥ नावार्थः-व्रतनो दंन, ङ्गाननुं दंन, स्नातकनो दंन, समाधिनो दंन, एटला दंन हे,पण निस्प्रह्ना दंननी ञ्चागल ते दंज तेना शोमां जाग प्रमाएो पए। ञावे नहि ॥१॥ए रीते वि श्वास पमाडीने एकदा घर मध्ये सार सार जे रत्नादिक वस्तु हती ते खेइने ते इप्रबुद्धिनो थए। धूर्त नाशी गयो. शेवने खबर पडी जे ते धूर्त नागी गयो तेथी कप्रपामतो शंकायें आकुलव्याकुल थइ ते सोनाना कटका सर्व जोवा लाग्यो तो ते सर्व त्रांवाना दीवा. तेवारें खुट्यो रे खुट्यो ? एम मुखयी पोका र करतो,घणा लोक चेलां करतो,मस्तक तथा हृदय कूटवा लाग्यो,तेथी ते ज्ञेव उपरें नगरना लोको हसवा लाग्यां अने मूख्य जे नवाणु लाख रुदि ह ती ते पण घणे लाखें न्यून ययेली जोइने ते शेंठ घणो इःखी ययो. दैवयो गें एकदा ते ज्ञेव नदीतटे गयो त्यां महोटुं निधान पाम्यो,तेथी घणो प्रीति वंत थयो. पढी त ढानुं पोताने मंदिर लावीने घरना धन साथें ते धन एकतुं करी मेल काढ्यों तो नवाएं लाख थया. तेवारें लोनी ज्ञेंव हर्ष पामतो वि चारतो हवो के जो एक जाख मखे तो कोटी याय तेवारें आत्माने कता र्घ करी मानुं माटे तेनो कांइ जपाय खोलवो जोइयें. एवं विचारी ते ज्ञेव निधानना कल्पना जाए। प्रत्यें पूछतो हवो, अने तेनी घए। जिक्त करवा लाग्यो तेथी ते कल्पना धणी कहेता हवा के जाग्यवंतने तो पगले पगले निधान हे. कह्यं हे के: अमंत्रमक्रंनािस्त,नािसमूलमने।पधं॥ निर्धना पद वी नास्ति, त्याम्रायाः खजुङर्जनाः ॥१॥ नावार्थः-मंत्रविना अक्रर नथी, श्रोषध विना मूल नथी,धन विना पद्वी नथी,पण श्राम्नायो पामक निश्चें इर्जन है ॥ १ ॥ ते माटें विशेषें करी ते इव्यना हेकाणानुं कोइक निशान शोधीयें. कोइक प्रस्तावे श्रश्व तथा गर्दन चारे पगें करी साहमा उना रहे ते इव्यनी निशानी जाणवी. वली ज्यां घणा पंखिना पगलां होय श्रथ वा श्रादित्यवारें खंजरीट, दीवाली, घोडो, जिहां चरक करे, ज्यां हाणमांहे एरंमबीजनो श्रंकूर निकले, ते हेकाणे पण धन होय. जिहां खंजरीटतुं मेथुन देखाय ते स्थानकें पण निधान होय. पुश्राहनो श्रंकुरज्यां पल पलमां पाधरो वधे,तिहां पण धन होय,थेत पलाश तथा थेत बीलीने हेकाणें हक ना पलोइश्रां पातलां होय तो तिहां थोडुं धन होय, श्रने जाडां होय तो धन घणुं होय,जेवुं ते हक्तुं दूध तेहने श्रनुसारें तेवो निधान सार होय.

एवं सांचली निधान मलवाने माटे ते ज्ञेव पूर्वे कहेला वृद्घादि खोलतो ह वो. एकदा खोल करतां क्यांएक धोला पलाशने देखीने शीघपणे हर्षित श्रयो थको ते ज्ञेव बिल बाकूलना विधिनो मंत्रोज्ञार करतो हवो. उनमो धरऐंड्रा य, जैनमो धनदाय, इत्यादिक मंत्र निशीने प्रथम धरती खोदतो हवो. त्यां जाणियें जाग्यना चदयथी निकव्युं होय निहं ? तेम त्यां मोटुं निधान प्रग ट ययुं. कोटिध्वज यवानी इज्ञायें शीघ्रपणे हर्ष धरतो ते निधान रथमां गोपवीने जेटले घर समीपे आब्यो तेटले पोताना घरने आग लागेली देखतो ह्यो. ते जोतां जोतामां योडीवारमांज समय घर बिल नस्म ययुं. तेवारें ते ज्ञेवने मूर्जा आवी. मूर्जा उत्ाा पढ़ी ते मंदबुदिनो धणी आकंद करवा लाग्यों के, हाइति खेदे ! हे देव ! में ताहरों कोई पण अपराध कस्रों नथी तो पण तुं इप्ट शोक्यनी पेरें खार करतो फोकट द्युं करवा मुफने इःख दीये हे ? एम घणीवार विलाप करी निशासा मूकी पापीनी पेरें उद्देगवंत थइ कप्टमांहे निमय हे हृदय जेहनुं एहवो जे शेंह तेणे अनुक्रमे निधानमां थी छावेजुं तथा घर बलतामांथी जे धन रह्यं हतुं ते सर्व घरमां जेजुं करीने मेल काढ्यो तो फरीपण नवाणुं लाखटकाज थया. ते देखीने ज्ञेव विस्मय, आनंद, खेद अने उद्देगे करी विचार करवा लाग्यों के निष्कारण कायक्केश इस्तह घणो में सह्यो, पण नाग्यहीनने कोटिध्वजनो मनोरथ केम सिक् थाय ? कह्यं हे के वननुं फूल, रूपणनी लक्की, कूपनी हाया, सलंगनी धू ल, ते तिहांज विलय पामे. तेम नाग्यहीनना मनोरय पण एमज विलय पा

मी जाय. इत्यादिक चिंता मनमां धरतो ते ज्ञोठ थाकानी पेरें अधीर थड्ने बेठो.

वली केटलेक काले एक कोटिध्वजने जोई एक लखेसरी उठी उनो खयो, तेने आसन बेसणादिक आपी तेनुं बहु मान कखुं ते देखीने ते धन होठने कोटिध्वज यवानी फरीथी इन्नायइ. एवामां एक योगीने देखीने ते ने पोपीने घणी जिस्त करीने पूछतो हवो के,हे दक्ष! हे निपूण! हुं आगल कोटिध्वज थड़श के निहं थाउं? ते तमे जोइने कहो. त्यारे ते योगी ध्या न धरीने स्पष्टपणे कहेतो हवो के हे सत्पुरुप! तुजने धनदनी पेरें अनेक कोडी धन आगल थाज़े. ते सांजली ते ज्ञेठ चमकीने योगीने पूछवा ला ग्यो के तेवो हुं केवी रीतें थड़श? तेवारे योगी कहेतो हवो के प्रध्वीमां ए नो एक जपाय है. बीजाने विषे तो अनर्थ देखुं हुं, पण तारे विषे अनर्थ देखतो नथी. अहो? जोपण ए कार्य घणुं विपम हे तोपण ज्यारें ताह रुं पूर्व जन्मनुं जे इष्ट कमें हे तेहनो क्य थड़ो त्यारे ए कार्य सिद्धि थज्ञे.

ते सांजली शेव रीज्यो यको केहेतो हवो. के हें स्वामिन ? प्रसन्न यइने मने, जलदी तेनो उपाय बतावो ? ते शेवनो अति आयह देखीन योगी बो लतो हवो के एक पर्वतमां रस कूपिका वे ते रसना एक बिंडमां एक हजा र जार लोहने तपावीने अंदर नाखीये तो ते सर्व लोह कुण एकमां सुवर्ण याय. ते सिक्रस प्रायें देवताने पण मलवो डर्जन वे तो मनुष्यने तो क्यां यीज मले ? ते तो घणे कप्ट मले. ते सांजलीने ते शेव विशेषें हर्षित चिन यको योगीप्रत्यें कहेतो हवो के हे स्वामिन ? निष्फल कप्ट तो में पूर्वें घणांज सह्यां वे, तो जेमांथी फल थाय एवा कप्टने सुखेथी सहीयें तेमां शुं वे ?

ते सांनती ते योगीयं, मदोनमत्त थयेला एवा एक पाडानु पुढडुं शेठ नी पासेथी मगावीने तेने कह्युं के एने ढ माससुधी तेलमां नांख. ते शेठे योगीना कहेवाथी तेमज कह्युं. तेवारपढी रसकूपीकानो कल्प तेहना पुस्तको तथा पाडानुं पुढडुं अने लांबी वे दोरियो तथा मांची अने वे तुं बडां तथा विव बाकुलादिक सर्व सामिश्र लक्ष्ने योगीनी साथे ते शेठ अनुक्रमे परवतमां जिहां गुफा हो तेने बारणे आव्यो. ते बारणे रहेलो एवो जे यक्ष् तेने पूजीने,पुस्तकने अनुसारे ते बन्ने जणा गुफामां पेठा. ते जाणीयें नरकवास मांज पेठा होय निहं ? पठी त्यां जे जूतप्रेतादिक उठे हे तेहने बिन बाकुला आपतां पाडाना महोटा पूंठरूप दीवीना उद्योत थकी अजूआ़ जुं करतां

शीघ्रपणे चाव्या जाय हे, तेर्र बे योजनसुधी गया. तिहांसुधी तो पो तपोतामां प्रीतिवंत देखाता हता. हवे त्यां चार हाथ जांबो पोहोजो चो खूणाजो सिद्धरसनो कूवो दीवो. तेमां ते योगियें ते ज्ञेवने वे बाजु तुंब डा बांधी मांची जपर वेसारी अहस्य हे तली युंजे तुं एवी रस कूपिकामां उ तास्रो. तिहां ते दिव्यरसें जस्रो कूर्वा देखिने खुरी यतो यको तेणे वे तुंब डा नरीने दोरी हलावी, एटले योगीयें दोरी उपर खेंची लीधी. जेटले ते चपर कूवाने कांवे आव्यो तेटले ते योगियें तूंबडा मांग्या. तेवारें ते ज्ञेवेपण नोजपणाची ते योगी नण। तुंबीचे आपीदीधी के तरतज ते सर्पजेवा महा इष्टात्मा योगीयें न्याय अने धर्म बेहुने जेम को हो हे तेम ते योगियें बेहु दोरी होदी नाखी तेथी ज्ञेव मांची सहित कूटातो पीटातो रसने अणलागतो रसने कांवे आवी तप्तहृदयथको कूपमां पड्यो. तिहां विचारवा लाग्यो के, अहो ! धिक्कार हो धिक्कार हो ए जोनिया कपटीने ? जूर्र ए कपटीनुं पराक्र म ? हा दैव ! हवे हुं ग्रुं करीश ? हुं इहांज रह्यो थको मरी जइश ? माटे धिकार पड़ो मुक्त जोनांधने ? जे में कांइ पए विचार न कखो ? एम आर्ति ने वश पड़यों कुधा, तृपायें पीडित थको केटलाएक दिवस तिहांज अंध काररूप बंदीखानामां बंदीवान सरखुं इःख नोगवतो रह्यो.

हवे केटलाएक दिवस वीत्याबाद देवयोग्यथी एकदा तिहां कोइएक चं दनघो रस पीवाने आवी, ते जाणीयें ज्ञेवने प्रतिबोध देवानेज आवी होयनी? एम शब्द करती रस पीने पाठी वली एटले ते ज्ञेव तेहने पूठ डे वलगतो हवो. तिहां जवितव्यताना योगें करीने जाणियें खेंचाणोहोय नहिं एवो ते ज्ञेव कटे जोडाणो, जेम कोइ जीव निगोदमांथी निकले तेम ते रसमांथी निकलीने वाहेर आव्यो. तिहां जमतो जमतो कोइक सथवारा ने मत्यो, ते सथवाराने मार्गमां चोरोयें लूंटघो तेवारें तिहांथी ते ज्ञेव ना सतो थको अरहो परहो जातो थको ते चोरने हाथें बंदीवान पणे पकडा णो. ते चोरोयें कोइ एक नगरमां लइ जइ तेने वेच्यो, तिहां कोइक सार्थ वाहे वेचातो लीधो. ते सार्थवाहें वली धनना लोजथी बब्बर कुलने विपे वेच्यो, त्यां आकरां इःसह इःख सहेतो हवो. ते इःख कहीये वैयें. मनु ष्यादिकने पोषी ते मनुष्यना सकल अंग गाली तेहना शरीरना रुधीरनी कुंमी जरीने ते इप्टो रुधीरने तिहां जमावे पठीते रुधीरमां तेवाज वर्ण सर खा तेमां क्रमि पड़े तेनो किरमजी रंग थाय, ते रंगमांहे ते लोको वस्त्र रंगे, तेथी करी ते रंग अधिक दृढ थाय. ते वस्त्रमां विशेष रक्तता थाय वली पण ते पुरुपने पोपीने फरी तेनुं रुधीर काढीने तेने गाले, पोपे ने पांचुं ते नुं रुधिर काढे, एम निर्देय चित्त थका ते पापी किरमजी रंगने लोजे करी पाप कर्म करे. एम ते शेवें नारकीनी पेरें बार वरस सूधी त्यां इख जोगव्यां.

एकदा दैवना योगयी ते शेवनुं रुधिर काढीने मार्गमां नांखी मूक्यों है, तेथी शेवने मूर्जा छावी है, एवामां नारंमपंखी छावी तेने नक् जाणीने छा काशमां लड़ जतो हतो, त्यां वाटमां बीजो नारंमपंखी तेने मंखो. नक्षण छाँयें ते बन्ने नारंमने मांहोमांहे युद्ध ययुं तेथी ते शेव चांचमांथी जमीन उपर हेवो पड्यो, दूखियों हे तेथी मूर्ज निहं. पढ़ी जेम कोइ नव्य जीव मनुष्यनो नव पामे तेम ते शेव दैवयोगयी नमतो जमतो घणे कट्टे पोता ने नगरे छावी पहोच्यो. तिहां स्त्री पुत्रादिकने इःखनुं करनारुं एह्वुं पोता नुं चित्र कहीने छत्यंत इःखमां लय पामतो दीन वचन नांखतो ते शेव लक्षीने कव्याणपणुं पूजतो हवो. त्यारें न्यायमांहे मेरु सरखो एवो ते शे वनो पुत्र हे, ते पुत्रें कह्यं के हे तात! वित्ततो दैवनुं दिधेनुं हे तेमांथी में महारी इज्ञायें धननो व्यय पण घणो कस्त्रो तथापि वाव्य तथा कूपना पाणीनी पेरें ते धन कांइ उंडुं ययुं नही. दैवी वित्तने खातां, वावरतां,खरचतां, पण खूटे निहं, तो तमे शावास्ते मिष्या खेद करो हो? माटें संतोप करो. हवे लोन मूको धनना छिकपणायें सखुं. हवे तमे उचित्त धर्ममार्गें इव्य खरचो, इत्यादिक घणी युक्तियें समजाव्यो पण ते शेव समज्यो निह.

एकदा प्रस्तावें ते शेवें कोई ज्ञानी मुनिने पोतानो पावलो जब पूब्यो त्यारें ते मुनि कहेता हवा के चंड्पुर नामे नगरने विषे निर्धनमां शिरोम णि एवो चंड्नाम विणक रहेतो हतो, तें एकदा जिनेश्वरने प्रासादें गयो. त्यां पूजारा पासेथी सो कोडीनां फूल उधारे लक्ष्ने परमेश्वरनी जिक्त रागें पूजा करी. ते पढ़ी पूजाराने फूलनी नवाणुं कवडी आपी तेथी ते पूजा रे कह्युं के एक कोडी उढ़ी कां आपो हो? तेने शेवे कह्युं के प्रजातकाले आपीश. पण कार्यना व्ययपणायी पूजाराने एक कवडी आपवी वीसरी गइ. पढ़ी ते विणक योडा कालमां ग्रूलना रोगयी तत्काल मरण पाम्यो. ते जिन्यूजाना प्रजावथी मध्यमजावें करी हुं धनदत्त थयो. पूर्वले जवे जे तें न

वाणुं कवडीनां फूल चडाव्यां हतां तेना योगें नवाणुं लाख धन ताहरूं स्थिर रह्यं पण एक कवडी मात्र देवइव्य आपी शक्यो निह तेथी ताहरं अधिक धन न थयुं. जो एक कवडी आपी होत तो कोटी टका धन यात. ते माटे ते पूर्वनुं दैविकक्रण आपवानी बुद्धि तारी जो थाय ने ते आपे तो तुंने ञ्चागर्से धन घणुं थाय. नहीं तो जेम तपावेली धरतीने विषे पाणी नास्युं रहे नहीं तेम तुजने पण अधिक धन नहिं याय,तेमाटे संतोष कर. एवं सां नली ते निपुण शेवें जे देवनुं धन शेप रह्यं हतुं तेथी हजारगणुं फूलनुं देवुं ञ्चापीने परियहनो परिमाण कखो. तेमां नवाणुं लाख सोनश्या, ञ्चाव घर, ञ्चाव हाट, सर्व जातिनां करियाणां ञ्चाव जार, ञ्चाव घोडा, चोवीश गाय, ञ्चाठ दास, ञ्चाठ दासीनो नियम राख्यो. तेमज घी तेलनी चार घडी यो, तथा विशेष दोषरूप जीवनी हिंसानुं वेकाणुं जाणी धान्य अधिक न राख्युं. मात्र वे मूढक एटलेमूडा मोकला राख्या. वीजा सर्वधान्यनो त्याग कचाे. एरीतें रायानि उगेणं इत्यादि व विंिम अने चार आगार सहित पांच मुं अणुव्रत गुरु पासेंथी लेइने तेने रुडीरीतें पालतो हवो. ते दिवसथी मां मीने ज्ञेवने घेर लक्की स्थिर रही, दिन दिन प्रत्यें वृद्धि पामवा लागी, अ त्यंत स्थिरपएं रहेवा लागी. माटे लक्कीनी प्राप्ति, तेहनी वृद्धि, तेहनी स्थिरता, ए सघलां वानां प्राणीने धर्मथकीज थाय. इवे ते धनजोठ धर्म मां अधिक अनियह धरवा लाग्यो, तेम लक्क्षी पण धर्ममार्गे वावरतो ह वो. ए जिक्की पाम्यानुं मुख्य फल है. ज्ञेप धन जे हे ते निश्चे संबंधे हे.

एक दिवसें नदीने तटे वेगलुं सुवर्णरत्नादिकनुं निधान दीतुं पण ते ज्ञेन व्रतने विषे हृदमुनि सरखो निस्पृह् ने तेमाटे तेणे कांकरा सरखुं गणी तेमांथी एक कवडी मात्र पण ज्याडवा इक्वानी कीधी नहीं. पन्नी रात्रे स्त्रीने ते निधाननी वात ज्ञेनें कही, अने तेनुं नेकाणुं पण संज्ञात्र्युं. ते वखत ज्ञेने घेर चोर लोको चोरी करवा माटे घरमां ग्रप्त रह्या हता तेणे ते वात सांज्ञली, तेथी ते चोरो धन लेवाने हर्षवंत थका ते स्थानकें गया, त्यां जड़ जूए ने तो हुईंचना योगथी वींनी अने कोयला दीना, ते देखीने खीज्या थका विचारवा लाग्या के वाणिये आपणने नग्या, माटे वाणि याने घेर आ वींनी लड़ जड़ने नांखियें के तेना कुटुंबने विंनी खाइ जा य. एवं धारी विंनीयो ने पोताना मस्तक जपर जपाडीने ते ज्ञेननी खड़की नी जिंत चपर चडीने जोठनां घरमां जइने ठलव्या. पण ते जोठना जाग्योदय थी ते विंठीयो सुवर्ण रत्नमय जाणिये देवतायेंज आकाश थकी प्रगट वृष्टि करी होय निह्युं ? तेम रत्नमय थइ खडखड करता पडता हवा. संतोषरूप सुकृतथी कमायें जुं जे धन तेजज्ञ जाणवुं पण बी जुं धन ज्ञ जं निह. हवे ते जोठ ते सर्वधन श्रीजिन चेत्यादिक धर्मकार्यने विषे मोक्तपदनी वाज्ञायें वावरवाने काममां आवशे एवं धारी तेधन घरमां थापतो हवो अने ग्रज कार्यमां ते धनने वावरतो हवो.

एकदा राजानी सनाने विषे क्ञानवंत निमित्तियायें श्रावीने कहां के श्रा गल बार वरस लगण काल कल्पांत सरखो क्षिन्स क्रष्काल पडशे,तेमां मात्र थोडाज जीव जीवता रहेशे तेमाटे सघला जनो श्रव्ययपणे धानने संयह क रवानी इक्षा निरंतर राखो. ते सांनली सर्वलोकोयें श्रगणित धान्य, तेल, मीठुं, पाणी, इत्यादिक सकल वस्तु समुद्दना पाणीना वेगनी पेरें वेगयी लीधां पण धनशेठने पोतानां सज्जन लोकोयें तथा बीजा लोकोयें श्रतिशय प्रेखो तो पण ते धैर्यवंत श्रात्मानो धणी पोताना श्रनियहमाटे व्रत परि माणथी किंचित् मात्र पण श्रधिकधान्यादिकने न संयहतो हवो.

हवे अनुक्रमें इच्काल पड्यायी शेवने घेर दिन दिन प्रत्यें धान्य उहूं य तुं जाय तो पण ते शेव पोताना अनियहमांहे दृढपरिणामी थको जेट लुं धान्य उंडुं थाय तेटलुंज पांडुं वेचालुं लइ नियमप्रमाणे राखीने ते स त्यवंत शेव पोताना अनियहनो अने कुटुंबनो निर्वाह करतो हवो. तथा व ली दानमां प्रीतिवंत एवो ते शेव एहचा कालमां पण कोइ दीन इःखी अ नाथने अन्नादिकनुं दान आपे. एम थोडामांथी थोडुं पण आपे.

दवे दिवसें दिवसें समुइना पूरनी पेरें धान्यनुं मूल चढतुं जाय तो पण पोताना व्रतने विषे दृढ परिणामनो धणी एवो ते जोट जे हवे ग्रुं करीज्ञ ? एवो पश्चात्ताप न करतो हवो. एम करतां करतां श्रमुक्रमें सामान्य धान्यनी एक हांमली लाख सोनेया होयतो चडे, एवी महर्घ्यता घइ. इःखें पामवा योग्य एवो इच्च मले पण धान्य पाणी न मले. एवो वखत आच्यो तेवारें साव धान एवो ते जोठ विचारवा लाग्यो के हवे ग्रुं थाज़ो ने ग्रुं करीग्रुं ? एवी चिंता उपनी,एवामां दैवना वश्चकी तिहां जाणियें देवतायेंज श्चापी होय नहि ? तेम ते ज्ञोठनां मुख श्चागल कोइक पंखीना मुखमांथी कालि चित्रावे

ल अकस्मात् पडती हवी. ते चित्रावेलनां चिन्हे करी उलखीने शेवे उपाडी लीधी, पढी हर्षेंकरी तेना कटका करी अन्नादिकने विपे नांखतो हवो. ते चित्रावेल जाणियें अक्त्य लक्की जुंज बीज होयनहिं? तेम तेना प्रजावयी धा न्यादिकसर्व अखूट थयां. चक्रवर्त्तीना धान्यनी पेरें अहोरात्र तेमांथी गमे एटलुं धान्य वावरे,तोपण ते धान्यप्रमुख खूटे नहि. पुण्य अने कीर्ति तेहनो संचकारज जाणे आपतो होय नहि ग्रुं? एवी शत्रगार जे दानशाला ते शेवे घणी मंमावीने एथ्वीने विषे नयंकर एवो जे डर्जिक् तेने विषे कलियुगमां जेम कल्पन्न शोजे तेम ते शेव शोजतो हवो. अहो! संतोपरूप व्रतने प्र ए करवानुं इहां पण महोटुं फल मले हे. जून के एकमात्र पोताना कुटुंबनो निर्वाह करवानो जेने संशय हतो, एवा ते धनशेठें दानशालान मंमावी अन्न दुं दान आपीने आखाजगतनो निर्वाह कर्खो.

ह्वे एकदा राजायें धनज्ञेवमां निःस्प्टहपणानो जाव जोइ तेनी उपर तु ष्टमान थर धनशेवने कह्यं के,तमे विश्वास करवा योग्य हो एम समस्त ज गत तमने जाणे हे, तेमाटे हे ज्ञेह! तमें मारा जंमारी थाई. ते सांजली धन होते कह्युं के,हे राजन ! ए व्यापार ऋंगीकार करवानो माहरे नियम हे,माटे हुं निह यार्च. जेयकी मारुं व्रत लोपाय तेवा पसाये करीने सखुं, जे जोजन जमवाथी रोग पेदा थाय, जे चोजन करवाथी चोजनना करनारने आशात नानो चदय थाय ते जोजन शा कामनुं ? ते कारणमाटे हे देव! जंमारनुं जे अधिकारी पणुं वे ते पापसमूहनो चंनार वे तेने हुं देवनिर्मात्यनी पेरें अं गीकार निह करं. द्वे राजाउने तो जे आका वे तेज प्रधान महोटो धर्म वे तेथी ते वात सांचली राजाने क्रोध चड्यो ने कहेवा लाग्यो के दोपरहित एवा ए कार्यनेविषे तुं दोप केम देखाडे हे ? वली माहरी आङ्गा नांग्यायी ताहरुं व्रत केम रहेज़े ? माहारुं जंमारीपणुं आखा जगतने उपकारीपणुं हे, ते तुं जाएतो नथी ? ते उपरांत बीजो कोइ नियम नथी. माटे कदायह गंमीने माहरुं चंमारी पणुं श्रंगीकार कर. हुं तारा उपर प्रसन्न थइने कहुं बुं, माटे तुं फोकट विचार कां करे हे. आवां राजानां वचन सांजली ता त्त्विकमां शिरोमणि एवो ते शेव चित्तमां विचारवा लाग्यो के संसारमां परा धीनता रूप अप्रियी वलता प्राणीने धिकार है. में जो पूर्वेज दीहा लीधी होत तो आ पराधीन पणानी वीटंबणा न देखत. धन्य है ते मूनियोने के

जे राजानी आङ्गाथी पण मरे निह ? एटला माटे हजी पण कांइ बगडधुं नयी, उचित होय तेज करुं. एवुं विचारी ते धनशेतें पंच मुष्टिक लोच क रीने दीक्ता लीधी एटले देवतायें तेने साधुनो वेष आप्यो, साधु थया. रा जानी आगलज पण जूर्ड के शेठना नियमना निर्वाहनुं धेर्यपणुं कहेवुं ते? हवे राजायें प्रणाम करीने अनुक्रमें ते धन साधुने पोतानो अपराध क्मा व्यो. शेठ पण घणो काल चारित्र पाली केवल ज्ञान पामीने मोक्ते गयो. एटला माटे जो जव्यो ! पांचमा व्रतने विषे धनशेठनु चरित्र सांजलीने त्रण जगतने पण क्लोजनो करनार एवा लोजहूपि समुइने तरो. इति पांचमां अणुव्रतने विषे धनशेठनी कथा समाप्त ॥ इति श्रीतपागन्ने श्राह्मतिक्रम ए सूत्र तृत्तिनेविषे ए पांच अणुव्रतनो बीजो अधिकार समाप्त थयो ॥ शा

॥ अष पष्ट दिग्विरमण व्रत प्रारंजः ॥

ए पांच अणुव्रत ते श्रावकथमीरूप जे कल्पतृक्ष तेनुं मूल हे तेमाटे ए पांचेने मूल गुण कित्यें. हवे ए पांच अणुव्रतने प्रष्टांना करनारा एवा दि ग्विरमणादि सात व्रत जे हे तेंपण शाखा प्रतिशाखा तृष्य हे तेमाटे एने उत्तर गुण कित्यें. हवे ए सात व्रतमां पण पहेला त्रण गुणव्रत हे अने पा हला चार शिक्षाव्रत हे. ते गुणव्रतमांहे पहेलुं गुणव्रत अने वारव्रत मांहे हिंगुविरमणव्रत तेना श्रितचार निंदवाने श्रेष्टें गाषा कहे हे.

॥ गमणस्सर परिमाणे,दिसासु रहं अहे अ तरिअं च ॥ वृह्विसइ अंतरदा, पढमंमि गुणवए निंदे ॥ १ए ॥

अर्थः—गमनस्तर् एटले गमनतुं परिमाण जे आटला योजन जावुं ते नो नियम लीधेलो हे तेने विपरीत करे यके च शब्द यकी अतिक्रमवे क रीने, ते शेने विपे अतिक्रमवे करीने ? तोके (दिसासु के०) दिशिने विपे एहज विशेषे कहे हे. (उद्धं के०) उंचीदिशि ते कर्ध्वपणे पर्वतनां शिखर ने विषे जवानुं वे योजन प्रमुखनुं प्रमाण यद्यं हे, तेनुं अनाजोग पणे क री अधिक गमन कखुं होय ते कर्ध्वदिशि प्रमाणातिक्रमरूप प्रथम अतिचा र जाणवो तेमज अधोदिशी जे नीचीदिशी अने तिर्यगदिशि जे तीर्वीदिशि ए वे दिशिना पण वे अतिचार जाणवा. एवं त्रण अतिचार यथा.

इहां आवश्यक चूर्णीमांहे ए विधि कह्यों ने के उर्ध्विदिशिगमननो प्रमा

ण कस्वो तेयकी उपर जो वृक्त अयवा गिरिनां शिखरने विषे कोई वानरो अयवा पंखीयादिक जीव होय ते वस्त्र आनरणादिक लड़ने उंचुं चढी जा य तो तेने लेवा जावुं कल्पे नहीं. परंतु जो ते पंखी अयवा वानर प्रमुख ना मुखमांथी पढी जाय अयवा बीजो कोई आणी आपे,तो ते लेवुं कल्पे, केमके पोताने तो धारणा प्रमाणेज जावुं कल्पे, उपरांत जावुं कल्पे नहीं. ए उर्ध्वदिशि आश्रयी अष्टापद, समेतिशिखर,अर्बुदाचल, चित्रकूट, अंजनिष रि अने मेरु प्रमुखें संजवे अने अधोदिशि आश्रयी तो चुंइरा मांहे, रसकू पिका विवरादिकने विषे जाणवुं. तथा तिर्यग्दिशि आश्रयी तो पूर्वादिक चारेदिशिने विषे जेटलुं गमनागमन धाखुं होय तेयकी अधिक गयेयके अतिचार लागे तेमाटे नियमित केत्रयकी आगल हुं न जाउं तथा बीजा ने न मोकलुं. इहां कोई नियमित केत्रयी बाहिरला केत्रमां जिहां बीजा पुरुषें जावानो नियम लीधेलो नथी एवो पुरुप जो पोतानी मेलेज कोई चीज वस्तु लई आव्यो होय तो तेवी वस्तु लेवामां कांई दोप नथी एवं योगशास्त्रनी टीकामां कहुं वे.

ध चोषुं क्तेत्रवृद्धि ते सर्विदिशाउने विषे योजन शतादिक तुं परिमाण क खुं वे तेमां एक दिशायें शो योजनधी उपरांत जावानुं काम पड्युं तेवारें लोजे करीने केटलाएक योजन बीजी दिशाना परिमाणमां उठा करी उक्त दिशामां वधारे, ते दिशिवृद्धि किह्यें. एम करवा धकी प्रमाणनुं अतिकम धाय. पाठली दिशियें उठो जइ अने आगली दिशियें वधारे जइ वे दिशिना योजन एकता करे तेवारे वे दिशिनी संख्या बराबर धाय,ए बाह्यवृत्तियें अ तिचार कहेवाय पण अंतरवृत्तियें तो व्रतजंगज धयुं. ए रीतें अधिकदिशि जवानी इहा करनारा जनने दिशाआश्रीने अंगीकृत प्रमाणने अतिक्रमी दिशि तेणे जंग पण धयो वली दिशा उलंघ्यो नहीं, तेणे नहीं पण धयो, ए जंगाजंग रूप चोथो अतिचार जाणवो.

५ पांचमो सङ्ग्रंतरदा स्मृत्यांतदी ते स्मरणनो नाश थाय, ते जेम के पूर्वदिशियें शो योजन जावानुं पिरमाण कखुं हे, तेने गमनने अवस रें अति व्याकुलपणे प्रमादने वशें मितचंशादिके करीने निश्रय रहे नहीं जे शो योजन किंवा पचास योजननुं पिरमाण कखुं हे एम संदेह रहे,तेम स्पष्टपणे योजननुं मान अणसंनारते पचास योजननी उपर गमन करे तो पांचमो श्रतिचार जाएवो. श्रने जो शो योजननी उपर गमन करे त्यारे तो ते व्रतजंगज थयो जाएवो. ए पांचमो श्रतिचार जे कह्यो ते श्रतिचार जो पण सर्व व्रतोने विषे साधारण हे तोपण ए व्रतने विषे पांच श्रतिचारनी संख्या पूरवाने श्रर्थे इहां थाप्यो हे, माटे श्रंगीकार करेला व्रतने वारंवार संजार हुं केमके सर्व श्रनुष्टान क्रियानुं मूल ते स्मरणज हे. स्मरणनो ना श थयो तो व्रतनो पण नाश थयो एम जाएवुं.

कदाचित् अनापयोगयकी क्रेत्रनुं परिमाण उनंघी जवाय तो ते वखत नी सफरमां जे इव्यादिकनो जान ययो होय ते सर्व इव्यादिकनो परिहार करवो. अने जे स्थानकें सांनरी आवे ते स्थानकथीज पाढुं वलदुं परंतु आ गल एक पगलुं पण चालवुं नही. जे क्रेत्रनुं जिहां सुधी परिमाण कधुं होय तेथकी आगल बीजाने पण मोकलवुं नही. कदाचित् बीजा कोइने मोकलवाथी ते इव्यादिकनुं जे लान पामी आवे ते लान सर्व परिहरघो.

तीर्थयात्रादिक धर्म निमित्तं जे नियमित खेत्रयकी आगल गमन करतुं पढ़े अयवा कोइने मोकलवो पढ़े तो तेनो दोप नही अने धननी उपार्क्त ना जे हे ते इहलोकना फलनी हेतु हे माटे तेने अर्थे अधिक गमन करवा हु नियम करतुं पढ़े हे. ए व्रतथी जे लाज थाय ते कहे हे:—प्रथमतो नियम करेला योजन शतादिक प्रमाण जे केटलोएक जूमी जाग ते मूकीने शेष चौदराज लोकमांहे रह्या जे समस्त जीव तेनी हिंसानो आरंज चाल्यो आ वेहे ते ए व्रत लीधाथी तेमने हणवानो नियम थयो. ते जीवोनो रक्षणरूप गुण करणने अर्थे ए व्रत हे माटे ए गुणव्रत कहेवाय हे. ते दिग्विरमण नामे व्रतमांहे जे अतिचार थयो ते निंड हुं, उपलक्ष्णयी वली गर्डुं हुं.

ए व्रत अंगीकार करवाथी त्रस थावर जीवोने अजयदान आप्युं, लो जरूप समुइनी नियंत्रणा थर इत्यादिक महा लाजनुं कारण हे. महोटो अग्नि सरखो दीप्तीवंत एवो तपावेलो जे लोहनो गोलो ते सरखुं नित्य अ व्रतिपणानुं पाप हे. केमके अविरति जीव जे हे ते, सर्व दिशाने विषे रहे ला समय जीवोने गोलानी पेरें बाले हे, हणे हे, जोपण ते मनुष्य कांइ स व स्थले पोतें जातो नथी तोपण अविरति अव्रतपणाना बंधने लीधे ते मनुष्य इहां थको पण नित्यप्रत्यें शरीरें करी हिंसा करे हे ॥ १ ए ॥ ववा अणुव्रतने विषे महानंदकूमरनी कथा कहे वे.

समस्त वस्तुने विस्तारे करीनें इंड्यूरीने पण हरावे एवी लक्कीवंत अवं ती नामनी नगरी हे. ते रूडा वर्णेकरी वर्णववायोग्य हे. सुखमकालपुरी स रखी मनोहर हे,मारगनी पंक्तियें करी शोनित हे,विविधजातना अर्थ तेहने समूहे पूरी एवी ते नगरी चंपानगरीनी पेरें शोजे हे. ते नगरीमां त्रण ज गतनुं जेहमां पराक्रम वे एवो विक्रमादीत्य नामे राजा राज्य करे वे. ते राजा नुं सत्वपणुं, दातारपणुं, उपकारीपणुं अतिशयवंत हे. जाणे गायत्रीनुं तथा ब्रह्मानुं करेलुं चूलोक, छविलोक अने स्वर्गलोक ए त्रणेना सारनोज उदा र करीने विधातायें ते राजा निपजाव्यो होय नही ? ते नगरीमां कोटीध्व ज एवो धनदत्त नामें जिनधर्मी श्रेष्टि वसे हे. ते ज्ञेवने चदार तथा विकसि त कमल जेहवा जेना हाथ हे, पद्मसरखा जेना पग हे, एवी पद्मावती नामे स्त्री हे. पण तेने पुत्र न होवाची अत्यंत इखी होवाने जीधे कूजदेवी प्रमुखनी घणी प्रार्थना करी जेथी देवयोगें एक सौनाग्य लक्कीयें खतिशय वंत एवो जयकुमार नामें पुत्र थयो. ते बालकनां गर्न समये,जन्म समयें, रक्दाविधानुं, चंइसूर्यनुं दर्शन देखाडवा वखते,पष्टीना जागरण वखते,नाम स्थापन करती वखते, देवगुरुने वांदवा जतीवखते, अनस्वाद कराववा वखते, केश उतराववा वखते, दांत आववाने वखते, कणदोरो बांधती वेलायें, बो जवुं शीखवाने अवसरे,गमन करवा अवसरे,चोटी राखवा अवसरे, वस्नश्रा नरण पहेराववां वखतें,राखडी बांधती वखते, वरसगांव करवा वखते,बहोत र कला यहण कराववा वखते, श्रावक धर्मनो विधि शिखववा वखते,मोटा व्यवहारियानी कन्या साथे पाणीयहण कराववा वखते,व्यापार कला शीख वती वखते इत्यादिक सर्वे कार्योने विषे तेना पितायें महोटा महोत्सवो करी ने महोटा उत्साहयी अत्यंत घणु इव्य खरच्युं. कह्युं हे के रागने स्थानके, प्रेमने स्थानके, लोजने स्थानके, अहंकारने स्थानके, पोतानुं वेकाणुं राख वाने स्थानके, प्रीतिनें स्थानके, कीर्तिने वेकाणे,कोणे इव्य व्यय कीधुं नथी?

हवे ते शेवनो पुत्र पण पाडोशीनी जाती संगतें करी जाती शिक्कादिक ना योगथी बालक थको पण बीजना चंडमानी पेरें कलंकरहित एवो यो वन तथा कलायें करी वृद्धि पामतो हवो. तोपण जेम चंडमा कलंकित कहेवाणो वे तेम ते पुत्रपण कलावंत चंडमानी पेठें कलाये करी वृद्धि पा मेलो इतरं पण जुवटाना व्यसनरूप कलंके करी कलंकित होतो हवो. ते थी निंदा करवा योग्य थयो. मिदरा थकी पण हीनलोकने वर्क्जनीय थयो, ते जोइ तेना माता पितादिक कहेवा लाग्या के, हे वत्स! गुणोनो नास क रवानो हेतु तथा इमित अने इगितिनो दूत अने सर्व व्यसननो समुइ एवं ए यूतरमण हे, तेने तुं मूकी आप. इत्यादिक घणो समजाव्यो तोपण पूर्व कृत अग्रुजकर्मना योगथी ते पुत्र व्यसनने कोइरीतें मूके नही.

हवे व्यसनी पुरुषनुं धन टकी शके नही तेम ते शेवनां पुत्रने अनुक्रमें विटल पुरुषोनी कुसंगति यकी गणिकानुं व्यसन पण होतुं हवुं. कवी कहे हे के, खहो जूर्र पिडवाइपणाना नावनुं शील ते जीवने समकाले रूपजे है ? वित्तरूप जे वृत तेनी आहूतिनी पूर्तियं करीने व्यसनरूप अग्नि अधिक वृद्धिने पामे ने अने दारीइरूपी पाणीना योगयकी वली तेहजक्णे उप शमे हे, एवं जाएतां हतां पए पिता विचारवा लाग्यो के पूत्रने शिखाम ण देवाथी एनुं चित्त विपाद पामशे माटे तेम न यवासारु ऋहोनिश तेने वांचित धन देतो हवो. जूर्र मोहची जीव केवो मूढ चइ जायते ? एम व्यस नमां आशक्त एवा पूत्रें जेम बीष्मकालनें सूर्यें सरोवरनुं पाणी शोषी जवाय तेम शेवनुं कोडीबद्द समय धन तेणे थोडाज दिवसमां शोषवी नाख्युं. क द्यं हे के:-सेवा सुखानां, व्यसनं धनानां, याञ्चा गुणानां कुनृपः प्रजानां ॥ प्रनष्टशीलश्र सुतः कुलानां, मूलावपाती किवनः कुवारः ॥१॥ नावार्थः-सुखना मूलने, पारकी चाकरी हेदे हे, व्यसन, धनने टाले हे, याचना, गु णने टार्खे हे, अन्यायी राजा,प्रजानी क्तय करे हे, कूशीलवंत, अनाचारी, व्यसनी, एवो पुत्र, ते कुलनो इत्य करे हे, ते कारण माटे एटलां इष्टांत मूल बेदवाना किन कुतार बे.

हवे पोताने घेर इव्य खूट्युं तेवारे धननी अप्राप्तियें ते जयकुमार इष्ट कमें घेखो थको चोरी करवा माटे कोइक धनवंत व्यवहारीयानां घरमां खातर पडवाने पेवो. तिहां खात्रना मुख आगल तेने सप्पें मस्यो तेथी अक्रतकरणीनी लक्कायेंज जाणे प्राण ढांम्चा होयनी? तेम ते जोवना पुत्रें पोताना प्राण त्याग कह्या. जेमाटे द्युतादिक व्यसना वशयकी चोरीनो धं धो शीखे अने चोरी करवाथकी जीवनो नाश थाय,तेथी आजवमां मरण द्यं इःख थाय अने परनवें हर्गतिनां अनंत इख नोगववा पढे. हवे प्रनाते सघलायें जाण्युं जे ए धनदत्तरोठनो पुत्र हे तेवारे राजायें ते धनद महा श्रपराधी हे एवं जाणी तेने श्राकरे बंधने बांधीने सर्व श्रंगे बीडी दशकला नांख्या, सर्व इव्य लूंटीने केदमां नाख्यो. तेवारें रोठ विचारतो हवो के घणे मनोरषे पुत्र थयो, ते माठां विलासधी पोतानें श्रने परने श्रहितकारी थयो.

ह्वे कोइक रीते करीने ते धनदत्त शेवने विषे तेनां मित्र, नाइ, ज माइ अने सेवको, स्त्री अने सादुर्ग तथा महाजनो ए सर्व मलीने विनय पूर्वक राजाने वीनंति करीनें तेना पुत्रनुं खरूप कहीने ते धनदत्तरोठने मु काव्यो. ते दिवसथी मांमीने धनदत्तज्ञेव तेवा पुत्रनुं मातुं चरित्र तेणे करी त्रासवंत चित्तें अत्यंत मोटुं दरिइपणुं अने अपमान चगरेने पामतो ह्वो, तेमज पूत्रना जन्मवाथी ऋत्यंत हानी थइ एम धारतो हवो. वली पण पूर्व नवने पुर्णेकरी व्यापारनी निपुणतायेंकरी पूर्वनीपेरें वाणिज्य करतां तेणे बोहोलो धन उपार्च्यो. उत्तम आचारची शोना वधी, राजानुं मान चयुं. तेथी ते धनदत्त जोव पोते नवो अवतार पाम्यो एम मानतो हवो. वली ते आ गली स्त्रीने बीजो पुत्र न थयो,स्त्रीपण वये युक्त थइ,तेमज ते ज्ञेवने पुत्रादि क जो पण अत्यंत अनिष्ट थया हे तोपण स्त्री विचारवा लागी के जो महारे शोकनो पण पुत्र होय तोपण ए धननो धणी तो याय, अने महारे पण आधार थाय. एम अत्यंत पुत्रनी आर्त्तियं आक्रमी एवी स्वीयं तथा दितना वांज्ञ क जे स्वजनादिक तेएो मर्ज़ीने बीजी कन्या परएवा माटे ते शेवने अत्यंत त्रेरणा करी, पण पुत्रना विपाक जोगवे हे तेणे करीने कदाच कुपुत्रनी प्राप्ति थाय तेमाटे ते ज्ञेव निर्विकारीनी पेवें परणवानी वात अंगीकार न करतो ह्वो. कद्युं वे के:- इर्जनइःखितमनसां, पुंसां सुजनेपि नास्ति वि श्वासः॥ बाजः पयसा दग्धो, दथ्यपि फुत्कृत्य खद्ध पिवति ॥१॥ इर्जने इखव्युंने मन जेनुं एवा पुरुषने सक्जननो पण विश्वास त्र्यावे निह, जे बालक एक वखत दूध पीतां बब्यो होय ते बीजी वखत दही पण फु कीने पिये हे ॥ १ ॥ इवे एकदा कोइ इश्वरदत्त ज्ञेवनी पुत्री परणवा योग्य थइ हे पण तेने जायक वर मजतो नथी एवी पोतानी पुत्रीनुं पाणियह ्ण करवाने माटे इश्वरदत्तज्ञोतें धनदत्त ज्ञोतने कहेवराव्युं, के हे ज्ञोत? विश्व मां प्रशंसवा योग्य, पूर्व पुष्यथी पामवा योग्य एहवा पुत्ररत्न तेनी उत्प नियी तुं उत्पातनी उत्पत्तिनी पेरे निष्फल नयग्रं पामे वे ? वोकरा जल्या एटला सर्व कुजातज होय के ग्रुं? सर्व वृक्तनेविषे कांटाज होय ग्रुं? सर्व तलावने विषे कादवज होय ग्रुं? एकवार अजीर्ण मात्र थयाथी फरीने बीजीवार जल्लुंज निह ग्रुं? एकवार जे रस्ते थाड पड़ी होय त्यां हमेशा थाड पड़ो, एवं धारी ते रस्ते नज चालवं के ग्रुं? माटे हे शेव ? इःखे निम्नह करवा योग्य एवो जे तमारो कदामह तेने ढांमीने उत्तम लक्क्णे युक्त एवी कुमुहती नामे माहरी पुत्री ढे तेने तमे अंगीकार करो. तेनां स्वामीप णानां नावें तमारो वीजना चंइमांनी पेरें कोइक मोटो उदय थशे, एम ते नां लक्क्णोथी में निध्य कस्त्रो ढे,माटे ए कार्यने विषे हवे विचार करोमां.

ह्वे निपुणतायें करी गृढ हे चित्त जेनुं एवा धनदत्त रोठ पण कहेतो हवों के हे मोटा आयुष्यना यणी ? तमारा दाहिएय यकी ए वात पण क रीयें. परंतु जो तमे संताननी वात प्रत्यें ते कुमुद्दतीने कांइन कहो, अने दैव योगथी कदाच संतान थाय तो मारुं नथी एम ते एए, जो एवी निर्मीहता होय तो हुं अंगीकार करुं. ते सांचली जेम हिमाचलें पार्वती शिवने अंगी कार करावी तेम ते शेवनी पासे जो पण बीजा यणा जनोयें उत्कंवा सहित तेनी पुत्रीनी मागणी करी तोपण ते ज़ेवें पोतानी कन्या अन्य जनने न आ पी अने धनदत्तनेज आपी. कुमुद्दतीयें पण जे प्रमाणे होते कहां ते प्रमाणे अंगीकार कछुं, तेथी ते धनदत्त ज्ञेव तेने महोटा उत्सवधी परएयो. अनु क्रमे ते स्त्रीनरतारने मांहो मांहे प्रीति चइ, तेथी प्रीतिनुं निधान एवं जे उधान ते जो के शेवने अनिष्ट वे तोषण तेने रहां. ते स्वीयें स्वप्न दीतुं,ते जा णे पोताने को वाहाले आवीने मांहे बदरीफल मूकेलुं एवं एक कांसानुं कचोद्धं आप्युं अने तेज कासानुं कचोद्धं वली कोइके पाडुं लइ लीधुं, ए वुं स्वप्न त्राववाची कुमइतीयें पोताना स्वामिनें स्वप्नानी वात जणावी ते थी ज्ञेवेपण पोतानी मतिने अनुसारे बाह्यथी सुंदर एवो पुत्र थाज्ञे. ने ते पुत्र केटलाक इव्यसहित परगृहने विषे रह्यानी स्थित इत्यादि स्वप्नानुसा रे अनुमान करी चित्तनेविषे विचारतो हवो के ते पुत्र माहरुं कांइ नहि ली ये तेम हुं करीश. एम अनुक्रमे रूपवंत पुत्रनो जन्म थयो एटले तुरत ते ज्ञेत पुत्रने क्षेश्ने पूर्वला वचनना बलयकी जेम निर्जिव होय तेने स्मशान मां मूके तेम जीर्ण उद्यानने विषे जइने मूक्यो. कवि कहेर्रे के, अहो जूर्ड निर्मोहता ? क्रुपुत्रनी कदर्थनायें ज्ञेवने उद्देगवंत कथो है. हवे ते ज्ञेव जेवा

मां ते डोकराने मूकीने हर्षवंत थको पाडो वख्यो, तेवामां अकाल मेघना गर्जारवनीपेरें अकस्मात् देवतानी वाणी आकाशमां प्रगट थइ के, हे शेव! ए बालक तमारी पासे जे छेणुं मागेडे ते दक्ष्मे पडी जार्ड. एवी देवतानी वाणी सांजलीने ते शेव जय अने कौतुके सिहत एवो थको बांख्यो के केट छुं इच्य ते बालक मागेडे ? ते तमे कहो तेट छुं आपुं. त्यारे ते देव बोख्यो के ते बालक एकहजार सोनैया तारी पासे मागेडे. ते सांजली शेव पोताने घेर जइ हजार सोनैया लावीने बालकनीपासें मूकी पाडो वख्यो. मार्गमां चिंतव्युं जे घणुं रुडुं थयुं. देवाथी हुट्यो, एम विचारतो मंदिर आव्यो.

हवे जातमात्र पुत्रना विरहची घणी पीडायेली एवी ते स्त्री ज्ञेवना जय थी प्रसवनी वात पण व्यजिचारीणीनीपेरें प्रकाश करती न हवी. पढी प्रजा तें इव्य अने ते बालकने मालाकर देखीने हर्ष पामतो पोताने घेर लइ जइ पोतानी स्त्री जणी आपतो हवो. ते स्त्रीपण पोताना पुत्रनी पेरें पालती ह्वी. कह्यं हे के जे वस्तुनी इज्ञान होय ते मनुष्य प्रायें थोडा कालमां घणी पामे, ने जे वस्तुनी इच्चा घणी होय ते वस्तु क्षेशमात्र पण योडाकालमां न मले. तेम कुमुद्दती पण पुत्रनी वात वीसारीने पोतानो धंधो करती रहे हे. एवामां वलीपण योडाकालमां तें कुमुद्दितीयें एक स्वप्नुं दीतुं जे सोनाना क चोलामां पाकुं नारंगी चुं फल कोइयें लावीने आप्युं तेने वली कोइयें पाजुं लीधुं, तेवी स्वप्नानी वात तेणे जरतारने कही. पढी अनुक्रमे रूपादिकेकरी पूर्वना सरखोज बीजो पुत्र ते कुमहतीयें प्रसच्यो. ते पुत्रनेपण होते स्थान कनी परावर्त्तना बुिंदियें बीजा वनमां जइ मूक्यो, त्यां पण आकाश वाणी यइ जे ते पुत्र तारी पासे दशहजार सोनैया मागे हे ते मूकी जाई तेथी ते होत दशहजार सोनैयानो ढगलो ते बालकना मोढां आगल करी पोताने मंदिर गयो. काले करी विगतशोक थयो. ते पुत्रने पण दशहजार सोनैयास हित कोइ व्यवहारियो पोताने घेरलइ जइ पोतानी स्त्रीने आपी पालतो हवो.

हवे कुमुहती वारंवार पुत्र प्रसवादिकना क्षेषे उद्देग पामी तेथी तेने अत्यंत माठुं लाग्युं. वली एकदा स्वप्नामां जड़जातिनो स्वेत हाथी कछो . ल करतो पोताना घरमां पेसतो देखीने जागी उठी अने पोताना जरतार ने ते वात कही. अनुक्रमे आनंदनो संदर्ज एवो वली गर्ज होतो हवो. पढ़ी घणा उंचायहादि गुणो सहित अर्दरात्रि समये सकल गुणे शोजित अति

यशवंत पुत्रनो प्रसव थयो. ते पुत्र ग्रुन खप्नेकरी सूचवित हे, माटे तेने वनमां न मूको,एम स्त्रीयं घणो वास्रो तोपण ज्ञेव विश्वास रहित ते बाल कने त्रीजा उद्यानमां मूकतो ह्वो. तेवामां आकाशवाणी थइ जे तेनीपासे थी खेएं लीधाविना तुं केम मूके हे ? त्यारे ज्ञेते पूत्रयुं के केटलुंक खेएं हुं तेनी पासे माग्रंडुं ? त्यारे देवे कह्यं के कोडाकोडी सोनैया तेनापासे तारा खेणा बे, ते सांजली अत्यंत प्रीतिवंत यको ते ज्ञेव ते वालकने पाबुं घेर आणी ने चिंतामणि रत्ननी पेरें स्त्रीने आपतो हवो. पुत्रनो अपूर्व जन्म ययो ए म उदत कुमुद्दतीयें स्थापना करीने घणो महोटो जन्मोत्सव कखो. ते ञ्चानंदनो करनार हे तेथी तेनुं महानंदकुमर एवं नाम पाड्युं. ते कुमर जो के हजी न्हानो ने माटे दांतरहित ने तो पण सर्वथकी गुणनी वृद्धिनो जज नारो, दांतसिहत जेवो अनुक्रमे ख्यातवंत्र तेथी शोजायें अड्जतहे. ते बा लक अनुक्रमें वधतो यको कलावंत चंड्मानीपेरे कलायो यहण करतो ह वो. अने वली सज्रुपासे बाव्यावस्थामां समिकतमूल देशविरतिप्रत्यें य हण करी व्रघावतनो नियम करतो ह्वो. ते पोताना वसवाना स्थान कथी मांमीने सर्व दिशीनेंविषे तिर्यग्पणें सो योजन प्रमाणें जवानुं नि यम अंगीकार करतो हवो. एम करतां यौवन अवस्थामां तेना पितायें यझ दत्तनामना व्यवहारीयानी जेवुं नाम एवा परिणाम वाली कलावती नामें कन्यासाघे तेने परणाव्यो. ते महा नंदकुमर जनम्यो त्यारघी धनदत्त व्यव हारीना घरमां सर्व प्रकारे पाणीना पूरनीपेठें लक्की वधती हवी.

हवे धनद्रज्ञीते अनुक्रमे सर्व वाणिज्यनो नार वर्षाकालना नदीना प्र वाहनी पेरें ते महानंदकुमरने सोंप्यो, तेथी ते वाणिज्य करतां थोडा दि वसमां कल्पतृक्तनीपेरें महोटा उत्साहथी कोडाकोडी सोनैया उपार्जतो हवो. केटलाएक पुरुष तो जगतमां पोताना निर्वाहने विषे उत्साह रहि त थका जन्मथकी धननी उपार्जना कखां करे हे,तथा केटलाक सेहेजमात्र मां इव्य उपार्जे हे, अने घणानो निर्वाह करे हे, तेम घरनो सर्व निर्वाह महानंदकुमार करतो हवो. ए सघलो लेणां देणांनो संबंध हे,ते संबंधनिश्चें व ज्ञबंधसरखो हे. इहां धनद्रज्ञोहनो संबंध त्रण कुपुत्रथी इव्यनो नाश थयो, अने एक सुपुत्रथी इव्यनी हिद्द थइ. हवे ते धनद्रज्ञोहें पुत्रना वचनथी नि ष्टा करावी अने सात केन्ने सात कोडी सुवर्ण वावरतो हवो. त्रिकाल न ली रीतें जिननी पूजादिक,जे श्रावकनी क्रियाने ते प्रत्यें करतो हवो तेमज परोपकारादिकमां पण सर्वथकी श्रेष्ठ थयो अहो सुपुत्र पाम्यानुं फल जूर्र ?

हवे अन्यदिवसें चलिकति वालो, कोइक विद्यानो साधक एवो पुरुष हो तेणे ढमास सुधी सेवा निकयें करी विधिपूर्वक आकाशगामिनी विद्या सा धवा मांमी हे तेणे विद्यानी सिद्धिने दिवसे उत्तरसाधकपणाने अर्थे सर्वना ग्यवंतमां उत्कृष्ट नाग्यवंत एवा महानंदकुमरने अत्यंत प्रार्थना करी. जो के उत्तरसाधकपणुं घणुं कप्टनुं करनारं हे तोपण दाहिएयवंत परोपकारी महानंदक्रमरे तेहनुं वचन अंगीकार कख़ुं. ना न कही शक्यो,कारण के ज गतमां पर उपगारपणुं ते सारबे. कहां बे के:- देत्रं रहति चंचा, सीधं लो तः पटः कणान् रक्ता ॥ दंतात्ततृणं प्राणान्, नरेण किं निरुपकारेण ॥ १ ॥ नावार्थः-चंचा पुरुष, क्रेत्रप्रत्यें राखे. चपजवस्त्र, घर प्रत्यें राखे. रक्ता, ते कणने राखे. दांते यहां जे तृण,ते प्राणने राखे. जूर्र निर्जीव वस्तुपण एट लो उपकार करेबे, परंतु उपकार रहित जे पुरुष उपन्यो ते शुं कामनो ? इवे कालीचतुर्दशीनी रात्रिनेविषे उत्तर साथकपणे ते पुरुष महानंदकुमारना सहायथी निराबाधपणे मेरुनीपेरें निश्वल थको विद्या साधतो हवो. ते वि द्यासिक यवा समयें विद्यादेवी साद्धात् थइने कहेती हवी के, ऋहो ! तें मोहोटे उत्साहे मुजने साधी, माटे हुं तुजने सिद्ध यइ. पण एटलुं विशेष वे जे परकार्यनो साधक अने प्राणीने आधारनूत एवो उत्तरसाधक जे आ महानंदकुमर हे ते नए। कुमारिकानी पेतें तुं मुक्तने आप, एटखे हुं ए म हानंदकुमरनी पासें कुमारीनी पेतें रहुं. जो महानंदकुमार मारुं वचन मा नशे तो हुं कतार्थपणाने मानीश. कमेथी उपरांत अधिक फल आपवाने माटे विधात्रापण समर्थ नथी. कह्यं हें के:-नमस्थामो देवान्ननु इतविधेस्ते पि वश्गा,विधिर्वद्यः सोपि प्रतिनियतकर्मैकफलदः॥ फलं कर्मायत्तं यदि किम मरैः किंच विधिना, नमस्तत्कर्मन्योविधिरपि न येन्यः प्रनवति ॥ १ ॥ नावार्थः-हुं जे देवताने नमुंबु, ते देवता पण विधाताने वश्यहे, वली ते . विधाता पण निरंतर कर्मनां फल जोगवेबे, तेमज ते फल पण कर्मने वश्य बे,माटे देवताने तथा विधाताने नम्ये ग्रुं थाय ? एम जाणि विधातानो पण जे कमेथी उदय थयो है ते कमे प्रत्ये हुं नमुंडुं, एम कहीने विद्यादेवी तत्का

ल अलोप थर्. तेविद्यासाधकपण निपुण कुमारने ते समये विद्यादेवीना कह्यापूर्वक विद्या आपीने तत्वार्थनो जाण तेज निमित्त पामी विरक्तिचत्त थर्ने तपस्या आदरतो हवो. ते कुमर विद्यायेंकरी विद्याधरनीपेरें आकाश गामी थयो. किव कहे हे के, अहो जूर्ड नाग्यनुं अधिकपणुं. कह्यं हे के:—वेपार कोइक करे हे, अने तेनुं फल वली कोइक नोगवे हे. तेमाटे ज्यमे सखुं अमारे तो कर्मज प्रमाण हे. ते कुमर विद्यायेंकरी आकाशमार्गे विहरमा न तीर्थंकर तथा शाश्वता तीर्थंकरनी यात्रा करतो, परने जपकारादिक कर तो ते प्राप्त थयेली विद्यानुं सर्वदा काल फल खेतो रह्यो.

उन्मत खलनी पेरें विद्यायें अतिशयवंत शक्तिनोधणी प्रायें पेढालपुत्र नीपेरें अन्यायमां अत्यंत प्रवर्ते, तेम ते कुमर विद्याना लाजयकी पण अ न्यायमां नहिं प्रवर्त्ततां साधुनीपेरें उत्तम संवरनो थए। ययो. तेमज समु इनीपेरें मर्यादानुं उद्घंघन क्यांदी एए ते कुमर न करतो ह्वो. ह्वे अनुक्र मे ते सौनाग्यवंत महानंदकुमारने एक पुत्र थयो ते पुत्र विष्णुने जेम प्रयु म्न कुमार अनुयायी हतो तेनीपेरें पोताना पिताने अनुयायीज ययो. ए कदा ते कुमरने अग्रुन दैवयोगधी इप्ट सर्प डस्यो, तेथी तेनुं विष चडवा थी तेह्नुं सर्वथा चेतन्यपणुं नातुं. वैद्यादिकना घणा यह्न कस्वा पण कप एना रत्ननीपेरें निष्फल थया तेथी मातापितादिकने घणुंज इःख थयुं. पढी तकाल उपजेली मितने योगें ते धनदत्तरोठें चोरासी चौटानेविषे पडह व जडाव्यों जे मारा पुत्रने सर्प डस्यों तेयी तेनुं विप नतारीने जे जीवतो क रे तेने हुं एक कोडी सुवर्ण आपुं. ते वात सांचलीने एक परदेशी वित्र वि वेकसहित कहेतो हवो,के हे शेव ? इहांची एकसो ने दश योजन उपर श्री निधाननामे नगरनेविषे हुं रहुहुं, त्यां माहारा घरनेविषे देवतानी आपेली एवी विषहर नामे श्रीपधी है, जे माहरी स्त्रीपण जाणे हे. ते श्रीपधनुं घ णीवार स्पष्टपणे प्रत्यक्त में पारखुं कखुं हे. ते हुं मार्गमां गमावी नाख़ुं एवी बीकथी अहिंया लाव्यो नथी. पण जो ते औषधि दिवस उग्या पेहेलां को इ इहां लावे तो ते छोषिधना महिमाथी निश्चेज अमृतनीपेरें ए बालक जीवतो थाय. अन्यथा जीवे तेम लागतुं नथी.

एवां विप्रनां वचन सांजली ते शेव हर्षवंत थको कहेतो हवो के जलो जलो हे जूदेव? तमें रूडी वात कही. हवे सांजलो? आ माहरो पुत्र इंड्

सरखो अचिंत्य शक्तिवालो हे, तेज आकाश गामिनी विद्यायें हमणांज वेगची ते खोषधि लावज्ञो, माटे ताहरी स्त्रीने ताहरा हस्ताक्रर लखीने आप के जेथी ते देखाडीने औषधी जावे. तेवारे ते विप्र अतिकौतकथी ह र्षवंत थको जेटले कागल लखवाने तैयार थाय हे तेटले महानंद कुमारे कह्यं के, सुकतनेविषे एककंद एवा हे तात! माहरे दिग्परिमाण व्रत हे, तेमां प्रत्येक दिशियें मात्र शो योजन मोकलुं राख्युं हे. ते उपरांत मारा थी जवाय नहीं. मुजने पुत्रनो मोह घणोडे पण व्रतनो अंगीकार कर्णाथी ते श्रोषधि त्यांथी हुं केम श्राणी शकुं ? श्रंगीकारनो निर्वाह तत्पूर्वकज जेवुं धाखुं होय तेवुं पालवुं ते माटे हे तातजी ! तमे ए ब्राह्मणने वीजो कोइ उ पाय पूढ़ो. आवुं सांचलीने धनदत्त बोख्यो के हे वत्स! आकाशमार्गे जतां जीवहिंसा नथी, माटे तुं सुखे जइने श्रोपिध लाव,विचार म कर श्रने व ली धरतीयें सो योजन सुधी जवानुं तें व्रत लीधुं हे अने आ धरती जे श्राहींथी एकशो दश योजन दूर कहे ने तेतो खांचाखुंची आडुं अवलुं चालवुं पडे ते सर्व गणिने एकसो दशयोजन थायहे पण तुजनेतो आका शमार्गे पांसरा जवायी सो योजन पूरा नहि याय ? तेमाटे तुं जइने लाव. तुं एम न जाएतो के ते ज़ आववामां मने पाप जागज़े ? एथीतो तहारो पुत्र जीवतो यशे तेथी तुजने घणो धर्म याशे. अने धर्मकार्यें तीर्थयात्रा नि मिनं तो जो हजार योजन जवाय तोपण गृहस्थने दोप नथी, साहमो अगिएत पुण्यनो पोष थाय. तेमाटे हे वत्स! वालकनी पेरें सरलतानुं आलंबन म कर, ते औषधि आणवामां जरा पण विलंब कर मां. धोयां बे पाप जेमणे एवा मोटा क्रियो पण जीवदयाने अर्थे उद्यम करे हे, तो तुं फोकट मुम्धपणानो ग्रुं विचार करे हे ? श्रावी पितानी वाणी सांचलीने म हानंदकुमारे कह्युं के,हे पिताजी! इहां केवल धर्मनी बुद्धि नथी,पण मुख्य वृत्तियें. अत्यंत पोताना पुत्रनी उपर मोहबुद्धिज हे. माटे हमणां जो पुत्रने मोहे आकाम करीयें तो तेथी व्रत लोप केम न थाय? नियमतो जेम यहाो होय तेमज पालवो जोश्यें,तेमाटे जो हुं शो योजन प्रमाणथी अधिक गमन . करुं तो व्रतनो जंग थायज, तेमज आकाशमार्गे जवुं पूर्वे में मोकलुं रा ख्युं नथी. आवां पुत्रनां वचन सांचली कोप्यो थको तेनो पिता कहेतो हवों के, अहो आते वली केवा प्रकारनी ताहरी आस्ता है ? जो पुत्रने नि

मिने कदाचित् तुक्तने को इश्वतिचार लागे तो प्रायश्चित्त लइने शुद्ध थजे. स वैथा निरतिचारपणुं तो चारित्रीयाने पण न होय. चारित्रीयाने पण सूक्ष श्रितचार लाग्या विना रहे नही ? सर्व वेकाणे लानालानादिक विचारी जोवुं. कह्यं वे के:- यतः ॥ एगंतेएनिसेहो, जोगेसु न देसित्र विहिवावि ॥ दितयंपप्प निरुदो, हुक विहिवा जहाजोगे ॥ १ ॥ माटे जेहने हृदयमां कदायह होय तेइने धर्मनुं रहस्य क्यांथी होय ? एवं कही पिता उलंजा देवा लाग्यों के, अहो जूड एनुं कठोर हृदयपणुं ? जे बालहत्याने विषे पण एकां इ अपेका धरतो नथी, तेमज लोकापवादनेविषं जय राखतो न थी, एवं एनं निर्वयपणं ने ? इत्यादिक वधुं महानंदकुमारनं स्वरूप जोइने शेवे राजानें कह्यं,तेथी राजा,मंत्रि,संमतादिके मज़ी सर्व शक्तियेकरीने महानं दने समजात्र्यो तोपण तेणे पोतानो कदायह न मूक्यो त्यारे कोधें विक्रराज थइ राजा चकुटी चडावीने बोख्यों के हे कुमार ! कदायह ढांमीने खोपध लाव. जो तुं मारी आक्वा लोपीने खोपध निह लावे अने आ वालक मृत्यु पामशे, तो हु तारा सर्व कुटुंबनुं धन खूंटी लड़ने, तेमज सर्वने हणीने तारा वंशनो उन्नेद करीश ? ते सांजली महानंदकुमार हे राजादिक सर्वने कहेतो हवो के हे राजन! ए सर्व धन तथा सर्व कुटुंबथी पए अत्यंत व झन ए वालक हे, ते वालकनी आपदानेविषे पण हुं अपेक्ता नथी राख तो, तो वली बीजी बीकनी शी अपेका राखवी? मनेतो माइरा प्राणश्री पण महारो नियम अधिक हे, कारण के इव्य, प्राण, पुत्रादिक ए सर्वने पामवा तो नवनवनेविषे सुलन है पए अनंतानवें जैनधर्म पामवो ए महा इर्जन हे, माटे कल्पांते पण हुं महारो नियम निह मूकुं. केमके सर्व धन, प्राण, पुत्रादिकनो नाश थयाथी एकज नवे घणुं इःख थायहे, पण धर्मनो नाश ययाची अनंता नवपर्यंत इस्तह इःख याय हे. एम तत्वनो जाएा, सात्विकनेंविषे मुगटसमान, सर्वमां सार,एवो महानंदकुमार.कहेते. एवामां धर्मनेविषे एकायपणायी आकर्षणि विद्यानीपेरें आकर्षी जे शास नदेवी ते शासनदेवी प्रगट वाणीयें करी बोली के हे कुमार ! सालिकम ध्ये तुंज एक सार हे, माटे आ सर्वलोकने धर्मनेविषे तहारी इढतानो महि मा देखाड, तुं तहारा मननेविषे एकाय धर्मनुं माहात्म्य धारीने ताहरा अमृत रसरूप हाथें करीने ए बालकने पाणी ढांट के तरत ए बालक

जीवतो थइ, तत्काल बेवो थरो. एवां ते देवीनां वचन सांजलीने त्यां बे वेला सर्वलोकने ते कुमर विस्मयनो जाजन थयो.

हवे महानंदकुमारे नाजनमां पवित्र पाणी लक्ष कुमरने ढांटी हाथ फे रव्यो एटले बालक उठी बेठो थयो. जेम अमृत सिंचवाथी रोग जाय तेम ते कुमरनुं विष उतरी गयुं, तेथी सर्व जोकने अतिशय हर्ष थयो. वधामणा दिक महोत्सव प्रवर्त्तता ह्वा. सर्ववेकाणे महानंदकुमारनी अङ्गत प्रशंसा थवा लागी,पुत्र जीव्यो अने धर्मनो निर्वाहपण थयो तेथी धर्मनुं माहात्म्य वध्युं. अहो ! केटलाक जीव थोडामाटे तृणपलानीपेरें धर्मने ढांमेढे, अने केटलाक जीव विषम आपदा आवी पडे तोपण धर्मने मूकता नथी तेम महानंदकुमारे पुत्रने ऋर्थे पए धर्म न बोड्यो. हवे एक समये कुमुहतीने तथा रोवने पावला पुत्रोनो वृत्तांत सांनखो तेथी महानंदकुमारने प्रेखाथी ञ्चाकाशगामिनी विद्यानेवलें महाविदेह हेत्रें सीमंधरस्वामीपामें जइ प्रणा म करी शेव प्रमुखनो पाढला जवनो वृत्तांत महानंदकुमारें पूछ्यो. त्यारे ज गवान् कहेता हवा के धनपुरनगरने विषे सुधन एवे नामे धननो धणी वस तो हतो तेने धनश्री नामें स्त्री हती,धनवाहन नामे तेने बालिमत्र हतो ते ब न्नेने सगा नाइ जेटली प्रीति हती. देंहु साथेज व्यापार करता हता,वेंहु सु श्रावक वे तेथी ग्रु६ व्यवहारें व्यापार करता हता. ते वेमांथी वच वचमां क्रयविक्रय करतां कोइ विटने तथा ब्राह्मणने, बालकने, इत्यादिकने आएवे करीने तेमज पोताने घेर पण कांइक लइ जावेकरीने, सुधन पोताना मि त्रनी वस्तु अरही परही व्यय करे, ते जोइ मित्रें जाएं के जो हुं सुधनने कहीश तो एहने अविश्वास उपजशे, तेनुं चित्त अत्यंत इहवाशे,एम मैत्री चंगना चयथी कांइ बोले नहिं, मनमां जाणि रहे. ते सुधने एवीरीतें करी ने मित्रनुं इव्य सो सोनैया वणसाड्या.

तथा वली एक विषक संघाते व्यापारादिक करी तेने देवा लेवामां ते विषकने वीश सोनैया देवा रह्या,ते तत्काल अपाणा निह, अने ते थोडी रकम होवाथी लेणावालें विणकेपण माग्या निहं तेनेलीधे ते दाम सुधन पासे रह्या. वली बीजा विणकनी साथें व्यापारमां लेवड देवड करतां जू लथी दस सोनेया सुधनपासे वधारे आव्या पण लोजेंकरी सुधने तेने पा हा न आप्या. कहां हे के:—लोजः क्लोजकरः कस्य,न स्यादमेवतोपि हि॥

सुकास्यसंपरायाख्य, गुणस्थानेऽप्यवाप्यते ॥ १ ॥ नावार्थः-लोन ते हो ननो करनार केने न होय ? धर्मवंतने विषे पण लोन जे वे ते सूच्यसंपराय नामें दशमागुण स्थानकनेविषे पमाय हे. पही सुधने व्यवहार शुद्धियें व्यापा र करतां शव्यत्रणगुरुसमीपें आलोयां निह, आलोववाने जाएतो थको पण पोतानी वृति शक्तियें अजाण ययो समर्थ हतो पण असमर्थ थयो,वि वेकी हतो तोपण अविवेकी थयो. इस्थयको धर्मस्थानकें इव्य खरचे नहीं परंतु ते सुधने अंत्यसमयें अत्यंत सीदातो एवो कोइक परमधार्मिक साध मीं नाइ हतो तेनी इःखी अवस्था जाणीने तेने शो सोनैया आप्या. ते इ व्यने त्रापवे करी ते साधर्मी जाइ जावजीवसुधी सुखमय निर्वाहने ध रतो ह्वो. जेम क्तुयें योडो वर्षाद याय तो पण तेथी धान घणुं निपजे तेम अवसरे दीधेलुं दान घोडुं आप्युं होय तोपण बहु फलदायक थाय. कह्यं ने के:- करचलु अ पाणीएणवि, अवसर दिन्नेण मुह्यियं जिअइ॥ प ह्या मुत्राण सुंदरि, घडसय दिन्नेण कित्तेण ॥ १ ॥ जावार्थः-अवसरे एक पाणीनो चद्ध्वे आप्याथी पण मूर्जित थयेलो जीव जीवतो थाय पण हे सुंदरि! मूर्वा पठी सो घडा पाणी रेडीयें तेनाथी हुं थाय ॥ १ ॥ हवे अनुक्रमे आयुष्य पुरुं नोगवीने सुधन, धनशी, तेहनो मित्र, वली

हवे अनुक्रमे आयुष्य पुरुं नोगवीन सुधन, धनशी, तेहनो मित्र, वजी ते व विषक, अने साधर्मिक जेने शो सोनेया आप्या हता, ए वये जीव आवकनो धमे आराधीने सोधमे देवलोकें गया. त्यांथी चवीने ते धनदत्त कुमुहती वे थयां, अने चार तमे तेमना पुत्रो थया. पूर्वे शो सोनेया जे ना सुधने विणसाड्या हता ते तेनो पेहेलो पुत्र थयो, तेणे तेनुं सर्व इत्य वणसाड्युं, बीजे हजार सोनेया,त्रीजे दसहजार सोनेया वणसाड्या इत्या दिक इत्यनो नाश थयो. वली पेहेले पुत्रे पूर्वे एक शावकने व्यापारनेविषे अतूल मत्सरथी देपथकी व्यसनीनुं कलंक दीधुं हतुं तेथी ते पुत्र व्यसनी थयो. वली तेणे विशेषे देपथकी कह्यं के केम १ ए हमणाज मरतो तथी १ एवा इर्ध्याननी चिंतवणाथी तेणे अल्प आयुष्य वांध्युं. अने मध्यना वे दी कराउयें तो पूर्वनुं लेणुं लीधुं. तारो पिता तेमने वनमां मूकी आव्यो अने ते नुं लेणुं धनपण आप्युं पूर्वे साधर्मिने शो सोनेयानो उपगार कस्यो ते मरी तुं महानंदनामे पुत्र थयो,जेणे कोडाकोडी धन पूर्वा अने पिताने सुखी कस्यो. कह्यं के:-जघन्य रसें जघन्य परिणामे,स्वनावे देणुं तथा लेणुं रहीगयुं हो

य तोपण दशगुणुं आपे,तथा दशगुणुं लीये अने जो घातादिक परदेषे थयुं होयतो सोग्रणुं, हजारगुणुं, लाखग्रणुं, क्रोडगुणुं, कोडाकोडीगुणुं, तेहची पण घणुं नोगववुं पडे. कुमुद्दतीयें पोताना घरनी नेंसें पाडो प्रसन्यों ते नेंस दोवा अवसरें पाटू मारे दोवा दीये निह, तेथी कषाये करी एम कह्यं के, कोइ आ पाडाने केम लइ जातुं नथी ? जो लइ जाय तो घणुंज सारुं थाय, ते इर्ध्यानना उदयथी जनम मात्रज बे पुत्रनो वियोग थयो. ञानी उपर लहेणुं हे, आ पुत्रनी उपर देणुं हे एवी वाणी जे आकाशयकी थइ ते पासेंना वनना अधिष्ठायक देवतायें करी तेमज वचला बे ढोकरा आव्या ते कये स्थानकें हमणां हे ते स्थानको पण परमेश्वरें कह्यां. एवी परमेश्वरनी वाणी सांजजीने महानंदकुमारे पोताने घेर आवीने परमेश्वरे कह्यं हतुं ते प्रमाणे मातिपताने सम्यक्प्रकारे संजलाव्युं तेथी पुत्रादिक तथा माता पितायें वैराग्य पामी दीक्दा लीधी. महानंदकुमार पण ते मातिपतानें आ दरसहित धन अने धर्म तेहने आपवेकरीनें घणां हर्षवंत करीने अवसर पामी दीक्षा लइ माहेंइदेवलोके इंइसरखो महर्दिक देवता थयो. तिहांथी च वीने मनुष्यनव पामी सिद्धि पामशे. एवा दिग्विरमण व्रतनेविषे महानंद कुमारनुं चरित्र सांजलीने, जो जव्यजनो ! तमे कष्टनेविषे पण धैर्यपणुं राखी ने ए व्रत पालो तो महानंदनीपेरें आ जवनेविषे संपदा जोगवी,परजवनेवि पे परमपद पामो. इति ठवा अणुव्रतनेविषे महानंदकुमारनी कथा समाप्त ॥

हवे सातमुं नोगोपनोग नामें बीजुं गुणव्रत कहे हे.

ए व्रतना वे नेद हे. एक नोगयकी अने बीजो कर्मयकी, तेमां पण नोगना वली वे प्रकार हे, तेमां एक उपनोग अने बीजो परिनोग, तिहां जे एकवारज नोगव्यामां आवे एवी जे आहारादिक वस्तु, तेने उपनोग कित्यें. उपशब्द जे हे, ते एकवार नोगनो बोधकारक हे अने ते उपनोग वस्तु ते कुसुमादिक जाणवी कारण के एकवारज नोगमां आवे हे अने परि नोग ते जे वस्तुने वारंवारं पुनः पुनः नोगवीयें ते जाणवी. ते ज्ञवन स्त्रीया दिक हे तेनें परिनोग कित्यें. परिशब्द जे हे, ते वारंवार पदने बोध कर नारो हे. यदाह ॥ उवनोगो विगईह, तंबोलाहार पुष्फ फलमाई ॥ परिनो ग वञ्च सुवन्न, माइयं इिंग्ड गेहाई ॥ १ ॥ नावार्थः—उपनोग ते विगय,

तंबोल, श्राह्मार, पुष्प, फल, फूल श्रादि देइने जाणवां. श्रने परिनोग ते वस्र, सुवर्ण, श्रादिक तथा स्त्री श्रने घर श्रादि देइने जाणवां ॥ १ ॥ श्रावकें प्रथम उत्सर्गमार्गें तो फासु निर्दोप एपणीय श्राह्मारतुं नोजन करी रहेवुं, जो एरीते न रही शकाय तो सचित्त वस्तुनो तो श्रवश्य परि हार करवो, तेवी पण शक्ति न होय तो बहु सावद्य जे मिहरा, मांस,श्रनं तकायादिक, तेनो तो जहर त्याग करवो. प्रत्येक मिश्र सचित्तादिकनां परिमाण करवां. उक्तंच ॥ निरवज्ञाह्मारेणं, निज्जीवेणं परित्त मीसेणं ॥ श्रनाणु संघण परा, सुसावगा एरिसा हुंति ॥ १ ॥ नावार्यः निरवद्य एट ले दोपरहित एवा श्राह्मारें करीने, निर्जीव श्राह्मारें करीने, प्रत्येक मिश्र पणे करीने, श्रात्मानो श्रनुश्रद करता एवा सुश्रावको होय ॥

एमज वजी उत्सवादिक विशेष विना जणजणाट करता मिण, तथा सुवर्णनी व्यवरीयें खंचित एवां जडित इकूज, पटकूछ वस्त्र पहेरवां, तथा ने जरादिकनुं पहेरवुं एटले शब्दवंत कांकरादिकनुं पहेरवुं, मुकुटादिकनुं वां धवुं, उंचा नारे किमती सिरपेच बांधवा, उंचां होगां खोसवां, आदिकथी अत्यंत गृद्धता, जन्मादता, लोकापवादादिक थाय,तेथी एवा जङ्गटवेश पहे रवा अने उद्गट अलंकार पहेरवा, तथा उद्गट वाहननी उपर वेसवुं ते सर्व श्रावके वर्क्कवुं. जेमाटे कद्युं ने के ॥ यतः ॥ श्रइरोसो श्रइतोसो, श्रइहासो इक्कणेहि संवासो ॥ अ३ उप्नडो य वेसो, पंचवि गुरुअंपि लहुअंति ॥ १ ॥ नावार्थः-अतिरोप, अतितोष, अतिहास्य, अतिइर्क्जननी साथैं सहवास, तेनी चेलुं रहेवुं, अने उद्भटवेप ए पांचवानां जो विशेषें करेतो महोटो पुरु प पण लघुताने पामे ॥ १ ॥ तेमज अतिमलिन, अतिजाडां, अतिपातलां, अतिबिइवंत, अत्यंत आबां, अतिफाटेलादिक एवां सामान्य वस्त्र पहेरवा थकी, हीनवस्त्रनो वेप पहेरवाथकी रूपणतायें करी जोकमांहे निंदा अने हांसी थाय, अपवाद उपहास्यादिक थाय माटे पोताना वित्तने अनुसारें व्यय,निवासस्थान एटले रहेवानुं घर करवं. अने पोताना कुलने योग्य हो य तेवो वेष पहेरवो, तेवली उचित वेषनेविषे पण प्रमाणनुं नियतपणुं करवुं.

एमज दांतण, तेल प्रमुखनुं मर्दन, वस्त्र, जवटण, स्नान, विलेपन, आ नरण, फल,फूल,धूप, आसन, शय्या,नवनादिक, तेमज तांडुलादिक नोज न, घृत, शाक, पत्र, खीर, खांम, खाद्यादिक, अशन, पान, खादिम, स्वादि मादिक वस्तुनो त्याग करवो,जो तेने सर्वथा ढांमी न शके,तो तेनुं प्रमाण करी राखे, जे आ चीज आ प्रमाणपूर्वक वापरवी, उपरांत वापरवी नही.

तथा आनंदादिक श्रावकोनी पेठें, कमेथी श्रावकें मुख्यपणे निरवद्य दोष रहित व्यापार करवो. तेवी जो कदाचित् शक्त न होय तो पण जे व्या पारमां अत्यंत आरंज होय,विवेकीजनोने निंदा करवा योग्य होय एवां श्र त्यंत सावद्य रूप जे मध मिदरादिकना क्रयविक्रयनुं कमे ते तो अवक्य वर्क्षवुंज अने शेष चीजना व्यापारनुं पण प्रमाण करी राखवुं ॥ यतः ॥ रंधण खंमण पीसण, दलणं पयणं च एव माइण ॥ निज्ञपरिमाण करणं, अविरयबंधो जर्र गुरुणो ॥ १ ॥ नावार्थः— रांधवुं, खांमवुं, दलवुं, जरडवुं, इत्यादिकनुं नित्य परिमाण करवुं, शामाटें जे अविरतिनो बंध महोटो हे ॥ १ ॥ हवे सूत्रकार गाथा कहे हेः—

॥ मर्जंमि अ मंसंमि अ, पुष्फे अ फले अ गंधमल्ले अ॥ जवनोगे परिनोगे, बीयंमि गुणवएनिंदे ॥ २०॥

अर्थः-मद्यनेविषे, मांसनेविषे, फूलनेविषे, फलनेविषे, गंध अने माख्य नेविषे, उपनोग अने परिनोगनेविषे, ए बीजा व्रतमांहे दोष लाग्या होय ते सर्वेने हु निंडं बुं इत्यादि पूर्ववत् जाणवुं ॥ २०॥

इहां मिद्रिश वे प्रकारनी है, एक काष्ट्रथी उपजेली अने बीजी पिए ए टले लोटथी उपजेली जाणवी. ते मिद्रश घणा दोषोनुं स्थानक है, अने म होटा अनर्थनी हेतु है, माटे एनुं प्रथममां स्थापन कखुं है. यदाह ॥ गुरु मोह कलह निद्दा, पिर्जव उवहास रोस जयहेजं ॥ मक्कं छुग्गइ मूलं, हिरि सिरि मइ धम्म नासकरं ॥ १ ॥ जावार्थः— जेथकी जीवने घणो मोह उपजे, क्षेश वधे, निष्ठा वधे, घणो पराजव थाय, लोकमांहे उपहा स्य पामे, माटे रोष अने जयनो हेतु एवी जे मिद्रश ते छुगितनुं मूल है. तथा इति लक्का अने श्री ते लक्की तथा मित जे बुिह, अने धमे, तेनो पण नाश करे है. वली सांजलीयें हैयें जे मिद्रशयें करी अंध थयेला एवा साम्बकुमारें देपायन क्षिने हल्यों, त्यारें देपायनें नियाणुं करी अग्निकु मार देवोमां उपजी द्वारिकानो दाह करी समय यादवोनो क्ष्य कर्खो.

हवे मांसना त्रण नेद हे, एक जलचर,बीजा स्थलचर अने त्रीजा खे

चर,ए त्रणजातिना जीव थकी उपजे हे. तेना वली त्रण जेद हे. चमें,रुधिर, श्रमे मांस, ए त्रण जेद पण हे. दवे ते मांस श्रतिष्ठ हे. यदाइ ॥ पंचिंदिय वह जुश्रं, मंसं छ्गांध मसुइ वीज हां ॥ रस्कपरितुलि श्र जर्कं, मामय जणपं कुगई मूलं ॥ १ ॥ श्रामासु श्रपकासु य, विपचमाणासु मंसपेसीसु ॥ सय यंचिय उववार्त, जणिर्त निगोय जीवाणं ॥ १ ॥ जावार्थः—पंचेंडियना वध थकी उपनुं जे मांस, ते केंद्रं हे तो के छुग्धिक हे, श्रश्रचि हो, वीज तम एटले वीदामणुं हे, एवं जे मांस तेनुं जरूण करनारा जे जीव ते राक्स सरखाज जाणवा. ए मांस जे हे, ते रोगनुं करनारं हे, श्रमे छुगे तियं जावानुं मूल हे ॥ १ ॥ काचा मांसमांहे तथा श्रपक जे मांस रह्यं होय तेमां तथा तत्काल हणेला जीवनी मांसनी पेसीमांहे निरंत र निगोदीया जीवोनुं उपजवं श्रमे चववुं थाय हे, एम कह्यं हे ॥ १ ॥ तथा वली योगशास्त्रमां पण कह्यं हे के ॥ यतः ॥ सद्यःसंमूर्जितानत, जं तुसंतानदूषितं ॥ नरकाध्विन पाथेयं, कोऽश्रीयात्पिशतं सुधीः ॥ १ ॥ नावार्थः—तत्काल संमूर्जिम उपजेला श्रनंत जीव तेना समूर्हेकरी दृषित ए मांस हे, नरकमार्गें जातां जीवने ए पापनु संबल हे, ते माटे माह्यों जीव कोण एवा मांसनुं जक्कण करे?॥ १॥ योगशास्त्रनी हितनेविपेषण ज्याख्या हे.

मूलगायामां चकार हे तेयी मधु आदिक शेप अनह्य इच्योनुं तथा अ नंतकायनुं पण यहण करतुं. तिहां प्रथम वावीश अनह्यनां नाम कहे हे ॥ यतः ॥ पंचुंबर च वित्र कर तेया स्वमहीश्र ॥ रयणी नोयणगंचिय. बहुविय अणंत संघाण ॥ १ ॥ गोलवडा वायंगण, अमू णिय नामाणि फूलफलयाणि ॥ तु इफलं चित्रयरसं, वक्कह दवाणी वा वीसं ॥ १ ॥ व्याख्याः—पांच चंबरा तेमां एक वटतृक्क, बीजो पिंपलो, त्री जो चंबरो, चोथी पिंपर, पांचमुं काला चंबरानुं फल, ए पांचे चंबर जाति नां तृक्कनां फलमध्ये मसाने आकारें सुक्का त्रस जीव घणा नह्या होय,

तथा मद्य, मांस,मधु अने माखण ए चार, महाविगय हे तेमां ए विग यना रंग सरखाज बीजा घणा संमूिज्ञम जीवो आवी उपजे हे अने चवे हे. परदर्शननेविषे पण कह्यं हे के ॥ मद्ये मांसे मधुनि च, नवनीते तक्रतो. बिह्निति ॥ उत्पद्य विजीयंते, ह्यतिस्क्ष्मा जंतुराशयश्चेव ॥ १ ॥ सप्तया मे च यत्पाप, मिन्नना जरमसात्कते ॥ तदेतक्कायते पापं, मधुविंडप्रजक्षणा त् ॥ २ ॥ नावार्थः—मद्यनेविषे, मांसनेविषे, मधनेविषे, वासयकी बाहि र काढेला माखणनेविषे, अत्यंतसूच्य जंतुर्जना समूह उत्पन्न थायहे अने लय थइ जायहे ॥१॥ वली अग्निये करी सात गाम बाली नस्म कखायी जेट लुं पाप उत्पन्न थायहे, तेटलुं पाप मधुविंडना नक्षण करवायी उत्पन्न थायहे.

हवे मधना त्रण नेद हे, ते कहे हे. एक माखीनुं बीजुं कुंतीनुं, त्रीजुं चमरानुं, तथा माखण चार जातिनुं हे. एक गायनुं, बीजुं महीषीनुं, त्रीजुं बकरीनुं, चोथुं गामरनुं,ए पांच नंबरां छने चार महाविगय मली नव थयां.

दशमुं हीम ते असंख्याता अप्काय जीवोनुं पिंम हे. अगीयारमुं विष, ते मंत्रें हण्युं हे बल जेनुं एवं थकुं पण नदरमांहे गया पही तिहां रहे ला गंमोलकादिक जे जीव तेनो घात करवानुं हेतु हे, अने मरण समयें महा मोहने नपजाववानुं कारण हे, तेमाटे निपेध करेलुं हे. तथा बारमा करा ते असंख्याता अप्कायजीवमय हे. इहां शिष्य पूहे हे, के असंख्या ता अप्कायजीवो तो पाणीमां पण हे, तेवारें पाणीनो पण निषेध यशे, ते पण अनह्य थाशे ? तेने गुरु नत्तर कहे हे के तुं सत्य कहे हे, पाणी अनह्य हे पण पाणीविना निर्वाह थतो नथी माटे निपेध कथो नथी अने ए कराविना तो सुखें निर्वाह थइ शके हे. वली पाणी पण जो सा मंग्री होय तो श्रावकने फासु पाणी पीनुं घटे हे.

तरमी सर्वजातिनी माटी अनह्य हे जे खावाथी पेटमांहे विकार था य, पिन याय, पांसु रोग थाय, पंचेंडियादिक जीव पेटमां उपजे तेथी म रणादिक अनर्थ उपजे. इहां सर्व जातिनी माटीना यहणथी खडी पण आवे, ते खडी नक्षण करवाथी घणा रोग उपजे, क्यामतादिक दोपनो उ दय करनारी थाय इहां माटीनुं यहण ते उलखवाने सुधादिक पण वर्क वां. वली ते खडी खाधे थके आंतरडां सडी जाय, इत्यादिक अनर्थ उप जे तथा माटी खावावाला व्यसनीने पांसरोगादिक महा रोग उपजे, तेम ज शरीर इबेल थाय, अजीर्णविकार थाय, कास, थास, क्य रोगादि मर णांत कष्टक्षप महा अनर्थ थाय, तथा सचित्त माटी आदिकनुं नक्षण करवाथी असंख्याता प्रथ्वीकाय जीवोनी विराधना थाय.

इहां शिष्य पूछे हे, के खूणमांहे पण असंख्याता प्रध्वीकाय जीवो हे, माटे तेनो पण त्याग करवो जोइयें. तेने गुरु कहे हे, के तें साचुं कह्युं प ण सर्वथा ज़्णनो त्याग करवाथी गृहस्थनो निर्वाह न थाय, तेटला मा टे सचिन ज़्ण नोजनने विषे ढांमवुं. विवेकी पुरुष नोजन करतां जो ज़ ण यहे, तो प्राग्नुकज यहे, पण सचिन यहण न करे, अने जवणनुं प्रा सुक पणुं तो अग्नि प्रमुख प्रवज्ञास्त्रं करीनेज संनवे हे, तेणे पृथ्वीकाय ना जीव हणाय. पृथ्वीकायना जीव असंख्याता अतिसूक्त्रा हे, एवुं श्री नगवती सूत्रना चंगणीशमा शतकना त्रीजा उद्देशानेविषे कह्यं हे, जे वज्रमयी शिजानेविषे खट्प पृथ्वीकायनो वज्रमय जोट करीने तेने एक वीशवार वाटे थके पण केटला एक जीव शस्त्रें फरसे, अने केटला एक जीवनो तो शस्त्रें फरस पण न थाय एटला जीव हे. ए तेरमुं जुण कह्यं.

चौदमुं रात्रिजोजन करतां घणा त्रसजीवो आवीने जोजनमां पडे, मा टे रात्रिजोजन करनारो जीव इह लोकमां इःख पामे, अने परलोकें नर कादिक इर्गतिमां जाय. जेमाटे जो नोजनमां कीडी त्यावी जाय. तो बुदि ह्रणाय, महिका आवे, तो वमन करावे, जू आवे, तो जलोदर थाय. अने जो करोलीयो आवे, तो कुष्टरोग थाय, केश आवे. तो स्वरजंग थाय, जो कांटो खावे, तो गल्लं,तालवुं बींधाय, एटला खवगुण रात्रिनोजनयी याय. निशीयचूर्णिमांहे कह्यं हे के, करोलियाना अंगना अवयवें मिश्रित जोजन करवाथी पेटमांहे संमूर्जिम करोलीया उपजे, एम अन्नमांहे पण मिश्रित सप्पीदिकनी लाल मले मूत्र वीर्यने पडवे करीने मरणादिक इःख उपजे. रात्रिजोजन करतां थकां रात्रे फरता एवा राक्तसादिक आवी बल करे. त या नोजनमां अने नाजनमां की ही कुं शुआदिक जीवो आवी पडे, तथा नाजन धोतां थकां पण कुंथुआदिक जीवोनी विराधना थाय इत्यादिक रात्रिनोजनमां घणा दोपो हो. रात्रिने विषे नोजन करनारनो अवतार, बूड, काक, मार्जार, गृहपद्भी, संबर, सुकर, सर्प्य, वृश्चिक, घरोली, घो, एवा जीवोमां थाय. इत्यादिक वली अन्यदर्शनी पण कहे हे ॥ यतः ॥ मृते स्वज नगोत्रेपि, स्तकं जायते किल ॥ अस्तंगते दिवानाथे, जोजनं क्रियते कथं ॥ १ ॥ रक्तीनवंति तोयानि, अन्नानि पिशितानि च ॥ रात्रिनोजनसक्तस्य, यासे तन्मांसनक्षां ॥ २ ॥ उदकं नेव पातव्यं, रात्रावत्र युधिष्ठिर ॥ तप स्विना विशेषेण, गृहिणा च विवेकिना ॥ ३ ॥ ये रात्रो सर्वदाहारं वर्जयंति सुमेधसः ॥ तेषां पद्योपवासस्य, फलं मासेन जायते ॥ ४ स्कंदपुराणे रुड्

प्रणीतकपालमोचनस्तोत्रे सूर्यस्तुतिरूपेप्युक्तं ॥ एक ज्रुक्तजनानां तु, चाग्नि होत्रफलं नवेत् ॥ अनस्तनोजनान्नित्यं, तीर्थयात्राफलं नवेत् ॥ ५ ॥ रात्रिजोजनकारिणां च कथं नामाचमनेपि ग्रुदिः ॥ यतः ॥ त्रयीतेजोमयो नानु, रितिवेदविदोविडः ॥ तत्करैः पूतमिखलं, ग्रुनं कर्म समाचरेत् ॥६॥ नैवां हुतिर्न च स्नानं, न श्रार्ड देवतार्चनं ॥ दानं वा विह्तितं रात्रो, जोजनं तु विज्ञेषतः ॥ ७ ॥ आयुर्वेदेपि॥हन्नानिपद्मसंकोचश्रंडरोचिरपायतः ॥ अ तोनकं न नोक्तव्यं सूक्त्रजीवादनादिष ॥ ७ ॥ नावार्थः-पोताना स्वज नगोत्रमां मरण थाय, त्यारे स्नतक पाले हे. परंतु दिवसनाथ एवा सूर्य अ स्त थाय त्यारे केम नोजन थाय? ॥१॥ सूर्य अस्त थवापढी जल हे,ते रु धिर समान थाय हे. तथा अन्न हे ते मांस समान थायहे,माटे रात्रिजोज न करनारने यास लेतां मांसनक्षण कच्चा जेटलो दोप थायहे ॥ २ ॥ हे युधिष्ठिर ! रात्रिनेविषे उदकपण गृहस्थें कोइने पावुं निह, तेमज तपस्वी यें तो विज्ञेपेंकरीने पण पावुं निहं ॥ ३ ॥ जे रुडी बुद्धिवाला पुरुषो रात्रिने विषे एक मासपर्यंत सर्वथा आहारनो त्याग करे हे, तेने एकपद्धना उपवा सनुं फल प्राप्त थाय हो.॥४॥ वली स्कंदपुराएमां श्रीरुईं करेला कपालमोचन नामा सूर्यस्तुतिरूप स्तोत्रनेविषे कह्यं हे के ॥ दिवसमां एकवार नो जन करनार प्राणीने अग्निहोत्र यक्तसमान फल प्राप्त थाय हे अने सूर्य अस्त यया पेहेलां जमनारा प्राणी तीर्थयात्राना फलने प्राप्त थाय हे ॥५॥ अने रात्रि जोजन करनारने जलना आचमनथी पण ग्रुद्धि थाय नहिं. क हेलुं ने के ॥ वेदत्रयीमय सूर्य ने, एम वेदना जाएानारा पुरुषो कहे ने. माटे तेना किरणयी पवित्र थयेलां समय ग्रुन कर्मनुं आचरण करवुं ॥६॥ रात्रिनेविषे बादुति करेली होय ते पण खोटी बाय हे, स्नान पण खोटुं बाय है, तथा श्राद अने देवार्चन ए सर्व खोटुं याय है, अने दान दीधेलुं पण व्यर्थ ज्ञायते. जोजनतो विशेषेकरीनेज व्यर्थ यायते. ॥ ७ ॥ आयुर्वेदमां पण जखेलुं हेके ॥ ज्यारे सूर्य अस्त थायहे त्यारे हृदयनानिकमलनो संको च थायहे. एमाटे रात्रिनेविषे जमवुं निहं तथा रात्रिमां सूक्काजीवनुं पण ्नोजन ऋज्ञानपणाची यइ जायहे ॥ ७ ॥

माटे विवेकी जीवे रात्रियें चारे आहार ढांमवा. कदाचित चारे आहा र ढांमी न शकाय, तोपण अशन अने खादिम तो जरुर ढांमवांज. खा

दिम जे सोपारी प्रमुख के ते पण दिवमें रूडी रीतें जयणार्थीत जोड़ रहते ली होय तेज वावरवी. जो एम न करे, तो त्रमजीवोना हिंसा दिक होते व पजे. मुख्यपणे प्रजात अने संध्याकां रात्रिती नजीक वे वे घटिका गंदे जो जन तज्जुं, दिवसने मुखें अने दिवसने अंते रात्रिजोजनना दोपनो जाण अने पुष्यनो करनार पुरुष वे वे घडी ढांमें. ए कारण माटेज आगममां हे सर्वथी जघन्य पश्चरकाण अंतरमुहूर्ज प्रमाण नवकारसी जुं कहां के. कदाचि त केवारेक कोई कार्यने परवश पणे करीने, कार्यनी व्ययतायें करीने,न करी अके तोपण कगता सूर्यनी पढी अने तथा आध्यमता सूर्यनी पहेलांज जमे, जित्रांसुधी तडको देखे तिहांसुधी जोजन करे, नहि तो तेने रात्रि तोजननो दोष लागे. घरमां हे अंथकार यथे यके पण लक्कायें दीवाने अण करवेकरीने त्रसादिक जीवनी हिंसा करवार्थ। नियमजंग थाय मायामुपावादादिक अधिक दोप लागे, जेमाटे हुं न करुं एम कहीने फरी तेहज पापन सेवे, ते प्रत्यक्त मृपावादी जाणवो. मायानी कृतिनो प्रसंग थाय पोतें पाप धरीने वली पोताना आत्माने छिद्यणे मानतो जे चाले ते वमणुं पाप करे, बीजुं वली अक्कानपणानो मद अने मूर्याई थाय. तेनुं पाप जुई जाणवुं.

ए रात्रिनोजनना आराधन अने विराधननी उपर त्रण मित्रनो हृष्टांत कहे हे:— कोइएक गामनेविषे एक श्रावक हे, वीजो जिइक हे अने त्री जो मिष्यात्वी हे, ए त्रणे वाणिया मित्र हे, ते त्रणेजण जैनाचार्य पासें गया. आचार्ये पण रात्रिनोजनना नियम पालवाना गुण अने नियमविराध वाना होप तथा रात्रिनोजनना प्राप प्रकाश्यां, ते सांजलीने श्रावकें रात्री नोजननो तथा कंदमूलादिक अनद्दय अनंतकायनो नियम लीधो, ते पण पोते श्रावककुलनो हे माटे उन्नाहें करीने लीधो. अने जड़कें तो वारंवार विचारीने एक रात्रीनोजननोज नियम लीधो. तथा मिष्यादृष्टितो कदायहने लीधे प्रतिबोध पाम्यो नहीं. हवे श्रावक अने जड़क ए.वे जण कुटुंबसहित रात्रीनोजननो नियम पालेहे. घरना स्वामीने अनुसारें जे प्र माणे घरनो वहेरो घरमां करे तेप्रमाणे घरनां सर्व माणस तेमज करतां हवां. अनुक्रमें आस्तावंत श्रावकतो प्रमादनी बहुलतायें पोताना नियम मनेविषे शिथलता करतो हवो. कार्यनी व्याकुलतायेंकरी प्रजातें अने सांजे जे वे घडी तजवी जोइयें ते वे घडी मांहे पण नोजन करवा

लाग्यो. एम करतां अनुक्रमें सूर्यनो अस्त थाय तोपण ते जमे. अने ते ज इक तो रुडीरीतें जे प्रमाणे नियम लीधुं हे तेज प्रमाणे आराधवा लाग्यो. पही ते जड़क आदिक सर्वजनोयें ते श्रावकने वाखो तोपण ते श्रावक तेने कहे के हमणां दिवसज हे ? क्यां रात्री पड़ी गई हे ? ते श्रावकने अनुसारे तेनुं सर्व कुटुंब पण तेवुंज शिथल थयुं. घरनो खामी बहुल प्रमादी थवाथी कुटुंबपण बहुल प्रमादी थाय,तेथी ते पापनी हिद्दि सर्व घरना खामीने थाय.

श्रन्यदा ते त्रणेने राजायें कांइक कार्य नलाव्युं, ते कार्यनी व्ययताथी प्रनातें तथा मध्यान्हे पण कांइ जमवानुं बन्युं नहीं, त्रणे जण नूख्या र द्या. सांज पड़ी तेवारें बहुकप्टें तिहांथी बूट्या ते जेटले जमवाने श्र्यें घेर श्राव्या एटले श्रमुर थइ गइ, तेवारें नइकनेतो तेना मित्रादिकोयें घणुये क स्तुं पण जम्यो नहीं. यतः ॥ श्रप्यहियं कायवं, जइसक्का परहियंपि कायवं ॥ श्रप्यहियं परहियाणं, श्रप्यहिय चेव कायवं ॥ १ ॥ नावार्थः—श्रा तमाने हितपणुं करवुं, जो शक्ति होय तो परने पण हित करवुं, श्रात्माने हित श्रने परने हित ते मांहे पोताना श्रात्माने तो हित करवुंज. ॥ १ ॥ हवे श्रावकें तो निःशंकपणायें कांइक श्रंथकार याते यके पण इन्नासहित नोजन कखुं, तिहां रात्रिना जमतां यकां जाणे पापनो उदयज श्राव्यो होय नहीं ? तेम ते श्रावकना मस्तकमांथी जूका श्रावी जमवाना जाज नमां पड़ी, ते श्राहार नक्षण करतां पेटमां गइ, तेना योगथी जलोदरनो रोग ययो तेथी तेरोगनी श्राकरी पीडायें मरण पाम्यो, मरीने रात्री जोज ननो नियम विराधवाना पापथी कृर मांजर थयोः तेने कोइ इष्ट कुतरायें कर्द्यना कथो थको मरणपामीने पहेले नरके नारकी थयो.

हवे पहेलो मिथ्यात्वीतो रात्रीनोजननो श्रनिलापी यको रात्रीनोजन करतो एकदा श्राहारमांहे कांक्क सप्पीदिकनु विष पड्युं तेणेकरी श्रांतर डां त्रुदी पड्यां तेथी मरीने ते मांजर थयो. तेने पण कोक्क कुतरायें फा डी खाधो तिहांथी मरी ते नारकी थतो हवो.

अने जड़कनो जीव तो वली रूडीरीतें नियम आराधवायकी सोंधर्म . देवलोकें महर्दिक देवता यतो हवो. हवे श्रावकनो जीव नरक यकी निक लीने दारिड़ी ब्राह्मणनो श्रीपुंज एवे नामे दीकरो ययो. अने मिय्यालीनो जीव पण नरकथी निकलीने तेहज दारिड़ी ब्राह्मणनो वीजो श्रीधर एवे नामे पुत्र थयो. हवे सौधमेदेवलोकें जे जड़कनो जीव देवता थयो है, ते पो उपयोग देइ अवधिक्षाने जोइने एकांते वेहु मित्र पामें आवी तेउना पा हजा जवनुं स्वरूप कही समजावीने तेमने रात्रीजोजननुं तथा अनहा दिकनुं पच्चकाण करावीने ते नियम पालवानेविषे वेहु मित्रोने दृढ करतो हवो ॥ यतः ॥ पापान्निवारयित योजयते हिताय, गुद्धां निगृहित गुणान् प्रकटीकरोति ॥ आपजनं च न जहाति ददाति काले, सन्मित्रलक्षणिमदं प्रवदंति संतः ॥ र ॥ जावार्थः—पापथकी निवारे, हितनणी जोहे, मित्रनुं गुद्धा ढांके, मित्रना गुण प्रगट करे, मित्रने आपदा पहेथके त्यजे नहीं, अवसरें आपे, जला मित्रनुं ए लक्कण हे, एम सत्पुरूप कहे हे ॥ र ॥

ह्वे ते वे नाइन्य माता पितायें तथा खजनादिक सहुयें तेमने रात्री नोजनादिकनो नियम मूकाववाने ऋर्थे दिवमें कांइ पण नोजन खावाने न आपतां हवां. एम करतां ते वे नाश्ने त्रण लांघण थइ त्रीजा दिवस नी रात्रीनेविषे ते नइक देवतायें आवी रात्रीनोजनना नियमनो महि मा वधारवाने अर्थें ते नगरना राजाना पेटनेविपे अत्यंत आकरी वेद ना विकूर्वतो ह्वो, ते वेदना मटाडवाने राजायें पोताना नगरमां जेटला वैद्य हता ते सर्व तेडाव्या. ते जेम जेम खोपध करे तेम तेम देदनानी वृ ि थाय. तेवारें राजायें जोशी तेडाव्या,तेमणे जन्मोत्तरी जोश्ने कह्यं के, हे राजन्! यह नवला है, ते पीड़ा करे है. तेवारें राजा यहनुं पूजन करावतो हवो. ते जेम जेम यहनुं पूजन करे तेम तेम राजाने रोगनी पीडा वृद्धि पामती जाय. तेथी राजायें जूवा सर्व तेडाव्या, तेमणे जूतदो प कह्यो, कोइयें पूर्वजना दोप कह्या, कोइयें कामण दोप कह्या, एम जे श्रावीने जे बतावे ते मुजब सर्व राजा करें तो पण राजाने वेदना वधती जाय, जरापण फेर पडे नहीं. एम करतां राजाना प्राण कंत्रगत थया, अ विमां वृत होमवाची जेम अविज्वाला वधे तेनीपेतें जेम उपचार करें तेम तेम ते राजाने रोग वधे तेथी मंत्रवादी प्रमुख सर्व कोइ हाथ खंखेरीने पोतपोताने घेर गया. हवे मंत्री प्रमुख सर्व नगरना लोक हाहाकार करवा लाग्या. एवामां आकाशथी देववाणी थइ जे जो जो लोको ! सांजलो. रा त्रीनोजनना व्रतनेविषे दृढधर्मी एवो जे श्रीपुंज ब्राह्मण तेना हाथस्परीयकी राजानी वेदना समी जाज़े. अन्यथा कोइरीतें समज़े नही एवी आकाश

वाणी सांनलीने सर्व सनाजन विचारवा लाग्या के श्रीपुंज या नगर मां कोएा ह्यों ? एम प्रधानादिक सर्व विचारे हे एवामां को इएक पुरुष सनामां बोव्यो, के आ नगरनेविषे दारिड्री ब्राह्मणनो दीकरो श्रीपुंज एवे नामें हे, ते रात्रिजोजनना नियमनेविषे दृढधर्मा रह्यो हे, चट्यो नथी. आज तेने त्रीजी लांघण यइ हे. एज एक श्रीपुंज हे, बीजो कोइ नची. एवं सांचलीने प्रधानादिकें ते श्रीपुंजने अत्यंत आदरपूर्वक बहुमान स हित तेंडाव्यो. ते पण तत्काल उत्साह सहित आव्यो अने कहेवा लाग्यो के जो में रात्रिजोजननो नियम त्रिकरण हुई आराध्यो होय तो ए निय मना महिमाथकी राजाना शरीरमां उपजेली सर्व वेदना टलो. एम कही राजाने पोताना हाथें स्पर्श कखो के तत्काल ते राजानी सर्व वेदना टली गइ, तेथी राजायें तुष्टमान थइने श्रीपुंजने पांचशें गामनुं श्राधिपत्य श्रा प्युं, अने श्रीपुंजना कहेवाथी राजादिक तथा श्रीपुंजना मातापितादिक सर्व स्वजनोयें मली रात्रिजोजननो नियम लीधो. पढी ते श्रीपुंज घणा का ल लगण श्रीजिनधर्मनी प्रजावना करतो पांचशें गामनुं राज्य पाली श्री धरनाइनी साथे सौधर्मदेवलोकें गयो, तिहांची अनुक्रमें त्रणे मित्र चवीने मनुष्यपणुं पामी सकल कर्म क्तय करी मोक्त प्रत्यें पामज्ञे. ए रात्रिनोजन व्रतने विषे त्रण मित्रनो संबंध कह्यो ॥

१५ बहुबीज एवां पंपोटादिक ते अन्यंतर पुटादिकें करीने रहित केष ल बीजनूत जाणवां, ते बहुबीज विवेकी यहस्यें वर्जवां. तथा वली अ न्यंतर पुटादिक तथा बीजादिक सहित जे दाडिम टींमोरादिक पण वे परंतु तेमां व्यवहारथी अनह्यपणुं नथी.

१६ अनंतकाय जे हे, ते अनंता जीवना घातपातना हेतु हे माटे अ नह्य हे यतः ॥ नृत्यो नैरकायिकाधिकाश्चनिख्नाः पंचाक्कतिर्यगणो, घ्र क्षायाज्वलनो यथोत्तरमशीसंख्यातिगानाषिताः ॥ तेन्योनूजलवायवः सम धिकाः प्रोक्तायथानुक्रमं, सूर्वेन्यः शिवगा अनंतग्रिणता तेन्योऽप्यनंतासगाः ॥ १ ॥ नावार्थः—मनुष्यथकी नारकी असंख्याता, तेथकी देवता सर्व, तेथ की पंचेंड्य तिर्यंच, तेथकी वेंड्ी, तेथकी तेंड्ी, तेथकी चौरिंड्ी, तेथकी अ प्रिकायना जीव अनुक्रमें एकेक थकी असंख्यात गुणा कहेवा. अप्रिकाय थी एथ्वीकायना जीव समधिक लेवा, तेथी जलना जीव समधिक, तेथी वायुना जीव समधिक, ए सर्वथी सिद्धना जीव अनंतराणा है तेयकी नि गोद वनस्पतिना जीव अनंतराणा जाणवा. ते आगल प्रगटपणें देखाडज्ञे.

१ विक्ति प्रमुख सर्व बोलानुं अथाणुं ते अनद्दय हे, एमां अनेक त्र सजीव उपजे हे, व्यवहारहिनयें जोइयें तो, बोलाना अथाणामां त्रण दिवस पर्यंत जीव उपजे नही, त्रण दिवस पही त्रस जीव उपजे, माटे विवेकी जीवें अथाणुं वर्क्कनुं:

१७ गोलवडां ते काचा गोरस मिश्रित वटकादिक उपलक्ष्णथी काचा गोरस मध्ये कठोल मग, मापादिक जेले थके अनेक सूक्ता त्रसजीव उप जे हो. ते केविल देखे, हद्मस्थ न देखे. जेमाटे संसक्त निर्युक्तिमध्ये कह्यं हो के ॥ सबेसु विदेसेसु, सबेसुवि चेव तह्य कालेसु ॥ कुसिएोसु आम गो रस, जुनेसु निगोय पंचिंदि ॥ १ ॥ जावार्थः—सवला देशनेविपे तेमज सवला कालनेविपे कठोलमां काचुं गोरस जेलवाथी उक्तपए निगोदीया पंचिंदिय जीत उपजे, कठोलनुं लक्ष्ण कहे हेः—जिम्मकपिलजंते, नेही नहु होइ बिंति तं विदलं॥ विलोविहु उपम्नं,तेह जुयं होइ नोविदलं॥ १॥ इति॥

१ए वृंताक एटले वंत्याक अनह्य वे कारण के ए खाथाथी निष्नाने वधारे, काम दीपावे इत्यादिक दोपनी पुष्टि करे, अन्यदर्शनीना शास्त्रमां पण कसुं वे ॥ यस्तु वृंताककालिंग, मूलकानां च नह्कः ॥ अंतकाले विभू हात्मा, न स्मिरप्यित मां प्रिये ॥ १ ॥ नावार्थः—वृंताक, कालिंगह, अने कंदमूलना नह्णथकी अंतसमयें ते मूहात्मानो धणी हे स्त्री! मुफने न ही संनारे. एम नगवान पोते कहे वे ॥

१० जेनां नाम जाणीयं नही एवा अजाण्यां फल फूल तथा पांदडां प्र मुख खाधाथी व्रतनंग थाय, वली कदापि एमां कोइ विपरूप फूलफला दिक होय तो ते खाधायकी वंकचूलपित्तिना सेवकनी पेरें जीवितव्यनो पण नाश करे माटे ए अनह्य जाणवां.

११ तु छफल ते महुडां, जांबु, विलां आदि दे्ड्ने उपलक्ष्णयी तु छ एवां करीरनां फूल, अरणी, सरगवो, महुडां, इत्यादि फल तथा तु छ पांदडां ते वर्षा कालें तांडल, जाजी, सर्व जातिनी नाजीमां घणा बीजना ज्ञस जीव होय माटे ते अनक्ष्य जाणवां. अथवा तु छफल ते कुअली चोलानी तथा मग आदि देड्ने सर्व जातिना कठोलनी फली, सिंगादिकनी फली, पडपोपटा

चणाना उला,जे खाधाची पेटनराइ न याय अने हिंसा तो घणा जीवनी याय.

११ चितरस ते को सुं अन्न, वाशी अन्न, वाशी कठोल, वाशी रो टली, ए आदिकने विषे अने क त्रसजीव आवीने उपजे हे, ते श्रीकेवली जगवान विना बीजा को इ हमस्य देखे नहीं. उपलक्षणयकी पाणीमां रां धेलुं एवुं वाशीधान तथा जे सुखडीनुं जेटलुं कालमान होय, तेटलो काल वीत्या पढीनी सुखडी. तेमज वे दिवस उपरांतनुं दही तथा हाश, तेमां जीवनी उत्पत्ति कही हे, ते शास्त्र प्रमाणयकी तथा केवलीना वचनयकी जणाय. जेम मग अडद चणकादिक काचां गोरस साथें नले, तो तेमां जीवोनी उत्पत्ति कही हे. तेम वे दिवस उपरांतना दहींने विषे पण जाणवी. श्रीहरिन इस्रिकृत श्रीदशवैकालिकनी हृददृत्तिने विषे "रसजास्तक" इत्या दि पातें कहां हे के एमां किमने आकारें अति स्वस्त्रजीव होय, एम धनपाल पंक्तिने प्रतिवोधवाने श्रार्थ तेनो नाई शोजनसुनि आव्यो हतो, तेणे वे दिव सथी उपरांतना दहींने विषे अलताना रसने पुंन डेकरी तडके मूकीने जीव देखा इच्चा, तेथी धनपाल पंक्तित प्रतिवोध पाम्यो.

अनक्ष्यनो निषेध अन्यद्दीनीना ब्रह्मांमपुराणमां पण हे ॥ अनक्ष्यन क्णादोपः,कंतरोगः प्रजायते ॥ नावार्षः—अनक्ष्यना नक्ष्णयकी दोप उप जे, कंतरोग थाय, तथा शातातपोक्त शास्त्रने विषे पण कह्यंहे. अनक्ष्यन क्णो चैव, जायंते कमयोहिद ॥ अनक्ष्यना नक्षणयकी हृदयमांहे कृमि जीवादिक उपजे हे. इति बावीश अनक्ष्यसूह्यं ॥

हवे बत्रीश अनंतकाय आर्यदेशनेविपे प्रसिद्ध हे ते देखाडे हे॥ गाया ॥ सबाइ कंदजाइ, सूरणकंदोय वक्ककंदोय ॥ अझहिनिद्दा य तहा, अझंतह अझकचूरो ॥१॥ सत्तावरी विराजी, कुंआरी तह थोहरी गजोइ य ॥ जंसण वंसकरिझा, गक्कर खूणा य तह जोण एक कहाजी, खिझुहडो अमयवझीय ॥ ३॥ मूजा तह जूमिरुहा, विरुह्म तह टंकिव बूजो पढमो ॥ सूयरवझो य तहा, पझंको कोमजं बिजिया ॥ ४॥ आखू तह पिंमाखू, हवंति एए अनंत नामेण ॥ अन्नमणंत नेयं, जंकण जुत्ताइ समयाउ ॥ ५॥ जा वार्थः—सर्वजातिना कंद अनंतकाय हे, तेमां जेटजी जातिना वापरवामां आवे हे ते देखाडे हेः— १ सूरणकंद ते अरस नामा रोगनो वायुनो हर

नार कंदविशेष, २ वज्रकंद, ३ लीलीहलदर ४ काचुं आईं, ५ नीलो कचू रो, तथा आदानी कचुंबर ६ सतावरी, ७ वरियाली ते नीली वरीयाली कोइक वेलनो चेद, ए कुंञ्रार, एनां पुष्टप्रणाल ञ्चाकारें पत्र हे. ए घोहरी वृक्त, १० गलोनी वेल थाय है, ते ११ लसण कंदविशेष, १२ वंशकारेलां, १३ गाजर, १४ छूणी वनस्पति जेने बाली श्वकी साजीखार नीपजे, १५ लोढक कमलकंद १६ गिरिकर्णिका वल्लीविज्ञेष, १७ किसलय रूप जे पांदडां एटले जे महोटा पांदडां ययानी पहेलां बीज उग्यांनी अवस्था सम यनां सद्ञां पत्र, ते सर्ववनस्पतिनां पत्र उगतिवेलानां अनंतकाय जाण वां १ ७ खरस्रया, १ ७ थेग कंदमूल, २ ७ लीली मोथ, लीली मूसलीकंद, ११ ख्णावृक्तनी ठाल, अपर पर्याय जमरनामा वृक्तनी ठाल जाणवी वी जा अवयव नहीं २२ खिल्लोडो खिल्लुहडा कंद लोकप्रसिद है, २३ अमृ तवेली विज्ञिविशेष, १४ मूलातो प्रसिद्ध है, तेने हांडवानुं महाचारतने वि पे अन्यदर्शनिवयं पण कह्यं ने ॥ श्लोक ॥ जग्रनं रंजनं चेव, पलांडुः, पिनमूलकः ॥ मत्स्यो मांसं सुरा चैव, मूलकस्तुततोऽधिकः ॥ लसण, गाजर, मूंगली, मूलानोकंद, मत्स्यनुं मांस, मदिरा. ए लवेयी मू लकंद अधिक जाएवो. पुत्रेना मांसनुं चक्रण करवुं ते रुडुं पण मूलाकंदनुं नक्षण रुडुं नही. एना नक्षणथी जीव नरकें जाय अने एना वर्कनथकी स्वर्गे जाय १५ नूमिरुदा ते बत्राकार वर्षाकालमां याय बे ए नूमि फोडी ने बाहेर निकले है माटे नूमि स्फोटक नामें प्रसिद्ध है, १६ पनाव्युंधान श्रंकुर फूट्यापढ़ी निकले ते अनंतकाय जाएवो. १९ टांको वधुला शाक विशेष ते प्रथम जगतो थकोज अनंतकाय जाएवो उगेलां फल अनंतकाय जीवाकुल होय, तेमाटे अनंतकाय पण एकवार वेद्योथको जगे, ते अनंत काय नही. १० स्नकर संज्ञायें वेल ते स्नकरवेल अनंतकाय जाणवी. पण धान्यनो वेलो अनंतकाय न जाणवो. २ए पत्यंको शाकविशेष,३०.कुअली आंबली वाधरडां जेनुं मीज बंधाएं नथी एटले लिन बंधाएो न होय त्यां सुधी अनंतकाय जाणवी. ३१ आल्क एटले रताल ३२ पिंमालू.

ए बत्रीश अनंतकायनां नाम कह्यां. ते एटलांज न जाणवां परंतु बी. जां पण ॥ गूढ सिरि संधि पवं इत्यादि सिद्धांतनी गाथायें जेनी शिरा सं धि अने गांव ए त्रण ग्रप्त होय,देखाय नही अने नांग्युं थकुं सरखुं नांगे, तथा वेद्युं थकुं फरी को ते साधारण शरीर कहीयें. तेथी विपरीत होय ते प्रत्येक शरीर जाणवुं. इत्यादिक लक्क्णे युक्त होय ते बांमवां.

तथा ॥ चलारि नरकहाराणि, प्रथमं रात्रिजोजनं ॥ परस्त्रीगमनं चैव, संधानाऽनंतकायिका ॥ १ ॥ जावार्थः—प्रथम रात्रिजोजन, बीज्ञं परस्त्रीगमन, त्रीज्ञं अथाणानी जाति अने चोष्ठं अनंतकाय ए अजह्य ते अचि चथां होय तो पण नरकनां हार कह्यां ने माटे ग्रांमवां.

इहां शिष्य आशंका करे ने के आड़ आदिक वस्तु पोतें अचित्त करी होय अथवा बीजानी पासे अचित्त करावी होय तो ते वावरतां यकां स्यो दोप ने ?

श्राचार्य कहे वे ए थकी निशुक्रपणुं वधे तथा जीह्नानुं लोलतापणुं व धे एटला माटे ते विवेकी जीवे गंमवुं तथा श्रनह्य श्रनंतकायादिक श्र चित्त वावरतां थकां घणी शातानी परंपरायें तप संयमादिकनो पण विश्वे द थाय तेम एकवार एवुं सचित्त करवानुं श्रकार्य करे तो वली बीजी वार पण श्रकार्य करवानुं मन थाय. चक्तंच ॥ इक्केण कयमकर्क्कं, करेइ तपच्चपु णो श्रन्नो ॥ साया बहुल परंपर, बुह्नेचे संजम तवाणं ॥ १ ॥ इति बन्नी श श्रनंतकाय स्वरूप ॥

हवे मूलसूत्रनी गायानुं व्याख्यान करे नेः—पुष्फे इत्यादि तिहां फूल फल च शब्दथकी पत्र मूलादिक फलादिक त्रस जीवें सिहत होय ते सर्व तुष्ठफलनी व्याख्यानेविषे कह्यां ने एमां मद्यमांसादिकनेविषे राजाना व्यापारमां प्रवर्त्तवे करी राजाने परवश पणे करी जे कांइ विक्रयादिक कखो होय जे माटे राज्यव्यापार ने ते, नरकें जवानो हेतु ने माटे ते धर्मी जीवे नांमवो कह्यं ने के ॥ नृपव्यापार पापेन्यः,स्वीकृतं सुकृतं न येः ॥ तान् धूलि धावकेन्योऽपि, मन्येमूहतरान् नरान् ॥ जावार्थः—राज्यव्यापारना पापय की जेणे सुकृत व्यंगीकार न कखुं तेने धृलिधोइयायकी पण व्यत्यंत मूह पुरुष कहेवो एम जाणियें नैयें ॥ १ ॥ व्यधिकारिह्यनिर्माते, मीनपत्याित्र केदिने ॥ शीघं नरकवांनायें, दिनमेकं पुरोहितः ॥ १ ॥ जावार्थः—कोइ ए क व्यधिकारथकी त्रण मासें, देवनी पूजायकी त्रण दिवसें, तेथकी जता वर्ले नरकें जवानी वांना होय तो एक दिवस पुरोहितपणुं ब्यादरे ॥ १ ॥ ए मद्यादिकनो व्यंतरंगनोग सूचव्यो.

हवे बाह्य जोग कहे हे:-गंध ते गंधवास, जे कस्तूरी, कपूर, अगर,

आदिक सर्व जातिना धूपादिक तथा माल्य ने फूलनी मालादिक पृत्पादि क फूलनी पांखडी उपलक्ष्णर्था वेशनी शोना आनरण प्रमुख शेप समय नोग्यवस्तु जाणवी ए विषयरूप हे एनां परिमाण करवां.

एवा उपनोग परिनोग नामा बीजा गुणवतनेविषे अनापयोगें करीने जे उलंघ्युं होय ते निंडुं हुं ए वीशमी गाथानो अर्थ ॥ १० ॥

हवे ए व्रतना वीश अतिचारमांथी प्रथम नोगथकी पांच अतिचार पडिक्रमवाने गाथा कहे हे:-

॥ सचित्ते पडिब हे, अपोल इपोलिअं च आहारो॥ तृज्ञोसिह जिकणया, पडिक्कम देसियं सर्व ॥ ११॥

अर्थः—जेणे सचित्तनो परिहार कथो हे अथवा जेणे सचित्तनुं परिमा ण कखुं हे ते सचित्तनुं परिमाण कथा उपरांत अनापयोगं अधिक खवा णुं होय अथवा सचित्तनो सर्वत्याग कथो होय पही विस्मृत लगें खवाणुं होय ते सचित्त आहार नामे प्रथम अतिचार जाणवो.

२ वृद्धथकी तत्कालनो जतास्यो एवा गुंदर तथा रायण प्रमुख तेमांहे बीज सचित्त हे पण पाकेलां फल हे माटे निर्दोप हे अने एनां बीज स चित्त हे ते काढी नाखीश एवी बुद्धियंकरीने आखुं फल मुखमांहे घाले ते सचित्तप्रतिबद्ध नामा बीजो अतिचार जाणवो.

र त्रीजो अपक ते दाणाने अग्नियं संस्कार करवाथी पण कोइक दा णाने अग्नि परिणम्यो नथी माटे तेवा दाणा काचा रही गया हे अथवा लोटतो अचित्तज हे एवी बुिं व्यंकरीने जरूण करतां अपकोषि नामा त्रीजो अतिचार जाणवो. हवे लोट केटलोकाल मिश्र रहे अने केवीरीतें अचित्त थाय ते कहे हे. चाल्यो आटो अंतरमुहूर्त मात्र पही अचित्त जा णवो. अणचाल्यो आटो मिश्र कहेवाय केम के तेमां धान्यना निषयां प्र मुख अवयव रहे तथा आखो दाणो रहे तेने श्रुखें परिणतनो संजव न थी थयो तेमाटे ते मिश्र कहेवाय ते केटलोकाल मिश्र रहे ते कहे हे:— श्रावण अने जादरवा मासमां अणचाल्यो आटो पांच दिवस मिश्र रहे. आग्र अने कार्त्तिकमां चार दिवस, तथा मागिश्रर पोसमां त्रण दिवस, तथा माघ अने फाग्रणमां पांच प्रहर, चेत्र वैशालमां चार प्रहर, ज्येष्ठ त

या आषाढें त्रण प्रहर अने चाव्यो आटो अंतरमुहूर्न सुधी मिश्र जाणवो तथा सचिन तिल मिश्रित एवा यव धान्यादि रूप ते सर्व सचिन मिश्र आ हार हे तेपण ए अतिचारमांहेज जाणवो.

ध इपक श्राहार ते श्रई शेकाणा एवा पोंहोख, चणाना उता, शेक्या चणा चोखा यव गोधुम स्थूल मंमक फलादिकने प्राग्नक बुद्धियें नक्षण करताने इपकोषधि श्राहार श्रतिचार लागे, ए श्राहारथकी श्रा लोकमां हेपण श्रजीणीदिक रोग थाय वायुनो प्रकोप वधे शरीरें श्रशाता थाय माटे जेटले श्रंशेकरी सचित्तपणुं रहे तेथी रसेंड्यिना स्वादथकी परलो कमां पण एनो कटुकविपाक उदय श्रावे माटे ए ढांमवा ॥

५ तुन्नोषि ते जेना खावाथी पेट जराय नही अने पाप घणुं लागे एवी मग तथा चोलादिकनी फली तेने खावानो विवेकी जने त्याग करवो नहीं तो तथी पांचमो अतिचार लागे हे.

इहां आशंका करे वे के सचित्तनो त्याग कथो वे अथवा सचित्तनुं प रिमाण कखुं वे तेम वतां उपरांत सचित्तनुं नक्षण करवाथी अतिचार न लागे परंतु व्रतनंग थवो जोइयें ?

गुरु उत्तर कहे वे के जेने अति पापनो नय होय ते धए। पञ्चरकाण करे तो ते अचित्तजाणीने नद्धण करे अथवा उपयोग सहित खाय तेमा टे तेने अतिचार लागे परंतु जो जाणी बूफीने खाय तो व्रतजंग थाय.

आशंकाः-तेवारें तो अनंतकायादिकने अचित्तकरी करावीने खाय तो अतिचार शानो लागे एमांतो व्रतनंग पण न थाय.

उत्तर:-एथी अत्यंत जीहा इंडियनी जोजता वधे ते जोजतायकी व तजंग पण थाय, निइंइस परिणाम थाय ते परिणामनिइंइस थवाथी स चित्तने पण वावरे तथा बीजो आगजो कोइ जड़क जीव होय ते देखीने ज डकी जाय जोकमांहे निंदा थाय एटजा माटे विवेकी जीवे अनंतकायादि कने अचित्त करीने तथा करावीने खावां नही ए पांच अतिचार सचित्तप रिहारी आश्रयीने अथवा कत सचित्त परिमाण आश्रयीने कह्या.

एरीते बावीश अनद्दय, बत्रीश अनंतकाय, मद्यमांसादिक चार महा विगय ए सर्वे जो अचित्तहोय तोपण व्रतजंगना नयथकी वावरवा नहीं एम वस्त्रादिकना परिमाणने विषे अनाउपयोगें अधिक परिमाण अतिकां त थयुं होय तेने अतिक्रमादिक कहीयें ते पोतानी बुिंद्यें जाणी लेजो प डिक्रमें इत्यादिनो अर्थपूर्ववत् जाणवो ॥ २१ ॥

हवे ए नोगोपनोगव्रतनेविषे बहु सावद्य जे अंगारकादिक पन्नर कर्मा दान ते जेथकी तीव्रकर्म वंधाय तेमाटे ते श्रावकें ढांमवा एनेविषे अना पयोगेंबरीने जे आच्छुं होय ते पिडक्कमवाने गाथा कहे ढे:-

इंगाली वण साडी, नाडी फोडी सुवक्कए कम्मं ॥ वा णिकं चेवय दंत, लक रस केस विस विसयं ॥ ११॥ एवं ख जंतपीलण, कम्मं निलं चणं च दवदाणं ॥ स रदह तलाय सोसं, असई पोसंच विकका॥ १३॥

अर्थः—इंगाल एटले अंगारकमें ते घणां लाकडां एकतां करीने तेना कोयला करी वेचें तेमज चूनानी जही, इंटना नीजाडा, कुंजार, लोहार, सोनारनां कमें इत्यादि सर्व अंगारकमें जाणवां. ते अंगारकमें करवेक रीने आजीविका करे तेम आगल पण सर्वमां आजीविकानुं जाणवुं.

१ बीज़ं वनकर्म ते वेद्या अणवेद्या वननां पत्र, पुष्प, फल कंदमूल तृण काष्ठ कांब वंशादिक तेनुं वेंचवुं वेंचाता लक्ष्ने वनगन्नादिक करावे वा डी बाग बगीचा करावे ते वनकर्म जाणवुं.

र नाडी कर्म ते गामां घडावे गामानां खंग जे उंध, पर्हूं, पींजणी प्र मुख घडाववां गामा खेडवां ऋय विऋय करवो, ते शकटकर्म किह्यें.

ध शकट, उंट, तृपन, महिप, खर, वेसर, अश्वादिक नाडे जड़ने तेना उपर नार नाखी वहेवरावे तथा पोते नाडे आपे ते नाटिकर्म कहियें.

५ यव, चणा, गोधूम, करडी इत्यादिकने नरडवां साथवो करवो दाल करवी लोट करवो सालमांथी चोखा काढवा, खाण खोदवी, खोदाववी, सरोवर कूपादिकने अर्थें नूमी खोदवी, हल खेडवुं, पापाण घडाववा इत्या दिक स्फोटक कमे कहियें अने योगशास्त्रमां तो कणने दलनादिक करवा ते वनकर्ममां विवद्यां हे.

हवे गायाना उत्तराईं पांच वाणिज्य कहे हे. वाणिज्य शब्द प्रत्येकें जोडवो.

६ आगारनेविपे जइने हाथीना दांत वहोरवा एटजे जिहां घणा हा थीउने मारी तेना दांत एकवा करीने वेचें तेने दांतनो आगर कहियें ते मज घूखडादिकने मारीने तेना नख काढे हंसादिक पद्दी उने मारीने तेनां रोम लीये व्याघादिकने मारीने तेनां चर्म लीये, चामरने ख्रेषें चमरी गाय ना पूढडां कापे, वली शंख, शिंगडां, ढीप, कवडी, कस्तूरी पोइसडादिक ए सर्व त्रसजीवोना ख्रंग है तेने लेवां ते दंतवाणिज्य कहियें.

- ७ जाख, धावडी, गजी, मणशील, हरताल, वजलेप तूंबादिक, पड वास,टंकणखार,साजीखार,साबु,खारादिनो विक्रय करवो ते लाख वाणिज्य.
- ण मद्य, मद्यांग, मधु, मांस, माखण, दूध, दहीं, घृत, तेलादिक रसवा जीवस्तुनो व्यापार ते रसवाणिज्य कित्यें.
- ए दास दासीप्रमुख मनुष्यनुं वेचवुं, गाय, अश्वादिक, पोपट, मेना प्र मुख जीवोनो क्रय विकय करवो ते केशवाणिज्य किह्यें.
- १० विप, अफीण, वज्जनाग, सोमज, शस्त्र, कोश, कोदाजी, जोह, यं त्रादिक शस्त्रादिक हजादिक जीवघातक वस्तुनुं वेचवुं ते विषवाणिज्य क हियें. ए पांच प्रकारनां वाणिज्यने उत्तम विवेकिजनें ढांमवां.
- ११ यंत्रपीलण कमे ते निसातरो, उखल, मूसल, घरटी, घाणी, अर हृह कांकसी प्रमुखना व्यापार तथा तिल इकु सरसव एरंमफलनुं विदा रवुं पीलवुं तेल करवुं तथा जलयंत्र ते अरहृह खेडवा इत्यादिक सर्वने यंत्र पीलन कमे कहियं. अने योगशास्त्रमां तो घरट्टादिक यंत्रनो जे क्रयविक्रय करवो ते विपवाणिज्यमां कह्यो है.
- १२ गाय, वृपनादिकना कान, कंबल, शिंगडां पूढादिकनो छेद करवो, खासी करवा, नाक विंधवां, आंक देवो, गोधो करवो, दाढादिक कापवां, चामडी बालवी, उंटनी पीठ गालवी इत्यादिक सर्वने निर्लोडनकर्म कहियें.
- १३ वनमां घास घणुं होवाथी निलादिकथी शंकाइने सुखे फराय न ही माटे जो बाली नाखीयें तो सुखे फराय एवा हेतुथी अथवा जुनुं घास बाली नाखीयें तो नवुं घास घणुं उपजे तेथी गाय प्रमुख सर्व जनावरनां पेट नराय तेनो धर्म आपणने थाय एवा हेतुथी वन बाली नाखे अथवा खेत्र बालवाथी धान्य साहं नीपजे एम जाणी खेत्रने बाले अथवा कोतु कें करी अरण्य बाले एने दवदान कर्म कहियें. एवं सांनलीयें वैयें जे नि लादिक पोताना मरण वखते एवं कहे वे के महारा मंगलिकने अथें धर्म दीवाली करजो एटले दव लगाडजो ए सर्व दविगदावण्या कर्म जाणवुं.

१४ जे वगरखोद्युं ते सरोवर, तथा इह, अने जे खण्युं होय ते तलाव कहियें इत्यादिकनां शोपण करवां धान्य वाववाने अर्थें तलावादिकमांथी पाणीनी नीक वालवी ते सर इह तलाव शोषण कमे कहियें.

१५ इव्यने अर्थे इःशील दासी नपुंसकादिक ग्रुक सारिका मयूर मार्झी र मर्कट क्रकडा श्वान चूंम स्वरादिक नुं पोपण करवुं ते असतीपोपणकर्म किस्यें केटनाएक एम कहे ने के गौडदेशनी पेनें दासीपोपण करीने ते सं वंधि व्यनिचारनुं जाडुं खाइ आजीविका करे तेपण एमां लेवुं.

ए पन्नरे कमीदानना दोप घणा है माटे उत्तम विवेकी श्रावकें न सेव वां ते सर्व कमीना दोप देखाडे है.

र श्रंगारकर्ममां श्रव्न सर्वमां मुख्य शस्त्र ने श्रव्न कायने श्रारंचे वका य जीवोनी हिंसा थाय माटे श्रावकने श्रंगारकर्म निपिद्ध वे.

१ वनकर्ममां वनस्पति आश्रयीजे त्रसजीवो रह्या हे तेनी हिंसा याय.

३-४ शकटकमें तथा नाडीकमेमां वृगनगढ़क उपर नार वहन वराव तां मार्गमां व्रकाय जीवोनी घणी विराधना याय है

५ स्फोटक कर्ममां दाणा कण दलवा जूमिकानुं खणवुं तेमां वनस्प तिकायनी विराधना थाय तथा पृथ्वी कायनी विराधना थाय तेमज ए वे हुने आश्रित रहेला त्रसादिक जीवोनी मोहोटी विराधना थाय हे.

् ६ ञ्चागरें जइने हाथीदांत चमरीगायना पूठडां प्रमुख त्रमजीवोनां श्रंग लेवामाटे याहक ञ्चावेलो देखीने निलादिक लोक तरत हाथी तथा गाय ञ्चादिक जीवोने मारवा माटे प्रवन माटे दंतवाणिज्य श्रावकने निषिक्ष हो.

9 लाखमां हे घणा त्रस जीव होय लाखनो रस रुधिर सरखो होय तथा धाउडीनी ढाल तथा फूल ए सर्व मिहरानां श्रंग हे ढालमां हे कीडा पड़े हे. तथा गलीतो श्रनेक जीवोनी घात विना नीपजेज नही तथा म एसील, हरताल वज्रलेपमां एण घणा संपातिम त्रसजीवो एना फर सथकी मरण पामे तेमज घणा त्रसजीव एमां श्रावी पड़े तुंबरिकामां ए ध्वीकायादिक जीवनो घात थाय हे. तथा पडवासमां हे घणा त्रसजीव हे तथा टंकणखार, साबु, खारो ए पण बाह्यथी घणा जीवना विनाशना. हेतु हे माटे महादोपरूप हे तथा लाक्हादिकना व्यापारनो दोष मनुस्मृति मां कह्यो हे ॥ श्लोक ॥ सद्यःपतिमांसेन, लाक्ह्या लवणेन च ॥ त्रयहेण शूड़ी जबित ब्राह्मणः क्लीरविक्रयात् ॥१९॥ मांसमां लाखमां लवणमां जीव तरत पडे हे तथा तेना विक्रयथी ब्राह्मण पण त्रण्य दिवसमां ग्रूड् थाय हे अने मांस मिद्रा लाख तथा लवण वेचवाथी ब्राह्मण तरतज पतित थाय हे.

ए रसवाणिज्यमां मधुनेविषे अनेक जीवोनी हिंसा थाय हे वली ए मां अनेक संमूर्जिम जीव उपजे तथा मरण पामे छ्ग्धादिकनेविषे पडेला जीवोनी विराधना थाय तथा वे दिवसनी . उपरांत दहींनेविषे संमूर्जिम जीवो उपजे तेनी युक्ति पूर्वें कही है.

ए केशवाणिज्यनेविषे हिपद चतुष्पद जीवोने नित्य परवश पणे राख वाना दोष तथा ते जीवोने वध वंधन कुधा तृपादिकनी वेदना जोगववी पडे इत्यादि दोष थाय हे.

१० विषवाणिज्यमां शिंगडी वत्सनाग, हरताल, सोमलखारादिक वि प अने सर्व शस्त्रादिकने विषे जीवहिंसा प्रत्यक्त देखाय हे पाणीमां पला लेली हरतालनेविषे मिक्कादिक जीव मरण पामे हे, सोमल खाधाथी बालकादिक जीव मरण पामे हे॥ उक्तंच ॥ कन्याविक्रयिणश्चेव रसविक्र यिणस्तथा ॥ विषविक्रयिणश्चेवनरानरकगामिनः ॥ कन्याविक्रय करनार, रसविक्रय करनार तथा विषविक्रय करनार ए सघला पुरुषो नरकगामी हे.

११ यंत्रपीलण कमें तो अनेक त्रस जीवोनुं वधकारि हे. खांमबुं, पी सबुं, चुल्लो, पाणी राखवानुं स्थानक, वासी कं काढबुं ए पांच हिंसाम्नी यहस्थने कमें बंधाय वली घाणी तो महोटा पापनुं हेतु हे एवं लोकिक शास्त्रमां पण वर्णव्युं हे जे दश कसाइ जेवो एक घांची, दश घांचीना जेवो एक कलाल, दश कलालना जेवी एक गणिका, तथा दश गणिका सरिखो एक राजा पातकी जाणवो. इति यंत्रपीलन कमें.

१२ निर्क्तिवनकर्म ते गाय अश्व उंट इत्यादिक पंचेंडिय जीवोने कदर्थ ना करवी कष्ट उपजाववुं ते महापापनुं हेतु वे.

१३ दवदेवाथकी अनेक कोट्यावधि जीवोनी विराधना थाय.

१४ सरोवरादिकनुं शोषण करतां पाणीना जीवो तथा पाणीने श्राश्रि त रहेला मञ्जकञ्चपादिक श्रनेक जातिना त्रसजीवोनो विनाश थाय माटे एमां ढकायजीवनी हाणी थाय.

१५ असतीपोषें दासादिक जे पापकरे तत्संबंधि पापनी वृद्धि थाय.

एवा प्रकारनां बीजां पण अनेक जातिनां खर कमे वे जे निर्दयी जो कने उचित वे ते सर्व वर्क्जवां. जेम के कोटवाल, गुप्तिपाल, सीमपालादि कना व्यापार ते खु शब्दें करी सुश्रावकें निश्चे वांमवा. ए पन्नरे कर्मादान नेविषे अनानोग अतिक्रमादिक अतिचार जे लाग्यो होय ते पडिक्कमुं बुं.

ए व्रत यालनारो प्राणी सर्व अंगे दिव्य नोग पामे, नीरोगीपणुं अ नीष्टनो संयोग, मनुष्यनां सुख अने देवतानां सुख तथा चक्रवर्तिनी पद वी, इंइनी पदवी नोगवी सकल कमे क्य करीने मोक्तना सुखनो नोगी थाय.

वली जे प्राणी ए सातमुं व्रत श्रंगीकार न करे श्रथवा श्रंगीकार करी ने वली विराधे तेने घोर श्राकरा रोग उपजे श्रने इप्टवस्तुनो वियोग था य तथा श्रनिष्टवस्तुनो संयोग थाय तथा नोगांतराय कमे बांधे, मरीने नर कादिक धुर्गतिनां धःख नोगवे,घणो संसार रक्त इति द्वाविंशति गाथा २२

हवे ए व्रतने आराधवा अने विराधवा उपर मंत्रिपुत्रीनो संबंध कहें के:—अंग नामा देशने विषे चंपा नामा नगरी है ते नगरीना लोक अत्यं त दयावंत है पारका अवगुणने बोलवामां मूंगा है, पारकुं धन लेबाने पांगलां है, परस्वी जोवाने आंधलां है, जे नगरीयें बोजी जुनी नगरीयोंने दासीरूप करी है ते नगरीमां प्रतापे करीने सूर्य सरखो अने राज्यनार उपाडवाने शेपनाग सरखो एवो इंड् समान सहस्रवीर्य नामे राजा राज्य करे है. ते राजाने बहुमाननुं पात्र अने जेनी बुद्धि मापी शकाय नही ए वो बहुबुद्धि नामें प्रधान है.

अन्यदा त्यां प्रथ्वीनो प्रलय करतो एवो प्रजालोकना अनाम्यने योगें करी जाणीयें ठठो आरोज वेठो होयनी? एवो अत्यंत आकरो कोपें चढेला सर्पनी माढना विप जेवो अनिष्ठ एवा विपनो वर्षाद वर्षतो हवो. तिहां वीजली पण अनिष्ठ विप सरखीज यती हवी तेणे करीने धान्यनी संपदानो नाश यतो एवो कराल आकरो जाणीयें इष्कालने करतोज हो यनी? एवं फेर सरखं वर्षादनुं पाणी पड्युं तेथी करीने जेम दावानलें करी वननेविपे वनस्पति सर्व निष्फल थइ जाय घास प्रमुख सर्व बली जा य तेम वरसादना पाणीयें करी धान्य, वनस्पति, घास अने फल प्रमुख सर्व बलीगयां. लोक तथा ढोर अने पशु पंखी प्रमुख पोताना मुखमां घा ले एवी कांइ वस्तु रही नही. पत्र, पुष्प, फल चण प्रमुख सर्व फेर जेवां

हावाथी खावाने अयोग्य थयां. तेमज कूवा, तलाव, वावडी अने नदी प्रमुखनां पाणी पण सर्व फेरनूत थई गयां. तेथी लोक अने जनावर प्रमुख क्य पामवा लाग्यां एम सर्व लोक आकुल व्याकुल थयां कारण के जेवारें इष्काल पडे हे तेवारें तो लोक तथा होर प्रमुख वनफल तथा फूल पांदडां कंदमूलादिक खाई पाणी पीने काल काहे अने जीवतां रहे पण आहीं तो पाणी सुधां सर्व फेरनूत थईगयां हे अने जेखाय के पिये तेम रण पामे तेथी कोई जीववानो चपाय रह्यो नही.

एम घणा लोको तथा जनावरोनो क्य थतो देखीने ते वखत जे पुख्य वान गृहस्य हता ते सर्व लोकनी तथा ढोरनी अने पंखी प्रमुखनी खबर राखवा लाग्या. घर मांहेलां टांकानां तथा कृवानां पाणी अने घास चूणो प्रमुख के जे घरमां हतां जेनी उपर वर्षादनो ढांटो नही पड्यो हतो तेवी निर्विप चीजोथी सर्व जीवोनो निजाव करवा लाग्या. एम करतां के टलोएक काल गयो पढी जेवारे ते इःखे पामवा योग्य घरना टांकाप्रमुखनुं पाणी पण थइ रहेवा आव्युं तेवारें तृपायें पीडायेला लोको ते फल फूलादिक तथा विपमिश्रित इष्ट जलने पीवा लाग्या के तरतज ज्वर कुष्ट कास श्वास च्रमादिकना रोगथी मरण पामवा लाग्या.

एम घणा लोकोनो संहार थतो देखीने राजायें जोशी, निमित्तिया, मंत्रवा दी, तंत्रवादी, वैद्य, जूवा, वेदीया, पुरोहित, ब्राह्मण प्रमुख सर्व पाखंमी ने तेड्या अने तेमने राजा पूठतो हवो. तेवारे ते सर्व कहेता हवा के नवो वर्षाद थायतो कव्याण थाय बीजो कोइ उपाय नथी. तेवारें राजा मंत्री प्रमुख सर्व एकठा थइ विचार करवा लाग्या पण कोइ उपाय सूजे नही. केटलाएक लोक तो गले फांसो खाइने मरवा माटे तैयार थया जीववानी आशा होडी दीधी एवो उपइव वर्चाइ रह्यो. होर तथा माणसनो इत्यथ वाथी जाणीयें कट्पांतकाल तिहां आव्यो होयनी? एम दीसवा लाग्यं.

एम केटलाक दिवस गयानंतर एकदा प्रनातकालनेविषे राजसनामां राजा, प्रधान, सामंत, वागीया, पटाचत, सेनाचत, सेनापति, प्रमुख सर्व बेवा बे. एवामां पूर्वदिशानो वनपाल हर्षनर आवीने सिंह्हारें चनो रह्यो बडीदारे जइने राजाने कह्युंके स्वामी! पूर्वदिशानो वनपाल आव्यो बेतेने शी आज्ञा बे. राजायें मांहे आववानी आज्ञा दीधी के वनपालकें आवी वधामणी दीधी जे हे महाराज! पूर्वदिशानुं वन सर्वक्तुनां फल,फूल,पांदडां, धान्य, वनस्पतियें करी सर्व फल्युं फूल्युं हे ते एवं गीच यइ गयुं हे के मांहे सूर्यना किरणो पण प्रवेशकरी शकता नथी अने पूर्वदिशाये सुगाल ययो हे. एम चारेदिशाना वनपालकोये आवी सुनिक्तनी वधामणी आपी. तेमज केत्रोना अधिपतियोयें आवी राजाने कह्युं के महाराज! केत्रनेविपे धान्य बहु नीपज्युं हे एमज खलाना स्वामीयोयें कह्युं के खलामां धान्यना ढगला यइ पड्या हे एमज खलाना स्थानक जे कूप, वाच्यो, नदी, इह, सरोवर, त लाव, प्रमुखना रखवाला प्रमुख, सहुकोइ हर्पनर यका आवी आवीने कहेवा लाग्या के जलने स्थानकें अखूट जलनराइ गयां हे. एम वीजा गामडांना तथा नगरना लोको सर्वे साथे एकेकालें आवीने राजाने वीनवता हवा.

ते सांनजीने राजाने तथा सर्वे जोकोने अतिशय अदितीय एवा आ नंदनो रस प्राप्त थतो ह्वो. जे कोइथी कह्यो जाय नही. तेम रोग शोग पण सर्व एकजवारें जतो ह्वो सर्वजोकने कोइ अपूर्व अतिशय शीतज्ञता थती ह्वी सर्व हर्ष पाम्या थका सर्वने जीववानी आशा थइ तेथी सर्व जोक अदितीय महोत्सव करवा जाग्या एवं समृद्धिसुख प्राप्त थयुं. तेना कारणनी कोइने खबर पडी नही.

ए श्रकस्मात् सुखनुं कारण ते राजा प्रजा सर्व एम समजवा जाग्यां के श्रापणा सहुना नाग्योदयथी थयुं हे. एनो बीजो कोइ हेतु नथी, बली नगरना तपस्वी कहेवा लाग्या के श्रमारी तपस्याना प्रजावथी सहु लोक सुखी थया. केटलाएक कहेवा लाग्या जे श्रमे धर्म करीयें हैये तेना प्रनावथी सर्वने सुख थयुं. एमज थ्यानकरनारा थ्यानना प्रजावथी, योगीश्वर पोता ना योगना माहात्म्यथी, मंत्रवादी मंत्र जापना महिमाथी, तथा देवदेवी योना सेवको पोतानां देवदेवीनां श्राराधनथी, जोशियो यहनी प्रजाथी, एम सर्वकोइ पाखं ही पोतपोतामां श्रनिमान धरता थका राजा श्रागल श्रावी श्रावीने कहेता हवा के श्रा श्रमारा श्रमुक कर्तव्यना माहात्म्यथी सर्वलोकोने सुख थयुं हे. ते सांनली राजाये सर्वने कह्युं के तमे सर्व बोलो हो तेमां कोण सान्नुं श्रमे कोण छुठुं हे हुंतो तमो सर्वेने छुठा मानुं हुं.

पढ़ी एवातनो राजाना चित्तमां संशय उपन्यो जे को इज्ञानी आवे तो संशय टले, एकदा राजाना तथा प्रजाना जाग्योदयथी वेत्रीयें आवीने क

ह्यं के हे महाराज! कोइक वधामणीयुं आव्यं हे एवामां आकाशमार्गयी स नानेविषे उद्योत ययो राजानी आङ्गायकी वधामणीये आवीने वधाम णी दीधी के हे राजन! आपणा देवरमणनामा उद्याननेविषे श्रीश्रुतसा गर नामे केवली नगवान समोसखा हे घणा देव देवी तेमनी सेवा करे हे देवतायें सोनानां कमलनी रचना करी हे तेनी उपर वेहा यका धर्मनी दे शना आपे हे. एवी वाणी सांनली राजानी उहकोडी रोमराजी विकस्वर यइ. वधामणीयाने वधामणीनुं दान आपी संतोपीने चतुरंगी सेना लइ सर्व प्रजालोक सहित देवरमण उद्यानें आवी केवलीनगवानने विधि सहि त वंदन करी धर्मदेशना सांनलीने पही राजा संशय पूहवा लाग्यो हे न गवन! सर्वलोकने सुखसमृदिनो हेतु शो थयो.

केवली वोव्या हे राजन ! बहुबुद्धि प्रधानने घेर पुत्रीनो जन्म ययो हे ते प्रधाननी पुत्रीना पाढलानवना पुष्यवद्यना महिमाथकी सर्वलोक सुखी यया हे, एवं सांचली आनंदित यका राजा फरीयी प्रधाननी पु त्रीनो पावलो नव पूबता हवा. तेवारें केवली कहेता हवा; नइनगरनेविपे नइ एवं नामे महोटो व्यवहारी रहेतो हतो. तेनी नहानामे नार्यानी सु जड़ा नामे दीकरी हती ते लक्कीना निधाननी पेवे सर्वने माननीय हती. एवी ते श्रावकनी पुत्री जिनधर्मी हती तोपण जेम चंडमा क्ररंगने लांह नेंकरी कलंकी थयो तेम ते कोइक कर्मना उदयथी बालपणायीज रसेंहि यना लोलुपीपणायेंकरी स्वेज्ञायें सर्वे अनद्दय वस्तु वावरती. पुत्रादिक जो उन्मार्गे जाय अने तेने तेनां मातापितादिक शीखामण न आपे तो ते मा तापिताने दोप लागे. जेम गायने मार्गे न चडावे तो गोवालीयानो वांक गणाय. तेम तेने मातापितादिकें घणुंये वारी तोपण बाहेर जइने अन इय खाइ आवे, ते जोइ मातापिता तेने बाहेर जवा न देतां हवां. तोपण जेम व्यसन पड्युं टले नही तेम ते कुमरी कोइ वाणोतरने हाथे ठातुं मगावीने पण अनद्वय खाधाविना रहे नही अनंतकाय सचित्त अचित्त कांइ मूके नही एवी विवेकेंकरी शून्य यइ, धर्मिष्टना घरनेविषे कोइ अ धर्मी होय तो धर्मीनी शोजा रहे नही तेम सर्व कुटुंबने अनिष्ट थइ पडी.

पढ़ी तेनां मातापितायें कोइक महोटा नाग्यवंत श्रदावंत एवा व्यव हारीयाना पुत्रने परणावी तोयपण ते पोतानो स्वनाव न मूकती हवी, ए आतमारूप राजा तेणे घणाकालनी पीधी एवी जे मोहरूप मिद्रा तेथ की मूढथयों थको पोतानुं चाकर जे मन तेना पण चाकर जे इंडियादिक तेणे वली आत्माने पोतानो चाकर कस्बो हे. अहह जुड़े कहेवों आश्चर्य है! व्यसनी एम जाणेजे हुं हानुं व्यसन सेवुं हुं ते मुजने कोण जाणी श करो, पही ते कुमरी श्वसुरादिकथी हानां अजह्य अनंतकायादिकनां जहूण करे तो पण श्वसुरादिक नेनुं रूपट जाण्युं पापनुं कर्तव्य हानुं रहे नही. ते थी तेमने पण अनिष्ट थइ पड़ी. सर्व कोइने गुण उपरे राग उपजे परंतु गुणविना कोइने राग उपजे नही ॥ यतः ॥ गौरवाय गुणाएव, इातेरामंब रोनतु ॥ वानेयं गृह्यते पुष्पं, अंगजस्त्यज्यते मलः ॥१॥ जावार्थः—गुण हे तेज महोटाइनुं कारण हे. पण जातिना आमंबरयी शुं थाय ? गुण हे तो वनमांथी पुष्पोने लोको यहण करी आवे हे अने पोताना अंगमां हे उत्पन्न थयेलो मल तेमां गुण नथी तो तेनो त्याग करे हे ॥ १ ॥

पढ़ी कोइकरीतें तेनां मातापिता ते पुत्रीने पोताने घेर आए। ने युरु नी पासें तेडी जाव्यां. गुरुयें तेने अनद्दय अनंतकायनां पाप देखाडी मा तापितादि सर्वसंघमध्ये कांइक ज़ङ्का कांइक पापनुं नय देखाडी कांइक दाहिएयताची सर्वनी समझ गुरुयें तेने अनद्य अनंतकायनी अगड करा वी. ते व्रतमां तेने दृढ करवामाटे तेनां मातापितादिक तेनी प्रशंसा क रवा लाग्यां अने गुर्वादिक पण अत्यंत प्रशंसा करता हवा. ते पत्री ते सु नइाने सासरे मोकली तिहां तेने ते पच्चकाण महाकष्टनूत ययुं जाणेजे मुजने सर्वे मजीने बंदीखाने नाखी ने एम समजती हवी एम केटला एक दिवस नियम पाट्युं. एकदिवसे ते सुनड़ा कोइक गृहस्थने घेर कार्य विशेषे गई तिहां कुञ्चली ञ्चांवलीनं रुडीरीते मसालामां नाखी सुखादिष्ट करीने तैयार करी मूकेली इती तेने देखीने सुनडानुं मन चलायमान थ युं अने विचाखुं जे ए अचित्त हे एमां जीव तो कोइ हे नही माटे एने वावरतां शो दोप हे, एम जाणती ते आंबली ते एो वावरी पही जाएो म हारे अगड वेज नही एवीरीते अनंतकाय अनद्यने अचिनकरी निःशंक पणें खावा लागी. रहेते रहेते अनंतकाय अनद्य अने सचित्तने पण निः शंकपणे वावरवा मांमघां. अहो अहो जूर्ड रसेंडियनी गृहता कहेवी हे!! ॥ यतः ॥ करोत्यादौ तावत्सवृणहृदयः किंचिद्युनं, दितीयं सापेक्वोविमृश

ति च कार्यं च कुरुते ॥ तृतीयं निःशंकोविगतपृणमन्यत्प्रकुरुते, ततः पापा न्यासात्सततमग्रुजेषु प्ररमते ॥ पहेलां दयासहित हृदय बतां कांइक घोडुं अग्रुज करे, बीजीवार काइक विचार करतां ने अपेक्षा करतां कांइक करवा योग्य अने नहीं करवा योग्य एवा कार्यने करे, पढी त्रीजीवार निःशंक यइने तमाम दयाने बोडीने अग्रुज पापात्मक कर्म करे बे,त्यार पढी पाप करवानो अन्यास पडी जवायी निरंतर अग्रुजकर्मनेविषे अत्यंत रमण करे बे. अर्थात् निर्नय यइ पापमां रची मची रहे बे ॥ १ ॥

एम ते सुन्हाये रसेंडियने वश थई जवाथी, पोतानुं अनियहरूप क व्यवहरू समूल मांहेथी उखेडी नाख्युं. वली पण आगलनी पेतें सर्व अन ह्यवस्तु वावरवानुं चालु कखुं. अहो इदीत रसलंपटपणुं जुवो. ते सुन्हा सर्व अनह्य खावाने राह्स सरखी थई अथवा दावानल सरखी थई तेने कोई वस्तुनी तृतिज थाय नही तेणे मर्यादा लक्कादिक सर्व मूक्यां मावित र तथा थसुर ए बेहुपह्ननेविषे विद्युद्ध हे तो पण निःशंकपणे धर्मरहित हो वाथी जेम दीवाथकी उपजेली मश सर्वेने स्थामताकरे तेम करती हवी.

वली कोइ एक दिवसे सुन्न सासरेषी पीयरीये जाती हती त्यारें मा
भैने विषे क्यांएक वनमांहे अजाण्यां फल पडेलां हतां ते देखी तेने खावा
ने माटे उजमाल थइने ते फलनुं आस्वादन करवेकरीने ते कुमरी तत्काल
वेद्ध प्रकारना अत्यंत कडुक विषाक हे जेना एवा किंपाकनृक्ष्मा केर जेवा
फलने नक्षण करीने ते योवनवयमांज शीघ अकाल मरण पामीने पहेला न
रकनेविषे गइ पिताना घरसुधी पण पहोची नही एम ते आहीं पण सर्वने
अनिष्ट थइ अने परलोकने विषे नरकें गई तिहां कडुकविपाकने जोगवी
तिहांथी मरीने महोटा मत्स्यपणे उपनी. तिहांथी मरीने वीजा नरकने
विषे उपनी. तिहांथी निकलीने जुंम सूकरी थई तिहांथी रासनी थई एम
घणा नव रफली सर्वेस्थलें नूख तृषा अने रोगनी वेदनायेंकरी महाकदर्थ
ना जोगवती रसनाने वश्यवाथी घणा काल रफलती अनर्थने जोगवीनें ए
कदा लक्षीपुर नगरनेविषे धनवंतमां मुख्य एवा लक्षीधर नामे शेव तेनी
लक्षीवती नामे जार्या तेनी जवानी एवी नामे पुत्रीपणे आवी उपनी.
तिहां जन्मतांज तेने उधरस, श्वास, ज्वर, दाह, कुक्तिशुल, नगंदर, हरस,
अजीर्णता, दृष्टिशुल, पृष्ठशुल, अरुचि, खरज, जलोदर, माथानी वेदना,

काननी वेदना, कोढरोग ए सोल महोटा रोग जे आगममांहे प्रसिद्ध हे ते सर्व तेना शरीरे उपन्या महोटी घइ त्यारे ते रोगने लीधे महा पीडा जो गवती हवी तेनां माता पिता घणा उपचार करे पण रोग उपशमे नही.

एम ते शृंगारना साम्राज्यथी रहित अने निरंतर रोगेंकरी शरीरमां सं तापित एवी महा इःखणी थइ तेना घरनी पासे एक उपाश्रय हतो ते मां अवाजी हतां तेमनी पासे ते नवानी गइ त्यां साध्वीने वांदीने अ त्यंत आदर सहित पूढवा जागी के महाराज! महारा जन्मनो रोग जा य एवं कोइ तमारी पासें उसड होय तो मने आपो. तेने आयोंगें कहां महारी पासे धर्म ओषध हे तें पाढ़ नवें पापरूप हक वाव्यां हे तेनां फल तुजने हमणां उदय आव्यां हे, ते कर्मना विपाकनो क्य थवाधी रोगवि पाकनो पण क्य थाशे ते जेम अिश्व इंधणांने बाले हे तेम श्रीजनधर्मरूप ओषध्यी रोगनो नाश थाय. जे मन वचन कायानी विश्व हियें धर्म आ राधन करे तो जेम सूर्यथी अंधकार नाश पामे तेम इहंजव परनव संबंधि इःखना राशिनो क्य थइ जाय, धिःकार हे रसनानी गृहताने के, जेणे करी नियमनंगना कटुक विपाकरसने पण कोइ विचारता नथी.

एवी साध्वीनी वाणी सांजली जवानीये पुढ्युं हे महाराज! में पूर्वें शां पाप कखां ह्यों के जेयकी आ असाध्य रोगेकरी पीडाउं छुं. ते सांजली साध्वीजी त्रणकाने सहित हतां माटे तेना पूर्वज्ञवनो वृत्तांत सर्व कहीने कह्युं के ते इच्छत जोगवतां शेप रह्युं ते आजवमां पण जोगवे छे हे जड़े! बीजी चार इंडियो तो मात्र यौवन अवस्थामांज जीतवी इर्जंच छे परंतु ए क रसेंडिय तो त्रणे अवस्थामां जीतवी इच्कर छे ते वक्रशिक्टित घोडानी पेरें अतिशयें इःखे दमवा योग्य छे ते रसेंडियना आकरा उदय तत्काल फलने देखाडे छे, माटे अहो जव्यो! तमे रस इंडियने जीतवाने घणो उदम करो जो ए एक रसना इंडी धराइ होय अने बीजी चार इंडीयो छुखी होय तो ते सर्वइंडियोने ए रसनाज उन्मादता पमाडे छे.

एवं सांजली जवानीने जातिस्मरण उपन्यं तेवारें प्रतिबोध पामीने स मयपणें नोगोपनोग व्रत लक्ष्ने समस्त सचित्त नोजनने ढांमती हवी तथा अचित्त वस्तुमांहे सर्व अनद्द्य वस्तुनो त्याग कछो. नद्द्यवस्तुमां पण क लमशालिनी जातिनी शालि तथा कठोलमध्ये मग अने अडद ए बे मोक लां राख्यां तथा शाकपण कठोलनुंज खावुं बाकी सर्व त्याग कखुं घृतमांहे गायनुं घृत तथा गायनी ढास मोकली राखी बाकी सर्व त्याग कखां तथा फलमध्ये दूधी आमलां अने सोपारी खावी बाकी सर्वनो त्याग कखो. तथा त्रण उकाले उकलेलुं पाणी वावरवुं शेष सर्वजलनो त्याग, इव्यमां चार इव्य मोकलां राख्यां एवीरीतें सुखे धर्मपालती पोतानो निर्वाह करे ढे तेने नित्य श्रीजिनधर्म आराधतां थकां केटलोएक काल गयो. जैनधर्मनेविषे दृढधर्माथइ देवता दानव इंड नागेंड प्रमुख कोइनी चलावी चले नही.

एकदा कोइ समकेतदृष्टि देवतायें सनामां बेठे थके पोताना मित्र मि प्याली देवता पासें नवानीनी प्रशंसा करी के आजने समये नरतद्देत्रने विषे कोइ नवानी सरखी दृढधर्मी श्राविका नथी ए पोताना प्राणजतां कबूल करे पण कोइनी चलावी चले नही ए वातने ते मिण्याली देवता अणसदृहतो थको तेनी परीक्षा करवाने अर्थे एक परदेशी माह्या विचक्त ए एवा वैद्यनुं रूप धारण करीने ते नवानीने घेर आब्यो तिहां अनुकं पायें सहित थइने कहेवा लाग्यो के हुं व्याधिना समूहनो वैरी हुं माटे त हारो रोग जडामूलथी काढी नाखीश हे वत्से! हुं कोइ तहारा नाग्यें बां ध्यो थकोज इहां आब्यो हुं. अने ताहारीमाटे अमृतहक्तनां फल लाब्यो हुं तेने तुं आरोगीने वली बीजुं अमृत सरखुं अति शीतल मीतुं पाणी मं त्रीने आपुं तेनुं पान करीने मूलथी रोगनो समूलो नाश कहा. वली आ नवमां फरीने नवो रोग थाशे नहीं, शरीरमां सुखनी वृद्धि थाशे.

एवं वैद्यनुं वचन सांनलीने नवानीनां माता पिता नाइ प्रमुख सर्व श्र धिक श्रानंद पाम्यां. श्रने ते जेवामां कांइक बोलवानुं करतां हतां एवा मां तो नवानी बोली हे वैद्य! श्रा नवनेविषे ए वे वस्तु माहरे श्रक हपनीय ने माटे ए बे वस्तु मूकीने महारे कहपनीय वस्तु होय तो तुं क हे एवं सांनली वली वेद्य बोल्यो तें कह्यं ते सत्य ने तथापि श्रोपधने श्र थें श्रकहपनीय कांइ नथी श्रोपधने श्रथें तो महोटा क्रियो पण वापरे ने तो तुजने एमां शो दोंप ने ? जो स्वादने श्रथें वावरती होय तो दोप लागे.

एवं वैयनुं वचन सांजलीने जवानी हसीने धर्मना रहस्यनी वाणीयें मुनिनी पेतें बोलती हवी के अधर्मथकी उपनी जे व्याधि तेना विनाशने अर्थे सफल ते हेतु जेहनो एवो निश्चें धर्मज ते. ते बीजरूप धर्मथकी फ ल पामवानो अर्था जीव ते केम बीजनो विनाश करे ? एवो मूढ कोण होय! ते कारणमाटे जेम सूर्य पश्चिमदिशायें उगतो नथी ते कदाचित् उगे तो पण हुं निषेधी वस्तुने अंगीकार करुं नही एम तुं निश्चयथी जाणजे.

तेवारें वैद्य बोद्यो ए स्वेज्ञाचारिणी कदाग्रहें ग्रहीतचित्तवालीने ग्रं क हीयें ए तो पोताने पण जाणती नची अने फोकट आत्माने बाले हें. ए तो कांइ उत्सर्गमार्ग अने अपवादमार्गनी वात पण जाणती नथी. यतः ॥ सवन्न संजमं संजमार्च, अप्पाणमेव रिकका ॥ मुवच्च अश्वायार्च, पुणो वि सोह। नया विरइ ॥ १ ॥ नावार्थः-सर्वथी संयमने राखवो अने संय मथी आत्माने राखवो रोगरूप घणे करीने शरीररूप लाकडामां खवाइ गयुं वे रुडुं अंग जेनुं एवी तुं व्याधियें प्राणने केम धरी शकीश ? एवा रोगें करी ने केम आखो जन्मारो निकलज्ञो ? केम ज्ञरीरनो निर्वाह थाज्ञे ? इत्यादिक अनेक प्रकारनां वचने करीने वैद्यें तथा खजनादिकें तेम वजी नगरना जोकें तेने समजावी तो पण जेम पाणी कल्लोलें करी तटने चेदवा जाय पण पन्नरनो तट जेदाय नही तेम जवानीना पण मनरूप वज्रनो तट वे वैद्य ना वचनरूप कल्लोलनी मालातष्ट्रप युक्तियेंकरी चेदाणो नही एवी रीते जगतने चमत्कार उपजावनारुं एवं नवानीनुं हढ खंतःकरण देखीने ते दे वता तुष्टमान थयो थको पोताना रूपने प्रगट करीने बाह्य तथा अन्यंत रथी नवानीनी प्रशंसा स्पष्टपणे करतो थको देवता पोतानी दिव्यशक्तियें करी जवानीना शरीरमांथी सर्व रोगने संहरतो हवो. वर्जी रह्नर्न। वृष्टि करी पंचिद्वय प्रगट करी समकेत पामीने पोताने स्थानकें गयो.

ते वखत वादले रहित एवा शरदकालना चंइमानी कांति सरखी जवा नीना शरीरनी कांति प्रगट थइ, ते जवानी धर्मना माहात्म्यथी अतिशय शोजती हवी अहो धर्मनुं माहात्म्य! जेनुं तत्काल फल प्रगट दीतुं,अनुज द्युं, प्रतीतिमां आव्युं तेथी ते साक्षात् धर्मनुं माहात्म्य जाणीने जाण तथा अजाण एवा सर्व नगरना लोक धर्मने आराधवा लाग्या एवं प्रत्यक्त माहा त्म्य देखीने कोने प्रतीति न उपजे वारु? प्रत्यक्त फल देखीने कोण आलस करे,प्राणनो अंत आवे एवं संकट पडेढते पण ते कुमरी कोइवार सचित्त व स्तुने न आदरती हवी. ते गुणें करीने ते कुमरी जगत्ना चित्तने हरनारी थ इ,जगत्ने आश्चर्यकारी एवी थइ,ते सोजाग्य अने शोजानां घरहूप एवी ज

वानीने जाणीने कोई महेश्वर नामे महोटो व्यवहारीयो तेने परएयो ते ज्ञ वानी एवी ठकुराई पामी ठतां पण कांई अहंकार न धरती हवी. तेनी संग तथी ते महेश्वर मिण्यात्वी हतो ते जेनी श्रावक थयो. तेमने एक पुत्र आ व्या पठी ते स्वी जरतार बेहुजण ब्रह्मचर्य व्रत धारण करतां हवां जोगना समय अंगनो योग ठते पण ते बेहु निःसंग जावे रह्यां, ए तेमनी जगत् मां आश्वर्यकारक वात श्रइ पडी एवीरीते जेम ते दिवसें दिवसें धर्मनेविषे वधते परिणामे थयां तेम ते लक्कीयें करीने पण दिवसें दिवसें वधतां ह वां. ते निःसंगजावनी स्पर्कायें करीनेज जाणे संपदा विध होय नहिं!

हवे ते स्वी जरतार पुष्यना सात केत्रमांहे इव्य वावरतां हवां तथा दिर्ही दीन इः िवयाने देतां थकां पोताना वित्तनो जगतना उपकारने श्र यें व्यय करतां हवां. जेवारें इष्काल पडे तेवारें जे दातार होय ते श्रदाता र थाय श्रने महेश्वर तो इर्जिक्सां विशेष दातार थाय श्रथवा जे श्रा इ जिक्सां पूर्वें संग्रह करेलुं श्रनाज श्रापी दइश तो पढी हुं श्रं खाइश! श्रथवा रोगादिक श्रावशे तेवारें श्रं खाइश! एम पण न जाणे. यतः ॥ संकुंचंत्यवमे तृज्ञाः, प्रसरंति महाशयाः ॥ श्रीष्मे सरांति श्रष्यंति, कामं वारि धिरेधते ॥ १ ॥ जावार्थः—तृज्ञ खबोचियां थोडामां संकोच पामे वे पण महोटा जलाशयो महाशयनी पेतें थोडामां पण विस्तार पामे वे. सरोवरो उनालामां सुकाइ जाय वे परंतु उनालामां समुह श्रित वृद्धि पामे वे ॥१॥

एम ते नवानी छने महेश्वर छंतःकरणयी छंगीकार करेला धर्मने पा लीने छायुष्य पूर्ण करी बारमा देवलोकनेविष देवपणे जइ उपन्यां तिहां देवतानां सुख नोगवीने ते नवानीनो जीव हे राजन्! तहारा बहुबुिहना मा प्रधाननी पुत्रीपणें छावी उपन्यों हे छने ते महेश्वर श्रावकनो जीव बारमा देवलोकथी चवीने तुं इहां राजा थयो हो. हे राजन्! पाहला नव नेविषे सचित्त रसादिकना त्यागथी तथा दान पुण्ययी तुं छा राज्यक् ि पा म्यो छने पूर्वे छुर्निक् नेविषे लोकोने उपकार कह्या तथी ए नवानीना जन्म मात्रयीज छुर्निक टल्योः एना प्रनावथी लोक सुखी थया. सर्वना रोग ग या. इति निवारी. ते ज्यांसुधी ए जीवती रहेशे त्यांसुधी कोइने रोग उप व थाशे नही माटे हे राजन्! श्रवुत्थपुण्यवंत प्राणीना महिमायकी छुंन थाय. एवां केवलीनां वचन सांनलीने राजा प्रधान सर्वना संशय ट

त्या. अने सर्वपांखमीचे जे पूर्वे बकबकाट करता हता तेना गर्व टली गया.

हवे राजा घणो आनंद धरतो घणा लोकनी साथें बहुबुदिनामा प्रधा नने घेर गयो तिहां माता सहित प्रधाननी पुत्रीने देखीने तेने पोतानी गो त्रदेवीनी पेरें मानतो हवो. ते पुत्रीनुं एवं माहात्म्य सांजलीने देशांतरथी घणा राजाई आवीने तेनां दर्शन करी आनंद पामीने वली पोताना घरने विषे जागती देवीनी पेठे ते जवानीनी मूर्त्तिने पूजीने संपत्तिने पामता हवा. ते पुत्रीपण जगतमांहे सौजाग्यादिक गुणेंकरीने उत्कृष्ट होती हवी. जवानीनी वाणी अमोव होती हवी केमके पाठले जवे रसना जीत्याथ की ते जेहवुं बोले तहवुंज झानीना वचननी पेठें तेनुं बोलवुं सत्य थाय.

ते चार बुिं अने चोसवकलानो जंनार थई गुरुतो साद्दीमात्र हता पण जाणे सर्वे पूर्वे जणीनेज खावी होयनी १ एम पूर्वजवना पुण्यना इ दयथी ग्रुं इर्जन वे. एरीते ते जवानी जगतमां विद्यायेंकरी प्रलिक्ष थई.

एकदा समये घणावादीयोमां वहेरो एवो कोइक धूर्त्तवादी ते सर्व देश देशना वादीने जीततो, घणो अहंकार धरतो, घणा परिवारे परविद्यो थको राजसनामां आव्यो अने शरदक्तुना मेघनीपरे फोटक शब्देंकरी ध्वनि करी कहेवा लाग्यो के हे राजन! तमारा राज्यनेविषे कोइ एवो वादी हे के जे महारी साथे वादनी कीडा करे. अथवा हुं वादियोने विषे धूमकेतु जेवो हुं. वादियोने विषे धूमकेतु जेवो हुं. वादिवाहंदने छर्निक् सरखो हुं. हुं वादियोनो कालकृप हुं. जगतमां कोइ एवो नथी जे महारी साथे वाद करे ? माटे हे राजन! कोइ प्रतिवादीने तेडावो के जे मने जीतीने महारा जीतेलां प्रतलां होडावे अने महारी आगल हारे अथवा मने जीते एवो कोइ नहोय तो जीतनुं प्रतलुं वंथावे. एवं सांजली राजायें प्रनातनो वायदो कस्यो तेवारें वादी पोताने उतारे आव्यो.

पावलधी ते पंमित एवा राजायें बहुबुद्धि प्रधानने कहां के कोई वादी ने जीते एवो प्रतिवादी जई आवो नहीं जावशो तो जगतनेविपे महारी अपकीर्त्ति थाशे एवं राजानुं वचन सांजली प्रधाने नगरमां पडहो वजडा व्यो पए ते पड़ो कोईयें फरस्यो नही तेथी प्रधान चिंतातुर थको महोडी रात्रें पोताने मंदिर आव्यो तिहां पोताना बापने चिंतातुर देखीने जवानीयें पुठ्यं हे पिताजी! आज तमने एवडी आकरी चिंता शी हे? तमे तो बहुबु दि होज. एवं जवानीनुं वचन सांजलीने प्रधानें जवानी आगल ते वादी

श्राव्यानी वात कही तेवारे जवानी हसी मुख मचकोडीने बोली के कीट समान नर वादीनो महारी श्रागल शो श्राशरो है. तेने प्रधानें कहां ए धूर्तकलामांहे शिरोमणी है. तेथी मुजने चिंता है. जवानीयें कहां हे पि ताजी! ए चिंतायें सहां. ए चिंता मुजने हे हुं पडहो फरहां हुं. एवं पुत्री हुं वचन सांजलीने ते रात्रियें प्रधान सुखें निहायें सूतो.

प्रातःकालनेविषे नवानीने शएगारी सनामध्यें आएी अने ते वादी धूर्नने पण तेड्यो ते धूर्नवादी प्रधाननी पुत्रीने देखी अवका करतो विस्मय पामीने बोलतो ह्वो के ग्रुं केसरीसिंहने मृगलानुं बालक जीतको के ! हवे ए कोतुक सर्व सनाना लोक जोवाने उत्सुक थया. पढ़ीते वादीं इप्रधाननी पुत्री संघातें संस्कृतवाणीयेंकरी सर्व सनाने आश्चर्य पमाडतो अति उतावलो थको बोलतो हवो के तुं बालिका हो? तेनी साथें इहां महारे महोटा शास्त्रोनी वातो करवी गुक्त नथी, वालिकानी साथे प्रश्न उत्तरादिक नी शी कीडा करवी तो पण हे दक्ते! हे निपुणे! हुं तुजने कांइक प्रश्न करुं हुं जे मिह्काना चरणघात थकी त्रण लोक केम कंपायमान थया ते नो उत्तर आप्य? ते सांजली मंत्रीपुत्री हसीने कहेती हवी के उत्तम नींतने विपे त्रणज्ञवन चितराय हे तिहां कोइ पाणीनुं कुंकुं नखुं होय तेमां ते चित्रामणनो प्रतिबिंब पज्ञ्यो ते माखीनी पांखना घातथी पाणी हाल्युं एटखे त्रण लोकनो प्रतिबिंब पण हात्यो ते त्रण लोक कंपायमान थया कहेवाय,ते माटे ए वात यक्त है. जेम तमारुं चित्त मारा किष्यत आहेपथी कंप्युं तेम ए त्रण लोको माखीना पगना अने पांखना प्रहारथी कंपायमान थया.

एवो उत्तर सांजलीने सर्व आश्चर्य पाम्या. वादी पण चमत्कार पाम्यो यको चित्तमां विचारे हे जे रखेने ए मुजने जीती जाय, तो पण वली अ त्यंत किन एवो प्रश्न पुडुं जे तिलधान्यने खूणे एक कीडीयें उंट प्रसच्यो त्यारे जवानी बोली के जो तुं मने जीतीश तो ते वात साची. वली तेणे प्रश्न पुठ्यों जे बे स्त्री अने बे पुरुष यकी एक नर उपन्यों ते मांहे कालो अने बाहेर उजलो अने तेनुं देव एवं नाम हे पण ते देव नथी तथापि ते सर्वनो निरवाह साधक हे वली ते समुझ जेवो हे तथापि जलयी नय पा मतो रहे हे. तेनें पग नथी तो पण देशांतरे घणुं चमण करे हे तथा ते मौनी हतां सर्व जाषा बोले हे वली ते साहर हतां जड हे एवं वादीनुं

वोल वुं सांचलीने चवानी बोली के ए तो लखेलो कागल लेख जाणवो.

वली वादी बोल्यों के एक नर अने चार स्त्री ए पांचथी एक पुरुष उपन्यों ते दीधो थको महोटो शब्द करें, देहनेविषे लाग्यों थको इःख करें, कोइने आप्यों थको वेर करें, ए सांचली मंत्रीपुत्रीयें कहां के ए वस्तु तमें मिण्यानिमानी हो माटे तमनेज आपवा योग्य हे. तेवारें सचामांहेला उत्सुक लोके पोताने जाएवा माटे पूह्यं के ए वादीने शी वस्तु देवा योग्य कही,तेने कुमरीयें कहां चपेटो ए वादीने देवा योग्य हे ते सांचली सर्वलोक हस्या. हवे ते कुमरी बोली के हे वादी! तुं शास्त्रनी रीतें प्रश्न पूह तेना उत्तर महाराथी न देवाय तो हुं हारीने तुं जीत्यों, अथवा हुं तुजने प्रश्न पुडुं. तेनो उत्तर तुं आपे तोपए तुं जीत्यों अने हुं हारी अने जो तहाराथी उत्तरज न देवाय तेवारें तो तुं हास्त्रों कहेवाइश एवं कुमरीनुं वचन सांचलीने ते वादी पोताना मनमां अमर्प आणीने एकेवारें अतिविष म एवा हुपन्न प्रश्न कुमरी प्रत्यें पूहतों हवो तेनां नाम लखीये हैयें.

र स्वजना, २ प्रधान तुरंग, ३ सारची, ४ झानि, ५ वादीर्रमांप्रधान, ६ सूपकार, ९ जुञ्जारी, ७ गणिका, ए प्रधानगायन, १ ० विप्रो, ११ धनवान कुविंदनुं नवन (धनिकवांजानुंघर) १२ कणनुं सुनिक्ट, (धान्यनो सुगाल) १३ यीष्मकालमां जलधिना तट, १४ धूर्च, १५ इनेयमां सक्त, १६ धा र्मिकचित्त, (धर्मनेविषे मितवाला) १९ वेदवित्, १० दयालु, १० ग्रुनवे ला, २० पटत, २१ महासुनट, २२ असतीस्त्री, २३ वणकर, २४ महा वात, १५ वर्षाक्तुमां थयेलो वास, १६ मद्यव्यसनी, १९ अंतिमजलिधिस्थ ति, (स्वयंनृरमणसमुइ,) १० मञ्चसंकुलतलाव, १९ अनुकूलपवनवालां व हाण, ३० अजापालगृह, ३१ जलधिमुख, ३१परप्रार्थनापरमनवालो, ३३ नित्यदारिड्यवाला, ३४ महासमुड्, ३५ हलवाहक, ३६ वधक, ३७ कुं नार, ३७ गिरिनदी, ३७ मरुनूमि ४० काइमीरनूमि ४१ सिद्ध धश महा डुम ४३ नृपस्थिति ४४ शतपदी ४५ जेरी ४६ फ़लितशालि ४७ श्रेष्टमंत्रि ४ ण धूर्त्तमंत्री ४ ए त्राप्यप्रयमनरक ५० नृपकन्यका ५१ प्रजारक्क ५२ क्तिडे ए पुढेला प्रश्नना शब्दो मागधी नाषाना व्याकरणना नियम प्रमाणे सिंद करी आप्या तथा तेनी अंदरना केटलाएक शब्दोनी अनेक अर्थनेविषे

प्रवृत्ति यायने ते सघतुं स्पष्ट करी सूत्रयी साधी आप्युं तथा ते ए६ प्रश्नो ना नवानवा प्रकारें करी (१४३६) उत्तरो आप्या तेथी सघलाने अपार च मत्कार जेवुं लाग्युं ए रीते ते कन्या ते वादिनो पराजय करीने जरा इसी बी जीवार ते कन्यायें अति विषम प्रश्न पून्नयों जेः—चित्रमत्रपयः पेया एवं व्यं जनवर्जिताः ॥ समीह्यतेजनेर्नित्यमपिवर्गत्रयार्थिमिः ॥ अर्थः— पयः पेयाः ए शब्द व्यंजन वर्जित करी त्रणवर्गना अर्थि एवा जनोयें ते निरंतर सारी रीते इज्ञायने. हे वादि! आ श्लोकनो शो जावार्थ ने. आनो अर्थ करवामां नमास जेटलो काल लागेने. त्यारे ते शब्दनो विचार करतां पण ते मतिमू द यश्गयो पण अर्थ यथार्थ न ययो त्यारे राजाये कह्यं के हे कन्ये! तुंज तेनो स्पष्ट अर्थ कह्य. त्यारे तेणे ते श्लोकनो अर्थ कह्यो ते सांनलीने ते वादी विपाद पाम्यो. त्यारपनी वली एक अड्जतवात जवानी बोली के हे वादी! मारो एक बुद्धवालो प्रश्न ने हजी तेनो तुं उत्तर आप्य तो हुं जाणुं जे तें मुजने जीती एम कही ते प्रश्न कहेती हवी.

एक नगरमांहि जेना सर्वे अंगनेविषे गुण नह्या हे एवी एक राजानी पुत्री हती तेने कोइएक विद्याधर अपहरि गयो तेवारे राजायें पडह वजडा व्यों के जे कोइ ए कन्या मने जावी आपे तेने हुं ए कन्या आपुं तिहां कोइएक निमित्तियो बोव्यो के जे विद्याधर ए कन्याने लक्शयो हे तेनुं हेकाणुं हुं जाणुं बुं, पण महारामां आकाशमार्गे जवानी शक्ति नथी, तेवारें एक रथकार बोट्यो जे ञ्चाकाशमार्गे रथमां बेसाडीने ते स्थानकें लइ जवानी महारा मां शक्ति ने पण लडवानी शक्ति माहारामां नथी तेवारें एक सहस्रयोधी बोद्यो डूं विद्याधरसाथें युद्द करीने तेने हणीने कन्या लावुं पण तिहां मुजने शस्त्र वागे माटे हुं जाइश नहीं तेवारें एक वैद्य बोख्यो के हुं व्रणसंरो हणी श्रोपधीयेंकरी तहारो घा रुजवी नाखीश एम निर्णय करी ते चारे जण रथमां बेशी आकाशमार्गे विद्याधरने स्थानकें जइ युद्ध करी विद्याध रने इणीने कन्याने लइ आव्या पढ़ी ते चारे जल कन्या परणवा माटे पोतपोतामां वढवा लाग्या माटे हे वादी! ते चारमांहेथी ए कन्याने को ण परणे केवी रीते एनी वढवाड मटे तेनो निर्णय करी आपो. उक्तंच ॥ निमित्ति उरहगारो, सहस जोहि तहेव विद्योय ॥ दिन्न च उहं कन्ना,परणि या नवर इक्केणं ॥ १ ॥ जावार्थः-निमित्तियो, रथकार, सहस्रयोधी, अने वैद्य, ए चारे जणने कन्या दीधी पण ते कन्याने कोण परणे ? माटे जो तुं चतुर बो तो ते विचारीने कहे के एकन्या कोने परणे ? ते सांजली वा दीयें घणी वार विचाखुं पण तेनाथी उत्तर अपाणो नहीं तेवारें राजानी आकाथी कुमरी कहेती हवी के हे राजन ! ते राजानी पुत्री कोइ न जा णे एवी रीतें गृढ अनिप्रायथी ते चारेने कहेवा लागी के जे महारी सा थें अग्निमां पड़जो तेने हुं परणीश एम कही चेह खडकावीने तेमां पड़ी ते वारें त्रण जण तो मरणथी बीहीना थका चेहमां पड़्या नहीं मात्र एक निमित्तियोज निमित्तने वलें जाणतो थको घणा लोकोयें वाखो तो पण कन्यानी साथेंज चेहमां पड़्यो. तेने अग्नि सलगावी चेह बलवा लागी पण कमरीयें प्रथमथी सलंग करावी राखी हती ते सलंगने मार्गें थइने कुमरी सहित निमित्ति बाहेर निकली आव्यो अने महोटा महोत्सव कुमरी सर्ल्यो. एम ते वादीने जीती निरस्कार करीने ते प्रधान पुत्री सघले लोके प्रशंसी थकी उत्सवसहित पोताने घेर गइ.

केटलाएक दिवस गयानंतर वली पण एक यूर्च अव्पश्चतने धारण कर नार रत्नजित सुवर्णदंम हाथमां यहीने नगरमां फरतो सर्वने कहे के सु जने जे कोइ अपूर्व वार्चा संजलावे तेने आ दंम आपुं ते सांजली दंम ले वा माटे घणा लोक तेने गमे तेवी अपूर्व वात कहे तो पण ते कहे केए तो में सांजली है एक वखत तेने प्रधाननी पुत्रियें कहां के महारा पिता यें ताहरी पासें कोटी सोनेया स्थापण मूक्या हे ए वात में सांजली है माटे ते वात जो तें सांजली होय तो कोडी सोनेया आप्य अने नहीं सां जली होय तो आ सुवर्णदंम आप्य. एम कही तेनी पासेथी दांमों लइ लीधो एवी रीतें अनेक प्रकारनुं पोतानी बुिं हुं कोशव्यपणुं देखाडती ह वी तेथी सर्व कोइ जाणवा लाग्या के ए सरस्वतीज हे ग्रुं! एवी ते कन्या सर्व लोकोने विस्मय पमाडती एक अघ्तिय आनंद पमाडती असुकमें नरयोवन अवस्थामां आवी तेवारे अतिशय आनरणेंकरी शोजती जाणे देव कुमरीज होयनी! जाणीयें कंदर्पनुं शस्त्रज हो ग्रुं! जाणीयें त्रण जननेविषे अक्षुत जाग्यनी लक्क्यी हे ग्रुं! एवी कन्या तेने परणवानी कोण वांहा न करे.

एवी महोटी जाग्यवती, जगतना उपकारने करनारी जगतना उदरने जरनारी ते कन्याने राजा प्रधान प्रत्यें याचतो हवो. प्रधाननें पण तेना व

रनी चिंता हती जे मोंघी वस्तु होय ते घणी मेनतें हाथ आवे ते जेवारें राजायें मागी तेवारें राजाने मूकी बीजा कोने देवाय एम विचारी शीघ ते कुमरी राजाने परणावी दीधी राजायें तेने पट्टराणी करी थापी जेम इं इने घेर इंडाणी शोजे तेम राजाने घेर ते शोजती हवी.

ते राजा पण राणीना पुण्यप्रनावेंकरीने समय पृथ्वीनो स्वामी थयो सर्व राजा खावी नमीने तेने यास खापता हवा जेम विरतिपणाथी सर्व इष्ट इंडियो वश थाय तेम सर्व राजा जीजामात्रमां शीघपणें वश थया ते राजा पण सर्व सुखी थया जेम खाकाश फूजें करीने शून्य होय तेम ते सर्व राजाउना देशो मारी मरकी खादिक सात इतियेंकरी शून्य थया तथा ते स्त्रीना महिमाथकी ते राजा चक्रवर्त्तिनी पेठें एक हत्र राज्य नोगवतो हवो.

जेम कपाली महेश्वर थयो, जेम जनाईन पुरुषोत्तम थयो जेम देवलो कमां रुड् थयो तेम ते राजा एवी उत्तम स्त्रीने पामीने पण जेम नह्यो घट वलकाय नही तेम लगारमात्र अनिमान धारण करतो नथी.

पठी राजा राणी बेहु जणे विचाखुं जे पूर्वे आपणे सुरुत कर्खा हे ते यी आ क्रि पाम्यां हैयें अने वली पण सुरुत करी हुं तो आगल उत्रृष्टी संपदा पामी हुं सुखी थड़ हुं एम चिंतवी सर्व इंडीयमध्यें रसें डिय जीतवी हुर्जन हे तेम आपणे एनुं फल पण प्रत्यक् अनुज्ञ हुं हे एवं निरधारी राजा राणी बेहुयें सातमा व्रतनी हृदप्रतिक्षा करी तथा ते राजा अने राणीना वचनथी पूर्वे प्रत्यक् फल सांज्यां हे अने वली साक्षात् नजरे दी हां हे एवा केटलाएक नगरना लोकोयें पण ते सातमुं व्रत अंगीकार कर्छं पही ते राजा राणी रुडी रीतें समिकत सिहत गृहस्थनो धर्म पाली अखंम राज्य जोगवी अंते चारित्र लइ तपस्या करी केवलकान पामी मोक्नें पहोतां एम सातमुं व्रत पाले ते प्रधान प्रत्रीनी पेठें सुखी थाय. इति सप्तमव्रत कथा।

॥ अथाप्टम अनर्थदंम विरमण व्रत प्रारंनः ॥

हवे त्रीज़ं गुणव्रत कहे वे जेऐंकरी प्राणी पुण्यरूप धनने हरवे करीने दंमाय पापकर्मथी विशेषपणे लेपाय तेने अनर्थदंम कहियें. तिहां जे अर्थ प्रयोजने केत्र वास्तु धन धान्य शरीर खजन परिवारादिकने अर्थं प्रयोजनें करबुं ते अर्थदंम कहेवाय अने तेना अनावें अनर्थदंम कहेवाय.

ते अनर्थदंमना चार नेद हे पहेलो अपध्यान, बीजो पापोपदेश, त्रीजो हिंसाप्रदान अने चोथो प्रमादाचरित तेमां प्रयम अपध्यानना वे नेद हे पहेलुं आर्नध्यान,बीजुं रोइध्यान,तेमां जे ध्यानथी चित्तने पीडा उपजे असमाधि याय ते आर्तध्यान कहीयें अने जेनायकी जीवना संक्षिष्ट अध्य वसाय याय आगलानुं मातुं चिंतववुं याय ते रोइध्यान कहियें.

हवे वली ते आर्नध्यानना चार जेद हे एक इप्ट संयोग, बीजो अनिष्ट वियोग, त्रीजो रोगनी चिंता, चोथो देवेंड दानवेंड्ना सुखनी अनिलापा ते नियाणुं करवुं तथा गेंड्थ्यानना चार जेद कहे हेः—एक हिंसानुबंधि, बी जुं मृपानुबंधि, त्रीजुं स्तेयानुबंधि चोशुं विषयसंरक्षणानुबंधि.

तिहां श्रितिकोधादिकेंकरीने वैरीनो वध करवो बंधन करवुं नाक कर्णां दिक हे दवां, देशनंगादिकनुं चिंतन ते प्रथम हिंसानुबंधि रोइध्यान. तथा बीजुं जूही चाड़ी करे, जूहां श्राल दे जेघकी श्रागला प्राणीनो घात थाय ते मृ पानुबंधि. त्रीजुं पारकुं इच्य हरवानी चिंता ते स्तेयानुबंधि. चोषुं शद्यादिक विषय साधन धनरक्षार्थें कोइनो विश्वास न करे, बीजाने विश्वास देइने तेनो घात करे तेथी कल्याण थाय एवं इर्ध्यान ते विषय संरक्षणानुंबंधि रोइध्यान कहियें. ए सर्व श्रपध्यानाचरित श्रनर्थदं कहियें.

श बीजो पापोपदेश अनर्थदंम ते केत्र खेडो, वृपनने दमो.घोडाने खा सी करो, शत्रुने हणो,यंत्र फेरवो,शस्त्र सक्त करो,ए सर्व पापोपदेश कहियें.

३ त्रीजो वर्षाकाल नजीक आव्यो माटे खेत्रमां जालां वर्णा है ते वा ली नाखों, हल सक्क करों, वावणी करवानों काल जतों रहे है माटे शीघ पणे धान वावों, क्यारा जराणा है साडात्रण दिवसमांहे त्रीही प्रमुख चो खा वय प्राप्ति थइ तथा ए कन्या महोटी थइ एने तरत परणावों तथा प्रव हण पूरवाना दिवस जाय है जांगा त्रूटा वाहाणप्रत्यें सक्क करावों इत्यादि सर्व पापोपदेश कहेवाय, अने हिंसाप्रदान तथा प्रमादाचरित रूप वे जे दमां घणुं सावद्यपणुं है ते सूत्रकार पोतेंज वे गायायेंकरी कहे है:—

सहिग मुसल जतगं, तणकहे मंतमूल जेसके ॥ दिन्नेदवा वि एवा, पिक्कि ॥ १४॥ एहाणुवदृण वन्नग, विलेवणे सह रूव रस गंधे, वहासण आजरणे पिकक ॥ १८॥ श्रर्थः-शस्त्र, श्रद्धि मुसल, उपलक्ष्ण यकी उखल हलादिक शकट घर टी श्रादिदेइने तथा तृणांना न्हाना महोटा रासडा चणवा दोरी बनाव वी इत्यादिकतुं हेतु दर्नादिक तथा व्रणते चावां क्रिम सोधवानां श्रोषध तेमज सावरणी (बुहारी) श्रयवा काष्ट ते श्ररहृहनी यष्टि लाकडी प्र मुख तथा मंत्र ते विपापहारनो श्रयवा वशीकरणादिकनो,श्रने मूल ते ना गदमनिकादिक तथा ज्वरादिकनी शमावनारी मूलिका तथा गर्नशातन पातनादिकने मूलकमे कहियें. जेमाटे न्हवणो करवो ते मंगलनुं मूलकमे वे ॥ यतः ॥ मंगल मूलिन्हवणा, इगप्न विवाह करण घायाई ॥ जव वण मूलकम्ममि, मूलकम्मं महापावं ॥ १ ॥

हवे नैपज्य ते संयोगिक इव्यने उच्चाटनादिक हेतु एवां शस्त्रादिक अनेंक प्रा णीना प्राणने हणवानां कारणनूत हे ते दाहिण्यादिकने अनावे बीजा प्राणी ने देवुं देवराववुं तेनेविपे जे अतिचार लागा ते पडिक्कमुं हुं इत्यादि पूर्ववत्॥ १४

स्नान ते अजयणायें संपातिम जीवाकु से संसक्त चूमियें उगटणा पू विक अंगनुं धोवुं अथवा अका कें जनां वस्त्र अणगन पाणीयें धोयां नित खां होय तथा त्रसजीवे संसक्त चूर्णादिकें करी उगटणुं कखुं होय तथा अंगथकी उगटणुं करतां त्रसजीवे संसक्त एवा चूर्णादिकें करीने गरेडा ना ख्या होय तेनी उपर राख नाखी न होय तेवारे सुगंधथी तिहां की टीका दिक घणा जीव आवे तेने वली श्वानादिक आवी नक्षण करे अथवा को इनो पग उपर आवी जाय तो तेथी ते सर्व जीव हणाय.

तथा वर्णक जे कस्तूरिकादिक तेणेंकरी कपालादिकने मंमन करे तथा विलेपन ते चंदन कुंकुमादिकेंकरी यीष्म हेमंतादिक उष्णकालनेविषे शरी रे विलेपन करे तेमांहे कोइ जीव आवीने पडे ए बेहु संपातिम जीवादि कतुं जयणाविना जे नाश कखुं होय ते.

तथा शब्द ते वांसली वीणादिकना शब्द कुतूदलेंकरी सांचल्या होय, रात्रें उच्चस्वरेंकरी शब्द क्लो होय ते शब्द करवाथी गरोली प्रमुख इप्ट जी वो जागीने तेणे मिक्कादिक जीवोनी हिंसा करी होय अथवा शब्दथकी जागीने केटलाएक लोक जल अग्नि आदिकना आरंच करवामां प्रतृत्त, यया होय जेम दलनारी दलवाना कार्यमां प्रवर्ते,पाणियारी पाणी लेवा प्रव र्ने,व्यापारी व्यापारमां, रुषीकरनार रुषीमां, अरहट्टवाला अरहट्टमां, तेली घाणी फेरववामां, धोवी धोबीना काममां, लोहार लोहारना काममां, ए म माठी, कसाइ, वाघरी, हिंसक, चोर, कुंजार, चडीमार, आहेडी, पर स्त्रीगमन करनार, कंदोइ, आदिक सहु पोतपोताना काममां प्रवर्ते,परंपरा यें कुव्यापार प्रवृत्तिनी वृद्धि याय; तेथी महाअनर्थदंम उपजे. ए माटेज श्रीनगवती सूत्रमांहे कोशांबी नगरीयं शतानीकराजानी बहेन अने मृगा वतीनी नणंद जधंनी नामे श्राविका तेणे श्रीवीरनगवान पासे "सुनंजंते साहुजागिरिअनं" इत्यादि प्रश्न कह्या ते संबंध इहां कहे हे.

हे नगवन ! स्वापणुं नलुं हे ? के जागवापणुं नलुं हे ? तेवारें प्रञ्ज वो ख्या हे जयंति ! केटलाएक जीवने स्तापणुंज नलुं हे, अने केटला एक जी वने जागवुंज नलुं हे, केम के जे जीव अधर्मा हे, जेने अधर्म वल्लन हे, जे अधर्मनाज बोलनारा, अधर्मना जोनारा, अधर्मना लक्कणवाला, अधर्मना स्वनाव अने इष्टाचारना समुदायवाला, अधर्में करीने आजीविका करता वि चरे तेवा जीवोने सुवापणुंज नलुं हे, केम के एवा जीव सुता थका घणा जीवने, प्राणीने, नूतने, सत्वने, इःख न उपजावे यावत् परिताप न उप जावे एवा जीव सुता थका पोता ने अने परने एटले वेहुने घणा अधर्मपणासायें जोडे तेमाटे हे जय ति ! ते सुताज नला जाणवा.

तथा है जयंति! जे धर्मिष्ट जीव यावत् धर्मनी वृत्ति कब्पता यका वि चरे एवा जीव जे होय तेने जागवापणुंज नलुं हे ते जीव जागताथका व णा जीवने, प्राणीने, नूतने, सल्बने. इःख नही हेता यावत् परिताप न प माडता थका वर्ने हे एवा जीव जागता थका बीजा जीवोने यावत् धर्म साथें जोडे हे ते जीव जागता थका मध्यरात्रिना समयनेविषे धर्मकरणी ना कार्यनुं जागरण करता होय माटे एमने जागवापणुंज नलुं हे. एम बित्यापणामां, इर्वलपणामां, दक्षपणामां, खालसपणामां इत्यादिक सर्व मां धर्मी जीव जागता नला खने अधर्मी जीव सुता नला जाणवा. एम वह्यदेशना राजानी बहेन जयंतीये पूहेला प्रश्नना प्रसुयें उत्तर कह्याहे॥ इति.

तथा स्त्रीयादिकनां रूप अने नाटकादिकने जोइने वीजानी आगल व. र्णव्यां होय, अथवा रसें करी मिष्ट एवां अन्न शाकादिक सूखडी प्रमुख तेना स्वाद बीजाने वर्णवी देखाडे जे सांचलीने आगलाने पण रसग्रधता

थाय कर्मबांधवाना हेतु थाय, एमज गंध, वस्त्र, अशन, आनरणादिकनुं बीजानी पासें वर्णन करवुं जेथकी ते सांजलनारने पण तृष्णाना हेतु थाय ए पांच प्रकारनो विषयलक्ष्ण प्रमाद देखाड्यो. ते देखवाथकी तेज जातिना मदिराप्रमुख पांच प्रकारना प्रमादनो परिहार उत्तम जीवें करवो. यदादुः ॥ कुतूहलाजीतनृत्यं नाटकादिनिरीक्त्णं ॥ कामशास्त्रप्रसिक्ष यूत मद्यादिसेवनं ॥१॥ जलक्रीडांदोलनादि विनोदोजंतुयोधनं ॥ रिपोः सुतादिना वैरं ॥ जकस्वीदेशराट्कथा रोगमार्गश्रमंमुक्त्वा स्वापश्च सकलां निशां ॥ एवमा दिपरिहरेत् प्रमादाचरणं सुधीः॥३॥ विलासहासनिष्ठग्रूत निडाकलहडुष्कथाः ॥ जिनेंइच्चनस्यांत राहारं च चतुर्विधं ॥ ४ ॥ नावार्थः-कोतुकथकी गीत, नृत्य नाटकादिकनुं जोवुं कखुं होय, कामशास्त्रनी आसिक्तयेंकरी द्यूत म द्यादिक मांसादिकनुं सेवन कखुं ॥ १ ॥ जलक्रीडा करी, हिंचोलें हिंच्या, विनोदे जीव हण्या, शत्रुना पुत्रादिक साथें वेर कस्रां, नक्तकथा, स्त्रीकथा, देशकथा, राजकथा करी ॥ २ ॥ रोग मार्गनो खेद ते मूकीने आखी रात्रियें सुइ रहेवुं,ए आदिक प्रमादाचरण ते सघला पंमितजनें परिहरवां ॥ ३ ॥ विलास करवो, हास्य करवुं, धुंकवुं, निज्ञा करवी, कलह करवो, माठी वार्ता करवी ए सर्वे श्रीजिनेश्वरना प्रासादमांहे वर्क्जवां अने अशन पान खादिम खादिम ए चार प्रकार पण जिनप्रासादमां टालवा॥ ४ ॥

तथा आलसनेलिधे घृतनां तेलनां अने पाणीनां नाजन रूडीरीतें ढांक्यां न होय, रूडो मार्ग मूकीने हरिकायनी उपर चात्या होइयें, हरिकायनी उपर हाथनों फरस थयो होय, उतां निरवद्य स्थानक मूकीने हरिकायनी उपरे बेठा तथा उना रह्या तथा नील फूल अने कंश्रुआदिकें आक्रमी ए वी जीवाकुल नूमीकायें वस्त्रादिक मूक्यां एठां पाणी नाख्यां उनां उसाम ए परठव्यां तथा अयलाथी कमाडनी नोगल दीधी होय, विना कारणें फलफूल पांदडां प्रमुख त्रोड्यां होय, खडी माटी गेरु आदिक हाथमां मसली होय, तापणुं कीधुं होय, गवादिकना महिषीना घातने अर्थे शस्त्रा दिकनो व्यापार कखो होय नितुर वचन तथा कोइने ममे वचन नाख्यां होय. हास्य निंदादिक कीधां होय, रात्रे दिवसें पण जयणाविना स्नान कखुं, केश गुंच्या, राध्युं, खाधुं, खाम्युं, दृह्युं, नूमी खोदवी, माटी प्रमुखनुं मर्दन अर्थात् गार करी, मर्दन करनुं, लींपनुं, वस्त्र धोवां, पाणी ग

लवानेविषे प्रमाद श्राचखो होय ए श्रादिक सर्व प्रमादाचरित जाणवां. तथा अयहायें श्लेष्मादिक नाखी तेनी उपर राख नाखी न होय तो श्रंतरमुहूर्तमां समुर्ज्ञिम मनुष्य जीव श्रावी उपजे ते समुर्ज्ञिम मनुष्यनी विराधना याय तेथी महादोप लागे. श्रीप्रकापना उपांगनेविषे श्रीक्यामा चार्यजी महाराजें कह्यं है "कहं नंते समुर्हिमामणुसा समुह्वंति गोयमा खं तोमणुस्सिखते पणयाजीसाइज्ञोयणसय सहस्सेसु " इत्यादिक पावनो अ र्थ किह्यें वैयें. हे नगवन ! समुर्जिम मनुष्य किहां उपजे ? हे गौतम ! मनुष्यक्तेत्रमांहे पीस्तालीश लाख योजननेविपे अढीद्दीपमां, वे समुइ, पन्नर कर्मनृमिक्देत्र, उपन्न अंतरहीपनेविषे गर्नज मनुष्य रह्यां हे ते मनुष्योना अग्रुचि स्थानकं समुर्शिम उपजे हे. ते स्थानकनां नाम कहे हे:- व डीनीतनेविषे पासवणनेविषे, खेल मात्रानेविषे, बडखानेविषे, नाकना श्लेष्मनेविषे वातनेविषे मलनेविषे पित्त नाखवानेविषे, वीर्यनेविषे, वीर्य अने रुधिरनेविपे, वीर्यना पुजल पड्या रह्या होय तेनेविपे, जीवरहित क जेवरनेविषे, स्त्रीपुरुपना संयोगनेविषे, नगरना खाजनेविषे ए सघला अग्र चि स्थानकें समुर्जिम मनुष्य उपजे तेनुं एक अंगुलनां असंख्यातमा जा ग मात्र शरीर होय. ते असन्नी मिण्यादृष्टि, अज्ञानी, सघली पर्याप्तियें करीने अपर्याप्तो अंतरमुहूर्तने आउखेज काल करे ए सर्व स्थानक कह्यां. तेम बीजां पण ए संबंधि स्थानकनेविषे उपजे समुर्ज्ञिम मनुष्य अधिकरण नूत शस्त्रादिक तथा मलमूत्रादिक तेने रुडीरीतें जयणायें परवव्युं नहीं ते

क तेनुं मेलवुं नाखवुं ते पण प्रमादाचिरत कित्यें.
जेमाटे श्रीनगवतीमां कह्यं वे "पुरिसेणं धणुपरामुसइ" इत्यादि श्रा लावानो श्रर्थः—पुरुप धनुपने स्पर्श करे, ईस्कु बाणनो स्पर्श करे, करीने वंचुं बाण नाखे ते बाण नाखे यके तिहां जीवने हणे हे नगवन ! तिहां जीवने केटली क्रिया लागे ? हे गौतम ! ते पुरुपने पांच क्रिया लागे श्रने वली जे जीवना शरीरथकी धनुप नीपन्युं वे ते जीवने पण ए पांच किया लागे वे इहां श्राशंका करे वे के, कायाना व्यापारमाटे पुरुषने तो पांच क्रिया थाउं तेने कायादिकनो व्यापार पण वे एवं देखीयें वैयें पण

प्रमादाचरित अनर्थदंम जाएवो. संसर्गथकी केटला एक अग्रुचिनां स्था

नक ते सर्व तेनी टीकामां कह्यां ने ए अधिकरणरूप पाम्यां एवां शस्त्रादि

जे जीवोना शरीरथकी धनुप नीपन्युं ने तेना जीवने केम ते किया लागे! अने जो अचेतन कायामात्रना संबंधथकीज किया लागे एवं कहेशो, ते वारें तो सिक्ना जीवने पण ते कियानो प्रसंग थाशे जेमाटे तेनी काया ने पण प्राणातिपातादिकनो हेतु थाय ने.

हवे ग्रुरु उत्तर कहे वे के ते धनुपादिक जे जीवोना शरीरची नीपन्यां वे ते जीवोयें पोताना शरीरने वोसराव्युं नची ते कारण माटे तेमना शरी रची चती पापिक्रया ते जीवोने चाली आवे वे.

तेवारें शिष्य बोख्यों के जो पापिकया चाली आवे है तो पुण्यिकया पण चाली आववी जोइयें. शामाटे जे ए चेतनना शरीरनां पुजलमांथी धर्मों पकरण जे पात्रदंमादिक है ते जो बने तो तेवां सर्व उपकरण जीवरक्षा नां हेतु थाय है ते पुण्य किया सर्व जीवने चाली आववी जोइयें.

हवे गुरु उत्तर कहे हे:—के हे शिष्य ! सांज्य चेतननें जे पापवंध थाय हे ते अविरतिना परिणामथकी थाय हे अने ते अविरति चेतननुं शरी र हे ते शरीरने चेतने वोसराव्युं नथी अने सिद्धना जीवने किया लाग ती नथी केमके ते जीवोयें कर्मबंधना हेतु सर्वे खपावी नाख्या हे माटे ते मने कोइ किया लागे नही वली पुण्यतो तेवारें बंधाय के जेवारे पुण्यबंधना हेतु होय तेवारें बंधाय, ते पुण्यबंधना हेतुतो जेना शरीरथी धनुप नी पन्युं हे ते जीवोने हे नही. केमके ते विवेकशून्य हे तेमाटे पुण्य बंधाय नही पही तो श्रीवीतराग वचनथी जेम होय तेम सहहवुं.

ए जीवने संसारमां परिच्रमण करतां ए जीवनां शरीर स्थानकें स्थान कें मूकाणां ते शरीरोमांथी शस्त्रादिक नीपन्यां अथवा जीव पोतेंज जीव तां ढतां स्थानकें स्थानकें नवां नवां विविध अधिकरण करीने मूकतो गयो एम जे जे जवनेविषे मूक्यां ते ते जवनां अधिकरणनी तथा शरीरनां शस्त्रादिकृनी क्रिया ते सर्व, चेतनने चाली आवे हे. चेतननां शरीर तथा अधिकरणथकी जेटलो जीवोनो वध थाय ते सर्व चेतन जे वखत जे जव मां होय ते जवमां तेने पापकर्मनो बंध चात्यो आवे हे. तेटलामाटे विवे की जीवें अंत अवस्थायें शरीर तथा अधिकरण सर्व वोसराववां.

वली विवेकी जीव पोताने अर्थे अग्नियं घणा दिवादिक बलता होय तेने कार्य थइ रह्या पढ़ी न उलवे तो तेपण प्रमादाचरित अनर्थदंम कहेवाय.

इहां शिष्य पूर्व वे के अग्नि तथा दीवो उलवतां तो दोप लागे वे.

युरु कहे हे के एमां दोप स्वल्प हे अने जान वणो ह शामाटे के उ जवतां यकां अग्निना तथा पाणीना जीवोनी अल्प हिंसा थाय है अने जो न उज़वे तो घणा त्रसजीव आवी अग्निमां पड़े तेवारें त्रस तथा था वर जीवोनी हिंसा थाय माटे जान घणो हे एवं जाणीने उज़ववानुं कह्यं हे. श्रीनगवतीसूत्रमध्ये "जेसेपुरिसे अगणिकायं निववि सेणंपुरिसे अ प्पकम्म तराए चेवनि " तथा दीवा उपरें ढांकणुं अवस्य ढांकवुं, अने चूजो उघाडो न राखवो, चूजा उपरें चंड्वो बांधवो, जो चंदरवो न बांगी यें तो घणा दोपोनुं कारण थाय ए पण प्रमादाचरित जाणवो.

इहां चूला उपर चंड्वो बांधवो ने उपर दृष्टांत कहे है:— श्रीपुरनगरें श्रीपेण नामे राजा तेने देवराज नामे पुत्र है. ते जेवारें योवनावस्थामां श्राच्यो तेवारें देवयोगें तेने कोढरांग थयो ते मटाडवा माटे राजायें सा त वर्ष सुधी घणा श्रोपधोपचार कथा पण गुण थयो नही वेद्य सर्व थाकी ने वेगला रह्या तेवारें राजायें नगरमां पडह वजडाव्यो के जे महारा कु मरने करार करे तेने हुं श्रक्षराज्य श्रापुं ते सांजली ते नगरमां कोइ म होटो श्रीबल श्रपर नाम यशोदत्त एवे नामें व्यवहारी वसे ने तेनी पुत्री लक्ष्यीवती नामे हे ते श्रीलादिक गुणेंकरी श्रलंकत हे ते लक्ष्यीये पडह हव्यो. ते लक्ष्यीना हाथस्पर्शयकी देवराजकुमरनो कोढ गयो. यतः ॥ यस्य स्मरणमात्रेण, सर्वाः संसारजाहजः॥ शरिरीणोविशीर्ध्यंते, सोपंशील निषम्रवः॥ १॥ जेना स्मरणमात्रथी सर्व संसारयी उपन्या एवा रोग ते प्राणीना विलय पामी जाय ते महोटो शिलरूप श्रपूर्व वेद्य जाणवो ॥१॥ ते कुमरनो रोग गयो तेवारे राजायें पोताना कुमरने यशोदत्त शेवनी पुत्री लक्ष्यीवतीनुं पाणिग्रहण कराव्युं श्रने कुमरने राज्य श्रापी पोतें दीक्षा लीधी.

हवे देवराजकुमर न्यायें राज्य पाछे हे एकदा समयनेविषे ते नगरना ज्याननेविषे श्रीपोटिलाचार्य श्राच्या. तिहां राजा सर्वपरिवार तथा नग रना लोक सहित पोटिलाचार्यने वांदवा गया. वांदीने देशना सांजलवा माटे सर्व यथोचित स्थानकें वेता. श्राचार्यें धर्मदेशना प्रारंजी देशना सांज व्यानंतर राजायें गुरुने पोतानो पाहलो जब पूह्यो तेवारे गुरु कहेता हवा.

वसंतपुर नगरें देवदत्तव्यवहारी उरहेतो हतो तेना धनदेव, धनदत्त,

धनित्र अने धनेश्वर एवं नामे चार दीकरा मिण्यात्वी हता. हवे मृगपुर नगरनेविषे जिनदत्त्रोठ परमजिनधर्मी वसे हे तेनी मृगसुंदरी नामे पुत्री हो तेने त्रण अनियह हे एक परमेश्वरने पूजीने जमवुं बीजो साधुने प्रति लाजीने जमवुं अने त्रीजो रात्रें न जमवुं. अन्यदा ते व्यवहारीयानो चो यो पुत्र धनेश्वर कोइ व्यापारनेअर्थें मृगपुर नगरनेविषे आव्यो. ते धनेश्वर तिहां स्त्रीयोना हंदमध्ये मृगसुंदरीने देखीने व्यामोह पाम्यो पण हुं पोते मिण्यात्वी हुं माटे मुजने ए परणावशे नही एवं विचारीने पोतें कपटें आवक थइने मृगसुंदरीने परण्यो. परणीने वसंतपुर नगरें तेडी आव्यो.

तिहां धर्मनी इर्षायें श्रीजिनपूजादिक सर्व करणीनो तेणे निषेध कखो तेथी मृगसुंदरीने तिहां त्रण उपवास यया तेवारे मृगसुंदरीयें गुरुने पुत्रुं गुरुयें लाजालाज विचारीने कह्यं के हे वत्से! तुं चूला उपर चंड्वो बांध्य के जेथकी तुजने प्रतिदिन पांच तीर्थनी यात्रा कखानो लाज तथा पांच मु निने प्रतिलाज्यानो लाज घेर वेवां थशे. पठी ते मृगसुंदरीयें गुरुनां वचनें करी चूला उपर चंड्वो वांध्यो तेवारे श्वसुरे विचाखुं जे ए वहुयें कांइ का मण कखुं जणाय हे एम चिंतवीने धनेश्वरने तेवात कही धनेश्वरें ते चंड्वो बाली नाख्यो तेवारें वहुयें बीजो चंड्वो बांध्यो तेपण धनेश्वरें बाब्यो एम सात चंड्वा बांध्या अने धनेश्वरें सातेय बाब्या. तेवारें वहुने ससरायें क खुं आ तमे शामाटे प्रयास करो हो तेने वहुयें कह्यं जीवदयाने अर्थें करी यें हेये ते सांजली तेनो ससरो रोप सहित कहेतो हवो के हे वत्से! तमे तमारे पीयरे जाउ तेने वहुयें कह्यं जेविरीतें तमे बहां मली मुजने त्यांथी तेडी लाव्यां हो तेवीरीते सर्व मली पीयरें मूकवा चालो तो हुं पीयरें जाउं.

तेवारें ते सर्व कुटुंब साथे ज़ बहेजो तैयार करीने तेने पीयरे मूकवा ससरो पोते चाल्यो मार्गमां कोइ गामे आवतां तेमना सगासंबंधियें तेमने प्राहुणां राख्यां तेणें रात्रें रसोइ तैयार करी तिहां सर्वजन जमवा बेठा व हुने घणुंये कह्युं पण जमवा बेठी नही तेवारे सासु ससरादिक तेनां घर नां माणस पण जम्यां नही बाकी सर्व जम्यां ते प्रजातमां सर्व मूवेजां दे खाणां तेवारे तपास करतां ते अन्नना जाजनमांहे सर्पना कटका दीठा ते जोइने सर्वे जणें चिंतव्युं जे रात्रें धूआडे करी अकलायो यको सर्प आ रसोइमां पडीगयो हे एम तिहां वहुयें रसोइ न खावाथी ते कुटुंबना माणसें

पण न खाधी अने सर्व बचीगयां तेथी ते वहुने खमाववां लाग्यां वहुयें कहां के में पण एटलामाटेज चूला उपर चंड्वो बांध्यो हतो अने ते तमें जो चूला उपर चंड्वो बांधो तथा रात्रें न जमो तो तमोने कोइकाले एवो प राजव थाय नही एवो तेणें प्रतिबोध दीधो तिहां सर्वने जीवितदान मल वाथी ते यहुने मधलां साहात् कुलदेवीनी पेरें मानतां थकां पाढां पोता ने घेर आव्या तेना उपदेशथकी ते सर्व परमश्रावक थयां. मृगसुंदरी अने धनेश्वर चेहु सम्यक्प्रकारें धर्म आराधीने स्वर्गें गयां तिहांथी चवीने इहां वेहु राजा राणी थयां हो. माटे हे राजन ! तें पूर्वले जने सात चंड्वा वाल्या हता ते इच्कमेने पश्चातापेंकरी आलोयणायें करी घणां खपाच्यां हतां तोपण शेष रह्यं हतुं तेना उदयथी सात वर्ष कोट रोग जोगव्यो जोगव्या विना कर्मक्ष्य थाय नहीं कट्यनी शो कोडीयें पण अवश्यपणे गुजाग्रज कह्यं कर्म जागववुं पढे एवो गुरुनो उपदेश सांजली ते वेहुने जातिस्मरण उपन्युं तेवारें पुत्रने राज्य देइ पोते चारित्र लई वेहु जण देवलोकें गयां अनुक्रमे मोक् पामशे. ए चंड्वो बांधवा आश्रयी मृगसुंदरीनी कथा ॥

तथा अणशोध्यां जल इंधन धान्यादिक वावरवां तेपण प्रमादाचरित क हियें तेनी जयणा प्रथम पहेलाव्रतनेविषे कही आव्या हैये. ए चार प्रकार रनो अनर्थदंम कह्यो केमके जो न करीयें तोपण कोइ काम अटके नहीं ते अनर्थ कहीयें तेनां हेतु जे आर्चध्यान अने रोइध्यान हे जेथी कांइ वांहित सिद्धि न थाय परंतु उलटो चिनने उद्देग तथा शरीरनी क्लीणता तेम सून्यता याय अने अत्यंत आकरा एवा इष्कर्मनो वंध याय जेथकी इगीत आ दिक अनर्थनी प्राप्ति याय. तिहां कटुक विपाक नोगवे. उक्तंच ॥ अणविष्यं मणोजस्स, जायइ बहुयाई अष्टमहाई ॥ तं चिंतियं च न लहइ, मंचिणइ अ पावकम्माई ॥ १ ॥ वय काय विरहिआणिव, कम्माणं चिन्तमिन वि हिआणं ॥ अई घोरं होइ फलं, तंइल मह्य जीवाणं ॥ १ ॥ जावार्थः— जे अस्थिर मन थको घणा आहट दोहट चिंतवे पण तेथी चिंतित वस्तु ने पामे नहि. उलटो ते जीव घणा पापकर्मने विस्तारे ॥ १ ॥ जे वचनें करी कांइ कहे नही, कायायें कोइने हणे नही, केवल मात्र मनेंकरीनेंज अतिआकरां कमें बांधे ते जीव तंइलमह्यनी पेरे महा इःख नोगवे ॥१॥ तथा अपध्यान आचरित अनर्थदंम टालवो एक क्लामात्र पण चिन्तने

विषे न धारवो. तेने माटे मन वश करवानो ज्यम करवो मनवश करवाने एवी जावना धारवी ॥ जकंच ॥ साहूण सावगाणय, धम्मेजो कोइ विछरो जिए ॥ सो मण निग्गह सारो, जंफलिसिह तर्ज जिएया ॥ १ ॥ जावा र्थः—साधुना धर्मनेविषे, श्रावकना धर्मनेविषे, जे कोइ विस्तार कह्यो होय तो तिहां मननो नियह करवो मन जीतवुं, एहज सार हे तो तेनुं फल सिह याय ॥ १ ॥ मननुं धर्मध्यान तथा श्रुक्कध्यानमांहे प्रवर्तन करवुं ॥ यतः ॥ यत्नात्कामार्थयशसां, कृतोपिनिष्फलोजवेत् ॥ धर्मकर्मसमारंज, संकल्पोपि न निष्फलः ॥ १ ॥ जावार्थः—काम, श्र्य श्रने यशनो यत्नेंक रीने संकल्प कश्चो यको पण ते संकल्प निष्फल याय श्रने धर्मनी करणी ना प्रारंजनो संकल्प ते कश्चो थको पण निष्फल न थाय ॥ १ ॥

पापोपदेश अने हिंसा प्रदाननो उपदेश तो नाइ, पुत्र, स्त्री मित्रादिक ने दाहिण्यताथी देवो पडे, अधिकरण पण देवुं पडे, तेमाटे एनाथी टल वुं महाइप्कर ने तो पण स्वार्थिवना पापोपदेश तथा पाप अधिकरण न देवां केम के तेथी अनर्थ याय माटे अनर्थदंमनुं फल जाणवुं ॥ यड़कं ॥ लोकिकेरिप ॥ न याह्याणि न देयानि पंच इव्याणि पंमितेः ॥ अप्तिर्विपं तथा शस्त्रं मद्यं मांसं च पंचमं ॥ १ ॥ वली लोकिकमां पण कह्यं ने जे समज मनुष्यं पांच वानां लेवां निह तथा देवां पण निह ते हुं के. अप्ति, विप, तथा शस्त्र, मद्य, अने पांचमुं मांस तेटलां लेवां देवां निह.

प्रमादाचिरतनेविषे पण फोकट अजयणादिक निमिनें हिंसादिक दोष लागे ते कहे हे:— जेम पेट नरवामांहे वेहु वरोवर हे पण तेमां एक पं मित अने एक मूर्ष ए वेनुं आंतरुं जूर्र केटलुं हे तथा एकने नरकनुं इः ख हे अने एकने शाश्वतां सुख हे तेम इहां पण जे कार्य करतुं तेमां जे जयणा करवी ते पंमित अने शाश्वता सुखनी माफक चडती जाणवी, अने जे कार्य जयणाये रहित करतुं ते मूर्व अने नरकगामी बरावर समजवो; मा टे जयणाविना जे कार्य करतुं तिहां सर्वत्र अनर्थदंम थाय तथी दयावान शावकें सर्व व्यापारनेविषे समस्त शक्तियेंकरी जयणानेविषे यह्न करवो केम केजयणा हे ते धर्मनी माता हो, जयणा हे ते धर्मनी पालक हे, निश्चें जय णा हे ते तपनी हृद्धि करनारी हे अने एकांत सुखनी करनारी पण जयणा हे.

हास्यपऐं वाचालादिकें पण अनर्थदंम थाय ने जेथकी आ नवमां प

ण आकरां वैर वंधाय माटे हास्य करीने मुखनुं जबाडपणुं ढांमनुं जेम कु मारपाल राजाना बनेवीने हास्यनुं वचन अनर्थकारि थयुं ते कहे ढेः

कुमारपालनी बहेनने तेने वरे जूगटे रमतां हास्यथी कहां के मार वि रितयाने माथे अथवा मार मुंमियाने माथे ते वचनथी कुमारपालनी बहे ने रीसाइने प्रतिक्वा करी के जो हुं कुमारपालनी वेहेन खरी हो जो ए वचनथी तहारी जीन कहा कुं एवी प्रतिक्वा करीने कुमारपालने घेर आवी रही पत्नी कुमारपाले बनेवी साथे युद्ध करी बनेवीने जींती पकडीने जीन काढी एटलो अनर्थ थयो, माटे विवेकी जीवे हांसी न करवी. कारण के प्रयोजनें बोलवानां पाप करतां विना प्रयोजनें वोलतां घणां पापकर्म बं धाय. यतः ॥ अठेणं त न वंधइ, जमनर्ठणं तुच्चव बहु नाव ॥ अठोकाला इआ, निआ मर्ग नच अणकाए ॥ र ॥ ए कारण माटे विवेकी जीवें चारे प्रकारनो अनर्थदंम सर्वथा त्यजवो. जोप अर्थ पूर्ववत् जाणवो ॥ २॥ ॥

हवे ए अनर्थदंम विरमणव्रतना पांच अतिचार कहे हे:-

कंदणे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण जोग अइरिते॥ दंममि अणठाए, तइयंमि गुणवए निंदे॥ १६॥

अर्थः-१ प्रथम कंदर्प ते काम तेनो हेतु ते संबंधि वचन, जे वचनथ की कामविकार उत्पन्न थाय रागादिक विकारने दीपावे एवं हास्यादिकनुं वचन बोलवं ते प्रथम कंदर्प अतिचार.

१ बीजों कोंकुच्य ते च्रगुटी, नेत्र, उष्ट, नासिका, हाथ, चरण मुखादि क तेना विकार सिहत हास्यनुं जणावनारुं एवं विटलना बोल जेवं कुचे ष्टानुं वचन जेथकी पोताने तथा परने व्यामोहता उपजे एमां पोतानुं ल घुतापणं जणाय एवं कुचेष्टानुं कुवचन श्रावकने बोलवं युक्त नही पण इहां प्रमादयी बोलाइ जाय ते प्रमादाचरण थाय एटलामाटे ए झतिचार हो, ए वे प्रमादाचरितरूप अनर्थदंमव्रत त्यागरूप अतिचार जाणवा.

३ मोंखर्य ते वाचालयइ बहु असंबद वचन नाखवुं. तेथी पापोपदेश नो पण संजव थाय तेमाटे अतिचार कहेवाय ए मुर्खपणुं प्रायः सर्वने अ निष्ट थाय अने एथी पोताना कार्यनी पण हाणी थाय. वली एथी आप दा पामे माटे एने विशेष अनर्थदंम कहियें. यडकं ॥ बहूनां समवाये हि, सिंदे कार्ये समं फलं ॥ यदि कार्यविपत्तिः स्यान्मुखरस्तत्र हन्यते ॥ अर्थः— घणाना समुदायमां कार्य सिद्ध थाय तो सरखुं फल थाय अने जो कदि ते काममां कांइ विपत्ति आवे तो तेमां जे मुखर (वाचाल) होय ते पहेलां हणाय है. वली जेनो बोलको स्वनाव होय हे ते मुखर प्रसंग विना पण वखतें बोले तेथी तेनी अप्रीति थइ जाय इत्यादि मुखरतामां घणा दोषो हे.

अवसरें बोलवुं, अवसरिवना बोलवुं नही जे अवसरिवना बोले ते अ युक्तुं थाय तेमां अप्रतीतप्रमुख घणा दोप जाणवा. यतः ॥ अवियाणिय प ह्यावं, परिचत्त मलिककण जं निण्यं ॥ किंपावरय यतत्तो, विहुक्त अत्रंपि लोश्रंमि ॥ १ ॥ नावार्थः—अवसर जाण्याविना, पारकुं चित्त उलस्या विना, जे कह्युं होय, बोल्युं होय, ते अन्यलोकमांहे पण इःखदायक होय ॥ ३ ॥

ध तथा अधिकरणनो संयोग जोडी मूके ते आत्माने नरकादिक गतिना हेतु याय संयुक्त करी राखेला एटले कार्य क्रियामांहे सक्त करी राखेला अथवा संयुक्त एक अधिकरणें सहित बीजुं अधिकरण जाणवा जेम सांवे लुं अने उखल वे नेलां तैयार करी राखवां तथा उखलानी साथें मुसल, हलनी साथें फाल, धनुषनी साथें बाण, शकटनी साथे धोंसरं, वाटवा नी क्रियानेविपे निसातरों, कुहाडानेविपे हाथों, घंटीनेविपे घंटीनुं पड, इत्यादिक संयुक्तनों जे नाव ते संयुक्ताधिकरण कहियें. विवेकी प्राणीयें धु रथीज एवां अधिकरण तैयार करी राखवां के जे काममांज न आवे जे ले वा आवे तेने नाकारों तो कहेवाय नहीं तेवारें दाहिण्यतानेलीधे तेवां अकक्त होय ते देखाडे के जे जोइनेज लेवा आवनारों पाढों वली जाय पोताने नाकारों कहेवोज पडे नहीं.

तथा वली अग्नि पण ज्यांसधी पोताना घरमां काम होय त्यांसधी रा खे पठी उलवी नाखे तो कोई खेवा पामे नही. अने पहेलो प्रज्वलित क रवो ते पण बीजा पाहोसी प्रमुख करे त्यारपठी पोते करवो पण आगल थी करवो नही. चरवाने माटे गोचर मूकवुं तथा हल गाडां खेडवां करवां, गृहादिक बांधवानो आरंज तथा बाहेरगामे जवुं इत्यादि कार्य पण प्रथम पोतें पहेल करीने न करवां, कारण के अधिकरण प्रवृत्त्यादिकनो आरंज थाय. यतः ॥ कार्येऽ अने वापि प्रवृत्तिर्थेः कृतादितः ॥ क्षेयास्ते तस्य कर्जारः, प श्राद्यपचारतः ॥ १ ॥ ग्रुज के अग्रुजकार्यनेविषे जेवयें पहेलां प्रवृत्ति

करी होय ते ते कर्मना कर्ता ने तथा पत्नीथी उपचार करनाराने पण न शुना शुन कर्मनो पुण्यपापादि जाग जागे ने. ए हिंसाप्रदान परिहारनो अतिचार ह

पंजागितिस्कता उपजोग अने परिजोगनी वस्तु ते स्नानमां जांजन मांहे, वस्नादिकमांहे, योग्यतायी अधिक करवुं ते; जेम सरोवरने कि स्नाना दिक करवा जाय ते अवसरें तेल, आमलकादिक वस्तु पोतानी सार्यें खण करतां अधिक लइ जाय जेम तिहां वीजा उजेला होय ते पण याचना करी तेनी पासेथी ते चीज लइने स्नानादिक करवामां प्रवर्ते तेथी अनर्थ दंम थाय. श्रीआवश्यकचूर्णिमांहे स्नाननो विधि कह्यों हे ते आवीरीं के गृहस्थें प्रथम तो घरनेविषेज स्नान करवुं कदाि वेर स्नान करवुं न वने तो पण तेल आमलादिक मस्तकें घर्षण करीने पही ते सर्व खंखेरी लासीने पही सरोवरें जइ कांहे वेसीने पाणी गर्ली अंजलियें करीते स्नान करें अने घरनेविषे पण स्नान, जोजन, तांबूल एपादिक इत्यादिक जे उन्व रण ते अव्य राखवां तेज ग्रणनां हेतु हो. यहकं ॥सकलस्तु रस्करमित्रकं,मित्रान स्वगृहेऽि कारयेन्नेव ॥ मात्राधिकोपकरणें, लीकः पाप समाचाति ॥ विभिम्नतिवाला पुरुषें पोताना उपयोग करतां वधारे कोइ उपकरण राखवुं न हिं वली पोताने घेर पण तेवी वस्तुचेन तैयार न करावे कारणके उपयोग करतां वधारे चीजो राखवाथी बीजा लोको पण पापनुं आचरण कर हे.

तथा जे फूल फल पत्रमांहे कंष्ठश्चा प्रमुख जीवनी विराधना यति हो य ते फूलादिक परिहरवां. ए प्रमादाचरितनी विरति वालाने पांचमो श्च तिचार जाणवो. ए श्चनर्थदंम नामा त्रीजा गुणत्रतनेविषे थयेला श्चतिचा र निंडुं ढुं. श्चालोठं ढुं. इत्यादि पूर्ववत् ए ढवीशमी गाथानो श्चर्य ॥१६॥

ए व्रतनेविषे दृष्टांतमाटे वीरसेन अने कुसुमश्रीनी कथा कह है:— सर्वसमृद्धियें सहित एवो कनकशाल नगरनेविषे हरिकेसरी नामें राजा ह तो तेनी प्रीतिमती नामे राणी हती जे शीलेंकरीने सती अने आलापें करी प्रिय हती तेने वीरसेन नामें पुत्र ध्यो,तेना गुण गौरवनो पार नथी. ते कुमर, पुरुषनी बहोतेर कलानो पारगामी हे,सर्व कोइने पूहवा योग्य हे ते यौवनावस्था पाम्यो हे हवे रत्नमय एवा श्रीजिनप्रासादें करीने मनोहर एवं रत्नपुर नामे एक नगर हतुं तिहां न्याय अने पराक्रममांहे धीर एवो र णधीर नामे राजा तेनी रत्नावली नामे स्त्री हती ते संताननी चिंतायें करी घणी ज्ञाबी खवा लागी तेथी तेणें संतान प्राप्ति माटे सेंकडो जपायो कखा तेवारें पूर्वकत सुकतना योगें तेने कुसुमश्री एवे नामे एक पुत्री थइ. ते रूप लावण्य शीलादिकगुणेंकरी अति अङ्गत थइ, ते चालती थकी जाणे कंद पंनी थावर नही पण जंगम राजधानी होयनी तेवी हे ते योवनावस्था मां आवी एटले तेना पिताने वरनी चिंता जपनी.

एवामां चरपुरुपना मुख्यी सांनव्युं जे रूपेंकरी कंदर्पावतार जेवो वी रसेन कुमार ते कुसुमश्रीने योग्य वर हे ए बात सांनजीने सुरसुंदर नामे निपुण प्रधानने राजायें कनकशाल नगरें वर जोवा माटे मोकव्यो. ते प्र धान पण त्यां कनकशाल नगरमां जइ लक्क्मीने रहेवाना घररूप एवा वी रसेन कुमरने देखीने रीज पाम्यो अने कन्यानुं वेशवाल कखुं. वीरसेन कु पर पण पितानी आङ्गा लइ प्रधाननी साथें रत्नपुरनेविषे आयो. तिहां राजा महोत्सव सहित वीरसेनने कुसुमश्रीनुं पाणियहण करावतो हवो तेवारें चोरीमां कुसुमश्रीयें ग्रप्तपणे वीरसेनने कह्यं के तमे हाथ मूकाववा ने अवसरें देवतानो आपेलो देव अहस्य अश्व मागी लेजो वीजो पट्यंक श्रने त्रीजो ग्रुक ए त्रण वस्तु लेजो बीजा कोइनी जरुर नथी. ते श्रश्व कहेवो ने के जे स्थानकें आपणने जवुं होय ते स्थानकनुं नाम देशने हं कारीयें तेवारे देवताना विमाननी पेरें तिहां जइने मूके. तथा पव्यंकनी पासेथी जे वांबित मागीयें ते छापे, धाक श्रम सर्व टेली जाय देवशय्या नी पेतें सुखें निज्ञ खावे, स्वामीने खर्थें पत्रवां चात्यो खावे, तथा शुक हे ते चूडामणी प्रमुख ग्रुकनशास्त्रनो जाण, घणो माह्यो, निमित्तशास्त्रनो जाएनार, आपदामां धेर्यने देनारो हे एम ए त्रऐय वस्तु रत्न जेवी जगत मां मलवी डर्जन हे माटे तमे ए त्रण वस्तु मागी लेजो. कुमरें पण तेमज ते त्रणेय वस्तु मागी जीधी तेवारें राजायें विचाखुं जे ए त्रणे वस्तुनी वा र्त्ता निश्चें महारी पुत्री विना वीजो कोइ एहने कहे नही ए महारा घरना रहस्यनी वात पुत्रीयेंज कहेली हे माटे में एने पालीने महोटी करी प ण आखर पारकीज जाणवी घरमांथी जतीयकी सर्व पितानी कृदि लेइने जाय एवं चिंतवीने जो पण ते त्रणे वस्तु राखवा योग्य वे तो पण कांइ क पुत्रीना स्नेह्यकी कांइक लङ्कायक। जेम गुरु जव्य जीवने रत्नत्रयी

श्रापे तेम राजायें त्रणे वस्तु वीरसेन कुमरने श्रापी. पढी कुमर केंटला एक दिवस तिहां रही ससरानी रजा मागी घेर जवानी सामयी तैयार करी प्रथम सर्व सन्यने मोकली दीधो श्रने कहां के तमें श्रापणा नगरना उद्यानमां रहेजो ते संकेतें ते पण प्रस्थान करता हवा पाढलथी कुमर घोडा उपर श्राहृद थइने तेनी पढवाडे कुसुमश्रीसहित पब्यंक बांध्यो श्रने हाथमां शुक लीधो पढी वीरसेन हंकारतो हवो त्रण रत्न श्रने न ली कन्या तेनी प्राप्तिनी प्रीतिने श्रितशय वशवर्तिपणे कुमर त्रांतियेंकरी कनकशालपुरने वदले एवं बोखों के हे श्रथ ! तुं कुसुमपुरना उद्याननेविष जा एम कहेतांज ते तुरंग गहडनी पेरें श्राकाशें उनीने तेहज इण्मां हजारो योजन पृथ्वी उलंघतो शीघपणें कुसुमपुरना उद्याननेविष जइ रह्यो.

ते उद्यान महा विहामणं देखाय हे जेम श्रटवीनेविषे जनावरोना न यंकर रोइ श्राकरा विहामणा शब्द मांनलीयें तेनी पेतें त्यां पण एवा शब्द सांनलतो हवो तेवारें शुकने पूछतो हवो के हे शुकराज! श्रापणें इहां क्यां निकली श्राव्या तेने शुकें कहां के हे शुकर ! तमे पोतें श्रथनी श्राण ल कुसुमपुरनुं नाम दीधुं तेथी श्रा कुसुमपुरना उद्यानें श्राव्या श्रने श्रा नगर श्रून्य हे तेथी नयंकर शब्द जनावरोना संनलाय हे एवं पोपटनुं व चन सांनली कुमर पोताना प्रमादने निंदतो हवो. पही कुमर नूख्योथको तलाइ रहित एवा पत्यंकनी पासेथी निःशंक एवा श्रकना वचनथी चिंता मणीरत्ननी पेरें नोजननी याचना करतो हवो एटले पत्यंक पण तत्काल वांतित नोजन श्रापतो हवो तेवारें ते कुमर स्वीसहित जमीने पान खादिम स्वादिम मागी ते पण श्रारोगीने वली सुडाने खावा योग्य तथा तुरंगने खावा योग्य मागी सर्वने जमाडीने पत्यंकना प्रनावथी ताजा कहा.

पढ़ी कुमर कोंतुकथी नगर जोवाने निकट्यो पण मांहे जतां नयंकर शब्द सांजलीने गयो नही परंतु नगरनी बाहेरज जेनो प्रत्यक्त महिमा है एवं पाइदेवीनुं छवन हे तेनी जगतीयें रहीने देवीनुं देहरुं जोतो हवो ते नो सुवर्ण मिणमय गढ हे, सर्व वस्तुयें परिपूर्ण हे, सर्वमां सारजूत एवं नगरनी बाहिर देवीनुं छवन देखीने कुमर सुडाप्रत्यें पूहतो हवो के हे छ कजी! शा कारणथी आ नगर शून्य थयुं हत्रे ? तेने सुडायें कह्यं के को इक देवीना कोपथी नगर शून्य थयुं जणाय हे वली ज्यारें ते देवी वसाव

ज्ञो तेवारें वसज्ञो. पण हुं निमित्तने बर्झे करी एटखुं जाणुं बुं जे आ नगर नो राजा तुं थाइज्ञ तेवारें ए नगर फरी पाबुं वसज्ञो. त्यांसुधी उजड रहेज्ञो.

एवं स्डानुं कौतुक कारी वचन सांजलीने कुमर अत्यंत हर्ष पाम्यो एम स्डासाथें वातो करतां स्यं अस्त थयो. अने अंधकारनो प्रसार थयो ते वखत स्डो ग्रुकनशास्त्रने वलें वृद्धियी विचारीने कुमरने कहेतो ह्यो के रात्रि घणी अंधारी वे माटे वे पहोर पर्यंत तमे जागता वेसो अने वे पहोर पर्यंत हुं जागीश केम के आ नगर ग्रुन्य वे अने वली आ त्रण वस्तु पामवी पण इर्लज वे तथा महारा धारवा प्रमाणे आज कांइक तुजने वि प्र पण थवानुं वे एटलामाटे आपणें सावधानपणे रहेवुं, कारण के जागता ने कोइ जय न होय॥ यतः॥ जयमान्नास्ति दारिद्यं, जपतो नास्ति पात कं॥ मोनेन कलहो नास्ति, नास्ति जागरतो नयं॥ १॥ जावार्थः—जयम थी दारिइ नाश पामे, जपथकी पातक नाश पामे, मौन धारण करवाथी कलह जाय अने जागतां थकांने कोइ जय न थाय॥ १॥ माटे जागताने जपाय करवो सुलज थाय जो विद्यमांहे पीड्यो होय तो पण जयने स्थानकें सुतेलो पुरुप घणो वगोवाय.

एवं सूडानुं वचन सांनतीने कुमर तथा कुमरी वे प्रहर रात्रि लगण सुखें निड़ामां सूतां अने सूडो वे पहोर पर्यंत जागे हे रूडा काममां को ण आलस करे शय्याना प्रनावें वे प्रहर सुखमां निड़ा करी वेडु जाग्यां अने कुमर सावधान थको रह्यो तेवारें सूडो जेम पंथें थाकेलो उंघे तेम उंघ्यो.

एवामां पाइदेवीना ज्ञवननेविषे दिव्य नाटक संगीतनो ध्वनि ययो ते सांजली कुमर आश्चर्य पामीने जोवाने जजमाल ययो तेवारें पोतानी स्वी ने तिहां सावधान वेसाडी पोतें देहचिंतानो मिश करीने नाटक जोवा गयो तिहां तंत्री वीणा तालादिक घन मुरजादिक सुपिर वंशादिक एवां चार प्रकारनां वाजित्र वागे हे जिहां श्रीराग प्रमुख ह राग, पट् नापा, ह त्रीश रागणीयें सहित, खडजादिक सात स्वर, यडकं ॥ पड्जंमयूराब्रवते गावस्त्वपन्ननापणाः ॥ अजावदंतिगांधारं, क्रोंचः क्रणति मध्यमं ॥१॥ पुष्प साधारणे काले पिकः क्रजति पंचमं ॥ धेवतं प्राहुरश्वाश्च, निपादं ब्रुवतेगजाः ॥ १ ॥ स्वरानुगास्वयोग्रामा, मूर्जनाएकविंशतिः॥ तानाएकोनपंचाश, नमात्रा स्तिस्वस्वयोलयाः ॥ ३॥ चतुर्का रूपकं त्रिधाऽप्येकतालोिहधा पुनः ॥ रासाष्ट

तालकाश्वेव, निसारुचकमातकाः ॥४॥ मातकः पड्विधोधूया, निधः शोडशचेद चृत् ॥ त्रिधासुंमकुंवकः करणीयाकर्त्तनीतया ॥ ५ ॥

इत्यादिक नाटकना नेद घणा है इहां केटला एक लखाय एवं देवता संबंधि अञ्चत नाटक सांनलीने कुमरनुं मन खेंचाणुं तेथी तिहां जोवा ग यो मनुष्यनुं नाटक देखीने मनुष्य जोवानी चाहना करे तो देवतानुं नाट क देखीने मनुष्य जोवानी चाहना करे तेमां कहेवंज ग्रुं?

ह्वे कुंवर नाटक जोवा गयो पाठल कुंवरीने एकलां बेठां थकां उंघ आवी एवामा देवयोगथी घोडाने अने पब्यंकने कोइक उलनेविषे माह्यो एवो चोर ठल जोइने लइ गयो. जे ठलें करीने लइ जाय तेनी कोइने खबर पडे नही. एवामां पावली रात्रियें श्रंथारें सूडो जाग्यो तेवारें सुडे कुमरने तथा पब्धंकने अने घोडाने ए त्रऐयने न दीता. एकती कुमरीनेंज उंघती देखीने बूम पाडी. ते बूम सांचलीने कुमरी जागी उठी इहां कुमर पण जेटजे नाटक जोवा गयो तो तिहां नाटक पण कांइ दीतुं नहीं। नाटक तो इंड्जालनी पेतें अहस्य यह गयुं तेवारें ते पण पातो वली बुंम सांजलतो पोताने स्थानकें आव्यो त्यां पब्यंक अने घोडाने न दीवा. तेवारे विज्ञाखो पड्ने विचारवा जाग्यो के अहा महारुं प्रमादिपणुं जूर्ड, महारी मूर्यता जूर्ड, धिःकार पडो महारा मूढपणाने के सुडे मुजने कृद्यं हतुं जे त्र्याज तहारे विघ्न यशे तेथी तुं सावधान रहेजे तो पण महारा चित्ततुं व्याक्रिपपणुं तो जूर्र जे नाटक सांजलवानुं मुजने मन थ्युं जेथी में महारा खार्थनोत्रंश यतो पण दीवो नही. पोताना कार्यनेविपे प्रमादी थयो. माटे हे जीव ! ए तो तुजने खब्प थयुं हे पण प्रमाद आ नवनेविषे पण स्वार्थनी हानि करनारो अने परनवनेविषे अनंत इःख नी खाएरूप हे ॥ यतः ॥ प्रमादः परमोद्देषी, प्रमादः परमं विपं ॥ प्रमादो मुक्तिपुर्दस्युः, प्रमादोनरकायनं॥ नावार्थः-प्रमाद ते मोहोटो शत्रु हे तथा प्रमाद मोटुं विप ने वली प्रमाद ने मुक्तिरूप नगरीने झुटनारों चोर ने अने ए प्रमाद जे हे तेज नरकतुं स्थान हे.

एम ते कुमर पोताना आत्माने निंदतो खेद धरतो हवो, तेने सूडो स् मजाववा लाग्यो के हे कुमर! तमारा जेवा प्राणीने खेद करवो युक्त नथी यतः ॥ आपत्सु संपतंतीषु, पूर्वकर्मनियोगतः ॥ धैर्यमेव परं त्राणं, न युक्तम नुशोचनं ॥ नावार्थः-पूर्वकर्मना योगधी कदि अति आपित आवी पहे तो पण तेमां धेर्य राखवुं एज रक्ष्णनुं मोटुं साधनने परंतु शोक करवो योग्य नधी.

एवं सूडानुं वचन सांजलीने कुमर कहेवा लाग्यो हे ग्रुक ! वस्तु वे गइ हवे जे करवुं घटे ते तुं मुजने कहे ते हुं करुं, ते सांजली सूडो वोव्यो हे कु मर ! प्रथम तो तुं खेद मूकीने एकायचिनें पाइदेवीनी पूजा कहा, जे माटे हुँदैवना योगथी जे वस्तु गइ हे ते देवीना आराधवायी पाही मलशे एवं सू डानुं वचन सांजलीने सर्व पूजानी सामयी लइ देवीने ज्ववनें जइ देवीनी पूजा करी पही जपवास करी वेशो ते जेवारें त्रण जपवास थया तेवारें दे वी प्रगट थइने बोली के हे कुंवर! तहारे ग्रुं कार्य हे ते मने कहे! कुमरें क ह्यं हे देवि! तमाराधी ग्रुं आजाएं हे हुँदैवना वश्यकी महारी वे वस्तु को इक इंइजाल देखाडी लइ गयो हे ते माटे तुजने आराधी हे हवे मारे आधार पण ताहरोज हो माटे जे तुजने जित्वत लागे ते कहा.

एवं कुमरनुं वचन सांज्ञजीने देवी बोजी हे कुमर! हजी केटलाएक का जनो विलंब हे पही तहारी गयेजी सर्ववस्तु मेलवी आपीश तथा तेथी पए वजी अधिक मेलवी आपीश. पए विलंबे थाओ. हजी तुजने घणा इष्क मेना योगथी आगल एथी पए वधारे इःख थओ. यतः॥ धरिक्कईतो जलनिहि, विकसक्तोलोत्तिज्ञक्तसीलो ॥ नहु अन्नजम्मनिम्मि, अग्रह सहोकम्मपरि एामो ॥१॥ जावार्थः—समुइमां जइने पेसे तो पए कक्तोलें करी जेदपमाई एवा ग्रुज अग्रुज कर्मना परिणामो के जे अन्य जवांतरथी जीवनी साथें जेला थया हे ते जोगव्याविना कोइथी टाव्या टले नहि.

हवे तुं आ चैत्यनेविषे ध्वजानुं चिन्ह करीने रहे, अने पर्र्दीषें वहाण जतां हकों ते तारी ध्वजानुं चिन्ह देखीने तुजने आ दीपनेविषे तेडवा आ वहां ते पोताना वहाणमां तुजने वेसाडको एम कही देवी अहक्य थइ पढ़ी कुमर पण देरासरना शिखरनी उपर ध्वजानुं चिन्ह करीने रह्यो एकदा कोई धनपित नामे व्यवहारियो वहाण जई चाव्यो जातो हतो तेणे ते चिन्ह दीतुं तेवारें ते दीपमां आवी उत्थो अने पोताना वाणोतरने तेडवा मोकव्या तेणे आवी कुमरने कह्यं के अमारो स्वामी समुइमां पडेजानो उद्धार करे ते चूजा पड्याने संबल आपी तेने पोताने स्थानकें पहोचाडे ते माटे ए अमारा स्वामीनी विनति तमे अवधारीने अमारा वहाणमां अमारा

स्वामी पासें पधारों. एवी वाणी सांजली रीज पामीने देवीने नमस्कार करी कहां के हे अवे! तुं सर्व महारा मनोरथ पूर्ण करजे अने आपदायकी मने रा खजे एम कही देवीने पगे लागी सूडाने साथें लड़ कुसुमश्रीने तेडीने धनप तिना वाणोतर साथें वहाणकपर कुमर आब्यो; धनपतियें पण तेने वहाण मां वेसाडी वहाण चलाव्यां. मार्गमां धनपतियें पूठ्यं त्यारे कुमरें सर्व पो तानुं वृत्तांत कह्यं ते सांजली धनपतियें घणी आश्वासना करीने कह्यं जे त हारुं इःख आजथी सर्व गयुं एम जाणजे एम कहीने कुमरने जे कांइ खावा पी वाने माटे वस्तु जोइयें तथा वस्त्र प्रमुख जोइयें ते सर्व धनपतिशेव पूरतो हवो.

एकदा कुसुमश्रीनुं रूप देखीने धनपतिज्ञेतनुं चित्त बगड्युं तेवारे कुमरने मारवानो बल जोवा लाग्यो एकदा रात्रियें कुमर देहचिंतायें वहाणनी को रें मांचीयें वेतो तेवारें जेतें तेने धको दृइ दरीयामां तेली नाख्यो. पढ़ी यो डी वार रहीने जोतें पोकार कच्चो जे हमणां समुइमां हे कोइक माणस पड वानो धूपको थयो एटलामाटे सहु कोइ पोतपोताना सथवारानां माणस संनालों एवो उंचेस्वरें शेवें पोकार कस्बो. ते सांनलीने कुसुमश्री उठीने जू वे वे तो पोताना स्वामीने दीवो नही तेवारें सूका काष्ट्रनी पेरें अचेत थइ मूर्ज्ञी खाइने प्रथ्वी उपर पडी. थोडी वार पढी मूर्ज्ञी वर्जी तेवारें पोकार कर ती वारंवार विलाप करवा लागी ते सांचलीने कपटी धनपति तथा वीजा पण सर्व वहाणमांहेला लोक विलाप करता हवा. एम करतां प्रचात श्रयुं ते वखत सर्व वहाणना जोक वारते थके पण ते कुसुमश्री इःखरूप समु इमां पडीयकी समुइमां जंपापात करवा जेटले जाय हे तेटलामां तो अकस्मा त पाउलथी कुमरे आवीने तेने निपेधी बांद कालीने राखी एटले कुसुमश्री विनोद पामती अदेत आनंदने धरती यकी कुमरने पूछती हवी के हे स्वा मी ! तमे क्यांथकी देवतानी पेतें अकस्मात् आवी पड्या ए वात कुसुमश्री ना मुखथी सांनलीने कुमर बोख्यों हे त्रिये ! हुं कांइ जाएतो नथी जे मुज ने समुइमां कोणे नाख्यो अने पाठो इहां लावीने कोणे मूक्यो ते वखत वहाणना लोकोमांहेला एक सार्थवाहने मूकीने बीजा सर्वने आनंद उप न्यो अने सार्थवाहने कारिमो आनंद उपन्यो पण अंतरंगर्थी खेद उपन्यो क्रमरें सार्थवादनुं कर्तव्य सर्व जाण्युं पण कह्यं नही जूर्र कुमरनी करुणता, दाहिएयता, माहापण अने बुद्धि के जेणे धनपतिशेवनुं मनेंकरी पण

मातुं चिंतव्युं नही. पापफल ज्यारें चदय आवशे त्यारें ए एनां नोगवशे.

एकदा प्रचंम वायरेकरी समुइना कछोल जवलवा लाग्या. विल ते क छोल जवली वहाणमांहे पडता हवा तेथी समुइमां दडानी पेरें वहाण ज बलवा लाग्युं एम वहाण पापाणें अथडातां जुना वीकराना वामनी पेरे नांग्युं तेना कटका थया. तिहां सार्थवाह अने वाहाणनां लोक तथा वहा एनी वस्तु सर्व समुइमांहे बूडी अति जयपापनां फल सार्थवाहने इहांज जदय आव्यां. सार्थवाहनी पापदशा जागृत थइ.

वहाण नांग्युं तेज वेलायें कुमर सूडा सिहत हतो तेने पाटीयुं हाथ आव्युं अने कुसुमश्रीने पण तेजवखत पाटीयुं हाथ आव्युं ते जेम जीव जु दी जुदी गतियें जाय तेम ते वे पाटीयां पण जूदी जूदी दिशायें समुइमारें चाव्यां जाय हे ते कांइक पासे हतां पण वायराने कल्लोलें वेगलां थयां. तेवारें सुडे कल्लं स्वामी! आङ्गा आपो तो स्वामिनिनी पासें जइ आवुं! कु मरें आङ्गा दीधी के सुडो कुसुमश्रीपासे जइने वली तेनी खबर लइ कुमर पासे आव्यो एम वली पण कुसुमश्री पासें जइ कुमरनो संदेशों कहे अने कुमर पासे कुसुमश्रीनो संदेशों कहे एम जातां आवतां सुडो थाको अने वेदु जणना पाटीयां पण एकबीजाधी घणा वेगलां थयां.

तेवारें कुमर खडाने गढ़ गढ़ वाणीयें कहेवा लाग्यों के अमारे कर्मवि पाकथी हमणां माठी दशा आवी हे एटलामाटे अमारी साथे तुजने पण इःखी करवो योग्य नथी माटे तुं सुखें वननेविषे जइने जीवतो रहे कोण जाणे अमारं इहां ग्रंथाग्रे, अमने जीवितनो पण संदेह हे. वली को इक अवसरे अमने दर्शन देजे. ते वचन सांजलीने खडो बोव्यो हे देव! धर्य राख्य, धेर्य हे ते आपित्हप समुइमां सेतु जेवी हे, धेर्य हे ते संपदा मुं कारण हे. खर्य सरखाने पण आपदा आवे हे, वली संपदा पण थाय हे एटले उदयपण थाय हे अने अस्तपण थाय हे. तमे पूर्वें रही रीतें धर्म आराध्यो नथी जे आराध्यो होत तो आवी पापदशा उदय आवत न हीं. यतः ॥ सेवितः किल संपूर्णः, संपूर्णं तनुते फलं ॥ जनानां जिनधर्मोऽपि खंमितः खंमितं पुनः ॥१॥ पुनः सर्वं ग्रुचं जावि, यद्भाग्यं जवतोऽ इतं ॥ न किं समरसि देव्योक्त, मित्युक्ला तमधीरयत् ॥ जावार्थः—जो संपूर्ण रीते जि

नधर्म मेव्यो होय तो संपूर्ण फलने आपे ने तथा कांइ खंमितपणें आरा ध्यो होय तो तेवा खंमित सुखने आपे ने॥ १॥

वली पण तमारा पुण्यना उदयथी सर्व सारुं थरो. शुं देवीना वचन सं नारता नथी. एम कहीने सुडे कुमरने धीरज दीधी वली ते सूडो कुमरीपासें गयो ते कुमरीने परम अनीष्ट बांधवनी पेठे हे ते विविधप्रकारना विलाप करती हती तेन सूडे कुमरनो संदेशों कहीने धीरज दीधी. तेवारें कुमरी पण नेत्रें आंसुं आणीने कहेती हवी के हे शुक! तुं कोइक वननेविषे ज इने तारा पोताना प्राणनुं रक्षण कस्य केम के हजी अमारे कप्टें करीने पण पूर्वकतकमें हे ते इहां नोगववांज हे तेवारें ते सूडाने घणुं इःख लाग्युं बीजी गित कोइ तेना विचास्थामां न आवी एवो ते शुक ते महाकप्टें करीने कोइक दूकडुं वन हतुं तिहां जतो हवो.

पाग्नस्थी ते स्वी रोती थकी पोताना मूर्त्तमंत कर्मथी पीडा पामती पाणीना कछोलना समूहेंकरीने श्रित श्राकुल थयेली तेमज जलचर जी वोथी पीडा पामती एवी ते कुमरीना मानकर्मना वश्यकी जाणे जीवि तव्यज गयुं होयनी तेम तेना हाथथकी पाटीयुं खशी गयुं धिक्कार ने विधा तानी चेष्टाने! पन्नी जाणीयें पातालमांहेज पेनी न होय एम ते कुमरी स सुइमांहे बूडी जेटले समुइनेतले गइ तेटले श्रजगर सरखा कोइ महोटा म त्स्यें गली ॥ यतः॥ नित्ता पाश्मपास्थ कूटरचनां जंकला बलाहाग्रुरां, पर्यता मिशिखाकलापपवनान्निर्मत्यदूरं वनात्॥ व्याधानां शरगोचरादितजवेनोत्सुत्य धावन मृगः कूपांतः पिततः करोतु विधुरे किंवा विधो पौरुपं॥ जावार्थः—पा सलाने कापीने कपटथी रचेली रचनाने हड शेलीने तथा जोरथी जालने कापीने कल्पांत कालना श्रिमनी ज्वालाना समूहवालो जेनी श्रंदर पवन ने एवा वनमांथी बहार निकलीने तेमज पाराधीना वाणना लक्ष्यथी ए कदम वेगें करी दूर गयेलो मृगलो ज्यां श्रागल नेकतो जाय ने त्यां कुवा नी श्रंदर पडी गयो श्रने मरण पाम्यो. माटे ज्यां सुधी देव प्रतिकृल होय त्यांसुधी जे पुरुपार्थ करे ते कांइ काम श्रावे नहि.

जेम नारकी जीव वजनी कुंजीमां रहीने इःख जोगवे तेम कुसुमश्री मत्स्यना उदरमां रहीथकी इःख जोगवे हे. जवितव्यताना योगधी ते मत्स्य ने माहीयें जालीने बाहेर काढ्यो एटले श्रीपुरनगरनी पुफा नामे गणिकानी दासी त्रावी मूल वेरावीने ते मत्स्यने लड़ गइ ते घणे करें घेर उपाडी लावी तेने जोइने पुफा गणिकायें हर्ष पामी मत्स्यने विदास्रो एटले मांहे थी आश्चर्यकारी, अडुत रूपवाली, लक्कीदेवीनी पेरे उत्तम लक्क्णसहित एवी स्त्री मूर्ज्ञाने लीघे मुएली सरखी निकली तेने अनेक ख्रोषधोपचार करी ने साजी करी पढ़ी मनोहर मीठे वचनेंकरीने ते पुफा तेने बोलावती ह वी अने कहेती हवी के हुं एम जाएं हुं जे तहारुं कुल उत्तम हे तो पण मुजने संशय वे जे तुजने आवी इदंशा केम प्राप्त थई. ते सांजली शील सुगंधेंकरी महमहाट करनारी ते कुसुमश्री चिंतववा जागी जे हुं समुड्मां तो बूमी पण मुइ केम नही ? अथवा मत्स्यना उदरमांज केम न रही! अ हो विधातायें मुजने कये स्थानकें लावी मूकी! माटे धिक्कार! धिक्कार! ए विधाताने के मुजने स्वप्नमां पण वात न आवे तेवे स्थानकें लावी. एम विधाताने उलंजा देती, पोताना आत्माने निंदती, इःख सहती चिंतववा लागी जे इहां हुं गणिकाने शो उत्तर आपुं.एम विचारी मोन करी रही जे माटे सर्व अर्थनुं साधन ते मोनपणुं हे जाणीयें ध्यान धरीनेज वंती हे के हुं? तेवारें गणिकायें विचाखुं, जे हमणां ए इःखी हे तेथी उत्तर आपती नथी एने करार याज्ञे तेवारें आपणुं कह्यं करज्ञे. एवं चिंतवी फरी बोर्जी नही.

एकदा वली अनंत इःखने सहेती एवी कुसुमश्रीने वेश्यायें कह्युं के हे वत्से ! महारुं एक वचन सांनव्य आ महारी पुत्री मदनरेखा हे ते सर्व गणिकामांहे रेखा समान हे, सर्व जगतने मान्य हे, ए तहारी बहेन हे, आ महारुं निर्मल कुल ते महोटे नाग्यें पामीयें जेमां सदाय अविधवाप एं सर्वदा उत्तम नोग नोगवीयें अने सर्व कुटुंबना वियोगनुं इःख वीसरे, अमारा घरनेविषे नित्य उत्सव हे तें पण पूर्वें अत्यंत पुष्य कह्युं हशे ते वारें अमारुं कुल पामी हो. माटे हवे तुं इःख मूकीने नोगसुखनो अंगीकार कहा. आ घर, आ कहि, आ परिवार सर्वे ताहरे खाधीन हे.

एवो कुत्सित ग्रुकननो उद्देगकारी शब्द सांजलीन जेम कोइ मूर्खनां व्यंगवचनथी खेद उपजे तेम ते कुसुमश्रीने गणिकाना वचनथी खेद उपन्यो. नियथकी पण श्रातिनिय जाणीयें जेनुं मुख पण जोवुं न घटे, जेनुं नाम लीधाथी पण सत्पुरुपने शंका उपजे, धिकार हे के जेनाथी लोकमां वगोवणुं याय तेनुं नाम लेवुं तो रह्यं पण तेनुं नाम सांजलवुं घटित नथी एनो उप

देश ते पण महापापनुं कारण हे नीचमां नीचपणुं ते वेश्यापणुं हे, माटे हवे एने हुं उत्तर दृनं हमेश मीनपणुं धारण करवुं पण केम परवडे ! हवे महाराधी इहां केम रहेवाशे अने हुं हवे शुं करुं ? हवे महारी शी गति याशे. एवी कुसुमश्रीने चिंतातुर थयेली जोइने वली वेश्या कहे हे दे दे तसे ! तुं तहारुं सहए जेम होय तेम सम्यक्ष्रकारें मुजने संजलाव्य. तेवा रें कुसुमश्रीयें विचाखुं जे वेश्याने यथास्थित वात न कहेवी. एवं विमा सीने किष्पत वात कहेवा लागी ते आ प्रमाणे:—

वसंतपुरने विषे देवसेन जोठ महारो पिता रहे हे अने वसंत एवे नामें महारा नर्नारनी साथें हुं वहाण उपर चढी हती ते कर्मना योगयी व हाण नांग्युं तिहां मुजने मत्स्यें गजी एवी वात सांनजीने कपटने विषे मा ही एवी ते वेश्या नेत्रमां आंसु जावती वोजी जे एवुं कप्ट महारा वेरीने पण महोजो एम अंतः करणमां हर्ष पामती जाणे हवे महारा मन वांढि तकार्यनी सिद्धि थइ. देवयोगया एनो धणी पण मूर्वो हशे अने ए मुजने समुद्मांथी जडी हे एम हुं जोकोने कहीश एम चिंतवती पोताना परिवा र सहित कुसुमश्रीनुं चिन वश करवा जागी. एकदा वेश्या हर्ष धरतीय की कुसुमश्रीने कहेवा जागी के हे मुगाहि ! तुं आ आजरण वस्त्र प्रमुख सर्व गणिकाना वेशनो अंगीकार कस्च. अने आ योवन अवस्थाने सफल कस्च.

एवां श्रक्काना वचन सांजलीने कुसुमश्री विचारती हवी के श्रा वेका यो महारुं शील ते केम रहेज़े ? कारण के चंमालना पाडामां रहिने पवि त्र रहेवुं ते केम वनी शके ? हजी जरतारनी तथा सूडानी मूश्रा जीव्या नी कांइ खबर पड़ी नथी ते देवना योगथी सारी खबर पामुं एटलासारुं कालकेप करवो जोज़े माटे एने कालविलंबनो उत्तर करुं कारण के विलंबें सर्व श्रुज संपदा याज़े जरतार पण मलज़े श्रुने सूडो पण मलज़े एम वि चारी कल्पना करीने वेश्याने कहेती हवी के हे माताजी! श्रुमारा कुलनी एवी रीत ने के जरतार! मूबा पन्नी न महिना पर्यंत पंखीने चूणो ना खबो अने वली दान देवुं तेवार पन्नी जेम तमे कहेशो तेम करीश एम क हेथके वेश्या हर्ष पामी थकी सर्व दाननी सामग्री तथा चूणानी सामग्री तेने करी श्रापी ते लई कुसुमश्री वेश्याना घरनी श्रुगासीमां शालिप्रमुख कणना ढगला करती हवी. ते कणना समूह देखीने मयूर काक श्रुक कों

च कलविंक कपिंजल कपोत पारेवां चक्रवाक नीलचास विहका लावका दिक अनेक जातिनां पंखीर्र ते तंडल नक्ष्णने अये आवे जेम दातारने घेर याचक दिवसें दिवसें वधता आवे तेम पंखी पण दिवसें दिवसें वधता आववा लाग्यां. तिहां कुसुमश्री जाएं। के रखेने कोई पंखी जीव मने हे खीने बीक पामे एवा हेतुथी पोतानुं सर्वे अंग ढाकीने रहे एवी रीतें ते इःखनी धरनारी नित्य कण नाखे पंखीर्र पण सर्व विश्वास पाम्यां श्वकां वीये नही. खबर पडवाथी घणां दूर दूरथी पंखी ने त्यां चूणो लेवाने ऋषें आववा जाग्यां ते वजी हर्ष पाम्यां थकां मांहोमांहे वातो करतां हवां के मनुष्यने दान सहुको आपे तेमां तो शी महोटाइ हे परंतु जेउने कोइ दा न आपे नहि तेवां पंखी उने जे दान आपे तेज महोटाइ कहेवाय. वली श्रा स्त्रीनुं दान ते सर्व संपदानुं कारण ने एमां श्रहंकार तो नेज नही. एनां शा वखाण करियें एवी रीतें पंखीना समूह मजीने ते कुसुमश्रीना गुण वोले ॥ यतः ॥ त्रारोहंति सुखासनान्यपटवोनागान्हयांस्तद्भुप, स्तांबू लाद्यपनुंजते नटविटाः खादंति हस्त्यादयः॥प्रासादे चटकादयोऽपि निवसंत्ये ते न पात्रं स्तुतेः,संस्तुत्योच्चवने प्रयञ्चति कृती लोकोऽत्र यः कामितं ॥१॥ ना वार्थः-प्रवीण नहि एवा मूर्ख लोको के जे हाथी घोडावाला हे तेर्र सुखा सनें वेसे हे तथा नट अने विट (जार) लोको तांबूल विगेरेनो उपनोग करे ने तथा हाथी घोडा विगेरे पशुउ पोतानो खोराक खाय ने. चकलां विगेरे महेलमां वसे हे तो पण तेथी कांइ ते स्तुतिपात्र नथी परंतु जे सुरु ती लोक, मनवांबित आपे बे;तेज आ जगतनेविपे वखाण करवा लायक बे.

वली जरतारनी ग्रुदिने माटे कापडीकादिकने दान आपे, तथा मुनिने ग्रुद्ध आहार पाणी आपे, तेमज परदेशी प्रमुख सर्वने जेने जेवुं घटे तेवुं आपे.

हवे वीरसेनने मूकीने ग्रुक गया पढ़ी कुसुमश्री तथा वीरसेनना विरह नुं इःख नोगवतो एवो ते सूडो वनमां नमतो थको नदरपूरणा करे वे प ण क्यांइ तेने रित नपजती नथी. एकदा समये ते विदग्ध चूडामणी ना में इःखी सुडे कोइ पंखीना मुखयी एवी वाणी सांनली जे कोइक यौव नश्रवस्थाने पामेली श्रत्यंत इःखणी स्त्री ते व्ययचिनें नित्य स्थिरपणेकरी पंखी जनावर मात्रने कण श्रापे वे ते सांनली सुडे विचाखुं जे निश्रें ए कुसुमश्रीज हुशे एम चिंतवी कुसुमश्रीनो निर्णय करवा माटे ते सूडो शी प्र तिहां कण चूणवाने स्थानकें आव्यो अने कांइक वेगलेथी जोयुं जे आ कुसुमश्री होय के न होय एवी रीतें कांइक दूर रहीने तपासतां पूरण खा त्री न थई तेवारें नजीक आवीने एंधाण जोयां तो पण निर्णय थयो नहीं कारण के तेनां अंग सर्व वस्त्रें ढांकेजां हतां पढ़ी चूणनेमिशें घणोज ढूं कड़ो आवीने ते कुसुमश्रीनो निर्णय करी पोतानी मनों वाणीयेंकरी कहेतो हवो के हे स्वामिनि ! हुं तुज पामें आव्यो हुं अने तुं मुजने प्रसन्न दृष्टियें केम नथी जोती ? के घणाकाले मलवाथी तुं मुजने नथी उलखती?

एवां श्रमृतसरखां वचन सुडाना मुखयी सांजलीने श्रानंद पामती एवी कुसुमश्री पोतानुं मुख उघाडीने सुडाने जोइ ससंज्ञमपणे सुडाने पोता ना खोलानेविषे लड़ने ह्षं श्रांसुयें न्हवरावती रोमराय विकस्वर थाती, स्नेह सिहत पोताना पुत्रनी पेरें मीठे वचनें वोलावती ह्वी के हे शुक! तहारे श्राववेकरीने महारुं वांठित थयुं तें युक्त कखुं हे शुक! तुं कांइ खा मिनी शुि जाणे हे १ एवी कुसुमश्रीनी वाणी सांजलीने खेद सहित ते सुडो चीर थइने धेर्य देवा लाग्योकें हे श्रंवे ! देवीनुं वचन संजारों जे श्रा पणने श्रागल सर्व कख्याण थाजे एवं देवीयें कह्यं हतुं ते शुं तमने वीस री गयुं के १ एम वातो करे हे एवामां दासी पांजरुं लड़ श्रावी तेमां ते सूडाने राख्यो इहां वेक्याने कहेला ह महिना पण पूर्ण थवा श्राव्या.

हवे कुसुमश्री सुडाप्रत्यें पूजवा लागी के मारे हवे ग्रुं करवुं घटे? जो स्वामिनो योग न मले तो हुं प्राण तज्ञं के केम करुं ते तुं माह्यों ने माटे सुजने कहे? आ अविवेकणी कूटणीना संगयी महारुं शील केम रहेशे. एवी वाणी कुसुमश्रीनी सांजलीने सुडो बोव्यों हे स्वामिनि ! संदेह रहित एवी देवीनी वाणी ने तेमां पण तुं ग्रुं संदेह राखे ने? तमारो स्वामी म लग्ने तेने केटलाएक कालनो विलंब ने माटे तुं कालविलंब कख तहारुं सर्व वांनित सिद्ध थाग्ने देवीनुं वचन तथा नहीं थाय ज्यांसुधी तहारो स्वामी नहि मले तिहांसुधी तहारा शीलनी हुं रहा। करीश. तुं सुखें ए वेग्या कहे ते प्रमाणे स्नानशृंगारादिक कख. एवं सुडानुं बोलवुं सांजली ने ज्यारे न महिना वीती गया एटले पोताना धणीनी आववानी आशायें ते कुसुमश्रीयें हर्षसहित स्नान शृंगार जोजनादिक कखां.

हवे तेना रूपनी घणी विख्याति सांजलीने कोइक व्यवहारियानो पुत्र त्यां आव्यो तेवारें दासीयें आवी कुसुमश्रीने कहां के कोइ कामुक एवो ज़ेवनो पुत्र बाहेर आव्यो के तेने शो हुकुम फरमावो को,तेने कुसुमश्रीयें कहां के ए वात सुडाने पूढो सुडो माद्यो के माटे ए मने कहेशे तेम हुं करीश. तेवा रें दासीयें जइ सुडाने कहां. सुडो दासीने कहेवा लाग्यो के पांचशेने शोल सोनैया आपे तेवारें एकरात्रिना चार पहोर रहेवानी रजा आपुं माटे जा तुं जइने तेने पूछ!! दासीयें जइ ते कामुक नरने कहां तेतो धनवंत ने वली व्यसनी के माटे दासीनी वात सांजली रीज पाम्यो थको इव्य लइ ने जेवामां तिहां आव्यो एटलामां पहेलां सुडो ते कामिक नरने केतरवा माटे चारे पहोरनी सामयी दासीने हाथें तैयार करावतो हवो. पढी ते चतुर दासीने सुडे एकांत तेडीने समजावीने शीखवी राखी. दासीयें पण ते कामिकनरने तेड्यो तेनी पासेंथी इव्य लइने कुटणीने अपाव्युं.

हवे ते कामिपुरुप जेवारे पहेली प्रथम नूमिकायें आव्यो तेवारें तेने पीठी करी न्हवरावतां तेल चोपडतां एक पहोर लागी गयो एटले ते कामी नर बीजी नृमिकायें आब्यो तेवारें तिहां बत्रीश वानांनी रसोइ तैयार कर तां जमाडतां थकां वीजो पहोर व्यतीत थइगयो तेवारें त्रीजीनूमिकायें ञ्याच्यो तिहां गीत वाजित्र सांचलतां त्राजो पहोर यइ गयो. एटले चोची नूमिकायें आव्यो तिहां नाटक केौतुकादिक जोतां प्रनात थइ गयुं तेवारें ते कामिपुरुपने चोथी जूमिका थकी हेवो उतारी मूक्यो. अने कुसुमश्रीने तो सातमी जूमिकायें राखी इती माटे ते कामिपुरुषे कुसुमश्रीनुं मुख पण जो युं नही तेवारें जेम मार्जार शीकाथी च्रष्टथयो थको हाथ घसे अथवा जेम वानरो फालयकी च्रष्टययो हाथ घसे तेम ते कामिपुरुषने इव्यनो व्ययपण थयो अने कार्यसिद्ध न थयुं तेथी हाथ घसतो चाव्यो गयो मनमांतो घणो संताप थयो पण कोने जइने कहे. पठी ते कामिपुरुपें मनमां विचाखुं के जेम हुं बेतराणो तेम बीजा पण बेतराय तो सारुं थाय एम विचारी बीजापण तेना जेवा कामिपुरुषो हता तेनी आगल ते कुसुमश्रीना रूपनुं श्चने विषयनुं वर्णन करतो ह्वो. वारंवार तेना कहेण सांजलीने घणा पु रुषो अनिलापी थयाथका तेमज कुसुमश्रीनी साथें विपयसुखना नोगने वांतता आवे अने तेमज तगाया चाव्या जाय तोपण महारं इव्य व्यर्थ गयुं एम कोइकोइनी आगल कहे नही उलटा तेनां रूपादिक वखाणे तेथी बीजा कामिपुरुप त्यां आवे एम करतां ते सुडे वेश्याने अनगेल इव्य उपार्क्तन करी आप्तुं. तेथी अक्वानेपण प्रतीति यइ. अने कुसुमश्रीनुं शीलपण अखं म राख्युं अहो विद्ग्य चूडामणी सूडानी बुद्धि जूवो के जेणे बुद्धिबलेंकरी ने वेहुनां कार्य सिद्ध करी आप्यां. ते सूडो पंमितने पण मानवा योग्य थयो. एम जरतार मलवानी आशायें सूडाना सहायथी इःखना दिवस निर्गमन करनां काल व्यतिक्रमे हे.

द्ववे वीरमेन कुमर ते पाटियाने आधारें सातमे दिवसें समुइनो कांवो पाम्यो. तिहां पाटियाने ठांमी काष्टनी पेरे सूची खाइ पडी रह्यों हे. एवामां द्रीयाकां वे कोइक पामेना गामनो व्यवहारियो देहचिंतायें त्राव्यो तेणे वीरसेन कुमरने दीवो नेवारे दया आणीने पोताने घेर लइ आब्यो तिहां विविध प्रकारना उंसड उपचारें करीने तेने साजो कखो. पठी ते व्यवहा रिये वीरसेन कुमारने सर्व इनांत पूठ्युं के तरत ने कुमरने पूर्वेली इस्था अवस्थानुं इःख सर्व सांनखुं तेऐंकरीं नेत्रने विषे आंसुं नराणां अने वि लाप करवा लाग्यो तेवारें ते व्यवहारिये चिंतव्युं जे ए कोशएक महोटा ना ग्यवंत व्यवहारियानो पुत्र निश्चें जणाय हे. महारा पूहवाथी एने पाहला इःखनी अवस्था सांजजी नेने जीधे ए इःख धरे वे एटजामाटे हवे एने पूरवं नही. ए तुच्च प्रचायें सखं. एना लक्क एनी योग्यता अने स्वच ताने कही आपे हे. यतः ॥ अनणं तिविद्ध न जंती, सुपुरिस्सा गुणगणेहि नियएहिं ॥ किंचूलंति मणीउं, जार्च स्सहसे हि घिष्पंति ॥ १ ॥ नथी बो जता तोपण सत्पुरुपो पोताना गुणें करीने अप्रसिद्ध रहेता नथी जेम मणी बोलतो नथी तो पण तेमां गुण हे तेऐं करी हजार लाख अने कोटी पर्यत इव्य दइने लोको तेनुं यहण करे हे. माटे तेना लक्क एने अनुमानें तेना उप र स्नेह करी ते व्यवहारिये कतकताना गुणेंकरीने पोताना पुत्रनी पेरें ते कुमरने पोताने घेर राख्यो, पवित्रबुद्धिनो धणी ते व्यवहारियो जेम राजा राज्यपदनेविषे थापे तेम ते कुमरने पुत्रपदनेविषे थापतो ह्वो. एम ते व्यवहारियो कुमरनी उपर पुत्रपणानो माचो प्रेम अने ते कुमर ज्ञोवनी इ पर पितापणानो साचो प्रेम राखे हे ते कुमर उचित कार्यनेविषे माह्यो थको अवसर जोइने सर्वकार्य शीघ्रपणें करे एम ते ज्ञेव वृद्धावस्थामां

रोगादिकें पीड्यो थको पंचत्व पाम्यो त्यारे कुमर,शेवना घरनो मालेक थयो.

द्वे वीरसेनकुमर कुसुमश्रीनी ग्रुद्धिने अर्थे व्यापारनो मिश करीने देशां तरें चात्यो तिहां एकदेश मूकी बीजे देश जाय एम देशे देश नगरे नगर जमतां जमतां जेम जव्य जीव जब अटवी जमतां जमतां अगएय पुएयेक रीने वांत्रित सुखने आपनार एवा मनुष्यना जवने पामे तेम वीरसेन कुम र पण श्रीपुरनगरने पाम्यो. तिहां श्रीपुरनगरमां पेसतांज वीरसेनकुमरने ग्रुकन घणां श्रीकार थयां. तेथी जेम कोइ महारोगें पीडेला, मरणने निक ट एवा रोगी पुरुपने, कोइ पुरुप कहे के हुं तहारा रोगनुं निवारण करीने तने दीर्घायुवालो करीश तेथी तेने जीववानी आशा थाय तेम ते वीरसेन कुमरने कुसुमश्री मलवानी आशा थइ.

हवे ते कुमर श्रीपुरनगरमां उत्सुक यको को इएक व्यवहारियानी पहेडी उपर वेसीने को इएक पुरुपने नगरनुं खरूप पूछतो हवो तेवारें ते पुरुप क हेतो हवो के श्रा नगरनो नयसार नामे राजा छे वली ग्रुड व्यापारना कर नारा श्रनेक व्यवहारिया पण एमां घणा वसे छे वली हमणां श्रा नगरने विषे पुफा नामा वेश्यान घर साक्षात रित सरखी को इ युवान खी श्रावी रही छे ते एकरात्रिना पांचशे ने शोल सोनेया लीये छे परंतु सर्वने नाटकादिक हे खाडी प्रनात थाय एटले काहाढी मूके छे पण हजी सुधी को इ तेनुं मुख जोवा पाम्यो नथी तो तेना संगनीतो वातज शीकरवी. फोकटना सोनेया बूटी पडे छे एवं श्रद्धत को तुक श्रा नगरमां हमणां चाले छे ते दी वे जणाय.

ए वात सांज्ञिन वीरसेन कुमार विचार हे जे एतो कुसुमश्रीज हुने पण जोयाथी निर्णय थाय वली वेश्याने घेर रही हे एवं सांज्ञ वाथी संगय पण पड़े हे के कुसुमश्री ते एवी केम होय? वली पण अंग स्फुरवाथी निर्णय कखो के कुसुमश्री आज क्यांश्क मलवी जोश्यें. केम के मस्तक फरके तो राज्य मले, जुजा फरके तो वाहाला मले, नेत्र फरके तो जार्र मले, अधर फरके तो प्रियसंगम थाय, गहास्थल फरके तो खीनो लाज करे, कान फरके तो शोजन शब्द संजलावे, नेत्रना खूणा फरके तो धननो लाज था य, उष्ठ फरके तो पराजय थाय, पीठ फरके तो पराजय थाय, खंजो फर के तथा कंठ फरके तो जोग मले, हाथ फरके तो लाज तथा विजय थाय, हृदय तथा नासिका फरके तो प्रीति उपजे, स्तन फरके तो लाज करे, हृ

दय फरके तो हाणी करे, हृदयनी छंदर फरके तो जंमार वधारे, जिन फरके तो थानच्रष्ट करे, जिंग फरके तो खीजान थाय, कुला फरके तो पुत्रनी प्राप्ति थाय. जंघा फरके तो बंधुने छिरष्ट करे, पासुं फरके तो व हालो मले, ढींचण फरके तो वाहालानो लान थाय, पगनां तिलयां फरके तो लान थाय तथा पुरपने मार्गे चलावे, पग उपर फरके तो स्थानकनो लान थाय, पींभी फरके तो मार्गे चलावे. पुरुपने दक्षिण छंगें फरकतां य थोक फल होय छने स्त्रीने मार्वे छंगें फरकतां फल छापे.

हवे स्त्रीनो निर्णय करवा माटे ते कुमर पुषा गणिकाने घेर आत्यो. तिहां पांचगे ने गोल मोनेयाने बदले पाताना हाथनी मणीनी मुहा ते वे स्यापामें मूकी तिहां कुसुमश्री पण अंग फरकवाथी नरतार आज मल गो एवो निर्णय करी वेठी हे तिहां गोखनेविषे स्डानुं पांजरुं बांध्युं हे ते स्डे दूरथकी वीरमेनकुमरने आवतो देखीने घणाकालना विरह अग्नियं तापित एवी कुसुमश्रीपामें जङ्गे वथामणी दीशी ते अमृतसरखी स्डाना मुखनी वाणी सांजलीने परमआनंद पामीयकी शीघ्रपणें नरतार योग्यश्रं गार करती हवी. एवामां कुसुमश्रीनी रजायी वीरसंद कुमरने दासी सात मी नूमीयें तेडी लावी तिहां शीघ्रपणें नाग्ययोगथी वियोगरूप जे अंथकूप ते मांयीज जाणीये काढ्यो न होय! एम ते कुमर उच्चप्रदेशें चडतो थको वां ित स्थानने पामतो हवो. कुसुमश्रीपण माहापणनी पेटी एवी दासियो पासे पोताना स्वामीनी आगतस्वागत करावती हवी वीरसेनकुमर पण ब हुमुख्यवाली देवताना सरखी शर्थानेविषे वेसतो हवो.

एवामां कुसुमश्रीपण हलवें हलवें पगलां नरती वीरसेनकुमाग्नी पासं जूदे श्रासनें श्रावी वेती श्रधोमुख करी श्रासुंयें सहित दृष्टियेंकरी विचा रे बे के श्रा स्थानकें रहेतां थकां महारा रुडा गुणनी गोनायें तो प्रस्था नुं कखुं ते गुण गया तो हवे प्राणनाथ महारी विद्युहतानी प्रतीति केम करजो! हा इति खेदे धिक्कार बे देवने. जेमाटे में जे जे इःख श्रमुनव्युं नोगव्युं ते मने कांइ पण खटकतुं नथी पण मुजने श्रा निद्य स्थानकें श्रा वीने देवे नाखी ए मुजने घणुं इःखदायक थयुं बे ॥ उक्तंच ॥ टंक होदान्नमे इःखं,न दाहान्न च घर्पणात् ॥ एतदेव महाइःखं, यंजया सह तोलनं ॥ नावा र्थः—जेम सोनुं विचारे बे के मने टांकणे काप्युं तथी तेवुं इःख नथी तथा तपाववाथी तेटलुं इःख नथी अने कसोटीपर घसवाथी पण तेटलुं इःख नथी परंतु मने मात्र एज मोहोटुं इःख हे के वननी हलकी चणोही सा थे मने तोलीने तेनी साथें मारी तुलन' करे हे.

ते कुसुमश्रीने तेवी तथाविध इःखनी अवस्थायें पडेली देखीने कु मर विचारवा लाग्यों के ए कुसुमश्री गणिका सरखी देखाती नथी ए तो कुलवंती स्त्री सरखी देखाय है तेमाष्टे ए महारी स्त्री है केशुं ? धि क् धिक् ते तो महोटी सती है ते इहां वास न करे ? जेम माहली दावानलनें न सहे तेम ते पण इहां रहे नही. तेमाटे ए कोइ बीजीज स्त्री हे ते माहाकर्मना वशयकी इहां आवेली जणाय हे महारी स्त्री तो कोण जाणे किहां गइ, किहां हुने के नहीहरो! एम विचारी वली पूर्वनुं इःख सांचखुं तेवारे नीचुं मुख कखुं ते देखीने ग्रुकराज बोव्यो हे स्वामी! हर्ष स्थानकें तमने वेहुने आ विषाद शो थयो हे, एवं सूडानुं बोलवुं सांनलीने कुमरे उंचुं मुख कखुं एटले पांजरामांहे शुकने दी वो त्यारे जाण्युं जे ए क्रीडा करवानो महारो शुक वे तेटलामां ते संडो आवीने खोलामां वेवो तेवारें सुडाने उलखी स्नेह आणीने कुमर पूर्वतो हवों के हे वत्स ! तहारी स्वामिनीनी ग्रुद्धि तुं जाएं। हे ? एवुं सांजलीने सूडो बोख्यो हे स्वामी! ग्रुं चम धरो हो, त्या तमारा मुख त्यागल महारी स्वामिनी बेठी हे, हुं उलखता नथी? एवं सूडानुं वचन सांनलीने निष्का रण कुमरनुं मन जांखुं थयुं अने मनमां विचारवा लाग्यो के थिःकार हो स्त्रीचरित्रने! अरे आ कुसुमश्री राजानी पुत्री हे अने महारी स्त्री हे तेने आवुं वेश्यापणुं कदी दीवुं अने सांजल्युं पण नही! तो तेणे ए केम आदखुं. पुत्रने स्थानकें मानवा योग्य एवो आ सुडो ते पासें रहीने आ काम करावे हे माटे ए बे निर्विवेकिने धिःकार हे ए वेडुनुं मुख जोवुं प ण योग्य नथी. केम के आ निंद्यमां पण अत्यंत निंद्यकर्मनां करनारां है, एम अतिशय खेद पामीने ते कुमर जेवामां कांइक बोलवा जाय हे ते वामां राजाना घरनेविषे अत्यंत आकरो कोलाइल थयो. तेवारें ते कुसुम श्री त्याग करवा योग्य हे एवं निरधारीने तेने हांमीने कुमर राजचुवनें गयो.

त्यां जइने जूवे हे तो राजा दृढ क्रींचबंधनें बांध्यो हे, मुखमांची फि णोटा आवे हे, जूमिमां लोटे हे जेम कोइ जनावरने बांधी मारवा माटे तयार कखो होय तेवीरीतें राजाने बांधेलो दीनो ते सर्व कोई जाएवा ला ग्या के आ कोई देवतानी किया ने एनी प्रतिक्रिया मले नही,तो पण प्रधा न प्रमुख सर्वे मंत्र तंत्र यंत्र औषधादिक अनेक उपचार राजाने करार कर वा माटे करे ने ते सर्वे निष्फल थायने. जेम जेम ओषधादिक करे तेम तेम रोग वधतो जाय राजा ते वेदनायेंकरी कंनगतप्राण जेवो थई गयो, शरणहित थको प्रध्वीयें पद्यो तरफडे ने, प्रधानादिक घणा माह्या ने पण काइनुं माहापण चालतुं नथी कोईने छपाय सुजतो नथी तेथी प्रधाना दिक तथा नगरना लोक सर्व हाहाकार करवा लाग्या.

ते वखत देवी प्रगट थइने जेवो कल्पांतकालनो मेघ गर्झारव करे ते वा शब्देंकरी देववाणीये बोली जे नो नो लोको! सहु सहुने स्थानकें वहेला वहेला जार्छ. ए राजाने मूको ए पापिने पापनां फल उदय आ व्यां हे ते नोगवशे. एवी वाणी सांजली प्रधानादिक तथा नागरिक लोक सर्व न्हाइ पवित्र धोतीयां पहेरी हर्ष पामी धूप उखेवा लाग्यां विनय पूर्व क जिक्त करी पण कोइक अहस्य अतिशय कोपना वश्यथकी राजानी पी डा उपशमा नही. एटलां वानां थयानंतर परने उपकार करवामा जेनी उत्तम प्रकृति हे एवो वीरसेन कुमर बोल्यो के हे स्वामिन्! मुज उपर रूपा करीने एने तमे मूको ए राजा सीदाय हे माटे प्रसन्न थार्ड. अने जे तमने कहेवुं होय ते प्रत्यक्त थइने कहो तो ए राजा ते प्रमाणें करे.

एवी वीरसेन कुमरनी वाणी सांजलीने वैताल सरखो विकराल थको एवो ते देवता प्रत्यक्त थइने कुमरने कहेवा लाग्यों के हे कुमर! तहारों ए वेरी ने माटे एने नहीं मूकुं अरिकेसरी राजाना कुलना आधार एवा हे वीरसेन कुमार! तहारा पत्यंक अने तुरगनो हरनार ते एज ने ते छं तुजने वीसरी गयों के? ए तहारा विवाहमहोत्सव उपर आब्यो हतो तिहां त्रण रत्न तहारी पासें देखीने ते लेवाने लोनें हेरू थइ चोर थइने तहारी पानल लागों ते तुजने बहुरूपिणी विद्यायेंकरी नल देखाडीने तहा री वस्तु तेणे अपहरी लीधी अने तुजने कष्टरूपं समुइमां नाखी चाल्यों गयों. एवा जे इष्ट होय ते कष्टफल दीनाविना पांशरा थाय नहीं. माटे एने हुं मूकुं नहीं एम कही हाथमां मोगर लेइने राजाने मारवा माटे दो ख्यों. के तरत वीरसेन कुमार पोताना वेरी उपर करुणा आएतो देवने

पगे लागी कषाय उपशमावीने बलात्कारें तेना हाथमांथी मोगर मूकाव तो हवो. ते देखीने घणा लोको विस्मय पाम्या थका विचारता हवा के अहो आ केवो उत्तम पुरुष हे जे पोताना वेरीने पण प्रणिपत करीने मू कावे हे. आ जगतमां पोताना आत्माना हेतु तो घणाय हे पणं वेरीना हेतु वेरीने उगारनारा एवा उत्तम पुरुष तो थोडाज समजवा.

ह्वे वीरसेन कुमारनी विनंति सांचलीने पोतानुं वैतालरूप संहरी खा नाविक दिव्यरूप प्रगट करी देवी प्रत्यक्त थइने कहेती हवी के नोनो लो को ! रहस्यनी वात सांचलो आ राजाने में क्रोधेंकरी वज्जबंधनें वांध्यो बे. ते बंधन तो जेवारें कोइ महासती होय ते पोताने हाथें पाणी छेइने एने ढांटे तेवारें ए राजा बंधनमुक्त थाय बीजो कोश राजाने ढूटवानो उ पाय नथी. ते सांजली राजानी पट्टराणी प्रमुखें आवीने घणुं पाणी हां ट्युं. पण तेथी राजा हूटो नही केम के एक मनेंकरीज शील पालवुं इप्कर बे तो मन वचन अने काया ए त्रिकरण अदें पाल बुं तेतो वली महा इष्कर हे पही तिहां जेटली शीलवती सती नाम धरावती हती ते सर्व स्त्रि योयें तथा राजानी बीजी राणियोयें पण हाथमां पाणी लेइने राजाने ढांट्यां पण राजानां वंधन बूट्यां नही तेवारें सर्व स्त्रियो ज़क्का पामी श्रकी नीचां मुख करीने रही तेथी सर्व लोकोने संशय उपन्यों जे एवी विद्युद्ध शीलें करीने सती ते कोण ह्यों के जेने हाथें पाणी ढांटवाथी राजानां बंधन ढ़टे, एम सर्व लोक विचारे हे एवामां देवी बोली जे पुफागणिकाना मंदिरने विषे कुसुमश्री नामे स्त्री हे जेएो पोतानी उपरनो अपवाद टालवा माटे हाल का उसग्ग करेलो हे ते महासती प्रशंसवा योग्य सर्व सितयोमां शिरोमणी वे जेणे वेक्याना घरमां रह्यां थकां पोतानुं शील ऋखंम निर्मल राख्युं वे माटे ते आवी हाथमां पाणी खेइने राजाने बांटे तो राजानां बंधन तृटे.

एवी देवीनी वाणी सांनलीने वीरसेन कुमार तथा मंत्रिप्रमुख सर्व हुपं पामी गर्व ग्रांमीने पुफागणिकाने मंदिरें कुसुमश्रीने तेडवा गया पोताना इष्ट कार्यनीसिद्धिने अर्थें कोण ज्यम न करे वारु ? पत्नी ते शीघपणे कुसुमश्री पासें आवीने विनय निक्त बहुमानपूर्वक बोलावता ह्वा, ते देखी सूडो प ण कुसुमश्रीने प्ररणा करतो ह्वो, एवामां देवीपण कुसुमश्रीपासे आवीने कहेती ह्वी के हे बाले ! शरद्कालना चंइमा सरखुं तहारुं शील ज्यवल हे, माटे बीजना चंइनी पेरे सहु तहारुं दर्शन वां हे ते सर्वने दर्शन आप्य.

एवी देवीनी वाणी सांजनीने कुसुमश्रीयें काउसगा पास्नो अने पोते ह र्ष पामीथकी पोतानी पामें आवेला सर्वलोकोने जोती हवी पढ़ी ते हित वास्तव्यनी करनार एवी कुसुमश्री ते जरतारना उवेख्याथी जाणे नवो धिज कस्नो होय तेवा महोत्सव सहित राजसजामां आवीने हाथमां पाणी ल इने सजासमक् कहेती हवी के आ जन्मथी मांमीने आजदिवस पर्यंत में महारां मन वचन कायायेंकरीने एक वीरसेनकुमार मूकीने बीजा कोइ पुरुपने इठ्यो होय तो आ राजानां बंधन बूटशो मां अने जो मन वचन कायायेंकरी कोइपण पुरुप न इठ्यो होय तो राजानां बंधन बूटजो. एम कहीने जेवुं राजाने पाणी ठांटगुं तेवां त्रटाक शब्द करतां जेवीरीतें घांसनां दोरडां त्रूटीपडे तेवीरीतें राजानां बंधन त्रूटतां हवां. ते वस्तत जेम आपा ढमहीने वर्षाद वरशे तेम कुसुमश्रीना मस्तकनी उपर फुलनी वृष्टि यती ह वी. निष्कलंक एवा शीलवंत प्राणीने शुं इर्लन हे ?

हवे राजा स्वस्थ थइने वीरसेन कुमार तथा कुसुमश्रीने पगे लागतो हवो ते वखत राजाने एक लक्का, बीजो खेद, अने त्रीजो विस्मय, ए त्रण वानां एक साथेंज थयां ए त्रणे रसेंकरीने राजा परवश थयो.

हवे वेश्याने घेर रहीनेपण अखंमशील पालवाथी कुसुमश्री सितयोमां हे तिलकसमान थइ तेवात कुमरेंपण देवीने पूठ्यां थकां देवीयें सर्व पा ढलो हत्तांत कह्यो. एवं अड्डत पित्र चित्र देवीना मुखयी सांजलीने सर्वलोक आश्चर्य पामता कुसुमश्रीनी प्रशंसा करवा लाग्या अने सूडोपण कुसुमश्रीनी घणीज प्रशंसा करतो हवो.

हवे वीरसेनकुमार अने कुसुमश्री विस्मय पामीने ते देवीने कहेवा ला ग्यां के तमे कोणढों जे निष्कारण अमने एटलां उपकारी थयां ढो? तमे अमारा उपर प्रसाद शा हेतुयें कस्रों ते अमोने रूपा करी कहो.

एम पूर्व थके देवी बोली हे सुनगे ! तमे माह्यां बे बतां सुनने केम न थी उन्जखतां, हुं कुसुमपुरनगरनी पाइदेवी बुं पूर्वे तमें सुनने संतोषी बे ते दिवसथी मांमीने हुं तमारा सांनिध्यनी करनारी बुं तमारा पुख्यप्रमाणें तमारुं हितवात्सव्य करती तमने वश्यबुं. समुइमांहेथी में तमने उदाखां आज पण में तमारी सांनिध्य करी अने हन। पण हुं सर्वकार्यनेविषे तमारुं

सदाकाल सांनिध्य करीश. तमे जेटलुं इःख पाम्यां ते तमारा पूर्वजवना इष्कतथी पाम्यां ते इःखविपाक बीजाथी खेवाय नही एतो तमारे पोता नेंज नोगवे बूटको थाय जो इंड्सरखो होय तोपण कोइना उदय आव्या विपाकने टार्जी शके नही. तो महारो शो आशरो ॥यतः॥ अस्ति बुद्धः परेषां हि,कोपव्यात्तनक्मा॥ शक्रोऽपि कुपितं कर्म,नैव सांत्वयितुं पटुः॥१॥ पारकाको पने मटाडवामां बुदि समर्थने परंतु कोप पामेला कर्मने शांत करवामाटे इंइ पण समर्थ नथी ॥१॥ अतः परं परं नाग्यं, परं केमं निरंतरं ॥ निरंतराया प्राप्ता सि, चिरं संपत्परंपरां ॥१॥ इवेथी तमे अंतरायरहित एवा श्रेष्ट नाग्यने अने निरंतर कव्याएने तथा शाश्वत एवी संपत्तिनी परंपराने पामशो. जो आंतरा रहित धर्म कस्वो होय तो आंतरा रहित सुख नोगवाय, अने आंतरारहित संपदा पामियें ॥१॥ त्यारपढी जीवितदानने आपनार पोताना उपकारी एवा वीरसेनकुमारने राजा पोतें पोतानो अपराध खमावीने अश्व अने पव्यंक पाढ़ो आपतो ह्वो ते लेइने कुमर पोताना चित्तनेविषे संतोष ध रतो ह्वो. ह्वे वीरसेन कुमरने कुसुमश्री ते, अश्वरत्न पब्यंकरत्न अने ग्रुक रत्न ए त्रणरत्ननी साथें केटलाएक दिवसतो नयसारराजाना आग्रद थकी तिहांज रह्या पढ़ी राजानी आङ्गा मागीने देवीयें विमानरच्युं ते विमानमां बेसी सर्वजनने विस्मय पमाडतां महाक्दि संघाते पोताना पुरचणी चाव्यां.

हवे तिहां पोताना नगरना उद्यानमां वीरसेनकुमारनुं सैन्य जे दिवसें आव्युं हे ते दिवसथी राजाना हृदयनेविषे महाइःख उपन्युं हे उद्यानने विषे वीरसेनकुमार विनानुं सेन्य सर्व सुनुं लागे हे. जेम जीवविना शरीर न शोने तेम वीरसेनकुमारविना सर्व परिवार शोनतो नथी तिहां सर्व वी रसेनने आव्यानी वाट जूवे हे राजादिक सर्व अत्यंत इःखना सागरमां पड्या थका शोक धरे हे अन्यदा समयनेविषे आकाशथकी देवता सं बंधि विमान देवनाटक सहित आवतुं देखीने सहु लोक विस्मय पामता हवा एवामां देवीयें आवीने कुमर आव्यानी वधामणी राजाने दीधी के हे राजन ! तहारो पुत्र आव्यो ते सांनली राजा आनंद पामी वधामणीनो महोत्सव करतो हवो जेम पश्चना यूथमांथी यूथनो अधिपति च्रष्ट थयो होय ते घणे दिवसें यूथने मले तेवारें केटलो हर्ष थाय तेवो कुमर मत्या थी नगर बाहिर रहेला सेनिकोने हर्ष थयो. पढी जेम रामचंइने दशरथ

राजा महामहोत्सवें नगरमां प्रवेश करावे तेम राजायें वहु सहित कुमर ने नगरमां प्रवेश कराव्योः राजायें पुत्रनो नवोज अवतार आव्यो जाणी आनंदपूर्वक फरी जन्ममहोत्सव कह्योः देवीयें कुमरनो सर्व वृत्तांत राजा आगल कह्यो ते सांजली राजाना चित्तनेविषे खेद अने विस्मय थयो.

अन्यदा कुमारने राज्ययोग्य जाएीने तेने कुमारने राज्य आपी राजा पोतें दीक्दा लड़ चारित्र पाली सकलफर्मक्य करी मोक्दें पहोतो. ए वात वीरसेन कुमारने सक्षरे सांचली तेवारें आनंद पामीने ते पण वीरसेनने पोतानुं राज्य ञ्चापतो हवो तेमज नयसार राजा पण पोतानुं राज्य घणो ञ्चायह करीने वीरसेनकुमरने आपतो ह्वो. तथा पाइदेवीयें पण कुसुमपुरनुं पूर्वे इप्ट अने अन्यायी राजा हतो तेने हणीने नगर उजड करी नाख्युं हतुं पण हमणां तेणे वीरसेनकुमारने न्यायवंत राजा जाणीने ते नगरनुं राज्य ञ्चापी नगर वसावी दीधुं जेमाटे विद्या तथा राज्य अने दीक् एटलां वानां जे योग्य होय तेनेज अपाय परंतु अयोग्यने अपाय नही. ते वखन विदग्धचूडामणी नामें सूडो बोव्यो के हे स्वामिन! महारां केहेण मुजव सर्व वस्तु आपने प्राप्त थइ के नही? ते सांनजी राजा खुडानी उपर अ त्यंत रीज्यो पढ़ी जेम शक देवलोकनुं राज्य नोगवे तेम वीरसेनकुमार मर्च्य लोकनुं राज्य नोगवतो हवो ते कुमारनां चार राज्य थयां ते जाणीयें चार दिशाना चार दिग्पालें कुमरनुं अतुव्य पुण्य जाणीने तेने सोंप्यांज होय नही ? तथा पूर्वपुष्यना उदयर्थ। अने देवीना प्रनावयी जेम चक्रव र्त्तिनें चार दिशानां राज्य वश थाय तेम चारे दिशाना सर्व राजा ते क्रमरने विवश थया तेथी ते क्रमरनुं निप्कंटक राज्य थयुं.

अन्यदा कनकशालनगरना ज्याननेविषे केवली नगवान समोसखा ते नी वधामणी वनपालकना मुखर्यी सांजलीने राजा परिवारसिंहत वांदवा ने गयो तिहां केवलीने वांदी स्तवना करी यथोचितस्थानकें देशना सांज लवा बेवो जगवानें पण सर्व रोग क्षेशनी नाश करनारी एवी देशना दीधी ते सांजल्यानंतर अवसर पामी राजायें पोताना पाढला जब पूढ्या. .

केवली नगवान बोख्या हे नव्यो! हसतां कौतुकथी अनर्थदंमेंकरी जे जीवें कमे बांध्यां ते नोगववां पड़े माटे सर्वथा प्रकारें उत्तमजीवें अनर्थ

दंम ग्रांमवो. तमें बेहु जऐं पण पाग्ने नवें कौतुकथी हस्य करता थकां अनर्थदंमें करी कमे जपाज्युं ने ते सांचलो.

समेतशिखरनी तलाटीनां गामनेविषे हेमंकर एवं नामे गामनो ख धिप रहेतो हतो तथा जेना अंगनेविषे उत्तमगुणनी श्रेणी हती एवी धा रिणी नामे तेनी स्त्री हती ते वेंद्ध ग्रुन आशयवालां ग्रुद्ध श्रद्धावंत श्रा वक हतां श्रीसमेतशिखरें जे लोक यात्रायें आवे तेनी घणी निक्त करतां वली समेतशिखरना रस्तामां पाणीनुं पर्व मंनाच्युं तथा दीनडः खियानी ख बर जेतां, हषेथी सुपात्रने दान देतां, रात्रे चचित्रार करतां, सचित्तनां प रिहारी, एक वार नोजननां करनार, पट्पर्वीयें विशेष प्रकारें आरंनवर्जीने ब्रह्मचर्यनां पालनार, पंच पर्वी पोसहनां करनार, दान शील तप अने ना वरूप चतुर्विय धर्मनां पालनार, उत्तम श्रावक धर्मनां आराधनार, एवां लोकने प्रशंसवा योग्य ते बेंद्धजण हतां.

हवे ते द्वेमंकरने स्नेहवंत अने जोलो जिड़क एवो प्रियंकर नामें जाइ हतो ते प्रियंकरने प्रियमंजरी नामें कन्या महामहोत्सव सहित द्वेमं करें परणावी. एकदा अत्यंत उप्णकालनेविषे रात्रिने समये ते नवां पर ऐलां वरवहु पोताना घरनी अशोकवाडीमध्ये वाव्यनेविषे क्रीडा करतां हतां तेवामां स्नेहना समुइ एवा महोटे जाइयें आवीने अतिशय प्रेमें करी ते बेहुने हासीपूर्वक अकस्मात् वाव्यमांहे हडसेली नाख्यां. ते वाव्यमां पाणी स्वट्य हतुं माटे बूमगांतो नही पण घणो खेद पाम्यां आकुल व्याकुल थयां. तिहां द्वेमंकरें घणुं हसवाथी निकाचिन कमे बांध्युं अने ते कोतुकनी जोनारी तेनी स्त्रीयें अनुमोदना करी तेथी तेणें पण कमे बांध्युं.

एकदा वली ते हेमंकर अने धारिणी बेहुजणें मली प्रियंकर अने प्रि यमंजरी बेहुजणने कोइक स्थानकें अंधकार करावीने पठी तिहां ते बेहुने जूदां जूदां मोकव्यां अने प्रियमंजरीपासें प्रियंकरने शोधावे अने प्रियंकर पासें प्रियमंजरीनो शोध करावे एम हास्य करावीने ते बेहुने पोतपोतामां वियोग पाडवानुं इःख केंटलाक काल पर्यंत उत्पन्न करी दीधुं. तेणेंकरी योडीवार आकुल व्याकुल थइ महा चिंतातुर थयां. एकदा समयें वली धारिणीयें प्रियमंजरीने शोले शणगार पहेरावीने सिंहासनें बेसाडीने पठी प्रियंकरने एकांतें जइने कहां के देवरजी इहां आवो तमने घरमांहे गणि का देखाईं ते जूर्ड, एम कहीने पढ़ी वली प्रियमंजरी पासें आगलधी आ वीने देवरने कहेवा लागी के आवो आवो देवरजी जूर्र आ वेश्या सिंहास नें बेठी है ते पण आवीने जुवे है तो सिंहासनें पोतानी स्त्रीने बेठी देखीने इःख धरतो हवो अने लङ्कावंत ययो तेमज तेनी स्त्री पण अति शय खेद धरती थकी अत्यंत लङ्का पामी. तिहां धारिणीयें हासीयेंकरी कर्म वांध्युं ते आलोयुं नही अज्ञानपणायी मनमां एम जाएयुं जे हास्य थी कांइ कमें बंधाय है? कमें तो देपनावथी वंधाय है, ए हास्यमां कांइ दोप नथी. एम बेहुजएं ते कमे आलोयं नही पडिक्रम्युं नही. ते बेहु श्रावकनो धर्म पानी सुकृत चपार्जी तिहांथी काल करीने पहेले सोधर्म देवलोकें शकेंड्नां सामानिक देवता थयां तिहांथी चवीने तमे वेह स्त्री नरतार थया हो. तथा त्रियंकरनो जीव पण धर्म आराधन करी केटलाएक देवादिकना जव जमीन धनपतिशेव थयो पावला जवना अज्यासथकी धन पति उपर तहारो स्नेह रह्यो तें तेने पूर्वनवें वाज्यमांहे वेली नाख्यो हतो तेथी तेणे तुजनें समुइमांहे वेली नाख्यो पावले नवें तमें वेहुजणें धणीध णीयाणीनो वियोग पाड्यो तेथी इहां तमने वेहुने वियोग पड्यो. कुसुमश्रीयें पूर्वें हासीयें करी देवरनी वहुने वेश्या कही तथी वेश्यानुं कलंक चड्युं.

माटे हे राजन! थोडुं पण कम जीवें जेवा अध्यवसायेंकरी पाठलें नवें न्यां जुंदें होय ते तेमज आवता नवनेविषे जीव नोगवे तीव्रपरिणामें वांधे हुं कमें अनंतगुण पण नोगवे वली हे राजन! तमें बेहुजणें पूर्वें दा नादिक चार प्रकारनो धमें आराध्यों हतो तेथी तमो चार नगरनां जूदां जूदां चार राज्य पाम्यां अने पट्यंकादिक त्रण रत्न तथा चोषुं देवी प्रसन्न थइ ते पण एक रत्न एम चार रत्न पण पाम्यां अथवा झानादिक त्रण रत्न आराध्यां हतां तथा पट्यंकादिक त्रणरत्न पाम्यां वो.

एवी केवली जगवानना मुखनी वाणी सांजलीने वेहुने जातिस्मरण उ पन्युं तेथी पाठलो जब दीवो तेवारें वेराग्य पामी समिकत सिहत श्राव कनां बार व्रतरूप धर्मनो श्रंगीकार कस्रो सर्वथा प्रकारें श्रनर्थदंमनो त्या ग कस्रो. एम घणा कालपर्यंत चार प्रकारनो श्रावकधर्म श्राराधी श्रंत श्रवस्थायें श्रनशन करीने बारमे देवलोकें देवता थयां तिहां देवतानी क् ि जोगवी महाविदेहकेंत्रें महोटी क्रिक्स सिहत मनुष्यनो जब पामी सं सारनां सुख नोगवी सजुरुनो उपदेश सांनती चारित्र ति घोर तपश्या क रीने घातिकर्मनो क्य करी केवलकान पामी नव्यजीवोने धर्मोपदेश आपी उपकार करी सकल कर्मनो क्य करीने मोक् पामशे. ए आवमा अनर्थदंम विरमणत्रतनेविषे वीरसेन अने कुसुमश्रीनो दृष्टांत कह्यो. ए श्रावकप्रतिक्रम णसूत्रना बालावबोधनेविषे त्रण गुणत्रतनो त्रीजो अधिकार संपूर्ण थयो॥

॥ अय चार शिक्ताव्रतरूप चतुर्थाधिकार प्रारंनः ॥

तेमां प्रथम वारव्रतनी अपेक्सयें नवमुं सामायिक व्रत अथवा चार शिक्षाव्रतनी अपेक्सयें पहेलुं सामायिक व्रत हे तेनो अधिकार कहे हे.

ए सामायिकनो विधि, आवश्यकनी चूर्णियकी तथा पंचाशकनी चूर्णि अने योगशास्त्रनी टीका इत्यादि शास्त्रोथी किह्यें वैयें तिहां आवक वे प्र कारना वे एक क्रिवंत अने बीजा अक्रिवंत ते आवकोने सामायिक करवानां चार स्थानक कह्यां वे. तेमां एक देरासरमां सामायिक करे, बी जुं साधुपासें सामायिक करे, त्रीजुं पौपधशाजानेविपे सामायिक करे, अ ने चोथुं पोताना घरनेविपे सामायिक करे, जेवारें नवराश थाय कांइ का म न होय तेवारें चार स्थानकमांहे गमे ते स्थानकें जइ सामायिक करे.

तेमां जे साधु समीपें श्रावीने सामायिक करे तेनो विधि कहे हे. जे श्राव कने माथे कोइनो जय न होय, कोइनी साथे वढवाड न होय, कोइनुं माथे देवुं न होय केम के लहेणुं होय तो लहेणावालो श्राकर्षण खेंचताण करे ते निमित्तें चित्तने संक्षेत्र थाय माटे तेथी विक्तित एवो श्रावक जेवारें कामकाजधी निवृत्ति पामे तेवारें पोताने घेर सामायिक करी पढी ईर्यास मिति शोधतो शोधतो, सावद्यजापा ढांमतो, कदाचित् श्लेष्म तथा वड खा विगेरेने माटे तृणपञ्जं तथा कांकरो श्रयवा लाकडानो कटको विगेरे जोइयें तो ते वस्तुना खामी गृहस्थनी रजा लइने पुंजी प्रमार्जीने लीये श्रने वडखा विगेरेने पण एकांतें निरवद्यस्थानकें नूमिका दृष्टें जोइ पुंजी प्रमार्जीने यलायें परववे, एवी विधिपूर्वक पांच समिति श्रने त्रण गृहि सिहत थको त्रण निसहि कहेतो गुरुने उपाश्रयें जइ गुरुने नमीने गुरुनी समक्त जे विधि कह्यो हे ते विधियें सामायिक दंमकनो उच्चार करे उच्चार करीने ज्येष्ट वडेरा एवा श्राचार्यादिकने वांदे तथा न्हाना महोटा सर्व

साधुने विधि सहित वांदे वली पण गुरुने वांदी गुरु सन्मुख वेसीने गुरुना मुख्यी धर्मदेशना सांजले, शास्त्र जणे, संशय होय ते पूछे, एमज जिनगृहें देशसरें पण जाणवुं. तेमज पोताना घरनेविपे तथा पोपधशा लानेविषे सामायिक लड्ने तिहांज रहे, गमन नकरे.

तथा राजा अथवा प्रधान अथवा ज्ञोत आदिक महर्धिक पुरुपने सा मायिक ज़ेवानो विधि कहे हे:-राजा होय तो गंधहिस्त उपर बेसी हत्र चामर विंजाते, राजने अलंकारें अलंकत, चारे वाजु चतुरंग सेनायें पर वस्रो, नेरी जंना दक्का नफेरी श्ल्यादिक वाजित्र वाजते, वंदिजन विरुदा वली बोलते, सर्व सामंत मंमलिकादिक सहित. श्रदारे वर्णना लोक जो ते थके, ताम ताम नाटक प्रेक्षण जोते थके, सर्व श्रदावंत जोक एकेकने त्रांगलीयें करी देखाडते यके, रूडा मनोरथ नावते थके, केटलाएक लो क हाथ जोडीने पंगे लागते थके, मंगलिकपाव बोलते थके, केटलांक म नुष्य देखीने अनुमोदना करते यके, धन्य ए राजाने जे ए सामायिक कर जो एवी प्रशंसा करते थके, अथवाधन्य ए धर्मने जे आवा महोटा पुरुषें सेववा योग्य हे एवी लामान्यजनें प्रशंसा करतेथके, एम तीर्थनी प्रजावनाने हेतुयें देहेरे तथा साधुसमीपें जइ तिहां वत्र चामर पान्ही मुकुट खङ्ग रूप राजचिन्हनो परिहार करे आवश्यकचूर्णिनेविषे एम कह्यं हे के सा .मायिक करतां मुकुट न राखे ॥ मचडं न त्र्यवणे ६, कुंमलाणि नाम मुद्द पुष्फ तंबोल पावरगमाइ वोसिरइनि॥ एम तिहां आवीने पठी ते राजादिक, परमेश्वरनी पूजा करे तेवार पढ़ी सर्व साधुने वांदे तेवार पढ़ी सामायिक करे एटले एक मुहूर्त्तपर्यंत सर्व आरंजनी करणी बांमीने समता जावमां रहे.

यदाहुः ॥ सावक्क जोगविरइर्ग, तिग्रुनोबसुसंजर्ग ॥ ठवर्गनो जयमाणो, आया सामाइयं होइ ॥ १ ॥ जोसमो सब्रुएसु, तसेसु धावरेसु य ॥ त स्स सामाइयं होइ, इई केविज्ञासियं ॥ अर्थः—सावद्ययोगधी विरम्यो, त्रण ग्रुप्तियें ग्रुप्तो, बकायनो संयमी, रुपयोग सिहत जयणा करतो, विचरे ते सामायिक आत्मा कहियें ॥ १ ॥ सर्वजूत प्राणीनेविषे, त्रसनेविषे, स्था वरनेविषे, समजाव हे ते सामायिक कहियें एम केविज्यें जांख्युं हे ॥ १॥

दवे सामायिक शब्दना त्रण अर्थ निर्युक्तिकार कहे हे:-सामं सम्मं च समं, शंमि सामाइञ्चस्स एगहा॥नामं ववणा दविए, जावंमिश्च तेसि नि रकेवो॥१॥ महुरपरिणाम सामं, सम्मतुला सम्मखीरखंमजुइ ॥ दोरेहारस्स िहई,ईग मेयाइंतु दवंमि ॥२॥ श्राइच्वमाइ पर, इस्कमकरणं रागदोसमब्रज्ञं ॥ नाणाइतिगं तसाइ पोयणं जावसामाइयं तच्चकरेमि जंते सामाइश्रमित्यादि॥

इहां श्रीश्रावश्यकिन प्रहोटी टीकामां हे सामायिकने श्रिधकारें श्रीहरिन इस्रियें कह्यं हे के ग्रहस्य पण ग्रहस्थपणे सामायिक करे तिहां करेमिनंते इत्यादिक सामायिक दंमकनो उन्नार करे तेमां इविहं तिविहेणं एवो पाठ उन्नारे पण तिविहं तिविहेणं एवो पाठ केम नथी उन्नारता एवो पाठ उन्नारतां शो दोप हे एवं शिष्यें पूहे थके ग्रह उत्तर कहे हे. के ग्रह स्थें पूर्वे श्रारंनादिक कार्य कहां हे श्राने श्रागत पण तेने श्रारंनादिक कार्य करवानो श्रानताप हे तेमाटे ग्रहस्थयी श्रानादिन निषेध न था य जो श्रानादो निषेध करे तो पन्न काण नंग थाय तेथी ग्रहस्थने माटे त्रिविधें त्रिविधें एवो पाठ कोइ श्रागममां कह्यो नथी.

तथा ग्रंथांतरनेविषे त्रिविध त्रिविधेन एवो पाठ कह्यो हे ते पण कोइ क प्रयोजनें कह्यो हे. यडकं महाजाप्ये ॥ जइकिंचिदप्प उञ्चण, मप्पपंवा विसेति उंव हु ॥ पच्चिकि ज नदोसो, संयं छ रमणाइ महुवा ॥१॥ जावार्थः जे कोइ प्रयोजन रहित एवी अटपमात्र वस्तुने विशेषपणे करवाने त्रिविध त्रिविधें करी पच्चिक हे तेनो दोष नही, स्वयं जूरमण समुइना मत्स्यना मांसना नियमनी पेरें ॥ इहां सामायिकनेविषे तो सामान्य प्रकारें नियमनुं ग्रहण हे पण पूर्वाचार्यनी परंपरा जेम होय तेम प्रमाण थाय ॥

हवे सामायिकनों काल कहे हें:—जघन्यमां जघन्य वे घडीनुं सामायि क करवुं. श्रावकप्रतिक्रमणनी चूरणीमां पण ॥ जावनियमं पद्भवासामि इत्यादि पाठ कह्यों हे तेनो अर्थ कहे हे के यावत् नियमपर्यंत पर्युपासना करुं हुं ए जो के सामान्य वचन हे तो पण जघन्यथिकी अंतर्मुहूर्त्तमात्र नियमनेविषे रहेवुं पढ़ी वली आगल समाधि होय तो जले बेठो रहे तथा किलकालमांहे सर्वज्ञ सरखा श्रीहेमाचार्यें पण कह्युं हे. यतः ॥ त्यक्तार्च रोड्ध्यानस्य, त्यक्तसावद्यकर्मणः ॥ मुहूर्त्तं समतायुक्तं, विद्वः सामायिकव्रतं ॥ १ ॥ जेणें आर्तरोड्ध्यान हांम्यां हे तथा सावद्यकर्मनो एटले सदोप कर्मनो जेणे त्याग कस्यो हे एवा पुरुपनुं मुहूर्त्तमात्र एटले वे घडी पर्यंत समतायुक्त जे ध्यान तेने सत्पुरुषो सामायिक कहे हे.

ए अशव एवा अर्थात् अतितत्वक्ष एवा पूर्वाचार्यनी परंपरा ते प्रमाण वे आगममाहे ते परंपराचुं प्रमाण मान्युं वे श्रीस्यगडांगनी निर्युक्तमां हे पण कह्यं वे के आचार्यनी परंपरायें करी अनानुपूर्वीयें जे आव्यो ते वा तमां कोण जाणे केम वे एवा संशयना करनारा जे होय ते तो कोइक चहेदवादी जमानी सरखा जाणवा.

हवे ए सामायिकव्रतना पांच अतिचार पिकक्षमवाने गाथा कहे हे. ॥ तिविहे इप्पणिहाणे, अणवद्वाणे तहा सइ विहुणे॥ सामाइयवितहकए, पढमे सिस्कावएनिंदे॥ १९॥

अर्थः—प्रथम त्रण प्रकारनुं इःप्रणिधान हे तेमां पहेलुं मनेंकरी वीजं वचनें करीने अने त्रीजं कायायेंकरीने. तिहां माता अध्यवसायथी मनेंकरी गृह हा टादिक संबंधि सावद्यव्यापारनुं चिंतवतुं ते प्रथम मनइःप्रणिधान नामा अतिचार जाणवो वली शास्त्रनेविषे कह्यं हे के सामायिक करीने पढ़ी जे शावक आर्त्तथ्यान रौइध्यानने वशेंकरी वरनी चिंता करे तेनुं सामा विक निरर्थक जाणवं. ए प्रथम मनोइःप्रणिधान अतिचार जाणवो.

२ वचनेंकरी सावद्य किनादिक कर्कश वचन बोलवां ते वचन इःप्र णिधान नामा बीजो अतिचार जाणवो.

३ कायायें करी अपिड जेही अणि उंजी जूमिमां हे वेसे पग पसारे इत्या दिक सर्व कायड:प्रणिधान नामा त्रीजो अतिचार जाणवो.

ध अनवस्थान ते मुहूर्तादिक वेलानुं प्रमाण न राखे सामायिक अण पुगे पारे अथवा सामायिक करवानी वेला वते पण आदर रहित सामा यिक करे, सामायिक करवानो जेवारें अवसर होय तेवारें न करे तो प्र माद प्रसंग थाय आवश्यक चूर्णिकार कहे वे के " जाहेखणि ताहे सा माइयं करइ" एटलें जेवारें अवसर मले नवराश थायते क्णें अवश्य सा मायिक करे जो न करे तो अनवस्था दोष नामा चोथो अतिचार लागे.

५ स्मृतिविहीन अतिचार ते सामायिक जेइने पढी निइादिकना प्रबल पणायकी परवश याय अथवा घर हाष्ट्रादिकनी चिंताना व्ययपणायकी सामायिक पारवुं वीसारी मूके. ग्रून्यपणे सामायिक कखुं के नथी कखुं अथवा ए सामायिकनी वेला हे के नथी इत्यादिक जेवारें न सांचरे तेवा रें स्मृतिविहीन एवे नामे पांचमो अतिचार जाणवो. जे माटे मोक्साधननुं अनुष्ठान किया तेनुं मूल स्मरण हें ते जेवारें प्रमाद सहित थकां सांचरे नहीं तेवारें ते सामायिक पण निष्फल जाणवो.

ए पांचे अतिचार प्रमादना बहुतपणायी लागे ते अनाउपयोगें उप योगनी ग्रुन्यतायें अतिचार कहीयें ए प्रथम शिक्काव्रतनेविषे जे वितथ ययुं होय ते निंडं हुं इत्यादिनो अर्थ पूर्ववत् जाएग्वो ॥ २९ ॥

इहां शिष्य पूर्व वे के सामायिक त्रिविधें त्रिविधें उचखुं वे अने मन तो वेकाणे रहेतुं नथी एटलामाटे मनतुं इःप्रणिधान लागे वे. तेथी सा मायिक जंग थाय वे माटे व्रत लक्ष्ने जांगवुं ते करतां तो न करवुं तेज रुडुं वे.

इहां गुरु उत्तर कहे ने के हे शिष्य ! एम न बोलवुं जेमाटे सामायि क लेतां मन वचन अने कायायें न करुं न करावुं ए न कोटीयें पञ्चरका ए कखुं ने तेमां अनाउपयोगें एकांतें सामायिकनो जंग न याय. अति चार लागे पए सामायिकनो अजाव न याय मनडःप्रणिधानें मिन्नामि इक्कड दीधे ग्रुद्धि याय परंतु मुलगुं सामायिकज न करवुं एमज जो तुं क हीश तेवारें तो कोइयी सर्व विरतिपणुं पए न लेवाय.

वली केटलाएक एम कहे हे के अविधयें कहा करतां निहंज करतुं ते सारुं हे ए वचन पण अयुक्त हे. यडकं ॥ अविहकयावरमकयं ॥ इत्यादिक पावनो अर्थ कहे हे के अविधयें कहा। यहां तो अणक खुंज नलुं एवं वच न वोलनारने पण आगमना जाण पुरुषो अञ्चन वचन कहे हे कारण के अण करवाथकी महोटुं प्रायिश्वत थाय हे अने अविधयें पण कहा। वधुप्रायिश्वत थाय.

श्रितचार सिंदत पण अनुष्टाननो अन्यास करतां ते अन्यासथकी श्र तिचार रिंदत पण अनुष्टान याय. अन्यास करतां करतां माहापण चतु राइ पण आवे हे, जेम बाण नाखवानी कला शीखतां पहेलेज दिवसें कां अमोध बाण पडतुं नथी परंतु अन्यास करतां करतां अर्जुन तथा कर्णादिकनी पेते धनुपादिकनी कलामां अमोधवाणी थइ जवाय हे ते मज नित्य अन्यास करवायकी लेखन पतन गीत नृत्यादिकनी जली क लाउं पण सर्व आवडे हे. जेम कोरा पात्रमां पाणीनो एक विंड सूकीयें ते पण तरत नम्रतानावने न पामे पुनः पुनः अन्यासें नम्रता थाय तेमा

टे जलीरीतें मनः ग्रुद्धियें यहें करीने अवसर मखे थके वारंवार सामायिक करवुं यतः ॥ सामाइयंमि चकए, समणोइव सावर् ह्वइ जम्मा ॥ एएण कारणेणं, बहुसो सामाञ्यं कुद्धा॥१॥जीवो पमाय बहुलो, बहुसोविय बहु विहेसु अबेसु ॥ एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुद्धा ॥ श॥ नावार्थः-सा मायिक करे यके साधुनी पेरें श्रावक जाएवो जेमाटे ए ए कारणें करीने घणा वखत सामायिक करजे ॥१॥ घणा पदार्थमांहे जीव घणो प्रमादी हे ए कारण माटे सामायिक करजे तथा आवश्यकचूर्णिमांहे पण कह्यं हे के॥ यदासबसामाइयंकाच असनो तदा देससामाइयंपि ताव बहुसो कुद्धा इति तथा जलवा वि समइ अल्डवानिवावारो सवल सामाइयं करें इति एटले जो सर्वेथकी सामायिक करवा समर्थ नथी तो देशथकी सामायिक पण वारं वार करवुं इति ॥ तेम जिहां विश्राम करे तथा जिहां कोइ कार्य करवुं न होय के व्यापार न होय तिहां सघले उकाएों सामायिक करे इति ॥ करवाथी वे संध्यायें सामायिक अवस्य करवुं एवा नियमनुं टलवापणुं थयुं कारण के निवृत्ति तो एक दिवसमां हे घणा वस्पत संनवे हो. एटखे आ वे लायें सामायिक न लेवाय एवो नियम समजवो नई। परंतु जेवारें नवरा श होय कोइ काम न होय तेवारें सामायिक करे एथी वे संध्या टालीने व णी वखत सामायिक करे एम सिद्ध ययु विज्ञेपयुक्ति जोवी होय तो प्रज्य प्रणीत विचारामृतसंयह यंथयी जोइ लेजो.

इहां कोइ पूर्व के जेवारे नवराश अर्६घटिका मात्रज होय परंतु व घ टिका पर्यंत न होय तो तेवारे ते यावत् वे घडीना नियम पर्यंत सामा यिक केम करे. कारण के नियमनुं मानतो जघन्यथकी वे घटिकानुंज कह्यं वे. माटे तेटलो वखत न मले तो जावनियमं एवो पाव केम कहे.

गुरु उत्तर कहे हे. हे शिष्य! तें कहां ते सत्य हे परंतु जेवारें नवराश थोडी होय तेवारें सामायिक दंमक उच्चखाविना एमज समता नावमां रहे तेज सामायिक कहियें एम संनवियें हैयें. तत्त्वं बहुश्रुतगम्यं ॥

हवे सामायिकनुं फल कहे हे॥ दिवसे दिवसे लखं, देई सुवन्नस्स खंिमयं एगो॥ इयरो पुणसामाइयं, करेई न पहूपए तस्स ॥१॥ सामाइयंकुणतो, समनावं सावर्रेश्च घडिय छुग्गं॥ आत्र सुरेसु बंधई, इति अमिनाई पिल याई॥ १॥ बाणवई कोडीर्न, लखा गुणसिंह सहस्स पणवीसं॥ नवसय पण वीसाए, सितहा अडनाग पित्यस्स ॥ ३ ॥ तिवतवं तवमा णो. जंनवि निववइ जम्मकोडीहिं ॥ तं समनाविश्व चिन्नो, खवेइ कम्मंरः एदेणं ॥ ४ ॥ जे केवि गया मोस्कं, जेविय गन्नंति जे गम्मिसंति ॥ ते स्व वे सामाइय, महाप्पेणं मुणेयवं ॥ ५ ॥ न हूयते तप्य तेन, दीयते वा न किंचन ॥ अहो अमूव्यं कर्त्तव्यं, साम्यमात्रेण निर्वृतिः ॥ ६ ॥

नावार्थः एक तो दिवसें दिवसें लाख खांफी सोनानुं दान आपे अने इतर ते बीजो वली एक सामायिक करे ते तेनुं फल बरोबर न आवे सुवर्ण दानथकी पण सामायिकनुं फल अधिक हे ॥ १ ॥ सामायिक करतोथको पण समनावें आवक वे घडी प्रमाण करे ते एटला पट्योपम मात्र देव तानुं आठखं वांघे ॥ २ ॥ वाणुं कोडी, उगणसाव लाख, पच्चीश हजार नवसें ने पच्चीश पव्योपम अने एक पव्योपमना आठीया त्रण नाग उपर देवतानुं आठखं बांघे ॥ ३ ॥ तीव्रतप तपतां पण नवनी कोडीयें करी जे कमे खेरु न थाय ते समतामांहे चित्तने नावतां एक अर्कक्रणमांहे कमें खपावे ॥ ४ ॥ जे कोइ जीव मोक्र गया, जे वली जाय हे, अने वली जे माक्तें जाशे ते सर्व सामायिकनुं माहात्म्य जाणवुं ॥ ५ ॥ होम न करीयें, तप न करीयें, दान न आपीयें, बीजं कांइ पण न करीयें पण जेनुं मूव्य नथी एवी समतामात्रेंकरीनेज निर्वृति ए टले मोक्सुख प्राप्त थाय हे ॥६॥ ए सत्तावीशमी गाथानो अर्थ थयो॥२९॥

हवे ए सामायिक व्रतनेविषे व्यवहारी पुत्र धनिमत्रनो हष्टांत कहें के:— स्वस्तिकनी पेतें कव्याणकारी एवं स्वस्तिकपुर नामे एक नगर हतुं तिहां जेणे सर्व वैरीनेने वश कथा ते एवो अरविंद नामे राजा ते क्रि यें करी ईं सरखो हतो अने गुरुतायें करी महोटाइयें करी गिरींइसर खो हतो तथा जेना प्रतापरूप दीपक ते प्रजाने दीवा सरखा ज्योत कर ता हता अने वैरीरूप पतंगिया तेमां जंपाइ मरण पामता हता जेम ईं ने मदनप्रना प्रमुख आव अयमहिषी हती तेम ए अरविंद राजाने आव अयमहिषी पटराणी हती तथा पांचशें बीजी राणीयो हती परंतु ते राजाने एकेय पुत्र न थयो ते राजायें पुत्र प्राप्तिना अनेक जपाय कथा पण पुत्र

थयो नहीं तेथी ते राजा पोताना राज्यसुखने निष्फल करी मानवा लाग्यो.

हवे एज नगरमां ज्ञेलडीना सांवानी परें खनावें मधुर अने धनें करीने धनदसरखो एवो धनद नामे ज्ञेव वसे हे ते ज्ञोकोड सोनैयानो धणी हे, वली श्रीजिनधर्मनो प्रनावक हे, जेणे पोता सरखा एक हजारने आव व्या पारी बीजा कथा हे तेने धनश्रीनामे स्त्री हे ते घणीज चतुर हे, वे प्रकार नी लक्कीयें करी अतिज्ञय गोने हे, उपमाये रहित हे तेनो धनमित्र एवे नामें पुत्र हे ते केवो हे अविनीत हे, अन्यायमां छुजल हे, ज्ञेवना छुल नेविषे अनर्थकारक, न्हानपणयीज घरमांथी इच्य चोरीने लइ जाय, चो रनी पेहें अघोर कर्मनो करनार, एम तेने घर संबंधि सर्व इच्यने खराव करतो देखीने तेनां मातिषतायें घणी ज्ञीखामण दीधी तोपण विपरीत शिक्ति अथनी पेरें वली ते अथिक अवलो चाव्यो. यद्यपि ते बीजीपण वाणिज्यादिकनी कला सर्व हडीरीतें शिखेलों हे माह्यो हे तथापि ते तेने कां इपण उपयोगमां आवी नही परंतु एक चोरी करवानी कला तेने शिख्या विना पोतानी मेलेज आवडी गइ तेमां क्यांय स्वलना पामे नही.

एम करतां ते जेवारे नरयोवन अवस्था पाम्यो तेवारें तो ते वली सा ते इर्व्यसनने सेवनार थयो. जेम लींवडानो रस काढ्यो थको अति कटु क थाय तेम ते प्रथम लींवडा जेवो कटुक हतो अने वली युवानीमां तो अत्यंत कटुक थयो. जाणीयें नरकना घारनेंज उघाडतो होयनी तेनी पेवे यहस्थोना घरनेविपे नित्य खातर पाडीने तेनुं सघलुं इच्च लीये तथा प्रत्यक्त पाप सरखुं जुगटुं ते अनर्थरूप वे अत्यंत महोटो नरकगितनो दूत वे तो पण विटलपुरुपोनी साथे मलीने लक्कारहित थको जुगटुं रमे एम ते धनमित्र पोताना वेहु नव हणवाने सक्क थयो ते अनार्थ एवो थको गिण काना व्यसनमां पण आसक्त होतो हवो, मिदरा तथा मांसनुं पण ते रा क्सनी पेरें नक्कण करवा लाग्यो जेमाटे गिणकाना व्यसनिने ग्रं नक्क्य अनक्क्य वे तेने तो सर्व कोइ चीज नक्क्यज वे.

ते धनित्र पोताना आत्मानेविषे जे चौरी करे तेने कामधेनु सरखी करी मानतो ह्वो, गणिकानुं आंगणुं ते देवताना आंगणानीपेरे माने, मां सने देवताना जोजन सरखुं माने, मिंदराने अमृतपान सरखी माने, जे वात खजनने विरुद्ध होय ते इर्ज्जनने मानवा योग्य होय, जे वस्तु अन्य जनोने निंदवा योग्य होय ते चीज कूतराने जक्कवा योग्य होय.

एकदा ते धनिमत्र चोरी करवा माटे कोइकना घरमां पेवो तेवामां जेम आहेडो करनार व्याघ्र जनावरने बांधी पकडी लड़ आवे तेम तेने कोटवा ले पकडी बांधीने राजानी पासे आएयो राजायें उलख्यों जे ए शेवनो पुत्र है तेवारे शेवने तेडावीने कह्युं के आ वध करवा योग्य हे पण तमारो पुत्र जाणीने तमारी दाहिण्यताने लीधे हुं जीवतो मूकुं हुं पण जो हवे चोरी करशे तो मूकीश नही ॥ यतः॥ स्थानं सर्वस्य दातव्य, मेकवारापराधिनः॥ हितीयपतने दंता, वक्रणापि विवर्जिताः ॥ जावार्थः—एकवार अपराधिने माफी करी आपवी केमके पहेलीवार दांत पड्या हता ते मोढामां उग्या. पण बीजीवार पहेला दांतने मोढें पण होडी दीधा उगवा दीधा नथी तेम आ अपराधिने पहेलीवार तमारो पुत्र जाणीने हुं होडी मेलुं हुं.

ते सांजलीने रोवें कहां हे राजाधिराज! महाप्रसाद कहां. में एने घणी शीखामण दीधी पण ए चोरीधी निवन्त्यों नही चोरीनुं व्यसन न मूक्युं तेवारें में एने कहां के तुं महारो पुत्र नही अने हुं तहारो बाप नही एम कही जेम खोटा अक्रने अलगा करीयें तेम में महाराधी अलगो कहा। यतः ॥ इष्टः सुतोऽपि निर्वास्यः, स्वामिना न्यायगामिना ॥ यहपंक्तेयहा धीशः, शनिमंते न्यवीविशत् ॥ जावार्थः—न्यायमार्गे चालनार स्वामियें तो, पोतानो सगो पुत्र पण जो इष्ट थयो होय तो तेने दूर काहाडी मेलवो जेम यहना अधिपति सूर्यें पोताना पुत्र शनिने पण यहनी पंक्तिने होते नागे राख्यो तेम पिताये नवारा पुत्रने जूदो कहाढवो.

एवी शेवनी वाणी सांजलीने राजायें कह्यं सारुं कछुं सारुं कछुं, एम कही बहुमान देशने शेवने विसर्क्तन कछो. लोक सहु पोत पोताने कार्यें प्रवर्त्ये ॥ यतः ॥ आदेयत्वमसंस्तुतेऽपि हि जने विस्तारयत्यंजसा, इर्वृत्ता निष सांत्वयत्यवनिनृत् प्रायोत्रपायोद्यतान् ॥ तं संवर्गयते त्रिवर्गमिह वाऽ मुत्रापि यस्माहुजं, किं वां तत्र तनोति यत्सुकृतिनामौचित्यचिंतामणिः ॥ नावार्यः— राजा दीन माणसनुं पण अनायासें आद्र आपवा योग्यप णुं वधारे वे अर्थात् ते जो सदाचारी होय तो तेना माननो वधारो करी आपे वे अने माणसोने नुकसान करवामां तत्पर एवा इष्ट लोकोने घणुं करीने शिक्ता करे हे खने शांत करे हे, तेवा राजाने धर्म खर्थ खने काम ए त्रणेय वर्ग खा लोक खने परलोकनेविषे प्राप्त थाय हे माटे जेथी शुन नो विस्तार थाय हे एवो ते सुकती, पुरुपोनी मध्ये उचित कार्य करवामां चिंतामणि जेवो ते शुं सुकतने वधारतो नथी? ना वधारे हेज.

हवे धनित्र विचारवा लाग्यों के हमणां तो मने धनदशेवनों पुत्र जाणी ने राजायें मूक्यों ने पण हवे जो राजाने हाथ चढीश तो राजा अवश्य मु जने मारी नाखशे अने महारों तो जन्मधी मांमीने आज दिवस लगण चोरी करवामां एक दिवस खाली गयों नधी आ जन्ममांतों महारे चोरी साथेंज प्रम ने माटे हुं चोरी कखाविना तो बिलकुल एकदिवसपण रही श कुं तेम नथी. जेमकोई युवान पुरुष प्राणवहान प्रियाविना रही शके नहीं तेम हुं चोरीविना रहीशकुं नहीं जेमाटे वेल होय ते तो अवसरें फलेंने पण आ चोरीहर जे वेल ने तेतो तकाल फलें ने दरीई। होय ते धनवंत याय. माटे हुं चोरीन करुं तो पन्नी बीजों ते शुं धंधों करुं, तथी जे होनार हो ते चले हो. पण चोरीतों मूकवी नहीं, जेना प्रनावथी स्वेशाये विलास करुं माटे हवे जो कोइक वैद्य मले अने जो ते अहस्य थवानुं अंजन अथवा एवं कांई सिद्ध औषध मुजने करी आपे तो हुं कृतार्थ थानं. अने मनना मनो रथ पुरुं जेना प्रनावथी महारे नगरमां सुखे जवुं आववुं थाय.

पठी ते धनिमत्रें नगरमां जमतां जमतां एकस्थानकें कलासिद एवा यो गीश्वरने दीवो ते सिद्धुरुपने घणुं धन आपी वस्य करीने तेनी पासेथी अं जनसिद्धि विद्या लीधी केमके दानथकी द्युं नथाय ? यतः॥ दानेन जूतानि वशीनवंति, दानेन वैराण्यपि यांति नाइां॥ परोपि बंधुत्वमुपैति दाना, चतः प्ट थिव्यां प्रवरं हि दानं ॥ जावार्थः—दानेंकरीने प्राणिमात्र वश थायछे दानथी वैर पण नाश पामे छे वली दानथी शत्रुपण बंधुपणाने पामेछे तेथी प्रथ्वीने विषे दान छे ते सर्वथी श्रेष्ट छे.

हवे एकतो सिंह अने वली पाख्यों तथा क्रूर सर्पने वली तें पांखों सिंह त होय अथवा एकतो सर्पने ते वली छेड्यों तेम ते धनिमत्र विद्यायेंक री सर्पनी पेठे इःसह थयो, धनपितयोना घरमांथी धन चोरी लावे जा एो बीजो रोहिएीयो चोर प्रगट थयो होयनी! तेमज वली स्वेज्ञायें परदा रा गमन करे, लोकना घरमांहे व्यंतरनी पेठें प्रवेश करे एम ते धनिमत्र श्रदृश्यथको लोकोनां धन चोरीने पर्वतनी गुफामांहे घाले एरीते तेणे गुफा मांहे एक महोटो पापरूप धननो जंमार कखो. जेम जीवनुं जीवितव्य कोइथी हणाय नही तेम ते धनमित्रपण कोइथी हणाय नही सुद्धा वाय रानी पेने सर्वत्र संचार करे तेने राजा तथा कोटवाल पकडवाना घणा च पाय करे पण कोइथी पकडाय नहीं ने ते चोर कोइथी कलाय नहीं.

वली ते धनिमत्र नित्य राजसत्तामां पण व्यापारिनी पेठे आवे अने एवी वातो करेके हुंतो जे दिवसें राजाने हाथ चढ्यो हुं ते दिवसथी में चोरी करवी मूकी दीधी हे एवी वातुं करे अने राजसत्तामां जे कोड़ बीजो पुरुप चोरने पकडवानी प्रतिका करे तो ते प्रथम तेनाज घरनुं धन सर्व ह रण करी जाय. राजा तथा सर्वलोक धनिमत्रने पूर्वनी चेष्ठायें जाणे खरा के एज चोर हे पण मुद्दो हाथें आव्याविना कांड़ कहेवाय नही, दिवस अने रात्रें वेठां वेठां जोतांजोतांमां कोइ देखे नही कोइ जाणे नही तेम वस्तु लइ जाय अतिशय धूर्च माटे कोइ कली शके नहीं ए वस्त्र शस्त्र धननो अतिगूढ चोर हे तेने पकडी आपे एवो माह्यो कोइ नथी अने राजाने पण ते चोरने पकडवानी कशी बुिद सूजी नहीं. तेवारें राजायें नगरमां पडह वजडाव्यो के जे कोइ चोरने पकडी आपे तेने राजा कोड सो नया आपे ते पडहो एक धूतारी गणिकायें हब्यो ते गणिकायें राजापामें आवीने कह्युं के हुं सात दिवसमांहे चोरने पकडी आपीश एवी गणिका नी वाणी सांचली राजा हर्ष पामीने तेने पाननुं वीडुं आपतो हवो. आ जगतमां जे विपम कार्य करे ते कोने वलन न लागे?

पठी ते गणिकायें विचाखुं जे निश्चें ए चोरने कोई श्रंजनसिंह वे श्रय वा कोई विद्या सिंह वे तेणेंकरीने ते कोईने हाथ श्रावतो नथी एम निर धारीने पठी ते गणिकायें पोताना घरनुं सर्व इच्य नोंयरामां मंजुपामां नाखीने घरनां वारणां सारीपेठें बंध करी योगिणीनी पेरे रात्रिनेविपे पण घरमां जागतीयकी रहे ते एकायचिनें चोरने पकडवानोज उपाय शोधती रहे वे वित्ती ते चोरने पकडतां कदाचित् ते मुजने मारशे एटला माटे जेम श्राहेडी जनावरने पकडवामाटे पोतानी साथें कृतरा राखे तेम ते वेश्या पोताना घरमां सुनट राखती हवी.

हवे ते चोर पण गणिकानुंज घर ज़ंटवामाटे अहस्य थको वारंवार

क्तरानी पेते लाग जोतो हिइ जोया करेंग्ने मनमां विचारे हें के ढुं एना घरमां पेसी जाउं पण दिवसेंतो पेसी शक्यो नहीं तेवारे रात्रें खात्र खणवा ने जेवारें सक्क थयो तेवारे माता जेम दीकराने अकार्य करतां वारे तेम ते धनिमत्रने वारवा माटे माता सरखी हींक थइ पही जेटलें खातर देवा जाय एटले विविध प्रकारनां अपग्रुकन थवा मांम्यां ते अपग्रुकनें वारते थके ह दिवस वीतींगया पण गणिकानुं घर चोरी शक्यो नहीं तेवारें ते धनिमत्र विचारवा लाग्यों के वारंवार इिनिमत्त थायने तेथी निश्चय ए धूतारी मने पकड़िं माटे एना घरमां चोरी न करवी जे उचित जाणे ते पुरुष माह्या जाणवा. यतः ॥ गयणंमि गहासयणंमि, सुविणया सज्ज्या एग्गेसु॥ तहिव हरीति पुरिसं, जह दिह पुष्ठकम्मेहिं ॥ जावार्थः—यह जे ने तेने आकाशनेविषे, तथा सक्जने पण ग्रुं विनीतपणुं अने ग्रुं अविनीतपणुं एवं कांइ पण न सुजवा आपे एवी जे संशयवाली समजण ने ते समजण नेविषे चलावनार पूर्वजन्मना कमें ने तेने ते मांगं चलावे ने. तेम पुरुषने पण शकुन अपशकुन ए पूर्वकमेंने अनुसारे दसरडी जाय ने.

श्राज सातमो दिवस वे चोरी तो हाथमां श्रावती श्रावे पण श्रनर्थ तो प्रत्यक् देखाय वे. एम चिंतवतो ते सातमा दिवसनी रात्रिनेविषे कोइ क कोटीध्वजना घरमां खातर खणवा जेम पोताना घरमां पेसे तेम पेवो त्यां जूवेवे तो ते व्यवहारियो एक कांगणीने श्रथें कोधंकरीने पोताना वो कराने श्रञ्जनी पेवे ताडना करतो दीवो तेवारें ते धनमित्र चोरने करणा उपनी जो हुं ए रुपणनुं धन लक्ष्य तो एनुं हृदय फाटी पड़शे एनुं वि चारी चंमालना घरनी पेवे तेना घरने श्रपवित्र जाणीने त्यांथी बाहिर नि कलीने कोइ सोनारना घरमां पेवो तेना घरमां वाम वाम उकरडाना हग लानी पेवें राखना हगला दीवा राजादिकना घरयकी ते रज लइ श्रावीने ते सोनी धूलने धमी धमीने मांहेथी जे कांइ सुवर्ण निकले ते लीये वे पण एक श्रणु जेटली रज पण मूकतो नथी तेनी रांकनी पेवे घरना माणस प्रार्थना करे वे तो पण उठतो नथी, ए रीतें सोनीने धूल चुंथतो देखीने विचारवा लाग्यो जे एनुं धन पण महारे खपे नही एम चिंतवी सोनीना घरमांथी पण पाठो निकल्यो. पठी राजानी मानीति महर्धिक गणिका ह ती तेना घरमां पेवो तिहां पारविनानी लक्क्षी तो दीवी पण सिंहासन उ

पर एक अतिशय इगंबनीक गलत कोढीयो बेवो दीवो ते वली ब्रह घ येजो अने आंधजो पण हे तेनी साथें ते वेश्या विषयसुख विजसे हे ते देखीने विचाख़ुं जे अरे धिकार हे ए गणिकाने जे धननी लालचें आहर गलतकोढीया आंधलानी साथें विषय सेवेबे एम चिंतवी तिहांची पण निकव्यो अने कोइक धनाढ्य क्त्रीना घरमां पेठो ते क्त्रीनी स्त्रीयें ते दिवसें कोइ ञ्चानरण खोयुं हे तेथी ते क्रोधित थयो थको जेम दाणांनां मुंमांने लाकडीयें कूटीयें तेम पोतानी नार्याने मारतो हतो तेथी ते तरतज मरण पामी एवी रीतें ते इष्ट क्त्रत्रीयें पोतानी स्त्रीने निर्देयपणे मारी नाखी ते देखीने तिहांथी पण निकलीने राजानो जंमार फोडवाने रा जञ्चवनमां गयो तिहां जइ जूवे हो तो राजा जरनिड्मां उंघे हो अने वाम वाम इव्यनी पेटीयो पड़ी बे पण ते राजानी पटराणी असती बे ते, ते दिवसें एक कुवडा पुरुष साथें घणी वार जोग जोगवीने श्रसुरी श्रावी ते वामां दैवयोगें राजा पण निहारिहत यइ गयो अने राणीने पूत्रगुं तुं क्यां गइ हती ? तेवारें स्त्रीनें स्वनावें सुलन एवा किष्पत उत्तर ते देती हवी. पत्नी निड़ामां चूमांणां हे नेत्र जेनां एवो राजा वली पण सुइ गयो परंतु राणि ना चित्तमां एवी शंका रही के आज राजायें मुजने हराचारणी जाणी है माटे हुं राजाने मारीने पढ़ी कुवडा पुरुपनी साथें स्वेज्ञायें विलास करुं. एवं विचारीने ते इष्टस्त्रीयें नरनिइामां सुतेला राजानुं गलुं पोताने अंगु वें करी दबाव्युं के तत्काल राजानां प्राण गयां ते देखीने धनमित्र विचा रवा लाग्यो के धिःकार हे स्त्रीचरित्रने! जेम कसाइ बकराने गल्लं बांधी दाबे तेवीरीतें एनी पटराणीयें एनुं गलुं दाबी मारी नाख्यो. पढी ते इप्ट पटराणी होकार करती कपटची उठीने पोकार करवा लागी के अहो अ हो राजाने ग्रुं थयुं! ते पोकार सांजली प्रधान प्रमुख सहु दोडी आव्या तिहां राज़ाने जीवरहित देखीने सर्व वजाहतनी पेरें मूर्वित यइ पड्या.

ते इःखें जोवा योग्य एवं असतीनुं चित्र देखीने चौर चिंतवे हे के निंद्यमांहे निंद्य एवी ए पापणीना मस्तक उपर एक महोटी वज्रशिला पड़ो, एम हृदयमांहे कहेतो थको तिहांथी निकत्यो अने विचारवा लाग्यो के अहो आज चौरीनेविषे विन्न केम थाय हे ? ए विज्ञेष इर्निमित्त केम उद्यंघन कराय, माटे यौवनवती स्त्रीनें जेम जरतारविना काल अफल

जाय तेम महारी आजनी रात्रि पण विफल जाय हे. अने चोरी करवानी महारी प्रतिक्वा है तेनो जंग करीने घेर पण केम जाउं माटे में जे प्रतिक्वा करी है के जे पड़हों हवे तेहना धरमांथीज चोरी करवी ते प्रतिक्वाने सत्य करूं एम चिंतवी माटे पाहों गिणकाना घर आगल जङ्गे तिहां कूतरानी पेहे ताकीने मुद्दित थको मांहे प्रवेश करवानो लाग जुवे हे.

ह्रवे वेश्या पण विचारे हे जे आज सातमो दिवस हे माटे अवश्य चोर खातर पाडवा महारा घरमां आवज्ञे तेथी तेणे ध्रवाडानी घडी ड ज़ेदिज़े तेनां मुख वांधीने राखी मूकी हे. हवे ते धनमित्र पण खातर देइने गुढगतियें जेम जीव संक्रमे तेम ते गणिकाना घरमांहे पेवो अने अमृतना कुंममांथी जेम राहु अमृत लीये तेम तेणें मंजुपामांथी इव्य काढ्युं ते यद्यपि चोर अहस्य हे तथापि पिशाचनी पेते प्रवेश करे हें ते संचार तेणे ध्यानमांहे राखीने पगलाने अनुसारें जाएयुं तेवारें ते धूतारीयें धूवाडानी घडी उसर्व उघाडी मूकी ते धूवाडाना प्रनावधी ते चोरनी आंखोमांधी आंसुयें करी पाणी गेलतुं हवुं ते जेम जांगेला जाजनमांथी पाणी हटे ते म तेनी आंखमांची पाणी तूटवा लाग्युं तेची आंजेलुं अंजन सर्व घोवाइ गयुं अने चोर प्रगट दीवामां आच्यो घरमांथी पाढो निकलवा असमर्थ थयो तेवारें ते गणिकायें प्रथमधी राखेला सुनटो पासें पकडावी वंधावी ने पोतानी प्रतिका पूरी करी, तेथी ते हर्षित यज्यकी बोकडानी पेतें बां धेंला चोरने लड़ कोटवालने आवी सोंप्यो. तेवारें अधिकारी सर्व जेला थइने विचारता हवा जे राजा तो मरण पाम्यो हवे पंच मलीने इनसाफ करे पढ़ी ते पंचें मलीने चोरने वध करवानो हुकुम कस्रो तेवारें यमस रखा एवा कोटवालना सुनटो तेने रासनें चडावी निर्वेयपणे मारता थका चोरनां वाजित्र वजडावता, चोरने विटंबना पमाडता, साथें हजारोगमे लो कोना समूद कौतुक जोते थके, केटलाएक लोक तर्ज्जना करते, नगर मांहे ला चोराशी चहुटामां जमाडीने जेटले नगरनी बाहेर लइ आया तेटले चोर खेद करीने विचारवा लाग्यो जे अरे मुजने आं शो अनर्थनो विस्तार थयो हे! जे इःख महारा स्वप्नमां पण कांइ न हतुं ते एकाएक आहीं केम प्रगट थयुं, खदो खा इःख मुजने पाप ग्रुकनेंज प्रगट कखुं, पण जगतमां एवो कोण है के जे विधाताना लखेला अक्सरने फेरवी शके! वली किंपाक

वृक्तनां फल प्रथमतो मीनां लागे पण पन्नी जेवारे परिणमे तेवारे प्राणनुं ह रण करे, तेम आ चोरीह्रप इष्कर्मना पण विपाक उदय आव्या ते नोगववाज जोइयें, पण दवे जो हुं आइःखथी मुक्त था नं तो कालांतरें पण चोरीह्रप पाप करुं नहीं, परंतु सर्व इव्य आपतां पण आ मोतमांथी क्यांथी तूटाय? जीवतो केम रहुं? एम चिंतवता अने प्राण कंपावता एवा तेने जेटले यमनी दाह सरखी शूलीनी पासें लइ आव्या. तेवामां ते नगरनो अपुत्रीयो राजा रा त्रियें मरण पामेलो हतो तेमाटे पंच अधिकारी मली विचार करी तेणें देव अधिष्टित हाथी घोडो वत्र चामरने नृंगारकलश ए पंचिद्य प्रगट करीने नगर मांहे फेरव्यां; तिहां राज्यना अनिलापी, गोत्रीया तथा पीतरीया आदिक ते मज कारु नारु प्रमुख बीजा पण अहारे वर्णना लोक राज्य पामवानी होंगे करी तैयार थइ रह्या हे पंक्तिचेद नथाय तेम ते सर्वने आशा सरखी हे.

हवे ते पंचिद्वव्यसिहत हाथी आखा नगरमां नम्यो सर्व नगरवासिलो कोने अवगणीने गामनी वाहेर निकव्यो, तेवारे लोक सहु कहेवा लाग्या के एतो वननुं जनावर हे ते वनमां जङ्ने जनावरनी उपर कलश ढोलज़े ते सर्वजोकनुं बोजवुं कूतराना नसवानी पेठे अवगणीने ज्यां ग्रुजीपासें चोर ने उनो राख्यो हे त्यां ते पंचिद्य आव्यां जाएो कोशपूर्वनो संबंधी देखी ने तेने हाथी मज़बाज जाय हे के छुं ? एवीरीतें चोरपासे आवी तेने दे खी रीज पामी जेम मेघ गाजे तेम गूहगलाइ शब्द करी गाजवा लाग्यो तिहां सर्वलोकने विस्मय पमाडतो ते हाथी प्रेतवनने अमृतवननी पेरें गणतो गाजवा लाग्यो अने संदमां रहेला चृंगार कलशनी जारीयी ते चोरने न्हवरावीने जाणीयें चोरीना कलंकना मेलनेज धोतो होयनी छुं? तेम ते धनमित्रने दाधी पवित्र करी सुंहे चपाडीने पोतानी पीठ चपर बे साडतो ह्वो. जेम पर्वत उपर केसरी सिंह शोजे तेम ते धनमित्र हाथीयें वेगो शोनतो ह्यो. एटसें घोडे हेपारव शब्द (हणहणाट) कस्यो, बन्न पो तानी मेले विकस्वर थयुं, अर्थात् उघडयुं तथा शरद्कालनी पुनमना चंड् सरखुं निर्मल एवं चामर पण पोतानी मेलेंज वींजवा लाग्युं तथा इंडनि प्रमुख पंचशब्द वाजां पण पोतानी मेलें वाजवा लाग्यां देवीयें चोरने रा ज्य आप्युं एम जाणीने सर्व सामंतादिक तेनी आज्ञा मानता हवा.

हवे महोटी क्रि अने महोटा सामंत मंत्रीथर प्रमुखें परवर्खा यको

जेम देवताने समूहें परवस्तो इंड् देवलोकमां प्रवेश करे तेम ते धनिमत्र राजा राजस्रवननेविषे स्त्रावी हायी उपरयी उतरीने जेवामां सिंहासन उपर स्त्रावी वेठो तेवामां सामंतादिकें महामहोत्सवें तेनो राज्यानिषेक कस्त्रो स्तर्वे मली एवं विचास्त्रं जे एवं पुष्य हढ हे माटे ग्रुणनिष्पन्न एवं हढ पुष्य एवं नाम पाडवुं, पही हढपुष्य एवं नामें ते विस्त्राति पाम्यो. तेनें सामंत राजा सर्वें कन्याउना समूहने परणावता हवा, तिहां ताराना समूहने वि पे जेम चंड् शोने तेम ते राजा प्रध्वीना वलयनेविषे शोनतो हवो. जेम चंड्मा कमलने उद्यासकारी याय तेम उचित साचववेकरीने ते राजा सर्वेन उद्यास पमाडतो हवो. पूर्वना सुरुतना योगथकी सर्वदेशोना राजा स्त्रावी वश्य यया. ते धनिमत्र विष्णुनीपेरें स्वेश्वायें राज्यसुख नोगवे हे.

एवुं एनुं राज्य जोइने सर्व कोई विचार करवा लाग्या के ए धनिमत्रें पाठले नवे सुकृत कखां ह्रों के जेना योगधी आवुं अड्जतराज्य पाम्यो ते कोइ ज्ञानी आदीं आवे तो तेने पूछीने संशय टाजीयें एवी चिंतवना कचा करे हे, एवामां त्रणकानें सहित एवा धर्मघोप मुनि उद्याननेविपे पधास्त्रानी वधामणी वनपासें आवी राजाने दीधी. तेने वधामणीनुं दान आपी राजा पोतानो परिवार लइ महोटी ऋदि सहित मुनिने वांदीने पू वयुं, महाराज! हुं सात व्यसननो सेवनार श्रघोर कर्मनो करनार चोर वतां मने राज्य केम मन्युं? ते सांचली मुनि बोव्या हे राजन् ! पाठले चवे तुं मिथ्यात्वी हतो अने ताहरो पाडोशी श्रावक हतो जेम चंइमानी पासें राहु रहे तेम श्रावकनी पासें राहु सरखो मिथ्यात्वी जाणवो पण ते मि ष्यात्वीने पाडोशी श्रावकें वारंवार समजावीने जेम पाषाण रुडीरीतें घ ड्योथको सरल थाय तेम तेपण सरल नइक परिणामी थयो तेथी ते क दायह ढांमीने जेवारे ते श्रावक सामायिक लड़ने बेसे तेवारें ते जड़क जीव पण अत्यंत बहुमान धरतो थको तेनी पासें आवी बेसे नजो पाडो शी वे ते अक्तय चंमार वे तथा जेम कर्पूरादिक रुडी वस्तुनीपासे रहेली बीजी वस्तुपण सुगंधताने पामे तेम ते श्रावकने संगें धर्मवासित चयो. पढ़ी ते श्रावकने नित्य सामायिक करतां एकदिवसें ते जड़कें व्रतनु ख़क़ प पूर्व्युं. तेवारे श्रावकें सर्व स्वरूप समजावीने कह्यं के ए व्रत साधुनी पेरे पाल्युं थकुं बहु फलदायि थाय ए मनवां वित अर्थनुं साधन करवाने

समर्थ हे एनुं हुं केटलुं माहात्म्य कहुं ए व्रत पाल्युं थकुं तेज क्रणें मोक् सुखने पण आपे एवं हे. यतः॥ किं तिवेण तवेणं, किंच जवेणंच किं चिर त्रेणं॥ समयाइ विणमुक्तो, नहुहु कहि नहुहोइ॥१॥ नावार्थः—ती व्रतपेंकरीने ग्लं? तथा जपेंकरीने ग्लं? तथा चारित्र पालवायी ग्लं थाय? पण समतादिक विना मोक्कोइवारें थयो पण नथी अने थाजो पण नही.

एवी श्रावकना मुखनी वाणी सांजलीने ते जिड्क बोव्यो मुजने पण एमज थार्ड एम कही सिवतादिक सर्व वस्तु ढांमी, दृढवित राखीने, तेज श्रावकनी पेठें ते जड़कें पण तादृश सामायिक एकजवार कखुं ते स्वात नक्त्रना पाणीयकी जेम मोती नीपजे तेम श्रावकना पाडोशयकी ते मिय्यात्वी पण धर्मने योग्य थयो. एकदा समये कोइ सातव्यसनना सेव नारने देवतानी पेठें स्वेज्ञायें सुखिलसतो देखीने मुध्यपणायकी ते ज इकें ते चोरनी प्रशंसा करी अनुक्रमें ते जड़क श्रावकनां व्रत श्राराधी म रण पामीने वारमे देवलोकें देवता थयो. तिहांथी चवीने तुं श्राहीं धनिम त्रपणें श्रावी उपन्यो हो. पूर्वला जवनेविषे तें श्रीजनधर्मेनुं बहुमान क खुं हतुं तेथी तुं उत्तम कुलादिकनी संपदा पाम्यो श्राने वांहित श्रायनी सि दि पाम्यो. तथा चोरनी प्रशंसा करी तथी तुं चोर थयो. पाहले नवें जे जे वस्तुनुं बहुमान कखुं होय ते ते वस्तु श्रा जवे पामवी सुलन थाय. पापी जीवनां प्रशंसादिक बहुमान करतो जीव तेहज जवमां श्रनथीनी परंपराने पामे. तो वली जवांतरनेविषे श्रानर्थ पामे तेमां तो कहेवुंज शुं?

एक मुहूर्तमात्र श्रव्यक्तपणे पण लघुनीत वडीनीत प्रमुख श्रतिचार रहित तें श्रव्यक्त सामायिक कछुं हतुं ते तहारा जीवने हितकारी थयुं ते पुण्य ना प्रनावधी तुं चोर वतां वली वधनें स्थानकें रह्या थकां पण राज्य पा स्यो. माटे पुण्यने शुं इःसाध्य हे. श्रव्यक्त सामायिकना फलधी चोरना व धने स्थानकें तुं श्रा राज्य पास्यो ए कांइ थोडी वात समजवी नही. ए वी राजा सामंतादिक सूर्व मुनिना मुखनी वाणी सांजलीने परम प्रतीति येंकरी सामायिक व्रतनो श्रंगीकार करता हवा. श्रति उद्धास पामीने उ जमाल थका गुरुने वांदीने सहु पोतपोताने स्थानकें श्राव्या. मुनि पण विहार करता स्थानांतरें गया. हवे श्रदमितना धणी राजाने सर्वदा श्रद श्रथ्यवसायेंकरी सामायिक व्रत पालतां घणोकाल गयो घणां कमे खपाव्यां.

एकदा सांजसमयें राजा सामायिक जेइने पडिक्रमणुं करीने पठी स म्यक् प्रकारें ग्रुनध्यान थ्याय हे एवामां पूर्वें कोइक ब्राह्मण ते जातें चोर न हतो पण तेनी उपर राजायें चोरीनुं कलंक चढावीने कीडीनुं संचेखुं जेम तेतर खाय तेवीरीतें राजाये ते ब्राह्मणनुं सर्व इव्य हरण करी जीधुं हतुं तेथी ते ब्राह्मण घणोज कोधें प्रजत्यो पण करे हुं राजानी आगल कांइ जोर चाले नही तेथी ते इःखगर्जित वैराग्येंकरी तापस ययो ते क्रोध सहित मरीने मिथ्यादृष्टि कूर व्यंतर थयो हे. ते कूरव्यंतरो जमरानी पेवे जमतो जमतो ज्यां राजायें सामायिक लीधुं हे त्यां आव्यो. अने रा जाने ग्रुनध्यान ध्यावतो देखी पाठलुं वैर संनारीने रूठघो थको चित्तमां चिंतववा लाग्यो जे ए पर्वतना शिखरनी पेठें सामायिकना ध्याननेविषे निश्रल रह्यो हो. पर्वतना शिखररूप ध्यानें चढ्यो हो तेने हुं आकरी विटं बना पमाडीने ध्यानशिखरथकी पाडूं तो ए इप्ट इर्गतिमां जाय अने अ नंतो संसार रक्तने केम के धर्मनियमनो चंश करहो तो अनंता नव इःख पामज्ञे एवं विचारीने ते कृरव्यंतरो चदरनेविषे, शरीरनेविषे, नेत्रनेविषे, का ननेविषे, ए आदि दक्ष्ने सर्व शरीरनां अंगोपांगनेविषे राजाने अति आकरी वेदना उत्पन्न करतो हवो तो पण राजा तो मुनिर्न। पेरें ग्रुइ अध्यवसायें निश्रल रह्यो. चव्यो नही एम राजाने ग्रुनध्यानें वर्त्ततां परम जत्कप्टुं अ विधिज्ञान उपन्युं ते सूर्यसरखा देदीप्यमान अविधिज्ञानेंकरीने ते ऋरव्यंतर ना वैरनो व्यतिकर सर्व जाएयो. तेवारें राजा वैराग्यवंत थइने पोताना आ त्माने शीखामण देवा लाग्यो के अरे चेतन! तें इप्ट पापने परवश यइने जे पूर्वे परजीवने आकरा संताप कखा है तेथी आकरां कर्म बांध्यां ते तें पूर्वे परवशपणे रहीने घणां नोगव्यां अने हमणां हवे स्ववशपणे रहीने जोगव्य ते जोगव्या विना तुं कर्मरहित केम थइश ? माटे धर्मने अर्थे तुं ह मणां रूडीरीतें सहन कख. यतः॥ सह कलेवर इःखमचिंतयन्। स्ववशता हि पुनस्तव इर्लेना ॥ बहुतरं च सिंह्प्यसि जीव है। परवंशोन च तत्र गुणोऽस्ति ते॥ नावार्थः - हे शरीर ! तुं इःखने याद कह्या विना हमणां तेनुं सहन कह्य केम के आवी खतंत्रता फरी तने मलवी इर्जन हे माटे हे जीव ! तुं खतंत्र थश ने तेमां जे इःख सहन करीश तेमां तने मोहोटो गुए हे परंत्र ज्यारे पर

वश थइने बहु इःखने सहीश तेमां तने कां र गुण नथी. माटे खवश हो त्यारे बने त्यां सुधी इःखनुं सहन कहा.

वली जो तुं इहां सामायिकनेविषे इर्प्यान प्यायीश तो तुजने सामायि कनेविषे अतिचार दूषण लागजो. तेथी तुं अनंत संसार रफलीश माटे त हारा पुण्यने योगें हमणां तुजने ए व्यंतरो साहाय्यकारी थयो हे एना सहायथी तुं सकलकर्मनो क्य करीने परमपद पामीश. आ व्यंतरो तुजने परमोपकारी थयो है. इत्यादिक अत्यंत आकरी शुजध्याननी श्रेणियें च ढ्यो एवो राजा तेने व्यंतर, झानेंकरी जोइने अत्यंत कोपायमान थइ इप्ट चेष्टानी पेरें विहामणुं राक्त्सनुं रूप विकूर्वी आकारों जइने कालचक सरखी वजनी शिला जपाडीने राजा प्रत्यें कहेवा लाग्यो के अरे मूढ! तुं आ तहारा धर्मने जो शीघ्रपणे नही मूकीश तो आ अगणित तोलवाली शिला तहारा मस्तक जपर मूकीने हमणांज तहारा मस्तकना माटीना जाजननी पेरें हजार कटका करी नाखीश. एवी ते व्यंतरनी वाणी सांज लीने राजा शुजध्यानने न मूकतां जलटो तेमां दृढ थयो; ते जोइने तरतज ते व्यंतरें आकाशथी निर्दयपणे राजाना मस्तक जपर शिला मूकी तेथी आंवानी मांजरनी पेठें राजाना मस्तकना कटका थया पण राजा मूठी तही ते पण व्यंतरनी शक्तिज जाणवी नहि तो मह्याविना रहेज नही.

हवे दृढपुण्यराजानुं मस्तक फूट्युं तो पण ध्यानधी चूक्यो नही उत्तरों ग्रुनध्याने चढ्यो ते ग्रुनध्यानरूप शिलायेंकरीने घातिकमें चकचूर करी क्ष्पकश्रेणीयें चढीने केवलज्ञान प्रगट कखुं तेवारें ते व्यंतर पण नम्नचि च यको उपशांत थइने राजानुं फूटेलुं मस्तक सांधीने तेने तत्काल साजों करतो हवो देवशक्तियें करी ग्रुं इष्कर हे. कह्युं हे श्रीनगवतीने चौदमे श तके खातमे उद्देशें ॥ पहूणिनंते सक्के देविंदे पुरिसस्स सिसं पाणिणा असि णा हिदंना कमंमलुमि पिकविनए हंता पहुसें कहमिखाणि पकरेइ ॥ गोय मा हिदंगा हिदंया वणं पिकविनए हंता पहुसें कहमिखाणि पकरेइ ॥ गोय मा हिदंगा हिदंया वणं पिकविनए कुट्टिआ कुट्टिआ व०॥ चुन्निआ जुन्निआ व०॥ तठ पहाकिप्पामेव पंमिसंधाइका णोचेवणं तस्स पुरिसस्स किंचिखवाबाहंवा उप्पाए जित्त ॥ नावार्थः हे न गवन ! समर्थ होय देवताना राजा इंइ ते पुरुषना मस्तकने तथा हाथ चरणा दिकने शस्त्रेंकरी हेदीने कमंमलमांहे प्रकेष करे नगवानें कह्युं हा गौतम

ते तत्काल करवाने समर्थ होय. हे गौतम! हेदीहेदीने वनमांहे नाचे नेदी नेदीने वनमांहे नाखे, कूटी कूटीने वनमांहे नाखे चूर्ण करीने वनमांहे नाखे, तेवार पढ़ी शीधपणेज पांढां सांधे तोपण ते प्ररुपनें कांइ बाधा कष्ट उपजे नहीं ते प्ररुपने कांइ जाणवामां पण आवे नहीं.

ह्रवे ते राजक्रि केवलीने शासनदेवीयें उपयोग देशने मुनिनो वेश आपीने केवल महोत्सव कस्त्रो. सुवर्णनां कमल उपर ते राजक्ष बेवा वा एमंतरादिक चारे निकायना देव तथा नगरना लोक सर्व अति कौतुकवं त थका विस्मय पामी केवलीने वांदी सर्व धर्मदेशना सांजलवा बेवा केवली नगवानें पण मोक्तनुं परम वीजनृत एवं जे सामायिक जेनुं फल विज्ञोष प्रकारें केवली नगवाने पोतेंज अनुनव्धुं हे तेनुं वर्णन करी नव्य जीवना हितने अर्थे प्ररूपणा करता हवा तेवारे ते व्यंतरो पण शीव्रपणे श्रावी केवली नगवाननी देशना सांजली मुनिने खमावी तत्काल समकेत पाम्यो. अने बीजा सामंतादिकें पण देशना सांजलीने केटलाएकें चारित्र लीधां, केटलाएक देशविरति थया, प्रथम चोरपणामां घणा लोकोनुं इव्य हरण करीने तेने इःखिया कचा हता ते सर्वेमां कोइने समकित, कोइने देशविरति, कोइने सर्वविरति प्रमुख धर्म पमाडीने सहुकोइने सुखि कह्या. ते पण धर्म आराधी केटलाएक देवलोकें गया केटलाएक मोक्तें गया. केवली नगवान पण घणोकाल पृथ्वीनेविषे विचरी घणा नव्यप्राणीनां अङ्गान . श्रंधकार टाजी पोतें मोक्तें पहोता श्रर्थात् परमपद पाम्या माटे सर्वमांहे प्रधान एवं नवसुं सामायिक नामे ब्रत तेनुं केवलक्षानरूप फल ए धनिम त्रनी कथायी जाणीने हे पंनितजनो ! तमे सामायिकव्रतनेविषे यत्न करो. ए नवमा सामायिकव्रतनेविषे धनमित्रनी कथा कहा।॥

अथ दशम देसावकासिक नामक दितीय शिक्ता व्रत प्रारंजः

पूर्वे वहा दिशापिरमाण व्रतनिविषे एकशो योजन प्रमाण जांवजीव सु धी जांबुं आवंबुं धांखुं वे तेमांथी वली मुहूर्त्तादिकं पर्यंत कालनुं मान, गृ ह शय्यादि पर्यंत केत्रनुं मान, धारीने बाकी सर्व गमनना निषेध करवो एवीरीते इहां सर्वव्रतनुं संकेप करणरूप एक मुहूर्न आदि देइने आरंजना एक देशनो अवकाश तेनुं जे करबुं तेथी नीपन्युं ते देसावकासिक व्रत जा

णवुं. यक्तं ॥ एगमुहूनं दिवसं, राई पंचाहमेव पर्कवा ॥ वयंमि धारेच दढं, जावइयं वुञ्चए कालं ॥ १ ॥ जावार्थः-एक मुहूर्त्त, एक दिवस, एक रात्र, पांच रात्र, एक पक्त पर्यंत इहां दृढपणे व्रत धारवुं यावत्कथिक पणे धारेला काल पर्यंत ॥ १ ॥ तथा योगशास्त्रनी वृत्तिमांहै तो एम कह्यं वे के दिग्वतना विशेषनीपेरे देशावकाशिकव्रतवे मात्र एमां एटलो वि शेष हे जे दिग्वतहे ते यावज्जीव कराय है. अने देशावकाशिकव्रत एक वर्ष पर्यंत अथवा चार माससुधी तेमज दिवस मास प्रहर मुहूर्न अर्थात् बे घडी आदिना परिमाणसुधी रखाय हे एटलामाटें व्रतना नियमोनो प्रतिदिवसे संदेप करवो वली ए व्रतेंकरीने सर्वव्रतनो नियम निरंतर संदेपें करवो ते कहे हे:-सचित्त दव्वविगइ, वाहए तंबोल वन्न कुसुमेसु ॥ वहाण सयण विलेवण, बंन दिसि न्हाण नतेसु ॥ १ ॥ ए गाथामांहे कह्या जे चौद नियम ते प्रचातें धारे, संध्यायें संचारे, कांइ दूपण लाग्युं हो यतो मिल्लामि इक्कड दीये, वली नवा धारे धारीने पच्चरकाणेने छेडे "देसा वगासियं जवनोगं परिनोगं पचरकाइ" इत्यादि पाव ग्रुरु समक् जचरे जकं च ॥ देसावगासियं पुण, दिसि परिमाणंच निज्ञ संखेवो ॥ अद्वा सववयाणं, संखेवो पइदिणं जो ।।।।। नावार्थः-देसावगासिकव्रत ते वली दिग्परि माणनो नित्य संदेप करवो अथवा सघला व्रतनो प्रतिदिन संदेप करवो ॥१॥ कदाचित् कार्यनी व्ययतायें न सांचरे तो सूती वेजाये पण संद्वेपीने वधारीने नवा धारे पोतें आत्मसाख्यें पञ्चरकाण करीने बेडे देसावगासियं इत्यादि पाठ पोतें पोतानी मेखे उचरे ए विशेषधी सर्व ब्रतना संदेप रूप हे तेमाटे गंवसी सहित पच्चरकाण श्रंगीकार करवुं जेमाटे श्रावकदिनकत्य यं थनेविषे कद्यं हे के ॥ पाणीवह मुसादनं, मिहुणादिण लान णच्चदंमंच ॥ अंगिकयंच मुत्तं, सबं जवनोग परिनोगं ॥ १ ॥ गिहमधं मुतुणं, दिसिगमणं मुत्तु मंसमजूत्र्याई ॥ वय काएहिं नकरे, न करावे गंिव सहिएएं ॥ २ ॥

नावार्थः—प्राणीनो वध, मृपावाद, श्रदत्तादान, मैथुन, परियह, श्रनर्थ दंम श्रंगीकार कखुं तेनं मूकीने सर्व उपनोग परिनोग घरनो मध्य नाग मूकीने, दिसिगमन मूकीने मांसां मसां यूकादिकने वचन कायायेंकरी न करे न करावे गंवसीहि पच्चरकाणें सहित इहां दिणलान ते बतो परियह ते दिनलान प्रनातकालें नियम न कखो हवे तो नियमने इनुं नुं ए श्रर्थ ॥

हवे ए व्रतना पांच अतिचारने निंडं बुं.

ञ्जाणवणे पेसवणे,सद्दे रूवे ञ्ज पुग्गलकेवे॥ देसावगासियंमि, बीए सिकावए निंदे ॥५०॥

अर्थः-गृहादिकनेविषे देशावकाशिकव्रत करे बते ते गृहादिकथकी बा हेर कोइक वस्तु बे अने ते वस्तु खपे बे तेवारें कोइक चाकर प्रमुखने मो कजीने ते वस्तु मगावे ते आणवणप्रयोग नामे प्रथम अतिचार जाणवो.

१ बीजो पोतानी पासे कोइक वस्तु हे ते बाहेर मोकलवी हे ते कोइ चाकरनी मारफत बाहेर मोकले ते पेसवए प्रयोग नामा बीजो अतिचार.

३ पोताना घरादिकथी बाहेर रहेला एवा कोइक पुरुषनी साथें मलवातुं कार्य हे पण व्रतचंगना चयथी तेने पोतानी पासें तेडी लाववाने असमर्थ हे तेवारें हींक, उधरस, बगासुं अथवा खोंखारो करीने बाहेर रहेला पुरुषने जाण करे जेथी ते तेनी पासें आवे ते शब्दानुपाति नामे त्रीजो अतिचार.

४ चोथो जाली अथवा गोखें अथवा अगासी प्रमुखें उनोरहीने जे नीसाथें कार्यहोय तेनें पोतानुं मुख देखाडे ते रूपानुपाति चोथो अतिचार.

५ पांचमो कोइ पुरुष पोताना घरनी नजीकथी चाव्यो जतो होय अने तेनी साथें कार्य होय तेवारें तेनी उपर कांकरो काष्टादिक नाखीने पोता पणुं जणावे ते पुजलप्रदेपनामा पांचमो अतिचार जाणवो.

इहां शिष्य पूछे छे के देशावकाशिकव्रत लक्ष्मे पछी कर्मकरादिकनी मार फत कोइ वस्तुने ते पोतेज करे अयवा बीजाने हाथें करावे तेमां शो वि शेष, उलटो मोकले अयवा तेने हाथें मगावे ते कर्मकरादिक तो अयला यें जाय तथा आवे ते करतां पोतेज जाय तो वली घणुं सारुं कारण के पोतें तो विवेकी छे माटे यलायें जावुं आववुं करे तो ते रुडुं जाणवुं. अने एथी तो व्रतजंग थाय छे एमां अतिचार शानो कहो छो ?

हवे गुरु एनो उत्तर कहे वे के पोतें जो नियमनूमिथी बाहेर निकले तो ते व्रतनंग थाय तेना नयथी पोते न नीकव्यो पर्ण पोतें अनाउपयोगधी काम कखुं माटे अतिचार लाग्यो जो पोतें जाणी बुजीने दूषण सेवे तो व्रतनंग थाय परंतु अजाणयको सेवे ते अतिचार कहेवाय. ए देसावकासि क नामा बीजा शिक्ताव्रतनेविषे जे अतिचार लाग्यो होय ते निंडंबुं॥ १०॥ हवे ए व्रतपालवाथी जे फल थाय ते कहे वे:—जेम कोइक प्राणीना शरीरमां सर्व अंगें विष व्याप्युं होय तेने कोइक मंत्रवादी आवीने मंत्रना प्रयोगेंकरी ते सर्व विषने मंकें आणी मूकीने उतारी नाखे तेम धर्मी पुरुष ए व्रतने प्रनावेंकरी बहु सावद्यव्यापारनो संदेप करे ते करवाथी कर्मबंधनो पण संदेप थाय तेणे करी अनुक्रमें सकलकर्मनो द्वय करी मोदें जाय १०

हवे ए देसावगासिकव्रतनेविषे राजाना जंमारीनुं दृष्टांत कहे हे:—चक्र पुरनेविषे हिरकेतु राजा राज्य करता हता ते राजा लोकस्थिति जोवाने तथा लोकोनां वचन जाणवा देखवाने अर्थे तथा निंदाप्रशंसा सांजलवा माटे नष्टचर्यायें रात्रिनेविषे नीकलीने धूतारानी पेठें नगरमांहे चोफेर फरे हे, नगरना तमासा सर्व जूवे हे, प्रायः सर्व राजानेनी ए स्थिति होय हे.

हवे एकदा रात्रिना समयनेविषे एक वेकाणें चहुटानी वच्चें हाटगेरि यें घणा लोक एकता मध्या वे तिहां मनोहर घणुंज रूडुं नाटक थाय वे ते राजा पण एक स्थानकें ग्रप्त रह्यो थको जूवे वे एवा अवसरनेविषे धन सारगेतनो पुत्र धनद एवे नामें वे ते केवो वे के ग्रण अने कलाना समू हनो नंमार वे ते धनद पण त्यां नाटक जोवाने अर्थें आव्यो वे. तेणे रा जाने उनो देखीने विचाखुं के आ कोई सामान्य पुरुष वे एम जाणीने रा जाना खंना उपर पोताना हाथनो नार मूकीने नाटक जोवा उनो रह्यो: ते नाटक जेवारें पूरण थयुं तेवारें धनदें नाटकना करनारने उचित धन आपी अने राजाने पानना बीडामां एक सोनामोर नाखीने ते वीडुं आप्युं. सोनामोर जे नाखी आपी ते खंना उपर नार मूकवाना नाडा नि मिन्तें नाखी आपी ए उन्तम पुरुषन्तुं लक्कण वे.

राजा पण पोतापणुं गोपववाने अर्थे ते बीडुं ज़इने पोताने स्थानकें गयो. अने धनद पण पोताने घेर गयो. प्रजातकालें धनदने न्यायवंत जा णीने राजा तेनी उपर तुष्टमान थयो थको धनदने तेडावी हसीने कहेतो हवों के जेटलो तहारो जार होय तेटलो जारतुं महारा खंजानेविषे मूकवा समर्थहो.

एवी राजाना मुखनी वाणी सांजलीने धनद पोताना चित्तमांहे चम क्यो पढ़ी नावार्थ विचारीने अवसर जाणीने जेवो राजाने उत्तर देवो घटे

तेवो देवा लाग्यो के हे राजन ! आखी पृथ्वीनो नार उपाडवाने तमारो खंनो समर्थ हे तो महारो नार ते तमारे कोण मात्र हे ?

एवी धनदनी सुललित वाणी सांजलीने राजा विशेषें तुष्टमान श्रयोथ को ते धनदने पोताना पुत्रने स्थानकें स्थापतो हवो जेमाटे उचित वचन बोलवुं ते सरखुं कोइ चिंतामणी रत्न जगतमां नथी.

श्रन्यदा ते नगरमां रत्नना व्यापारी रत्न जर्इने राजसनामां श्राच्या. ते यो श्रावीने श्रण रत्न श्रण लोकनां लोचन सरखां देदीप्यमान हतां ते रा जाने देखाड्यां. राजायें माद्या रत्नना परीक्तकाने तेडावीने देखाड्यां ते परिक्ता करीने कहेवा लाग्या के हे राजन ! श्रा श्रण रत्नमांहे पहेलुं रत्न तो श्रमूलक हे एनुं मूख्यपण थाय नहीं तेम तेनी कांतिपण उपमारहित हे एनुं हे श्रने बीजुं रत्न जे हे ते एक कोटी सोनेयानुं हे तथा श्रा त्रीजुं रत्न जे हे ते श्रव्यमूख्यवाला यहना तेजना जेवी कांतिवालुं हे एवी परीक्ता थया पहीं ते वखते राजानी सनामां धनद पण वेहो हतो तेना सहामुं जोइने राजायें पूह्युं धनदें पण त्रणेरत्न जोइने पोतानी चतुराइथी तेनोसर्व सार राजाने कह्यों के हे राजन ! प्राणीमात्रमां पोताना माहापणनुं श्रनिमान सर्वने थाय हे माटे कोइथी जो पुरुं न जाणतो होय तो खोटुं पण कहे परंतु जेम रुडो वीतरागनो धर्म पामवो दोहिलों हे तेम माहापण श्रावनुं पण दोहिलुं हे श्रने रत्नोनी परीक्ता करवी ते तो वली देवतार्जने पण इन्तन हे तो मनुष्यथी केवीरीतें थाय ? मनुष्यनी तो शिखेली विद्या हे तेतो श्रणुमा त्रज होय तोपण जेम हुं जाएं हुं तेम श्रापना चरणनी श्रागल कहीश.

मणि तथा वृक्तनी परीक्षा गणनामां न आवे. तेनी विविध प्रकारनी प्रचा है, विविध प्रकारनी जाति है कांइ संख्या नथी तो पण जे जाति है प्रसिद्ध है तेनां नाम कहुं हुं. १ पुष्पराग. १ पद्मराग, ३ मरकत, ४ कर्कतन, ५ वज्ज, ६ वेमूर्य, ७ चंड्कांत, ७ सूर्यकांत, ७ जलकांत, १० नील, ११ महानील, ११ इंड्नील, १३ रागकर, १४ विज्ञवकर, १५ ज्व रहर, १६ रोगहर, १७ श्रुलहर, १० विषहर, १७ श्रुहर, १० रुचक, ११ लाक्तिताक्त, ११ मसारगल, १३ हंसगर्च, १४ विडुम, १५ अंक, १६ अंजन, १७ रिष्ट. १० मुक्ताफल, १० श्रीकांत, ३० शिवकांत, ३१ शिवं कर, ३१ प्रियंकर, ३३ जड़ंकर, ३४ प्रजंकर, ३५ आजंकर, ३६ सागरप्र

न, ३७ प्रनानाथ, ३० चंड्प्रन, ३० छशोक, ४० वीतशोक, ४१ छप राजित, ४२ गंगोदक, ४३ कोस्तुन, ४४ कर्कोट, ४५ पुलक, ४६ सौगं धिक, ४७ सुनग, ४० धृतिकर, ४० सौनाग्यकर, ५० पुष्टिकर, ५१ ज्यो तिरस, ५२ श्वेतरुचि, ५३ ग्रुणमाली, ५४ इंसमाली, ५५ छंग्रुमाली, ५६ देवानंद, ५७ क्रीरतेल, ५० स्फाटिक, ५० सर्पमणि, ६० चिंतामणि. ए साव जातिनां रत्न हमणां प्रसिद्ध हो.

हवे या त्रण रत्नमांहे जे पहेलुं रत्न हे तेमांहे कल्प्यता हे ए उत्पत्ति ने समये कादवपाणीमांहे जपन्युं वे माटे मांहे मोहोल्लं पाणी वे. वली बीज़ं रत्न तो उत्पत्तिना समयनेविषे देमकीना पुटनी पेरें हे, जेम देमकी कचरापाणीना संयोगथी संमूर्जिम उपजे हे तेम ए पण एमज उपन्युं हे तेटला माटे मांहे असार वे अने बाहेरथी सारुं दीवामां आवे वे तेमाटे जो लगारमात्र अथडायतो फूटे अने योडोकाल टकी शके अने ज्यांसुधी न अथडाय त्यांसुधी आवुंने आवुं कायम रहे एवीरीतें ए बेहु रत्न दाडि मना पाका फलनी पेरें तरत फूटे तेथी ए बे रत्न तुं विशेष मूख्य कांइ नथी अने आ त्रीज़ं रत जे हे ते तो दिव्यरत सरख़ं रत हे. ए रतनो अतिश य प्रनाव हे आ रत जेनी पासें होय ते पुरुषने व्यंतर राक्त्स इत्यादिक ना माठा उपइव थाय नहीं. समुइमध्ये रह्याथी जलजंतुनो उपइव थाय नही तथा कोढ, इष्ट ज्वर, इष्ट नगंदरादिक अनेक जातिना रोग नाश पामे. तथा जेम सक्जनना समागमथर्क। शोक जाय तेम आ रत्नना संयोगथ की सर्व उपड्व टली जाय तथा वली ए रत्न जो पासें होय तो अत्यंत आकरा विपना उपइव ते पराजव करी शके नहीं जेम बकतर पहेंखुं हो य तेने घा जागे नहीं तेनी पेठें विष पराजव न करे तथा रणसंयामनेवि षे एक क्लामात्र पण कोइ तेना मुख आगल टकी शके नही. तथा जेम यहपतिना मुख ञ्चागल यहनुं कांइ चाले नही तेम तेने सामा जो वैरीना समू ह होय तो पण ग्रुं थयुं ? तेमाटे ए रत्न अमूव्य ने एनुं मूव्यज थाय नहीं.

ए वातनुं प्रत्यक्त पारंखुं जोवुं होय तो एक थाल कमोदना चोखाथी नरीने चोकनी वच्चे मूको छने शालिना ख्रयनाग उपरें वचमां ए रत्न मूको पढ़ी वेगला जइ बेसो जेवारें सुडादिक पंखी च नूख्या थका शालि खा वाने खर्यें दिशादिशाथी ख्रावशे तेवारें कोइ ए थालने ढूकडो खावी श करो नही वेगला रह्यायकाज कोलाहल शब्द कह्या करहों. जेवारें तमो ते चौखाना अयनाग उपरथी रत्न पाढुं उपाडी लेशो तेवारें चूण करवा आ वशे. परंतु रत्न हरो त्यांसुधी जो पंखीना समूह ते यालमांहेलो एक कण पण नक्षण करे तो जाणजो के धनद जूलो धूतारो है अने जो सर्वया चूण नज करे तो सर्वज्ञना वचननी पेरें धनदने साचो जाणजा.

एवां धनदनां वचन सांनजी राजायें तेमज थाज मूकावी शाजिनी श्र णी जपर श्रर्थान् चोखाना श्रयनाग जपर रत्न रखाव्युं ते देखी घणा पं खीना समूद्द चुण करवा श्राव्या ते सर्व ससंत्रमथका चारे वाजुयें घणा श्रकजाय पण चूण न खाय जेम मेरुपर्वतनी चारे वाजुयें ज्योतिपी जेनुं च क नमे हे तेम पंखीना समूद्द थाजनी चारे वाजु कोजादज करता नमवा जाग्या पण चण करी शक्या नदी पही जेवारें चोखा जपरथी रत्न जपाडी जीधुं तेवारें पंखी जेयें श्रावी ने एक क्लामात्रमां सर्व शाजिना कण नक्क्ण करी थाजने खाजी करी मूक्यो. ते जोइ राजा चमत्कार पामी रत्नना व्या पारी ने कोडी सोनैया श्रापी बहु सन्मानी ने पोतें त्रणे रत्न वेंचातां जीधां.

पठी राजायें परीक्षाने अथं कोंतुकसहित पहेला वे मणी फोडावीने जोया तो तेमांथी धनदना कहेवा प्रमाणेज निकद्धं तेवारें राजा विस्मित थको विचारवा लाग्यो के सर्व करतां आ धनदज विशेष जाणे हे माटे जो महारो जंमारी करीने एने थापुंतो रत्न सर्व परखी परखीने लीये अने उंचा बहुमूख्यवालां रत्नेंकरीने इंड्ना जंमारनी पेरें महारो जंमार जरे. माटे ए धनदना हाथनी ग्रुडिनी,धर्मिजनना चिन्ननी ग्रुडिनी पेरें कोइक रीतें परीक्षा करवी; अथवा ए परीक्षा तो शीखीये!! एवं चिंतवी धनदने पंचांग पसाय करीने सर्व रत्नना परीक्ष्कोमां वहेरो करी थाप्यो. धनद पण बहुमान सहित राजानी आङ्गा पामी पोताने घेर आव्यो. आ जीव लोकनेविषे मरणावस्थायें आउखं सांधवाने कोइ समर्थ नही. अनुक्रमें केटलेक दिवसें धनदनो पिता मरण पाम्यो, एटले घरनो स्वामी धनद थयो.

वली केटलाएक दिवस पढ़ी राजायें धनदनी परीक्ता करवाने अर्थें पो ताना माणसोने कद्यं के घणां बहुमूव्यवालां रत्नें जडेलुं एवं सुवर्णनुं कं कण कोटी इव्यनुं लड़ने धनदना घरनी पासेंना मार्गमां मूको, तेवारें ते णे तेमज आकाशनेविषे सूर्यना मांमलानी पेरें तेजेंकरी जलहलतुं एवं कंकण, धनदना घरनी आगल मूकीने पोते जींतने उधें ढाना ढपी रह्या.

एवामां पोताना माणसोनी साथें धनद पण आव्यो ते पोताना घरनी आगल कंकण पहेलुं देखीने विस्मय पामतो बोख्यो के अरे जूर्र जूर्र आ कोइकतुं आजरण पडीगयुं हे तेने महोटा धननी हानि थइ ह्यो. इत्यादि क वचन कहेतो पोतें ते कंकणने प्रत्यक्त अनर्थ जेवुं मानवा लाग्यो त्यारे तेनी पासे रहेला माह्या एवा मित्र तथा माणसोयें युक्तियें करी तेने घणो समजाव्यो के आटलो पोकार मकरो अने आ आजरण घरमां राखो तो पण ते धनद साधुनी पेतें चलायमान न थतां ते कंकणने पञ्चरना कट कानी पेरें गणतोथको आण्यहतो पोताना घरमांहे गयो. जेमाटे तेह्नुं चण्युं, तेनुं गण्युं, तेनुं जाणपणुं, के जेनो आत्मा अत्यंत आकरी आपदा मां पड्यो होय तो पण कोइना आमंत्रणथकी अकार्य करे नहीं.

एवं ते धनदनुं स्वरूप सर्व जाणीने राजाना सुनटोयें जड़ने राजानी आगल ते वात कही, ते सांनली राजायें आश्चर्य पामीने बीजे दिवसें घणा आदर सिहत धनदने तेडावीने पूठ्युं के हे धनद! तुं तहारुं यथार्थ स्वरूप सर्व मने कहे. के वाणीया कांगणीनो हिसाव गणवाने निपुण या यहे एक कांगणीने लोनें घणां कूड कपट हल नेद करें हे तथा विश्वास घात पण करे हे तेम हतां आ बहुमूह्यवालुं कंकण ते वली सहेज स्व नावें रस्तामां पडेलुं हतुं ते तें शामाटे न लीधुं ? शुं तहारे पडेली वस्तु लें, वाना पच्चरकाण हे के तुजने कांइ महारी शंका उपनी के शुं ?

एवं राजानुं वचन सांजलीने धनद बोल्यो, हे राजन ! मने पारकुं धन लेवानो नियम पण नधी तेम तमारी शंका पण नहती परंतु पारकुं इव्य लेवाथी मूलगुं पोतानुं इव्य होय ते पण तेनी साथें सर्व जाय तेमज वली पारकुं इव्य लेवुं ते प्रत्यक् अन्याय हो अने जे उत्तम जीव होय ते अन्याय तो करेज नहीं जो अन्याय करे तेवारे तो ते हलका माणसनी पं किमां गणवा लायक इष्ट कहेवाय. माटे में महारा जन्मथी मांनीने आज दिवससुधी पारकुं इव्य लेवारूप पाप सेव्युं नथी तो वली आज ते पापनुं केम सेवन करुं; वली जे सुपुरुष नाम धरावतो होय, अने सुपुरुष पणाने इन्नतो होय ते पुरुष अन्याय केम करे ?

एवं धनदनुं बोलवुं सांनली राजायें विचाखुं जे अहो एनी उत्तमता

जूवो केवी है के केटलाएक तो पारकी वस्तु न लेवी एवो नियम धारण करीने पण वली कुमार्गें दोड़े है अने केटलाएक एना जेवा उत्तम पुरुष प्रकृतियें नड्क होवाथी नियम लीधा विना सहेजें पण पारकी वस्तु लेता नथी. यतः ॥ वायस साण खराइ, निवारिया विदु हवंति असु रूड़ ॥ हं स करि सिंह पमुहा, नक्या विपणु ित्रया विपुणो ॥ १ ॥ नावार्थः—काग डा, भान, गईना दिक जे हे ते वाचा थका पण अग्रु चिमां हेज आसक होय हे अने हंस हाथी तथा सिंह प्रमुख जे हे ते, कोयवारें प्रेचा थका पण अग्रु चिमां हे आसक होय है आते हास हाथी तथा सिंह प्रमुख जे हे ते, कोयवारें प्रेचा थका पण अग्रु चिमां है आसक थाता नथी ॥ १ ॥

देव राजायें परीका करी धनदना हाथनी ग्रुह्म जाए। धनदना विश्वा सनो निश्रय कर्छा तेवार पठी जेम कोइने राज्यपर्दे स्थापियें तेनी पेठें धनदने जंनारीपर्दे कोइक अपूर्वनी पेठें थापवाने अर्थें राजा बहुमान स हित धनदने कहेतो हवो के, हे धनद! जेम कणेंकरीने कोठार जरीयें तेम तुं महारो जंमार अमूव्य रहेंकरीने जख. सार सार रह्न लड़ने नवुं नवुं जे माणिक्य आवे तेमांथी दशमा अंश जेटलां रह्न तुं राखजे एम क हीने राजायें तेने जंमारी पद पसाय कखुं. अहो जूच न्यायमार्गनुं फल!! स्वर्ग हे तेथकी ग्रुन निसर्गनुं सुख स्वानाविक सुधारसना सहोदर जेवुं हे. जेनां इहां पण एवां महोटां फल हे तो परनवनेविषे होय तेमां कहेवुंज छं!! हवे धनद राजानो जंमारी थइने तेणें रह्नना आगारनी पेठें परवी पर खीने अनुक्रमें राजानो जंमार समुइनी पेठें अनेक अनेक अपूर्व एवां कोडों गर्में रह्नादिकेंकरीने जहां. अने पोठें पण दशमा अंशनां माणिक्यने यहण

विने अनुक्रमें राजानो जंनार समुइनी पेठें अनेक अनेक अपूर्व एवां कोडो गमें रत्नादिकेंकरीने ज्ञा. अने पोतें पण दशमा अंशनां माणिक्यने यहण करतो यको कोटीगमें मणिनो मालेक ययो रत्न कोटीश्वर ययो. यतः ॥ जाय ते जलदृहंदृहृष्टिनः शाखिनां सफलता शनेः शनेः ॥ तुष्यतां क्तिनृतां तु हृ ष्टिन। सत्क्णादिष फलोद्योमहान ॥ जावार्थः—जेम मेघना समूहनी हृष्टि येंकरी हलवें हलवें हक्तोनी सफलता यायने तेम वली राजार्जनी दयायु कहिष्येंकरी तत्काल मोहोटो फलनो उदय यायने. एकदा ते धनद पूर्वपुष्यना उदययकी गुरुनी पासें गयो. गुरु केवा ने के संबंधविना बांध व ने जवसमुइमां बूडताने बांधवादिक राखवा असमर्थ ने पण गुरु समर्थ जाणवा. ते गुरु बोव्या हे जइ! मंगिलकने अर्थे अतिशय जयंकर एवा चि तारूप समुइमांहे पडे थके पण धर्म करवो. यतः ॥ व्याकुलेनािण मनसा

धर्मः कार्योऽतरांऽऽतरा॥ मेढीबद्धोऽपि हि चाम्यन्। घासयासं करोति गौः॥१॥ युगपत्समुपेतानां कार्याणां यदितपाति तत्कार्ये ॥ अतिपातिष्वंपि फलदं फलदे ष्वि धर्मसंयुक्तं ॥ १॥ जावार्थः -कार्यमां व्ययमन होय तो पण वज्जवज्ञमां धर्म करवो; सारांश ए जे ते कार्यनी मांही मांही धर्म करवो. घाणीये बां धेलो बलद पण फरतो फरतो घांसना ग्रासने लेतो जाय है ॥१॥ जो कदि एकज वखतें अनेक कार्य आवी पडे तो तेमां पहेलां जे जरुर करवा यो ग्य होय ते करवुं वली तेनी खंदर पण जे फल आपनारुं होय ते करवुं तेमज फलदायक कामनी अंदर पण पहेलां धमेयुक्त कार्य करवुं ॥१॥ एम विस्तारपणे समकेंतसहित श्रावकनो धर्म मुनियें कह्यो. ते सांजलीने जेम कं चननेविषे मणि जड्यो होय तेमधनदनुं चित्त नावना रसेंकरीने धर्मरूप रत्नें जड्युं हे. तेवारें ते धनदें समकेत सहित श्रावकनुं व्रत पिडवज्युं तेमां पण सर्वकालनेविषे सुखें सथाय एवा देशावकाशिकव्रतनो श्रंगीकार करी पोताने स्थानकें आव्यो. रात्रि दिवस आतुर एवा अमारा सरखा जीवोने देशावकाशिकव्रतज घटे. अहो श्रीवीतरागनो मार्ग जूर्र केवो सुखें कराय एवो हे जे महारा सरखा राजकार्यमांहे आकुल हे तेनाथी पण अंगीका र कराइने नित्य सुखें सधाय हे एम हृदयमां नावना नावतो रात्रिदिवस श्रतिचाररहितपणे देशावकाशिकव्रतने श्राराधतो हवो.

अन्यदा समये ते धनद आवक,राजानां सर्वकार्य करीने वे पहोर रात्रि गया नंतर मध्यरात्रिने समयें पोताने घेर आवी ज्यांसुधी सूर्योदय न थाय त्यांसुधी घरनी बाहेर निकलवुं नही एवुं देशावकाशिकव्रत लक्ष्ने घरमां रह्यों हो, एवामां राजाना शरीरनेविषे अकस्मात् कोइक आकरी मस्तकनी वेद ना थइ जेमाटे ए औदिरक शरीरनों सडण पडण विद्यंसण इत्यादि धर्म हो. जेने बगडतां वार लागे नहीं एवुं जाणीने उत्तमप्राणीयें विशेष प्रकारें धर्म करवो एज सार हो. हवे राजा मस्तकनी आकरी वेदनायें पी डाणो जाणे राज्यज ग्युं होयनी ? अथवा लोहारना हुंमनो अग्नि जेवो धमधमे एवी आकरी वेदना थइ, जाणीयें तरवारेंकरीने मस्तक कापी ना ख्युं होयनी ? जाणे वज्नंकरीने मस्तकना कटका करी नाख्या होयनी ? अ थवा अग्नियेंकरी बाली नाख्युं होय अथवा घंटीयें करी दली नाख्युं होय अथवा पश्रती साथें कूटीने त्रुटी पडतुं होयनी! एवी वेदना राजाने थइ.

तेवारें राजायें सेवकोने कहां के जार्र आपणा चंमारना चंमारीपासेथी रोगहर रत लई त्रावो, ते सांचली सेवकोयें धनदने घेर त्रावीने राजाना म स्तकनी वेदनानुं स्वरूप सर्व संजनाव्युं तेवारें धनदें पण पोताना ब्रतनुं स्व रूप सर्व सेवकोने कही संजलाव्यं तोपण सेवकोयं तेने घणे प्रकारे विजा व्यो तथापि समज्यो नदी जेम कोइक व्यंतर कोइकना शरीरमां संक्रम्यो होय ते समजाव्यो समजे नही अने तेना शरीरमांथी निकले नही तेम धनद पण पोताना व्रतनो अनियह न ग्रांमतो यको पोताना घरमांथी नि कत्यो नही. तेवारें ते इष्ट राजाना सेवको तेनी उपर रूठा थका चाडीया नी पेठें जइने राजाने संजजावता हवा. ते सांजजी राजा यम सरखो थइ श्रति तीवरोपें परवशययो यको सेवको प्रत्ये कहेतो हवो के जूर्र ए धनद महारा प्राणनी हरनारी वेदनानो जवेखनार चोर हे तेने शीघ्रपण बांधी ने इहां लड़ आवो जेएो महारी आज्ञा जंग करी तेने दुं ते आज्ञाजंगनां फल देखाडुं, ते सांजलीने सेवक लोक घणा खुशी खया. जेम कोइक जूरवो होय तेने तेनो कोइ मित्र छावीने जमवानुं नोतरुं दीये तेवारे ते केवा खु शी याय ? तेम खुशी ययायका, त्रायवा जेम जव्यजीवने मुनिनो एडो उए रश सांजलीने उत्साह उपजे तेम गहगहता यका, धनदने वांधवाने अर्थे आब्या.

ते जेवामां धनदना घर दूकडा आव्या एवामां छं ययं ते हे जव्यो! तमे सावधान यक्ने निज्ञा विषय कपाय विकथादि प्रमाद ढांमीने सांजलो.

जेवामां ते सुनट धनदना घरनी पासें आव्या एवामां जोकने बहु श्र नर्थ करतो उतावलो देवतानी गितयं दोडतो जेथकी नगरना जोक भर्व विज्ञेप प्रकारें त्रास पाम्या हे अति नय पाम्या हे एवो इःखे सहेवा योग्य वज्जना अभिसरखो अभि, तिहां अकस्मात् प्रगट ययो. तथा जेम इप्टराजा नो प्रधान पण इप्ट होय तेम ते इप्ट वज्जाभिनो मित्र एवो इप्ट वायरो पणचारे दिशायें तेनी साथेंज विज्ञेष प्रकारे प्रगट थयो; हवे ते अभि रा इसनी पेरें सर्वनक्ती एवो निरंकुश हाथीनी पेरें सर्वने बालतो कोइ एवो अनियह लइने आव्यो के कोइनो उलव्यो उलवाय नही जेम जेम लोक उलववा जाय तेम तेम इिद्यामतो जाय, जे वारतां पण वांको चाले.ते ने ग्रुं करे ? लोक सर्व आकुल थइने पोताना घर हाट कुटुंबादिक सर्वने प इतां मूकी दशे दिशायें नाशी जवा लागे. ते श्रिया नयथी जेम पवनेंकरी मेघ क्यांय नासी जाय तेम राजा प्रमुख सर्वना मनोरथ मिथ्या थया, तेवारें मस्तकनी पीडाने वीसारीने राजा ते पीडा सहित घरथी बाहेर निकव्यो कारण मरण ते महोटो नय हे. बाहेर गया पही जेम तापथकी टाहाढ नासी जाय तेम ते राजानी वेदना नाही. राजायें विचाखुं के श्रहो जूडे व्याधिनी विचित्रगति!!!

हवे ते श्रिव्रियंकरी श्रमेक घर हाटादिकं सर्व घांसना समूहनी पेरें थो डीवारमां बिल नस्म थयां ते श्रिव्र सर्वने बालतो बालतो जेवारे धनद ना घरनी नजीक श्राच्यो तेवारें धनदना सक्जनें मली धनदने घरषी बाहे र निकलवा माटे घणो समजाच्यो पण व्रत्नंगना नयथकी ते धनद घर थी वाहेर निकल्यो नही. विचाखुं जे हुं महारा मात्र एक नवना जीवितव्य माटे व्रत्नंग केम करुं हमणांतो एकजवार मरवुं पडशे पण व्रत्नंगथी श्रमेतां मरण करवां पडशे एवुं जाणी धमेनेविपे हहता राखी सागारी श्रम् नशन करीने धनद तिहां घरमांहेज रह्यो पण वाहिर निकल्यो नही ते धनदना हहधमेना प्रनावथकी श्रिव्रपण धमेनुं माहात्म्य देखाडवाने धनदना घरने प्रदक्तिणा देइने श्रागल चाल्या गयो ते वज्राव्रिने सन्मुख श्रव्रिमल वाथी श्रागल जइ पोतानी मेलेंज उल्वाङ गयो विषनुं श्रोपध ते विषज जाणवुं ए न्यायेंकरीने जाणवुं पण लोक ए युक्ति जाणता नथी.

नगरमां सर्व बलीने नस्म थयुं पढ़ी जेम समुइमांहे द्वीप देखाय तेनी पेते एक धनदनुं घर अखंम दीसवा लाग्युं, धूमाड़ो मात्र पण धनदना घर नेविपे देखाणो नही. जेम आकाशने कादव न लागे तेम लोकनां घर बली गयां अने पोतें रह्यां राजादिक सर्व देहमात्रें रह्या धनदनुं एवुं आश्चर्य देखीने सर्व अनुमोदना करता हर्ष पामता पोतपोतानें स्थानकें गया ते धन दनुं वृत्तांत त्रण लोकमां विस्तार पाम्युं राजायें पण लोकोना मुखधी ध नदनी वात सांचलीने पूर्वें जेधनदनी उपर कोध चढ्यो हतो ते उपशमी गयो धनदनुं अड्वतचरित्र देखी चमत्कार पामी प्रचातें धनदने तेडावीने राजायें पूर्व्युं के हे वत्स ! देखवा योग्य नहीं एवा अग्निमां तुं केम बेशी रह्यों ? ते सांचलीने धनदें पोतानुं व्रतसंबधि सर्वस्वरूप राजानें संचलाव्युं तेवारें राजायें धनदनी तथा तेना धर्मनी घणी प्रशंसा करी; एवं अलच्य

धर्मेनुं माहात्म्य देखीने राजा तथा प्रजा सर्वलोक धर्म करवाने आदरवंत थया. देशावकांशिकव्रत धनदनी पेतें सर्व जनोयें लीधुं.

राजायें बहुमान आपीने धनदने सर्व साधर्मिमां हे वहेरो कस्तो. राजा पण धर्म पामीने धनदने पोतानो ग्रुरु करी मानतो हवो. धनद पण सर्व साधर्मिमां हे अधिकारी थइने धर्मनां कार्य सारीरीतें चलाववा लाग्यो. ए क बत्रें सर्वने धर्मनेविपे जोड्या. हवे ते धनद अनेक लोकने ते पूर्वोक्त मणीथी उपकार करीने देशावकाशिकव्रत अखंदित आराधीने आतमे देव लोकें देवता थयो तिहांथी चवीने मोहें जाशे एवं धनदनुं कथानक सांज लीने अहो जव्यप्राणी! तमे धनदनी पेरें देशावगाशिकव्रतने अखंद आराधी तो धनदनी पेरें मोहसुख पामो ॥ इति दशमदेशावकाशिकव्रतनेविपे धनद जंदारीनी कथा संपूर्ण इति दशमव्रत समाप्त ॥

हवे अगीआरमुं पौषधोपवास नामे त्रीजुं शिक्काव्रत कहे हे.

जे धर्मनी पृष्टिने धरे तेने पोपध किह्यें. ते पोपध अष्टमी आदिंद्इने पर्वनेविषे करवुं जे पोषधनामा व्रतेविशेष ते पोपधने समीपें वसवुं अव स्यायें रहेवुं ते पोपधोपवास किह्यें अथवा आवमी आदिदेइने पर्वनां जे उपवास तेने पोपधोपवास कहीयें ए पोपधवतनो अर्थ कह्यो.

ए पोपधवतनुं प्रवर्तन तो स्पष्ट हे; एक आहार, बीजो शरीरसत्कार, बीजुं अब्रह्मचर्य, चोथो अव्यापार ए चार प्रकारनुं जे हांमवुं ते रूप पो पध किह्यें. श्रीसमवायांगनी हित्तनेविषे श्रीअनयदेवसूरीजीयें एम कह्यं हेके पोपधश्राहार शरीरसत्कार ब्रह्मचर्यव्यापार जेदा श्रनुर्हापुनरेकेकोिह्धा देशतः सर्वनेदादेवमष्टी जंगा इत्यादिक घणी व्याख्या करी हे.

हवे पूर्वे चार प्रकारना पोसहने देशथी तथा सर्वथी एवा वे वे नेदें क रतां आव प्रकारना पोसह थाय तेनां खरूप कहीयें वैयें. १ विहां एका सणे तथा नीवी प्रमुख त्रिविहार उपवासें करी ज़े पोषध करवुं ते देशथी आहार पोषध कहियें. २ अहोरात्र पर्यंत चारें आहार वर्क्जवारूप ते सर्वथी आहार पोपध कहियें एम शरीरसत्कारादिक सर्व देशथी सर्वथी कहेवा.

हवे शिष्य गुरुने पूर्व वे के जेवारें देशथी पोसह उच्चरे तेवारें सामा विक उच्चरे के नही उच्चरे? तेने गुरु उत्तर कहे वे के जे सर्वथी पोसह उ चरे तेने नियमा सामायिक उच्चरवुं जोइयें अने जे सर्वथी देहेरानेविषे अथ वा साधुनी पासे अथवा पोताना घरनेविषे अथवा पोषधशालांनेविषे मिण्मु इादिक सुवर्ण सर्व ढांमीने पोसद लइने नणे, गुणे, पुस्तक वांचे. धर्मध्या न ध्याय, साधुना गुणनुं चिंतन करे, तथा विचारे जे अहो हुं मंदनाग्यनो धणी जे साधुपणुं लेवाने असमर्थ ढुं,आवश्यकनी चूर्णिमध्ये तथा श्रावक प्रकृतिग्रंथनी टीकादिकनेविषे ए सर्व कह्यं ढे. के सावद्य वर्क्जनरूप जे सामा यिकनुं अर्थ ते पोषधमांहे नेलो ढे तो पण पोषध सामायिक लक्क्ण वेहु ब तनुं आराधन ढे ए अनिप्रायें करीने फलनो विशेष करवो.

ए आहारादिक चतुर्विध पोषधना एकादि संयोगें एकेक पर्दे गिणयें तेवारें एंशी नांगा थाय तिहां एकसंयोगी एना मूल नांगा आठ थाय अने िकसंयोगें उ नांगा थाय ते आवीरीतें के र अहारपोसह अने शरीरसत्कार पोसह, २ अहार अने ब्रह्मचर्य, ३ अहार अने अव्यापार, ४ शरीरसत्कार अने ब्रह्मचर्य, ५ शरीरसत्कार अने अव्यापार, ६ ब्रह्मचर्य अने अव्यापार ए दिकसंयोगी मूल उ नांगा थाय तेना उत्तर नांगा चोवी श थाय ते जेम के एक दिकसंयोगियाना चार नांगा थाय ते कहियें ठैयें र देश देशथी, २ देश सर्वथी, ३ सर्व देशथी, ४ सर्व सर्वथी ए चार नां गाने मूल उ नांगानी साथें गएतां चोवीश नांगा दिकसंयोगी थाय.

दवे त्रिकसंयोगिया चार नांगा मूलगा घाय ते आवी रीतः—? आहार पोसह, शरीरसक्कार पोसह अने ब्रह्मचर्य पोसह, श आहार शरीरसक्कार अने अव्यापार, श आहार ब्रह्मचर्य अने अव्यापार, श शरीर, ब्रह्मचर्य अने अव्यापार ए मूल त्रिक संयोगिया चार नांगा घया. हवे एना उत्त र नांगा बत्रीश घाय ते आवी रीते केः—? देश देश देश, श देश देश सर्व, १ देश सर्व देश, श देश सर्व सर्व, ए सर्व देश देश, ६ सर्व देश सर्व, १ सर्व सर्व देश, ७ सर्व सर्व, ए आठ नांगाने पूर्वोक्तने मूल चार नांगा नी साथें गुणीयें तेवारें बत्रीश नांगा घाय.

सर्व देश देश देश, १० सर्व देश देश सर्व, ११ सर्व देश सर्व देश, १२ सर्व देश सर्व सर्व, १३ सर्व सर्व देश देश, १४ सर्व सर्व देश सर्व, १५ सर्व सर्व सर्व देश, १६ सर्व सर्व सर्व एरीतें एक संयोगी आठ, हिक संयोगी चो वीश,त्रिक संयोगी बत्रीश अने चतुः संयोगी सोज,सर्व मजी एंशी नांगा थया.

ए एंशी जांगा मध्ये पूर्वाचार्यनी परंपरायें सामाचारी विशेषें हमणां तो एक आहार पोपध देशयी सर्वथी वेहु प्रकारें करीयें वेथें.

इहां शिष्य गुरुने पूर्वे ने के निरवद्य आहार सामायिकनी संघाते वि रोध देखवाथी ते पोसह सामायिक सहित केवीरीतें थाय ?

हवे गुरु उत्तर कहे ने के साधु सर्व सामायिकव्रतना धारक ने ते केम आहार करे ने? तथा उपधानवंत श्रावक होय ते केम आहार करे ने तेने जेम आहार निषेध नथी तेम पोसहमांहे श्रावकने आहार निषेध नथी.

शरीरसत्कारपोषध, ब्रह्मचर्यपोषध अने अव्यापारपोषध ए त्रण प्रका रना पोषध,तो सर्वथीज उच्चराय पण देशथी उच्चारतां तेनी साथें प्रायः सा मायिकनो विरोध थाय हे केम के सामायिक मध्ये तो " सावक्कं जोगं पच्च स्कामि "ए पाठथी सावद्य सर्व पच्चस्या हे अने शरीरसत्कारादिक त्रण पो सहनेविषे तो देशथी उच्चारतां प्रायः शरीरसत्कारादिकना सावद्यव्यापार थायज हे तेमाटे तेनो देसथी उच्चार करवो निषेध कस्त्रो है.

वर्ली शिष्य पूर्व के के निरवद्य देह सत्कारादिक करतां शो दोप के ? तेने गुरु उत्तर कहे के के शरीरनी शोनाना लोन माटे निषेध के, सामा ियकवंतने शरीरनी शोना करवी घटे नहीं. अने आहार न करे तो शिक्त मंद थाय ते शिक्तना मंदपणाथी धर्म अनुष्टाननो निर्वाह न थाय. तेमा टे साधुनी पेवें आहार करवो कह्यों के श्रीआवश्यकचूर्णिमांहे पोपध्वतने अधिकारें कह्युं के. यतः ॥ तंसनि उकरिक्का, वतो आजोवित्र उत्सम्मणधम्मो ॥ देसावगासियं पुण । जुत्तो सामाइएणं वा ॥१॥ निश्चित्राष्ट्रे उत्पुक्तं ॥ पौष धिनमाश्रित्य उदिहकमंपि सोनुंजेइति निश्चित्र हुणों वा॥ जांच उदिहकमंतं, कमं सामाइ विनुंज इति ॥१॥ इदंच पोषध्यसिंहतं सामायिकापेक्येव संनाव्यते ॥ नावार्यः—धर्मनी शिक्त प्रमाणेंकरी तपस्या प्रमुख करे एवो साधुनो धर्म वर्ण वयो के. परंतु देशावकाशिकवत तो सामायिक चें चुं युक्त के. निश्चित्र लाण कह्युं के पोषध्यवालाने आश्रयीन उद्देश्यो आहार ते पण नोजन करे अथ

वा निशियचूर्णिमां जे उदेशी कखुं ते सामायिक करवावालो पण नोजन करे. परंतु ते पोषध सहित सामायिकनी अपेक्सायें संनवीयें वैयें. अने पोषध र हित सामायिक तो एक मुहूर्नमात्रनुं ने तेमां पूर्वाचार्यनी परंपरायें आहार खेता नथी श्रावक पडिक्रमणासूत्रनी चूर्णिमां एम कह्यं हे॥ जदिदेसर्र श्राहा रपोसिंदि तो जनपाणस्स गुरु सिक्त यं पाराविना त्याविसयं करिना इरिया समिइ एगंतुवरं इरियावहिञ्जं पिकक्षमइ आगमणं आलोयणं नोयणं करेइ चे इए वंदेइ तर्रमंमासयं पमिकता पायपुरंणे निसित्रक्ष नायणं पमक्र जहो चिएश्र नोयणे परिवेसिए पंचमंगलमुज्ञारेश सरेश पज्ञस्काणं तर्र वयणं पम क्किता असरसरं अबचवं अड्डयमविलंबिय अपरिसाडियं मणवयण काय गुनो जुंजइ साह्ववववनो ॥ १ ॥ जाया माया ए जुन्ना फासु ऋ जलेए मु दसुिका नवकार सरणेण नवाइ देवेवंदइ वंदणयंदा नं संवरणंका नंणं पुणो विपोसहसालाए गंतु सङ्जाइतो चिष्ठइति ॥ नावार्थः-जेवारें देशयी आहार पोसह करे तो जातपाणीने गुरुनी साखें परावीने आवस्सहि कही ईर्यास मिति शोधतो घरें जइने ईरियावहि पडिक्कमे गमणागमण आलोइने जोज न करे. चैत्यवंदन करे, तेवार पढ़ी संमासा पोते प्रमार्क्जना करे पोंढणा उपर बेशी नोजनने पूंजे पढ़ी जे उचितनोजन होय ते पीरसे थके मुख थी नवकारनो उच्चार करी पञ्चरकाण संनारी तेवार पढी मुखने प्रमार्कि ने स्वररहित, बचकार रहित, विलंब रहित, अण ढांमेथके मन वचन का या ग्रप्त करतो साधुनी पेरे उपयोग सहित पणे जोजन करे ॥ १ ॥ पो ताना आहार प्रमाणे नोजन करी, उष्णजलधी मुखग्रु कि करीने नवकार कहेतो उठे, देव वांदे वांदणा देइने संवरण करीने वली पण पोषधशालायें जइने सद्याय करतो बेज्ञे ॥ एटला माटे देश सामायिकें देशपोषधने सज्जावें जेम विधि कह्यों हे तेम विधियें करीने जोजन करवुं एवुं आगममां हे देखीयें वैयें. इहां पोसह खेवानो विधि तो पोपध प्रकरणथकी जाणवो.

> हवे ए पोपधव्रतना पांच अतिचार ग्रांमवा ते कहे हे. संघारूचार विहि, पमाय तह चेव जोयणाजोए ॥ पोसहविहिविवरीए, तइए सिकावएनिंदे ॥ १ए॥

अर्थः-संथारो ते माननो तृणनो कांबली, वस्त्रादिकना उपलक्क्णथी

शया बाजोट, पाटीया प्रमुखनुं जाणवुं. अने उच्चार ते वडीनीति, प्रसवण मातरं लघुनीति; तेने परवववानी जूमिका तेना बार मांमलां जाणवां लघु नीति तथा वडीनीतिनी आबाधा न सही शके तेमाटे पोषधशालामां हे व मांमलां अने आबाधा सही शके तो व मांमलां पोषधशालायी बाहेर करे तिहां आघाट एटले अकस्मात् आबाधा यइ गइ रहेवाणुं नही तेने माटे मांहे मांमलां करे अने जे आबाधा रहि शके ते अनाघाट कहियें तेना व मांमलां बाहेर करे. ए बार मांमलां विष्टा मुत्रना स्थंमिल जाणवां.

हवे मांमलुं जयन्यथी एक हाथनुं अने हेतुं चार आंग्रुस धरतीमांहे ए टले हेती चार आंग्रुस चूमिका अचेत जोइने एंक श्लेष्मादिकनुं परवववुं करे तेने विधियें पुंजी विधियें जोइने परवववुं तेनेविषे प्रमाद न करवो इहां संधारो श्रुट्यादिक तेने नेत्रें करीने जोयुं नहीं होय अथवा जोयुं तो यहां तहा कांइ जोयुं कांइ नहीं जोयुं अथवा रूडीरीतें जोया विना वे सबुं चववुं कीधुं होय ते प्रथम अतिचार जाणवो.

१ एम रजोहरऐंकरी पुंज्युं न होय अथवा पुंज्युं तो कांइ पुंज्युं कांइ नहीं पुंज्युं एम इःप्रमार्ज्जन करे थके वीजो अतिचार.

३-४ एम लघुनीति वडीनीति एटले उच्चार पासवण परत्ववानी चूनि काना पण एजवे अतिचार कहेवा. एचारे अतिचार अनाउपयोगें जाणवा.

प पांचमुं पोसहिविहिववरीए एटले पोपधना विधियकी विपरीत पो पध कीधे थके अर्थात् चार प्रकारनो पोसह ते रूडीरीतें पाखो नहीं। पण जेवो तेवो पाखो अर्थात् जेवेलायें लेवो ते वेलायें पारवो जोइयें तेम न करतां सवारो पारे तथा अन्यथा विधि करे पण रूडीरीतें आराधे नहीं जेमके आहारादिक चारे प्रकारनो पोपध कखो हे पही ते कुधायें तृषायें पीडित थको एवी चिंतवणा करे के आ पोपध तरत पूर्ण थाय तो पही हुं आ अमुक वस्तु खाइश अमुक वस्तुनुं पान करीश इत्यादि आहार सं बंध अजिलाषा करे. तथा शरीरसत्कारादिकनां छथ्यांन सर्व चित्तमां चिं तवे जे पोषध पूर्ण थशे पही हुं आम करीश आमें करीश इत्यादि छथ्यांन चिंतववा रूप पांचमो अतिचार.

सूत्रकार कहे वे के "अप्पिडिलेहिअ इपिडिलेहिअ सवासंयारए" ए प्रथम अतिचार तथा "अप्पमिक्तिअ इप्पमिक्तिअ सवासंयारए" ए बी

जो श्रतिचार. तथा "श्रप्पिडलेहिश्च इप्पिडलेहिश्च उच्चार पासवण नू मि" ए त्रीजो श्रतिचार. तथा "श्रप्पमिक्कश्च इप्पमिक्कश्च उच्चार पास वण नूमि" ए चोथो श्रतिचार. तथा "पोसहोववासस्स सम्मं श्रणणु पालणया" एटले पोषधोपवासने सम्यक्रीतें पास्रो नही ए पांचमो श्र तिचार जाणवो. श्रथवा "नोयणानोए" इति पावांतर तिहां नोजन ते श्राहारनेविषे उपलक्क्णथी देहसत्कारादिकनेविषे पोसहमां विचार था य के केवारे वहेलो महारो पोसह पूर्ण थाय तो स्वेष्ठायें हुं नोजनादिक करुं इत्यादि इध्यीन चिंतववा रूप पांचमो श्रतिचार ए पांचे श्रतिचारें करीने पोषधना विधि थकी जे विपरीत थयो होय श्रेष श्रवीवत्.

पोषधव्रत व्रति शक्तियें तो चग्रविहारोज करवो अने ते चग्रविहार कर वानी शक्ति न होय तो तिविहार अथवा आयंबिलादिकें करी पण पर्व दि वसनेविषे पोषधव्रत अवश्य करवुं प्रायः सर्व सावद्य व्यापारने वर्क्तवेक रीने फलनी बाहुत्यता याय कह्यं वे के यतः ॥ सामाइय पोसह संविअस्स, जीवस्स जाइ जोकालो ॥ सो सफलो बोधवो, सेसो संसारफल हेग्र ॥ १ ॥

द्वे पर्व ते ग्रुं किह्यें यतः ॥ बीया पंचमी अहमी, एगारिस च उद्सी पण तीही ॥ ए आ उसु अ तिही छी, गोयम गणहारीणा चिणया ॥१॥ बीहा छिवहे धम्मे, पंचमी णाणे अ अहमी कम्मे ॥ एगारिस अंगाणं,च उद्दित च उद्द पुवाणं ॥ १ ॥ नावार्थः—बीज, पांचम, आठम, अगीआरश अने चौद्र ए (पणतीही छे के०) पांच तिथि छ जाणवी ए तिथि छ गौत मगणधरादिकें किह हे ॥ १ ॥ तेमां बीज ते छिवधभमें छुं आराधन अने पंचमी ते ज्ञान अराधन, तथा अष्टमी ते कमेक्य मुं आराधन अने अगीआर शं अगीआर शंग छुं आराधन वली चौद्रों चौद पूर्व छुं आराधन हे ॥ १ ॥ जेमाटे श्रीवीतरागनां वचन पण एमज सांजित्यें हैयें. " नयवं बीय पसुहासु पंचितही सु विहि अंधम्माणु वाणं किंफ लं हो इ गोयमा ब हुफ लं हो इ जम्मा इएसु तिही सु पाएणं जीवो पर च आ उश्चें समिक ए इ ति जावार्थः—हे नगवन ! बीज प्रसुख पांच तिथिनेविषे कहेला धमें छुं अ छुष्टान करवाथी हां फल होय ? हे गोतम ! जेमाटे ए तिथि चेनेविषे प्रा यः जीव पर च वां आ उखां वांधे हे ते कारण माटे तप प्रसुख विथियें

करी धर्मानुष्ठान करवुं जेथकी जीव ग्रुजगितनां श्राव्यां बांघे इति ॥ वली पंचमीने पर्वपणुं श्रीमहानिज्ञीथमध्ये कह्यं हे यतः ॥ संते बल वीरिय पुरिस्सकार परक्षमे श्राप्ता चवदसी णाणपंचमी पद्धोसवणो चव मासिएस चवल श्राव्या हिकरिद्धा पायि जित्रमिति ॥ जावार्थः — हते बलें, हते वीर्यें, हते पुरुषाकार पराक्रमें, श्राप्ता, चतुर्दशी, ज्ञानपंचमी, पंजोसण मां चोमासियें एटले हेकाणे, चोथ हक श्राव्या करीने प्रायिश्वत तप करवुं. त या निज्ञीथचूर्णिमांहे पण कह्यं के "पुिष्माए दसमीए एवमाईएस पत्रेस प्रयोसत्रे श्रावे श्रावे वा जावार्थः — पुर्णिमा पंचमी दशमी ए श्रादे देशने पर्वना दिवसोनेविषे तपस्या करवी पण पर्व विना तप न करवुं त था एकोनविंशित पंचाशकहत्यादिक श्रानेविषे पंचमी कही है.

एम व्रतां त्रिपवीं, चतुःपवीं, पंचपवीं, पट्पवींने तप शीलादिकेंकरी आराधवी कही वे पोतानी शक्ति होय तो सर्वे बेहु पखवाडीयानी तिथि आराधवी अथवा एक पखवाडियानी पण आराधवी अथवा महोटी तिथि छ पण आराधवी परंतु विराधवी नहीं शक्ति होय तो सर्वदा आराधन करतां कोइ दोप नथी.

वली शिष्य पूर्वे के चग्रदस अहम ग्रहि प्रिम्मासिणएस पिरप्रम् पोसद अणुपालेमाणे विद्दर एम कह्यं हे. तेनो ग्रह ग्रह कहे हे के श्री स्यगडांगमांदे आवकना वर्णनने अधिकारे चतुर्दशी अष्टमी, ए तिथि तो प्रिस्त हे पण ग्रहि एवो जे पात हे ते तो श्रीतीर्थंकरनी महोटी कद्या णिकितिथि हे तेणेंकरी पुष्य तिथिपणे हे अने पूर्णिमातो त्रण चोमासानी त्रण पुनमने माटे विख्यात हे एटलामाटे कही हे तथा श्रीनगवतीनी टी कामध्ये ग्रहि तिथिने अमावास्या कही हे तथी अष्टम्यादिक पर्वनेविषे ज पोपध करवो पण शेष दिवसनेविषे न करवो एम न कहेबुं एवो कांइ एकांत नथी कारणके बीजा सुबाहुकुमारादिक तथा परमेश्वरना दश श्राव कें तिथिविना पण पोसद कखा हे तेने ना कही नथी जेमाटे श्रीविपाक स्त्रना बीजा श्रतस्कंधना प्रथम अध्ययननेविषे कह्यं हे ''तेएणंसे सुबाहु कुमारे अन्नयाकयाई चाग्रहसम्मुदि पुिमासिण्एस जावपोसहसालाए पोसिहए अष्टमनिए पोसह पिडजागरमाणे विद्दरहिन ॥ नावार्थः—तेवा रें ते सुबाहुकुमार अन्यदा कोइवारें चतुर्दशी अष्टमी अमावस्या पूिणमा

तिथिनेविषे यावत् पोषधशालामां हे पोषधसहित अहमननें पोसहनुं प्रति जागरण करतो थको विचरे. इहां अहमनत्त करवाथकी लागव त्रण दिवस पोसहनुं यहवुं थयुं एथी फ्वथकी अन्यदिवसें पण पोषध लेवानी आङ्का हे.

जे एम कहेके तिथिविना पोषध लीये ते अविधि करे हे तेने कहे हुं के अनयकुमार कार्य करवाने उद्देशें त्रण दिवस पोसहमां रह्या अने विजय राजा कार्यने उद्देशें सात दिवस पोसहमां रह्या. इहां जो अविधि होय तो वांहितकार्यनी सिद्धि न नीपजे अविधियी तो साहामो उपइव यवो जोश यें जेम अकालें सज्जाय करे हे तेने वांहितकार्यसिद्धिनो संशय रहे हे. श्रीज्ञाताधमेकथांगसूत्र तथा वसुदेवहिंम प्रमुख आगममांहे साह्चात्कसुं हे. यतः ॥ सबेसुकाल पबेसु, पसन्नो जिएमए तहाजोगो ॥ अष्ठिम च उदसी सु, नियमेण हिवज्ज पोसहिर्ज ॥ १ ॥ नावार्थः—सघलां पर्वमां सर्वकाल नेविषे प्रशंसवायोग्य यथायोग्य वीतरागना मतनेविषे अष्टमी च उद्शीमां हे निश्चे पोसह करवो ॥ १ ॥

तथा आवश्यकचूर्णिनेविषे पर्वदिवसें निश्चे पोसहनुं व्रतकरनुं कहां ने परंतु अन्यदिवसें पोसह करवानो नियम नहीं परंतु सर्वथा निषेध नथीं नहीं ज करवा एवा कोई आगमनेविषे तेनो निषेध नथीं ने सांज्ञत्यो पण नथीं. पोषधोपवासनो तथा अतिथिसंविज्ञागनो तो निश्चित दिवसनो नियम नथीं, श्रीहरिज्ञ ह्यूरिकत आवश्यकनी महोटी टीकानेविषे तथा आवकप्रक्षियं थनी वृत्तिनेविषे साह्नात् कह्यं ने तेनो जेवारें निषेध करे ने तेवारें तेणे यंथ कारनो अजिप्राय जाएयोज नथीं ते एम कहे ने के जेवारें सर्व दिवसें पोस ह कराय तेवारें पर्वदिवसें पोसह करवानो हो विशेष ने? तेने कहियें नैयें के पर्वदिवसें आवश्य करवो एज विशेष ने अन्य दिवसें नियम नथीं जे करे तेने नाकारो नथीं एटलो विशेष ने,जेम आवश्यकवृत्तिआदि यंथमध्ये आवकनी पांचमी प्रतिमाने अधिकारें कह्यं ने के दिवसें ब्रह्मचर्य निश्चें पालवु एवं कहेवाथी एम न समजवुं के रात्रियें न पालवुं परंतु रात्रियें पण अवश्य पालवुं एतो पोतानी मेलेज जाणी लेवुं के जेवारें दिवसें निषेध कर्खुं तेवारें रात्रियें निषेध जाणवुंज.

जो एवो नियमज होय के पोषध नित्य करवो तेवारें तो अतिथिसंवि नाग पण नित्य करवो जोइयें, माटे पोषध कस्बो होय तोज अतिथिसंवि

नाग थाय एवो कांइ नियम नथी अतिथिसंविनाग तो पोषधोपवासना पा रणाविना पण थाय हे,परंतु अतिथिसंविनाग पोषधोपवासने पारणे तो अ वश्य करवो जोइयें,एरीतें पोषध पर्वदिवमें पण करवो तथा अन्यदिवसें पण करवो तेमां कांइ अवधि नथी जेमाटे सावद्यश्चारंनत्यागवाथी विशेष लानहे.

हवे ए व्रतनुं फल कहे के: - उक्तंच ॥ कंचणमणि सोवाणं, शंनसहस्स सियं सुवास तलं ॥ जोकारिक्जइ जिणहर, तर्रिव तव संजमो अहिर्रि ॥१॥ अर्थः - सुवर्ण अने मिणना हजारो गमें यंनें करीने उन्नत अने सुवर्णमय जेनुं तिल्युं के एवं श्रीजिनेश्वरनुं मंदिर अर्थात् जिननो प्रासाद करावे ते थकी पण तप संयम अधिक जाणवो ॥ १॥

एक मुदूर्चमात्र सामायिकनो लाज जे पूर्वे नवमा व्रतमां कही आव्या वैयें तेवारें एक अहोरना पोसहनां त्रीश मुहूर्न याय तेथी त्रीश सामायि क यया तेना लाजनी संख्या कहे वे:—सनहतरि सनसया, सनहतिर सहस्स लखकोडी ॥ सगवीस कोडी सया, नवजागा सनपित्यस्स ॥ १ ॥ जावार्थः—सीतोतर,सातसें, सीतोतेर,हजार,सीतोतेर लाख,सीतोतेर कोडी, सन्तावीशसो कोडी, उपर एक पत्योपमना नवजाग करियें तेमांहेला सात जाग लेवा खंकथी २९९९९९९९९९९। एक पोषध करवाथी बाह्यवृत्तियें एटला पत्योपम देवतानुं आयु वांधे स्कावृत्तियें तो अधिक अधिकतर वांधे एटले जेवो जाव तेवुं आयु वांधे. तथा जो पोषध करीने प्रमाद सेवे एटले अहो रात्र ख्रव्यापार चिंतवे तो एटलाज पत्योपमनुं नरकायु बांधे, वली च कवर्ति वासुदेवप्रमुख पण देवताने वश्य करवाने अर्थे पोषध करे वे तो ते मने देवता पण वश्य थाय वे एम पोषधयकी इहलोक संबंधिकार्यनी सिद्ध ता पण थाय वे. इत्यादिक पोषधनां फल प्रगट जाणवां ॥ २०॥

हवे ए पोषधव्रत आराधवा उपर अने पोषधव्रत विराधवा उपर जोठ ना बे पुत्रनो हष्टांत किह्यें हैयें:— जिक्कीनिवास नगरनेविषे पर्वतनी रे खाने अनुसारें सुवर्णनो गढ हे तेमां गुणनिष्पन्न जेनुं नाम हे एवो अ पराजित नामे राजा होतो हवो. तेनुं जेनुं नाम हे तेवोज परिणाम हे पण निरर्थक नाम नथी ते नगरमां प्रकाकर नामे ज्ञाठ वसे हे ते राजाने घणो मानेतो हे ते ज्ञाननी प्रकावती नामे स्त्री हे ते सर्व सती डमांहे प्रथम व खाणवा योग्य है ते स्त्री नरताने सात पुत्रियो यह है ते साते निर्गुण है पगनी रजनी पेरें धननी हाणी करनारी है यतः ॥ अजारजः खररजस्त्रथा संमार्जनीरजः, दीपमंचकयोश्हाया लक्ष्मीं हंति पुरा कृतां ॥१॥ जावार्थः— अजनी रज ॥ गईजनी रज, तेम सावरणीनी रज, दीवानी हाया, मांचानी हाया, एटलां वानां पूर्वे उपार्जित लक्ष्मीने हणे है ॥ १ ॥ ते पेटजरा रां कृती पेरे निर्ले है तथा बीजा अजह्य जक्षणनेविषे निरंतर सर्वस्थानकें निःशंक है, सत्पुरुषना गुण महवा मांहे मूक है. इःस्वरा, इर्जागी, इमेति, इर्गतिने पामनारी है, माता आशयनी धरनारी है, साते मांहोमांहे क्षेशनी करनारी है, जाणीयें इःखदायी साते नारकी जह ते ताते प्रत्रियो मा बा पने घणा खेदनी उपजावनारी थइ तथी मातापिताने अतिशय अनिष्ट थइ.

हवे ए पढ़ी ते ज्ञों वने आहमना चंडमा जेवो एक पुत्र ययो ते रात्रियें ज नम्यो परंतु रात्रि हतां पण चारे दिशायें अकस्मात् उद्योत ययो ते जोई मा तापिताने खेद अने विस्मय थयो एवामां तो ते बालक जन्मतांज वाचा ज थईने ताडुकीने बोख्यों के तमो पुत्रजन्मना हर्षने स्थानकें खेद केम करो हो? महारा जन्मनो महोत्सव केम नथी करतां? पुत्ररत्न पाम हुं सुलन नथी एवी जन्मतांजवार पुत्रनी वाणी सांजलीने मा बाप विचारवा ला ग्यांके आपणें पेट कोई जूत अथवा प्रेत अथवा यम ते पुत्ररूपें अवतस्त्रो जणाय हे नहीतर जन्मतांज एवी स्पष्टवाणी क्यांथी बोले! माटे एनो जन्म महोत्सव पण केम करीयें?

एवा मातापिताना चित्तना आशयने जाणीने ते बालक फरी बापप्रत्यें कहेतो हवो के तमे कांइपण तमारा चित्तनेविषे शंका लावशो नही हुं त मारा जाग्यना उदयथी कल्पहरूनी पेरें तमारा कुलमां अकस्मात् अवतस्रो हुं, वली मारुं वचन सांजलो आ नगरनी बाहेर उद्याननेविषे देहेरं हे ते दे रासरने बारणे दशकोडी सोनैयानुं निधान हे तिहां तमे उतावला जह इव्य लावी धननी आर्त्ति निवारीने महारो जन्ममहोत्सव अति विस्तारें करो. तथा ते धनेंकरीने बीजांपण घणां अगणित पुण्यनां काम करो. एवी ते बा लकनी वाणी सांजलीने तेना पितायें अतिवस्मय तथा अतिहर्ष पामी तेज वखतें तिहां जइने खोद्युं तो मांहेथीधन निकल्युं ते तत्काल घेर लावीने नवी जाणे सुकतनी मूर्त्तिज होयनी!! तेवीरीतें ते पुत्रनो जन्मसंबधी म

होटो अतुल महोत्सव ते ज्ञेतें करीने गुणनिष्पन्न एवं देवकुमार तेनं नाम पाड्यं. मा बापें विचाखं जे ए पुत्र जन्मधीज प्रगट वचनेंकरीने सुखदा यी खयो तो आगलपण आपणने सुखदायी खरो तेम ते कुमार पण अतिशय रूपादि गुणेंकरीने वधतो हवो.

एवामां ते प्रकाकर शेवनो कोइक चाडियो देषी हतो तेणे राजापासें जइने प्रकाकरहोत धन पाम्बा ते संबंधी वार्त्ता करीने चाडी खाधी रा जायंपण कोइक प्रकारची धननी प्राप्ति जाणिने ते चाडियाना मुखनी वात सांचली क्रोधें धमधमीने सुनटोने हुकुम कह्यो के जाउं तमे प्रज्ञाक रज्ञेवनुं घर जूंटी लावो ते सुचटोने ज्ञेवें पोताना घरतरफ दूरथी आवता जोइ ज्ञेत अत्यंत भूजवा लाग्यो तेवामां पारणामां रहेलो बालक बोव्यो के हे पिताजी ! तमें राजाना सुनट देखीने तमारा हृदयमां नय आएगो नही. हुं रक्तकबुं माटे इंइसरखो पण तमोने उपइव न करी शके एम जाएजो जेणे तमने धन आप्युं हे तेज तमारुं रक्षण पण करहो एम कहीने ते बालक पारणामांहेची उठीने घरने आंगणें जइ हजार सुजटने जीते एवो योधो थ इने बेवो पढ़ी असुर सरखा इर्दर सुनट जेटले होतना घरमां प्रवेश करवा जाग्या तेटले ते पन्नरदिवसने बालकें विकराल व्यालनी पेटे थइने वाश्वा तोपण मांहे पेसता रह्या नही तेवारें चपेटेकरीने सर्वने हण्या एटले एक तमाचो आकरो मारेथके सर्व सुनट मुखयी लोही वमता नमरी खाइने जाणीयें चक्र नमतुं होय अथवा जाणीयें मदिरा पीधी होय तेम लडथ डता धरतीयें अथडा६ मूर्जाखाइ पड्या जाएो मूवा पडेला होय तेवा थया.

ए व्यतिकर सांजली राजाने घणों कोप चड्यों तेथी संग्राम करवानी तेयारी करवा लाग्यों एवामां प्रधान आवीने कहेतों हवों के हे राजन ! जतावलां थहने कोई कार्य करवुं नहीं. जे करवुं ते विचारीने करवुं जेथी पढ़ी उरतों न थाय तमोतों माह्या ढों तेथी तमारे आटलुं विचारवानुं ढें के जे पन्नरिवसना बालकमां एवडुं पराक्रम ढें ए वात केवी अगम्य ढें एटला माटे हुं एकवार ते बालकनी पासें जई सम्यक्प्रकारें तेनुं खरूप जो इ आवुं तिहां सुधी तमें संग्रामनी वात करशों नहीं यतः ॥ अपरिविय कय कर्जं, सिदापि न सज्जणा पसंसंति ॥ सुपरिकियं पुणोविह, कियंपि न जणेई वयणिक्षं ॥ १ ॥ जावार्थः – परीक्षाविना जे कार्य कर्धुं ते का

र्यं जो सिद्धिपाम्युं तोपण सज्जन पुरुष तेनी प्रशंसा करे नही. अने सुपरी क्तित कार्य जो बगड्युं होय तोपण तेविषे लोकमां निंदा नं थाय ॥ १ ॥

पढ़ी राजानी आजायकी शेंठने घेर ते प्रधान आव्यो राजाना सुजटों ने पड़ेला देखीने विशेष शंकाकुलपणे शेंठ अने शेंठनी स्वीयें बोलाववा पूर्व क घरमांदे तेड्यों ते आवी पारणामांदे रत्नजड़ित दड़ों उलालता एवा बालकनी पासें बेसीने स्नेद सिहत कोमलामंत्रणे करीने तेने बोलावतो हवों हे कुमारेंड़! राजाना मनुंष्यनी उपर इनिवार कोध करवों ते तमारे युक्त नहीं. केसरीसिंहनी पेठें तहारी अचिंत्य शक्त छे. तो आश्वाल स रखा सेवको उपर शो पराक्रम करवों. यतः ॥ सिंदः करोति विक्रम, मिलकु फंकारजूषिते करिणि ॥ न पुनर्नखमुखिलिषित, जूतलकुह्रस्थिते नकुले ॥ जमरकुलना फंकारथी शोजायमान एवा हाथिउपर सिंह पराक्रम करेंचे प रंतु नोरथी अने मोहोढाथी खणेली जूमिनी बखोलमां रहेला नोलिया उपर पोतानो पराक्रम देखाडतों नथी.

एटला माटे हे कुमर! ए बीचारा रांकनी उपर क्रोध म करो जे आ वीने पगें लागे तेनी उपर क्रपा राखवी जोइयें एटलुं करवायीज सर्वने चमत्कार जेवुं लाग्युं माटे हवे एमना उपर करुणा करो. एवी प्रधाननी उत्तम वाणी सांजली लगारेक हसीने कुमर बोल्यो हे महामितना धणी! तुं सांजल्य अमारो कोप कांइ राजाना सुजटो उपर नथी ए कांइ अमारा अपराधी नथी अमारो अपराधी तो राजा हे माटे राजा संग्राम करवा महारी साथें आवे तेनी हुं वाट जोउं हुं केम ए राजा संग्राम करवा आ टलो विलंब करेहे, वली संग्राम कह्याविना राजानो कषाय केम उपशमे? माटे एकवार हुं संग्रामनुं कोतुक पण देखाडुं जे संग्राम आम याय हे, तेथी तुं उतावलो उतावलो जा अने वहेलो वहेलो राजाने मोकल्य.

एवां ते बालकनां चमत्कारिक वचन सांजलीने प्रधान मनोहर वाणी यें करी कुमरने समजावे हे के हे कुमार ! राजाने पण कोइक चित्तज्ञम य यो देखाय हे जेमाटे तेने तमारुं धन खेवानो अजिलाप ययो जेम कोइक स्त्रीलुब्ध पुरुष होय ते महासतीना चित्तनो आशय लइ न शके जेम ते स तीना चित्तनो आशय खेवो इष्कर हे तेम तमारुं धनखेवुं इष्कर हे ते वात में हवे जाणी तमारुं खरूप पण जाण्युं तमे बालकरूप पण पूजनीय हो

माटे राजाने पण हुं हवे अनुयह करीने तमारा सेवकनी पेतें तमारी पासे लावुं बूं, जेम यहनी शांति करीयें तेम तमारा कषायनी शांति राजाने क रवी जोइयें. एवी प्रधानना मुखनी वाणी सांजलीने कुमर बोख्यो हे प्रधा न ! तें रुडी वात कही पण राजाने कांइक चमत्कार देखाडवो जोइयें ते विना राजा माने नहीं, महारुंपण बहुमान न करे हजीलगण जेम तुं म हारे मंदिर वालीने आव्यो तेम मने संतोषवामाटे राजा आव्यो नही एट लामाटे लोनाक्रांत राजायें अमारी साथें एटलुं कख़ं तो अमेंपण कांइक प्रतिक्रिया करवा इिच्चें वैयें. यतः॥ पादाहतं यहत्थाय, मूर्दानमधिरोहति॥ स्वस्थादेवायमानेपि, देहिनस्तघ्रं रजः ॥१॥ माणसना पर्गेकरी हणायेली रज थोडा अपमानथी पण माणसने माथें चढेंबे तो ते रज पण स्वस्थ माणस करतां श्रेष्ट हे जे जड हतां पए करेला अपमाननो बदलो वाले हे. वली पए कद्यं हे के:-विषदोऽनिनवंत्यविक्रमं, रह्यत्यापड्रपेतमायति ॥ नियता लघुता निरायते, रगरीयात्र पदं नृपश्चियः ॥१॥ पराक्रम वगरना पुरुषने आपत्तिर्जे प राजव करें अने ते आपितवाला पुरुषने आगलों काल ढांकी लें बेली जेणे उत्तरकालनी कांइपण विचारणा नथी करी तेने निश्चे लघुता प्राप्त थायने अने जे लघुताने पाम्यो ते पन्नी राजलक्कीने पामवामाटे पात्र नथी.

एटला माटे जतावलो जङ्गे तुं राजाने महारं वचन कहे के हे राज न्! कुमरें एम कहेवराव्युं वे के तुं महारो महोटो खपराधी वो माटे जो तहारुं राज्य खापीश तो हुं मुकीश, नही तो सर्वथा तने मूकीश नही. जो राज्य नहीं खाप्य तो महारा हाथनी सुखडी चखाडीश एवां कुमरनां वचन सांजलीने प्रधान पण कुमरने पगे लागी त्यांथी जतावलो जङ्गे राजाने पगे लागीने कुमरनी कहेली सर्व वात तेणें राजानी खागल कही संजलावी. ते सांजली राजायें पण कुमरनुं वचन मान्युं जीव्यानो जपाय बीजो कोइ न दीवो तेवारें प्रधाननी बुद्धियकी जेम प्रधानें कह्यं तेम राजा करतो हवो. यतः ॥ सिकंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं। हितान्न यः संश्रुणुते सिकंप्रचुः ॥ सदाऽनुकूलेषु च कुर्वते रितं। नृपेष्वमात्येषु च सर्वसंपदः॥१॥ जावार्थः—जे प्रधान राजाने हितशिक्षा करतो नथी ते प्रधान कुत्सित वे खने जे राजा ते शिक्ताने हितहरूप जाणीने सांजलतो नथी ते स्वामी पण इष्ट वे वली जो राजा अने प्रधान सदा अनुकूल होय तो तेने रूर्व समृ दिन प्रीतियुक्त थइ प्राप्त थाय वे ॥१॥

एवं विचारी प्रधानसहित ते राजा कुमारपासें आवीने कुमारने देवता नी पेतें जाणीने ते कुमरने पगे लागी कुमरनुं कथैन अंगीकार करी, ससं च्रमथको अमृतवाणियेंकरी बोलतो हवो के हे कुमारराज! आ महारुं राज्य तमारे स्वाधीन हे जेवुं तमारुं चित्त होय तेम तमे अंगीकार करो अने महारी उपर करुणा तथा संतोष करो वली अमारा उपर रूपा करीने मारुं खरूप प्रगट करीने कहो आ तमारुं अड्डत खरूप देखीने अमने घणा विस्मयनी वृद्धि थाय हे. एवी राजानी विनित सांत्रली अने वार्तानो आ शय जाणी राजाप्रत्यें कुमार कहेतो हवो; हे राजन! हमणां तो महारे तहारा राज्यनुं कांइ काम नथी हुं बालक हुं तेथी राज्यनारना चिंतारूप समुइमां कोण पड़े. माटे महारुं कार्य तुंज कख महारे स्थानकें तुंज रा ज्य कथा. अने महारुं स्वरूप तो थोडाकालमां केवली नगवान इहां आव शे ते कहेशे माटे वुं हृदयनेविषे हर्ष धस्त अने शीघ्र तहारे स्थानकें जा अने में पण तहारा सेवकने जे इःखिया कच्चा हे तेने शीघ सुखिया करुं बुं अने तुं पण आ महारा राज्यनी संपदा हे ते केटलाएक दिवस जोग व्य, अवसरें जेम घटशे तेम करी छुं. एवं कुमरनुं बोलवं सांजली कुमार नी पासेथी राजा तथा प्रधान अने ज्ञोतना घरना आंगणाथी राजाना सेवक ए सर्व साथेंज उठता हवा सहु को इहर्षसहित पोतपोताने स्थानकें आव्या.

हवे तेहज नगरमां राजाने मानवा योग्य एवो कोई धनशेव वसे वे तेनी धन्या एवे नामे जायी वे तेने पण सात प्रत्रियो थई वे तेनी उपर घणी मानतां करता एक प्रत्र अवतस्थों; तेवारें पिता महोटा हर्षेंकरी तथा अति आंमंबरें करी प्रत्रनो जन्ममहोत्सव करवाने तत्पर थयो. तेवामां इर्देवना योगथी ते पुत्र पिताप्रत्यें कहेवा लाग्यो के रे रे महारो आ शो जन्ममहोत्सव तमे करवा मांम्यो वे? फोकट विधातायें मुजने नीपजाव्यो वे महारुं सक्रप विपरीत नीपजाव्यों वे, घणाकालना तमारा संचेला धननो संहार करवाने अर्थें हुं प्रगट थयो वुं. माटे हवे जूवो महारुं कर्तव्य कहेबुं वे एम कहेतांज ते शेवना घरमांथी महाविकराल एवो अग्न प्रगट थयो तेणेंकरीने घरमांहेली सारसार वस्तु सर्व बलीगइ. माल मता सर्व बली

राख थयुं, घर बली गयुं त्यारें ते श्रिव्र जिलवा माटे जेट में मातिषता सक थया एट में बाल केंज जि मंत्रवादीनी पेरे पाणी ढांटीने श्रिव्र शीव्रपणे जिलवी नाख्यो पोतानो चमत्कार देखाड्यो एवं ते बाल करें लहूप जाणी ने माता पितादिक नयन्नांत थयां त्यारे तेने ते बाल करें वा लाग्यों के महारं खहूप दी तुं? हुं महादेवनी पेतें सर्व सृष्टि श्रमे संहार करवा समर्थ हुं, हुं जगतमां विषमों हुं माटे महारी जपर कोई मोह राखशों नहीं मो ह ढांमीने जेम हुं कहुं तेम तमे करो. तमे महारा जन्ममहोत्सवनी वात करी तथी मुजने कोप चड्यों तेनुं तमने कांइक फल देखाड्युं. यतः ॥ श्र वंध्यकोपस्य निहंतुरापदां ॥ नवंति वद्याः ख्यमेव देहिनः ॥ श्रमषेशून्येन जनस्य जंतुना ॥ नाजातहार्देन च विद्विषां दरः॥ । सफल कोधवाला श्रमे माणसोनी श्रापनिने हणनार एवा पुरुषने सर्वलोको वश थाय हे श्रने कोध वगरना तथा माणसोपर प्रीति वगरना पुरुषथी शत्रु चेने नय थतो नथी.

माटे आज पढ़ी महारें निमित्तें महोत्सव, मोह, हर्ष, जिल, प्रशंसादिक कांइ पण करशो मां, जो थोड़ो पण मोह करशो तो हुं तत्काल फल देखाड़ी श. कोइ दासी प्रमुख पासें मने धवरावजो जेथी महारो निर्वाह थाय तथा जेएोंकरी हुं जीवुं उपरांत कांइ करशोमां जो श्रधिक करशो तो हुं तत्का ल फल देखाड़ीश, जेम राजानी आज्ञानो जंग कखाथी फल पामीयें तेम त में फल पामशो. एवं बालकनुं वचन सांजलीने मातापितादिक सर्व चमत्कार पाम्यां थकां तेमज प्रवर्त्तवा लाग्यां पण पुत्र उपर अधिक स्नेह न राखे.

एकदा पाडोसण पोताना पुत्रने नवनवा आलापें रमाडती हती तेने देखीने कुमरनी माताने पण मन थयुं तेथी सांजने समयें ते बालकने पारणामांथी बाहेर रमाडवाने अर्थें पोताना खोलामां लीधो तेटले ते बालक राक्स सरखो रोइह्रप थइने घरमांहेथकी बाहेर निकल्यो, रोइमुइा ध रतो जाणीयें कोई कोपनो समुइज होयनी ? तेम मातादिकने कहेवा ला ग्यो के जूड महारी आङ्का जंग करी तेनां फल देखांडुं छुं एम कहेतो थ को रीसाइने घरमांथी निकली गयो एटले पाठलथी ते बालकने मनाववा ने अर्थें पित्रादिक सर्व दोडी पोहोता केटलिएक जूमिका सुधी अत्यंत ज यज्ञांत थकां जाणे अपराध खमावीने घरमां लावीयें एवामां तो ते बाल क जूत प्रेतनी पेठें क्यांय अहस्य थइ गयो नजरें जोतां जोतांमांहे क्यांय

जतो रह्यो. हवे ग्रुं थरो एवो विचार मावित्र करे ने एवामां श्रंथकार थयो तेवारें पित्रादिक सर्व पाना घरमां श्राववा लाग्या तेटलामां सन्न ६व६ थर हाथमां उघाडां शस्त्र लइ मारमार करतांधाड श्रावी ते घरमां पेसीने सुवर्ण रुंपुं हीरा जवेर माणिक मोती इत्यादिक सर्व जैनम वस्तुना गांग्डा बांधीने लङ्गया. पन्नी पित्रादिक सर्व श्रून्यचित्त थका घरमांहे ग्रुं रह्यं ग्रुं ते सर्व जोवाने श्र्यें घरमां पेना एटले ते थरमां तेणे पारणानेविषे ते बा लकने पण इस्तो थको दीनो ते देखी पित्रादिक सर्व हाथ जोडी पगें ला गीने कुमरने रुचे तेवा वचनेंकरीने पोतानो श्रपराध खमावता हवा.

हवे तेवात नगरमां विस्तरी ते चित्तने आश्चर्य करनारी वात राजानी सनामां पण थइ. तेवारें धनशेवने तेडावीने राजा सर्ववात पूछवा लाग्यो धनशेवें पण यथास्थित वृत्तांत सर्व कह्यो. ते सांनली राजायें कौतुकथकी शेवने कह्यं के तुं जइ कुमरने कहे के तुजने राजायें तेडाव्यो वे एवी राजानी वाणी सांनलीने शेवें घेरजइ राजानो आदेश कुमरने कह्यो.

कुमर पोताना पिताना मुखयी राजानो आदेश सांजलीने जीषण जृ कुटी चडावीने पिताने कहेवा लाग्यो के ग्रं मुजने राजा तेडावे हे. शा प्र योजने राजा तेडावे हे? एम बडबडतो उठीने चात्यो ते मार्गमां घणा लो कने विस्मय पमाडतो राजसनामां आव्यो. राजाने सलाम पण करी न ही तोपण राजा असमर्थ थको घणी मीठाश राखतो थको बहुमान वाला वचनेंकरी कुमरने बोलावतो हवो के हे कुमरेंड! तुजने कुशल हे? एवं जे टक्षे राजाये पुह्युं तेटके ते बालक अतिशय कोप करी दैत्यसरखुं बिहा मणुं रूप करीने बोलतो हवो के हे राजन्! तुं मुजने इंड्सरखुं बहुमान करीने जे बोलावे हे ते ग्रं तुं मुजने नथी उलखतो? तुं महारुं पराकम न यी जाणतो? जेम थोडीज वारमां शेहनुं घर बालीने जस्म कखुं तेम त हारुं पण घर बालीने जस्म करीश. एम कहेतांज राजाना घरमां अग्नि लाग्यो जाणीयें धूमकेतुं प्रगट थयो के ग्रं! ते जोइ कुमरप्रत्ये राजा कहे वा लाग्यो के हुं नूत्यो हवे तुं प्रसन्न था एवां राजानां वचन सांजलीने ते बालक उपशांत थयो. कोधरूप अग्निनी साथे राजचवनमां लागेलो अग्नि पण शांत थयो एटके ते कुमर बोल्यो हे राजन्! जूउ प्रेतकुमारनो कोप!! हुं कां इप्रज्ञाकर होतना पुत्र देवकुमारनी सरखो नथी. एम कुमर बोब्यो ते वारे जोक सर्व नयच्चांत थयेजा हता ते सर्व प्रमुदित थया.

हवे ते कुमर सनाना लोकने कहेतो हवो के महारुं नाम प्रेतकुमार कहेजो महारी निंदा घणी करजो तेथी हुं रीज पामीश पण कोइ महारी स्तुति करशो नहीं एवी वाणी सांनली राजा पूछवा लाग्यों के हे कुमर! तहारुं खरूप श्रति विस्मयकारी, श्रतिनयंकर, त्रणजगतना श्रहंकारने टा लनार, त्रणजगतने नय उपजावनार एवं विकट केम हे ते कहे ? तेवारें कुमर बोख्यों हे राजन्! इहां केवली नगवान श्रावशे ते देवकुमारनुं खरूप कहेशे तेवारें प्रेतकुमारनुं खरूप पण कहेशे. मुजने पूछ्यानुं तहारे शुं प्रयो जन हे. हे राजन्! उनमपुरुष होय ते पोताना ग्रणनुंवर्णन न करे, यतः॥न खयं ख्यापितगुणे, गुणवानिति कथ्यते ॥ स्वयं संवाहितानां हि, गात्राणां निर्हितः कुतः ॥ नावार्थः—पोताना मुखें वखाणेला ग्रणेंकरीने पोते ग्रणवान कहेवातो नथी. कारण के पोतें दाबवाथी श्रंगनो परिश्रम क्यांथी जाय.

एटलामां केवली जगवान् आव्यानी वधामणी वनपालकें आवी दीधी ते सांजली राजा तथा प्रकाकरशेठ धनशेठ प्रमुख सर्व नगरना लोक आवी केवली जगवानने वांदी धमेदेशना सांजलीने बेहु कुमरनुं सक्ष्प पूठ ता हवा. केवली जगवान पण ते कुमरोना पाठला जव कहेता हवा. हे राजन ! पूर्वकृत कमेविपाकथी छुं न नीपजे. यतः ॥ यन्मनोर्थशतेरगोच रो, यत् स्पृशंति न गिरः कवेरि ॥ स्वप्नतृत्तिरि यत्र इर्जना हेल्येव विद्धाति तिहिधः ॥ जावार्थः जे सेंकडो मनोरथथी अगोचर हे जेने मोटा किव नी वाणी पण स्पर्श करी शकती नथी वली जे वस्तुनेविषे स्वप्नानी तृत्ति पण पहोचवी मुशकील हे अर्थात् जे बाबत स्वप्ने पण बनवी इर्जन हे तेवी वस्तुने विधाता हेलामात्रमां निपजावे हे हवे तेना पाढला जव सांजलो.

हिस्तिनागपुर नगरनेविषे कोइक वृद्ध श्राविकाना बे दीकरा एक सुम ति अने बीजो कुमित एवे नामे हता. तेनां जेवां नाम वे तेवा परिणाम पण वे ते बेहुजणा व्यापारेंकरी व्ययचित्त थका अने वली प्रमादी थका तेवे परिणामेंकरीने तेवो धर्म करी शकता नथी कांइक धर्मकार्यनेविषे सुमितिने रुचि वे अने जेम ज्वरें पीडित जीवने घृतनेविषे रुचि न होय तेम कुमितने धर्म कार्यनेविषे रुचि नथी हवे स्थविरा मोसी मध्यस्थ नावें करीने धर्म आराधननेविषे तृष्णावंत हे ते यथाशक्तियें धर्मनुं आराधन करे. त्रिकाल परमेश्वरनी पूजा आदि देइने धर्मनां कार्य करें वली महोटा इ पणानी अर्थी हे तेथी हहपणाने लीधे जोपण यथार्थविधि सचवाय नहीं तोपण पोसह मूके नहीं जेवारें पर्वनो दिवस आवे तेवारें पोतें अये सरी थइने घणी स्त्रियोने एकही क्रीने तेनी संघाते पोसह करे. पण विक यादि प्रमादेंकरीने पोसहनी विराधना करें: एम घणा प्रमादेंकरीने धर्म मेलो थयो प्रमाद ते धर्म मलीन थवानुं कारण हे माटे धिःकार हे प्रमादने.

हवे पोषधादिकनेविषे माह्यो एवो सुमित माताने पोषध करवानी आ इत आपे वली सहाय पण करे तेनी अनुमोदना करे. चित्तमांहे हषेधरे, सर्व प्रकारें श्रद्धा राखे,तेम तेम माताने अत्यंत उत्साह वधे तेवारें माता पण हषे सहित पोषध करे तेने सुमित शीखामण आपे, प्रशंसा करे सुपु त्रनी ए रीत हे जे मातापिताने प्रशंसा करी धर्मनेविषे जोडवां.

अने कुमित तो माताने कहे के हे मात! आ वृद्धावस्थायें पोसह करवो ते इच्कर वे तेमांटे ए करवाथी ग्रुं? पोपध तो समर्थपणुं होय तोज करवो. वली निश्चिंत होय ते पोसह करे, तहाराथी तो विधि पण सचवा तो नथी, माटे पोषध मूकीने पुत्रनी प्रतिपालना कख, पोषध करवाथी पो तें नूखें मरे वे, अने बोकरांडेने पण नूखें मारे वे? एमां ते तुं शो धमें करे वे? पोतानुं घर मूकी ज्यां त्यां फरती फरे वे. फोकट कायक्केश शो करवो! गढपण थयुं माटे घेर बेंगां पुत्रादिकनी साचवणी कख. एवां कु मितनां वचन सांजलीने पण ते पोषधने न मूकती हवी. चित्तमां विचारवा लागी के हुं वहेरी बुं माटे जो हुं मूकीश तो सर्व स्त्रियो मूकी देशे. तेम बतां बीजी मूके तो जर्डो मूको पण महारे तो मूकवो नथी.

ह्वे ते मोतीने सुमितनी उपर हृद्ध राग थयो अने कुमितनी उपर हृद्ध हिष थयो सुमित उपर साधकतानो बंध थयो अने कुमित उपर बाध कतानो बंध थयो. एम ते मोतीयें पोषध तो कह्या पण महस्वपणुं वां उती तेथी तेणे विधिपूर्वक न कह्या. तेमाटे पोसह विराधवाथी व्यंतरी द्या बांधी मरीने आ उद्यानमां व्यंतरी थइ, जो अतिचाररहित पोसह कह्यो हत तो वैमानिक देवोनुं आयु बांधत.

तथा सुमित मरण पामीने प्रज्ञाकर शेवनो पुत्र थयो अने कुमित म रीने धनशेवनों दीकरो थयो. बेहु जाइ श्रावकनुं कुल पाम्या.

हवे ते व्यंतरीने प्रकृकर होतना प्रत्रनी उपर पातना नवनो कोइ हढ प्रीतिराग बंधाणो तेणेंकरीने जन्म मात्रची तेना शरीरनेविषे अधिष्ठी र ही ते अर्दिरात्रियें ते बोकरानां मात पिताने निधान अपाव्युं पढी राजाने पण नमाव्यो इत्यादिक चमत्कार अतिशयरागने लीधे देखाड्या.

तया ते व्यंतरी धनशेवना दीकरानी उपर अतिशय हेप धरती यकी तेना शरीरनेविपे अधिष्ठीने विटंवना पमाडे हे अनर्थ करे हे विपत्तिमां नाखे हे तेणेकरीने धनशेवना सघला धननो क्ष्य कखो अने हर्जी पण घणी कद्येना पमाडगे. अने प्रज्ञाकर शेवना दीकरा उपर हेत राखी तेने घणी संपदा आपशे माटे हे राजन! सुमितयें पोपधनी सांनिध्य करी तेथी सुखदायी यइ अने कुमितयें निंदा करी तो तेने इःखदायी यइ, माटे धमे ना सांनिध्यनुं महोटुं अन फल हे अने धमेनी निंदा करवानुं महोटुं अध न फल हे. एम ए व्यंतरी बार वर्ष पर्यंत एकने प्रीतिनुं फल सुख अने एकने अप्रीतिनुं फल इःख देखाडगे. एवी केवलीनी वाणी सांनली राजा दि सर्व प्रतिवोध पामी एकायचिनें धमेनुं सांनिध्य करवाने रुचिवत थया.

हवे प्रक्षाकर शेव अने धनशेवने गुरु पावला नव कहे हे. पावलें नवें
तमे धर्मदास अने धर्मदत्त एवं नामे वे नाइ जिनधर्मी हता ते वेहु नाइ
परण्या पही स्वियोनी प्रेरणाधी धनने अयें मांहोमांहे विवाद करता हवा.
यतः ॥ आक्तीरधारेक छुजां मातृगर्नि निवासिनां ॥ नमोऽर्थाय प्रयक्त्वं यद् जा
तृणामिष कुर्वते ॥१॥ एकमाना गर्नने विषे रहेला अने जेणे स्तनपान नेलां
करेलां हे एवां नाइनेने पण जुदाकरनार एवा धनने नमस्कार हे. क
यंचिच्च विनकोर्थों, जातों तो सर्वथा प्रयक् ॥ कलहे सित निर्वाहो, महतामिष
नान्यथा ॥ मांम मांम धन वेच्युं अने सर्व प्रकारें जुदा थया तो पण जो
कलह थतो होय तो मोहोटा पुरुषोने पण निर्वाह करवो कठण थइ पड़े हे
माटेज जुदा थया विना कलह बीजे प्रकारे मटतो नथी. नित्य क्षेश होय
तिहां नेलां रहेतां निर्वाह न थाय माटे वेडु नाइ छुदा रह्या तोय पण
हानुं धन दाटेलुं हतुं तेनी वेडुना मनमां शंका रहे एटले महोटो नाइ ए
म जाणे जे रखे न्हानो नाइ धन काढी जाय अने न्हानो नाइ एम जा

पो जे रखे महोटो नाइ धन काढी जाय; एम एकेकनी उपर हेप धरता रहे मांहोमांहे कोइनो विश्वास न करे एम करतां महोटा नाइने घेर सी मंत महोत्सव आत्र्यो ते देखीने न्हानो नाइ तथा न्हाना नाइनी वहु वेहु जए मली हेपयी चिंतववां लागां जे एने पुत्री याय तो सारुं याय, परंतु हेपीतुं चिंतव्युं कांइ याय नहीं तेथी महोटा नाइने तो कोइक पुष्यना यो गयी अतिसुंदर पुत्र ययो तेनो जन्मोत्सव घणी रूडीरीतें कस्यो एम महोटा नाइने सात वालक थयां तेमां ते स्वीपुरुषे पूर्वोक्त दीकरी आववा नीज चिंतवना करी तेथी अग्रुनकर्म बांध्युं. हवे आवमा गर्ननेविषे ते स्वी नरतार हेपसहित एम चिंतववा लाग्यां के एने कुलक्षणो पुत्र याय तो सारुं के जेथकी जेम वायराथी मेघ नाश पामे तेम एनं धन सर्व नाश पामे.

हवे न्हाना नाइनी नार्याना गर्ननेविषे पण महोटो नाइ तथा महो टा नाइनी स्त्री मली वेहु जए एम चिंतवतां हवां के एने लक्क्एरहित धन नी हानि करनारा पुत्र याय तो सारुं तो पण ते न्हाना नाइना ग्रुनने उद्यें करीने सर्व पुत्र सुजात उपन्या फोकट ते तृद्धनाइ श्राकरां कर्मनुं उपार्क्कन करतो हवो. माटे धिक्कार पडो घेपने, हवे श्रातमे गर्ने तो ते गर्ननी विचि त्रता थकी महोटो नाइ स्त्रीसहित घणा इध्योननो पश्रानाप करतो थ को एम विचारवा लाग्यो के श्रापणे वेहु ज्यों मातुं चिंतव्युं ते ठीक न की धुं माटे हवे नला लक्कणवालो चनम गुणें सहित एवो एने पुत्र थाई.

हवे ते वेहु नाइ श्रावकनो धर्म पालीने देवलोकें गया तिहांथी चवीने तमे बेहु व्यवहारिया थया, जेवां पूर्वें कर्म बांध्यां तेवां श्रा नवनेविषे ग्रु नाग्रुन उदय श्राव्या. एटला माटे जो परने ग्रुन चिंतवीयें तो पोताने पण ग्रुननो बंध पडे श्राने श्रुम चिंतवीयें तो पोताने श्रुमनो बंध पडे माटे कोइनी उपर माठी चिंतवणा स्वप्नमांहे पण करवी नही. हे श्रात्मा ना हितवां क नव्यजनो ! इःखनुंज श्रागार एवो जे मत्सर तेने तमे बां मो, जेमाटे इर्क्तनपणुं जो बे ते त्रण जगतने इःखदायी बे श्राने सक्जनपणुं जे बे ते त्रण जगतने सुखदायक बे, सक्जनपणां श्राश्रयी मैंत्र्यादिक ना वनानुं स्वरूप चोथा पोडशकमध्ये कह्यं बे ॥ यतः ॥ परहितचिंता मैत्री, परइःखिनाशिनी तथा करुणा ॥ परसुखनुष्टिमुदिता, परदोषोपेक्रण मुपेक्ता ॥ नावार्थः—पारका हितनी चिंता राखवी ते मेत्री नावना, तथा

पारका इःखनो नाश करे ते करुणा नावना, पारका सुखमां संतोष ते मु दिता नावना, अने पारका दोषने उवेखे ते उपेक्षा नावना जाणवी.

एवं। केवली नगवानुना मुखनी वाणी सांनली एकेकनी उपर मत्सर ग्रांमी सहु पोतपोताने घर गया; नगवान पण तिहांथी विहार करता ह्वा. देवकुमार तया प्रेतकुमार बेहु उज्वलपक् अने रुष्णपक्त सरखा अनुक्रमें वधता ह्वा. सुरूप अने क्रूरूप, सारुं नोजन ने हीणुं नोजन, सारों वेष अने वस्त्रहीन वेप, उत्सव अने अनुत्सव, एम बेहुनेविषे मातापितादि कने ह्षे शोक विषादादिकने उत्रुष्टुं कारण प्राप्त करता कांड्क मातेरा बा रवर्षना थया. तेवारें ते देवकुमार व्यंतरीना आदेशथकी राजानी पासेंथी राज्य मागतो ह्वो राजायें पण पूर्वें आपवुं कबुल कखुं हे तेनो विचार करी पोतानी कन्या देवकुमारने परणावी तेने राज्य आपी पोतें महोटा महोत्सवथी चारित्र लइ तपस्या करी शुद्ध अध्यवसायें चारित्र पाली केव लङ्गान पामी घणा नव्यजीवोने प्रतिबोधी मोक्ते पहोतो.

हवे देवकुमारनी राज्यक्रिनो आमंबर देखीने प्रेतकुमारनां मातापि तादिक पण पोताना पुत्रना पाणियहणनो महोत्सव अतिआमंबरें करवानों जेवामां विचार करे हे तेवामां प्रेतकुमार ते वात जाणी पोतें प्रेत सरखों यह घरनो मूलस्तंन उखेडी हाथमां उपाडीने मातापितादिकने मारवा दोड्यों ते जोइ मातापितादिक सर्व कुटुंब पोतानो जीव लइ नाशि गयां. तेवारें प्रेतकुमारें घर शून्य देखीने ते स्तंचें ते घरने कूटी पाडीने सुवर्ण रूपादिक सारसार वस्तुयें चरेलुं हतुं ते बालीने राख कखुं माटे अतिशय आकरों एवो देवतानों कोप हे ते इःखें सही शकाय.

एम बारवर्षसुधी पाढला नवना दीकराने रागद्वेषें करीने ते व्यंतरीयें एकने राज्य आप्युं अने एकना इव्यनो विनाश करी तोष रोषनुं अतिश्चा करुं फल देखाडी आत्माने कतार्थपणुं मानती पोताने स्थानकें जती रही.

हवे समुइनी वेलयकी मूकाणों जे नदीनों प्रवाह ते जेवो पोताना मूल लगा खरूपनी अवस्थायें रहे एवो धनशेवनों दीकरों पण पोताना मूल गा खरूपनी अवस्थायें रह्यों माता पितादिकें पण जाण्युं जे अतिङ्ख्यां त अवस्थानों हेतु आ पुत्र आपणने अनिष्ट थयों हे.

एएो पाढले नवें माताने धर्मनो अंतराय कखो तेऐंकरी इः खियो थयो

दैवयोगें उत्तम कुल तो पाम्यो पण कांइ सुख नोगवी शक्यो नही तेम ए नां मातापितायें पण पाउ के नवें हीनदीकरो पामवानुं कमें बांध्युं ते थकी हीन पाम्यां तें कुपुत्रना योगथी महाइःखी थयां, जेम कपोतप्रहीने बा लकें सेवेली जे उद्धनी शाखा ते शाखा स्काइ जाय पण नवपल्लव न याय तेम धनशेवना कुलमां जेवारे ए पुत्र थयो तेवारे धननो नाश थयो. हवे देवकुमार राजाने पण व्यंतरीयें मूक्यो थको जेम वादलथी निकल्यो एवो सूर्य पोताना तेजें करी शोने तेम ते देवकुमार राजा शोजतो हवो.

अन्यदा ते नगरना उद्याननेविषे केवली नगवान् समोसखा जाणीने देवकुमार राजा परिवार सिहत तथा प्रेतकुमार पोतानां माता पितादि सिहत वांदवा आव्या अने ते व्यंतरी पण उद्यानमांहेथी केवलीने वांदवा आवी ते सर्व वांदीने यथोचित स्थानकें बेवां केवली नगवानें पण धर्म देशना प्रारंजी के अहो जव्यप्राणीउ! करेलां कर्म तेज सुख इःखतुं एक कारण वे तेमाटे क्लमात्र पण धर्मोद्यम विना गमावशो मां, सर्व मनोवां वित सुखनो आपनार ते एक धर्मज वे. केमके जरा अवस्था खं व्युवेद पामी वे? रोगद्यं नाशी गया. मरण पण गयुं के द्यं. नरकतुं बारणुं ढांक्यं खं? के जेणेंकरी तमे धर्मनेविषे वांवा नथी करता? हे जीव! तुं सूश मरहे जागतो रहे. जेमाटे रोग जरा अने मरण ए त्रण जणां तहारी पावल लागां वे तेनाथी तुं नासतो थको केम विश्वास करी रह्यो वो?

माटे जो यतिधर्ममां उद्यम करवानुं सामर्थ्य न होय तो श्रावकधर्मने विषे प्रमाद ढांमीने जलीपेरें यह्न करवो, विशेषेंकरी धर्ममांहे परम सारजूत एवं पोषधवत ढे तेनुं सांनिध्य करवुं तेनी अनुमोदना करवी कह्यं ढे के पोतें करे, बीजा पासे करावे, संतोषयुक्तिचेंकरी अनुमोदना करे श्रने सहाय करे ए सर्वने तत्त्वनां जाए सरखां फल कहे ढे.

सहाय कह्याना तथा अनुमोदना कह्याना तथा साहाय्य न कह्यानां अने निंदा कह्यानां पोष्धनां फल देवकुमार अने प्रेतकुमारनी पेरें तमे प्रत्यक्षपणे दीनां. एवी देशना सांजलीने देवकुमार प्रतिबोध पाम्यो पूर्वक त धमेसांनिध्यना वशयकी तेने शुद्धश्रद्धा उपनी तेवारे समकेत सहित देवकुमारराजा अगीआरमा पोषध व्रतनो अंगीकार करतो हवो.

हवे पोताना पुत्रने प्रसादें मनुष्यनेविषे पण सर्वार्थनी सिद्धिने मान

ता एवा प्रक्षाकरशेव आदिक नग पर्वनेविषे निरंतर परिपूर्ण पोषधतुं आराधन करता थका आत्माने धन्य मानता हवा.

वली धन्यशेव अने तेनी स्त्री ते तो महर्दिक वतां प्रत्रना योगधकी दारिइपणानां इःख पाम्यां धकां इःखगर्नितवेराग्यधकीज दीक् लक्षेत्र अ वक्तमें मोक्तनगरना राज्यने नजनारां धयां,एम घणा जीव धर्मनां सहाया दिक कर्नव्यनेविषे उजमाल धक्ते धर्ममांहे पण पोषधना सांनिध्यनेविषे यक करता हवा. व्यंतरी पण रुडीरीते समकेत पामीने सम्यक्दिए जी वोने धर्ममां सांनिध्य करवानेविषे सावधान धक्.

हवे धन्यशेवनो दीकरो प्रेतकुमार तो तथाविध अर्थात् तेवा प्रकारना इःस्वेंकरी दग्ध थयो थको पाढले नवें धर्मनो अंतराय करवाने लीधे जो के हमणा तेने रूडीरीतें धर्मनी प्रेरणा करी तो पण पोतें पोपधादिक धर्म करवाने सर्वथा प्रकारें उजमाल न थतो हवो. राजादिकें घणो समजा वीने धर्मनो उत्साह वधारवा मांमधो तो पण जेम उंटने इाख रुचे नही तेम लगार मात्र धर्मनेविपे रुचि थइ नही. साहामो पोपधादिकनिविणे हेप वहन करे अहो आवकना कुलनेविपे अवतरी तेवी सामग्री प्राप्त थइ तो पण तेने धर्म आराधवो इष्कर थयो. जेम वर्षाकालें अथवा वसंतनेविषे सर्व वनराजि नवपल्लव थाय पण केरडामां पान न थाय तेम इहां जो पण घणा जीव धर्म आराधक थया तो पण प्रेतकुमारने लगार मात्र पण धर्म प्राप्त न थयो ॥ यतः ॥ पने वसंतमासे, रिद्ध पावंति सयल वणराइ ॥ जे न करीरे पन्तं, तािकें दोसो वसंतस्स ॥ र ॥

पठी देवकुमार तेने बलात्कारें पोपध करावे एम जाणी प्रेतकुमारें विचाखुं के जो हुं इहां रहीश तो ए राजादिक मुजने बलात्कारें धर्म करावशे,माटे इ हांथी बीजे गाम जाउं तो सारुं एम चिंतवी राजाना जयथी ते नगर ठांमी बीजे नगरें जइ रह्यो एम सर्वप्रकारें मांगलिक कव्याणकारि सर्व वांठितसुख नो खापनार एवो धर्म तेहथी वेगलो थयो, जेम खर्विनीत शिष्य विद्यायी वेग लो थाय तेम वेगलो थयो पठी ते सर्व प्रकारें इःखी दारी इरिगमां हे मुख्य रोगादिके पीडित थइ लोकना पराजवादिक इःख जोगवी मरण पामी तिर्थ च थयो तिहांथी नरकें गयो एम घणा जव नरक तिर्यचना करशे अने घ

णो संसार रजलशे एवां कटुक फल जाणीने कोइने धर्मनेविषे अंतराय करशो नही. जूर्र धर्मने विव्वकरनारी वाणीनां फल !!

हवे देवकुमारराजा तो इंड्नीपेरे अवतस्वो वे के छुं ? पोषधने पहें दे वसें उद्घोषणा करावे के कालें पर्वदिवस वे माटे राजानी साथें सर्व सम्म तादिक आवी पोषध करजो एम घणाकाल घणा लोकोनी साथे पोषध व्रत आराधतो हवो एकदा ते देवकुमारराजा शत्रुना देशमध्ये खयजूंरमण समु इनी वेल सरखा पोताना सैन्यने लइ गयो तिहां वेरी राजा पण पोतानां सैन्य लइ सन्मुख लडवा आव्यो ते वखत दिवस अस्त थयो माटे प्रना तें युद्धनो वराव कस्वो पण प्रनातें तो अष्टमीपर्वनो दिवस आव्यो जाणी पोपधनो दिवस वे माटे युद्धनो समारंच याय नहीं तेथी देवकुमारराजायें साहामा राजाने कहेवराव्युं के प्रनातें अमे युद्ध नहीं करद्यं तेने वेरी राजायें कह्यं के अमारे तो युद्ध करवुं वे माटे तमे तेयार रहेजो.

ते राजानुं वचन सांजलीने मंत्री प्रमुख सर्वे मली देवकुमारराजाने घ णोए वास्त्रों तो पण राजायें तो पोपध लीधों ते वात वैरीराजायें सांज ली तेवारें ते घणोज खुशी थयो केम के देपीराजाने एवं इल क्यांथी म हो ? पढ़ी ते राजायें समुइना पूरनी पेवे चतुरंगिणी सेना जइ आवीने दे वकुमार राजाना सर्वसैन्यने वींटी लीधुं तेवारें सैन्यना सुनटादिक मंत्री प्र मुख सर्व मजीने देवकुमार राजानी पासे शीघ्रपणे आवी प्रणाम करी वैरी, राजानुं स्वरूप समजावता हवा के हे राजन ! युद्धनो हुकुम करो तो अमे वैरीराजा साथे संयाम करीयें अने तमें पण तैयार घाउं पढी अवसरें पोषध बेजो हमणां तो लडाइनो अवसर हे कफना रोगीने साकर आपवातुं बने नहीं माटे तैयार थार्र नहीं तो घणों अनर्थ थही एवी युक्तियें करी छ नवचनथी घणुं कशुं परंतु राजानुं मन लगारमात्र पण पोपधमांथी म ग्युं नही प्रोपधने मनेकरीने पण न विराधतो हवो. तेथी प्रधानादिकने सं ग्रामनी आज्ञा आपी नृहीं अने ते सचिवादिक प्रत्ये राजा कहेवा लाग्यो के हे मुग्धबुदिना धणीर्छ! एवो कोण मूर्व हे के जे इह लोकना किंचित् सु खने ऋर्षे परनवनेविषे सुखकारी एवा ए पोपधव्रतनी विराधना करे. मा टे महारे अर्थे कोइ खेशमात्र पण क्वेश करशो नही. पोताना आत्माना रक्षण निमित्तं जेम तमारी वेरीराजानें मलवादिकनी रुचि होय तेम करो.

पण हुं तो क्षेशमात्र क्षोन नहीं करुं ठलना करनाराने पण इःखनुं करनुं ते मनेंकरीने पण हुं नहीं अनुमोड़ं हमणां हुं साधुनी पेतें एकलो हुं आश रीर पण महारुं नथी तो वली खजन अने धनादिक ते महारां क्यांथी; ते माटे ते कोइ महारां नथीं अने हुं तेमनो नथी. यतः ॥ प्राणांतेऽपि न चं क्यां,गुरुसाक्ष्ये कृतं वर्त ॥ व्रतचंगोहि इःखाय,प्राणाजन्मनि जन्मनि ॥१॥ गुरुने साक्ष्मिणें करेलुं वत, प्राणनो अंत थाय तो पण ते चांगनुं नहि; कारण के व्रतचंगथी अनंत इःख प्राप्त थाय हे प्राण तो जन्म जन्मनेविषे मलशे परंतु उत्तमवत मलशे नहि माटे मारे व्रतचंग करवो नथी.

एवी राजानी निःसंगतावाली वाणी सांजलीने सचिवादिक सर्वे बुद्धियें करी जड थया. तेमने कांइ पण जपायनी सूज पडी नहि. तेवामां तो वै री राजानुं सैन्य पाणीना पूरनी पेतें सैन्यमां आवी पोहोतुं तेने कोइ रो कवा समर्थ थयुं नही तेवारे सर्व सैनिको धणी विनाना थइ पोतानो जी व लइने द्रोदिशायें नाशी गया. राजा पोताना मरणनो अंगीकार करी धैर्य धरी मानने संघारे सागारी अनशन करीनें रह्यो. एवामां वैरीना सुनट पण मार मार करता राजा पासें दोडता आव्या एटखे धर्मना मा हात्म्यथी शासनदेवतायें उपयोग देइने जोयुं तेवारें तिहां आवीने सर्व वैरीना सुनटोना हाथमां जेम उघाडां शस्त्र हतां तेवा शस्त्रसहित सर्वे ने स्तंनी मूक्या. सर्वेनां शरीर रोगेंकरी पीडीत थयां थकां जेम वज्रधर ना संपुटमांहें गोलीया मत्स्य पील्या थका जेवी वेदना जोगवे तेवी वेदना सर्व जोगवता ह्वा. तेथी तेर्र महावेदनायेंकरी सर्व आकंद करवा लाग्या. श्रहो श्रहो तत्काल पुष्यपापनां फल श्रा नवमांज उदय श्राव्यां. ते देखी ने देवकुमारराजा एम चिंतववा लाग्यो के खरे खकस्मात् खा सुनटोने हुं थयुं ? राजाने ते सुनटोनी उपर अतिशय करुणा आवी अने चिंतववा लाग्यो के ए बापडा इःखथी हूटे तो सारुं ए सर्व शासनदेवतायें धर्मनुं सान्निध्य कखुं देखाय हे तो है देव! महारे निमित्तें परने इःख थाय एवा धर्मना सांत्रिध्यथी महारे सखुं, मने सांनिध्यनो विस्तार म करो एवं.रा जानुं पापनीरुपणुं देखीने शासनदेवी पोताना चित्तनेविषे चमत्कार पा मी थकी वैरीराजा तथा सुजटोने कहेती हवी के तमे सर्वे देवकुमारराजा

ना सेवक थार्र तो हुं तमने मुकुं ते सांजली ते वैरीराजायें सेवक थवा छंगीकार कखुं एटले शीघ्र ते देवतायें सर्वने मूक्या.

वैरीराजा आवी देवकुमारने वश षयो ते देखीने देवकुमारराजानुं जे सैन्य नासी गयुं हतुं ते सर्व आवी मह्युं राजानी धर्मनेविषे एकायतायें क रीशासनदेवीयें तुष्टमान थइने राजायें ज्यारें पोषध पाखो त्यारें ते राजाने सर्व विषापहार तथा सर्वजूतादिकनुं अने सर्व रोगादिक दोषनुं निवारक, सर्वशस्त्र बंधन, जल अप्नि इष्टश्वापदादिंकनुं स्तंजन करनार इत्यादि अनेक आश्चर्यनुं करनारुं एवं एक दिव्यरत्न आप्युं ते राजायें लीधुं. एम राजा पोपधवत नो अनियह अखंम पालतो हवो. पुष्यना प्रजावथकी कया कार्यनी सि दि न याय वारु ? अर्थात् जे कार्य चिंतवे ते तत्काल सिद्ध थायज.

हवे ते रत्नना प्रनावथी सर्व शत्रुने वशकरी राजा पोताने नगरे आवी जेना महिमानी सीमा नथी एवी देवीयें दीधेला रत्नना प्रनावेंकरी अ नेक प्रकारना उपकार पोताने तथा परने करतो हवो. तथा नवना रोग मुं नलुं श्रोपध एवं जे पोसहव्रत तेने विधियेंकरीने करतो थको ते राजा पोतानां निविडकमेरूप रजने धोइ नाखतो हवो.

एकदा श्रंधारी रात्रिनेविषे नगरमध्यें कोइएक चोर श्रावीने कोइ धन वान व्यवहारियाना मंदिरनेविषे खातर पाडी तेना घरमांथी धन लड़ने उ तावलो उतावलो धूर्न मृगनी पेरें चाव्यो जाय हे एवामां हाना चोकियात पुरुप हुपी रह्या है तेणों ते चोरने मार्गमां चाव्यो जातो दीहो तेथी ते, ते ने पकडवाने माटे पाहल व्याधनी पेरें लाग्या तेने पाहल श्रावता देखीने चोर पण नित्यना श्रन्यास प्रमाणे तिहांथी नाशी नगरनी बाहेर नीकली ने कोइक वननी कुंजमांहे जइ पेहो तेने पाहल्यी श्रावेला राजाना सुन टें दीहो पण ते सुनटो श्रंधारामां वननी कुंजमध्ये पेसवाने श्रसमर्थ हो वाथी वैरीना नगरनी पेहें वनने घेरी रह्या. एवामां जेने शत्रुमित्र बेहुनी उपर सरखी दृष्टि हे एवा मुनिराज तिहां उनेला हता तेमने देखीने चोर बोव्यो के महाराज! मुजने शरणागतने श्रनयदान श्रापो. एवं चोरनुं वचन सांनलीने मुनि बोव्या के जो तुं दीहा लीये तो तुजने श्रनय हे एक वै राग्यनेविषे कोइ पण जय नथी. बाकी सर्वनेविषे नय हे. यतः॥ जोगे रोग नयं सुखे क्र्यनयं वित्ते च जूनुझ्यं,माने म्लानिजयं ग्रुणे खलजयं देहे कतांताइ यं ॥ शौर्यं शत्रुचयं जये रिप्रचयं वंशे कुयोषिक्रयं, सर्व नाम नयं जवेदिह जवे वैराग्यमेवाचयं ॥ जावार्थः—जोगमांहे रोगनो जय हे, सुखमांहे क्यनो ज य हे, धननेविषे राजानो जय हे, मानमांहे म्लानिनो जय हे, गुणनेविषे खलपुरुषनो जय हे, देहनेविषे यमनो जय हे, शूरवीरतामांहे शत्रुनो ज य हे, जयमांहे विरिनो जय हे, वंशमांहे कुशीलवती स्त्रीनो जय हे एम सर्वे जे नाम धरावेहे तिहां जय हे पण एक वैराग्यने अजयपणुं हे.

एम सांज्ञिन ते चोरें पोताने हाथें मस्तकें जोच कहा. तेने शासन देवतायें मुनिनो वेश आप्यो तेवारें ते चोरने मुनियें दीक्षा दीधी. प्रजातें ते राजाना सुजटें चोरने मुनिपणें उनो रहेजो देखीने त्यांधी जह राजाने कहां राजा पण ते वात सांज्ञि। विस्मय पामी मुनिने वांदवा आव्यो तिहां पूर्वें उनेजा मुनिने वांदी पठी ते चोर मुनिने वांदीने तेमनी घणी प्रशंसा करतो कहेतो हवो के हे विजो! हे खामि! हे सत्ववंतमां शिरोमणी! त मे अन्याय कार्य त्यागीने शीघ्रपणे त्रण जगतने पूजनीय थया हो. एरीते नगरना जोक पण सर्व चमत्कार पामी ते मुनिने वांदी घणी प्रशंसा करीने सहु पोतपोताने स्थानकें आव्या. जूड चोरने पण सुकृतनां फल थयां.

एकदा ते राजा पर्वने आगले दिवसें पर्वनी उद्घोपणा करावीने पर्वने दिवसें पोपधशालानेविषे विधियेंसहित पोपध लड़ ते रात्रियें काउसगमां रही ग्रुनध्यान ध्याय है तिहां ते ध्याननेविषे राजाने ते चोरें जे दीक् लीधी तेनुं अड्ठत आश्रयं सांचल्युं अने चिंतववा लाग्यो के अहो ए चोरें जूठ केंद्र आत्मानुं कार्य साध्युं जे चोरी करीने नगरना सर्वलोकने निंद नीय थयो हतो ते चोरी मूकीने मुनिनी दशायें परिणम्यो तेवारें तेज सर्व नगरवासी लोकोने प्रशंसनीय थयो एतो धमेनुं खरूप जाणवामां अजा ए हतो पण हुंतो जलीरीतें धमेना खरूपने जाणतो हतो पण मेरुपर्वतनी चूलिकानी पेरें साधुपणाने यहण करवा समर्थ नथी माटे मुज मंदनाय्य ना धणी प्रत्यें थिःकार हो!! हुं कायर हुं. संसारस्रखमां महारुं मन आतुर हे; तेथी सम्यक्षणे धमेना आराधनथी विमुख थयो हुं. जे थकी हालाहल सरखां एवां सांसारिक विषयसुख तेने हांमीने अमृतसुख सरखा चारित्रनो अंगीकार करी शकतो नथी. तो जवजलनिधि तरवाने जहाज सरखुं अने पूर्वसंचितकर्मनी वेलीने हेदवाने दातरडा सरखुं एवं अक्ट्यसु

खने आपनारं जे चारित्र ते मुजने क्यांथी उदय आवे. इत्यादिक शुन ध्याननी वृद्धि करतो ते राजा कृपक श्रेणिये चढी घातिकर्मनो कृयकरी पोषधव्रत आराधतां थकांज केवलकान पाम्यो देवतायें तेनो महोत्सव क खो, अने मुनिनो वेश आप्यो ते देवकुमार केवली, माता पितादिक घणा जीवने प्रतिबोधी तेने दीकृ आपी घणा जीवोनी साथें मोक्नें पोहोतो.

एटलामाटे हे नव्यप्राणीर्छ! पोषधवतनो सहाय तथा तेनी अनुमोदना पूर्वनवनेविषे कखाथकी सुमितनो जीव देवकुमारराजा थइ घेरबेवां पोषध करतां केवलकान पाम्यो अने कुमितने जीवें पोषधवतनो सहाय न कखो अने तेनी निंदा करी तो प्रेतकुमार थइने संसारमां रज्यो अने अति इः खपाम्यो. माटे हे नव्यो! एवा पोषधवत आराधन विराधननां फल सांनली ने पोषधवतन्तुं आराधन करो जेम सुमितनी पेवें मोक्सुख पामो निंदा करशो तो कुमितनी पेवें रज्लशो. इति पोषधवतनेविषे देवकुमार प्रेतकुमार नी कथा समाप्त ॥ ए अगीआरमुं पोषधोपवास व्रत कह्यं ॥

॥ अथ घादश अतिथिसंविनाग नामक चतुर्थशिक्ताव्रत प्रारंनः॥

जे तिथि पर्वादिक लोकव्यवहारनो वर्क्जक अणिचित्यो नोजनने अवसरें आव्यो तेने अतिथि साधु जाणवो. उक्तंच ॥ तिथिपर्वोत्सवाः सर्वे, त्यक्ताये न महात्मना ॥ अतिथिं तं विजानीया छेपमन्यागतं विष्ठः ॥ १ ॥ जे महा त्मायें तिथिपर्वना उत्सवो सर्व तजेला हे तेने अतिथि जाणवो बाकी बीजाने अन्यागत कहेवो ॥ १ ॥

ते अतिथिने आधाकमीदिक बेंतालीश दोषरिहत जे आहारनो रूडो नाग देवो तेने अतिथिसंविनाग कित्यें, न्यायोपार्जित इव्येंकरीने प्राग्नुक एष णीय कल्पनीय एवं अशन पान खादिम खादिम वस्नादिक ते निक्ताने अव सरें मुनिने श्रद्धासिहत आदर बहुमान पूर्वक, अतिशयनिक्रयेंकरीने, आत्मा नी अनुयहंबुद्धियेंकरी घरमांहे जे पोताने अर्थें नीपजाव्युं एवं आहारा दिक होय तेनुं मुनिने दान आपवुं ते अतिथिसंविनाग कित्यें.

तिहां जे देशें जे शालिप्रमुख नीपजे ते देशथी, सुनिक्इर्निक्सदिकमां देवुं ते कालथी, निर्मलचित्तनो विशुद्ध परिणाम ते श्रदा, तथा सुनि आ व्याथी उठीने उना थावुं, बेसवाने आसन आपवुं वंदन करवुं वली पा बुं वोजाववा जाबुं ते सत्कार, तथा जेम रसवती नीपनी हे तेम दूध खीर खांम प्रमुख पण जेवे अनुक्रमें नीपन्यां हे तेवे अनुक्रमें देवां. यदाह ॥ पहसंत गिजाणेसु, आगमगाहिसु तह्य कयजोए ॥ उत्तरपारणगम्मिअ, दिन्नं सु बहुफ जं होइ ॥ १ ॥ नार्वार्थः—मार्गना खेद पामेजाने तथा ग्जानि होय तेने तथा सूत्रसिद्धांतनो नणनार होय तेने तेम जोचना करनारने पारणे उत्तर वारणे दीधुं थकुं घणुं फल थाय ॥ १ ॥

श्रावश्यकनी चूर्णि तथापंचाशकनीचूर्णिमांहे ए विधि हे जे श्रावक पोसहने पारण नियमा साधुने प्रतिलानीने पही पारणुं करे. जेवारें नोज ननी वेला थाय तेवारें श्रावक वस्त्रादिक श्रालंकार पहेरीने उपाश्रयें सा धुनी समीपें जइ श्रशनादिकनी निमंत्रणा करे तेवारे साधु पात्रां पि लेही ने गृहस्थने घेर जाय तिहां ते गृहस्थने श्रंतरायदोप श्राने जे गृहस्थ सा धुनिमिन्नें राखीमूके ते थापना दोप ए दोप जेम न लागे तेवीरीतं मुनि श्राहार लीये. इहां जो कोइ गृहस्थ प्रथम पोरसीनेविषे श्राहारनी नि मंत्रणा करे तेवारें ते साधुने जो नवकारसीनुं पच्चकाण होय तो वोरवा जाय श्राने नवकारसीयकी श्राधिक पोरसीयादिकनुं पच्चकाण होय तो न जाय जो पोरसीश्रादिक विशेष पच्चकाण होय तो तेवारें पोरसी न णावी पात्रां पडीलेहे, पच्चकाण पारी जो पूर्वें पोरस पहेला कदाचित् श्राहार श्राख्यो होय तो ते श्राहार कोइ पारणां करनार साधुने श्रापीने पही ते श्रावकनीसायें वे साधुनो संघाडो वहोरवा जाय पण एकने ग्रह मो कले नही मार्गमां श्रावक श्रागल चाले तेनी पहवाडे साधु चाव्यो जाय.

एवीरीतें ते गृहस्य मुनिने पोताने घेर तेडी लावीने पढ़ी तिहां मुनि ने बेसवा माटे आसन मूकी तेनी उपर बेसवानी मुनिने विनित करे जो मुनि आसने बेसे तो सारुं अने जो मुनि न बेसे तोपण गृहस्थें मुनि घेर आवे तो तेनो अवस्य विनय साचववो जोश्यें. पढ़ी ते गृहस्य, अशना दिकने नाजनमां लश्ने मुनिने कहे हे महाराज ! अनुयह करो तेवारे मु निपण खेवा मांमे ते जेटलुं खे तेटलुं मुनिने आपे पढ़ी जेवारे मुनि कहे के हवे अमारे खप नथी तेवारे रहेवा आपे. मुनिपण पथात्कमे दोष ढां मवाने अर्थें कांश्क आहार जेवारे नाजनमां रहे तेवारें गृहस्थने कहे के हवे राखो. ए विधियें मुनिने वहोरावीने वांदीने विदाय करे पढ़ी मुनि जे

वारें जाय तेवारें ते गृहस्य, केटलाएक पगलां पढवाडे वोलाववा जाय तेपढी घरमां आवीने पारणुं करे ते वखत विद्युद्ध परिणामें एवी जावना नावे के आजनो दिवस माहारे लेखे थयो. एरीतें श्रावकें पोसहने पार णें मुनिने आप्याविना जमवुं घटे नही. हवे फदाचित् ते गामनेविषे साधु न होय तेवारें नोजननी वेलायें दारावलोकन करे, पढी विद्युद्धप रिणामेंकरी एम चिंतवे के जो साधु मुजने मत्या होत तो महारो निस्ता र यात. साधुने आपीने हुं कतकत्य यात ए विधि, पोषधना पारणा आ श्रयी जाएवो अने अन्यदिवसोनेविपे तो नियम नही. कदापि मुनिने व होरावीने पण जमे अथवा पोतें जमी रह्या पढ़ी पण वहोरावे. एमज व स्त्रादिक ञ्चापवानेविषे पण यथायोग्य विधि जाणवो. श्री उपदेशमालाने विषे धर्मदासगिषयें कह्यं हे ॥ यतः ॥ पढमं जइए दाचए, अप्पाएं पए मिचण पारेइ ॥ असई असुविह्याणं, चुंजइ अ कइ दिसालोचे ॥१ ॥ सा हूण कप्पणिक्कं, जं निव दिन्नं कहंचि किंपि तहे ॥ धीरा जहूनकारि, सुसा वंगा तं न नुंजंति ॥ २ ॥ वसही सयणासणन, न पाण नेसक्त वन्नपना इं ॥ जइवि न पक्कत्त धणो, योवाच विद्य योवयं देइ ॥ ३ ॥ इत्युपदेश मालायां नावार्थः-प्रथम यतिने देइने पोते प्रणाम करीने पारणुं करे जो साधनो योग न होय तो दिशावलोकन करीने जोजन करे ॥ १ ॥ साध ने कल्पनीय जे अन्न होय ते साधुने न देवाएं होय तिहांसुधी कोइ प्रका रें पण ते धीर श्रावक साधुना पात्रामां खाप्या विना जोजन न करे ॥ २॥ वस्ती, शय्या, अशन, पान, औषध, नैपज्य, वस्त्र पात्रादिक ते जोपण पोतानी पासें धन विशेष न होय तोपण योडामांहेथी योडुं पण देवुं॥३॥

अन्यत्राप्युक्तं॥ अर्ह्भचः प्रथमं निवेद्य सकलं सत्साधुवर्गाय च, प्राप्ताय प्रविनागतः ग्रुचिधिया दला यथाग्रक्तितः॥ देशायातसधर्मचारिनिरलं सा है च कांने स्वयं, नुंजीतेति सुनोजनं गृहवतां पुण्यं जिनेन्निषतं ॥ वली अन्यस्थलें पण कह्यं वेः—प्रथम वीतरागने सघलुं नैवेद्य करीने अर्थात् पहेलां सघलुं वीतरागने निवेदन करतुं. पढी प्राप्त थयेला सारा साधुने पित्र बुिद्यी विनाग करी यथाग्रक्ति आपतुं, त्यार पढी ते स्थानें आवेला साधिमें नाइनिताथें ते सारा नोजनने गृहस्थ पोते जमे एरीते गृहस्थ

नुं पुष्यकर्म श्रीजिनें नांख्युं हे. ए व्रतनुं आराधन करवानेमाटे श्राव कें निरंतर प्राक्कक एपणीय आहार साधुने आपवो.

हवे ए व्रतना अतिचार निंदवाने अर्थे मूलसूत्रनी गाया कहे हे. मचित्त निर्फिवणे, पिहिणे ववएस महरे चेव ॥ कालाइकम्मदाणे, चजहे सिकावए निंदे ॥३०॥

अर्थः-१ साधुने न आपवानी बुिध्यें अथवा अनाउपयोगें सहसात् कारादिकेंकरीने सचित्त माटी पाणीनो घडो अनाजना ढगला प्रमुखनी उपर अशनादिक मूके ते प्रथम सचित्तनिकेपण नामा अतिचार.

१ तेमज देवा योग्य प्राग्चक त्रमने सचित्त वस्तुयेंकरी ढांके ते बीजो सचित्त पिहिणे एटले सचित्तपिधान नामा त्र्यतिचार.

३ अणदेवानी बुिंद्यं पोतानी वस्तु होय तेने पारकी कहे के आ म हारी नथी अने देवानी बुिंद्यं जो पारकी वस्तु होय तोपण पोतानी क हे अथवा ठती वस्तु घरमां होय तेवारें एम जाणे जे ए साधु मागज़े तो आपवी पड़ज़े तेमाटे आगलथीज एम कही सूके के आतो पारकी वस्तु हे एटले ते वस्तु साधु मागेज नही. अथवा ते मुनि कोइ वस्तु देखीने दातारनी पासें तेनी याचना करे तेवारे ते दातार कहे के आतो अमुक फलाणानी वस्तु हे माटे तेनी पासेंथी तमे याचो एम अवङ्गा करीने पर पासेथी देवरावे अथवा ते वस्तुनो धणी जीवतो होय वामरण पामेलो हो य तेवारे एम विचारे जे ए वस्तु हुं साधुने आपुं हुं तेनुं पुष्य ते धणीने थाउं एम परनो उद्देश करीने आपे ते परव्यपदेश नामें त्रीजो अतिचार.

ध मत्सर ते कोपसहित आपे एटले जेवारे मुनि आवीने याचना करे तेवारें ठती घरमां वस्तु होय तोपण आपे नही अथवा आपे तो पण कोप करी आपे हीणी वस्तु होय ते आपे अहंकारेंकरी आपे अथवा मत्सर ते पारकी उन्नति देखीने विमन थाय पारकी संपदा देखी शके न ही एटले कोइक निर्धन पुरुष मुनिने दान देतो होय ते देखीने पोते वि चारे जे ग्रुं एथी हुं हीणो जुं,ए ग्रुं आपशे; हुं ए करतां पण अधिक आपुं; एम मत्सरथी दान देवुं ते चोथो मत्सरनामे अतिचार.

५ पांचमो साधुने गोचरीनो वखत वीतीगया पढी विचारे जे हवे कांइ

मुनि वहोरवा आवशे नही एवी बुिंदिषी साधुने वहोरवानी विनित करें एटले साधु पण लीये नहीं ते पांचमों कालातिक्रम अतिचार जाणवो. ए काल अतिक्रम्यापढी आप्यानों शो अर्थ ॥ यतः ॥ कालं दिन्नस्स पहें, एयस्स अग्वा न तीरए काणं ॥ तस्सेव अन्नक्षपणा मिअस्स गिएहं त या नहीं ॥ १ ॥ पहेणयस्स एटले दानना लेनारने पणामिअस्स एटले अकाले आपवुं अर्थात् हुं तो मुनिने घणो ए कहुं हुं पण लेता नथी एम करवाथी अंतरथी तो व्रत नांगुं पण बाह्यथी व्रत रह्यं परंतु दानांतराय क मैना उद्यथी जे माया करवी तथी अतिचार थाय. यष्ठकं ॥ सङ फासु यंमि दाणे, दाणफलं तह्य बुजइ अयलं ॥ बंजचेराइज्जनं, पनंपि चिक्क ए तन्न ॥ १ ॥ दाणं नविर नसकइ, दाणविघायस्स कम्मणो उद्द ॥ दा णंतराय मेयं, रन्नो जंमारिय समाणं ॥ २ ॥ नावार्थः—हती प्राग्नक दान देवा योग्य वस्तु घरमां होय तेमज महोटा ब्रह्मचर्यादिक गुणें युक्त एवो पात्र पण तिहां हतो होय ॥ १॥ तो पण दानांतराय कर्मना उद्यथी दान देवाने समर्थ न थाय ते दानांतरायकर्म राजाना जंमारी सरखो जाणवो ॥

इहां तत्त्ववृत्तियें तो व्रतजंगज थाय हो. यतः ॥ दाणंतराय दोसा, न दें दिशंतयंच वारे ॥ दिन्नेवा परितप्प के, किविणत्तातो जवेजंगो ॥ १ ॥ जावार्थः—दानांतरायना दोप ते हित वस्तु घरमां होय पण आपे नही, तेम दान देतो होय तेने वारी राखे, अथवा दीधे थके परिताप करे एम. रूपण पणाथकी व्रतनो जंग थाय ॥ १ ॥

श्रतिक्रमादिकेंकरीने श्रतिचारता थाय ते जाणवी इहां जे व्रत व्रत प्रत्यें पांच पांच श्रतिचार कह्या परंतु उपलक्ष्णथी बीजा परंतु श्रतिचार जाण वा. यदाहुः ॥ पंचपंचातिचाराठ, सुनंमी जेपदंतिया ॥ तेनावधारणहाए, किंतु ते ठवलकणं ॥ १ ॥ तेमाटे स्मृत्यंत ६ दियः एट से स्मरणमां न श्रा व्या होय. जाण्यामां न श्राव्या होय एवा श्रणकह्या श्रतिचारपण श्रनुक्र में सर्वव्रतनेविषे जाणवा, ए चोथा व्रतना श्रतिचार निंडं हुं इत्यादि पूर्ववत्.

हवे ए व्रतन्तुं फल कहे हे:—ए व्रतना पालनारा जीवो देवतानी कि तथा मनुष्यनी कि , अने तीर्थंकरनी पदवीने जोगवीने मोक् जाय शा लिनइ तथा मूलदेव प्रमुखनां हष्टांत प्रसिद्ध हे तथा जे प्राणियें हती यो गवाइयें सुपात्रने दान दीधां नहीं ते प्राणी दास दोजीगी दारिइी प्रमुख महाइःखना जोगवनारा थया ॥ ए त्रीशमी गाथानो अर्थ थयो ॥ ३० ॥

ए श्रितिथसंविजागव्रतनेविषे वे मित्रनो हष्टांत किह्यें वैयें. जंबूदिए ना पूर्व महाविदेह केत्रें पुष्कलावती नामा विजयनेविषे धनधान्यादिक क्रियें नरेलुं अने धर्म अर्थ कामने मोक् ए चार पुरुषार्थनी जूमिकारूप एवं विजयस्थल नामे नगर हतुं. ते नगरमां पद्मदेव नामें महोटो व्यवहा रियो वसतो हतो ते लक्कीनुं घर जे कमल तेना सरखी स्थितिवालो सुको मल हतो पण कादव अने डोलापाणीना संगने नजे तेवो न हतो. ते व्यवहा रियानी देवकी नामे स्वी हती तेने अर्थयुक्त नामने धरनार अनेक ग्रुणनो आगार एवो ग्रुणकर नामे पुत्र थयो ते पुत्र मातापिताना मनोरथ साधतो यको अनुक्रमें सर्वकलानो पारगामी थयो. वली ते विनय विवेकादि ग्रुणें करी अतिशय शोजतो हवो जेम चतुराइ लक्कीयेंकरी शोजे, क्रमा ग्रुणें तप शोजे, विवेकेंकरी जेम वेजव शोजे, लावण्यलक्कीयें जेम शरीर शोजे, आदरथी जेम जोजन शोजे, मित्येंकरी जेम क्लान शोजे, निक्येंकरी जेम स्तुति शोजे, जेम शक्तिवंत समतायेंकरी शोजे, अदायें जेम धर्म शोजे, तेम यौवन अने रूपेंकरी ग्रुणाकर शोजे हे.

जाणीयें साहात्कंदपीवतारज होयनी ? जेवुं अत्यंतरूप होय तेने दे वांगना पण वांग्ने तो मनुष्य जातिवाजी स्त्रियो वांग्ने तेमां कहेवुंज छुं ! तेमज धेर्य औदार्यादिक अनेक गुण ते कुमरमां ग्रे तेविपे केटलुं वर्णन लिखयें ? वली देवता तो वांग्नित आपे पण मनुष्य वांग्नित आपे ते आ श्र्यकार। जाणवुं. जेम इंड्नो ग्रुरु, जेम शारदानो ग्रुरु, जेम ग्रुक्रनो ग्रुरु ए त्रणे प्रशंसवा योग्य ग्रे. तेम चोथो ए गुणाकर पण प्रशंसवा योग्य ग्रे. पंमितने पण वर्णववा योग्य ग्रे. ते गुणाकरने बाल्यावस्थायीज याचकने वांग्नित आपवानो स्वनाव ग्रे, ते दान ग्रुणेंकरीने लोकोने अत्यंत प्रिय ग्रे. जे दातार होय ते मेघनी पेरें वल्लन होयज.

हवे तेज नगरमां ते पद्माकरशेवनो मित्र धनंजय नामे व्यवहारियो व से बे. ते धनेंकरीने धनद सरखो बे दोषरूप इंधनने बालवामां अक्रिसर खो बे तेनी जले गुणेंकरीने विश्वनेविषे जय पामी एवी जया नामे स्त्री बे. तेना पुत्रनुं नाम तो गुणधर बे पण तत्वथी ते नाम निरर्थक बे य द्यपि ते निर्जाग्य है तो पण पोतामां जाग्यवंतपणुं माने है, पुष्ययकी वें गलो है तो पण मातापिताना पसायथी सुखियो है.

ते गुणधर श्रनुक्रमें योवनावस्था पाम्यो हवे बालपणाथी गुणधरने गुणकरसाथें दूध अने पाणीनी पेरें अनुत्य मित्रता बंधाणी हे तेथी ते गुणधर, गुणाकरनो मित्र हे एवं जाणीने लोकोमध्ये मानवा योग्य थयो. ते महादेवना पोवियानी पेरें माननीय थयो, महोटानी संगतथी नीच होय ते पण उंचपणुं पामे, तीर्थनूमिकानी रज जेम तीर्थनी संगतथी पूजाय तेनी पेरें ते पण पूजाय. ते वेहुजण वयेंकरी सरखा, शृंगारेकरी सरखा, गतियेंकरी चालवामां पण सरखा हे परंतु गुणेंकरीने तो इंसमां अने वगलामां जेटलो तफावत दीवामां श्रावे तेटलो ते वेहुमां दीवामां श्रावे हे.

एकदा ते गुणधर तथा गुणाकर बेहु जणा स्वेह्वायें नगरमांहे जमता थका एक पाठकनी नीशालनेविपे ते पाठक नीशालियाने जणावे हे तेना वे श्लोक सांजलता हवा ते श्लोक ॥ जनकार्जिता विजूति, जिनिति सु नीतिवेदिन्नः सिद्धः ॥ सत्पात्रएव योज्या, न तु जोग्या योवनानिसुखैः ॥१॥ जावार्थः—पितायें जे संपदा जपार्जी ते संपदा बहेन जेवी जाणवी जली नीतिना जाण सत्पुरुष कहे हे के ते लक्की सुपात्रनेविषेज जोडवी पण योवनना समयमां पुरुषोयें तेनुं सुख जोगववुं योग्य नथी ॥ १ ॥ स्तन्यं मन्मनवचनं, चापत्यमहेतुहास्यमत्रपतां ॥ शिशुरेवार्हति पांशु, कीडां छितंं च पितृसाह्यहम्याः ॥१॥ जावार्थः—स्तनपान करवुं, समजवामां न त्रावे एवं वचन बोलवुं कारणविना हसवुं, लक्का रहितपणुं, रजमांहे रमवुं एटलां वानां वालकने योग्य हे तिहां सुधी पितानी लक्कीने जोगववी ॥ १ ॥

ए वे श्लोक सांनलीने गुणाकर पोताना मित्रने कहे हे के हवे आप एने आज्यी मांमीने सक्पमात्र पण आपणा पितानी उपार्जेली लक्षी नोगववी युक्त नथी. यतः ॥ सुच्चि सुहडो सोचे,व पंमिष्ठ सोविदन वि न्नाणो ॥ जो निश्च चुर्श्च दंम जिश्च, लिंड चवक्कए किनिं ॥ १ ॥ नावा थेः नतेहज सुनट, तेहज पंमित, तेहज विकानपणुं, जे पोताना चुजदंमें करी लक्षी उपार्किने नोगवे, बीजी लक्षीयें चुं ? ॥१॥ माटे ते लक्षी च पार्किवाने अर्थे कयो उपाय करीयें जेणेंकरी तरत वांहित लक्षी कोटी

प्रमाण उपजे, हे आर्थ ! महोटी लक्कीनी प्राप्तिविना मुजने दान जोगादि कनां कोतुक हाथीना स्नाननी पेरे निरर्थक हे.

एवी गुणाकरनी वाणी सांजलीने ते गुणधर पोतें पोतामां पंमितपणुं मानतो थको पोताने माहापणेंकरीने कहेवा लाग्यो के हे गुणाकर! तमें इव्य जपार्कन करवाने शी चिंता करो हो ? हुं वाणिज्यकलानेविपे घणो माह्यो हुं माटे थोडाकालमांहे लीलायें लक्की नुं जपार्जन करीश. वाणियाने व्यापारनी निषुणता तेहज कामधेनु हो, एम तुं निश्चय जाणजे. लक्की जपार्जन करवाना त्रण जपायहे. यहकं ॥ प्रवीणता च वाणिज्ये, त्य ककमजपक्रमः ॥ न निर्वेदश्च कुत्रापि, त्रयः प्रतिज्ञवः श्रियः ॥ र॥ व्यापारने विषे प्रवीणता, तथा जेनो कम तजेलो हे एवो ते ते कमेनो जपक्रम व्यर्थात् व्यापार्यने विरोग्य गांवी ते व्यापार्यकी ब्रालसे नहि ए त्रण व्यापारना प्रतिज्ञ हे व्यर्थात् जामिन हे अथवा प्रतिज्ञित्त हो लक्की निक्तायां न कदाचन ॥ र॥ नावार्थः न लक्कीनो वासो व्यापार्यनेविपे हे, कांइक हपी एटलेखेतीमांहे पण लक्कीनो वासो हो, तथा चाकरीमांहे तो लक्की हे अने नथी, वली निक्तामांहे तो लक्की कोइवारे नज होय ॥ १ ॥

एविशित तेने व्यर्थ गर्व करती देखीने पासे उनो रहेलो एवो कोइक सामुद्दिक शास्त्रनो जाए पुरुप हतो ते गुएधरनो अहंकार टालवाने निमि तें कहेतो हवो के हे विएक ! तुं जुलो अहंकार म कस तुं लहमी उपार्जन करे एवा तहारामां लहूण देखातां नथी तुं तो आ गुएएकर पुण्यवंत हे ए ने संगे रह्योथको सुखियोथयो है. जो लहूणरहित हो तो पए लीला नोगवे हे जेम पापाएनी शिलापए पाटियाना आधारथी तरे हे तेम तुं पए आ मित्र नी पासें रही एनी पुण्याइया घएां वानां करे हे पए तहारा शरीरने विषे एवां लहूण देखातां नथी के जेऐंकरी तुं खह्पमात्र पण लहमी तुं उपार्जन करीने नोगवे, पए आ तहारो मित्र नाग्येंकरी पूर्ण हे लहूऐंकरी पूर्ण हे ते लीलामात्रमांहे जुजायें अर्क्तितलह्मीनो नोगवनारो थाशे. संसार मांहे लह्मी ते अन्नत हे माटे चंड्माना मृगनी पेरें ए मित्रनी पासें तहा रे सुखें रहेवुं कोइवारें पए कत्याएने अर्थें एतुं समीपपएं मूकीश नही. यतः ॥ गुणिनः समीपवर्त्तां, पूज्योलोकेहि गुणिवहीनोऽपि ॥ विमलेक्षणप्र संगा, दंजनमाप्तोति काणािक् ॥ १ ॥ जावार्थः –गुणिनी संमीप रहेनारो पु रुष, जो गुणहीन ने ते पण लोकमां पूजनीय थाय ने. निर्मल नेत्रना सं गथकी कांणुं नेत्रपण अंजन पामे ने ॥ १ ॥ '

एवी सामुिक नरनी वाणी सांजलीने गुणधर पोताना हदयमांहे घ णो खेद पाम्यो पण लोकलकाथी मोन रह्यो. कांइ बोब्यो नही परंतु म नमां एवो विचार करवा लाग्यों के हुं ग्रुणधर तो खरों के जो शोल कोड सोनेया उपार्जु अने सामुिकनुं वचन अन्यया करुं तो पढ़ी महारा ना ग्यनो उदय सर्वने देखाडुं एवो अहंकार करी इर्दर गर्व धरतो गुणाकर नी साथें नानाप्रकारनी क्रीडा करतो आगल चाल्यो मार्गमां एक धर्मशा ला त्रावी ते धर्मशालामांहे विविधप्रकारें धर्मनी प्ररूपणा करता जाणिये धर्मनी मूर्त्तिज होयनी छुं! एवा धर्माचार्यने देखी आनंद पामी ते आचा र्यने वांदीने तेमने वांढित जन्मी उपार्जवानी उपाय गुणाकर पूछतो इवो ते सांजली आचार्य ते गुणाकरने जेवामां उत्तर आपवा तत्पर थया तेवामां तो ते ग्रणधर बोख्यो के में तुजने पूर्वे कह्योज है जे व्यापारयी सक्कीनुं जपार्जन याय ने तो वली आंही छुं पूने ने ? एवं गुणधरनुं वचन सांचली गुणाकर बोव्यो के तें कहां ते तो हुं जाएं हुं पण आ साधु विशेषना जा ण हे माटे एमने विशेष प्रकारें पूडुं डुं तेवारे आचार्य बोब्या हे गुणाक, र! तुं धर्मनुं आराधन कख जेथकी तुं अनगेल लक्कीनुं उपार्क्जन करीश. जेम बीज ते फलनुं मुख्य देतु ने अर्थात् कारण ने वृक्तने पाणीसींचवानी पेवें जद्यमादिक ते सहकारि कारण है तेथी सस्य सहजे नीपजे हे तेम धर्मनुं फल ते मोक् हे तो लक्की पामवी एमां हुं कहेनुं जेम कए नीपज वानुं मुख्यहेतु बीज हे जो बीज वाव्युं होय तोज पाणीसेचनादिक सर्व सामग्री फुलदायक थाय.

कोइक प्राण। माह्या पण वे लक्की उपार्जवानी कला पण जाणे वे उ यम पण घणों करे वे पण दरिई। देखाय वे अने कोइकमांतो लक्की उ पार्क्कवानी कला पण मूलयीज नथी तेम उद्यममां पण आलसु वे तथा पि घणी लक्कीना धणीयका जोग जोगवे वे. उक्तंच॥ समास्वतुव्यं विषमा सुतुव्यं, सतीष्वसञ्चाप्यसतीषु सञ्च॥ फलं क्रियास्वित्यिप यन्निमित्तं, तदेहि नां सोित तु कोऽपि धर्मः ॥ समनेविषे विषम अने विषमनेविषे सम सतीने विषे जुतुं अने असतीने विषे साचुं करे वेवली जेना निमित्तथी जीवमात्र नी क्रियानेविषे फल थाय वे माटे एवो अपूर्व लोकोत्तर अनिर्वचनीय धर्म वे.

तेमाटे हे गुणाकर ! वांद्वित लक्क्वीनों खप होयतो तुं विशेष प्रकारें ध में कखा। यतः ॥ धमीद्धनं धनतएव समस्तकामाः, कामेन्यएव सकलेंडिय जं सुखं च ॥ कार्यार्थिना हि खल्लु कारणमेषणीयं, धर्मीविधेय इति तत्वविदोव दंति ॥ नावार्थः—धर्मथी धन मले हे अने धनथी काम अर्थात् सुखोपनो ग मले हे वली ते कामथी नानाप्रकारना सुखोपनोगथी सघली इंडियोनां सुख जत्पन्न थाय हे माटे ते सुखरूप कार्यना अर्थि पुरुषे खरेखर ते का र्यना कारणने शोधवुं जोइये ? के जेथी सर्व कार्यनी सहजमां प्राप्ति थाय.

ते धर्म; दान, शील, तप श्रने नाव रूप चार प्रकारनो हे. तेमां वली दानना चार चेद हे एक श्रनयदान, बीजं झानदान, त्रीजं धर्मदान श्रने चोष्ठं उपष्टंनदान, तेमां जे मरणना नयथी कोइने राखवो एवं प्राणीने ह षेत्रं करनार ते श्रनयदान कहीयें. सर्वदानथकी ए दान महोटुं हे, तथा रूडां शास्त्र नणाववां नणवां तथा नणाववाने स्थानक श्रापवुं पुस्तकादि क श्रापी नणवाने सहाय देवो ते झानदान जाणवुं. श्रावक श्रयवा साधु ने जे धर्मना निर्वाद्तुं हेतु एटले कारण श्रन्नदानादिक श्रशन खादिमादि क श्रनेक प्रकारें हे. तथा धर्मथकी पडता एवा मनुष्यनुं रक्षण करवुं,ते धर्मा पष्टंनदान तथा श्ररिहंतादिकने दान देवुं ते पांचमुं सुपात्रदान त्रण प्रकारनुं हे तिहां जे श्ररिहंतादिक साधुने दानदेवुं ते उत्तम सुपात्रदान, श्रने देशविरति श्रावकने दान देवुं ते मध्यम सुपात्रदान, तथा समकेत दृष्टि श्रावकने दान देवुं ते जवन्य सुपात्र दान एरीतें पांच प्रकारनुं दान ते मोक्ष्पल श्रापे.

तथा वली अनयदान, सुपात्रदान, अनुकंपादान, उचितदान अने की र्निदान इत्यादि दानना अनेक नेद हे तेमां अनयदान अने सुपात्रदान ए बे दान ते मोक्त अने नोगफलनां अंग हे तथा अनुकंपादान ते धर्मनुं अंग हे तथा उचितदान अने कीर्निदान ए वे दान प्रीतिनां अंग हे तथा धर्मदान अने उपप्टंनदान ए वे दान ते मोक्त्नां तथा धर्मपामवानां अंगहे.

हवे शीलधर्म कहे वे जे अब्रह्मनो त्याग तेने शील कहीयें. ते एक,देश थी अने बीजो सर्वथी एवा बे प्रकारें वे तिहां खदारासंतोष अने परस्वी

नो त्याग ते देशथी, अने जे सर्वथा स्त्रीनो त्याग ते सर्वथी शीलव्रत कहियें. तथा तपधर्म ते उनेदे बाह्यतप अने उनेदें आन्यंतरत ए बारनेदनां तप वे एथकी जे इःसाध्यकार्य होय ते सुसाध्य थाय. अने निकाचित आ

तप वे एथकी जे इःसाध्यकाय होय ते सुसाध्य थाय. अने निकाचित आ करा कर्मनो क्रयकरी मोक्तें जवाय. तथा जावधर्म ते अनित्यादिक बार जेदें जावना जाववी ते सर्वधर्मनुं मूल बीजक वे अने संसारनो नाश करनार वे.

ए चारप्रकारनो धर्म जो समकेत सिहत आराधे तो जीव मोक्क्ष्य लक्क्षी उपार्जे एटला माटे हे गुणाकर ! तुं ए चारप्रकारना धर्मनुं आरा धन कक्ष तेमां विशेष प्रकारें तुं याचकजनोने दान आप्य जेमाटे दीधा विना पामियें नही वाच्याविना लिएयें नही. वली तुं तहारा चित्तनेविषे संतोष राखजे लक्क्षीनो अधिक लोज करीश नही. केमके ए जीवतो चक्र वर्त्तिनी क्रि तथा इंइनी क्रि पामे तोपण तृष्णापूर्ण थाय नहीं.

एवी गुरुना मुखनी वाणी सांचलीने प्रतिबोध पाम्यो थको ते ग्रुड्यु दिनो धणी गुणाकर, चिंतामणी रत्नसरखा समकेंतादिक धर्मने पामीने अतिशय हर्षवंत थयो. अने ते गुणधर तो धर्माचार्यनी वाणी सांचलीने अणसहहतो थको ते धर्मने जूठो करीने जाणतो हवो. जेम पिचज्वरवा लाने तीखी वस्तु होय ते तीखी न लागे तो तेथी ते वस्तुनुं तीखाशपणुं कांइ गयुं कहेवाय नहीं तेम मेघनीपेठे ते मुनिनुं वचन ते एकने अमृतसरखुं अने एकने विप सरखुं लागे, उक्तंच ॥ सासाईयंपि जलं, पिचिवसेसेण अं तरं गुरुश्रं ॥ अहि मुह पि अं गरलं, सिप्प उडे मुनियं हो १॥ नावार्थः—तेहज स्वातिनक्त्रनुं पाणी ते पात्रविशेषेंकरी महोटा अंतरवालुं याय अर्थात् तेमां मोटि तफावत थाय के केम के ते पाणी जे सर्पना मुखमांहे पड्युं ते विप थयुं अने शीपना मुखमांहे पड्युं ते मुक्ताफल थयुं ॥ १ ॥

हवे ते दिवसयी मांमीने गुणाकरतो दानादिकनेविषे विशेषें प्रवर्ततो हवो. एम चारेप्रकारना धर्मने विशेषें आराधतो हवो जेम जेम गुणाकर याचकजनोने वांद्वित दान आपे तेम तेम ते नगरमां गुणाकरनी कीर्नि विस्तार पामे ते कीर्निने जेम जेम गुणधर सांचले तेम तेम हदयनेविषे आकरो मत्सर धरे तेवारें ते तुझबुिक्नो धणी तुझतायेंकरीने चित्तनेविषे चिंतवे के अहो आ गुणाकरना नाग्यना चदयनुं लोक वर्णन करे हे. जाणीयें धनेंकरीने सर्वलोकने वेंचाता लीधा होय नह। तेम ते लोकने

कांइक चांति पड़ी गई ने वली गुणाकर करतां महारामां घणा गुण ने; तो पण महारा गुणनुं लोक वर्णन करता नथी माटे ए लोकप्रवाहे पड़्या मूर्ख देखाय ने तुन्नबुिहना धणी ने. लोकने ए चांति पड़ी गई ने माटे एनी साथें फरवाथी मुंजने जो लाज ने? साहामी महारा गुणनी हानि थाय ने, महारी महोटाई जाय ने, प्रायः परनी पूर्व चालवुं परने अनुया यी यह रहेवुं ते हीणुंज ने वली तेथी गुणहानि अने परवश्यपणुं थाय ने. यतः ॥ परानुगामी परवक्रदर्शी, परान्नजोजी परचित्तरंजी ॥ परप्रवादी परविज्ञीवी, सर्वेष्यमी स्युर्गुणिनोऽपि निंदाः ॥ १ ॥ जावार्थः—परने पुंते चाले, पारकां मुख जुने, पारकुं अन्न जमे, पारकुं चित्त राजी करे, परनी निंदा करे,पारके वित्ते जीने,ए सधला गुणी होय तो पण ते निंदवा योग्य थाय ॥१॥

तेमाटे हुं ए गुणाकरने मूकी शीघ्रपणे देशांतरें जइ लक्की उपार्जिने म हारा नाग्यनी कीर्त्त देखाडुं, ज्यां सुधी ए गुणाकर महारी साथे हे त्यां सुधी मुजने लाज नथी आज करियाणामां लाज घणों हे इहां वस्तु प ण घणी सोंघी हे ते लेइने परदेशमां मोंघी वेचीश ए गुणाकर तो कायर हे ते एकलो गुंकरशे, हुं हुं तो एनो सर्व कारजार चाले हे जो हुं न हो जंतो ए सीदाय जेम आंधलाने लाकडी होय तो चालीशके नहीं तो हेरा न थाय तेम ए महाराविना हेरान थशे जेमां धनजपार्जवानी कला होय तो तेनी बीजी कला पण प्रमाण थाय तेज जगतमां पूजाय अने प्रति ष्ठापामे तेने मित्रपण घणा थाय ते कला तो महारी पासे हे.

एम विचारीने ते गुणधर सक्क थइ मित्रने कह्याविना घणा मनोरथ साथें अनेकजातनां करियाणां जरी लक्की कमाववामाटे देशांतरें चाल्यो. कोइक मलता पुरुपने कहेतो गयो के तुं गुणाकरने कहेजे जे गुणधर दें शांतरें गयो एम कहीने पोते वाचालयको चालतो अचलप्टथ्वीने चलाय मान करतो चाल्यो जाय ने जूड मित्राइमां वली इर्ष्यापणुं.

हवें गुणधरिमत्र देशांतरें गयो एवी वात कोइकना मुखर्षी सांजलीने तेने मलवाने अर्थे गुणाकरिमत्र उतावलो उतावलो तेनी पढवाडे तेने मलवा चाल्यो जेम महादेवनी पढवाडे पार्वती उतावली जाय तेम असूरी वेलायें पण नगर बाहेर केटलिएक जूमि मूकी गयो अहो जूर्ड मित्रने मलवानो प्रेम! एवामां तो सूर्य अस्त थयो तेवारें कुमित डर्जननी पेरें अं

धकार प्रगट ययुं एवामां कोइक पंथीने मार्गे आवतो देखीने तेने गुणा करें पूछ्युं के सथवारो केटलो एक दूर गयो ? तेवारे तेणें कह्युं के साथतो घणो वेगले गयो माटे आ असूरवेलाये तुजने नही मले तेथी तुं पाछो वस्य रात्रिने समये गाम बाहेर रहेवुं नही एम कहीने ते पंथिक गाममांहे गयो.

हवे गुणाकर बाहेर रह्यो यको चिंतवे हे के मित्र यक्ने इर्जननी पेरे कह्याविना केम जतो रह्यो में कांइ एने इहच्यो तो नथी अथवा कोइ इ र्जनें तेनुं व्युद्धाहित चित्त कखुं हुशे! वजी विचाखुं जे संसारनी कारमी माया है सर्व कोइ खार्थनुं सगुं है माटे ए संकल्प विकल करवाथी हुं था य माटे हवे तो ए देशांतरनेविषे ज्यां होय त्यां एने कुशल होजो अने क्रोडोगमे लक्की उपार्जिने वहेलो आवजो हवे हुं एकलो शीरीतें लक्की उ पार्जिश अने मित्रविना व्यापार पण याय नहीं महारे कांइ पुंजी नयी पि ताने इब्यें पण लक्की चपार्जवी घटे नहीं मुजने पितानी लक्की जोगव वी तथा पितानी लक्कीयें दान पुण्य करवुं पण घटे नहीं दुं पारकी मुडि यें व्यापार करुं तो ते पराचवनुं कारण थाय. जे पारकी मुंडियें व्यापार करे ते निरिधकार है वली ते अधमपुरुप जाणवो त्यां सुधी ते पुरुपनी श्लाध्यता, तथा त्यांसुधी ते पुरुष गुणी कहेवाय के ज्यां सुधी धनने अ र्थं कोइना मुख साहामुं जोवुं पडे नही; तथा वली लक्की उपार्जिने सुपात्र ने पोष्याविना अने इःखियानां इःख टाव्या विना हे जीव! तुं गुणाकर पण केम कहेवाइश माटे हवे जेवारे पोताना नाग्ययोगथी कोइरीतें कांइ क धननुं चपार्जन करुं तेवारेंज महारे घेर जवुं त्यांसुधी घेर जवुं नई।.

एम विचारी इर्प्यारिहत ने हृद्यजेनुं एवो गुणाकर ते पोताना जाग्य नी परीक्षा करवा साधुनी पेनें ग़ुन्यथको ते रात्रियें तिहांज रहेतो हवो एवामां तिहां पासेज एक वटनृक्त ने तेनेविषे एक जुजिष्य नामे यक्षरा ज रहे ने ते यक्षनी पासें एक बीजो यक्ष जतावलो अज्ञवानुं करतो आ काश्यी जतरीने आव्यो ते अज्ञवानुं जोइ गुणाकर विस्मय पाम्यो थको त्यां नो मानो वेनो रह्यो हवे ते यक्ष पोताना स्वामी जुजिष्य यक्षने निवास कहेतो हवो के हे स्वामिन ! इहांथी शो योजननी जपर श्रीपुरनामें नगर ने. तिहां लक्कीवंत कोटीध्वज घणा व्यवहारिया रहे ने ते सर्वमां आन व्यवहारिया मुख्य ने ते दीन इःस्थितने आधारजूत ने तेनां नाम कहुं

बुं. १ धनाकर, १ धनपित, ३ धनधमें, ४ धनेश्वर, ए धनसार, ६ धनगुं रु, ७ धनाढ्य, ए धनसागर. ए आते साचा नामना धणी हे, राजाने मानवा योग्य हे, ते आतेने घणा पुत्र हे तेनी उपर एकेकी पुत्री यह हे ते मातापिताने घणी वल्लन हे तेनां नाम कहुं हुं. गुणावली, गुणवंती, सु गुणा, गुणमालिनी, गुणमाला, गुणलता, गुणश्री अने गुणसुंदरी ए आते रूपेंकरीने आत दिशाकुमारीने जीते एवी हे मातापिताने घणी इष्ट हे, प्राणयकी पण अधिक प्रिय हे, ते नरयोवनवंती यह हे आत दिशाना र हेनारा तरुण पुरुपने मोह पमाडवाने मोहनवेली हे, चोशवकलानी जा ए हे, आते जणी वयेंकरी सरखी हे, आतेनुं एकज मन हे, गुणेंकरी, आवारेंकरी, प्रीतियेंकरी सरखी हे बालपणायी एकती क्रीडाई करे हे आते कन्यायें एकज प्रतिज्ञा करी हे के आपणें एकेकनो वियोग सहन याग्ने नही माटे आपणे एकज नरतारने वरवो. आपणने योग्य रूडो जगतमां प्रशंसवा योग्य एवो नरतार मलज्ञे तोज परणवुं अन्यया परणवुं नहीं जेमाटे घरवास ते बंदीखाना रूप हे माटे मनोवांहित योग विना ए हुं अन्न अने वली खुंखुं खावुं ते कोण निपुण थइने खाय ?

एटला माटे तेवो वर मेलववा सारुं तेमनां माता पितायें निमित्तिया ने तेडावीने पूठ्युं तेवारें ते शास्त्रमां निपुण एवो निमित्तियो कहेतो हवो के एना वरनी तमे चिंता म करो तमारी सर्वनी गोत्रदेवी एकज हे तेनी निक्त करीने आराधो ते तुष्टमान थइने वरनो योग मेलवी आपशे तेवारें माता पितायें पूजादिकेंकरी गोत्रदेवी आराधी थकी तुष्टमान थइने स्पष्टपणे कहेती हवी के तमे विवाहमहोत्सवनी सामग्री सर्व तैयार करो. जेवारें निमित्तिये कहेला लग्ननो दिवस आवशे तेवारे रूपेंकरीने कामदेव सरखो वर हुं तमने लावी आपीश. एवं गोत्रदेवीनुं वचन सांनली ते व्यवहारिया हर्ष पाम्या थका आहे कन्याने शणगार करावी विवाहनी सर्व सामग्री ते यार करी वाट जोइ बेहा हे ते लग्नवेला नजीक आवी हे पण वर आव्यो नथी माटे ग्रुं जाणीयें ग्रुं थशें ए कांइ खबर पडती नथी ए महोटुं कोंतुक मुजने नासे हे जे वरविना विवाह केम थाशे ते कोंतुक जोवाने तिहां घणा देवता अने मनुष्य मत्यां हे महारे पण त्यां जोवा जवानी घणी च तावल हे माटे हुं तमने तेडवासारं आव्यो हुं कांइक अपूर्व वात जोवा

माटे अथवा नोजननी वेलाये जे पोताना श्टने न संनारे ते सक्जन शा नो ? एवं कहीने शीघ ते यक् छिजिष्य यक्क्सिहत ते कौतुक जोवाने माटे आकारों ते नगरना मार्ग नणी जडतो हवो जाणियें गुणाकर कुमरने मार्ग देखाडवाने अर्थेज आगल चाल्यो होय निहं ! '

हवे ते यक्तनां कहेलां वचन सर्व गुणाकरें सांजलीने ते एकामिचें चिंतवतो हवो के धन्य हे तेने के जे ए कम्यानो जरतार खरो तथा धन्य हो तेने के जे ए कौतुक जोरो. ते नर पुरुषमांहे उत्तम जाणवा. केटलाक महारा सरखा तो वली धन उपार्जवानेविषे पण समर्थ नथी तो तेवाने ए कल्पना करवाथी शुं थाय ए संपदानुं पामवुं तो जाग्याधीन हे. हवे जो ए कौतुक जोवाय तो घणुं सारुं, पण ते क्यांथी जोवाय!! ए कौतुक जो वा पण हुं समर्थ नथी तो वली कन्या परणवाने तो क्यांथी समर्थ थाउं; माटे जेम वामणो उंचा हक्तनां फल खावाना मनोरथ करे तेम हुं पण मनोरथ करुं ते व्यर्थ हे महारे एनी होंग्र शी करवी. जे वेलायें जे काम चिं तवे ते वेलायें ते काम थाय ते नरने पंक्तितें जाग्यवंत कह्या हे तेमाटे आ ज महारा जाग्यनी परीक्ता पड़शे तेथी हुं जाणीश के जाग्यवंत छुं के न थी महारा जाग्यहण सुवर्णकुंजनी एज कसोटी हे एम विचार करतांज तेने गोत्रदेवीयें उपाडीने श्रीपुरनगरें विवाहमंनपें जइ मूक्यो. महोटा पु हथोने वांहामात्रमांज कार्य बने हे.

तिहां कांतियेंकरी अने गुणेंकरी वे प्रकारें देदीप्यमान है माटे एनुं नाम पण गुणाकर है ए गुणनो आकर है एनुं आकारों रहीथकी गोत्रदेवी कहे ती हवी अने गुणाकरना मस्तक उपर फूलनी दृष्टि करती हवी. एनुं आश्चर्य देखीने कन्याना पिता हपं पाम्या थका विचारता हवा के जेम एकाएक नवो देवता उपजे तेम ए वर प्रगट थयो तेवारे ते आहे कन्याना वापें विधिपूर्वक महोत्सव करीने कन्याचेने परणावी. मनोवांहित वर पामीने आहे कन्या घणाज हपेंने पामी. कन्याना वापे प्रत्येकें कोड कोड सोने या अने एकेंकुं गोकुल आप्युं तथा बत्रीशबद नाटक करे एनुं एकेंकुं नाटक आप्युं. तेमज रूडा वेश, रूडां आनूषण, रूडां जाजनादिक, रूडा जातिवंत घोडा, रूडी शय्यादिक, रूडां सिंहासन जहासनादिक, तथा घणी दासदासी घरप्रमुख सारसार वस्तु हाथ मुकामणीमां आपी.

हवे गुणाकर श्रीपुरनगरनेविषे रह्योथको जीजा करे हे. उदारथको उ चित दान आपे हे तेथी श्रीपुरनगरमां तेनी कीर्त्ति विस्तरी. रूडा जमाइ थी ससरानी कीर्त्ति पण विस्तार पामी. इहां गुणाकर विमान सरखा घर नेविषे रह्यो थको देवतांनी पेरें आव अयमहिपीसाथें जेम इंइ सुख नो गवे तेम ते आव कन्यानी साथें संसारनां सुख नोगवे हे. जेम आव सि दि पामीने सिद्धुरूप शोने, जेम आव दिशायें मेरुपर्वत शोने, जेम आव मूर्त्तिथी महादेव शोने, तेम आव स्त्रीसाथें गुणाकर शोनतो हवो. आव स्त्रीनी साथें विषयसुख नोगवतां, उग्यो आथम्यो पण जाणतो नथी. सुखमां मयथकां गया कालने पण जाणतो नथी. एम केटलोक काल गयो.

हवे जे दिवसनी रात्रियें गुणाकर मंदिरें नाव्यो तेवारें गुणाकरनां मा वाप अति आकुलव्याकुल थयां थकां रात्रि दिवस घणी खोल करी पण गुणाकर मव्यो नहीं तेवारें हाथमांथी जेम चिंतामणी रत्न आर्वाने जाय तेथी शोचना थाय तेम तेनें शोचना थइ एम करतां केटलोएक काल गयो. एकदा पुत्रना शोकेंकरी पीडित थयेला पितायें जोशीने पूर्व्युं तेवारे जोशीयें लग्न मांमी निरधार करीने कह्युं के तमारा पुत्रने कुशल खेम है, जाग्योदयथी संसारनां सुख जोगवे हे, लीलायें लह्मी पाम्यो हे, दाना दिक पुष्य करणी करे हे, तेणेंकरीने तेनी दिशादिशानेविषे कीर्त्ति विस्त री हे. ते पश्चिमदिशामां हे, नवी आत कन्या परप्यो हे तेनी साथें संसा रसुख जोगवे हे. ते अत्यंत सुखी हे तमे व्यर्थ चिंता करो हो. पण ते घणो दूर हे एक वर्ष पही तमोने तेना हेकाणानी खबर पडशे. अने वर्ष पढी तमने मलशे. ए महारुं वचन सत्य करी जाणजो.

एवी जोशीना मुखनी वाणी सांजनीने मातापिताने अतिशय हर्ष उ पन्यो जेटलो पुत्र मलवाथी हर्ष उपजे तेटलो पुत्रना कुशलखेमनी खबर सांजलीने हर्ष उपन्यो. हवे गुणाकरनां मातापिता देशांतिरयोने पुत्रनी खबर पूठतां पूठतां एक वर्ष ते शो वर्ष सरखुं थयुं तेवामां जेम इंड्नी सज्ञामांहे नारद आवे तेम ते राजसज्ञामां एक मागण एटले याचक बंदी आव्यो. तिहां ते गुणाकरना गुणनुं वर्णन करतो हवो. राजानी परिषदमां पण वाणियाना गुणनां जट्टादिक वर्णन करे ए याचकनो खजाव हे. ते सांजली राजा कहेतो हवो के वक्कहोठने विस्तारतो महारी आगले पण जेम इंड्नी परिषदामां सामान्य देवतानुं वर्णन कोइ करे, जेम सिंहनी प रिषदामां शीयानियानुं वर्णन करे तेम तुं वाणियानुं वर्णन करे ने ?

तेवारें याचक नष्ट पण दृढ यइने बोख्यों के हे राजन! हे सेवकजन वत्सल! हुं वाणियानुं वर्णन करुं ते तेना गुणेंकरीने करुं . केमके वनमां चपन्यां हे तो पण नला पुष्पने छुं मस्तकें आरोपण नथी करता? अथवा मृगनी नानियें चपनी एवी कस्तुरी पण छुं वाहाली न होय? तेम ते नाम्यवंत देवतायें आणेलो आह कन्यानो नरतार थयो एवो गुणा कर ते सहेज मात्र लाख सोनेया याचकने आपे हे जाणियें चालतो कल्प हक्त होयनी एवो हे. माटे तेना गुणोनुं वर्णन करुं हुं.

एवी याचकना मुखयी गुणाकरनी की र्त्ति सांजलीने सजाना सर्वलोक चमत्कार पाम्या. तिहां गुणाकरनो पितापण बेठो हतो ते विचारवा ला ग्यों जे निश्रय ए गुणाकर ते महारो पुत्रज है नहितर महारुं हृदय उहा स पामे नही. मेघनी धारायें हणाया एवा कदंबवृक्तना फूलनी पेरें उठ कोडी रोमराजी विकस्वर थइ तेम वली जोशियें पण एकवर्षमां वेकाणानी खबर पडशे एवं कह्यं हतुं माटे एमां संदेह नथी पढ़ी ते याचकने रुडी रीतें पूठी निश्चयं करी अन्योक्तियें गर्नितरचनायुक्त झेख लखी आपीने तेड वामाटे माणस मोकव्युं ते पुरुषें पण शीघ्र जइने ते लेख गुणाकरने आ प्यो गुणाकर पण प्रेमसहित पत्रने उखेडी वांचतो हवो. यतः ॥ स्वस्ति जयस्थलनगरात्, पद्मः प्रणयाजुणाकरं स्वसुतं ॥ ऋादिशति यथा श्रीजिन, गुरुप्रसादेन नः कुशलं ॥ १ ॥ स्वकुशलिकंवदंती क्राप्या नः प्रीतये त्वया यावत् ॥ अथकार्यमार्य नवतोऽभुताश्रुताकािपरमर्द्धः ॥२॥ सुचिरात्त्विद् रहमहा, इःसहइर्जिक्इः खितानां नः ॥ तेन तेनेदानीं, पत्रामृतप्रातराश सुखं ॥३॥ किंतुनवदंगसंगम, सुखाय निखिलेष्टनोजनाय वयं ॥ उच्चेस्त्वरा महेतत्, त्वरस्वतिसध्युपायविधौ ॥४॥ किंच ॥ पितरावुपेद्दय दद्दो, श्वसुरौ कित तस्थुषः स्थिरतया ते॥ सत्पुरुपपथः कथमिव, नावीति विचित्यमेतदपि ॥५॥ स्वस्तिश्रीजयस्थलं नगरथी पद्मदेव, पोताना पुत्र गुणाकरने स्नेद्धी लखेढें जे आंहि श्रीजिनेश्वर देव गुरुनी कपाची अमे सर्वेकुशल ढिये; वली तमारे पण त्यां श्रीजिनदेव गुरुनी कृपाथी कुशल हुशे तेना खबर जखवा, जेथी अति संतोप थाय अने त्यांना अथ इति यावत् समाचार जखवा, जेएो करी श्रित श्रानंद उपजे. हे श्रार्य! विशेष कामकाज लखजो श्रमेंपण श्रांही तमारा, श्रित श्रञ्जत समृद्धि मलवाविषे समाचार सांजव्या हे १ घणादिवस थया तहारा विरहरूप महाइःसह एवा इर्जिक्स्थी श्रयोत इ कालची इः वि एवा श्रमें तेने तारा कुशलपत्र रूप श्रमृतना शीरामण तुं सुख हमणां घणादिवस थयां नथी माटे ते श्रापवा हदय सदय राखवुं घटेहे. केमके तारा श्रंगसंगमना सुखंरूप प्रिय इष्ट्रजोजन साहं श्रमे सघलां श्रित शें श्रातुर हिये माटे ते सिद्ध थाय एवा उपायनी योजना तुं उतावलची कस्त तो साहं श्रयात् तने मलवाना सुखरूप इञ्चाजोजन साहं श्रमे श्रित तलियोहिये माटे जेम तरत मलवानुं सुख सिद्ध थाय तेम करीश.

एम पत्रना समाचार वांचवाथकी गुणाकरनुं मन काइक प्रेमेंकंरी आ ई जेवामां ययुं तेवामां पत्रमां आगल ते गुणाकरें अन्योक्ति तरफ जोयुं ते अन्योक्ति आप्रमाणे:- गांगेयगेयगरिमादिगुणाएकाढ्यो, विश्वेकनूपणवि दूपणसोख्यहेतौ ॥ सन्मानितोऽन्यजनतां जनितुर्न जातु, मातुः स्मरस्यपि चिरात्किमु तत्तवाई ॥ गांगेय जेवाये अर्थात् जीष्मिपतामह, सरखायं जेना गरिमा प्रमुख अर्थात् गौरवआदि आवगुणोने गायेला वे एदा अप्रगुणथी युक्त स्त्रियोना अथवा गंगाजलनी पेते गावायोग्य पवित्रतावाला गोरवआदि आवगुणयुक्त स्त्रियोनां सुख के जे आविश्वमां विशेष जूपण अने विशेष दूषण रूप हे ते सुखना हेतुनेविषे बीजा जनसमूहने मतलब खशुरादि कने सन्मान आपतो एवो तुं क्यारे पण घणा दिवस थयां पिता माताने स्मरण करतो नथी ते ग्रुं तमने योग्य हे. पही श्रंतःपुरमां जइ श्राहिस योने ते खेख संजलावी पाढ़ो खेख लखी चरपुरुपने आपी तेने विदाय करी श्वसुरादिकनी रजा जइ आठ कन्यादि सर्व परिवार संघातें श्रीपुरन गरथी निकव्यो मार्गमां गामगामप्रत्यें लक्कीनो लाहो लेतां दान पुख्य क रतां ताम ताम चमत्कार पमाडतां अविज्ञन प्रयाणें चालतां थोडेक दि वसें जयस्थलनगर आव्यो तेंवारें मातापितादिक सर्व कुटुंबें मली महाम होत्सवें करी नगरमां पधराव्यां, राजाधी मांमी गोवाल प्रमुख बालगोपाल सर्व गुणाकरना अतुव्यपुष्यनी प्रशंसा करता ह्वा. एवीरीते गुणाकर पो ताना नाम्यनी ऋदिनी परीक्वा पोते मनोवां वित अर्थे जानयकी करीने

जेम मोर वर्षादनी वाट जूवे तेवीरीतें ते पोताना मित्र गुणधरना आ गमनने जोतो हवो.

हवे गुणधर पण अनुक्रमे देशांतरें व्यापार करतो पिताने नाग्यें घणी लहमी उपार्जिने चिंतववा लाग्यों के महारुं महोटुं नाग्य हे जूर्र अक स्मात् लह्मीनी उपाजेना थइ एम हृदयमांहे अत्यंय गर्व धरतो थको जे तुच्च होय ते अब्पकार्यमांहे पण गर्वकरे. यतः ॥ एगण वीहाणार्च, दरस्स जह दोविवाह बुडाहजो ॥ तहय मुणि अपरमजा, थवेण विर्वनणाहुंति ॥ १ ॥ एम ते गुणधर कांइक जान मलवाथी संतुष्ठ थयो अने हर्जा प एं इव्य कमाववानो लोन हे तेथकी असंतुष्ट थयो एम लानथकी लोन नी वृद्धि यइ तेथी घणा व्यापार करवा मांम्या वसुवृद्धिने अर्थे अर्थात् कि रणनीवृद्धिने अर्थे जेम सूर्य अन्यदिशायें जाय तेम गुणधर पण धनवृद्धिने श्रर्थे तिहां यकी श्रन्यदेशें गयो. तिहां पण घणा व्यापार करवायी घणो लाज पाम्यो. प्रायः वाणिज्यकलामांहे निपुण होय ते धनजपार्जवाने सा वधान होय तेवारे ते महोटा गर्व सहित हर्षधरतो अनेक मनोरथनी क ष्पना करतो तिहांची करियाणां जरीने पोताना नगरजणी चालतो हवो ते जेवारे मार्गमां जाणियें अनर्थनी पदवीज होयनी एवी अटवीमां आव्यो. तेवारें जाणीयें गुणधरने मजवाज आच्यो होयनी तेम तिहां प्रजयना अ मिनी पेरे शीघ्रताथी दावानल अत्यंत प्रज्वित होतो हवो तेना नय थकी हाहाकार करवामांहे लोक सर्व तत्पर थका महोटे कप्टेंकरीने सेव को नाठा तेनी साथे जीव लक्ने ग्रणधर पण नासतो ह्वो, शकट व्यनादि क करियाणां प्रमुख सर्व जोता जोतांमां शीघ्रपणें नस्म रूप होतां हवां जेम क्रोधना उद्यथकी तप जस्म थाय तेम जस्म थयां.

तेवारें चाकर प्रमुख पण तेने निर्नाग्य निर्इच्य दिर्ही जाणीने गंमी गया. पढी ते गुणधर अतिशय खेद धरतो वनचरनी पेवें ग्रून्यचित्र ययो थको ग्रून्यवनमां फरतां फरतां कुधातृपायें पीडित थको ते अटवी उतंघ तो एक सिन्नवेश पाम्यों तिहां प्रकृतियें दयावंत एवो एक योगी तेणे दी वो ते इःख अने आर्तिथी पीडित एवा गुणधरने देखवाथी योगीने पण करु णा उपनी तेथी ते पोताने स्थानकें तेडीगयो तिहां तेने अशनादिक करावी पोताना तेने दीकरानी पेवे पोपतो हवो पढी जे पर्वतनेविषे नानाप्रकारनी

श्रोपधीर्र हे त्यां तेडी जइ पर्वतनी नीचें उनो राखीने श्रनेक श्रोपधीर्र दे खाडीने एम कहेतो हवो के हे गुणधर ! आ श्रीवधीनो समूह देखीने तुं मुंजाइशमां, पण मात्र एकज आ महोटी श्रोषधी तने देखाई हुं तेने नि शानी सहित उलखी ले अजाना यूथनी पेरे मुग्धबुदिनो धरनार एवो तुं याजे कालिचौदशने दिने रविवारनी अर्दरात्रियें जैम गुरु प्रसन्न थइ बात्र ने विद्या आपे तेम ए औपधी हुं तुजने आएं हुं ते तुं यहण करजे एम योगियें कह्याची पण रीज पाम्यों एवो ते ज्ञमरिहतपणे ते श्रोषधीने एं धाणादिकेंकरी थ्यानमां राखतो हवो. पृठी बेहु तिहांची पाठा पोताने स्थानकें आव्या रात्रिना वे पहोर अतिक्रमे थके ते योगिराज विव्नने वंध करवाना कारणजूत एवी जे गुणधरनी शिखा तेने बंध करीने पर्वतपासें आवी कहेवा जाग्यों के आ औपधी बलती दीवानी शिखा सरखी है तेने तुं महारा साहसधी साहसिक घड्ने दृढपणे पर्वतनी शिखर उपर चडी ज मणा हायनी एकमुर्वीमां पकडी माबा हायमां शस्त्र जइ यडमूजयी हे दीने जकडबंध करी मुठीमां राखजे पण मुठी उघाडीशमां श्रोपधी जइने सलसहित पाठो वलजे पण पठवाडे पुंठ फेरी जोश्शमां पाठलथी नयंक र अतिशय बिहामणा शब्द काने पड़े तेने सांचलीने पण निर्चय यको हलवें हलवें तुं पर्वतयी हेवो उतरजे. ए श्रोपधी साना सिदिनी हे जेम रसकू पिकाना रसथकी सोनुं नीपजे तेम एनाथकी पण सोनुं नीपजरो. तेथी जेम शीतल वृक्तनी बायाथी ताप जाय तेम ताहरं दारिद्य जाशे.

एवी योगिनी तत्व वाणी सांजलीने पर्वत उपर जइ जे योगियें कही ते श्रोपधीने विधिसहित जेतो हवो. ते श्रोपधी जेतां गुणधरनुं चित्त हर वाने नयंकर महारोइ शब्द यता हवा, जूत प्रेत पिशाचादि श्रष्टाष्ट्रहास्य करता श्रनेक राक्तस प्रगट थया. चारे बाजु श्रितशय बिहामणा नैरवना शब्द यता हवा पण जेम साधु पिरसह सहेवाने श्रमग रहे तेम गुणधर पण श्रमगथको सर्व उपइवने उलंघतो श्रनेक मनोरथनी माला सहित श्रोषधी लइने पाठो वत्यो ते जेम साधु इत्यथी श्रने नावथी नवस्थित ना विषम मार्गने उलंघे तेम गुणधर पण इत्यथी श्रने नावथी बे प्रकारे पर्वतना विषममार्गने नगरनी जूमिनीपेरे सुखेंकरी उलंघतो थको चाले ठे तेटले कोइ इष्टदेवें पर्वतना शिखरथकी खसाडेली एवी पाषाणशिला ते श्रक

स्मात् वेगेंकरीने गुणधरनी पुंठे पडती हवी ते शिलाना पडवाथी उपन्यो एवो जे खटखटाकार शब्द तेथकी सहसाकारें संच्रांतिचित्तंथको पढवाडे फरी जोतो हवो जेवुं पढवाडे फरी जोग्रुं के ते क्रणमांहेज जाणीये रुठीज न होय तेम ते श्रोषधी मुठीमांहेथी नाशी गइ. एवी वस्तु एवाना हाथने विषे स्थिर केम रहे ? तेवारें ते विषाद पामतो तिहांथी जइ योगिने कहे तो हवो ते सांजली ते जगतिहत वांढेक योगियें गुणधरने कह्यं के हे वत्स! ताहरुं सख महोटुं हे श्रने उद्यमपण महोटो हे तथापि तहारां पूर्वजवनां पुष्य नथी माटे पुष्यविना सघलुं निष्फल जाणवुं. यतः ॥ विकटाश्रटपर्वता टवी, स्तरवार्धिन जजनूपतीनिष ॥ श्रिष साधय मंत्रदेवता, न तु सौरूयं सुरुते विंऽनािस्तिते ॥ जावार्थः—विकट एवी पर्वतनी श्रटवी प्रत्ये जले जमण कर मोटा समुद्दोने जले तथा तथा राजाठने पण घणी सावचेती राखी सेव्य तेम ज मंत्र देवतानेपण सुखें साध्य परंतु सुरुतविना तने सुख मलवानुं नथी.

एटलामाटे धन उपार्क्कवानी खोटी आशाने मूकीने तुं ताहरा चित्तने विपे संतोष आएय. कारण के संतोप हो ते त्रणलोकनेविपे अतिशय सुखदायी हो एवं योगिनुं वचन सांजब्युं तो पण ते लोजांध धननी आशायें आगल चाव्यों ते पृथ्वीनेविपे घणो जम्यो धनना अर्थिनुं चित्त क्यांइ ठेकाणे वेसे नहीं ते जमतां जमतां मलय नामना गामपासें आव्यों तिहां तेने एक अत्यं त दंजी कपटी कपटपणे तापसनो वेश राखनार एवो कोइ परिव्राजक म व्यों तेणें गुणधरने देखी तेने धनार्थि जाणीने दयावंत थइने सर्व हकीक त पूढी, तेवारें गुणधरें पण पोतानी यथार्थ वात परिव्राजकने कही संज लावी ते सांजली परिव्राजक बोव्यों के हे गुणधर! तुं लगारमात्र इःख ध रीश नहीं हुं तहारुं इःख टालीश. तुं राता थोरना वृक्तनुं रातुं दूध ज्यां होय त्यां शोधकरीने लइ आव्यं तो हुं ताहरुं शीघ दारिड्य कार्डुं.

तेवात सांचलीने अतिशय उत्साह धरतो खोल करीने कल्पहरूनी पेठें थोरतुं रातुं इध लड़ आव्यो उद्यमिने कांड़ इष्कर नथी. पढ़ी ते गुणधर अने परित्राजक बेहुजण काष्ट्रप्रमुख सर्व सामग्री एकठी करी सिद्धि करे तेवे दिवसें ते स्थानकें जाता हवा. तेवार पढ़ी ते हरूने मंत्री पूर्वें संग्रही जे औ षधी ते सहित चह अने मनोहर काष्ट्र समूहें करी बिल उढ़ालतो चारेतरफ ते कपटमांहे निपुण एवो परित्राजक काष्ट्र खड़कीने तिहां अग्नि प्रज्वलित क

रीने पढ़ी कपटेंकरीने गुणधरने कहुं हे वत्स ! तुं महारी पासें आव्य हुं त हारी शिखा बांधुं ते सांनती गुणधर,परिवाजकपासें आव्यो तेवारे परिवाज कें दढपणे गुणधरनी चोटली पकडीने उंचो उपाड्यो अने अिवना कुंम मांहे तेने नाखवा लाग्यों तेवारें गुणधर पण तेने कपटी अनार्य जाणीने वलबल करीने परिवाजकना हाथथकी तृट्यो. पढ़ी महाकोधें इकेर थया एवा ते वेहुजण योध सुनटनी पेवें लडता ह्वा. परिवाजक जाणे जे ह मणां हुं आ गुणधरने अिवना कुंममां नाखीश अने गुणधर जाणे जे ह मणां हुं ए परिवाजकने अिवना कुंममां नाखीश. एम वेहुजणने आकरो क्षेश थयो जाणे वे प्रेतज लडता होयनी! एम शोर बकोर करता नय जांतथका ते वेहु जण बूम पाडवा लाग्या.

एवामां महापुरीनगरीयकी राजानो पुत्र तेजसार एवेनामे हे ते आहेडो करवामाटे रात्रियें वनमां रहेजो हे तेणो ते बुंम सांजली ते महापराक्रमी हे माटे धनुपवाण चडावीने वतावलो त्यां आर्व। पहोतो केम के क्षत्रिय होय ते बुंम सांजलीने वेशी न रहे. पही ते तेजसार कुमारें आर्वाने परिव्राजकथकी गुणधरने जूदो कस्यो अने गुणधरना मुख्यकं। लडाइनो व्यति कार सांजली महाकोपायमान थइ परिव्राजकने चपाडी अग्निना कुंममांहे नाख्यो. जे इप्ट होय तेने शिक्षा देवी अने सक्जननुं रक्षण करवुं. एवुं क्षत्रि यनुं विहद हे पही पारिव्राजक अग्निमां पडी सोनानो पुरुष थयो. जे अन्यनुं चिंतव्युं ते पोताने थयुं अकस्मात् सोनाना पुरुषना लाजथकी राजकुमार परम आनंद पाम्योथको जूमि खोदीने तेमां ते पुरुषने जंमास्यो. तेनी चपर नी शान कस्युं गणधरने कांइक मार्गमां जवा संबल खरची आपी विदाय कस्यो.

गुणधर पण मार्गसंबल लेइ तुष्टमान थइने त्यांथी आगल चात्यो अ नेक धन उपार्जवाना उपाय चिंतवतो विकल्प करतो विचारतो हवो के म हारुं महोटुं नाग्य जागतुं हो. जे हुं जिटलना हाथथकी हूटो अने विकट सं कटथकी उगलो. वली मार्गयोग्य संबल पण मल्युं तो हुं एम जाणुं हुं के हजी पण हुं घणुं धन पामीश. हुं हमणां जइने व्यापार करी लक्की उपा जींश देव अनुकूल होय तो शुं न नीपजे! एवं विचारी पोताना नगरन णी चात्यो जाय हे एवामां मार्गमां एक सिद्धुरुष मत्यो. तेनी साथे गो ष्टी करतां कोइक नगरना उद्यानपासे सिन्नवेश हे तिहां आव्यो. एटले नोजन वेला थइ. तेवारें ते सिद्धुरुष थोडीवार ध्यानकरीने जाणीयें पूर्वें तैयारकरीज मूक्या होय नहीं तेम सिंहकेसरिया मोदक गुणधरने आपीने कह्यं के तने जावे त्यांसुधी वुं सुखे जम्य; जेम जोजनवेलायें प्राहुणाने जमाडीयें तेम तेणें गुणधरने जमाड्यो. वली साजे घेवर साकरसहित गुणधरने खवराच्या. बीजे दिवसें घी साकर सहित लापशी जमाडी, संध्या यें मनोहर खादिम खवराच्यां. त्रीजे दिवसें प्रजातें शालिदाल पृतादिक सूखडी अने संध्याकालें लापशीनुं जोजन कराव्युं, चोथे दिवसें प्रजातें मां मादिक, संध्याये सूखडी आदिक, एम दिवसें दिवसें नवनिव रसोइ देखीने विस्मय पाम्यो थको ते गुणधर पोताना चित्तमां विचारवा लाग्यो के ए नायी महारुं कार्य थशे एम जाणी विनीतिशिष्यनी परे तेनी सेवा चाकरी करतो रहे. यतः॥ परगुणगहणं ढंदा, णुवत्तणं हि अमकक्कसंवयणं॥ निचं म दोसगहणं, अ मंतमूलं वसीकरणं॥ १॥ जावार्थः—पारका गुण वखा णवा,तेने अनुयायी यइ वर्त्तवुं, मीवां मीवां वचन बोलवां, नित्य कोइना दो पन कहेवा ए मंत्र मूल विनानुं चालतुं वशीकरण है॥ १॥

एकदा ते ग्रुणधर, हर्षेंकरी जिल्छी राजी करेलो एवो कपटरिहत ते मंत्रसिद्धुरुप ने तेने पून्नतो हवो के हे स्वामी ! तमोने आ कल्पन्न सरखी वांनित आपवानी शिक्त क्यांची प्राप्त चर ? ते सांजली सिद्धुरुप बोखो हे जड़क ! हुं पूर्वें दारिड़ी हतो ते धन उपार्जवाने अर्थें प्रध्वीमां जमतां कोइक दंजरिहत दयावंत प्रकृतियें उत्तम एवा एक कापालिकने में दीनों तेने में महारा दारिडिपणानुं स्वरूप कह्युं ते सांजलीने ते दीनार्जवत्सल दयावंत एवा कापालिकें मुजने एक वेतालनो मंत्र शीखव्यो तेनें में विधि सिहत साध्यो तेना योगेंकरी मारे आ क्षि प्रगट थाय ने तेना महिमा थकी हुं जे चिंतवुं ते नीपजे ने माटे हे गुणधर ! हुं तुजने पण क्षि वंत करीश एवी सिद्धुरुपनी वाणी सांजलीने संतुष्टमान थको एवो ते गुणधर तेनो सेवक थड़ने रह्यो घणुं धन पामवानी आशाधी तेनीसाथें गुणधरने केटलाएक दिवस मार्गमां व्यतीत थया.

•अन्यदा ते सिक्पुरुष कहेतो हवो के इहांधी ताहरो देश वामिदशायें ढूंकडो ने अने दुंतो दक्षिणदिशायें वेगलो जवानों माटे हे सखे! हे नइक! तुं कहे के तुजने केटलिक संपदानी इन्ना ने तेटली हुं नीपजावुं जेमाटे कोटी बड़गमें इव्य देवाने हुं समर्थ हुं एवं सांजलीने ते गुणधर कोटीश्वरनी क्रियें पण असंतुष्ट थको बोलतो हवो के हे सिड्पुरुष! तुं मुजने मंत्र आप्य के जे सकलसंपदानुं बीज हे तेवारे सिड्पुरुष बोल्यों हे गुणधर! कोटीसोनैयां माग्य अथवा तुजने गमेतो शो कोटी सोनैया माग्य ते हुं आपुं पण जे महाकष्ठेंकरी सधाय हे एवा मंत्रनुं तहारे शुं प्रयोजन हे ? मंत्र साधवो महाविषम हे जीववानी आशा मूकीने महा कप्टें सधाय हे तेतो कोइ महापुष्यवंत होय तोज ते मंत्रने सिड्रसनी पे रे साधी शके ए मंत्र साधतां लगारेक जो हल पड़े तो प्रेतनीपेरे महाअ नथी नीपजे मेंपण महोटे कप्टेंकरीने साध्यों हे माटे तुं इव्य माग्य ते आपुं.

ते सांनलीने गुणधर विचारतो हवो के हुं बीजा जनमां तो अयेसर हुं माटे अत्यंतशिक्तवालाने शुं इःसाध्य हे, समर्थने अणवहेवायोग्य शुं हे ? बुिह्वंतने कयुं शास्त्र अगम्य हे, हढ जहराग्निवालाने शुं अपण्य हे, महाबलवंतने शुं असाध्य हे एम जूहा अनिमानेंकरीने नहाो एवो गुण धर क्रोधिबालकनी पेहें मंत्रनी याचनानो कदाग्रह न मूकतो हवो. तवारे योगियें ते निपुणताना निधान एवा गुणधरनुं दािह्ण्य जाणी विधि आम्ना यें सहित सर्वसंपदाना संस्कारनी पेरे पोतें गुणधरने मंत्र आप्यो.

हवे ते गुणधर मंत्र पामीने आत्माने कृतार्थ मानतो ते सिक्पुरुषनी आका लड़ आनंद पामतो सुसीमापुरी नगरीयें आव्यो. त्यां पोताना मा माने मंदिर रह्यो मामायें पण गुणधरने आदरें राख्यो. एकदा समये ते गुणधरें पोताना मामाने सर्व पोतानो अनिप्राय संजलावी सर्व सामग्री तैयार करी एकलो निर्नययको कालीचौदशनी रात्रियें स्मशानमां आवी होमादिक कियाविधि सांचवीने योगिनी पेठें निश्रलमनेंकरी महाबिहाम णा उपसर्ग सहेतो अमगयको मंत्रसाधवा बेठो.

हवे एने वैतालें अनेक उपसर्ग कहा पए एकायचित्तथकी ज़ल्यो नहीं तेवारें ते वेताल अत्यंत कोपायमान थई तेने कुंजारना चक्रनी पेठें जमा ववा लाग्यो एवामां जूमिमांहेथकी अत्यंत आकरा बिहामणा एवा घुघुवा टशब्द प्रगट थया. तेवामां वली आकाशथकी अतिशय नयंकर एवा आकंद शब्द थवा लाग्या. बीजी दिशायें वली महोटा यंत्रमां घाली जलमनुष्यनी जूमिकानी पेरे पीलता हवा तेना नयेंकरी व्याकुल थवाथी गुणधरनी चेत

ना नाठी एम नष्टचेतन थवाथी डेंईवना योगेंकरी मंत्रतुं पद विसरी गयो तेने वारंवार संजारे पण सांजरे नही जेम दारिष्टिना हाथयकी चिंतामणि रत्न जाय तेम पद जतुं रह्यं एटले वेतालने उल जड्यो तेवारे महाविक राज थइने बोख्यो के हे इष्ट ! तुं सत्वेंकरी नपुंसक सरखो थइने मुजने व श करवाने वां हे माटे तुं तहारा करेला कर्मनां फल नोगव्य एम कही निनृंढीने महाक्रोधें धमधमतो खको एक काष्ट्रनो जक्टो जङ्गे जेम धा नना मुडाने कुटियें तेम ते वैताल गुणधरने मारतो हवो. तेथी गुणधर अरराट करतो धरतियें लोटतो ह्वो. नारिकनीपेरे पोकार करतो तरफ डतो ह्वो धिःकार वे मंदनाग्यना धणी ते गुणधरने, मंगोराना प्रहारथी मूर्जा आवी शरीरनी कांति करमाइ गई सुका लाकडा जेवो चेष्टारहित यइ पड्यो तेवारे प्रनातें गुएधरनो मामो खबर कहाडवा आव्यो ते गु एधरने मडदा सरखो देखीने महाखेद पामी गुएधरने त्यांथी उपाडीने घेर ल इ खाव्यो. तेणें घणी महेनतें छोषधंकरी साजो कस्रो. पढी खादर सिह त जयस्थल नगरें पोहोचाडी संतोषीने प्रीतिपूर्वक घणी आसना वासना करी मामो पोताने घेर आव्यो. तिहां गुणधरने जोइने गुणाकरने घणीज करुणा उपनी खहो जूर्र गुणाकरनुं उत्तमपणुं केवुं हे. जे तुन्न माणसनी उपर पण दया राखे हे. अने गुणधरतो गुणाकरनी क्रि संपदा सांचली तथा देखीने अंतःकरणनेविषे इष्यीहरूप अग्नियेंकरी बलतो हवो.

अन्यदा गोप्यपणे देदीप्यमान एवा सुवर्ण सरखा रथमां वेवाथकां केटलांएक माणस राजानी सनामां आवी कहेवा लाग्यां के हे राजन! महापुरी नगरीना खामिनो पुत्र तेजसार नामें कुमार हे तेने नाग्ययोगें सु वर्णपुरुष मध्यो तेने जेवारे गाजते वाजते घेर लइ आब्यो तेवारें राजपुत्रने स्वप्नमध्यें आवीने देवें कहां के परिवाजकनो जे सुवर्णपुरुष सिद्ध ययो हे ते, जयस्थल नगरनो रहेवासी पद्मशेवनो पुत्र गुणाकर हे तेना पुण्यथी थयो हे. ते महानाग्यवंत हे माटे ए सुवर्ण पुरुष ते गुणाकरने घेर स्थिरपणे रहेशे; माटे हे राजन! अमारा राजाना हुकुमथी ते सोनाना पुरुषने रथ मां. बेसाडीने अमे इहां लइ आब्या हैयें. देवनिमिन्न वस्तुनुं जावुं आववुं पोतानी इज्ञायें होयहे माटे हे नाथ! ए सुवर्णनरने तमे तरत गुणाकरने प्रसाद प्रकरो दिव्यवस्तु राजायें प्रजाने आपी प्रसन्न करवी.

तंवात सांजली ते निपुण राजा रीज पामीने बोख्यों के जेम कल्पहरू नंदनवन्मां रहे तेम सोनानो पुरुष पण गुणाकरने घेर रहेशे देवतानी वाणी कोण अन्यथा करे, बीजे स्थानकें रहेशे नहीं एम कहेतो पद्मशेवना पुत्र गुणाकरने शीघ बोलावी 'ते सुवर्णपुरुष तेने आपतो हवो,गुणाकर शेव पण राजानी आज्ञा मागी ते सुवर्णपुरुषने महोत्सव सहित पोताने घेर आणीने तेनुं फल लेतो हवो सोनाना पुरुपथकी सर्व व्यवहारिया मध्ये अतिशय नाग्यवंत थयो जेम विष्णु कोस्तु नरत्न पामीनें दीपतो हवो तेम गुणाकर पण सुवर्णपुरुषने पामीने दीपतो हवो सर्वलोक गुणाकरनी प्रशंसा करवा लाग्या.

ते गुणाकरना जाग्यनी प्रशंसा सांजलीने गुणधर खेद धरतो कोवें धम धमतो कुबुद्धि थको पाउलधी तेनो अवर्ण्यवाद बोलतो हवो. धिकार पडो एवा मित्रने के जे पोताना मित्रनी क्रिइ देखी शकतो नथी एवो ते ग्रण धर निर्नाग्यमां शिरोमणी मिय्यानिमानरूप माणिक्यनो राखनार, वाचा जनी कोडीमां मुकुट समान, श्रदृष्टमुखमांहे श्रयेतर, देपधरवामां शिरो मणी, निजेक्जनमांहे मस्तकें चढाववायोग्य, बीठाइमांहे निपुण, खज मांहे अथेसर, क्यांते अधममांहे अधम, अने क्यांते उत्तममां उत्तम, जेम इंड् अने विष्टानों कीडो तेनी पेते ए वेहुना संगने धिक्धिक् यार्ज. एम सर्व प्रकारनां इर्जेक्ट ऐंकरी सहित होवाधी सर्व नगरना जोक निरंतर उपहास्य सहित प्रगटवचनें तेनी निंदा करता ह्वा. जाणियें हत्यादिक पाप कखा होय तेम सर्वने पोतानुं मुख देखाडवाने असमर्थ एवो जङ्काये पीडिन उ िद्म मनवालो यको अदेखाइने लीधे ते ग्रणधर इःखें बांमबा योग्य एवा प्राणने पोते गलेफांसो खाइने त्यजतो ह्वो जेमाटे पोतंज पोताना श्चात्मानो वैरी थयो. माटे धिःकार होजो संसारनी विटंबना प्रत्यें. ते गुण धर मरण पामीने तिर्येच नरकादिकनां लाखो प्रकारनां इःखनी खाण हो तो हवो. जे धर्मरहित प्राणी होय ते आ जवें अने परजवें इःख पामे पण सु ख क्यांथी पामे ? तेम ते ग्रणधर इःखनो जोगवनार ययो. हवे ते इःखना ञ्चागार सरखो एवो गुणधरनो व्यतिकर सांजलीनं गुणाकर वैराग्य पाम्यो थको विशेष प्रकारें धर्म करतो हवो

अन्यदिवसें नगरना उद्याननेविषे श्रीधर्महर्षएवेनामें केवली नगवान आवी समोसस्या तिहां गुणाकर ते केवली नगवानने वांदी धर्मदेशना सां जलीने पोताना तथा पोताना मित्र ग्रणधरना पूर्वला जव पूछतो हवो. ते वारे केवली कहेता हवा के हे जह! तमे पूर्वे एज नगरनेविषे विष्ठ अने सुविष्ठ एवे नामे वे जाइ वाणिया हता. तेमां विष्ठतो इष्टमित थको सर्वने त्रास पमाडे कोइने आदर सन्मान न आपे,खजनमे पण इर्क्जननी पेतें गणे अंगारानी पेते पोताना परिवारने पण इःखदायी, कुलमां श्रंगारा सर खो, मित्रने शत्रुनीपेरे जाणे, कोइने उपकार न करे, इिख्याने सुख्या नीपेरे माने, कोइनी उपरे चित्तमां अनुकंपा करे नही. निरंतर इष्टक्में ने उपार्के सधर्मीने अधर्मी करी माने अने अधर्मीने धर्मी करी माने. जिक्चाचरने आंगणे पण आववा दिये नही, सारा उत्तम जोगनी तो वां बाज न थाय अने सारा योगनो पण अर्थी नही. सारा आहारनो तो आजिलाषज थाय नही. जाणीयें सर्वदा देवें ह्ल्योज बे, फाटां हुटां ही णां अतिशय मेलां जीर्ण वस्त्र पहेरे. पोताना स्वजनोथी तर्क्जना पाम्यो थको महोटा लोकें निंदा कखोथको, जोगीपुरुषें हास्य कखो थको बते इव्यें दारिष्ठीपणुं जोगवतो इःखी बतो जाग्यवंत पण निर्जाग्यमां शिरोमणि सरखो देखाय एवो विष्ठनामें जाइ हतो.

अने सुविष्ट तो उत्तमजीवोने घणो प्रशंसवा योग्य, संतोपी, सुबुिह्नों धणी, सर्व लोकोने उपकारनो करनार, याचक लोकने कल्पवृक्ष सरखों वांडित दाननो देनार, गुणेंकरी आनूषण समान, औदार्य गांजीयीदिक अनेकगुणसंपन्न हतो जो के ते बेहु नाइ हता तो पण तेमां रत्नने पापाण जेटलो अंतर हतो. यतः ॥ अक सुर हीण खीरं, कक्कर रयणाइ पन्नरा दो वि ॥ एरंम कप्पतहणो, हस्कापुण अंतरं गहअं ॥ १ ॥ नावार्यः—आकडा वुं दूध अने गायनुं दूध ए वे दूध हे तथा कांकरा अने रत्न ए वे पापा एनी जाति हे तथा एरंम पण वृक्ष हे अने कल्पवृक्ष पण वृक्ष हे पण ते सर्वनो मांह्रो मांहे घणोज अंतर हे तेम ते वे नाइने पण मांहेमांहे प्रीति घणी हे, वेहु एकहा रहे हे, क्लमात्र जुदा रहीशका नथी तोपण हाया अने तापनी पेहें पोतपोंतानो स्वनाव मूकता नथी.

एकदा थोडाकालमां मोक्ने जनारो एवो कोइक तपस्वी मासक्रमणने पार णे सुविष्टना घरनेविषे आहारने अर्थे आव्यो तेने देखीने सुविष्ट एवी नावना नाववा लाग्यो के खहो आ महारे घेर तो वादलविना वर्षाद थयो. फूल विना फल थयां जेमाटे आ जंगमतीर्थरूप मुनिमहाराज महारे घेर पधा खा एवं। अत्यंत मनमां जावना जावतो उत्तम जातिना सिंह केसरीया आत प्राप्तक मोदक मुनिने वोहोरावीने जेम धन पामवाथी आनंद प्राप्त थाय तेम ते अपूर्व परम आनंदने जोगवतो हवो. हुं जाएं छुं जे जेनी उपमानेविषे विश्वनुं पण दारिद्य टले एवं ए दान है. जेमाटे चित्त वित्त अने पात्र ए त्रण योग्य ते सुविष्टना' पूर्णजाग्यें मत्यां. यतः ॥ कस्सेचिय होइवित्तं, चित्तं अते उत्तयमन्नेसिं ॥ चित्तं वित्तं पत्तं, तिन्निवि केसि धन्ना एं ॥ जावार्थः—केटलाएकने वित्त होय हे, अन्यने मन होयहे तथा अन्यने वली चित्त अने वित्त ए वे पण होय हे परंतु चित्त वित्त अने सुपा त्र ए त्रणेनो योग तो कोइएक जाग्यवंत होय तेनेज मले हे ॥१॥ ते दा नना प्रजावयकी ते सुविष्टें अतुत्य जोगकमे वांध्युं सुपात्र दाननुं कार्य ते सुखलक्ष्मीनो अने सुखसंपदानो संचयकार हे.

तिहां विष्ट तो निरुष्ट चित्तयको जेम कोइने जूत वलग्यो होय ते यहा तहा लवे तेम कांइक हसीने बोख्यो जेहने जेवुं बोलवुं उचित होय ते तेवुं बोले तेम बोख्यो के अहो ए अखंम पाखंमेंकरी लोकोनां घर लूंटे वे ए महाधूर्त वे तें फोकट एने दान आप्युं जेम राखमांहे घी नाखवुं जेम पाणीना प्रवाहमांहे मूतरवुं तेम एने दान दीधानुं फल जाणवुं एने आ पवा करतां तो पोते पेटमांज खाइये ते सारुं एम मुनिनी निंदा करवाधी आकरुं अग्रुजकमें बंधाणुं. जे जोगव्या विना बूटकोज थाय नही एवुं निकाचित कमेबांध्युं त्यां ते विष्टने जेम घूडने सूर्यनुं दर्शन इःखदायी थाय तेम ते मुनिनुं दर्शन इःखदायी थायुं.

हवे मुनि आहार लड़ने चाल्या तेने केटलिक नूमिका पर्यंत पोहोचाड वा सुविष्ट आव्यो मार्गमां सुविष्टें मुनिने तत्त्व पुठ्युं तेवारें मुनि बोल्या हे महाजाग ! मुनिने गोचरीनी एकायतामांहे धर्मकथा कहेवी निषेध हे एटला माटे अवसरें उपासरे आवीने तत्त्व सांजलजो सुविष्ट पण अवस रें तिहां जड़ मुनिपासें आवी वांदीने समीपें बेठों एटले मुनि बोल्या धर्म बे प्रकारनो हे एक साधुनो अने बीजो श्रावकनो धर्म, तेमां साधुनो धर्म पालवो इष्कर हे अने श्रावकनो धर्म पालवो सुकर हे ते समकेत गुणपू विक बारवतरूप यथाशक्तियें पालियें इत्यादि, ते साधुयें विस्तारपणे धर्म कह्यों ते सांजलीने सुविष्ट मुनिप्रत्यें विनवतों हवो है स्वामि! बारव्रतमां है जे व्रत सुखें पक्षे ते मुजने कहो तो हुं ते अंगीकार कर्क तेवारें मुनियें ते सुविष्टने सर्वदा दान देवाने रुचिवंतों जाणीने बारमुं अतिथिसंविज्ञाग व्रत अंगीकार कराव्युं. सुविष्टें पण ते अंगीकार कर्स्नुं के महारे जावजीव नि त्य साधुनी योगवाइयें निश्चें ते व्रत पालवुं एवं सुविष्टनुं वचन सांजलीने धर्महर्षमुनियें तेनी घणी प्रशंसा करीने कह्युं के धन्य वे तुजने के जेनी धर्मनेविषे आवी बुिक् वे पवी ते सुविष्ठ पण मुनिने वांदी हृदयमां हर्ष धरतो पोताने मंदिर आव्यो. ते दिवसयी अवश्य साधु अथवा साध्वी जेनो योग बने तेहने निरंतर जिक्येंकरी प्रतिलाजीने पवी जांजन करें वली ते साधु साध्वीने रहेवामाटे वसती एटले जगा आपे. वस्त्र पात्र उपिध प्रमुख जे जोश्यें ते सर्व आपीने वली एम कहे के जे जोश्यें ते नि त्यें आपणे घेरथी जइ जाजो आपणे घेर सर्ववस्तु ग्रुक् मान वे.

एम नित्यविनित करे ते घणाकालसुधी त्रणेवर्ग साधीने समाधे आयु पूर्ण करीने देवकुरु क्त्रनेविषे उत्कृष्टी संपदायें त्रण पब्योपमने आउखे यु गिलयापणे उपन्यो अतिअङ्गत नाग्यनो धणी थयो. त्यां दशजातिनां कल्प वृक्त वांगित पूरे गे, तिहांथी आयु पूर्ण करी सौधमदेवलोकें देवता थयो. तिहां घणी देवांगना साथें देवलोकनां सुख नोगवी एक पब्योपमायु पूर्ण करीने तुं इहां गुणाकर थयो गे तें जे पाग्नेनवे मुनिने आत मोदक आ प्या हता तथी तुं इहां आत कन्या अने सुवर्णनी आतकोडी पाम्यो. अ ने वली जे तें पान्नेनवें अतिथिसंविनागत्रत अखंम पाल्युं हतुं तथकी तुं हमणा अखंम सोनानो पुरुष पाम्यो.

तथा तहारो जाइ विष्टतो मुनिने दानदेवानी निंदा करवाथकी मरीने पूर्वना अन्यासथी तिहां तहारा घर आगल कृतरो थयो. जेम निधाननी उपर सर्प रहे तेम ते तिहां रहेतो हवो बलात्कारें काढ्यो थको पण घर मू कीने जाय नही. एम करतां ते कृतराना शरीरमां कीडा पड्या ते वेदनाथी मरीने तेज सुविष्टना घरपासे विकराल बिलाडो थयो. ते बिलाडो मरीने जन्म दिही एवो मातंग थयो तिहां घणी जीवहिंसा करी मरण पामीने चार पत्योपमने आउसे पहेले नरकें गयो. तिहां इःखनी खाणनेविषे जेम मत्स्य अग्निमां तरफडे तेम महाकष्टं काल पूरो करतो हवो. जुवो पाठला

नवना कमेनी इष्टता केवी है पही ते नरकथकी निकलीने दैवयोगें इहां धनंजयज्ञेवनो पुत्र ग्रणधर एवं नामें थयो, पाढलानवना स्नेहने अन्यासें इहांपण तहारी मित्राइ थइ. पाढलेनवें मुनिनी निंदा करी ते कमेना प्रना वधी धनरहित थयो तथा घणां इःख नोगव्यां अने वली लेशमात्र धर्मनो उदय थयो नही पूर्वें धमेदाननी तथा मुनिनी निंदा करवाथी इलनबोधी थयो. अनंतइःखनो विनागी थयो पाढले नवें धर्मनो हेषी हतो तेथी आ नवमां पण धर्मनो हेषी थयो. जेवुं वीज वाव्युं होय तवां फल नीपजे. आकरां कम वांध्यां माटे घणो संसार रफलको.

एवीरीते धर्महर्षमुनिना मुखयी पोताना तथा ग्रणधरना पाठला नव सांजली प्रतिवोधपामीने धर्मनेविपे बुिह देतो हवो. पठी ग्रणकरें सोनाना पुरुपयकी दिरिह्ना दिरिह्पणाने टालवेकरीने सघली पृथ्वी अदिहि। करी तथा क्णीनां क्ण उताखां अने वीजा दानिना दानिपणाने आकाशकुसु मनी उपमाने दानेंकरी विस्तारतो हवो अर्थात् पाता जेवो कोइ बीजो दानी न थयो. पृथ्वीनेविपे परमेश्वरना अनेक प्रासाद कराव्या. अनेक तीर्थना संघ काढी यात्राउ करीने पामवाने अत्यंत इर्जन एवी संघवीनी पदवी ने पामतो हवो. साते खेत्रें धन वावरीने संपदानुं सफलपणुं करतो हवो. धर्मनेविपे सर्वगृहस्थमांहे अयेसरी थइ घणो काल गृहस्थधम आराधीने अवसरें गुरुनी योगवाइ पामी चारित्र लइ अखंम अतिचार रहित चारित्र पाली बारमे अच्युतदेवलोकें देवपणे उपन्यो; तिहांची चवी महाविदेहकें त्रं अवतरीने चारित्र लेइ मोकें जाजे आ ग्रज अग्रजना उत्कृष्टा फलनी प्राप्तियें गर्नित एवं बेहु मित्रनुं चरित्र सांजलीने जोनव्यो! जो तमने मो कें जवानी इन्ना होय तो अतिथिसंविनाग व्रतनेविषे यह्न करो. ए बारमा व्रतनेविषे ग्रणाकर अने ग्रणधरनी कथा कही॥

हवे ए बारमा अतिथिसंविजागव्रतनेविषे ए कह्या एटलाज अति चार न जाणवा परंतु बीजापण अतिचार हे ते देखांडे हे.

सुहिएसु अ डहिएसु अ, जामे अ संजएसु अणुकं पा॥रागेणव दोसेणव,तं निंदे तंच गरिहामि॥३१॥

अर्थः-साधुने वेषे ते केवा साधु तो के ज्ञान दर्शन चारित्रनेविषे मय

वे एवा सुखिया साधु तेनेविषे वली केंवा साधु तो के रोगादिकेंकरीने ग्ला न श्रयवा श्रधिक तपस्यायेंकरी ग्लान श्रयवा उपियें रिहत होय एवा इःखिया (श्रसंजएसु के०) पोतें पोताने वंदे चालनारा नही पण ग्रह्मी श्राह्मायेंज चालनारा एटले विचरनारा एवा साधुनेविषे श्रन्नपाणी वस्ना दिकना दानरूप निक्त करवेकरी श्रमुकंपा कीधी होय इहां श्रमुकंपाशव्दें करी निक्त जाणवी जेमाटे कह्यं वे के यतः॥ श्रायरिश्र श्रणुकंपाए, गन्नो श्रणुकंपिन महाजागो॥ गन्नाणुंकंपाए, श्रव्ववित्त कयातिन्नो॥ १॥ जा वार्यः—श्राचार्यनी श्रमुकंपायें गन्ननी श्रमुकंपायें करी महोटा जाग्यवंत गन्ननी श्रमुकंपायें तीर्यनो श्रविनेद कस्नो॥ १॥

हवे ते अनुकंपा केवीरीतें करी तोके रागेणव एटजे आ महारा खजन के एम खजनिम्त्राहिकनी प्रीतियेंकरीने जिस्त करी होय पण गुणवंतनी बुिक्ये नही एवा रागेंकरी अथवा हेपेंकरी ते निंदायें जिस्त करी होय जे मधन धान्य खजन झातियें रहित तथा कुधा त्यायें पीडित सर्वथा निर्म तिक एवा ए साधु के माटे एने आधार देवो ते योग्य के अथवा एने बी जे क्यांइ मजतुं नथी माटे इहां आव्या के तेने आपो एम निंदापूर्वक अनुकं पा करवी ते पण निंदाज के ते अग्रज दीर्घ आज्ञानी हेतु के. यतः ॥ तहा खबं समणंवा माहणंवा संजय विरय पिडह्य पच्छाय पावकम्मे हिनि ता निंदिता खिंसिता गिरहिता अवमनिता अमणुनेणं अपीइकारगाणं अ सणं पाणं खाइमेणं साइमेणं तेणं पिडजाजिता अग्रह दीहार्च अचाए क ममं पगरेति ॥ जावार्थः—तथा रूप साधु अथवा श्रावक संयित विरति प्रतिहत एटजे हिल्यां के पच्छ्यां के पापकमें जेणें तेनी हेजना करी, निंदा करी, खिंसाकरी,गर्हा करी, अवगणना करीने,तेमने अमनोङ्गपणे अप्रीति ना कारक एवा अग्रन पान खादिम खादिम प्रतिज्ञां तेथी अग्रज दीर्घ आज्ञान करीनुं उपार्कन करे ॥

अथवा सुित्या इः ित्या असंजतनेविषे अथवा असंयित पासकादिकने विषे अनुरागें अथवा देपंकरीने निक्त करी होय पाणी पुष्प फल अनेपणीय करे इत्यादिक तेमां रहेला दोषने मत्सरेंकरीने देखांडे अथवा असंयित ते वकायनी विराधनाना करनारा एवा अन्यदर्शनीनेविषे ते एकदेश एकगाम एकगोत्रना एकज्ञातना उपन्या वैयें एवा रागेंकरी तथा प्रीतियेंकरीने आ पे अथवा तेनी उपर इपेंकरीने एटले आ श्रीजिनशासननो प्रत्यनीक है, सम्यक्दर्शननो उञ्चापक है, चतुर्विध श्रीसंघनो प्रत्यनीक है इत्यादिक अनेक दोपनुं नाजन है माटे एने दान देवाथी शुं थाय, एम हतांपण ते मि थ्यात्वीना नक राजादिक होय तो ते राजादिकना जयथी दान आप्युं हो य एवा प्रकारनुं जे जे दान दीधुं होय ते सर्वने हुं आत्मसाखें निंडुं हुं. गुरुनी साखे गईं हुं ए कांइ अनुकंपादान पण नहीं. अनुकंपादान कहीं यें. यहा ॥ कपणे अन्नदिरें, व्यसनप्राप्ते च रोगशोकहते ॥ यद्दीयते कपार्थं, अनुकंपा तन्नवेद्दानं ॥ कपणनेविपे,अन्नने मागवा आवेला दरिइनि, इः वि याने अने रोगथी तथा अपसोसथी पीडायेलाने कपाकरीने जे आपनुं ते नुकंपादान कहेवायहे.

तथा जे शरीरनुं सामर्थ्य हतांपण दातारनी पासें आवीने अन्ननी प्रार्थ ना करे तो तेपण प्रायः दिही सरखोज जाणवो माटे तेने आपनुं तेपण अनुकंपादान कहीयें. ते दानने परमेश्वरें निंदवा योग्य कह्यं नथी वीतरा गेंपण वरसीदानने अवसरें पोतें वरसीदान दक्ष्ने दाननो मार्ग प्रकाश्यो हे उक्तंच ॥ इयं मोक्ष्पा दाने, पात्रापात्रविचारणे ॥ दयादानं तुसर्वक्षेः, कुत्रापि न निषध्यते ॥१॥ जावार्थः –ए अनुकंपादान मोक्ष्पा आपे, पात्र कुपात्रनी विचारणा न करवी दयादानतो सर्वक्षें क्यांयपण निषध्यं नथी.

तथा ॥ दानं यत् प्रथमोपकारिणि न तन्त्यासः स एवाप्यते,दीने याच नमूत्यमेव दिवते तिकं न रागाश्रयात् ॥ पात्रे यत्फलिविस्तरियतया तद्दा विंकं वा न किं, तद्दानं यप्पेत्य निःस्प्टहतया क्षीणे जने दीयते ॥१॥ जावा र्थः—तेम जे दान प्रथम उपकारिनेविषे देवुं, ते दानने दान न कहीयें. ते तो मुकेली यापणने बदले अपाय ने माटे ते दानमां गणाय नही. तथा दीनने देवुं ते याचनाना मूलयी लेवुं थयुं, वली स्त्रीने देवुं ते दान नही ते रागना आश्रयथकी देवुं नथी ग्रुं? अने पात्रनेविषे जे दान ते फलने विस्तारे माटे अतिप्रयपणे देवुं. ते वारु वार्षिकदान एटले वरसीदा न नहीं ग्रुं? त्यां दान जे निःस्प्टहपणे पामीने क्षीण जनने दीजीयें ते अ नुकंपादान कहीये ॥ १ ॥ ए एकत्रीशमी गाथानो अर्थ ॥ ३१ ॥

हवे साधुनेविषे संविचाग आश्रयीने जे कांइ करवुं घटे ते न कखुं होय ते पडिक्कमवाने गाथा कहे हे.

साहूसु संविजागो, न कठ तव चरण करण जतेसु॥ संते फासु अ दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३०॥

अर्थः-(तव के०) तप ते बाह्याप्यंतर रूप बार नेदें जाणवुं तेनी वि रोष व्याख्या महारा करेलां अर्थकौ मुदीनामा यंथयी जाएजो तथा (चरण के॰) चरणसीतेरी ते पांच महाव्रत, दशप्रकारनो श्रमणधर्म सत्तरप्रकारनो संयम, दशप्रकारनो वैयावज्ञ, नवप्रकारें ब्रह्मचर्यनी युप्ति, ज्ञान दर्शन अने चारित्र, बारप्रकारनुं तप, चारप्रकारना क्रोधनो नियह, ए सीतेरनेद जाणवा ते सर्व नेद सुलन हे परंतु संयमना सत्तर प्रकार वे ते मांहेला एकतो पांच आश्रवधी विरमवुं, पांच इंड्यिनो नियह कर वो, चार कषायनो त्याग अने मनदंम वचनदंम तथा कायदंम ए त्रणदंम नो त्याग ए सत्तरनेद ने अथवा पृथ्वीआदिक पांच थावर तथा बेंड़ी तेंड़ी चौरिंड़ी अने पंचेंड़ी एवं नव अने दशमो अजीवसंयम तिहां एथिव्यादिक नवप्रकारना जीवोनी रक्ता करी. तेमज दशमुं प्राणीना उपघातना हेतुरूप एवी जे पुस्तकप्रमुख अजीव वस्तु तेनुं सेवुं मूकवुं ते जीवयत्वथी जय णाये मूकवुं जेवुं, जो ते पुस्तकमांहे मिक्का मांकेड प्रमुख चंपाइ पीजाइ जाय तेना रुधिरेंकरी अक्र फीटी जाय तथा हिंसा थाय माटे इपमकाल ना दोषथी ज्ञानगुऐंहीन एवा जे शिष्यादिक तेना उपकारनेअर्थे जयणा यें प्रतिलेखना प्रमार्जनपूर्वक पुस्तकादिक लेवुं मुकुवुं ते ख्रजीव संयम जा एवो एवं दशप्रकार थया. अगियारमो प्रेक्तासंयम ते बेसवा जववादि जे कार्य करवुं ते पिडलेही पुंजीने करवुं. बारमो उपेक्दा संयम ते जेकोइ सं यमथकी प्डतो होय अथवा संयमनेविषे सीदातो होय तेने सहाय देवो तेरमो प्रमार्क्जना संयम ते श्रावक वेतेयके रजोहरऐंकरी पगनी रज पुंज वी. चौदमो पारिष्ठापनां संयम ते जे कांइ परवववुं पडे ते विधियेंकरी पर ववबुं. पन्नरमो मनसंयम ते मननेविषे चेतन तथा अचेतननी उपर इोह अनिमान इर्थादिक सर्व ग्रांमीने धर्मध्यानादिकनुं चिंतववुं. सोलमो वचन संयम ते अतिआकरा करणवचननुं बोलवुं हांमीने नाषा सुमतियें सुनना

पामां प्रवर्त्तवुं. सत्तरमो कायसंयम ते कायाथकी धावन वलनादिक ढांमीने ग्रुनिक्रयामां प्रवर्त्तवुं ए सत्तरनेद संयमना प्राणीनी दयारूप जाणवा.

तथा (करण के॰) करणसीतरीना सीतेर चेद ते चारप्रकारनां पिंम जे श्राहारादिक लेवां तेनी विद्युद्धि, पांच समिति, बार जावना, बार प डिमा, पांचईित्यनो निरोध, पञ्चीश प्रतिलेखना, त्रणग्रुप्ति तथा इव्यथी, केत्रथी, कालथी श्रने नावथी ए चारप्रकारना श्रानियह एवं सीतेरचेद करण सीतेरीना प्रवचनसारोद्धारादि यंथमां प्रसिद्ध हे.

एरीतें तथ तथा चरण करणनी सीतेरीयें युक्त एवा साधुनेविषे वर्ती योगवाइयें फास एपणीय एवा अन्नादिकनो संविज्ञाग न कस्यो होय ते आतमानी साखें निंडं बुं. गुरुनी साखे गईं बुं. इहां शिष्य पूर्व वे के स्वा मी! चरणसीतरी करणसीतरीमांहे तप आवी गयुं तो वली तप जुड़ं शा माटे कहां है तेने गुरु उत्तर कहे वे के तपस्यायकी निकाचितकमें क्रय पाय वे तेमाटे तपनुं प्रधानपणुं देखाडवाने अर्थें जुदो कह्यो. यतः ॥ कडाणं कम्माणं, पुविंडचिन्नाणं इपडिकंताणं॥वेइ मुक्तो नथी, अवेइ तवसा वाजो सइता॥ जावार्यः—कस्या कमेने पूर्वें जोगव्यां न होय, आलोयां न होय,वेद्यां न होय तो ते विना मोक् नथी माटे ते कमेनो तपंकरी क्रय करे ॥३१॥

इति श्रीतपागन्नीयश्रा ६प्रतिक्रमणसूत्रवृत्तो शिक्तावताधिकारे चतुर्थोऽ धिकारः संपूर्णः ॥ इति श्रीश्रावकना श्रतिक्रमणासूत्रना वालाववोधनेविषे चोथो श्रधिकार संपूर्ण थयो ॥ ए वारवतनो श्रधिकार संपूर्ण थयोः

> हवे संजेषणाना अतिचार पिडक्समवाने गाया कहे है. ॥ इह लोए परलोए, जीवीय मरणेअ आसंसपटी गे॥ पंचिवहो अइआरो, मा मद्यं हुक मरणंते॥३३॥

अर्थः—इहां प्रयोग शब्द पांचे अतिचारमां जोडवो तिहां इहलोक ते मनुष्यलोक एटले इहांथी मरीने राजा शेव सेनाप्ति आदिक यावाना अ निलापना चिंतनरूप व्यापार करवो ते प्रथम इहलोकाशंसप्रयोग अतिचार.

१ देवेंड्ादिकनी पदवी वांढवी ते बीजो परलोकाशंस प्रयोग अतिचार.

३ कोइकें अनशन करेथके अनेक याम नगरना लोक पोतषोतानी क्र ि६ लेइने वांदवा आवे यके ते संघमली निरंतर नवनवा महोत्सव करता देखी तेनां करेलां गीत गान नाटकादिक देखी तथा नाना प्रकारना स्वी पुरुषोयें अत्यंत चतुराइयें करी तथा अतिशय कलायेंकरी अकृत शोना बनावी है ते देखीने तथा अति कोमल सुललित एवा कोइ मृदंगादिक अने वाजित्रना शब्द सांनली तथा चतुर विवेकी एवा नरनारीना अनेक संघ आवी नवनवां वस्नानूषण माला पहेरीने गीत गान वाजित्रना नाद नाटकादिक करता एकेकथी आगल पंडतां देखीने एवी अनेक प्रकारनी पो तानी आगल लोकोयें करेलां शोना सत्कार सन्मान वंदनादिक बहुमान देखीने तथा सुविहित गीतार्थ आचार्यादिकें प्रारंजेली वारंवार सिक्षांत पु सक वांचनादिक बहुमान सहित धमेदेशनादिकने देखीने तथा वारंवार रूडा गुणिजनो धमेधुरंधर धमेमां प्रवीण एवा साधार्मजाइन धर्मा जीवो नी श्रेणियोयें करेलां अत्यंत गुण्याम पूर्वक बहुमान इत्यादिक माहात्म्य देखीने मनमां चिंतवे जे हुं घणोकाल जीवतो रहुं तो घणाकाल सुधी म होत्सव थाय एवं जे संलेषणामां चिंतववुं ते जीविताशंसप्रयोग अतिचार.

४ तथा कोइक कर्कशक्तेत्रमां अनशन करे थके पूर्वे कही एवी पूजा वहुमानादिकें रहित थवाथी कुधादिक आर्तिथी पीडित थको एवं चिंतवे जे तुरत मरण करुं तो सारुं ते मरणाशंसप्रयोग अतिचार जाणवो.

५ च शब्दथकी कामनोगाशंसप्रयोग श्रितचार जाणवो तिहां काम ते शब्द रूप, नोग ते गंध रस स्पर्श श्रादिनी वांबानो प्रयोग एटले मुजने श्रा तपना प्रनावथकी परनवें रूप सोनाग्यादिक थार्ड ते पांचमो श्रितचार.

मरणांतनेविषे वेली खवस्यायं ए पांच ख्रतिचार मुजने म होजो उप लक्षण्यकी सघलाए धर्मना खनुष्टाननेविषे इहलोकादिक सर्व खाशंसा वांमवी यतः ॥ णोइहलोगच्याए खायारमहिनिक्काणो परलोगच्याए खा यार महिनिक्का णोकिनिवास्महिल्लोगच्याए खायारमहिन्किका नन्नज्ञ ख रिहंतेहिं देग्रहें खायारमहिन्किका तथा ॥ खाशंसया विनिर्मुक्तो, खनुष्टानं समाचरेत् ॥ मोक् नवे च सर्वत्र, निःस्पृहोमुनिसन्तमः ॥ १ ॥ नावार्थः— इहलोकनेखर्थं खाचारधर्म न करे, परलोकनेखर्थं खाचारधर्म न करे, कीर्त्तं वर्ण शब्द प्रशंसवानेखर्थं खाचारधर्म न करे, बीजे पणक्यांइ न करे परंतु खरिहंतहृष्ट हेनुयंकरी खाचारधर्मप्रत्यें करे, तथा मोक्ननेविषे सर्वत्र निःस्पृह मुनिमांहे जनम ते, खाशंसा वांग्रयें रहित सघलुं खनुष्टान खाचरे. आशंसा करतो थको जो प्रकष्ट धर्मनो आराधक होय तो पण होन फल पामे धर्मरूप चिंतामणीरत्नने आशंसारूप तु मुखें वेंची नाखे ॥ कह्युं वे जे:—सीलवयाई जो बहुफलाई हंतुण सुहमहिलसइधिइ डब्बलो तवसी कोडीए कांगणिकुणइ॥१॥ नावार्थः—जे शीलव्रतादिक घणा फ लनां प्रापक वे ते फलने हणीने तु सुस्वनी वांवा करे एवी बुिंध्यें डब्बल एवो जे तपस्वी होय ते कांगणीने अर्थें कोडी धन गमावे वे॥१॥ए कार णमाटे नियाणुं करवानुं परमेश्वरें सर्वथा निषेध्युं वे.

ते नियाणां नव प्रकारनां हे ते कित्ये हैयें. प्रथम कोइक साधु आ दिक एवं नियाणुं करे के देवता साक्षात कोणे दीवा हे माटे आ राजा है तेज देवता जाणवा एवं चिंतवीने नियाणुं करे जे आ तप अनुष्टाना दिकनुं जो फल होय तो हुं आवते नवें राजा थार्च ते जीव मरीने देव ता थाय तिहांथी चवीने राजा थाय पण तेने ममकेतादिक धर्म बोधवीज पामवुं इर्लन थाय ते प्रथम राजानुं नियाणुं जाणवुं.

श बीज़ं कोइक जीव एवं विचारे के राज्यपदवीमां तो बहु जंजाल वे माटे महारा तप अनुष्टानादिकनुं जो फल होय तो हुं श्रेष्टित्रादिकनां कु लमां उपजुं तो सारुं एवं नियाणुं करे ते बीजुं होत आदिकनुं नियाणुं.

३ तेमज कोइक जीव विचारे जे पुरुषमां उपजवायी व्यापार करतो पढे तथा राजसेवादिकमां संयामादिक करवा संबंधि बहु चिंता रहे माटे महारा तपञ्चनुष्टानादिकनुं फल होय तो स्त्रीपणे उपज्ञं ते त्रीज्ञं स्त्रीनुं नियाणुं.

ध कोइक जीव एम विचारे जे स्त्रीने तो नित्य पुरुषनीपासे पराधीन पणुं बे वली ते पराजवनुं स्थानक बे माटे महारा तपना प्रजावधी हुं पुरुष पणुं पामुं तो सारुं ते चोधुं पुरुषनुं नियाणुं जाणवुं.

५ कोइक जीव एवं विचारें जे मनुष्यना जोग अग्रज है देवताना जोग सारा है तेमाटे जे देव बीजा देव देवीने विक्वर्वीने अथवा योतें देवदेवीनां रूपने विक्वर्वीने विषय सेवे तेवो थाउं तो जल्लं ए पंरप्रविचारनुं नियाणुं.

द कोइक एम विचारे जे देवतामांहे तो इंडादिकनी आगल पराधीन तानुं इःख हे माटे हुं देवीपणे उपज्ञं तो सारुं अन्यदेवतानुं रूप विकुर्वी ने विषय नोगवीश. ते हुं सप्रविचारनुं नियाणुं जाणवुं. 9 कोइक जीव कामजोगथकी निवन्त्यों थको कामजोग अलखामणा लागे तेवारें विचारे के जिहां कामजोग सेववा न पडे एवा उत्तमदेवता मांहे जइ उपज्ञं तो सारुं जेमाटे तिहां कामजोग सेववा न पडे ते जीव मरीने उत्तम देवता थाय तिहांथी चवी मनुष्य थाय तिहां समकेत पामे पण देशविरत्यादिक न पामे ते सातमुं अल्परत सुरनुं नियाणुं जाणवुं.

ण कोइक एम विचारे जे दंरिई। थाउं तो सारुं कारण के जेथी सुखें संसार ढांमीने चारित्र ज़इ शकुं एवं दारिई।पणानुं नियाणुं करनार पुरुष मरी स्वर्गमां जइ तिहांथी आवी दारिई। मनुष्य थाय तो तेने दीका उदय आवे ते चारित्र जीये पण मोकें जाय नही.

ए कोइक एम विचारे जे महारे आ तप अनुष्टानादिकनुं फल होय तो हुं श्रावक थाउं एवं श्रावकपणानुं नियाणुं करनार मरीने देवता थाय तिहांथी चवी श्रावक थाय ते देशविरतिपणुं पामें पण साधुपणुं न पामे.

बीजां सौजाग्यादिकनां नियाणां हे ते नियाणां पण ए नवनियाणामां हे अंतर्जूत हे. जे जीव नियाणुं करे ते तथाविध प्ररुष्टधमें न पामे तेणे पूर्वे जिल्हां धर्म आराध्यों होय तो पण ते नरकादिक डगेतिना इःखनो विज्ञागी थाय जेम सुजूम ब्रह्मदत्तादिकचकी सातमा नरकनां इःखना विज्ञा गी थया. तड़कें ॥ सुबहुषि तवंषि तंसु, दीहंमिव पालिखं सु सामन्नं ॥ तो काउण नियाणं, मुहाहि हारंति अनाणं ॥१॥ उढ़ंगामि रामा, केसव सवेवि जं खहोगामी ॥ तिह्विव नियाण कारण, मइउ अमइमं इमं वर्के ॥ १ ॥ जावार्थः—ह्हिरीतें घणा तपने पण आचसुं, तथा सुसाधुपणुं पा मयुं तोपण नियाणुं करीने फोकट आत्माने हारे हे ॥ १ ॥ बलदेव उध्वं गितगामी होय अने सघला वासुदेव नीचगितगामी होय. तिहां पण ए नियाणानुंज कारण जाणवुं माटे ए नियाणाने वर्क्कवुं ॥ १ ॥ ए संसेष णाना अतिचार कह्या ॥ ए तेत्रीशमी गाथानो अर्थ कह्यो ॥ ३३ ॥

तपाचारना अने वीर्याचारना अतिचार तो "जोमेवयाश्यारो " ए बी जी.गाथानेविषे च शद्यकी सूचव्या हता ते सामान्यपणे पूर्वे पिडक्रम्या हता विशेषयी तो अल्पवक्तव्यता माटे ते न कह्या एम ज्ञानाचारादि पां चेना एकशो चोवीश अतिचारनुं पिडक्रमणुं श्रावकने कह्युं.

हवे ए सर्व अतिचार प्रायः मन वचन अने कायाना योगधी उप जो वे एटलामाटे योग त्रण पिडक्कमवाने गाथा कहे वे. काएण काइञ्जरस, पिडक्कमे वाइञ्जरस वायाए॥ मणसा माणसिञ्जरस, सबरस वया ईयारस्स ॥३४॥

अर्थः कायायेंकरीने जीवोनी हिंसा करी होय ते कायायेंकरीने हूटियें एटजे गुरुयें आप्युं एवं जे तप तथा कायोत्सर्गादिक अनुष्टान ते शरीरें करी करवाथी हत्यादिक पापथी हृटियें जेम दृढप्रहारीनो जीव चार हत्या यकी हूट्यों अने केवज़्ज़ान पामीने मोद्दें पहोतो.

तथा वचनेंकरी सहसाकार अन्याख्यानादि रूप नाखवेकरीने जे पाप वंधाणां ते पापथी वचनें मिथ्याइण्कृत देवेकरीने बृटियें जेम आनंद नामा श्रावकना अनशननेविपे श्रीगोतनस्वामी वंदाववा गया तिहां गोतमस्वा मीने वांदीने आनंदें कहां हे महाराज ! हुं तीई पूर्व तथा दिक्कण तथा प श्चिम ए त्रण दिशायें जवणसमुइमां पांचशें योजनपर्यंत देखें हुं वजी उत्तर दिशायें हिमवंतपर्वत सुधी देखें हुं तथा उंचु सौधमदेवजोकसुधी अने नीचुं रत्नप्रनानरकना जोजुपनामा पाथडासुधी देखें हुं एवं अवधिकान मने उ पन्युं हे; ते सांचली सहसाकारे गोतमस्वामी बोव्या जे एटजुं अवधिकान गृहस्थने होय नही माटे तमे मिन्नामिडकड दीई आलोवो; एवं गौतमस्वा मीचुं वचन सांचलीने आनंद श्रावकें कह्यं महाराज हताचाव कह्याचुं कां इ आलोववुं होय नही. एवं सांचली संशय सहित गोतमस्वामी परमेश्वर पासें आवी संशय पूठी पठी आनंदश्रावकपासें जइने श्रीगौतमस्वामीयें खमाव्युं एटले वचनेंकरी बांध्यां जे पाप ते वचनेंकरीने हूटियें॥

तथा मनेंकरीने जे देवतत्त्वादिकनेविषे शंकादिकेंकरीने मलीन उपाज्यी एवां जे पापकर्म ते मनेंकरी पोताना आत्मानी निंदादिक करतां ब्रूटियें. जेम प्रसन्नचंड्राजक्षियें मनेंकरीने सातमा नरक योग्य कमे उपाज्यी अने वली मनेंकरीने ग्रुजध्यानथी एक मुहूर्त्तमात्रमांज केवलक्षान उपाज्यी एवं श्रीअकलंकदेवस्ररिकत टीकानेविषे कह्यं वे "माणसिअस्सर्ज" एवो पाठांतर वे इहां सर्वव्रतना अतिचार पिक मुं कुं कायायेंकरी का याना अतिचार पिडक्कमुं कुं, वचनेंकरी वचनना अतिचार पिडक्कमुं कुं अने

मनेंकरी मनना श्रतिचार पिकक्षमुं छुं, एम सर्वत्रतना श्रतिचारथकी निव र्तुं छुं. यतः ॥ मनसा मानसिकं कमे, वचसा वाचिकं तथा ॥ कायेन का यं तह, न्निस्तरंति मनीषिणः ॥ १ ॥ ३४ ॥

ए सामान्यथकी त्रणयोगप्रत्यें पडिक्कम्या हवे विंशेषथी तेज पडिक्कमे हे.

वंदण वय सिका गा, र्वेसु सन्ना कसाय दंमेसु ॥ गुत्ती सु अ सिम्इसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३८॥

अर्थः – वंदन वे प्रकारनुं एक देववंदन अने बीजुं गुरुवंदन ते वली एकं कनां बे प्रकार हे एक इव्यथी अने वीजुं नावधी तिहां इव्यथी देववंदन पालकने थयुं अने नावधी देववंदन साम्बक्रमारने थयुं, इव्यथी गुरुवंदन वीरा शालवीने थयुं अने नावधी गुरुवंदन श्रीरुष्णवासुदेवने थयुं. इव्यथी देववंदनना दशत्रिक आदिक २०९४ बोल कह्या हे अने इव्यथी गुरुवंदनना ४०१ बोल कह्या हे ते सर्व देववंदन अने गुरुवंदन नाष्यधी जाणवां.

तथा (वय के०) व्रत ते अणुवत आदि पोरिसी प्रमुख पच्चरकाणरूप नियम अथवा (सिरका के०) शिक्हा यहण आसेवनरूप वे प्रकारें तिहां प्रथम यहणशिक्का ते, सामायिकादिक सूत्र अर्थना यहणरूप जाणवा जेमाटे आगममां कसुं हे ॥ सावगस्त जहन्नेणं अठ पवयण मायाउं उक्कोसेणं हक्कीविण्आ सुन्त अश्वउंवि पिंमेसणाक्कयणं न सुन्त अश्व उपण उद्यावेणं सुण्वित्त ॥ नावार्थः—श्रावकने जघन्यथी अष्टप्रवचन मा तानुं अध्ययन न्एवं अने उत्कृष्टं हजीवणीया अध्ययन सूत्रथी अने अर्थथी नणवं पण पिंमेसणा अध्ययनसूत्रथी नहीं परंतु अर्थथीज नणवं वली उद्यापेंकरी धर्म सांचले ॥ १ ॥ तथा आसेवन शिक्का तो नवकार उच्चार करतो जागे इत्यादिक श्रावकदिनकृत्यलक्कण जाणवं ॥

तथा गार्म ते जात्यादिकनो गर्व जाणवो यतः ॥ जाइ कुल रूव वल सुत्र, तव लाज सिरिइं श्रष्ठमयमत्तो ॥ एयाइंचिय वंधइ, श्रसुहाइं बहुइं सं सारो ॥ १ ॥ जावार्थः — जातिमद,कुलमद, रूपमद,बलमद, श्रुतमद श्रथी त् ङानमद,तपमद,लाजमद,लक्कीमद ए श्राव मदेंकरीने मत्त थयेलो जीव संसारनेविषे घणां. श्रग्जनकर्मने बांधे ॥१॥ इहां मेतार्य,हरिकेशी चंमाल,म रीचि प्रमुखनां दृष्टांत जाणवां. श्रथवा त्रण गारव ते क्रिशारव रसगारव

अने शातागारव तेमां जे घणुं धन धान्य कुटुंब तथा घणा खजनादिक परिवारने देखीने गर्वेकरे ते क्रिगारव किर्ये ते क्रिगारव तो आजवने विषे पण इःखदायी हे जेम दशार्णजें गर्व कखो तो ते लघुतापणुं पाम्यो. तथा मधुर जोजनादिकनेविषे गृहता ते रसगारव किर्ये ए महोटा दो पनुं निमित्त हे जेम मधुरानगरीयें मंगुआचार्य बहुश्रुत हता पण रसें इयनी लोजताथकी नित्यवासें रह्या अनुक्रंमें मरीने नगरना खालने विषे यक्त थया. तथा मृह शब्या आसनादिक एवा जे इंडियने सुखकारी पदा थां हे तेनी उपर सुखशातानेमाटे आसिक ते शातागारव किर्ये ए हर्गति पडवाना कारणहरूप जाणवं जेम शशीराजा एक शरीरना सुखनो लाल ची थको शरीरने पोपी मरीने त्रीजे नरकें गयो.

तथा (सन्ना के०) संज्ञा ते खाहार नय मेथुन अने परियह ए चार संज्ञा अथवा दशसंज्ञा अथवा पन्नरसंज्ञा अथवा शोलसंज्ञा जाणवी तिहां दशसंज्ञा कहेते ॥ गाथा ॥ खाहार नय परिगह, मेहुण तह कोह माण माया ए ॥ लोनो लोगोहयसन्न, दस नेया सवजीवाणं ॥१॥ ए दशसंज्ञा सर्व जीवने होय ते प्रायः प्रसिद्ध ते. तेमां १ एकेंडियजीवोने खाहारसंज्ञा ते वनस्पतिकाय जलनो खाहार लिये ते १ नयसंज्ञा ते जेवारे सुतार तृक्ते तेदो तेवारे तृक्ते कंपायमान थतो देखिये त्रेये तथा लक्जालुप्रमुखना पत्र नयंकरीने संकोचित थायते १ परियहसंज्ञा ते वेलडी, तृक्तादिकने वींटे ते. तथा ४ मेथुन संज्ञा ते कुरुवक खशोकादितृक्तने स्त्रीना खालिंगन पाटु प्रहारादिकथकी पुष्प फलादिकनो जन्म थाय ते ते मेथुनसंज्ञा जाणवी. उक्तं ॥ कुरुवयतरुणोफूलं, तिज्ञ खालिंगणेण तरुणीणं ॥ पयोहरितृष्ठा, खसोय तरुणो विवयसंति ॥१॥ तरुणी मश्रा गंधेण,तोसिख्या केसरावि कुस मंति ॥ चंपय तरुणो फुलं, ति सुरहिजलदोहलेहिंच ॥वियसंति तिलय तरुणो, तरुणी कड्खेंहिं पडिहया जलं ॥ फूलं,ति विरह रुक्ता,सोठणं पंच चमुग्गारं ॥

नावार्थः-कुरुबकवृक्त स्त्रियोने आिलंगने करीने फूले वे स्त्रीना स्तनना आश्लेषे संतोषाणा एवा अशोकवृक्तपण विकस्वर थायवे. स्त्रीना मुखनी मिदराने गंधेंकरी संतोषाणा एवा केसरवृक्तने फूल लागे वे, सुगंध जलें करीने चंपकवृक्त फूले वे, स्त्रीने कटाकें हण्यायका तिलकवृक्त विकस्वर थाय वे. तथा विरह्वक् कंदरपींद्दीपन वचन सांजलीने प्रफुल्लित थाय वे.

पारानो पण स्वनाव वे जे सोलशृंगार सजेली स्त्री तंबोलनो कोगलो पाराना कूवामध्ये धूंके तो ते कोगलाना फरसधी पारो कूवामांहेथी चढ़ लीने कूवाधी बाहेर नीकलीने ते स्त्रीनी पुंठे दोडतो धाय एटलामाटे एकेंड्यिने मैथुनसंज्ञा होय. ए चोथी मैथुन ससंज्ञा कही.

ए पांचमी क्रोध संज्ञा ते कोकनदनामा वृक्तना कंदने स्त्रिनो पगलाग वाषी अर्थात् पगनो स्परीयवाधी क्रोधें धमधमतो यको ढुंकार शब्द करे वे.

६ वही मान संज्ञाते रुदंतीनामा श्रीषधी ते एम जाएोजे हुं वतां लोक इःख केम पामे वे एवा श्रदंकारेंकरी तेमांथी पाणीना बिंडशा जरे वे ते श्रोषधिथी सोनुं सिद्ध थायवे एम एकेंडियने मानसंज्ञा होय.

⁹ सातमी मायासंज्ञायेंकरी वेजडी पांदडेकरीने फूजने ढांकी राखेळे ते मायासंज्ञा जाणवी तथा ⁶ खावमी जोन संज्ञा ते बिजी, श्वेत पूछाड नांमूज तथा पजाशादिक वृक्तनामूज जे ळे ते निधाननी उपर क्रपाय ळे.

ए नवमी लोकसंका ते कमल रात्रें संकोच पामे है, कैरव दिवसें संकोच पामे है, ए एकेंडियने लोकसंका होय तथा १० दशमी उघसंका ते वे लडी मार्ग मूकीने पाधरी वाडें तथा हक्कादिकें चढे है तेमाटे एकेंडियने उघसंका होय ए दश संकानां स्वरूप कह्यां.

हवे पन्नर संज्ञा कित्यें वेयें. गाया ॥ आहार नय परिग्गह, मेहुणं सुह इह मोह वितिगिन्ना ॥ तह कोय माण माया, जोने सोगेय धम्मोघे ॥ ॥ १ ॥ नावार्थः-ए पन्नरसंज्ञा कही एनी साथे जोकसंज्ञा नेजवतां शो जसंज्ञा थाय तेनी व्याख्या श्रीआचारांगनी वृत्तिने अनुसारे कहीयें वेथें.

र आहारना अनिलापरूप आहारसंज्ञा ते तैजसशरीर नामकर्मना उदयथी अने अशाताना उदयथकी उपजे हे १ नयसंज्ञा ते त्रासरूप हे. १ परियहसंज्ञा ते मूर्जानावरूप जाएवी. ४ मेथुनसंज्ञा ते स्त्रियादिक वे दना उदयरूप हो. ए पाहली त्रणेसंज्ञा ते मोहनीयकर्मना उदयथकी हो य ५ सुखसंज्ञा अने ६ इःखसंज्ञा ते शाता अशाता वेदनीयकर्मना उदय ना अनुनवथकी उपजे हे ९ मोहसंज्ञा ते मिण्यात्वदर्शनरूप मोहनीयकर्मना उदयथकी होय ए वितिगिष्ठासंज्ञा ते चित्रना विपर्यासरूप मोहनीय कर्मना उदयथकी वली तेमज ज्ञानावरणीयकर्मना उदयथकी चेतनने होय ए क्रोधसंज्ञा ते अप्रीतिरूप हो, १० मानसंज्ञा ते मिण्यादर्शनरूप गर्व

जाणवो ११ मायासंज्ञा ते वक्रतारूप १२ लोनसंज्ञा ते युक्तारूप १३ शो कसंज्ञा ते विप्रलाप वेमनस्यरूप जाणवी ए नवमीयी तरमी सुधीनी पांच संज्ञा ते मोहनीयकर्मना उदययी होय १४ लोकसंज्ञा ते पोतानी २ ह्याना विकल्परूप लोकिकें उच्चित्त जाणवी ते खंढेंदे किल्पत एवा विकल्परूप लोका चारे करेली हे जेम के कोइकालें एवं ययुं पण नथी अने यशेपण नहीं. लो क एम कहे हे के कूतरा एटला यह हे, ब्राह्मण एटला देवता है, कागडा ते पहज है अने मोरने पांखने वायरे गर्न रहे हे, अथवा मोरनां नाच करतां आंसु खरे हे, ते आंसु मोरली जीली लीये हे तेथकी मोरलीने गर्न रहे हे. ए संज्ञा ज्ञानावरणीयकर्मना क्योपशमयकी अथवा मोहना उदय यकी उपजे हे. १५ धर्मसंज्ञाते क्मादिक चुं सेव चुं तज्ञ्चप जाणवी. ते मोह नीयकर्मना क्योपशमयकी उपजे हे ए धर्मसंज्ञा ते सिव्या पंचें कि सम्यक्ष्टिने तथा मिथ्यालहिएने होय १६ उध्मंज्ञा ते अव्यकक्रायोपशमरूप विज्ञीना समूह हक्तनी उपर चडे हे इत्यादिक चिह्न हे ते, ज्ञाना वरणीयकर्मना अल्पक्रयोपशमयकी उपजती एवी ए उध्मंज्ञा जाणवी.

हवे कपाय कहे हे तिहां कंप एटले संसार तेनो आय एटले लान हे जेनेविपे तेने कपाय कहियें. ते कपाय कोध मान माया अने लोन लक्ष् एक्ष्प जाएवा. ए चारे कपाय ते प्रत्येकें अनंतानुवंधी, अप्रत्याख्यानी,प्रत्याख्यानी, अने संज्वलन,ए चार चार नेहें करतां तेना शोलनेद थाय; ते शोलकपायनुं खरूप किह्यें हेयें. जावजीवपर्यंत, वर्षप्रमाण, चारमास प्रमाण, एकपक्त्रमाण ए चारकपायनो रहेवानो काल कह्यों. तथा नरक गित पमाहे, तिर्यंचगित पमाहे, मनुष्यगित पमाहे अने देवगित पमाहे. ए गित कही तथा सम्यक्ल न पामे, देशिवरित न पामे, सर्वविरित न पामे अने यथाख्यात चारित्रनो घात करे. ए चार कपायनां अनुक्रमे फल कह्यां तथा पाणीनी लीटी सरखो, माटीना खोडनी रेखा अने पर्वन्तपाटे तेनी रेखा सरखो मले नही ए दृष्टांतें चार प्रकारनो क्रोध जाणवो. तथा तृणनी सली वालवा समान, काष्ट वालवा समान, हाड वालवा समान, अने पा पाण वालवा सरखुं ए चार प्रकारनुं मान जाणवुं तथा वांसनी होइ वालवी, वृपनमूत्र समान, मींढानासिंघसमान, निविडवांसना मूलसरखी ए चार प्रकारनी माया जाणवी तथा हलदरना रंग सरखो, अंजनना पट्टसरखो

कर्दमना पष्ट सरखो, किरमजना रंगसरखो ए चारप्रकारनो लोज जाणवो.

इहां शिष्य आशंका करे हे के संज्वलनादि चार कपाय ते अनुक्रमें दे वगित, मनुष्यगित, तिर्यचगित अने नरकगितना हेतु कह्या तो संगमदेव आदिदेइने स्वर्गे केम गया ? अने श्रेणिकादिक नरकें केम गया ?

गुरु कहे हे हे शिष्य! तें साचुं कहां पण क्रोधादिक शोल मांहेला ए केंकना वली चार चार जेद कृरिये तें जेमके एक अनंतानुबंधी क्रोधने प्र तिरूप एवो अनंतानुबंधीक्रोध ते अत्यंतआकरो तीव्र तीव्रतर क्रोध जाणवो तथा एक अनंतानुताबंधियों क्रोध ते अप्रत्याख्यानियाक्रोध सरखों, एक अनंतानुबंधियों क्रोध ते प्रत्याख्यानियाक्रोध सरखों, एक अनंतानुबंधियों क्रोध ते संज्वलनना क्रोधसरखों ए चार प्रकारनों जेम अनंतानुबंधियों क्रोध हे तेम अनंतानुबंधि मानना पण चार जेद करवा तेम शोले कपाय ना चार चार जेद करतां चोशवजेद थाय एटलामाटे संगमादिकने अनंतानुबंधियों क्रोध जे हतों ते संज्वलनना सरखों हतों तेथी ते स्वर्णें गया अने श्रेणिकादिकने अप्रत्याख्यानियों क्रोध जे हतों ते अनंतानुबंधि सरखों हतों माटे ते नरकें गया ते माटे कपाय सर्वया प्रकारें ढांमवों.

जेमाटे चारित्रने एक श्रंतर्मुहूर्तमात्र कपाय करवाथी देशें उणा एकपूर्वकोडी पर्यंत उपार्जन करेला सर्व चारित्रने हारिजाय ते माटे कोधादिकनो उदय थयो ते निष्फल करवो. ए कपायनो रोध ते जलो हे ए कपायनी संलीनता कही तत्त्वेंकरीने एज सार हे. हांदशांगीमांहे एज परम अर्थ हे ए कपाय ते संसार जमणना सखाइ हे माटे एने हांम्बा. जे उत्तम सुख त्रणेलोकमां हे ते सर्व कपायना क्यथीज जाणवां श्रने जे इःख प्राप्त थाय हे ते कपायनी हिद्यी थाय हे. परदर्शनी पण कहे हे॥ यत्कोधयुक्तोजपति, यद्धुहोति यद्चीत ॥ तत्सर्वे श्रवते तस्माद्, नित्रंकुंना दिवोदकं ॥ मावार्थः—कोधयुक्त मनुष्य जे कांइ जप करे जे कांइ होम करे अने जे कांइ पूजे ते सृष्टुं तेनुं फुटल कुंनमांथी जेम पाणी चाल्युं जाय हे तेम ते पूर्वोक्त कोधिनुं सर्व सुरुत पण हथा थाय हे.॥

ए क्रोधनामा कषायनेविषे करट अने महाकरट ए बे साधुनो हष्टांत निचेत्रमाणे जाण्रवो. ए बे साधु वर्षाकार्झे नगरना खालनेविषे चोमासामां अनियह धारीने तपस्या करता काउसग्गें रह्या; ते क्रिषनी आशातनाना नयथी शासनदेवियें मेघनी वृष्टिनो अनाव कस्तो तेथी नगरना लोक रीशें बलता मुनिनी निंदा करताथका कहेवा लाग्या के जे दिवसथी आ बे सा धु इहां आवी जना रह्या वे ते दिवसथकी वर्षाद आवतो नथी तेमाटे आ पापी साधु इहांथकी जायतो वर्षाद आवे एवां वचन नगरवासी अ नार्य लोकोनां मुख्यी सांनलीने ते वेहु साधुने कपाय चड्यो तेवारें को धने परवश ययेला ते साधुयें मेघमालिने कह्युं के आ कुणालानगरीने विषे पन्नरदिवस पर्यंत अहोरात्र अखंम मुसलधारायें वरसाद वरसावो ते वर्षा होवाथी नगर सर्व मुनिसहित तणाणुं अने मुनि मरीने नरकें गया.

तथा मान उपर बाहुबिल आदिकना हप्टांत जाएवा वजी माया उपर श्रीमिलनायनो हप्टांत जाएवो तेमज लोज उपर सोमज्ञत आदिकना हप्टांत जाएवा ते सोमज्ञेत पुत्रादिक सर्वने वचीने रात्रियें स्मज्ञानमां जइ कोड सोनेया चूमिमांहे दाटीने घेर आव्यो तिहां आर्त्तध्यानथकी दाहज्व रना रोगधी मरए पामीने ते दाटेला धननी उपर हिष्टिविप सप थयो एम ए केका कपायथकी यए। जीवो अनर्थ पाम्या तो चारे कपायथकी अनर्थ पामे तेमां कहेवुंज ग्रुं ? तेमाटे कपायनो त्याग करवो.

तथा जेथकी प्राणी धर्मधनने नास करवेकरी दंमाये तेने दंम कहिय; ते अग्रुन मन वचन काय व्यापार रूप त्रण दंम जाणवा. तिहां मनोदंमने विषे श्रीगौतमस्वामियें उपदेश करेलो ग्रुहश्रावक पोतानी स्वीदार उघाड वा उठी ते द्वारमां आफलाणी तेथी तेना माथामां व्रण पड्युं ते स्वीना व्रणनी पीडाना आर्त्तध्यानें पीडायो थको तेनो धणी मरण पामीने मोह वशेंकरी ते पातानी धणीयाणिना कपालना व्रणमांहेज कीडो उपन्यो.

तथा वचनदं म अने कायदं मनी उपरे लेकिक केशिकनामें महोटो क्र पि वनमां हे तप करतो हतो तिहां एक आहेडी मृगनी पडवाडे धायो ह तो तेनाथी मृग नाशि गयो तेवारें आहेडीयें क्रिने पूड्युं के मृग कश्दिशा यें गयो तेने क्रियें साचुं कह्यं तेथी आहेडीयें मृगने हुएयो तेना योगें क्रि मरीने नरकें गयो. ए केशिकनामा क्रिनो हुएंत जाएवो.

तथा कायदंमनेविषे मांमव्यनामा क्रियनो दृष्टांत कहे हे:— मांमव्य नामा क्रियें पहेलां खजापालकना नवनेविषे एक निरूपराधी यूकाने ग्रूव्यें परोइ हती तेना पापथी सो नव सुधी इःख जोगवे थके वली सोमे नवे पण मांमव्य क्षिने शूलीयें चडवुं पड्युं ए कायदंम उपर द्वष्टांत जाणवो.

तथा मायाश्रत्य, नियाणश्रत्य अने मिण्यालश्रत्य ए त्रण महोटां श्रत्य हो ते करवाथी जे दंम पाम्यो ते दंमनेविषे तथा मन,वचन,अने कायाना अ श्रुत्त योगनो निरोध करवो ते रूप ग्रिप्त ते मनग्रित्त,वचनग्रित अने कायग्रित ए त्रणग्रितनेविषे तेमज श्र्यांसमिति जापासमिति, एषणा समिति, आदा निक्तेपणा समिति अने पारिष्ठापनिका समिति ए पांच समितिनेविषे च शब्दथकी समकेत तथा प्रतिमादिक जे सम्यक् धर्मकरणी प्रमुख हे एने विषे जे जेला यहवा खेवा एनेविषे जे निषेध हे तेहने आचरवेकरीने जे अतिचार लाग्या होय ते अतिचारने निष्ठे हुं॥ ३५॥

हवे ए सर्व अतिचारने सामान्यपणें प्रगट पिडक्कम्या ते पिडक्कमीने गृ हस्य ग्रुड ययो अने वली पण उकायना आरंनरूप पापनेविषे वारंवार प्रवर्त्ते तेवारें वली अग्रुड याय जेम हाथी नाही स्नान करी सरोवर बा हेर निकलीने वली पोताने माथे रज नाखे ते हाथीने न्यायें श्रावक पण आलोइ ग्रुड यइने वली माठा कर्मना बंधयी मलीन याय एवी कोइने आशंका उपजे ते आशंका टालवाने गाथा कहे हे:—

> ॥ सम्मद्दिि जीवो, जइविद्व पावं समायरे किंचि ॥ अपोसि होइ बंधो, जेण न निधंधसं कुणइ ॥३६॥

अर्थः—सम्यक्दृष्टि जीव एटले अविपरीत अदावंत जीव यद्यपि निर्वा हने अनावें खेती प्रमुख पापना आरंजमां प्रवर्त्त ने तिहां पोतानो नि वीह थाय एटलुंज आचरण करे ने तेथी ते जीवने मिण्यालादि पहेला त्रण गुणगणानी अपेक्तायें ज्ञानावरणादिक कर्मनो अप्पोसि एटले अव्प योडोसो बंध पडे ते शा हेतुयें अव्पवंध पडे ने कारणे ते निर्देष्ठसपणे निर्देयपणे निश्कपणे पापारंजादिक न आचरें केम के सम्यक्धमें जे ने ते जीवदयामूल ने एटलामाटे तेने जे जे कांइ करन्नुं पडे ते सर्व दयास हितपणे जयणापूर्वक करे. जेमाटे जीवना न प्रकारना लेक्याना परिणा म घणा अध्यवसायें प्रवर्त्त ने ते जंनुना जक्क तथा ग्रामना वधकने दृ ष्टांतें करी कहे ने. जेम एक जांनुनुं वक्क अत्यंत पक्कपलना नारेंकरी नमे ली शांखावालुं हतुं तेने देखीने मार्गें जनारा न लेक्याना धारक न जणा नक्णनेखर्थं तिहां उना रह्या तेमां प्रथम एक जण बोख्यो के वृक् उपर चढवाथी कदापि पडी जवाय तो तेथी मरण थाय माटे खा वृक्तने मूल थी बेदी नाखी, नीचे पाडीने पढी फल नक्षण करियें तेवारें बीजो बोख्यो के खापणें महोटुं वृक्त बेदीने छं करवुं वे तमे महोटी शाखा वेदो, तेवा रे त्रीजो बोख्यो शाखामांहेली प्रतिशाखा वेदो, तेटलामां चोथ्यो बोख्यो ए नां गुष्ठा तोडीने जांबु खाउ, तेवारें पांचमो बोख्यो के जे फल पाके लां वे तेने उपरथी लइने नक्षण करो; ते सांनली बिछो बोख्यो नीचे खरी पडेलां फल लेइने नक्षण करो ए हप्टांतनो उपनय खावीरीतें वे. जेणें कह्यं के वृक्षने मूलयी वेदो तेनी कृष्णलेक्यामां प्रवृत्ति जाणवी तथा महोटी शाखा वेदवानुं कहेनार नीललेक्याना परिणामवालो जाणवो, प्रति शाखा वेदवानुं कहेनार नीललेक्याना परिणामवालो जेदवायी तेजोलेक्याना परिणामवालो खने पाकेलां फल त्रोडवाथी पद्मलेक्याना परिणामवालो लो तथा मां तथा खने पडेलां फल लेवाथी गुक्कलेक्याना परिणामवालो जाणवो.

श्रयवा बीज़ं उदाहरण कहे वे के कोइक गामनो पराजय करवानेश्रथें व चोर निकव्या तेमां एक बोल्यो जे कोइ हिपद चतुप्पदादिकने देखों ते सघलाने हणो, बीजो बोल्यो मनुष्यने हणो, त्रीजो बोल्यो पुरुपनेज हणो, चोथो बोल्यो श्रह्मधरनारने हणो, पांचमो बोल्यो जे श्रापणी साथें युद्ध करे तेने हणो तेवारें विज्ञो बोल्यो के श्रापणें कोइने हणवो नथी मा त्र एक धननुंज हरण करो बीजा कोइने मारशो मां कांइक गोहरणादिक ज करो ते पण जेम कोइनो संहार न थाय तेम करो. इहां पण सर्वने हणो कहे ते रुष्ण लेश्याना परिणाम, एवा श्रनुक्रमेंकरी श्रुक्क लेश्यावंतना परिणाम पर्यंत कहेवा ॥ ए वत्रीशमी गाथानो श्रर्थ थयो ॥ ३६ ॥

हवे थोडोसो बंधपण इःखदायी थाय एवी आशंका टालवाने गाथा कहे हे.

तंपिहु सपिंडकमणं, सप्पिंडिं ज्ञावं उत्तर गुणंच॥ खिपं उवसामेइ, वाहिबसुसिकित विक्रो॥३॥॥

अर्थः-तोपण समकेतदृष्टिने आरंनादिकमां अव्पपापवंध जे पहे ते पहिव ध आवश्यक रूप पिडक्रमणुं करतां आलोवतां मिन्नामिडक्रड देतां पश्चानाप करतां, ते निष्ण सप्रतिचार, ते प्रतिचारणा एट छे जेम जाननो अर्थि वा णियोतेनी पेरें आयपत तथा व्ययनी तुलनायें प्रवर्तें तेम ते पण प्रवर्तें एट छे आ कार्य केम करुं आकार्य केम न करुं केम में ए घणुं कछुं एमजे ह दयमां हे विचारणा करे ते ते कार्यने घणुं करे एट छे ते कार्य ते अति करे.

उत्तरगुण ते गुरुयें दीधुं जे प्रायश्चित्त तेने खाचरवेकरीने खिप्पं एटसे सीघ उवसामेइ एटसे उपशमार्वे निःप्रताप करे खपावे तिहां दृष्टांत कहेनेः—

वाहित एटले व्याधिरोग कास श्वासज्वरादिकने जेम सुसिस्किन विद्यो एटले रुडो वैद्यकशास्त्रनो जाण वैद्य होय ते वमन विरेचन लंघनादिकें करीने जेम रोगने जपशमावे एटले टालें तेनीपेरे जाणवो ॥ ३७॥

हवे पूर्वें कह्यं तेज दृष्टांतेंकरीने कहे हे:-

॥ जहा वसं कुठगयं, मंतमूल विसारया ॥ वि चाहणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निविसं॥ ३०॥

अर्थः— जेम विष वे प्रकारनुं ने तेमां एकतो नृह्णदिक वन्ननागा दिकनुं विष ते स्थावर विष अने वीजुं नृश्चिक सप्पीदिकनुं विष ते जंगम विष जाणनुं ते विष यथा एटले जेम कोश्कना कोनामां रे गयुं एटले नदरमां रे गयुं होय तेना शरीरमां विष व्याप्युं होय ते विषने मंत्रमूलना विशारद तिहां मंत्र ते गारुडी प्रमुखना अने मूलते त्रणपांखडीना पत्र पुष्पादिक तथा तं त्रादिक तेने विषे माह्या निपुण होय ते गुरुदत्त आम्नायने अन्यामें करीने सिहत जेनी प्रत्यक्तपरीक्ता लाधी ने एवा वैद्य मंत्रवादी ते मंत्र यंत्र तंत्रा दिकें करीने विषने हणें एटले निर्विषकरे, विषने नशाडे तथा जो पण ए विषे करी जे घाखो होय ते पोते जोपण मंत्राक्तरना अर्थनो तथाविध जाण नथी तोपण ते मिणमंत्र औषधीनो अचित्य प्रजाव ने माटे ते मंत्रना अक्तर सांज लवेकरीने जे तेने गुण नीपजे ने इहां एक स्थितरा मोसीनुं हष्टांत कहे ने:—

कोइक स्थिवरामोसीनो पुत्र हंस एवे नामें हतो तेने इप्ट सर्प्य कर ड्यो तेथी फेर चड्युं तेणें करी ते निश्चेष्ठित थयो तेने मंत्रवादी गारुडि प्रमुखें फेर उतारवा मांमयुं पण उतखुं नही तेथी गारुडि जता रह्या ते वारे स्थिवरायें आशा मूकी पुत्रने शोकें करी अतिशय इःखणी थकी पु त्रनुं नाम देइने रोवा जागी के हे हंस! हे हंस! एवं नाम आखीरात्रि पोकाखुं तेथी सापतुं विष उतरीगयुं अने साजो थयो तेवारें स्थिवराने मंत्रवादिये पूर्वयुं स्थिवरायें यथार्थ व्यतिकर मंत्रवादीने कहाो ते सांनजी गारुडि बोब्या हंस एवो गारुडीमंत्राक्तरनो बीजाक्तर हे तेथीकरीने सापतुं फेर उतखुं जेम बाजक अंग्निनी उस्मताना ग्रुणने जाणतो नथी तो पण ते बाजकने अग्निपासे राखवाथी सीतने टाले हे तथा जल पीधुं थकुं तृ पाने मटाडे हे तथा जेम सेलडीना गुंडादिंकृना खादने बाजक जाणतो नथी तो पण बाजकने सुखादपणुं पमाडे हे पोषे हे तेम मितने मंदपणायें करी जो पण सूत्रनो जलो अर्थ न जाणतो होय तो पण पि इक्षमण क रनारना कर्मनो क्य थाय एवे जावें जम्बुस्तवमांहे कह्यं हेः— दृष्ट्वा संज्ञमका रिवस्तु सहसा ऐऐ इति व्याहतं, तेनाकृतवशादपीह वरदे विंडं विनाऽप्य क्रम् ॥ तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुमहे वाचः स्किसुधार सङ्बसुचो नियीति वक्त्रोदरात् ॥ १ ॥ आश्चर्यकारिवस्तुने जोइ एकाएक जेणें कुतूहजना वशयकी ऐ ऐ एवं विंडविना अक्तर कह्यं तोपण ते अक्तर र तेने सिदिदायक थयुं वजी हे देवि! तेने तमारा अनुमह थयो के तेना मुखयी अमृतना रस प्रवाहने जरनारी वाणियो तत्काज निकड़े हे.

तथा लौकिकनेविषे पण एम सांजलियें हैयें जे कोइक पुरुषने कोइकें पूरुषों के जे तुं खांबानां फल लावीश के रायणनां फल लावीश; तेवारें ते णे कह्यं हुं खांबानां फल लावीश नारायणं एटले रायणनां फल लावीश नहीं एम कह्याथी लोकजाषायें नारायणतुं नाम लीधाथकी ते चेतनने रा ज्यादिक महाफलनी प्राप्ति थइ. ए खाडत्रीशमी गाथानो अर्थ कह्यो॥३०॥ हवे दृष्टांतने योजियें हैथें.

॥ एवं अठविहं कम्मं, रागदोस समक्रियं॥ आ लोखंतो अ निंदतो, खिणं हणइ सुसावछ॥३ए॥

अर्थः-एम ज्ञानावरणादिक आठ प्रकारनां कमे तेने रागद्देषेंकरीने बां ध्यां ते आठकर्मने सुश्रावक, गुरुनी पासें आजोवतो थको, आत्मानीसाखे निंदतो थको शीघपणे ते आठकर्मने हणे एटले ते आठकर्मने आत्मप्रदेश थकी जूदां करे. इहां शिष्य गुरुने पूर्व वे के हे स्वामिन्! कमे बांधवाना हेतु प्रमादादिक वे ते प्रमादमध्ये राग देष आव्या तो वजी इहां राग देष जू

दा कह्या तेंतुं शुं कारण ? एवं शिष्यतुं वचन सांजलीने ग्रुह उत्तर कहे वे के राग देष आपदामांहे पाडवातुं मूल वे एटला मीटे राग देषतुं प्रधान पणुं देखाडवाने अर्थें राग देष जूदा कह्या जेम तैलादिकें मिर्दित शरीरने रज वलगे तेम राग देषथकी सघला मनुष्यने कर्मनो बंध पण थाय वे इहां सुश्रावक ते सुशन्द अतिशय पूजावाची वे ते सुश्रावक षट्स्थान केंकरी युक्त वे एथी जावश्रावकपणुं जणाव्युं. यतः ॥ कय वयकम्मो तह सी, लवंच गुणवंच उज्जववहारि ॥ गुरुसु सुसो पवयण, कुसलो खलु जा वर्च सहो ॥ १ ॥ जावार्थः—१ कह्यां वे व्रतादिक कर्म जेणें, १ तेमज जेतुं साचुं शील वे, ३ वली जे साचा गुणसहित वे. ४ तेमज जे सरलपणे व्यवहारी वे, ए गुरुनी सेवानो करनार वे, ६ जे प्रवचनकुशल वे अने जे आगममांहे निपुण वे ते निश्चें जावश्रावक जाणवो ॥ १ ॥ ३ ए ॥ वली एहज अर्थने सिवशेषपणे कहे वे.

॥ कय पावोवि मणुस्सो,ञ्जालोइञ्ज नंदिञ्ज ग्ररुसगासे॥ होइ ञ्जइरेग लहुन, नहिरञ्ज नरुव नारवहो॥४०॥

श्रधः—जे पुष्यनो शोष करे श्रथवा जीवरूप वस्नने मजीन करे. तेने पापयित कहीयें ते श्रग्जन पापकृतिरूप च्याशी नेहें हे, तेना हेतु जे हिंसा मृषावादादिक ते पाप जाणवां ते कारणें कह्यां हे जीववधादिक श्राश्रव से वीने पाप जेणे एवां मनुष्य ते,पुरुष, स्त्री श्रमे नपुंसकरूप ए त्रण जाण वां; पण तिर्यंच श्रमे देवता एमां जेवां नहीं कारण के मनुष्यनेज पिडक मणानी योग्यता हे ते मनुष्य सम्यक्प्रकारे गुरुनी पासें श्राजोचना कर तो पापकर्मने निंदतो थको गुरुनी पासें पोताना पापने प्रगटपणे श्राजो यणनिंदा विधियें करतो ग्रुह थाय पण श्रगीतार्थादिक कुगुरुनी पासें श्रा जोयणा न करे तथा पोतानी मेलेज मनमांहे श्राजोयणा करतां पण क मेशव्य जाय नही श्रात्मा श्रव्यथी ग्रुह न थाय जेमाटे कह्यं हे के. ॥ य तः ॥ श्रगीत विधियं करतो ॥ १ ॥ नावार्थः—श्रगीतार्थ कांइ जाणे नहीं चा ित्रनी ग्रुहिने माटे श्रधिकुं उनुं प्रायित्रच श्रापे तथी ते श्रगीतार्थ पोताना श्रात्माने तथा श्राजोचकने एटले श्राजोचना जेनारने संसामांहे पाढे ॥ १॥

तथा जो पोतें पोतानी मेलें खालोयणा तीव्र खाकरां व्रत तपस्यायें करी लीये तो मण संसारमां पडे परंतु ग्रुद न याय जेम आ चोवीशीयी आ गल एंशीमी चोवीशीयें लक्काणा नामें राजानी वहाली पुत्री तेने परणतां चोरीमांहे जनीर मरण पाम्यो तेथी ते कन्यायें वैराग्य पामीने ते चोवीशीना चरम तीर्थंकर श्रीवज्जनूषण एवं नामें चोवीशमा परमेश्वरनी पासेंथी दी क्षा लीधी तेनुं लक्काणा आर्या एवं 'नाम' ययुं ते साध्वीयें वसती जोइने सङ्काय करतां एकदा चकला चकलीनुं जोडलुं मैथुन करतुं दीतुं तेवारें विचारवा लागी के छहो तीर्थंकर जगवानें साधुने मैथुननी छाड़ा केम न दीधी ? पण ते तीर्थंकरतो पोतें अवेदी माटे वेदसुखना अनुनवनी वा त ग्रुं जाएो ! इत्यादिक मननी कल्पनायें तीर्थकरनी आज्ञानना करी पढी लक्काने लीधे गुरुनी पासें जड़ने आलोयुं नही अने पोतानी मेलेज पाप नी ग्रुदिने अर्थे दशवर्षपर्यंत व दिगय त्याग करी तेमज वह अहमादिक घणां तप कखां, सोज मासखमण कखां. शोजअईमासखमण कखां, वी शवर्षसुधी आयंबिलनुं तप कखुं,एम सर्व मली पचाशवर्षसुधी जयतप कखुं तोपण ते पापनी ग्रुडि यइ नही. ते पापथकी श्रसंख्याता नवपर्यंत संसा रनां घणां आकरां इःख नोगवीने आवती चोवीशीयें श्रीपद्मनानतीर्थक रना तीर्थमां सिद्धि पामशे. यडुकं ॥ ससझो जश्वि कहुगां, घोरं वीरं तवे चरे ॥ दिवं वाससहस्संतु,तर्रवि तं तस्स निफलं इत्यादि नव गाथानो अर्थ.

शव्यसहित प्राणी जोपण उयकष्ट करे, धीरपणे ग्रुननावें हजार वर्ष पर्यंत आकरां तप आचरे, तोपण जेम कोइक पोताना रोगनी चिकित्सा जाणतो ब तोपण बीजा वैद्यने कहे तेवारे तेनो राग टले तेम जो पोतानां पापपरनी पासें प्रगट कहे तो शव्यनुं टालवुं पण थाय ॥१॥ व्रत लीधां ति हांथी अखंमचारित्रवंत होय परंतु ते जो गीतार्थ न होय तो तेनी पासें थी देशना सांनलवी व्रत लेवा आलोयणा लेवी ते युक्त नहीं ॥३॥ शव्यो दार करवाने अर्थे खेत्रथी उत्कष्टा सातसें योजनसुधी गीतार्थने खोलवो अने कालथकी उत्कष्टा बारवर्षपर्यंत गीतार्थने शोधीने पण तेनी पासेथी आ लोयणा लेवी ॥ ४ ॥ आलोयणाना ध्यानमांहे रह्योथको जीव सम्यक्र प्र कारें गुरुनीपासें चाव्यो अने जो वचमां मार्गमध्ये काल करे तोपण तेने आराधक कहेवो ॥ ५ ॥ लक्कादिकने गर्वेंकरी अथवा बहुशुतपणाना अ निमानेंकरीने जे पोतानुं हीणुं चिरत्र गुरुने न कहे तो तेने श्रीवीतराग देवें आराधक कह्यो नथी ॥ ६ ॥ जेम बालक बोलतो थको कार्ज अकार्य ने सरलपणे प्रकारो तेम कपट तथा मदेंकरी रहित थइने पोतानां पाप प्रकारीने आलोववां ॥ ७ ॥ चित्तने संवेगदशामांहे आणीने सूत्रमांहे शब्यो दार एटले शब्य न टालवाना विपाक देखाडवेकरीने आलोयणा देवी ॥ ७ ॥ कपटादिदोष रहित समय समयनेविषे वधते संवेगपणे अने वली निःस्प्रहथके जे अकार्य आच्खां होय ते आलोववां ॥ ए ॥ ए आ लोयणनी उपर अष्टणमझ अने फलीयमझनो दृष्टांत जाणवो. ते कथा एज पुस्तकना पहेला जागमां गौतमप्रश्वा यंथमां आवी हे त्यांथी जाणवी.

एटला माटे सजुरुनीपासें सम्यक् प्रकारें आलोववुं अने गुरुपण आ लोचना लेनारने प्रेरणाकरी उत्साह वधारीने सम्यक् प्रकारें आलोचना आपे. रोगादिक अवस्थायें गुरुने अनावें तो वली सिद्धादिकनी साखें आ लोयण लेतोथको पण गुद्ध थाय जेम चेडामहाराजा अने कोणिकना संया ममांहे रथमुसलना संयामनेविषे वरुणनामा सारथीने घा लागो तेणेकरी ग्ररीर जर्जरीनृत थयुं तेवारें ते वरुण आत्मसाखे आलोइ समाधिमरण करी आराधक थको सौधमेदेवलोकें देवता थयो एकावतारी थइ मोहें जारो.

एटला माटे पाप आलोयायकी अत्यंत इलवां थाय जेम नारना व हेनार पुरुषना मस्तक उपरथी लोहादिक नार उत्तखा पठी ते पोताना आत्माने अतिशय पणे इलवो करी माने तेम श्रावकपण आलोयण कर तां समय पापने निंदवायकी पापरूप नारथी इलवो थाय. यतः ॥ लहु आव्हाइ जणणं, अप्पपरिनिविचिश्रक्कवं सोही ॥ इक्करकरणं आढाणं, नि सक्षतंच सोहिगुणा ॥ १ ॥ नावार्थः—मासक्ष्मणादिक इष्कर तप करवा यकी लक्क्कणा आर्यानी पेठें संसारनो उन्नेद न याय परंतु आलोयण ले वाथी अन्यंतर शव्य गयाथी संसारनो उन्नेद याय श्रीनिश्ची चुर्णिने विषे कह्यं हे ॥ तन्नइक्करं जं पित्नसेविक्कइ तं इक्करं जं सम्मं आलोइक्कइ ति ॥ अर्थः— ते बीखं कांइ जे प्रतिसेवकुं ते इक्कर नथी परंतु सम्यक्पणे आलोववुं ते इष्कर हे माटे शव्यते महोटा अनर्थनुं कारण हे जे माटे कह्यं हे के शस्त्रनी पेरें, विपनी पेरें, वेतालादिकना हलमांहे पड्यानी पेरे अथवा उपयोग सून्यने यंत्र घाणीनी पेरें, प्रमादयके कोध पमाडेला सर्प नी पेरे नथी तेवुं इःख के जेवुं जावशव्यने अंगीकार करेथी इःख थाय हे ते शव्य इद्दां सर्व इःखचुं मूव्य हे जे शव्यराखे तेने बोधबीज पामवुं इर्ज ज थाय अनंत संसार वधारे जेणे राजपुत्र अने विणकपुत्रनी पेरें थोडुं पण शब्य सेव्युं होय तो ते बेद्ध जेम कडुआ विपाक पाम्या तेम ते पण कडु आ विपाक पामे तो वली बीजा घणा पापनुं शुं कहेवुं ?

पूर्वनवने विषे चारित्रलेश्ने एकवार सरागदृष्टियें करी पोतानी स्त्री जे साध्वीयइ हती तेनी साहामुं जोयुं एटलुं सरागंपणुं रह्यं तेथी एक अनार्य देशनेविषे आई एवेनामे राजानो प्रत्र ययो अने बीजो वाणिगानो प्रत्र ए लाचीकुमार एवेनामें ययो तेमने रागरूप शव्यथकी कडुआ विपाक नोग ववा पड्या. धमेथकी च्रष्ट यया, नीचकुलमांहे जबुं पड्युं तेमाटे शब्यर हित थश्ने गुरुनी पासें आलोववुं गुरुनी पासें आलोववाथकी अनंता जीव सिद्धि वह्या. यतः ॥ निष्ठविश्व पावपंका, संम्मं आलोश्च गुरुसगासे ॥ पत्ता आणंतसत्ता, सासय सुखं आणाबाहं ॥ १ ॥ नावार्थः— निक्या वे पापरूप कईम जेणे एवा अनंता जीव सम्यक्षणे गुरुनीपासे आवी पोताना पाप आलोशने अव्याद्याध शाश्वता सुखने पाम्या ॥ १ ॥

जेम चंड्रोखर राजा पोतानी बहेन उपर आसक थयो थको स्वामि इोही एटजे वजेंकरीने पोताना स्वामिनो डोह करनार अने राज्यनो जे नार, तेमज महावजनेदादिक कपटनो करनार एवो पापी हतो तेपण स म्यक्प्रकारें ग्ररुपासें आजोइ श्रीसिद्धाचजजीनी उपर मोहें गयो ए कथा विधि कौसुदी यंथमध्ये ग्रुकराजानी कथाथी जाएवी.

माटे आलोयणानुं तप जे गुरुयें आप्युं ते सम्यक्प्रकारें पूरुं करी पोहों चाडवुं. आलोयण पंचासकनेविषे कह्यं हे के यतः ॥ आलोयणासुदाणे, लिंग मिणिबितिमुणिय समञ्जा ॥ पिल्लचकरणमुचिय, अकरणंचेव दोसाणं ॥ १ ॥ पिक्य चाउमासे, आलोयण नियम साउदायवा ॥ गहणं अनिगहाणय, पुवगिह्यनिवेएउ ॥ १ ॥ नावार्थः— आलोयण देवाने माटे ए चिह्न हे एम आगमना जाण मुनिश्वर कहे हे ते चिह्न प्रांयश्वित्त लेवुं ते उचित हे आलोयण न लियेतो दोष थाय ॥ १ ॥ पाखीयें तथा चोमासीने दिव सें निश्चययकी आलोयण देवी अने आलोचकें पण पर्वणीने दिवसें अनि यह नियमादिक यहण करवा ॥ १ ॥ ए चाली हमी गायानो अर्थ ॥ ४०॥ यह नियमादिक यहण करवा ॥ १ ॥ ए चाली हमी गायानो अर्थ ॥ ४०॥

अर्थदीपिका, अर्थ तथा कथा सहित. हवे पडिक्रमणानुं फल कहे हे:-

॥ आवस्सएण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ॥ इकाण मंतकिरियं, काही अचिरेण कालेण॥ ४१॥

श्रयः— यद्यपि श्रावकजे ने ते बहुरज ने एट हो बध्यमान कर्मरूप रज नो धणी ने श्रयवा बहुरत एट हो विविधप्रकारना सावद्य पापारं जने विषे श्रातशय श्रासक्त ने तोपण श्रावश्यक करवेकरीने एट हो सामायिक, चो वीस हो, वंदनक, पिडक्कमणुं, का उसग्ग श्राने पच्च खाण रूप पड्विध जावा वश्यकें करीने दंतधावनादिक कर बुं एट हो पड्विध जावावश्यक तडुप दंतण करवेकरीने श्रद्ध शावुं पण दंतधावनादिक इच्यावश्यकें करी नही.

इःख ते शरीरसंबंधी तथा मनसंबंधी इःख तेने श्रंतिक्रया एटखे क्रय करे श्रचिरेण कालेण एटले खब्पकालेंज श्रधीत तेहजनवमां क्रय करे इ हां जोपण इःखनी श्रंतिक्रयानुं श्रंतर रहित हेतु ते यथाख्यात चारित्र क हियें तेना लाजनेविषेज श्रंतिक्रयाचाय ते इहां श्रावक परंपरायें मोक्ता हेतु एवा सामायिकादिक श्रावक्यकने श्रातमजावें करीने जावनी विद्युद्ध तायें करतो थको जावचारित्र प्रगट करीने तक्षवें मोक्न जाय.

सामायिकादिक आवश्यकेंकरीज गृहस्थनेपण नावनी विद्युिक्यें नरत चक्रवर्त्तिनी पेरें केवलकान पामे अहो नव्यप्राणीर्त ! सांनलो एक सामा यिक आवश्यकना पदमात्र आलंबन पामीने अनंता जीव मोक्तें पोहोता ॥ यतः ॥ जोग जिणसासणिम्म, इस्करक्यं पर्जंता ॥ शिक्किम्म अणं ता, वहंता केवलंपना ॥ १ ॥ नावार्थः—योगें योगें श्रीजिनशासननेविषे इःखनो क्य प्रयुंजता एकेक योगें वर्नता अनंता जीव केवलकान पाम्या ए एकतालीशमी गायानो अर्थ कह्यो ॥ ४१ ॥

हवे मन वचन कायानी प्रवृत्ति अतिस्त्रक्ता वे अने इंडियरूप तुरंगम अति चपल वे तथा जीवने अत्यंत प्रमादनुं बहुलपणुं वे माटे केटलाएक अतिचार अपराध स्मृतिमांहे नहीं आव्या होय विसर्क्तन थया होय परं तु ते सर्व आलोववा योग्य वे जे कारणे जगवाननां वचन वे के हे गीत म! प्रायश्वितनां वेकाणां असंख्याता वे तेमांहे एकपण आलोयाविना रहे तो शब्यसिहत मरणे मरे तेमाटे विसरी गयेला अतिचारने मामान्यपत्री पिककमवाने अर्थे गार्था कहे हे:-

॥ त्रालायणा बहुविहा, नय संनिरया पिडक्रमण काले ॥ मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ४५॥

हवे आलोयण ते शानेविषे होय ते कहे ते. मूलगुण ते गांच अणुब्र तरूप अने उत्तरगुण ते गुणब्रत शिक्काव्रतरूप आदिदेइने तेमेविषे वीसरी गयेला अतिचार्नुं सामान्यपणे पिकक्षमनुं निंदनुं अने गर्हनुं जाणनुं ४२

एम अनुक्रमें इष्कृतनी निंदा करीने विनयमूल धर्म आराधवाने का यायेंकरी उनो थयो थको " तस्सधम्मस्सकेविलपस्त्रतस्स " एम कहीने मंगिलकने अर्थे ए गाथा कहे ते कहे हे.

॥ अप्नुविन्नि आरा, हणाए विरन्नि विराहणाए॥ तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चन्वीसं॥ ४३॥

अर्थः-गुरुनी पासेंथी अंगीकार कहा। जे केवलीजगवाननो जांखेलो ए वो श्रावकनो धर्म तेने आराधवाने अर्थे तथा जलीरीतें पालवाने अर्थे हुं उठ्यो डूं उजमाल थयो डूं अने ते धर्मनी विराधना खंमना करवाथी निवन्यों बुं त्रिविधें एटले मन वचन कायायेंकरीने पिडक्कमवा योग्य अति चारथकी निवन्यों बुं एटलामाटे ढुं श्रीक्रपनादिक चोवीश जिनप्रत्यें वां डं बुं खेत्रथी तथा कालथी ढूंकडा उपकारी बे तेमाटे. इहां चोवीशीनुं यहण होवाथी पांच नरत, पांच ऐरवत आदिशब्दथंकी पांच महाविदेहना जे तीर्थंकर देव ते प्रत्यें ढुं वां डंबुं ॥ ४३॥

एम जावजिनने नमस्कार करीने हवे समकेत छिदिने अर्थे त्रणलोकना शाश्वता अशाश्वता एवा स्थापनाजिनने वांदवा माटे गाथा कहे हे:-

जावंति चेइआइं, ज्हे अ अहे अ तिरिय लोए अ॥ सबाइं ताइं वंदे, इह संतो तच संताइं॥ ४४॥

श्रथः-जेटला त्रष्यलोकना चैत्य तथा जिनप्रतिमा उर्ध्वलोक ते स्वर्गने विषे, श्रधोलोक ते नवनपतिना नवननेविषे, तिर्यक्लोक ते नंदि। श्वर श्रष्टापदा दि तीर्थनेविषे हे ते सर्व तिहां रहेला परमेश्वरने हुं इहां रह्योथको वांडं हुं. हवे सर्वसाधुने वांदवाने श्रर्थे कहे हे.

जावंति केविसाहू, जरहेरवय महाविदेहे छ।। स बेसि तेसि पणर्र, तिविहेण तिदंमविरयाणं॥ ४८॥

अर्थः—जेटला को इसाधु मित श्रुत अविध विपुलमित मनःपर्यवज्ञानी केवलज्ञानी चोदपूर्वी दशपूर्वी नवपूर्वी द्वादशांगी एकादशांगी जिनकत्यी प्रविरकत्यी यथालंदिक परिहारविद्युद्धि खीराश्रव मध्वाश्रव संनिन्नश्रोत कोष्टबुद्धि विद्याचारण जंघाचारण पदानुसारी वैक्रियलव्धिक. जेना कफ विट मल मूत्र प्रस्वेद केश नखादिक सर्व औपधीमय, आशीविप, पुल्लाक, निर्मेथ, स्नातक, आचार्य जपाध्याय प्रवर्तकादिक अनेक चेदना साधु ते जत्रुष्टा नव हजार कोडी अने जघन्यथी वे हजारकोडी साधु ते जरत ऐरवत महाविदेहक्तेत्रनेविषे च शब्दथकी को इदेवताना अपहत्या अकर्मनू मिनेविषे होय ते सर्वेन त्रिविधे एटले मन वचन कायायेंकरीने हुं वांडं बुं. तिहां मननेविषे साधुना ग्रुणनुं चिंतन करबं तथा वचनेंकरीने साधुना ग्रुणनो उच्चार करवो अने साधुनुं बहुमान करबं तथा कायायेंकरी शिर नमाडबुं. ते साधु केवा बे तो के मन वचन अने कायानी चपलताहूप एवा जे त्रण दंम तेथकी निवक्त्या एवा साधु बे तेने हुं वांडंबुं॥ ४५॥

एम पडिक्रमणानो करनार नर्वचेत्यने तर्वसाधुने प्रणाम करतो थको प्रवर्दमान ग्रुनश्रध्यवंसायें वधते ग्रुन परिणामें परिणम्यो थको एवं वि चारें जे श्रागला कालनेविषे पण मुजने एवा परिणाम होजो एवी ग्रुन नावनी वांढा करे ते इहाँ गाथायेंकरी कहे हे.

चिर संचिय पाव पणा सणीइ, जव सय सहस्स महणी ए॥ चडवीस जिण विणग्गय कहाई, वोटांतुमे दियहा॥ ४६॥

श्रथः चणाकालना संचितपापना प्रणाशनी करनारी तथा नवशत सहस्र ते शो हजार एटले एकलाख नव थया पण उपलक्क्णथी श्रनंता नवनी मथनारी एवी चावीशे तीर्थकरनी बीजकथा श्रंकरनी वधारनार चो वीशे जिनना मुखथकी नीकलेली जे कथा ते कथायेंकरीनें प्रश्चनां नाम च त्कीत्तन प्रश्चनां गुणगान चरित्रदर्णनादिक रूपवचननी पद्दतियें परमेश्व रनी कथा करी प्रश्चनी पूजा पुष्पादिकें करतां तबोलिया सप्पें दंश दीधो तोपण श्रमण्यका काचसण्ण्यानें रह्या एवा नागकेतुने तत्काल केवल झाननी श्रापनारी एवी चोवीशतीर्थकरनी कथायेंकरीने महारा दिवसां व्यतिक्रमो इहां बोध बीजनी प्रार्थना करतां दोप नही ॥ ४६ ॥

हवे मंगिलकपूर्वक पिङक्षमणानो करनार नवांतरनेविषे पण समा धि वोधपामवाने अर्थे प्रार्थना करेत्रे ते गाथायेंकरी कहे ते. मम मंगिलमिरहंता,सिश्वा साहु सुयंच धम्मो अ॥

सम्महि द्वा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७॥

श्रयः— मुजने मंगलिक हो श्रिरहंतनुं, सिद्धनुं, साधुनुं, श्रुत ते श्रंगो पांगादिक श्रागमधर्मनुं, श्रने ज्ञान चारित्ररूप धर्मनुं,च शब्दथकी ए धर्म ते लोकमां उत्तम हे शरणजूत हे एम देखाड्युं ए चार मंगलिक कह्यां इहां श्रुत श्रने धर्म वे जूदां कह्यां ते ग्रुं धर्म श्रुतमांहे न श्राव्योः? पण श्रुत मंगलिकनुं प्रधानपणुं देखाडवामाटे जूदां कह्यां ज्ञान क्रिया बेहुनेलां म ले थकेज मोक् हे एम जणाववानेश्रयें कह्यां तेहज कहे हे. यतः ॥ ह यंनाणं कियाहीणं, ह्या श्रुताण्ड किया ॥ पासंतो पंगलो दृढ्ढो, धावमा णोवि श्रंध्रचे ॥ इत्यादि ॥ १ ॥ नमत्वे पश्रवो जलैजेलचराः सर्वेजटानिवे टाः, वल्केर्नूर्जलताः सुताः करिवराः श्वानादयोजस्मिनः ॥ वृह्वीनां ज्वलनेर्ज

नाहरितृपाबद्धाः सदा रक्कुनिः, स्वर्ग यांति कथं न ते यदि तृथा ज्ञानिक्रये निष्प्रमे ॥१॥ तथा ॥ वहीनां ज्वलनैः स्वियो बहुविधाः क्षेत्रोद्दिष्ट्रस्थ्रचेन्मुक्तिं यांति पुनर्जनाः शमदमङ्ञानिक्रयाद्येगुँणैः ॥ १॥ नावार्थः—िक्रयाहीन ङ्गान ते हण्युं अङ्गानयकी क्रिया हणी जेम पांगलो देखे अने आंधलो दोडे हे ते जेम एकथी कार्यसिद्धि न थाय बेहु मलवाथी वांहित कार्य थाय माटे ङ्गानिक्रया संयुक्त होय तो मोक्त्रह्भ कार्य थाय ॥ १ ॥ तथा पश्च नम्न परे हो, जलचरजीव जलमांहे रहे हे, वटादिक जटा धरे हो, नोज पत्रहक्त वटकल पहेरे हे तथा बालक हक्ती, श्वानादिक राखमांहे पङ्या रहे हो, वली अभिने सदाइ लोक,वाले हो, सिंह, हपन अश्व सर्वदा दोरियें बांध्या रहे हो तो ते खर्गें केम नथी जाता ? तथी जो मोक्त थाय तो ङ्गान क्रिया ए निष्प्रमाण गणाय ॥ १ ॥ घणी स्वीत्रे अमीमां बले हे तथा दि इी लोको घणा प्रकारना क्रेशोने पामे हे परंतु ते मुक्तिने पामता नथी मुक्ति तो मात्र शम दम ङ्गान अने क्रिया आदि गुणेकरीने प्राप्त थाय हो ॥ श

श्रीश्राचारांग स्त्रमांहे कहां हे, यतः ॥ श्राणाणाए एगे निरूवताणा एवंते तावहोइनि तो श्रिधियक सम्यक्दृष्टि एवा देवता देवीचे जे धरणें इ श्रंविका यद्दादिक ते मुजने समाधिपणुं श्रापो जे चिन्ति। स्थिरता ते समाधि कहियें ते समाधि सकलधमें मूल हे जेम शाखानुं मूल स्कंध हे, प्रतिशाखानुं मूल शाखा हे,फलनुं मूल फूल हे, श्रंकुरनुं मूल बीज हे तेम धमें मुं सूल समाधि हो. चिन्ति। स्वस्थता विना जेटलां रूडाधमेनां श्रनुष्टान ते सर्व कष्टनूत जाणवां. प्रायः व्याधिपीडायेंकरी समाधिनो नाश थाय हे तेमाटे ते व्याधि पीडानो रोध करवो तेनो हेतु उपसर्गनिवारण हे ते उपसर्ग निवारवानेमाटे समकेतदृष्टि देवदेवीनी प्रार्थना करवी ते प्रार्थना बोधि एटले परलोकें श्रीजिनधमेनी प्राप्तिने श्रार्थना करवी ते प्रार्थना बोधि एटले परलोकें श्रीजिनधमेनी प्राप्तिने श्रार्थन महणो, मा राया चक्कव दिव ॥ १ ॥ जावार्थः—श्रावकना घरनेविषे दास थावुं ते पण जलुं जे माटे तिहां ज्ञान दर्शनसमेत थवाय परंतु मिथ्यात्वें मोहितमितवालो एवो राजा तथा चक्कवर्त्तपणुं पण मुजने थाशो मां ॥ १ ॥

रहां कोइक . एम कहे के समकेतदृष्टि देवदेवी समाधि बोधी आ पवाने समर्थ है के नथी ? जो समर्थ नथी तो तेनी प्रार्थना करवी निष्फ ल हे अने जो समर्थहे तो इनिच्य तथा अनव्यने केम समाधि आपता न थी. जो कहेशो के योग्यनेज आपवा समर्थ हे पण अयोग्य अनव्य इने व्यादिकने आपवा समर्थ नथी तेवारेतो योग्यताज प्रमाण राखवी तेवारे अजागलस्तननी पेरे वृथा प्रार्थना करवाथी छुं?

हवे ग्रह उत्तर कहें हे के सर्वत्र योग्यताज प्रमाण हे अमे बीजो कांइ विचार जाणता नथी अमे नियतवादी एकांतवादी नथी अमेतो सर्वनय समू हात्मक स्थाहादी होयें ते अमे कहीयें हैयें के सर्वसामग्री जोइयें जेम घटनी निष्पत्तिमां माटीनी योग्यता हतेपण कुंचार, चक्र, चीवर दोरो वहा दंमा दिक सर्व जोइयें तेवारे घट नीपजे हे सहकारी कारण तेहज जोछं. तेम इहां जीवने योग्यता हतेपण विद्यना समूहने दूर करवा माटे समाधि वो धिना देवानेविपे देवनापण समर्थ हे.जेम मेतार्यमुनिने पूर्वचवना मित्र देवता यें आवी सुजनबोधी कस्बो तेनीपेहे समकेतदृष्टि देवतानी प्रार्थना बलवती हे.

इहां शिष्य आशंका करे हे के सम्यक्दिए देवतापासेषी वोधी समाधिनी याचना करतां तेमनुं बहुमान करवुं पडे तेथी शुं समकेत मिलन न थायके?

गुरु उत्तर कहे हे के ते देवतानी पासंधी कांइ मोक्स मागता नथी अमें तो एट जुंज मागियें हैयें के धर्मध्यान करतां थकां अमारां विद्वा टालो एम धर्ममां अंतराय टालवानी प्रार्थना हे एट जामाटें देवतानी प्रार्थना कर तां कांइ दोप नथी जेमाटे पूर्वें श्रुतधरोनुं ए आचरण हे. श्रीआवश्यक चूर्मिमध्ये श्रीवयरस्वामीना चित्रजेनिये कह्यं हे. यतः ॥ तश्चय अप्रासे अन्नोगिरि तं गया तश्च देवयाए का उसगोक उसावि अप्रुष्टिआ अणुग्गहं ति आणुन्नायमिति तथा आवश्यकनी का उसगा निर्युक्तमांहे पण कह्यं हे यतः ॥ चा उमासिए विस्ते खित्तदेव उसगो खित्तदेवयाए अ वेयावच गराणं दिक्क धुइ जस्कपमुहाणं करंति पित्कि चा जमासिएवेगे ॥ तथा हह स्कल्पनाष्यमां पण कह्यं हे ॥ पारिश्व का उसगो, परिमिष्ठिणंच कय नमुक्का रो ॥ वेयावचगराणं, दिक्क धुइक्क स्कपमुहाणं ॥ १ ॥

तथा चौदरों चुमालीश यंथना कर्ना श्रीहरिन्द्सूरियें पण लिलतिवस्त रा यंथनेविषे वेयावच्चना करनारां देवदेवीनी चोथी थोइ कही हे तेमाटे समकितदृष्टि देवतानी प्रार्थना करवामां कांइ अयुक्त नथी ॥ ४७॥

हवे जेएो बारेव्रत लीधां होय तेने अतिचारनुं आलोववुं होय अने ते

णेंज पिकसण्डं करवुं परंतु जेने व्रत न होय तेणें पिकसमणुं न करवुं एवी आशंका टालवाने चार प्रकारतुं पिकसमणुं मूलगापायेंकरी कहे है.

पडिसिश्वाणं करणे, किञ्चाण मकरणे पडिक्रमणं ॥ असदहणे अतहा, विविरेख परूवणाएळ ॥ ४०॥

श्रथः—श्रावकने पण सिद्धांतमध्ये स्यूलप्राणातिपातादिक तथा श्राहर पापस्थानक निषेध्यां हे तेनुं करण एटले श्राचरण कखुं होय श्रने १ जे श्रावकने करनुं घटे ते न कखुं होय जेम निइामांथी उठतिवखतें सूतीवखतें वेसतीवखतें नवकार गणवो सूत्रोक्त श्राइदिनकत प्रमुख श्रनेक ग्रंथनेविषे जे श्रावकनी करणी परमेश्वरनी पूजा प्रमुख कही हे ते कृत्य नक्खां होय तथा ३ काची समजणने लीधे सूक्त्यानिगोदादिकना जावनी समजण न पडवाथी श्रथवा ए केणें दीवा हे इत्यादि सूक्त्यश्रथं सदद्या न होय तथा ४ विपरीत प्ररूपणा ते श्रवली प्ररूपणा उन्मागेदेशना करवी ए देशना ते मरीचीनी पेरें इतंतहःखनी हेतु रूप हे. यहकं ॥ ह्यासिएण इक्तेण,मरीइ इस्क्रमागरं पत्तो ॥ जिन्हें कोडाकोडी, सागरसरिनाम धिजाण ॥ १ ॥ जावार्थः—जेम एक इर्जावित वचनेंकरी मरीचिनो जीव इःखरूप समुइमांहे पड्यो ते एक कोडा कोडी सागरोपम प्रमाण संसारमां जम्यो ॥ १ ॥ ए विपरीतप्ररूपणा श्रना उपयोगें करी होय तेनुं पडिक्कमणुं थाय ए चार प्रकारनुं पडिक्कमणुं कसुं.

इहां शिष्य, गुरुने पूछे हे के श्रावकने धर्मनो उपदेश करवानो श्राम्वार है ? तेने गुरु उत्तर कहे हे के श्रावकें जो गुरुनी पासें श्राम्वाय सहित सूत्रार्थ धाखा होय श्रमे गुरुयें श्राङ्गा श्रापी होय तो ते श्रावक, धर्मदेशना श्राराधना करे पोतें नणे गणे सांन े श्रमे लोकने धर्मवार्ता पण कहे इत्यादिक श्रागमप्रमाण हे तेम श्रावक्यकचूर्णिकार कहे हे के ते जिनदासनामा श्रावक श्रष्टमी चतुर्दशीनेविषे उपवास करे, पुत्तक वांचे ॥ ४०॥ एं विशेष हेतु दृष्टांतें सहितपिडक्कमणुं कह्यं ॥

हवे संसारीजीवने संसारमां चारे गतिनेविपे अनेक प्रकारना नव नमतां यकां अनेक संसारी जीवोनी साथें वैर खयुं होय ते खमावे हे,

> खामेमि सबजीवे, सबेजीवा खमंतु मे ॥ मित्तिमे सबजृएसु, वेरं मकं न केणय॥४ए॥

अर्थः—सर्वजीवने हुं खमावुं हुं अने में जे कांइ अनंतज्ञवनेविषे मोह अज्ञानपणे पीड्या एवा जीवोने अनेक प्रकारनी पीडा उपजावी होय ते महारी अपराधरूप इष्टचेष्ठाने पण सर्वे जीवो तमे खमो एटले सर्वेजीवो तमे महारी उपर क्मा करो अर्थात् महारे ते जीवोनी साथें कर्मबंध न हो य एम करुणालुपणुं जणाव्युं हवे हेतु कहे ने. सर्वजीवोनी साथें सर्वजृत सत्वोनी साथें महारे मेत्रीजाव हो, महारे कोइ प्राणीनी साथें वेर अप्री ति न हो, एटले मुजने मुक्तिना लाजना हेतुं ए सर्वजीव हो अने हुं पण ते सर्वजीवोने यथाशक्तियं मुक्ति पमाहुं अर्थात् हुं कोइ जीवने मोक् जतां विद्यनो करनार न याउं, तत्व जाण्युं ने माट महारी निंदाना करनारनी उपर पण महारे हेपजाव नथी. ज्ञानांकुशमांहे कह्युं ने के माहरी निंदा करीने पण जो लोक संतोपने पामतां होय तो ते प्रयास कह्याविना म हारे अनुमहरूप ने; केम के कव्याणना अर्थी पुरुप परने संतोपनी पुष्ट ताना हेतुयेंकरी अर्थात् परने संतोप वधारवासारु इःखेंकरी उपार्झेलां एवां धननो पण परित्याग करे ने.

त्वे ए मेत्रीनावनानुं सिरूप कहे हे:—नाऽकार्पांकोपिपापानि, माचनू त्कोऽपि इःखितः ॥ मुच्यतां जगद्प्येपा, मितभेंत्री निगद्यते ॥ १ ॥ जा वार्थः—कोइ प्राणी पाप करशो मां,कोइ प्राणी इःखी म थार्र कोइरीतें पण जगत् इःखयी सूकार्र, एवी जे मित ते मेत्री जावना कहेवाय हे.

वेर जो थोडुं होय तो पण ते आ जव अने परजवनेविषे महा अनर्थनुं करनारुं थाय, वर ते कोरव अने णंमवने अहार अहाँ हिणी कटकना ह्र यनुं करनारुं थयुं तथा कोणिक अने चेडामहाराजाने अनर्थकारि थयुं. श्रीजगवतीसूत्रमां कह्युं हे जे ॥ चेडय कोणिय जुप्ने, चुलसी ह्रु आलक मणुआणं ॥ रह सूसलंमि नेया, महासिला कंटकएचेव ॥ १ ॥ इत्यादि चार गायानो अर्थ कहे हे:—पंचमा अंगमांहे विसंवादपणे चेडामहाराजा अने कोणिकना युद्धनेविषे चोराशी लाख अने ह्रु लाख मनुष्यनो संहार थयो ते रथमुसलनो संयामनेविषे महाशिला कंटक संयामनेविषे थयो ॥ १ ॥ वरुण नामा सार्थी सौधमेदेवलोकें गयो तथा तेनो मित्र मरीने मनुष्य थयो, नवलाख माणस मरीने मत्स्य थयां, श्रेष बीजा जीव मरण पामीने तिर्यचगित तथा नरकगितमां गया ॥ १ ॥ कालकुमार आदिक द

शजाइ मरीने चोथा नरकनेविषे उपन्या ते नरकथकी निकलीने दशे जाइ महाविदेहमां मनुष्य थइ तिहांथी मोक्टें जशे ॥ ३'॥ तेमनी साता पण वैराग्य पामी श्रीवीरप्रज्ञनी पासेथी दीक्हा लेती हवी ए अवसर्ष्पणीनेवि षे एवो कोइ बीजो संग्राम थयो नथी ॥ ४ ॥

जूर्ड कमवतुं एकपखुं वैरपण मरुन्तिने दशनव सुधी डःखदायि थयुं वली ते वैर,परनवनी परंपरायं अनुयायि थाय एटले पावल चाल्युंज आ वे; लोकमां पण कहे हे. यतः ॥ वेरं विश्वानरोव्याधि, वादव्यसनलक्षणं॥ महानर्थाय जायंते, वकाराः पंच वर्षिताः॥ नावार्थः—वेर, विश्वानर (अप्रि) व्याधि, (रोग) वाद करवो, व्यसन सेववुं, ए पांच प्रकारना वकार वध्या थका महाअनर्थरूप थाय हे.

एटला माटेज धर्मनुं मूल क्मा एवं श्रीवीरपरमात्मायं पोतें देखाडगुं वे जेमाटे इन्नाम खमासमणो इत्यादि पातें इन्नुं हुं हे क्माश्रमण! इत्यादिक नेविषे परमेश्वरें क्मानुं प्रधानपणुं देखाडगुं. यतः ॥ खंती सुदाणमूलं, मू लं धम्मस्स उत्तमा खंती ॥ हरइ महाविक्जाई, खंति इिस्त्राई सवाई ॥१॥ जावार्थः—क्मा ते सुखनुं मूल वे, धर्मनुं मूल ते पण उत्तम क्मा वे, जे म महोटा वैद्य व्याधिने हरे वे तेम क्मा वे ते सघलां पापने हरे वे॥१॥ जो समर्थ होय तेने क्मा कखानुं फल घणुं कह्युं वे. यतः ॥ दाणं दिहस्स पहुस्तखंति, इन्नानिरोहो मणइंदिश्रस्स ॥ पढमेवए इंदिय निग्गहो श्र, च नारि एश्राणि सुइदराणि ॥ १ ॥ नावार्थः—दारिइपणामांहे दान, प्रज्ञता मांहे क्मा,मननी इन्नानो निरोध करवो, श्रने पहेलीवयमां एटले योवना वस्था मांहे इंड्यिनयह करवो ए चार वाना श्रति इन्कर वे ॥ १ ॥

क्मा आदरवाथी क्रगडु आदिदेइने घणा जीवो तेहज नवमां केवलका न पामीने मोक्नें पोहोता माटे उत्तमजीवें वैर ढांमवुं क्मा आदरवी ॥ ४ए ॥ हवे पिंकमणासूत्रना अध्ययननो उपसंहार करतां थकां आगले धर्म नी वृद्धिने अर्थें मांगलिक माटे हेली गाथा कहे हे.

् एवंमह आलोइय, नंदिख्य गरिह्छ छगंिव्यं सम्मं ॥ तिविहेण पिडकंतो, वंदामि जिणे चर्रवीसं ॥ ५०॥ अर्थः- ए प्रकारं हुं सम्यक्रीतें गुरुनीपासं आलोइने पोतानां पाप क हीने नंदीने एटसे हाइतिखेदे में माठुं कखुं एवीरीतें कहीने आत्मानी सा खे पापनी गईएा करीने गुरुनीपासें जुगुप्ता इगंडा करीने सम्यक् प्रकारें अतिचार जाणीने तेनें रूडीरीतें मन वचन कायायें त्रिविधें पिडक्रम्या ए प डिक्रमण नामा अध्ययन पुरुं थयुं माटे चोवीश तीर्थकरने वांइं छुं ॥५०॥

इहां कोइ अपर कहे ने के ए पिडक्रमणसूत्र कोणें कखं तेने गुरु कहे ने के जेम वीजां पिडक्रमणासूत्र बहुश्रुत स्थिवरनां करेलां ने तेम ए पण जाणवुं जेमाटे श्रीआवश्यकसूत्रनी दृहदृत्तिनिविषे "अस्करसित्तसम्मं" ए गायाना व्याख्यानमां कहां ने जे आचारांगादिक जे आंगप्रविष्टश्रुत ने ते गणधरें कखं ने आवश्यकादिक अनंगप्रविष्टश्रुत ने ते स्थिवरकत ने जो कहेशों के श्रावकप्रतिक्रमणसूत्रने जो आचार्यकत कहियें तो एनां नाप्यित ग्रुक्त्यादिक पण जोइयें त्यां कहे ने के आवश्यक इश्वेकालिकादिक दश शास्त्र विना श्रेप बीजां शास्त्रने निर्मुक्तिनो अनाव ने अने उववाइ प्रमुख उपांगने तो वली चूर्सिनो पण अनाव ने माटे शुं ते सिद्धांत नथी? श्रावक पिडक्रमण सूत्रनी विक्रम संवत् ११०३ ना वर्षमां श्रीविजयसिहसूरि तथा श्रीजिनदेव स्रिकृत चूर्सि नाप्यादिक पण ने अने वृत्ति टीकातो वली घणी ने ए का रणमाटे श्रुतस्थविरने करवेकरीने सघला अतिचारनो विशोधक होनाधी ए श्रावकपिडक्रमण सूत्र ते सर्व श्रावकें निश्रयें आदरवुं जेम साधु पोता नां पिडक्रमणसूत्रने आदरे ने तेम आवकें पण पिडक्रमणासूत्र आदरवुं.

इहां श्रिनिवेश मिष्यालना धणी कदायही लोको ते वली एम कहे ने के ए वंदितु नामे श्रावकनुं प्रतिक्रमणसूत्र ते तो पानल्यी कोण जाणे कोणें कखुं ने तेमाटे ए मानवा योग्य नथी एवुं जे कहे ने तेनी ग्रुं जाणी यं शी गति यशे जेमाटे ते सर्वक्षप्रणीत मार्गने मरडवायकी श्रनंतां इःख पामशे. यतः ॥ रन्नो श्राणनंगे,इक्कुचिय निग्गहो ह्वइलोए ॥ सबन्नु श्राण नंगे, श्रणंते सोनिग्गहं लहइ ॥ १ ॥ नावार्थः— राजानी श्राक्का नांगेयके लोकमांहे एकवार नियह याय एटले दंम याय परंतु जे सर्वक्रनी श्राक्कानो नंग करे तेतो श्रनंती वार नियह पामे दंम पामे ॥ १ ॥

कोइक वली एमज कहे हे के श्रावकना वंदिता पिडक्कमणा सूत्रनो वि चार अने अर्थतो वेगलो रहो पण प्रथम तो श्रावकने पिडक्कमणुं करतुं ते पण क्यां कह्यं हे ? माटे वंदिनासूत्रनो विचार तदिष प्रलापमात्र जाणतुं. गुरु कहे ने के सिद्धांतमांहे श्रावकने पिडक्कमणुं करवानो पात श्रमेक तेकाणे कह्यों ने प्रथमतो श्रीश्रनुयोगद्दारमांहे देखियें नेसे. यतः॥ सेकिनं लोर्जनिरिश्रं नावावस्सयं जं समणोवा समिणवा सावर्जवा साविश्रावा त चिने जाव उनर्जकालं श्रावस्सयं करे इति तथा वली एज श्रनुयोगद्दारमां हे ए गाथा ने. यतः॥ समणेण सावएणय, श्रवस्स कयव्वयं हवइ जम्मा॥ श्रंतो श्रहोनिसस्स, तम्हा श्रावस्तयं णाम॥ १॥ नावार्थः—ते केम लोकोत्तर नाव श्रावक्यक जे साधु श्रथवा साध्वी श्रावक श्रथवा श्राविका तेर्ज तिच्च एवां थयांथकां उनयकाल श्रावक्यक करे. तथा तिहांज कह्यंने जे साधुयें श्रावकें श्रवक्य करीने पिडक्कमणुं करवुं होय जेमाटे श्र होरात्रमांहे श्रंते कराय तेमाटे एनुं श्रावक्यक एवुं नाम ने॥ १॥

तेमज नवांगनी टीकाना करनार श्रीश्चनयदेवसूरि तथा कलिकालमां सर्वक सरखा श्रीहेमचंडाचार्य प्रमुख पूर्वाचार्ये रचेला एवा जे पंचाशक वृत्ति, योगशास्त्र प्रमुख श्चनेक यंथ वे तेनेविषे श्रावकने पिडक्कमणुं साह्रा त्पणे कह्यं वे ते सर्वत्र प्रसिद्ध वे.

ते पडिक्रमणाना पांच जेद हे एक दैवसिक, बीजो रात्रिक, त्रीजो पा द्विकं, चोथो चातुर्मासिक्न अने पांचमो सांवत्सरिक ए पांच पडिक्रमणाना विधि महारा करेला विधिकौमुदिनामा यंथथकी जाएजो.

ए वंदितासूत्रनो बालावबोध जगतमां विख्यातिवंत एवा श्रीतपगन्न बि हदना धारक श्रीजगचंड्सूरीश्वर होताहवा तेमने पाटें अनुक्रमें श्रीदेवसुंद रसूरि उत्तमोत्तम थया तेमना पांच शिष्य हता तेमांहे पहेला शिष्य श्रीक्षा नसागरसूरीश्वर गुरु ते विविध प्रकारनी अवचूरीरूप लहरीना प्रगट करवा थकी साचा नामना धारक थया जेणे आगमना विविधप्रकारना आलावा उद्धा एवा ते सूरिना इंड होताहवा तथा बीजा श्रीकुलमंमनसूरी,त्रीजा श्रीगुणरत्ननामा सूरि,जे पट्दर्शनवृत्ति,कियारत्नसमुच्चय, विचारसंग्रह इत्या दि ग्रंथोना करनार थया, अने जे श्रीज्ञवनसुंदरसूरि आदिनेविषे विद्यागुरु पणाने जजता हवा तथा चोथा श्रीसोमसुंदरसूरि प्रवरगुरु चोथा गुरुजाइ महोटा महिमाना धणी थया जेथकी धर्मनी वे प्रकारें अत्यंत संतित श्रेणी थइ हे तथा वली यतिजितकद्यनीवृत्तिना कारक एवा पांचमा गुरुजाइ

श्रीताधुरत्नसूरीश्वर प्रवर थया, जेणे मुजसरखाने पण हाथें यहण करीने संसारकूपमांहेथी बाहेर काढ्यो ए पांच शिष्यनां नाम कह्यां.

ते पूर्वोक्त श्रीदेवसुंदरगुरुने पाटे श्रीसोमसुंदर नामा गणिना इंड् ते गु
गप्रधाननीपेरें जयवंता वर्षे हे तेमना पांच शिष्य महोटापुरुष निरपेद्दी, स
हस्त्रनाम स्मृतिप्रमुख कार्येंकरीने श्रीमृतिसुंदरसूरि जेवा गुरु प्राचीन श्राचा
र्यना महिमाना धारक एवा श्रीजयचंड्सूरि श्र्या तथा संघना श्रने गन्नना
कार्यने करवा जजमाल एवा मुनींड् श्रीज्ञवनसुंदरसूरि प्रधान तथा दूरिव
हार करी गणने जपकारना कारक एकांगपणे एकादश श्रंगना धारक श्री
जिनसुंदरसूरि नियंथ श्रनेक यंथना कर्चा तेमना शिष्य श्रीजिनकीर्चि गुरु
होताह्वा ते गुरुना प्रसाद्यकी विक्रम संवत् १४ए६ नावर्षे श्रीरत्नशेखर
गणि कार्यनी संतुष्टियें ए वंदितासूत्रनी वृत्तिने करता ह्वा.

जेम दिधमंथनें करी अर्थात् दिधवलोववाना रवेंयायें करी तेमांथी जत्रु ए साररूप माखण शोधाय तेम चारवेदना समुङ् रूप अने पंमितोनेविषे इं इसरखाएवा लक्कीन्य हनामा स्रियें प्रयत्नेकरी आ वृत्तिने शोधी. तथा प्र शंसाना नीपजावनार गणिसत्य इंसपंमितें गुरुनिक्तयेंकरी आ टीकानेविषे प्रथमद्दीनें सांनिध्यपणुं कखुं एटले प्रथम लखावी,एटीकानुं नाम अर्थदी पिका ने तेना अनुष्ठप्रतोकनुं मान ६६४४ ने महोटी चूर्षि विविधजा तिनी वृत्ति तेने अनुसरीने अल्पमितना धणी एवा में ए टीका करी ए मांहे जे जत्सूत्र होय ते पंमितें शोधनुं ए वृत्ति घणाकाल जय पामो.

श्रीतपागन्ननायक परमगुरु श्रीसोमसुंदरसूरि तेना शिष्य श्रीज्ञवनसुंद रसूरि तेहना शिष्य उपाध्याय श्रीरत्नज्ञोखरगिएयें श्रा श्रा ह्रप्रतिक्रमणनी श्रा श्रीपिका नामें टीका करेली हे तेनी उपर कोइ पंमितने हाथे टबो नरेलो हतो ते टबानी प्रत श्रीश्रमदावादना रहेवाशी श्रावक रवचंद जयचंदनी स्थापन करेली विद्याशालाना जंमारमां हती ते प्रत श्राहीं श्रीमुंबइमां विद्याशालाना श्राडतीया श्रावक कवेरी होटालाल ज़लुनाइयें वांचवा सारु मगावी हती तेमनी पासेथी हुं मागी लाव्यो.

तथा एज पूर्वोक्त अर्थदीपिका टीकाने अनुसारें ते अर्थदीपिकानो ना वार्थ लक्ष्ने श्रीगुरुनी कृपायकी श्रीजिनविजय पन्यास प्रमुख सकलसंघ ना कह्याथकी श्रीशांतिनायनगवानना प्रसादथकी पंमित द्रषेविजयगणियें बालजीवोना उपकारने अर्थे बालावबोध कस्यो हतो ते क्यलावबोधनी प्रत एक महारीपासे हती ए वे प्रतो यद्यपि अत्यंत अग्रुद्ध लखेली हती तो पण वे प्रतो होवायी मने महारी अल्पबुद्धिने अनुसारें कांइक उतारो करवा ने अनुकूल थयो ते उपरथी मात्र बाल जीवोने पिडक्कमणानों मार्ग किंचित्त समजणमां आववा माटे आ प्रंथ ग्रापी प्रसिद्ध कस्यो ने यद्यपि पंमित जनों ने तो टीका वांचवीज उपयोगी ने परंतु बालबुद्धिवाला जीवोने आ महारी ग्रापेली प्रत वांचवाथी जो कंइपण शेली समजाशे तो ते प्रक्षो, रुचि वृद्धिपामवाथी वली ए प्रंथने ग्रुद्धरीतें समजवामाटे ए प्रंथनी टीकानी ग्रुद्ध लखेली प्रत मेलवीने तेने वांचवा सांजलवानो उद्यम करशे एवा हेतुथी में आ प्रंथ ग्राप्यो ने ते ग्रापतां थकां महारे हाथे जे कांइ कानो मात्रा अक्र पदगाथा श्लोक वगेरे न्यूनाधिक लखायुं होय तेमज महारी अल्पबुद्धिने लिधे समजणमां कोइवात बराबर न आव्याथी विपरीत लखायुं होय ते सर्व श्रीश्रिरहंतनी साखे, सिद्धनी साखे, आचार्यनी साखे, उपाध्यायनी साखे, साधुजीनी साखे, सम्यक्टिए देवतानी साखे, चतुर्विध श्रीसंघनी साखे, तथा महारा पोताना आत्मानी साखे, मिन्नामि इक्कडं.

दे पंमितजनो! तमे सर्वे गुण्याहितो माटे प्रमादी तथा खंइ एवो हुं तेनी उपर रुपाराखी बालजींवो उपर उपकारबुि खाणीने ए बालावबोध शोधजों में खा महान् यंथोने प्रसिद्ध करवानो प्रारंज करेलो हे ते बालकनी रमत माफक समजीने मुज बालक जपर मावित्रनी पेतें प्रेम राखीने यंथ शोधन करवानो प्रयत्न जो चालु करशों तो हमणां जेकांइ महाराथी खड़दता वगेरे दोषो रही गयेला हशे ते फरीथी जेवारें ए यंथो हपाशे तेवारे छुद थइ जशे तेतो खाप समजो हा. यंथायंथ १२००० इत्यलं किंबाहुना सुझेष्ठ.



॥ अय नोकरवालीनी सचा ॥

ढाल ॥ एक नारी रे धर्मतणे धूरें जाणीयें, तस महिमा ने मनरंगें व खाणीयें ॥ तेह नारी रे आपणडे मन आणीयें, षटदरशने रे तेह पण सघसे मानीये ॥ १ ॥ र्चाल ॥ मानीयें पण नारी रूडी,नही कूडी ते वली ॥ करकमल कीजें काज सीजें, ध्यान धरीयें मनरुली ॥ १ ॥ त्रिञ्जवन्न मो हे रूप शोहे, देव दानव कर चंडी॥ नोकर्रवाली मुहपतीने, आदि पुरुषें श्रादरी ॥ र ॥ ढाल ॥ जिनशासनें रे नोकरवाली सहु मुणे, परशासनें रे जपमाली कही सिव गए। ॥ तुरकाएो रे तसबीर बोर्ज मनरुली, अक् माला रे नाम कहीयें चोधुं वली ॥ ४ ॥ चाल ॥ नाम लीजे काज सीजे, लोक बुजे अतिघणो ॥ दरिसण दीवे इःख नीवे, पाप जाये नवतणो ॥ प ॥ हिर दर पुरंदर सकल मुनिवर, हाथे रूडी दीसए ॥ नोकरवाली हाथ जेतां, देव दाणव तूसए ॥ ६ ॥ ढाज ॥ एक शोहे रे मूरित मोहन वे लंडी, शोहामणी रे चतुरपणे ते गुण चडी ॥ दोय चंचपन्ने रे मली करे श्रहोतरी, ध्यानधरीयें रे तरीयें जवसायर वली ॥ १ ॥ चाल ॥ संसार तरीयें ध्यान धरीयें, तरीयें जवसायर वली, नोकरवाली ध्यान धरतां, मु कि पामे केवली॥ सिव त्रास पूरी कर्मचूरी, सहेजें शोहे मनरुली॥ क हे कवियण सुणो लोको, श्राराधो एकमन वली ॥ ए ॥ इति नोकरवाली नास समाप्तः॥

॥ अथ प्रस्ताविक सुनाषित दोहा ॥

सुणो वात सुविचार, एकमें अचरिज दीवी, नारी सात दस खडी, पुरुष त्रण चारे बेंबी ॥ नारि न बोले चार, चार चिहुं चरणे दिहि, एकण कपर आइ, नारी नवसत्त बइही, तिणकन्दे ले चार नर चिहुंदिसें, तिन्दि पुरुष कर कर फिरे, कहो अरथ सत्तर नारी,अनें सात पुरुष रामत,करे ॥ १ ॥

कुसुमें मीने अन्न, उदक मीने जन्हां मीने खूण रसोइ, वस्त्र मी ने सीयां ॥ मीने प्रेम पियार, वात मीनी अणदीनी, मीनी दूधनी वा त, माहमीनी अंगीनी ॥ मीनी जह गरज हुये, मीने रस तंतीतणो ॥ किन गद्द कहे कब्हिसिगलाहपें, सुत संगम मीने घणो ॥ १ ॥

गुरु शिष्य प्रश्नोत्तर बत्रीशी. अय गुरुयें शिष्यने पूबेला प्रश्नोत्तरः

॥ दोहा ॥ पान सडे घोडो छडे, विद्या विसरी जाय ॥ छंगारे रोटी जले, कहु चेला कुण गय ॥ १ ॥ गुरुजी फेरी नहीं ॥ मोटूं मोती मूल कम, सरवर पीठ न थाय ॥ रावत नागे राडमें, कहु चेला कुण ठाय ॥ २ ॥ गुरुजी पाणी नहीं ॥ सरवर फूटुं जल गयुं, परजा रूठी जाय ॥ लियो शाक श्रमयो रह्यो, कहु चैला कुण ताय ॥ ३ ॥ गुरुजी पाल नहीं ॥ उना त्राठी थरहरे, चरखें रुछ न थाय ॥ महिषी दूधे छतरे, कहु चेला कुण वाय ॥ ४ ॥ गुरुजी चारी नहीं ॥ पाक सांखि जूखें मरे, जेंस गइ बटकाय ॥ लखतां उल वांकी लखी, कहु चेला कुण गय ॥ ५ ॥ गुरुजी पामी नहीं ॥ घोडो घोडि न हथीर्ड, चोर ढंढोव्या जाय ॥ आइकामणि फरगइ, कहु चेला कुण वाय ॥ ६ ॥ ग्रुरुजी जाग्यो नहीं ॥ घोडे घास न बोटि यो, चाकर रूठो जाय ॥ उते पलंग चूंइंसूए, कहु चेला कुण ठाय ॥ ७ ॥ गुरुजी पायो नहीं ॥ कहीं धूयो न नीसरे, म्होला वाय न जाय ॥ तीरा मही वद गइ, कदु चेला कुण राय ॥ ए ॥ ग्रुरुजी जाली नहीं ॥ कापो तूरे बल घटे, खीचंड ख्खां खाय ॥ कामण नेह वधे नहीं, कहु चेला कुण वाय ॥ ए ॥ गुरुंजी चोपड नहीं ॥ एकांतरे दल वहे, पग अलवा णो जाय ॥ ढाढी गावे एकलो, कहु चेला कुण ठाय ॥ १० ॥ गुरुजी जोडी नहीं ॥ घेरथकी घोडी गइ, गइ ऋण दोइ गाय ॥ नारी शएगार सज्यो नहीं, कहु चेला कुण वाय ॥ ११ ॥ गुरुजी वाली नहीं ॥ विषयो पियु पियु क रिरडे, खेती सूकी जाय ॥ पाल पंथि पाठो फिरे, कह चेला कुण वाय ॥ १२ ॥ गुरुजी पाणी नहीं ॥ घर आाष्यो तूटो पद्य, वात हुवे विकथा य ॥ त्रिय मस्तक तूटे फिरे, कहु चेला कुण वाय ॥ १३ ॥ गुरुजी बांध्या नहीं ॥ राजा राज विणस्तिन, दीवे तेज न थाय ॥ मोनी वेवा सासग्यो, कहु चेला कुण वाय ॥ १४॥ ग्रुरुजी दीवेल नहीं ॥ मूकी वस्तु जहे नहीं, चोटक चूली जाय ॥ निखतां खोटूं निख गयों, कहुँ चेना कुण गय ॥ ॥ १५॥ ग्रुरुजी सुरत नहीं ॥ घर आयो सक्जन गयो, घोडे डोड न घा य ॥ गाडि बंध ढीला पड्या, कहु चेला कुण वाय ॥ १६ ॥ गुरुजी ता एयो नहीं ॥ महल जला शोजे नहीं, गामज खावा धाय ॥ हाट श्रेणि

शोजे नहीं, कहु वेला कुण गय ॥ १७ ॥ गुरुजी वस्ती नहीं ॥ दान वात जाएो नहीं, देरा धार न जाय ॥ तप कस्रो निरर्थक गयो, कहु चेला कुण वाय ॥ १० ॥ गुरुजी जाव नहीं ॥ सक्जन लागे डर्जना, मात पि ता न सुहाय ॥ घरत्रीया रूंवी फिरे, कहु चेला कुण वाय ॥ १ए ॥ गुरु जी हेत नहीं ॥ दीवे पतंग जपी जरे, परिण प्रदेशां जाय ॥ अणघटता करे घणा, कहु चेला कुण ठाय ॥ २० ॥ गुरुजी लाचें ॥ उते पलंगे छई सुए, घडो बलक्यो जाय ॥ बते मगले टाहें मरे, कहु चेला कुए। गय ॥ ११ ॥ गुरुजी जस्त्रों नहीं ॥ मोट्टं सहर वज्ञे नहीं, काया खीएज या य ॥ अड्यो दल पाठो हटे, कहु चेला कुण ताय ॥ २२ ॥ गुरुजी राजा नहीं ॥ घोडो तो दूर्बल ययो, चाकर रूठो जाय ॥ निकुक तो नूंमो वदे, कहु चेला कुण गय ॥ १३ ॥ गुरुजी पाम्यो नहीं ॥ निज त्रीया अडु ए फिरे, परव ज कोरां जाय ॥ मोटा सुत वांढा फिरे, कहु चेला कुण वाय ॥ २४ ॥ गुरुजी संपति नहीं ॥ खेतर चोरें जेलियो, गामे चोरी था य ॥ नाकि दाण आवे नहीं, कहु चेला कुण गय ॥ १५ ॥ गुरुजी चो की नहीं ॥ हाथ चूडि शोने नहीं, अमलह चढा न याय ॥ आएयो के र खपे नहीं, कहु चेला कुंण ठाय ॥ २६ ॥ ग्रुरुजी रंग नहीं ॥ आंबो तो खाटो लगे, गुंबडे पीडा घाय ॥ नखो घडो फाटी गयो, कहु चेला कुणताय ॥ १९ ॥ गुरुजी पाको नहीं ॥ गाये पण शोजे नहीं, कूवे नीर न थाय ॥ नवमो यह शोने नहीं, कहु चेला कुण वाय ॥ २० ॥ गुरुजी सीर नहीं ॥ जाडें फल निव नीपजे, त्रीया गर्ने न थाय ॥ वाडि जली शोने नहीं, कहु चेला कुण गय ॥ २ए ॥ गुरुजी फूल नहीं ॥ घर खर च वाध्यां घणां, वेपार लाज न थाय ॥ लेंणुं पाबुं जडे नहीं, कहु चेला कुण वाय ॥ २० ॥ गुरुजी अविचाखां घणां करे ॥ द्वारें तालुं न जघडे, मं त्र सिद्धि नवि थाय ॥ दीवि वस्तु थाये नहीं, कहु चेला कुण गेय ॥ ३१॥ गुरुजी कुंची नहीं ॥ नारि नेत्र शोने नहीं, अक्र फिका लखाय ॥ घडा उमाट शोने नहीं, कहु चेला कुण गय ॥ ३२ ॥ गुरुजी शाम नहीं ॥ ॥ इति गुरुशिष्य बत्रीशो समाप्त ॥

श्रीमुंबइमध्ये मांमवीबंदर उपर शाकगलीने नाके श्रोठ नर्सी नाषाना नवा घरमां बीजे मजले श्रावक शाण जीमसिंह माणकनी पासेषी देवनगरी लीपिमां ढापेलां पुस्तको वेचातां मलशे तेना नाम तथा निष्ठावलनी यादी.

गुजराती लीपिना	पुस्तक	एमां	दाखल	कीधा	नथी.
----------------	--------	------	------	------	------

	पुस्तकोनां नामः	किम्मत.	पुस्तकोनां नाम.		f	केम्मत.
		रु०आ०				रु॰आ॰
3	प्रकरणस्त्राकर भाग वीजो.	६-४	२३	श्रीनेमीश्वर भगवाननो र	ास	२–४
	प्रकरणस्त्राकर भाग त्रीजो.			अढीद्वीपना नकशानी		
3	प्रकरणस्त्राकर भाग चोथो.	६-४	२५	नवतत्त्वना प्रश्लोत्तर कुंवर	(वि०कृत	. २-०
8'	जैनतत्त्वाद्र्शग्रंथः	५ -0	२६	देवचंदजीनी चोवीशीनो ब	ालावबो	घ१-८
	छ कर्मग्रंथ बालाववोधसहित.		२७	सिंद्रप्रकर वालावबोध, ट		
Q	प्रवचनसारोद्धार ग्रंथ	५-0		षा, अने कथा सहित तथ	ा वीतरा	•
૭	तपगच्छीय श्रावकनां पांचे पडिः	हम		ग स्तव बालावबोध सहित		
	णां सविस्तर अर्थसहित.	۵-۶		चंदुराजानो रामः		
C	अंचलगच्छीय श्रावकना पांचे प	डि		पर्यूषणादिक वारपर्वोनी		
	कमणा सविस्तर अर्थसद्भितः 🕠	۵ ۶	30	पूजासंग्रह अहार पूजाओ	नो संग्रह.	3-6
o,	समरादित्य केवलीनो रासः	३-ሪ		छूटा बोलोनो थोकडो		
80	सुभाषितरत्नाकर भांडागारम्.	۵-۶		श्रीजिनविंव प्रतिष्ठानो वि		
<i>š</i> , <i>š</i>	जैनप्रबोध पुस्तक ७०० स्तव	न. ३-०	4	तपग्च्छनां पांचपडिकमण	*(
१२	सज्झायमाला ८०० सज्झायो	३0	,	समकेतम् छ वारत्रतनी टी		
	श्रावकना बारव्रत कथासहित		i	लघुमकरण संग्रह		
	पृथ्वीचंद अने गुणसागरनुं चा		1	अवनभानु केवलीनो रास		
	अध्यात्मकल्पद्यमादिक अर्थसिह			कर्पूरपकर वालाववोध कथ		
	कल्पसूत्रनो वालावबोधः			कल्पसूत्र मूलपाठः		1-0
	वीरस्तुद्गिरूप हुंडीनुं स्तवनादि			वावीश वोलनो थोकडो		
36	सम्यक्तस्य रूपस्तवनादिक-	२ -८	४०	खडतरगच्छना पांच पडि	कमणां.	3 −0
30	जयानंद केवलीनो रासैं.	२-८	85	हरिवलमच्छीनो रास्		<u> </u>
२०	श्रीशांतिनाथ भगवाननो रासः	२-८	४२	महाबल मलयसुंदरीना रा	स	\$−o
3 3	सारस्वतव्याकरण श्रीचंद्रकीतिंस	ग़्रि	83	मागधी भाषानुं व्याकरण	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	<u></u> \$-0
	कृत महोटी टीका सहित.	٦-८	४४	हीतशिक्षानी रास. ू	••••	१ -0
२२	श्रीपालनो रास संपूर्ण अर्थसि	त. २+४-	४५	विवेकविलास ग्रंथ अर्थसर्	हेत	3−0

३६४ देवनगरी लिपीमां वापेला पुस्तकोनी यादी

पुस्तकोनां नाम,	किम्मतः	पुस्तकोनां नाम-	किम्मत.
	रु•आ०		रु॰आ०
४६ खडतरगच्छीय तेरपूजानो सं	प्रहं. ० −१ २	६९ उत्तमकुमारनो रासः	» د الا
		७० रत्नचृडव्यवहारीनो रासः	
४८ रत्नपालनो रास	०१०	७१ परदेशी राजानो रास	o-8
४९ चतुःस्तुतिनिर्णय	०५०	७२ जीक्विचारनो वालावबोध न	o's
५० गौतमपृच्छा दृष्टांतिक कथास	हित. ०१०	७३ नवस्मरण मूलपाठः	0-8
५१ स्तवनावली भाग पहेलो.	0-6	७४ जिनदास श्रावकनां करेलां	स्तवन.०४
५२ मानतुंग राजा ने मानवतीनो	रास. ०-८	७५ माणिभद्रादिकना छंद.	0-8
५३ चिदानंदजीकृत खरोदयादिव	ह ग्रंथ.०−८	७६ देविसराई पडिकमणुं	0-8
५४ भक्तामरस्तोत्र बालाववोधर्मा	हेत. ०-८	७७ चेतनकमेनी लडाइनो रासअ	गदिक₊०∹४
५५ आनंदघनजी चिदानंदनी बहुत	नेरिया.०-७	७८ शनिश्वरादिकना छंदोनो संग्र	ाह. ०−३
५६ चंदनमलयागिरिनो रास.	०-६	७९ रात्रिभोजननो रास-	0-3
५७ अभयकुमारना रासः	i	• • • •	9-5
५८ दंडक लघुसंघयणी वालाववो	घ. ० − ६	८१ झृंगारवराग्यतरंगिणीः	०-२॥
५९ हंसराज वच्छराजनो रास.	०–६	८२ लीलावती मैयारीनो रास	o− ৼ
६० कालज्ञान अर्थसहित		८३ मथ्णरेहा तथा कानडकठीयार	
६१ दृष्टांतशतक बालाववोधः	;	८४ कर्मविषाक जंबूपुच्छानो राम	
६२ मंगलकलशनो रासः	1	८५ हृंडियानुं साभायिक पडिकमण्	j. ૦—ર
६३ चार प्रत्येक बुद्धनो रासः	०६	८६ देवकीजीना छ पुत्रनो रास.	० र
६४ हरिचंदराजानो रासः	0-4	८७ अंजना सतीनो रासः	८—ऱ
६५ श्री शत्रुंजय उद्धारादिक तथा	1		0-311
६६ कल्याणमंदिर वालाववोध स	हित. ०	८९ श्रावक लालाजी रणजितसिः	य जी
६७ आतमारामजीकृत पूजा संग्रह	· ·		0-511
६८ कयवन्ना शेठनो रास	0-3	९० स्नात्रपूजा देवचंदजीकृतः	0-?

ए जपर लखेला पुस्तको सिवाय श्रीशत्रुंजयादिक महोटा महोटा ती योंना रंगीन नकसा, तथा नारकी अने खर्गादिकना रंगीन चित्रोनी बु को, तेमज श्रीमुरिसदा बाद निवासी बाबु साहेब राय धनपित सिंह प्र तापिसंहजी बाहादूरनां ढापेलां श्रीआचारांगादि अनेक सूत्रो आदिक बी जा पण घणां पुस्तको वेंचतां मलशे ते सर्वनां नाम तथा निष्ठाबल पुस्त कोतुं सूचीपत्र मगाववाथी जाणवामां आवशे.